भारतीय क्रिकेट

ज्ञान-कोश

भारतीय क्रिकेट

ज्ञान-कोश

एल. एन. माथुर

कृष्णा ब्रदर्स, अजमेर

आवरण
प्रकाश आर्टिस्ट

संस्करण
1987

मूल्य : 125/-
एक सौ पच्चीस रुपये मात्र

प्रकाशक
कृष्णा ब्रदर्स
महात्मा गांधी मार्ग
अजमेर–305 001 (राज.)

मुद्रक
पाठक प्रिन्टर्स, अजमेर

विषय-सूची

प्राक्कथन

लार्ड नट्सफोर्ड ने होरेस वालपोल की एक प्रसिद्ध उक्ति की व्याख्या करते हुए एक बार यह कहा बताते हैं कि ईश्वर स्ट्राबेरी से बढ़िया बेरी बना तो सकता था परन्तु उसने नही बनाई, इसी प्रकार ईश्वर मनुष्य को भी क्रिकेट से बढ़िया खेल बना लेने की बुद्धि दे तो सकता था परन्तु उसने ऐसा नहीं किया।

क्रिकेट भी एक तरह का कठिन सग्राम ही है जिसमे विजय के लिए उतने ही कौशल की आवश्यकता पडती है जितने कि युद्ध जीतने के लिए। पारस्परिक सहयोग की भावना ही इस खेल की जान है, जिसका मतलब है—सभी प्रकार के स्वार्थपूर्ण लक्ष्यो और उद्देश्यों को छोड़कर अपने साथियों के साथ पूरी तरह मिलकर खेलते हुए, एक समान फल प्राप्त करना।

खेलकूद केवल शारीरिक स्वस्थता की दृष्टि से ही लाभदायक नही होते, अपितु नैतिक दृष्टि से भी उनका मूल्य बहुत ऊँचा होता है। क्रिकेट के नैतिक मूल्यो पर विचार कीजिए। क्या क्रिकेट हमको धैर्य और अध्यवसाय का गुण नहीं सिखाता? क्या हम लोग गेंदबाज के अध्यवसाय की उस समय प्रशंसा नही करते जब कि वह किसी रक्षात्मक ढग से खेलने वाले बल्लेबाज को परास्त करने के चक्कर मे बड़े धीरज के साथ एक के बाद एक गेंद फेंकता जाता है? क्या हम उस बल्लेबाज की चतुराई और हौसले की तारीफ नही करते जो बड़ी नाजुक स्थिति में चिपचिपे विकेट पर खेलने के लिए भेजा जाता है?

क्रिकेट के खेल का ताना-बाना ही कुछ इस प्रकार का है कि उससे मानव चरित्र के सूक्ष्म गुण, उसके निकट सम्पर्क से उजागर हो जाते हैं।

क्रिकेट का खेल निःसदेह बडा उपयोगी है। उसमें साहस, कौशल, दांव-पेंच और सबसे अधिक आत्म-सयम की आवश्यकता पड़ती है। उसमें यह प्रकट हो जाता है कि खिलाड़ी का स्वभाव और चरित्र कैसा है। वह मनुष्य को शारीरिक और मानसिक दोनो दृष्टियों से स्वस्थ रखता है। वह खेल की प्रवृत्ति का विकास करता है और चरित्र को बलवान बनाता है। सबसे बड़ी बात यह है कि क्रिकेट पारस्परिक सहयोग की भावना उत्पन्न करता है जो मनुष्य के जीवन सग्राम मे बहुत सहायक सिद्ध होती है।

जीवन में बहुत कम चीजें ऐसी मिलेंगी जो क्रिकेट के खेल जितनी रोमांचकारी, आनन्ददायक और मजेदार हों। बल्ले और गेंद की इस लड़ाई को देखने के लिए लोग खराब मौसम में भी दूर-दूर से चले आते हैं। मेरी मिलफोर्ड ने कहा है, "मुझे सन्देह है कि क्रिकेट से अधिक स्फूर्तिदायक कोई चीज इस दुनिया में है।" इंग्लैण्ड के एक महान् बल्लेबाज हरबर्ट सटक्लिफ ने कहा है, "अंग्रेज जाति का चरित्र बनाने में क्रिकेट के खेल ने जितना महत्वपूर्ण योगदान दिया है, उतना और किसी ने भी नहीं।"

वेलिंगटन के ड्यूक ने भी ठीक ही कहा था, "इटन के खेल के मैदानों पर प्राप्त आत्म-संयम और कठोर अनुशासन के बल पर ही अंग्रेजों ने वाटरलू की लड़ाई में विजय-श्री प्राप्त की थी।'

डब्लू. जे. फोर्ड ने 'जुबली बुक ऑफ क्रिकेट' में लिखा है, "कोई भी खेल क्रिकेट से अधिक मनमोहक नहीं हो सकता।"

एक छोटी सी रियासत के मालिक, किन्तु शानदार, खेल-जगत के सम्राट 'रणजी महान्' ने अंग्रेज के जीवन को क्रिकेट के साथ जोड़ते हुए कहा था- "यह कहा जा सकता है कि आधुनिक अंग्रेज के स्वभाव के दो पहलू हैं—एक है, काम की लगन और दूसरा है, खेल में रुचि।" मैंने देखा है, जो आदमी क्रिकेट से बना है वह बल-वीर्य और सामान्य शारीरिक स्वस्थता के मामले में उतने ही ऊँचे स्तर का है जितना कि और किसी भी साधन से बना जा सकता है।"

एण्ड्रयू लैंग के ये शब्द भी किसी सिद्धवाणी से कम नहीं हैं : "क्रिकेट अपने आप में एक पर्याप्त शिक्षा है। इसमें शान्त स्वभाव, निर्णय शक्ति और अध्यवसाय की आवश्यकता पड़ती है। कक्षा के कमरों की तुलना में खेल के मैदानों में अधिक शिक्षा मिलती है।" रिचार्ड डैफ्ट ने क्रिकेट के गुणों का वर्णन करते हुए कहा है, "क्रिकेट के अलावा और कोई खेल नहीं है जिसमें शारीरिक व्यायाम के साथ-साथ वैज्ञानिक सूझ-बूझ भी प्राप्त होती हो।"

लोकोक्ति प्रसिद्ध है, "यह तो क्रिकेट नहीं है"; खेलों के राजा क्रिकेट का गूढ़ मतलब है—सद्व्यवहार और सदाचार।

भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति और दार्शनिक सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन के इन वचनों से कौन सहमत नहीं होगा, "अंग्रेज भारत में जो अच्छी चीजें छोड़ गये हैं, उनमें से क्रिकेट भी एक है।"

क्रिकेट भारत में बहुत ही लोकप्रिय होकर आज हमारे घरों तक पहुँच गया है। वह लाखों लोगों के लिये, चाहे वे खिलाड़ी हों या दर्शक अथवा श्रोता, एक मनोरंजन, आमोद-प्रमोद और शिक्षा का साधन है।

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय (शिक्षा तथा युवा सेवा मंत्रालय) द्वारा कार्यान्वित प्रकाशकों के सहयोग से हिन्दी मे पुस्तकों के लेखन, अनुवाद और प्रकाशन की योजना के अन्तर्गत मेरी पुस्तक "भारतीय क्रिकेट ज्ञान-कोश" का प्रकाशन 1969 में हुआ था। निःसदेह पुस्तक बहुत लोकप्रिय रही जिसमें भारत में क्रिकेट आगमन से लेकर 1965-66 तक, 50 अध्यायो में भारत में क्रिकेट जन्म, 'बोर्ड ऑफ कन्ट्रोल फॉर क्रिकेट इन इण्डिया', प्रान्तीय क्रिकेट संगठनों को स्थापना एवं उनके प्रबन्ध, भारतीय अन्तर्राष्ट्रीय खिलाड़ी, टेस्ट मैच, रणजी ट्रॉफी, ट्राइएन्गुलर, क्वाडरेन्गुलर, पेंटागुलर टूर्नामेण्ट, ईरानी ट्रॉफी, दलीप ट्रॉफी, विश्वविद्यालय, स्कूल के खेलो और भारतीय क्रिकेट से सम्बन्ध रखने वाली अनेक घटनाओं का सविस्तार और स्पष्ट रूप से वर्णन किया गया है।

भारत ने 1965-66 और 1985-86 के दौरान 138 टेस्ट मैच और खेले हैं, अनेक अखिल भारतीय क्रिकेट प्रतियोगिताओ का आयोजन हुआ है, कुछ नई अखिल भारतीय क्रिकेट प्रतियोगिताएँ, विशेष कर छोटी उम्र के खिलाडियों के लिये प्रारम्भ की गई हैं, एक दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय क्रिकेट मैचों नें बहुत लोकप्रियता प्राप्त करली है, अनेक नये चेहरे क्रिकेट जगत मे आये हैं और अपनी प्रतिभा दिखा रहे हैं, अनेक कीर्तिमान टूटे और नये स्थापित हुए है। इन सबका समावेश इस ग्रन्थ मे किया गया है। भारतीय क्रिकेट विषयक आँकड़ो और अभिलेखो की फिर से जाँच की है और उन्हे सरल संदर्भों के साथ प्रस्तुत किया है।

विश्व कोश मे विषय वस्तु को अकारादि क्रम से रखने की परिपाटी रही है। परन्तु मैंने इस प्रचलित परिपाटी का पालन नही किया है क्योंकि मेरे विचार से घटनाओं को तिथि-क्रम से प्रस्तुत करना पाठक की सुविधा की दृष्टि से अधिक अच्छा है।

इस ग्रन्थ को तैयार करने में मैंने अनेक पुस्तकों और पत्र-पत्रिकाओ तथा रिपोर्टों का उपयोग किया है। भारतीय क्रिकेट नियन्त्रण बोर्ड की स्थापना के समय से ही मेरा क्रिकेट के साथ निकट सम्पर्क और उसमे मेरी गहरी दिलचस्पी रही है; यही बात इस काम मे मेरे लिए सबसे अधिक सहायक सिद्ध हुई है।

पुस्तक मे प्रयुक्त हिन्दी की पारिभाषिक शब्दावली के विषय मे कुछ कह देना अप्रासगिक नही होगा। शिक्षा मंत्रालय द्वारा निर्मित खेल-कूद विषयक शब्दावली के अभाव मे, अधिकांशतः हिन्दी समाचार पत्रो में प्रयुक्त और

खेल जगत में प्रचलित हिन्दी शब्दों का ही प्रयोग किया गया है। जो अंग्रेजी के शब्द हिन्दी में खप गये हैं, उन्हें ज्यों-का-त्यों स्वीकार कर लिया गया है। फिर भी कुछ नए शब्द गढ़ने की आवश्यकता पड़ी है। आशा है, वे खेल-जगत को ग्राह्य होंगे। पाठकों की सुविधा के लिए पुस्तक में हिन्दी-अंग्रेजी शब्द-सूची भी दे दी गई है।

डॉ. प्रकाश आतुर, डॉ. हरीश नारायण माथुर, श्री जयकृष्ण अग्रवाल और श्री कुलदीप माथुर ने इस कार्य मे मेरी बहुत सहायता की है, इसके लिए मैं उन सबका हार्दिक धन्यवाद देता हूं। भारतीय क्रिकेट नियंत्रण बोर्ड और उसके सदस्य संघों ने मुझे इस पुस्तक में संकलित सामग्री और फोटो सहर्ष प्रदान किए हैं, इसके लिए मैं उनका आभारी हूं।

दिसम्बर, 1986
22-सुभाष बोस नगर,
उदयपुर

एल. एन. माथुर

लेखक

मारतीय क्रिकेट नियंत्रण बोर्ड के मदस्य संघों की मीमा और
प्रधान कार्यालय भारत के मानचित्र में

क्रिकेट का आगमन

अंग्रेजो के आगमन से पूर्व भारत में क्रिकेट के समान कोई अन्य खेल खेला जा रहा होगा। परन्तु क्रिकेट, जैसा कि आज इसका रूप है, भारत को अंग्रेजों से ही विरासत में मिला है। भारत में इस खेल के प्रारम्भ होने की निश्चित तिथि का कोई-प्रमाण नहीं है परन्तु यह एक स्थापित तथ्य है कि 1797 में मिलीट्री एकादश और बम्बई द्वीप की टीमों के बीच क्रिकेट का मैच खेला गया था।

प्रथम नियमित क्रिकेट क्लब की स्थापना 1846 में मद्रास में सर अलेक्जेंडर आरबॅथनोट द्वारा मद्रास क्रिकेट क्लब के नाम से की गयी थी, लेकिन क्रिकेट बम्बई में अधिक लोकप्रिय था जिसका कारण पारसियों का इस खेल के प्रति उत्साह था। 1848 के बाद के वर्षों में कुछ उत्साही पारसियों ने बम्बई में क्रिकेट क्लबों की स्थापना की और मैदान में उनकी सफलता वास्तव में प्रशंसनीय थी। पारसियों ने 1886 और 1888 में जे० एम० फ्रॉमजी पटेल के नेतृत्व में क्रिकेट खेलने के लिये दो बार इंगलैंड की यात्राएं भी की। इन यात्राओं के लिए उन्हें सर दोराब टाटा, सर एम० एम० भावनगरी, सर कावसजी जहाँगीर और सर डी० एम० पेटिट से आर्थिक सहायता मिली थी।

प्रथम इंगलिश टीम 1890 में भारत आयी। इस टीम का कप्तान मिडलसेक्स का खिलाड़ी जी० एफ० वरनोन था। इसे सभी मैचो में आसानी से विजय मिली परन्तु पारसियों ने उन्हें चार विकटों से परास्त कर दिया। इस विजय का श्रेय पारसी टीम के आक्रामक बल्लेबाज श्री मछलीवाला को मिला।

1892–93 में लार्ड हॉक एक अधिक शक्तिशाली टीम लेकर भारत आये। पारसियों ने उन्हें हरा दिया। इस मैच मे रन संख्या बहुत कम रही। भारतीय टीम ने 93 और 182 रन बनाये जिसके उत्तर में अंग्रेज 73 और 93 रन ही बना सके। दूसरे मैच में विदेशी टीम ने पारसियों से खेल में 7 रनों से विजय-श्री छीन ली परन्तु उसके लिये उन्हें काफी संघर्ष करना पड़ा। विदेशी टीम ने 139 और 85 रन बनाये, जबकि भारतीय टीम ने 127 और 90 रन बनाये।

इन वर्षों में विशेष ख्याति प्राप्त पारसी खिलाड़ी थे। कर्नल के० एम० मिस्त्री, एक महान् सर्वोन्मुखी खिलाड़ी; एम० डी० बलसारा, एक खतरनाक गेंदबाज; मछलीवाला, एक आक्रामक बल्लेबाज; डॉ० एम० ई० पारवी, जो

एक मधा हुआ गेंदबाज था और जिसने 1888 में पारसियों के इंग्लैंड के द्वितीय भ्रमण मे 12 रन प्रति विकेट का औसत देकर 170 विकेट लिये थे; पी० बापामोला, एक ठोस बल्लेबाज; बी० डी० मेगरट, एक कुशल बल्लेबाज; डॉ० एच० डी० कागा, एक महान् सर्वोन्मुखी खिलाड़ी; ए० एच० मेहता, तेज गेंदबाज और जे० एम० फ्रामजी पटेल जो इस अवधि में पारसी टीम का कप्तान था।

आगे चलकर 1910 और 1935 के बीच मे पारसियो ने श्रेष्ठ खिलाडियो का एक दूसरा दल तैयार किया, जिसमे जे० एस० वार्डन, एच० जे० वजीफदार, एस० एच० एम० कोल्हा, डोली कापडिया, डी० डी० ड्राइवर, बी० एच० मिर्जा, दारूवाला, बी० के० कालापेसी, आर० जमशेदजी, बी० ई० कापडिया, एन० डी० मार्शल, के० आर० मेहरोमजी और पी० ई० पालिया सम्मिलित थे।

1878 में बम्बई में हिन्दुओ ने सर्वश्री जी० खटाऊ, वेलिकार्ट, डी० धर्मसी, सर चुन्नीलाल बी० मेहता और जी० के० तेजपाल के कृपा पूर्ण संरक्षण मे "हिन्दू क्रिकेट क्लब" की स्थापना की। श्री परमानन्द दास जीवनदास के महान् दान से हिन्दू क्रिकेट क्लब 1894 में वर्तमान पी० जे० हिन्दू जीमखाना के रूप मे परिवर्तित हो गया। यद्यपि इस टीम की पारसियो की टीम से कोई तुलना नही की जा सकती थी तथापि हिन्दुओं ने कतिपय श्रेष्ठ खिलाड़ी पैदा किये जिनमें पी० बालू 1911 मे इंग्लैंड का दौरा करने वाली महाराजा पटियाला की टीम के सर्व श्रेष्ठ धीमे गेंदबाज थे; पी० के० तैलग, जी० आर० वान्दा, कीतिकर, एम० डी० पाई सभी अच्छे बल्लेबाज थे, शेषाचारी एक बहुत ही उत्तम विकेट रक्षक थे और 1911 मे इंग्लैंड का दौरा करने वाली टीम के सदस्य थे; के० ए० दांते और डी० एम० चोंकर विश्वसनीय सर्वोन्मुखी खिलाड़ी थे।

1915 के बाद हिन्दू जीमखाना ने अपनी शक्ति और बढाली और बी० बी० कंटके, पी० विट्ठल, डी० बी० देवधर, सी० के० नायडू, एस० एम० जोशी, के० जी० परदेशी, एम० एच० चन्द्राना, एल० रामजी, एम० आर० गोदाम्बे, जे० जी० नवले, के० आर० स्वामी, पी० शिवराम और एल० पी० जय जैसे अच्छे खिलाड़ी पैदा किये।

मुसलमानो ने अपनी पहली क्रिकेट टीम 1883 मे बम्बई मे बनाई। दस वर्ष बाद यह मुसलमान जीमखाना बन गई। बाद में इसका नाम बदलकर इसलाम जीमखाना कर दिया गया जो आज भी चल रहा है। 1912 मे उन्होंने पहली बार बम्बई के प्रसिद्ध क्रिकेट कार्निवाल में भाग लिया। इससे पूर्व तक जो खेल तीन तरफा होता था अब चौतरफा हो गया। 1910 और 1930 के बीच प्रसिद्ध मुस्लिम खिलाडी थे; ए० यु० बोटवाला, एस०

वजीरअली, एस० नजीरअली, विसराम, एस० ए० अजिज, तम्बूवाला, फिरोज खाँ, अब्दुस्सलाम, वजीर अहमद, सालेह मोहम्मद, हसनशाह, एम० जी० रसूल और मिर्जा यूसुफ बेग।

बम्बई शहर भारतीय क्रिकेट का मक्का बना रहा परन्तु भारत के अन्य भागों में भी क्रिकेट के प्रति आकर्षण बढ़ता गया। उत्तर भारत में यह खेल विशेषकर श्रीनगर, स्यालकोट, पेशावर, रावलपिंडी, लाहौर, पटियाला, कपूरथला, अंबाला, मेरठ और शिमला में लोकप्रिय बना। उत्तर प्रदेश में इलाहाबाद, अलीगढ़ आगरा, बनारस, बरेली, कानपुर और नैनीताल क्रिकेट के गढ बन गये। अबके राजस्थान और पुराने राजपूताना मे राजाओं ने क्रिकेट को अजमेर, अलवर, भरतपुर, जयपुर, जोधपुर, झालावाड़ और माउण्ट आबू में लोकप्रिय बनाया। अलवर कप के लिये अखिल भारतीय क्रिकेट प्रतियोगिता अजमेर में प्रारम्भ की गई। काठियावाड के राज्यों में क्रिकेट पोरबन्दर, राजकोट, भावनगर, पालीताना, लीमडी और जूनागढ मे लोकप्रिय हुआ। मध्य भारत में इन्दौर, ग्वालियर, भोपाल, मंहू और नागपुर क्रिकेट के केन्द्र बने। बंगाल में नट्टोर और कूचविहार के शासकों ने क्रिकेट को प्रोत्साहन दिया। नवाब मोइनुद्दौला ने हैदराबाद में इस सदी के तीसरे दशक में अपने नाम से एक टूर्नामेंट चलाया। 1911 में राजधानी बन जाने के बाद दिल्ली में भी क्रिकेट की ओर विशेष ध्यान दिया जाने लगा। 1920 में प्रसिद्ध रोशनारा क्लब की स्थापना हुई।

पटियाला के स्वर्गीय महाराजा भूपेन्द्रसिंहजी क्रिकेट के सबसे बडे संरक्षक थे। वे 1911 में एक टीम इंग्लैंड भ्रमण पर ले गये। वे इंग्लैंड और आस्ट्रेलिया से कुछ प्रसिद्ध खिलाडी लेकर आये। उन्होंने रणजी ट्रॉफी प्रदान की तथा *1935–36* में जेक राइडर के नेतृत्व में एक आस्ट्रेलियाई टीम बुलाई। उन्होंने और स्वर्गीय आर० ई० ग्रांटगोवन, भोपाल के स्वर्गीय नवाब, जामनगर के स्वर्गीय महाराजा श्री दिग्विजयसिंहजी, स्वर्गीय सर सिकन्दर हयात खां, स्वर्गीय ए० एस० डी० मैलो आदि इस खेल के कुछ अन्य शुभचिन्तकों ने मिलकर भारतीय क्रिकेट नियंत्रण बोर्ड की स्थापना की।

भारतीय क्रिकेट नियंत्रण बोर्ड

भारतीय क्रिकेट नियन्त्रण बोर्ड की स्थापना कब और किस स्थान पर हुई, यह निश्चित रूप से ज्ञात नहीं है। कुछ लोगों के अनुसार बोर्ड की स्थापना दिल्ली में नवम्बर, 1927 में हुई जबकि कुछ लोगों का कहना है कि बोर्ड की स्थापना बम्बई में अप्रेल, 1928 में हुई थी। किन्तु आश्चर्य की बात यह है कि भारत इम्पीरियल क्रिकेट कान्फ्रेन्स, लन्दन का सदस्य क्रिकेट नियंत्रण बोर्ड की स्थापना होने से पहले ही बना लिया गया था। एम० सी० सी० के अभिलेखों से पता चलता है कि कलकत्ता क्लब के श्री मर्रे रोबर्टसन और सर विलियम क्यूरी ने भारत की ओर से 31 मई को लॉर्ड्स में और फिर 28 जुलाई 1926 को ओवल में आयोजित इम्पीरियल क्रिकेट कान्फ्रेन्स में भाग लिया था।

कलकत्ता क्रिकेट क्लब ने 1926-27 में एम० सी० सी० की टीम के सर्व प्रथम भारत में भ्रमण का सम्पूर्ण प्रबन्ध किया। इस टीम के कप्तान श्री आर्थर गिलीगेन थे। इस भ्रमण के दौरान श्री गिलीगेन ने इस बात पर जोर दिया कि भारत में भी शीघ्र ही एक क्रिकेट बोर्ड की स्थापना होनी चाहिए।

जब एम० सी० सी० टीम 22 नवम्बर 1927 को दिल्ली में थी उसी दिन रोशनआरा क्लब में (स्व०) श्री आर० ई० ग्रांट गोवन द्वारा आयोजित एक बैठक में यह निश्चय किया गया कि शीघ्र ही भारतीय क्रिकेट बोर्ड की स्थापना की जाए। इस बैठक की अध्यक्षता पटियाला के भूतपूर्व महाराजा श्री भूपेन्द्रसिंहजी ने की जो भारतीय क्रिकेट के महान् संरक्षक थे। इस बैठक में सिन्ध, पंजाब, पटियाला, दिल्ली, बंगाल, यू० पी०, राजपूताना, भोपाल, ग्वालियर, बड़ौदा, मध्य भारत, काठियावाड़ और अलवर के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस बैठक में निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकार किया गया—

"सिन्ध, पटियाला, दिल्ली, यू० पी०, राजपूताना, अलवर, भोपाल, ग्वालियर, बड़ौदा, काठियावाड़ और मध्यभारत के क्रिकेट में रुचि लेने वाले प्रतिनिधियों की यह सभा निम्नलिखित प्रयोजनों के लिये भारतीय क्रिकेट नियन्त्रण बोर्ड के गठन के प्रस्ताव का अनुमोदन करती है:—

(1) क्रिकेट के खेल का पूरे भारत में प्रसार और नियन्त्रण करना।

(2) प्रादेशिक, विदेशी और अन्य क्रिकेट मैचों का आयोजन तथा नियन्त्रण करना।

भारत से विदेश जानेवाली प्रथम क्रिकेट टीम

(इंग्लैंड का 1886 में भ्रमण करने वाली पारसी टीम)

भारतीय क्रिकेट नियंत्रण बोर्ड के अधिकारियों का संस्थापक अध्यक्ष श्री ग्रांट गोवन और श्री ए.एस.डी. मैलो, प्रथम सचिव के साथ चित्र

••

भारतीय क्रिकेट नियंत्रण बोर्ड

अध्यक्ष

सर आर. ई. ग्रांट गोवन

सर सिकन्दर हयात खां

(3) विदेशी टीमों के भारत भ्रमण की व्यवस्था करना तथा अखिल भारतीय टीमों का देश और विदेश में खेलने का प्रबन्ध व नियन्त्रण करना।

(4) आवश्यकता पड़ने पर अन्तर्राज्यीय मैचों का आयोजन व नियन्त्रण करना।

(5) बोर्ड के सदस्य संघों के बीच उत्पन्न हुए किसी भी प्रकार के झगड़े या मत भेद का निपटारा करना और यदि कोई सदस्य संस्था इसके सामने अपील करे तो उसका फैसला करना।

(6) वांछनीय होने पर मेरीलीबोंन क्रिकेट क्लब द्वारा बनाये गये नियमों और उनके संशोधनों को स्वीकार करना।

दिल्ली के बाद अगली बैठक बम्बई जीमखाना में अप्रैल 1928 में हुई जिसमें यह स्वीकार किया गया कि बोर्ड के कार्य मुख्यत: नीति विषयक और नियन्त्रणात्मक ही होंगे। इसलिए एक अस्थायी बोर्ड के गठन का प्रस्ताव स्वीकार किया गया जिसमें अध्यक्ष, उपाध्यक्ष व निम्नलिखित सदस्य थे।

(1) बम्बई, मद्रास, सेन्ट्रल प्रोविन्सेज व पंजाब की चतुष्कोणीय समितियां।

(2) कराची की पंचकोणीय समिति।

(3) कलकत्ता क्रिकेट क्लब।

(4) राजेन्द्र जीमखाना, पटियाला।

(5) रोशनआरा क्लब, दिल्ली।

(6) काठियावाड़ राज्य।

इस अस्थायी बोर्ड से यह कहा गया कि यह प्रान्तीय या क्षेत्रीय संघो के निर्माण को प्रोत्साहित करे। यह भी निश्चित किया गया कि यह बोर्ड तब तक कार्य करता रहेगा जब तक कि आठ प्रान्तीय या क्षेत्रीय संघो का निर्माण न हो जाए और उनका मंडल से सम्बन्ध स्थापित न हो जाए।

जिस दिन बोर्ड के आठ सदस्य बन गये उस दिन से इसका अस्थायीपन समाप्त हो गया।

बोर्ड और विभिन्न प्रान्तीय संघों के निर्माण का प्रारम्भिक कार्य अधिकतर पटियाला के स्वर्गीय महाराजा श्री भूपेन्द्रसिंहजी, नवानगर के स्वर्गीय जाम साहब श्री दिग्विजयसिंहजी, इन्दौर के स्वर्गीय महाराजा, भोपाल के स्वर्गीय नवाब, कूचबिहार के महाराजा, श्री आर० ई० ग्रांट गोवन, श्री ए० एस० डी० मैलो, डा कांगा, श्री ए० एल० होसी, कर्नल रूबी, श्री एफ० टी० जोन्स, श्री आर० बी० लेगडन, श्री मर्रे रोबर्टसन, सर आर०

रिचमंड और श्री जस्टिस पियर्सन द्वारा किया गया। स्वर्गीय लार्ड विलिंगडन ने भी बोर्ड के निर्माण के लिए सम्बन्धित व्यक्तियों को प्रोत्साहित कर बड़ी सहायता प्रदान की। बोर्ड के निर्माण की प्रारंभिक अवस्था में श्री आर० ई० ग्रांटगोवन, उसके अध्यक्ष और स्वर्गीय श्री ए० एस० डी० मैलो अवैतनिक मंत्री रहे। श्री गोवन दस वर्ष तक बोर्ड के अध्यक्ष बने रहे। श्री डी० मैलो सन् 1938 तक तो अवैतनिक मंत्री रहे फिर वे बोर्ड के उपाध्यक्ष बने और अंततः 1946 मे इसके अध्यक्ष पद का भार सम्भाला।

बोर्ड ने 1934 में रणजी ट्रॉफी के लिये राष्ट्रीय क्रिकेट प्रतियोगिता (नेशनल क्रिकेट चैम्पियनशिप) शुरू की। एक वर्ष पश्चात् बोर्ड ने रोहिंटन बारिया ट्रॉफी के लिये अन्तर-विश्वविद्यालय क्रिकेट प्रतियोगिता चालू की। 1942 तक यह प्रतियोगिता बोर्ड द्वारा चलाई गई फिर इसे चलाने का कार्य भार अन्तर-विश्वविद्यालय स्पोर्टस् बोर्ड ने ले लिया। कूच बिहार ट्रॉफी के लिये अखिल भारतीय अन्तर-राज्य स्कूल क्रिकेट प्रतियोगिता 1945 में प्रारम्भ हुई और दलीप ट्रॉफी के लिये अन्तर क्षेत्रीय प्रतियोगिता 1960 में शुरू हुई।

जैसे जैसे वर्ष बीतते गए बोर्ड उत्तरोत्तर शक्तिशाली होता गया और इसकी गतिविधियाँ भी बढ़ती गई। 1965 तक इसने दस वार अपनी टीमों को विदेश भ्रमण के लिए भेजा और बीस औपचारिक तथा अनौपचारिक विदेशी टीमों को अपना अतिथि बनाया। बोर्ड के इस समय 27 सदस्य हैं जो पाँच क्षेत्रों मे निम्न प्रकार से विभाजित किये गये हैं।

उत्तर क्षेत्र :

1. दिल्ली व जिला क्रिकेट संघ
2. दक्षिण पंजाब क्रिकेट संघ
3. सेना खेल-कूद नियन्त्रण बोर्ड
4. उत्तर पंजाब क्रिकेट संघ
5. जम्मू व कश्मीर क्रिकेट संघ
6. रेल्वे खेल कूद नियन्त्रण बोर्ड
7. भारतीय अन्तर-विश्व विद्यालय बोर्ड

पूर्व क्षेत्र :

1. बंगाल क्रिकेट संघ
2. बिहार क्रिकेट संघ
3. असम क्रिकेट संघ
4. उड़ीसा क्रिकेट संघ
5. नेशनल क्रिकेट क्लब

पश्चिम क्षेत्र :

1. बम्बई क्रिकेट संघ
2. दि क्रिकेट क्लब ऑफ इण्डिया लि०
3. महाराष्ट्र क्रिकेट संघ
4. बड़ौदा क्रिकेट संघ
5. गुजरात क्रिकेट संघ
6. सौराष्ट्र क्रिकेट संघ

दक्षिण क्षेत्र :

1. मद्रास क्रिकेट संघ
2. मैसूर क्रिकेट संघ
3. हैदराबाद क्रिकेट संघ
4. केरल क्रिकेट संघ
5. आन्ध्र क्रिकेट संघ

मध्य क्षेत्र :

1. उत्तर प्रदेश क्रिकेट संघ
2. मध्य प्रदेश क्रिकेट संघ
3. राजस्थान क्रिकेट संघ
4. विदर्भ क्रिकेट संघ

बोर्ड के वार्षिक महाअधिवेशन में प्रति वर्ष निम्नलिखित समितियां बनाई जाती हैं जिनके द्वारा बोर्ड की विभिन्न गतिविधियाँ सम्पन्न होती है:—

1. कार्यकारणी समिति
2. रणजी ट्रॉफी उपसमिति
3. चयन समिति
4. प्रशिक्षण उप-समिति
5. स्कूल टूर्नामेंट उप-समिति
6. निर्णायक उप-समिति
7. परोपकार निधि समिति
8 नियम संशोधन समिति
9. विश्व विद्यालय सलाहकार बोर्ड समिति
10. प्रधान कार्यालय समिति

भारतीय क्रिकेट नियन्त्रण बोर्ड की स्थापना से लेकर अब तक निम्नलिखित व्यक्ति इसके पदाधिकारी रहे हैं:—

अध्यक्ष :

श्री आर० ई० ग्रांटगोवन
सर सिकन्दर हयात खां
डाक्टर पी० सुब्बारायन
भोपाल के नवाब साहब
श्री ए० एस० डी० मैलो
श्री जे० सी० मुकर्जी
विजयनगरम् के महाराजा कुमार विजय आनन्द
सरदार गुरजोतसिंह मजीठिया
श्री आर० के० पटेल
श्री एम० ए० चिदम्बरम्
बड़ौदा के महाराजा फतहसिंह राव गायकवाड
श्री जेड० आर० ईरानी

अवैतनिक सचिव
श्री ए० एस० डी० मैलो
श्री रंगा राव
श्री पंकज गुप्ता
श्री एम० जी० भावे
श्री ए० एन० घोष
श्री एम० चिन्नास्वामी
श्री एस० श्रीरमन

अवैतनिक कोषाध्यक्ष
श्री जेड० आर० ईरानी
श्री डी० पी० थानावाला
श्री एम० ए० चिदम्बरम

अवैतनिक संयुक्त सचिव
श्री टी० श्रीनिवास राघवन
श्री एम० जी० भावे
श्री एम० चिन्नास्वामी
श्री राम प्रकाश मेहरा
श्री एस० श्रीरमन
श्री एम० बी० एल० माथुर

सहायक सचिव
श्री एन० डी० करमाकर

अध्यक्ष

डा. पी. सुब्बारायन

भोपाल के नवाब साहब
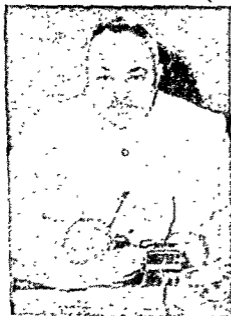
नवानगर के जाम साहब

श्री ए. एस. डी. मैलो

अध्यक्ष

श्री जे. सी. मुकर्जी

विजयनगरम् के महाराजकुमार विजय आनन्द (भारत का टेस्ट क्रिकेट में नेतृत्व भी किया)

Ratilal K. Patell

श्री. आर. के. पटेल

(..., गुजरात क्रिकेट संघ)

श्री एम. ए. चिदम्बरम्

(अध्यक्ष, मद्रास क्रिकेट संघ)
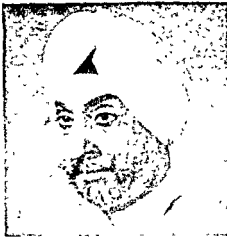
अध्यक्ष

सरदार सुरजीतसिंह मजीठिया

बड़ोदा के महाराजा श्री फतहसिंह राव गायकवाड (अध्यक्ष, बड़ोदा क्रिकेट संघ

अवैतनिक सचिव

श्री रंगा राव

श्री पंकज गुप्ता

श्री एम. जी. भावे
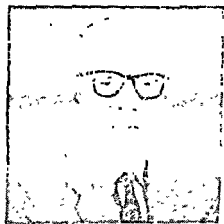
श्री ए. एन. घोष (अध्यक्ष, बंगाल क्रिकेट संघ; उपाध्यक्ष, भारतीय क्रिकेट नियंत्रण बोर्ड

अवैतनिक सचिव

श्री एम. चिन्नास्वामी
(सचिव, मैसूर राज्य क्रिकेट संघ; उपाध्यक्ष, भारतीय क्रिकेट नियंत्रण बोर्ड)

श्री एस. श्रीरमन
(सचिव, मद्रास क्रिकेट संघ)

अवैतनिक कोषाध्यक्ष

श्री जेड. आर. ईरानी
(वर्तमान अध्यक्ष, भारतीय क्रिकेट नियंत्रण बोर्ड)

श्री डी. पी. धानावाला

अवैतनिक संयुक्त सचिव

श्री टी. श्रीनिवासराघवन
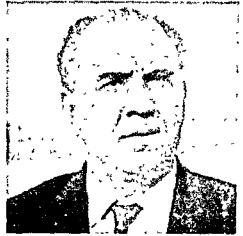
श्री राम प्रकाश मेहरा
(अध्यक्ष, दिल्ली व जिला क्रिकेट संघ;
उपाध्यक्ष, भारतीय क्रिकेट नियंत्रण बोर्ड)

अध्यक्ष, सदस्य संघ

प्रो. डी. बी. देवधर
(महाराष्ट्र)

श्री फकरूद्दीन अली अहमद
(असम)

श्री एच. डी. सिंह
(रेल्वे खेलकूद नियंत्रण बोर्ड)
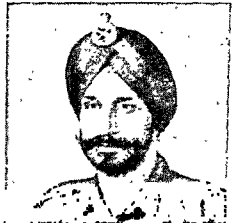
मेजर जनरल जगजीतसिंह आरोरा
(सेना खेलकूद नियंत्रण बोर्ड)

अध्यक्ष, सदस्य संघ

श्री जमतादास हरगा
(विदर्भ)

श्री एम. दत्ता रे
(अध्यक्ष, टेस्ट चयन समिति)

भारतीय क्रिकेट नियंत्रण बोर्ड

अवैतनिक संयुक्त सचिव

श्री एम. बी. एल. माथुर

सहायक सचिव

श्री एन. डी. करमारकर

बोर्ड के तत्वावधान में निम्नलिखित ट्रॉफियों के लिए प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं:—

रणजी ट्रॉफी:—

यह ट्रॉफी प्रतिवर्ष राष्ट्रीय विजेता दल को भेंट की जाती है। यह ट्रॉफी पटियाला के महाराजा सर भूपेन्द्र सिंह महेन्द्र बहादुर ने नवानगर के स्वर्गीय महाराजा सर रणजीत सिंहजी विभाजी की यादगार में दी थी। इस ट्रॉफी का मूल्य लगभग 7500 रुपये है।

दि इम्पीरियल टोबेको कम्पनी ट्रॉफी:—

यह ट्रॉफी प्रति वर्ष राष्ट्रीय क्रिकेट प्रतियोगिता के उपविजेता को प्रदान की जाती है। इसे 1946 में भारत की इम्पीरियल टोबेको कम्पनी लिमिटेड ने भेंट किया था। इसकी कीमत लगभग 1000 रुपये है।

तालिम ट्रॉफी

यह ट्रॉफी प्रति वर्ष रणजी ट्रॉफी प्रतियोगिता में पश्चिमी क्षेत्र की विजेता टीम को प्रदान की जाती है। इस ट्रॉफी को महाराष्ट्र क्रिकेट संघ ने अपने संस्थापक अध्यक्ष स्वर्गीय श्री टी० वी० तालिम की यादगार में भेंट किया था। यह करीब 1200 रुपये की कीमत की है।

मेवाड ट्रॉफी:—

यह प्रति वर्ष रणजी ट्रॉफी प्रतियोगिता में मध्य क्षेत्र की विजेता टीम को प्रदान की जाती है। यह ट्रॉफी मेवाड के महाराणा श्री भगवतसिंहजी ने मध्य क्षेत्र में क्रिकेट को प्रोत्साहन देने के लिए भेंट की थी। इसकी कीमत करीब 3500 रुपये है।

एम० डी० सौंदरराजन ट्रॉफी:—

यह ट्रॉफी प्रतिवर्ष रणजी ट्रॉफी प्रतियोगिता में दक्षिण क्षेत्र की विजेता टीम को दी जाती है। दक्षिण क्षेत्र में क्रिकेट को प्रोत्साहन देने के लिए मद्रास क्रिकेट संघ ने इसे भेंट किया था। इसकी कीमत करीब 750 रुपये है।

मोना मित्तर मेमोरियल चेलेंज कप:—

रणजी ट्रॉफी प्रतियोगिता में पूर्वी क्षेत्र के विजेता को प्रति वर्ष यह कप प्रदान किया जाता है। इसे बंगाल क्रिकेट संघ ने पूर्व क्षेत्र में क्रिकेट को बढ़ावा देने के लिए भेंट किया था। इसकी कीमत लगभग 3000 रुपये है।

जेड० आर० ईरानी ट्रॉफी:—

यह ट्रॉफी प्रति वर्ष राष्ट्रीय विजेता दल व शेष भारत की टीम के बीच हुए मैच में विजेता दल को प्रदान की जाती है। क्रिकेट को प्रोत्साहन

देने के लिए इसे मैसर्स स्पेन्सर्स लिमिटेड ने भेंट की। यह करीब 2000 रुपये की कीमत की है।

दलीपसिंह जी ट्रॉफी:—

यह क्षेत्रीय प्रतियोगिता मे विजेता टीम को दी जाती है। स्वर्गीय महाराजा साहब श्री दलीप सिंहजी की यादगार में भारतीय क्रिकेट नियन्त्रण बोर्ड ने यह प्रतियोगिता प्रारम्भ की है। इस ट्रॉफी की कीमत करीब 5000 रुपये है।

रोहिंटन बारिया ट्रॉफी:—

यह प्रतिवर्ष अखिल भारतीय विश्व विद्यालय प्रतियोगिता की विजेता टीम को प्रदान की जाती है। इसे मैसर्स बारिया ब्रदर्स ने अपने पुत्र की यादगार मे प्रदान किया था। यह करीब 3500 रुपये की है।

कूच बिहार ट्रॉफी:—

यह ट्रॉफी अखिल भारतीय स्कूल क्रिकेट प्रतियोगिता के विजेता दल को प्रदान की जाती है। इसे कूच बिहार के महाराजा ने स्कूलो मे क्रिकेट को प्रोत्साहन देने के लिए भेंट किया था। इसकी कीमत करीब 500 रुपये है।

सुन्दर ट्रॉफी:—

यह ट्रॉफी अखिल भारतीय क्रिकेट स्कूल प्रतियोगिता के उपविजेता टीम को भेंट की जाती है। इसे श्री पी० के० असर ने स्वर्गीय रणजी, स्वर्गीय नवाब पटौदी, स्वर्गीय एल० अमरसिंह और स्वर्गीय डी० डी० हिंडलेकर की यादगार में प्रदान किया था। इसकी कीमत करीब 1200 रुपये है।

प्रवीण ट्रॉफी:—

यह ट्रॉफी अखिल भारतीय स्कूल क्रिकेट प्रतियोगिता में पश्चिम क्षेत्र के विजेता दल को भेंट की जाती है। इसे संत रियासत की महारानी ने संत रियासत के स्वर्गीय महाराजा की याद मे भेंट किया था। इस ट्रॉफी की कीमत करीब 1000 रुपये है।

पंडित रामनाथ शील्ड:—

यह वैजयन्ती रणजी ट्रॉफी प्रतियोगिता मे उत्तर क्षेत्र के विजेता को भेंट की जाती है। इसे उत्तर पंजाब क्रिकेट संघ ने उत्तर क्षेत्र में क्रिकेट को बढ़ावा देने के लिए प्रदान किया था। इसकी कीमत करीब 1000 रुपये है।

भारतीय क्रिकेट नियंत्रण बोर्ड के सदस्य संघ

उत्तर क्षेत्र :

दिल्ली व जिला क्रिकेट संघ

दिल्ली में क्रिकेट संघ की स्थापना का विचार सर्व प्रथम श्री ए० एस० डी० मैलो ने प्रस्तुत किया। उन्होंने दिल्ली के व्यापारियों से चन्दा एकत्रित किया और श्री एफ० टी० जोन्स से जो उस समय सी० पी० डब्लू० डी० भारत सरकार, नई दिल्ली के मुख्य इंजीनियर थे, एक भूमि का खण्ड प्राप्त किया। इस संघ के उद्घाटन के बाद श्री जोन्स इसके प्रथम अध्यक्ष निर्वाचित हुए। इस संघ ने कोटला फिरोजशाह मैदान तैयार किया। इसमें स्वर्गीय महाराज कुमार विजयनगरम् ने एक पेवेलियन बनवाया जिसकी आधार शिला 10 फरवरी, 1930 को तत्कालीन वाइसराय एवं गवर्नर जनरल लार्ड विलिंगडन ने रखी।

यह संघ 1934-35 से नियमित रूप से रणजी ट्रॉफी प्रतियोगिता और अखिल भारतीय स्कूल क्रिकेट प्रतियोगिता में भाग लेता आ रहा है। इसने अनेक टेस्ट मैचों का सफलतापूर्वक आयोजन किया है। इस संघ के निम्न पदाधिकारी हैं:—

अध्यक्ष	: सरदार सुरजीत सिंह मजीठिया।
उपाध्यक्ष	: श्री पी० एल० मेहता
	: श्री एस० जी० बोसमल्लिक
अवैतनिक महा सचिव	: श्री राम प्रकाश मेहरा
अवैतनिक खेल सचिव	: श्री एम० बी० एल० माथुर
अवैतनिक मनोरंजन सचिव	: श्री आर० सरन
अवैतनिक कोषाध्यक्ष	: श्री मोहन लाल मेहरा
संस्थापक अध्यक्ष	: श्री एफ० टी० जोन्स
संस्थापक सचिव	: श्री नजीर हुसैन
पता	: फिरोजशाह कोटला मैदान, विलिंगडन पेवेलियन, नई दिल्ली।
तार	: "क्रिकेट", नई दिल्ली।
फोन	: 274514

उत्तर पंजाब क्रिकेट संघ

पंजाब मे प्रारम्भ में एक ही क्रिकेट संघ था किन्तु 1921 में इसका विभाजन दो स्वतन्त्र संघो मे हो गया—उत्तर पंजाब क्रिकेट संघ व दक्षिण पंजाब क्रिकेट संघ जिसका मुख्य कार्यालय पटियाला में था। दोनों ही संघों ने भारत में क्रिकेट के विकास और लोकप्रियता में मुख्य सहयोग दिया। किन्तु देश के विभाजन ने दोनो ही संघों को छिन्न-भिन्न कर दिया। क्रिकेट प्रेमियो ने इस धक्के को धैर्यपूर्वक सहन किया और 30 अक्टूबर, 1949 मे पूर्वी पंजाब क्रिकेट संघ का निर्माण किया जिसके अध्यक्ष मेजर जनरल एस० पी० पी० थोरट और सचिव श्री एन० आर० मोहला बने। कुछ समय पश्चात् इस संघ के कार्य का फिर से विभाजन हुआ जिसके फलस्वरूप इसको फिर दो संगठनो में बांटा गया—उत्तर पंजाब क्रिकेट संघ जिसका मुख्य कार्यालय जालंधर में रखा गया और दक्षिण पंजाब क्रिकेट संघ जिसका मुख्य कार्यालय पटियाला में रहा। श्री मोहला उत्तर पंजाब क्रिकेट संघ के सचिव पद पर बने रहे और अब भी वे इस पद पर कार्य कर रहे हैं।

यह संघ निरंतर रणजी ट्रॉफी और अखिल भारतीय स्कूल प्रतियोगिता में भाग लेता आ रहा है। इसने अनेक विदेशी भ्रमणकारी दलों के साथ मैचो का आयोजन भी किया है।

भारत के इस क्षेत्र में क्रिकेट की एक विशेषता यह रही है कि सन् 1924 से लेकर आज तक प्रति वर्ष एक मैच पंजाब विश्व विद्यालय क्रिकेट टीम और पंजाब राज्यपाल एकादश के बीच आयोजित हो रहा है। मेजर जनरल गुरबक्श सिंह इस संघ के अध्यक्ष हैं।

पता : 8/5, हरदयाल रोड, जालन्धर कैंट
तार : "ई पी सी ए", जालन्धर
फोन : 24।

रेल्वे खेल कूद नियन्त्रण बोर्ड

इस बोर्ड ने देश के क्रीड़ा क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। रेल्वे के अनेक खिलाड़ियों ने विभिन्न खेलों में विशेष योग्यता का परिचय दिया है। एफ० एफ० बीड़ी रेल्वे के प्रथम व्यक्ति हैं जिन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय क्रिकेट मे विशेष ख्याति प्राप्त की उन्होने मद्रास की ओर से खेलते हुए ऑक्सफोर्ड विश्व विद्यालय आर्थेटिक्स के विरुद्ध 1902 मे आठ विकेट लिए जिसके कारण यह टीम केवल 83 रन बना सकी।

1924 मे बम्बई, बड़ौदा और सेन्ट्रल इण्डिया रेल्वे क्रिकेट क्लब प्रथम बार अखिल भारतीय क्रिकेट प्रतियोगिता में सम्मिलित हुई, जो दिल्ली में हुई थी, और सरलता से विजय श्री प्राप्त की।

अवैतनिक सचिव, सदस्य संघ

श्री सुरेश साहु
(विदर्भ)

श्री एस. एम. बशीर
(उत्तर प्रदेश)

डॉ. एस. के. कौल
(मध्य प्रदेश)

श्री बी. डी. गौड़
(रेल्वे खेलकूद नियंत्रण बोर्ड)

श्री एच. आर. मोहला
(उत्तर पंजाब)

अवैतनिक सचिव, सदस्य संघ

श्री एन. सी. कोले
(बंगाल)

प्रो. पी. आर. करमारकर
(मराराष्ट्र)

श्री एन. एस. आर. पन्दलू
(आन्ध्र)

श्री के. डी. हजारिका
(असम)

रेल्वे खेल कूद नियन्त्रण बोर्ड जो कि 21 अखिल भारतीय संगठनों का सदस्य है और जो प्रति वर्ष 22 खेलों में अन्तर रेल्वे प्रतियोगिता का आयोजन करता है, भारतीय क्रिकेट नियन्त्रण योर्ड की वार्षिक सामान्य बैठक में उसका सदस्य बना। यह बैठक 1957 में जालंधर में हुई थी। अगले वर्ष से ही रेल्वे ने रणजी ट्रॉफी प्रतियोगिता में भाग लेना शुरु कर दिया।

रेल्वे खेल कूद नियन्त्रण बोर्ड ने 18, 19 और 20 मार्च 1960 को उत्तर रेल्वे स्टेडियम दिल्ली मे बम्बई और शेष भारत एकादश के बीच क्रिकेट मैच का आयोजन कर रणजी ट्रॉफी के लिए राष्ट्रीय क्रिकेट प्रतियोगिता की रजत जयन्ती का समारोह मनाया।

इस संघ के निम्नलिखित पदाधिकारी है:—

संरक्षक	: श्री कृपाल सिंह
अध्यक्ष	: श्री एच० डी० सिंह
उपाध्यक्ष	: श्री पी० सहाय
सचिव	: श्री बी० डी० गौड़
कोषाध्यक्ष	: श्री एम० सी० सरीन
संयुक्त सचिव	: श्री० पी० के० माथुर
सहायक सचिव	: श्री० एस० एन० गोपाल
	: श्री पृथ्वीराज अयरोल
पता	: रेल भुवन, रायसीना रोड, नई दिल्ली
तार	: "रेल स्पोर्ट्स", नई दिल्ली।
फोन	: 34733।

सेना खेल-कूद नियन्त्रण बोर्ड

सेना खेल-कूद नियन्त्रण बोर्ड एक अन्तर-सेना निकाय है जो सशस्त्र सेना के तीनों विभागों यानी वायु सेना, जल सेना और थल सेना के सैनिकों के लिये खेल का आयोजन करता है।

इस बोर्ड का संगठन सर्व प्रथम 1919 में थल सेना खेल कूद बोर्ड (आर्मी स्पोर्टस कंट्रोल बोर्ड) के रूप में हुआ था। अप्रैल 1945 मे इसका पुनर्गठन किया गया और इसका नाम सेना खेल-कूद नियंत्रण बोर्ड रखा गया। इसका सचिवालय जून 1954 तक सामान्य अमला शाखा, सेना मुख्यालय (जनरल स्टाफ ब्रांच आर्मी हैडक्वार्टर्स) में ही रहा।

जून, 1954 में इस बोर्ड के प्रशासनिक ढांचे में फिर से परिवर्तन किया गया और यह निश्चय किया गया कि इस बोर्ड के अध्यक्ष और सचिव सेना के तीनों अंगो से बारी बारी से लिए जायेंगे और इनका कार्य काल 4 वर्ष का रहेगा।

इस बोर्ड का अध्यक्ष प्रधान अमला अधिकारी (प्रिंसिपल स्टाफ आफीसर) के पद का होता है। अध्यक्ष, सचिव और सहायक सचिव के अतिरिक्त सेना के तीनों अंगों से एक-एक प्रतिनिधि इस बोर्ड के सदस्य होते हैं।

इस बोर्ड के द्वारा अनेक समितियाँ गठित की गई हैं जो विभिन्न खेलों के आयोजन और नियन्त्रण आदि के विषय में प्रशासनिक सलाह देती हैं। इन समितियों के अतिरिक्त सेना के प्रत्येक अंग का अपना एक-एक मंडल है जो इस बोर्ड की देख-रेख मे कार्य करता है और अपने विभाग में खेल-कूद प्रतियोगिताओं का आयोजन करता है।

सेना की टीम रणजी ट्रॉफी प्रतियोगिता में नियमित रूप से 1949-50 से सम्मिलित हो रही है और 1956-57 और 1957-58 में उपविजेता रही है।

बोर्ड के निम्नलिखित पदाधिकारी हैं:—

अध्यक्ष : मेजर जनरल जगजीतसिंह अरोरा
थल सेना सदस्य : कर्नल बी० पी० सिंह
जल सेना सदस्य : कैप्टेन पी० एन० माथुर
वायु सेना सदस्य : एअर कमांडर सी० एल० मेहता
सचिव : ले० कर्नल हेमू अधिकारी
सहायक सचिव : लेफ्टिनेंट केहर सिंह
पता : सशस्त्र सेना मुख्यालय, डी० एच० क्यू०, नई दिल्ली।
तार : "सर्विसेज स्पोर्टस", नई दिल्ली।
फोन : 34635 व 31938।

दक्षिण पंजाब क्रिकेट संघ

इस संघ की स्थापना 1921 मे स्वर्गीय पटियाला महाराजाधिराज श्री भूपेन्द्र सिंहजी के कृपापूर्ण संरक्षण के कारण हुई। यह संघ 1934-35 से रणजी ट्रॉफी में भाग लेता आ रहा है। यह अखिल भारतीय स्कूल क्रिकेट प्रतियोगिता मे भी नियमित रूप से सम्मिलित होता है। 1947 में देश के विभाजन के फलस्वरूप इस संघ के कार्य-क्षेत्र में कुछ परिवर्तन करना पड़ा।

पता : रूरकेरा हाउस, पटियाला,
तार : "क्रिकेट", पटियाला।

जम्मू व काश्मीर क्रिकेट संघ

इस संघ का गठन 1957 में हुआ और सितम्बर 1958 में सिकन्दराबाद मे हुई भारतीय क्रिकेट नियन्त्रण बोर्ड की वार्षिक बैठक में वह

बोर्ड का सदस्य बना लिया गया। 1959 से इस संघ ने रणजी ट्रॉफी प्रतियोगिता मे भाग लेना शुरू कर दिया था। अब यह अखिल भारतीय स्कूल क्रिकेट प्रतियोगिता में भी भाग लेता है।

डॉ० कर्णसिंह इस संघ के मुख्य संरक्षक हैं, और यह उन्हीं के संरक्षण का फल है कि क्रिकेट का खेल, जो 1947 के बाद इस राज्य मे करीब समाप्त-सा हो गया था फिर से चालू किया जा सका। दूसरे राज्यों के विपरीत यहाँ क्रिकेट अप्रैल से लेकर अक्तूबर तक चलता है।

पता : द्वारा एस० पी० कालेज, श्रीनगर

फोन : 452

भारत व लंका का अन्तर-विश्व विद्यालय खेल-कूद बोर्ड

इस अंतर- विश्वविद्यालय खेल-कूद बोर्ड की स्थापना 1929-30 में सर्व प्रथम अन्तर-विश्वविद्यालय एथलेटिक बोर्ड के रूप में पटना मे हुई थी। यह एथलेटिक बोर्ड एक स्वतन्त्र संगठन था। इस बोर्ड के अन्तर्गत प्रारम्भ में क्रिकेट, फुटबाल, हाकी तथा टेनिस की प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता था। धीरे-धीरे यह बोर्ड अधिक सशक्त बनता गया और 1941 मे इसने अन्तर विश्व विद्यालय खेल-कूद बोर्ड का रूप धारण कर लिया जिसकी पहली बैठक 24 मार्च 1941 को लखनऊ में हुई। इस बैठक में विभिन्न खेलों की प्रतियोगिताओ के स्थान, पात्रता खर्च, ट्रॉफियों और पुरस्कार आदि के सम्बन्ध में नियम बनाए गए। इस बोर्ड को अन्तर विश्वविद्यालय खेल-कूद प्रतियोगिताओं के आयोजन व नियन्त्रण के सम्पूर्ण अधिकार दिये गये। अब यह बोर्ड 53 विश्वविद्यालयों का एक शक्तिशाली तथा पूर्ण विकसित संगठन बन चुका है जो 15 खेल-कूद प्रतियोगिताओं का आयोजन करता है। प्रत्येक सदस्य विश्वविद्यालय इस बोर्ड को प्रति वर्ष 350 रुपये सदस्यता शुल्क के रूप में देता है।

इसके निम्नलिखित पदाधिकारी है:—

अध्यक्ष	: डाक्टर पी० पारिजा
सचिव	: डाक्टर बी० डी० लाडोइया
सहायक सचिव	: श्री जी० एम० सीविया
संस्थापक अध्यक्ष	: डाक्टर जाकिर हुसैन
संस्थापक सचिव व कोषाध्यक्ष	: प्रो० बी० के० अय्यापन पलाई

पता : राऊज एवेन्यू (तिलक पुल के समीप)
नई दिल्ली।

तार : "यूनी बोर्ड", नई दिल्ली।

फोन : 273037।

पूर्व क्षेत्र

बंगाल क्रिकेट संघ

जब 1926 में श्री गिलीगेन के नेतृत्व में प्रथम एम० सी० सी० की टीम भारत भ्रमण पर आई तब यह अनुभव किया गया कि भारत में भी क्रिकेट नियन्त्रण बोर्ड की स्थापना की जाए। इस हेतु बम्बई में एक गोष्ठी की गई जिसमें एक अस्थायी केन्द्रीय बोर्ड की स्थापना की गई और यह निश्चय किया गया कि प्रान्तीय संघो की स्थापना की जाए। कलकत्ता क्रिकेट क्लब ने पहल की और 3 फरवरी 1928 को एक ऐसे संघ की स्थापना की गई जिसका नाम "क्रिकेट एसोशियेशन ऑफ बंगाल एण्ड असम" रक्खा गया। 1943 मे असम ने अपना अलग संघ बना लिया।

बगाल क्रिकेट संघ का बंगाल जीमखाना से भी सम्बन्ध था और कई वर्षों तक बंगाल जीमखाना के पदाधिकारी ही इसका नियन्त्रण करते रहे और विभिन्न बाहरी मंडलों एवं सभाओ में इसका प्रतिनिधित्व करते रहे। बाद मे जीमखाना और बंगाल क्रिकेट बोर्ड के बीच बोर्ड के नियन्त्रण के सम्बन्ध मे कुछ विवाद खडा हो गया जो लगभग तीन वर्षो के बाद निपटा और 1943 में नए बंगाल क्रिकेट सघ का गठन किया गया जिसके निम्नलिखित पदाधिकारी थे:—

अध्यक्ष	: श्री जे० सी० मुकर्जी
उपाध्यक्ष	: श्री ए० ए० लैसली
अवैतनिक सचिव	: श्री पी० गुप्ता
अवैतनिक कोषाध्यक्ष	: श्री ए० एन० घोष

बंगाल क्रिकेट सघ प्रति वर्ष दो 'लीग' प्रतियोगिताओं का आयोजन करता है—सीनियर व जूनियर। इनमें 80 से अधिक टीमें भाग लेती हैं। इसके अतिरिक्त यह एक "नाक आउट" प्रतियोगिता का भी आयोजन करता है जिसमे 40 से ज्यादा टीमें भाग लेती हैं। स्कूलों के लिये अलग से एक 'लीग' प्रतियोगिता आयोजित की जाती है। बंगाल 1934-35 से रणजी-ट्रॉफी प्रतियोगिता में भाग लेता आ रहा है और 1938-39 मे वह राष्ट्रीय विजेता रहा था।

इसके निम्नलिखित पदाधिकारी हैं:—

अध्यक्ष	: श्री ए० एन० घोष
उपाध्यक्ष	: श्री ए० के० बोस
	: श्री डी० एन० डे
अवैतनिक सचिव	: श्री एन० सी० कोले
संस्थापक अध्यक्ष	: श्री जस्टिस एच० जी० पीयर्सन

संस्थापक अवैतनिक सचिव : श्री एम० रोबर्टसन
संस्थापक कोषाध्यक्ष : श्री डब्ल्यू० आर० एफ० रोबिन्सन
अवैतनिक कोषाध्यक्ष : श्री एन० एल० [illegible]
अवैतनिक सहायक सचिव : श्री एस० पुरी [illegible]
पता : ईडन गार्डेन्स, कलकत्ता 21
तार : "क्रिकेट", कलकत्ता
फोन : 232447 ।

बिहार क्रिकेट संघ

इस संघ ने सर्वप्रथम 1936-37 में रणजी ट्रॉफी प्रतियोगिता में भाग लिया और तब से लेकर अब तक निरन्तर इस प्रतियोगिता में शामिल होता आ रहा है। यह अखिल भारतीय स्कूल क्रिकेट प्रतियोगिता में भी भाग लेता है। इस संघ की स्थापना 1935 में श्री एच० एम० हेमैन की अध्यक्षता में हुई थी।

इस संघ के निम्नलिखित पदाधिकारी हैं:—

अध्यक्ष : श्री आर० बोग्नर
अवैतनिक सचिव : श्री पेरूदत्त
अवैतनिक कोषाध्यक्ष : श्री एन० सी० दास
पता : 'अष्टराग', 28 कॉन्ट्रैक्टर्स एरिया, जमशेदपुर—1
फोन : 2607 ए।

असम क्रिकेट संघ

असम क्रिकेट संघ की स्थापना 30 नवम्बर 1947 को गौहाटी में हुई थी। उस समय इसके पदाधिकारी निम्नलिखित थे—

मुख्य संरक्षक : श्री अकबर हैदरी
अध्यक्ष : लोकप्रिय गोपीनाथ बार्डोलाई
उपाध्यक्ष : श्री एम० एम० अमीन
: डाक्टर के० सी० बरुआ
अवैतनिक सचिव : श्री पुलिनचन्द्र दास
अवैतनिक कोषाध्यक्ष : श्री अन्नाराम बरुआ
अवैतनिक सहायक सचिव : श्री सुरंजन चक्रवर्ती

इस संघ के अन्तर्गत 12 जिले हैं। इन जिलों के उपसंघ अपने-अपने क्षेत्र में क्रिकेट प्रतियोगिताएं आयोजित करते हैं। यह संघ "नुरुद्दीन कप प्रतियोगिता" का आयोजन करता है।

इस संघ के निम्नलिखित पदाधिकारी हैं—

अध्यक्ष	: श्री एफ० ए० अहमद
उपाध्यक्ष	: श्री आर० जी० बरुहा
	: श्री एस० पी० बरुहा
अवैतनिक सचिव	: श्री के० डी० हजारिका
अवैतनिक कोषाध्यक्ष	: श्री जे० के० बरुहा
अवैतनिक सहायक सचिव	: श्री एस० बुरागाहैन
पता	: उजन बाजार, लेम्ब रोड, गौहाटी

उड़ीसा क्रिकेट संघ

उड़ीसा क्रिकेट संघ की स्थापना 1949 में हुई और श्री एच० के० मेहताव इसके प्रथम अध्यक्ष तथा श्री बी० सी० महन्ती इसके प्रथम अवैतनिक सचिव बनाए गये। 1949 मे इस संघ ने पहली बार रणजी ट्रॉफी प्रतियोगिता मे भाग लिया और तब से अभी तक लगातार इस प्रतियोगिता में सम्मिलित होता आ रहा है। अखिल भारतीय स्कूल क्रिकेट प्रतियोगिता में भी यह संघ बराबर सम्मिलित होता आ रहा है।

पता : बाराबत्ती स्टेडियम, कटक
फोन : 461

नेशनल क्रिकेट क्लब

नेशनल क्रिकेट क्लब की स्थापना 15 अगस्त, 1950 को हुई। इसी वर्ष इस संघ ने कलकत्ता क्रिकेट संघ से जमीन खरीदी और अंतरंग स्टेडियम बनाना प्रारम्भ किया और ईडन गार्डन्स कलकत्ता में रणजी स्टेडियम का निर्माण पूरा किया। यह भारतीय क्रिकेट नियन्त्रण बोर्ड का सदस्य अवश्य है पर उसके द्वारा आयोजित किसी भी प्रतियोगिता में भाग नहीं लेता।

इस संघ के निम्नलिखित पदाधिकारी हैं:—

अध्यक्ष	: श्री ए० के० सरकार
उपाध्यक्ष	: कूच विहार के महाराजा श्री जगद्वीपेन्द्र नारायण
	: भूपबहादुर
	: श्री नीरेन डे
सचिव	: श्री कल्याण सेन
कोषाध्यक्ष	: श्री ए० के० सेन
संस्थापक अध्यक्ष	: श्री जे० सी० मुकर्जी
संस्थापक सचिव	: श्री पकज गुहा
पता	: रणजी स्टेडियम, ईडन गार्डन्स, कलकत्ता—21
तार	: "स्टेडियम", कलकत्ता
फोन	: 232446

दक्षिण क्षेत्र

मद्रास क्रिकेट संघ

इस संघ की स्थापना 1930 में हुई थी और तभी से यह रणजी ट्रॉफी प्रतियोगिता में नियमित रूप से भाग ले रहा है। यह संघ 1954-55 में राष्ट्रीय प्रतियोगिता में विजयी होने का सौभाग्य भी प्राप्त कर चुका है। अखिल भारतीय स्कूल क्रिकेट प्रतियोगिता में भी नियमित रूप से सम्मिलित होता रहा है।

इस संघ के तत्वावधान में निम्नलिखित प्रतियोगिताओं का मद्रास राज्य में आयोजन किया जाता है:—

(1) लीग प्रतियोगिता : इस प्रतियोगिता के आयोजन के हेतु संघ तीन विभागों में विभाजित किया गया है। प्रथम व द्वितीय विभाग में तीन-तीन क्षेत्र हैं व तृतीय विभाग में दो क्षेत्र हैं। प्रत्येक विभाग में बारह-बारह दल हैं। प्रति वर्ष इस प्रतियोगिता के अन्तर्गत 528 मैच खेले जाते हैं।

(2) बूची बाबू मेमोरियल वरिष्ठ प्रतियोगिता

(3) बी० सुब्रह्मण्यम मेमोरियल वरिष्ठ प्रतियोगिता

(4) सिल्वर जुबली ट्रॉफी के लिये एम० सी० सी० स्कूल प्रतियोगिता

(5) शहर बनाम जिला स्कूल प्रतियोगिता

(6) अन्तर-जिला स्कूल प्रतियोगिता

(7) अन्तर-जिला वरिष्ठ प्रतियोगिता

(8) शहर बनाम जिला प्रतियोगिता

(9) पी० राम स्वामी चेट्टि मेमोरियल शील्ड प्रतियोगिता : इसके लिये शहर के कॉलिजों व जिलों के कॉलेजों के बीच मैच होता है।

(10) एम० जे० गोपालन मैच : इस मैच में मद्रास राज्य की टीम श्री लंका की टीम से प्रति वर्ष एक मैच खेलती है। एक वर्ष यह मैच मद्रास में होता है तो अगले वर्ष कोलम्बो में।

यह संघ स्कूल तथा कॉलेज के छात्रों के लिये नियमित रूप से प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन करता है।

इस संघ के निम्नलिखित पदाधिकारी हैं:—

अध्यक्ष	: श्री एम० ए० चिदम्बरम्
उपाध्यक्ष	: श्री बी० पट्टाभिरामन
	: श्री एम० जे० गोपालन

	: श्री आर० वी० मलगेसन
	डॉ० वी० एन० सी० राव
अवैतनिक सचिव	: श्री एस० श्रीरामन
अवैतनिक कोषाध्यक्ष	: श्री एस० अन्नादुरै
अवैतनिक सहायक सचिव	: श्री वी० पी० राघवन्
संस्थापक अध्यक्ष	: डॉ० पी० सुब्बारायन
संस्थापक सचिव	: श्री रंगाराव
पता	: कॉरपोरेशन स्टेडियम, पार्क टाउन, मद्रास—3
तार	: "क्रिकेट", मद्रास
फोन	: 55720

मैसूर राज्य क्रिकेट संघ

मैसूर राज्य क्रिकेट संघ का निर्माण 1933-34 में हुआ। इसके लिए प्रो० जे० सी० रोलो, श्री पी० मेदापा, कैप्टेन टी० मुरारि, मेजर वाई० के० मूर्ति, श्री एम० जी० विजयसारथी और कुछ अन्य व्यक्ति धन्यवाद के पात्र हैं। इस संघ के जन्म का तात्कालिक कारण यह था कि एम० सी० सी० की टीम उस समय भारत के दौरे पर थी और उसका एक मैच बंगलौर में आयोजित करना था। प्रो० जे० पी० रोलो इसके संस्थापक अध्यक्ष और श्री पी० मेदापा इसके संस्थापक सचिव थे।

1934-35 से यह संघ बराबर रणजी ट्रॉफी प्रतियोगिता में भाग ले रहा है। इस संघ ने हर विदेशी टीम के विरुद्ध मैचों का आयोजन किया है जिसमें 1964 में श्री लंका के विरुद्ध आयोजित अनौपचारिक टैस्ट मैच भी शामिल है। 1959 मे इस संघ ने अपनी शानदार रजत जयन्ती मनाई।

इस संघ के निम्नलिखित पदाधिकारी हैं:—

अध्यक्ष	: श्री एस० ए० श्रीनिवासन
उपाध्यक्ष	: कैप्टेन एम० जी० विजयसारथी
अवैतनिक सचिव	: श्री एम० चिन्नास्वामी
अवैतनिक कोषाध्यक्ष	: श्री के० सी० देसाई
पता	: सैन्ट्रल कॉलिज, ओल्ड बोयज एसोसियेशन, बंगलौर 9
फोन :	24214

हैदराबाद क्रिकेट संघ

यह संघ भारत में सबसे पहले बनने वाले संघों मे से एक है। यह 1934-35 से नियमित रूप से रणजी ट्रॉफी प्रतियोगिता मे सम्मिलित होता

आ रहा है। यह अखिल भारतीय स्कूल क्रिकेट प्रतियोगिता में भी लगातार भाग लेता आ रहा है। इस संघ द्वारा 1955-56 में भारत और न्यूजीलैंड के बीच टैस्ट मैच और 1965 में भारत व लंका के मध्य अनौपचारिक टैस्ट मैच का आयोजन किया गया।

इस संघ द्वारा प्रति वर्ष प्रसिद्ध मोइनुद्दौला स्वर्ण कप प्रतियोगिता का संचालन किया जाता है। इस संघ के पदाधिकारी निम्नलिखित हैं:—

संस्थापक अध्यक्ष	: नवाब तुरब यार जंग
संस्थापक उपाध्यक्ष	: कर्नल अलीरजा
संस्थापक अवैतनिक सचिव व कोषाध्यक्ष	: श्री एस० एम० हादी
पता	: महबूबिया ग्रैंड स्टैंड, फतेह मैदान, हैदराबाद-1
तार	: "हैक्रिक", हैदराबाद
फोन	: 32513

केरल क्रिकेट संघ

इस संघ का नाम पहले ट्रावनकोर कोचीन क्रिकेट संघ था किन्तु केरल राज्य के बन जाने से यह नाम बदल दिया गया। यह संघ 1951 से रणजी ट्रॉफी प्रतियोगिता में सम्मिलित हो रहा है। यह अखिल भारतीय स्कूल क्रिकेट प्रतियोगिता में भी भाग लेता है।

इसके निम्नलिखित पदाधिकारी हैं:—

अध्यक्ष	: श्री एम० के० के० नायर
अवैतनिक सचिव	: श्री डी० हरि
	: श्री डी० एस० मणि
अवैतनिक कोषाध्यक्ष	: श्री आर० गोपीनाथ
पता	: संस्कृत कालेज मद्रालयम्, कालेज रोड, त्रिपुनितुरा
फोन :	: 576

आन्ध्र क्रिकेट संघ

इस संघ की स्थापना 6 फरवरी 1953 को हुई और इसके अन्तर्गत आन्ध्र प्रदेश के 12 जिले आते हैं। स्वर्गीय महाराजकुमार विजयनगरम् इसके संरक्षक थे और वे कुछ वर्षों तक इसके अध्यक्ष भी रहे। यह भारतीय क्रिकेट बोर्ड द्वारा आयोजित सब प्रतियोगिताओं में सम्मिलित होता है।

इसके निम्नलिखित पदाधिकारी हैं:—

अध्यक्ष	: आल्लपल्ली के राजा
उपाध्यक्ष	: श्री एम० आर० सी० अप्पाराव

	: श्री याई० ग्रवधय्या
	: श्री जे०.चन्द्रमौलि
	: श्री वी० एस० वी० प्रसाद
	: श्री एस० याई० फोटवाल
अवैतनिक सचिव व कोषाध्यक्ष	: श्री एन० एस० आर० पन्तुलु

कर्नल सी० के० नायुडु इसके संस्थापक अध्यक्ष थे, श्री सी० शंकरराव और श्री बी० रामचन्द्र राव संस्थापक अवैतनिक सचिव थे और श्री एफ० विन्सुटेनले इसके संस्थापक कोषाध्यक्ष थे।

पता : 'श्री सदन", कोत्तपेट, गुंटूर—1

मध्य क्षेत्र

उत्तर प्रदेश क्रिकेट संघ

इस संघ का निर्माण चौथे दशक में हुआ और 22 अक्टूबर 1955 को समिति पंजीयन अधिनियम (1860 का 21 वां) के अन्तर्गत इसका पंजीकरण हुआ। संघ के मुख्य संरक्षक विजयनगर के महाराज कुमार डा० विजयानन्द थे जो 1948 से 1964 तक इस संघ के अध्यक्ष भी रहे। विजयनगरम् महाराजकुमार के अतिरिक्त महाराजा बलरामपुर, महाराजा बनारस, महाराजा टेहरी गढवाल, राजासाहब पीलीभीत और श्री पदमपत सिंघानिया भी इस संघ के संरक्षक रहे हैं।

यह संघ 1934-35 से नियमित रूप से रणजी ट्रॉफी प्रतियोगिता और अखिल भारतीय स्कूल क्रिकेट प्रतियोगिता में सम्मिलित होता आ रहा है। इस संघ ने भ्रमण पर आने वाली सभी विदेशी टीमों के मैचो का और कुछ टैस्ट मैचों का भी आयोजन किया है।

इस संघ के पदाधिकारियों के नाम हैं:—

अध्यक्ष	: ए० सी० चैटर्जी
उपाध्यक्ष	: डा० गौरी हरि सिंघानिया
	: श्री बी० मुकर्जी
	: श्री वीरेन्द्र स्वरूप
अवैतनिक सचिव	: श्री एस० एम० बशीर
अवैतनिक संयुक्त सचिव	: श्री डी० एस० पाण्डे
अवैतनिक कोषाध्यक्ष	: श्री राजा राम
पता	: कमता टावर, कानपुर
तार	: "बशीर", कानपुर
फोन	: 32532

मध्य प्रदेश क्रिकेट

इस संघ की स्थापना 1932 में हुई थी और तब इसका नाम मध्य भारत क्रिकेट संघ था। 1934-35 से यह संघ नियमित रूप से रणजी ट्रॉफी प्रतियोगिता में सम्मिलित हो रहा है। 1940 में होल्कर क्रिकेट संघ का गठन हुआ और तब इस संघ का कार्यभार होल्कर क्रिकेट संघ द्वारा ले लिया गया। इस संघ के संस्थापक स्वर्गीय महाराजा यशवन्तराव होल्कर थे। इस संघ ने भारतीय क्रिकेट में प्रसंशनीय स्थान प्राप्त किया है तथा चार बार यह संघ रणजी ट्रॉफी में राष्ट्रीय विजेता होने का श्रेय प्राप्त कर चुका है।

मध्य भारत प्रान्त के निर्माण के बाद होल्कर क्रिकेट संघ का नाम बदलकर मध्य भारत क्रिकेट संघ हो गया। जब 1956 में राज्यों का पुनर्गठन हुआ तब मध्य प्रदेश राज्य की स्थापना हुई और इसी के साथ इस संघ का नाम मध्य प्रदेश क्रिकेट संघ हो गया। इस संघ को विदेशों से आने वाली अधिकांश टीमों के विरुद्ध मैचों के आयोजन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

इस संघ के निम्नलिखित पदाधिकारी हैं:—

अध्यक्ष	: पद्म भूषण पं० कुन्जी लाल दुबे
उपाध्यक्ष	: पद्म भूषण कर्नल सी० के० नायुडू
	: श्री दीन दयाल
	: श्री इन्द्रजीत सिंह
	: श्री एच० एन० श्रीवास्तव
	: श्री एम० एन० कौल
चेयरमैन	: श्री परमानन्द भाई पटेल
अवैतनिक सचिव	: श्री एस० के० कौल
अवैतनिक कोषाध्यक्ष	: प्रो० एन० एस० दुबे
अवैतनिक संयुक्त सचिव	: श्री एन० दत्तात्रेय
	: कैप्टेन सी० टी० सर्वटे

राजस्थान क्रिकेट संघ

इस संघ की स्थापना 1931 में अजमेर में हुई और तब यह राजपूताना क्रिकेट संघ के नाम से पुकारा जाता था। यह संघ 1935-36 से रणजी ट्रॉफी प्रतियोगिता में सम्मिलित होने लगा। इस संघ द्वारा अनेक विदेशी भ्रमणकारी टीमों के मैचों का आयोजन किया गया। अजमेर में इस संघ द्वारा ही लार्ड टेनीसन की टीम भारत में प्रथम बार परास्त हुई थी।

1956 में इस संघ के मुख्य कार्यालय का स्थानान्तरण अजमेर से उदयपुर हो गया। 1956 में मेवाड़ के महाराणा भगवतसिंहजी इसके अध्यक्ष बने और अभी तक इस पद को सुशोभित किए हुए हैं। महाराणा साहब ने क्रिकेट को राजस्थान में लोकप्रिय बनाने तथा उसमें नव जीवन डालने के लिये अथक परिश्रम किया। उन्हीं के प्रयत्नों से स्वर्गीय राजकुमार दलीपसिंहजी 1959 में राजस्थान के नवयुवक खिलाड़ियों को गुरू मंत्र देने के लिये उदयपुर पधारे जिससे इन नवयुवक खिलाड़ियों को खेल की बारीकियां जानने का अवसर प्राप्त हुआ। 1959 में इस संघ का नाम राजस्थान क्रिकेट संघ हो गया।

इस संघ के पदाधिकारी है:—

अध्यक्ष	: मेवाड़ के महाराणा श्री भगवतसिंहजी
उपाध्यक्ष	: बीकानेर के महाराजा करणीसिंहजी
	: श्री पी० एम० रूंगटा
	: श्री जे० टी० एम० गिब्सन
अवैतनिक सचिव	: प्रो० एल० एन० माथुर
अवैतनिक कोषाध्यक्ष	: श्री एस० के० रूंगटा
अवैतनिक सहायक सचिव	: श्री किशन रूंगटा
पता	: भूपाल नोबल्स कॉलिज, उदयपुर।
तार	: "नोबल्स कॉलेज", उदयपुर
फोन	: 685 व 781

विदर्भ क्रिकेट संघ

15 अगस्त 1934 को मध्य प्रान्त व बरार क्रिकेट संघ के नाम से इस संघ की स्थापना हुई थी। 1948 में इस संघ का नाम मध्य प्रदेश क्रिकेट संघ कर दिया गया। परन्तु राज्यों के पुनर्गठन के फलस्वरूप 1957 में इसका नाम विदर्भ क्रिकेट संघ रखा गया। इस संघ के संस्थापक अध्यक्ष श्री चार्ल्स चीतम और संस्थापक अवैतनिक सचिव श्री सिद्दीक अली खाँ थे।

यह संघ विदर्भ प्रदेश के 8 जिलों में क्रिकेट खेल का नियन्त्रण करता है। यह संघ रणजी ट्रॉफी प्रतियोगिता के समारम्भ (1934-35) से ही नियमित रूप से इसमें सम्मिलित होता रहा है। इस संघ ने विदेशी भ्रमणकारी टीमों के विरुद्ध मैचों का आयोजन किया है। इस संघ के पास अपना अति सुन्दर तथा विशाल क्रीड़ास्थल है जिसमें दर्शकों के लिये शानदार मंडप आदि का निर्माण किया हुआ है। इस संघ के 325 से अधिक सदस्य हैं तथा 40 संस्थाएँ इससे सम्बद्ध हैं।

इस संघ के वर्तमान पदाधिकारी हैं:—

अध्यक्ष	: श्री जमुनादास डागा
उपाध्यक्ष	: श्री एम० डी० धनवते
अवैतनिक सचिव	: श्री सुरेश साहू
अवैतनिक कोषाध्यक्ष	: श्री रमेश मानकेश्वर
पता	: सिविल लाइन्स, नागपुर
तार	: "क्रिकेट", नागपुर
फोन	: 5741

पश्चिम क्षेत्र

बम्बई क्रिकेट संघ

बम्बई प्रान्तीय क्रिकेट संघ की स्थापना अप्रैल 1930 में हुई। आने वाले वर्षों में गुजरात, महाराष्ट्र और पश्चिमी भारत ने अपने-अपने संघ बना लिए और भारतीय क्रिकेट नियन्त्रण बोर्ड की सदस्यता प्राप्त करली। इसके फलस्वरूप बम्बई प्रान्तीय क्रिकेट संघ का नाम बम्बई क्रिकेट संघ हो गया।

यह संघ सन् 1934-35 से रणजी ट्रॉफी प्रतियोगिता में भाग ले रहा है। इस संघ को इस प्रतियोगिता में प्रथम राष्ट्रीय विजेता होने का श्रेय प्राप्त है। 1934-35 से लेकर 1964-65 तक यह संघ सोलह बार राष्ट्रीय विजेता होने का सम्मान प्राप्त कर चुका है। अखिल भारतीय स्कूल क्रिकेट प्रतियोगिता में भी इस संघ का स्थान ऊँचे दर्जे का रहा है। इस प्रतियोगिता के शुरू होने के समय से ही संघ इसमें सम्मिलित होता आ रहा है। बम्बई ने ही भारत को सबसे अधिक टैस्ट खिलाड़ी प्रदान किये हैं।

इस संघ ने 1948 में डाक्टर एच० डी० कांगा की स्मृति मे एक "लीग" प्रतियोगिता आरम्भ की जो बहुत लोकप्रिय है। इस प्रतियोगिता के लिये बम्बई को पाँच विभागों में बांटा गया है। यह प्रतियोगिता प्रति वर्ष जुलाई से लेकर अक्टूबर तक खेली जाती है। इस संघ ने एक पुस्तकालय भी खोल रखा है जिसका नाम "डाक्टर एच० डी० कांगा स्मारक पुस्तकालय" है।

इस संघ के निम्नलिखित पदाधिकारी हैं:—

अध्यक्ष	: श्री एस० के० वनखेडे
अवैतनिक सचिव	: श्री आर० जे० धारत
	: प्रो० एम० वी० चांदगडकर
पता	: ब्रेबॉर्न स्टेडियम, उत्तर स्टैंड, बम्बई
तार	: "बोमक्रिक", बम्बई
फोन	: 39585

भारतीय क्रिकेट क्लब (सीमित)

(क्रिकेट क्लब ऑफ इण्डिया लिमिटेड)

यह क्लब भारत के प्रमुख क्लबों में से एक है और विश्व में अपने प्रकार की एक सर्वोत्तम क्लब होने का दावा आसानी से कर सकती है। प्रसिद्ध ब्रेबॉर्न स्टेडियम इसी की सम्पत्ति है। यह भारतीय क्रिकेट नियंत्रण बोर्ड की सदस्य तो है परन्तु बोर्ड द्वारा आयोजित किसी प्रतियोगिता मे सम्मिलित नहीं होती; हालांकि इसने विदेशों से भारत भ्रमण पर आई कई टीमों के विरुद्ध मैच आयोजित किए हैं।

इस क्लब की स्थापना 8 नवम्बर, 1933 को हुई। श्री आर० ई० ग्रांट गोवन इस क्लब के संस्थापक अध्यक्ष, श्री ए० एस० डीमैलो संस्थापक अवैतनिक सचिव और श्री जेड० आर० ईरानी इसके संस्थापक कोषाध्यक्ष थे।

अपने संस्थापक अवैतनिक सचिव की यादगार मे इस क्लब ने एक बहुत ही सुन्दर "एन्थोनी डी-मैलो ट्रॉफी" भारतीय नियन्त्रण बोर्ड को भेंट की। यह ट्रॉफी अंतर्राष्ट्रीय टैस्ट श्रृंखला के विजयी दल को प्रदान की गई। (भारत वि० न्यूजीलैंड 1965)

इस क्लब के अध्यक्ष श्री होमी मोदी हैं और सचिव श्री के० के० तारापोर।

पता : क्रिकेट क्लब ऑफ इण्डिया लिमिटेड ब्रेबॉर्न स्टेडियम, पोस्ट बोक्स 930, बम्बई

तार : "स्टेडियम", बम्बई

फोन : 246201—2-3-4-5-6

महाराष्ट्र क्रिकेट संघ

इस संघ की स्थापना 18 नवम्बर 1934 को हुई थी। महाराष्ट्र के पश्चिमी और दक्षिणी जिले इस संघ के कार्य-क्षेत्र मे आते है। प्रो० डी० बी० देवधर, जिनका नाम भारतीय क्रिकेट में मशहूर है और स्वर्गीय श्री एम० जी० भावे इस संघ के महान् स्तंभ थे। भावे इस संघ के संस्थापक सचिव, श्री टी० वी० तलिया संस्थापक अध्यक्ष और श्री एच० वी० तुलपुले इस संघ के संस्थापक अवैतनिक कोषाध्यक्ष थे।

पूना की करीब 50 क्लबें और 8 जिले इस संघ के सदस्य हैं। यह संघ कई प्रतियोगिताओं का आयोजन करता है। यह स्कूल खिलाड़ियों के प्रशिक्षण की भी व्यवस्था करता है। श्री देवधर क्रिकेट स्कूल होनहार स्कूल खिलाड़ियों को चुनकर तीन वर्ष के लिये उन्हें लगातार गहन प्रशिक्षण देती

है। यह संघ प्रति दूसरे वर्ष 'निर्णायक (अंपायर) परीक्षा' का आयोजन करता है और इसके लिए कक्षाएं भी चलाता है।

यह संघ रणजी ट्रॉफी प्रतियोगिता में शुरु से ही सम्मिलत होता आ रहा है और 1939 तथा 1940 में राष्ट्रीय विजेता रहा है।

इस संघ के पदाधिकारी हैं:—

अध्यक्ष	: पद्मश्री प्रो० डी० बी० देवधर
उपाध्यक्ष	: श्री एल० आर० रूइया
	: श्री एन० डी० नागरवाला
	: डा० के० एन० जेजुरीकर
प्रधान	: श्री बी० वी० भागवत
उप प्रधान	: श्री बी० एच० तुलपुले
अवैतनिक सचिव	: श्री ए० आर० जोशी
	: प्रो० पी० आर० करमाकर
अवैतनिक कोषाध्यक्ष	: श्री बी० जी० गोरे
पता	: हीराबाग, तिलक रोड, पोस्ट बाक्स 512 पूना—2
तार	: "क्रिकेट", पूना
फोन	: 56008

बड़ौदा क्रिकेट संघ

अप्रैल 16, 1934 को "दि सेन्ट्रल बोर्ड ऑफ क्रिकेट, बड़ौदा" स्थापित हुआ था। उसी में से ही बड़ौदा क्रिकेट संघ निकला है। इस संघ ने 1937 में भारतीय क्रिकेट नियन्त्रण बोर्ड से अपना सम्बन्ध स्थापित कर लिया और उसी वर्ष से यह संघ रणजी ट्रॉफी प्रतियोगिता में भाग ले रहा है। इस संघ ने चार बार राष्ट्रीय प्रतियोगिता जीतने का गौरव प्राप्त किया है।

इस संघ ने भारतीय टैस्ट क्रिकेट को 13 खिलाड़ियों का योग दिया है। इसके अतिरिक्त तीन भारतीय टैस्ट कप्तान, जिन्होंने भारत का अन्तर्राष्ट्रीय क्रिकेट में नेतृत्व किया, इस संघ के सदस्य थे। इस संघ को अपने अध्यक्ष, महाराजा फतहसिंह राव गायकवाड़ पर गर्व है जो 1959 मे भारतीय टीम के प्रबंधक के रूप में उसके साथ इंगलैंड गये और इस समय भारतीय क्रिकेट नियन्त्रण बोर्ड के अध्यक्ष के रूप में भारतीय क्रिकेट के भाग्य विधाता हैं।

इस संघ ने अपने उनतीस वर्ष के जीवन मे कई गौरवपूर्ण कीर्तिमान स्थापित किये हैं जिनमें विजय हजारे व गुल मोहम्मद की 1947 में होल्कर

के विरुद्ध, 577 रन की साझेदारी है। यह कीर्तिमान समस्त संसार में सबसे ऊंचा है।

इस संघ के निम्नलिखित पदाधिकारी हैं:—

अध्यक्ष	: बड़ौदा महाराजा फतहसिंह राव गायकवाड़
उपाध्यक्ष	: श्री चन्द्रवदन सी० पारीख
	: श्री जी० सी० वसु
अवैतनिक सचिव	: कप्तान विजय हजारे
	: डा० ए० आर० चह्वाण
अवैतनिक कोषाध्यक्ष	: श्री आर० ए० पटेल
पता	: मोती बाग, लक्ष्मी विलास पैलेस, बड़ौदा
तार	: "क्रिकेट", बड़ौदा
फोन	: 2272

सौराष्ट्र क्रिकेट संघ

वैसे तो सौराष्ट्र क्रिकेट संघ ने राष्ट्रीय प्रतियोगिता में 1949 में प्रथम बार भाग लिया परन्तु इसके पहले यह नवानगर क्रिकेट संघ के रूप में और फिर वैस्टर्न इण्डिया स्पोर्ट्स एसोसियेशन के रूप मे इस प्रतियोगिता मे सम्मिलित हो चुका था। नवानगर ने 1936-37 में राष्ट्रीय प्रतियोगिता जीती और अगले वर्ष वह इस प्रतियोगिता में उप-विजेता रहा। वैस्टर्न स्टेट्स एसोसियेशन ने इस प्रतियोगिता को 1943-44 मे जीता। ध्रोल के ठाकुर साहब इस संघ के संस्थापक अध्यक्ष थे, लेफ्टिनेंट कर्नल एम० एस० समरसिंह जी इसके संस्थापक अवैतनिक सचिव रहे और श्री सी० वी० शाह संस्थापक अवैतनिक कोषाध्यक्ष।

पता : जगन्नाथ प्लाट, पोस्ट बॉक्स नं० 231, राजकोट
तार : "सौक्रिकेट", राजकोट
फोन : 688

गुजरात क्रिकेट संघ

यह संघ जो 1934 मे स्थापित किया गया था भारत के सबसे पुराने क्रिकेट संघों में गिना जाता है। रणजी ट्रॉफी प्रतियोगिता में यह संघ 1934-35 में प्रतियोगिता की शुरुआत से ही भाग लेता आ रहा है। अखिल भारतीय स्कूल क्रिकेट प्रतियोगिता में भी यह संघ बराबर सम्मिलित होता आ रहा है। 1965 में इस संघ ने श्रीलंका की टीम के विरुद्ध तृतीय अनौपचारिक टैस्ट का आयोजन किया। इस संघ के संस्थापक अध्यक्ष श्री चिनुभाई मेड़पोलाल थे, संस्थापक उपाध्यक्ष प्रो० वी० बी० दीवेटिया,

सदस्य संघों के 'कलर'

सदस्य संघों के 'कलर' का परिचय

भारत के कप्तान

ले. कर्नल सी. के. नायुडू

पटौदी के नवाब इफ्तीकार अली

लाला अमरनाथ

कप्तान वी. एस. हजारे
(अवैतनिक सचिव, बड़ौदा क्रिकेट संघ)

भारतीय क्रिकेट में कौन क्या है?

अधिकारी, हेमू आर०

श्री हेमू अधिकारी दाहिने हाथ के बल्लेबाज़ और दाहिनी भुजा के धीमे लेग ब्रेक गेंदबाज है। उनको एक क्रिकेट खिलाड़ी के रूप में ख्याति सर्वप्रथम रोहिंटन बेरिया ट्रॉफी के लिए खेली जाने वाली अन्तर-विश्वविद्यालय क्रिकेट प्रतियोगिता में उनके उच्चकोटि के खेल के कारण प्राप्त हुई थी। बम्बई विश्वविद्यालय की ओर से खेलते हुए उन्होंने बनारस के विरुद्ध 123 रन, नागपुर के विरुद्ध, अपराजित 173 रन और पंजाब के विरुद्ध, अपराजित 108 और 222 रन बनाए थे।

श्री अधिकारी का जन्म 12 अगस्त 1919 को हुआ था। सन् 1936 में प्रथम श्रेणी की क्रिकेट प्रतियोगिता में सबसे पहली बार वे ... चम भारत के विरुद्ध गुजरात की ओर से खेले और दोनों पारियों मे ... ी टीम में सबसे अधिक रन बनाए। अगले वर्ष वे बड़ौदा की टीम ... ले गए और उसकी ओर से भी उन्होंने अच्छे रन बनाए। उनका ... बढ़िया खेल 1945-46 में नवानगर के विरुद्ध रहा जिसकी दोनों ... ों में उन्होंने शतक बनाए : 129 और अपराजित 151। 1950 में ... में भर्ती हो गए और तब से लेकर प्रथम श्रेणी क्रिकेट से निवृत्त होने ... रणजी ट्रॉफी प्रतियोगिता में सेना की टीम का नेतृत्व करते रहे।
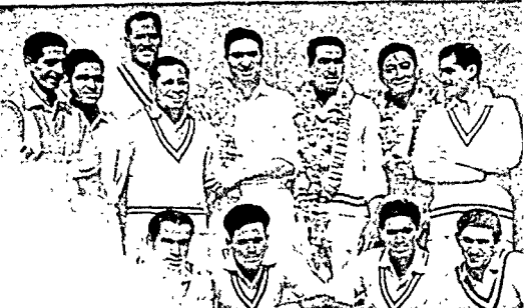
५९ में आस्ट्रेलिया को हराने वाली भारतीय टीम
रामचन्द सहित
एस.तमाणे, जी.एम.गार्ड, पी.रॉय, पी.आर.उमरीग
..पटेल, एन.जे.कांट्रैक्टर ।
.सुरेन्द्रनाथ, सी.जी.बोर्डे और ए.ए.बेग ।

पटौदी के नवाब मनसूर अली

पोरबन्दर के महाराजा श्री नटवरसि
कप्तान, 1932 में इंग्लैंड भ्रमण
करने वाली भारतीय टीम

पी. आर. उमरीगर

विनू मांकड और पंकज रॉय
दोनो भारत के कप्तान रहे। इनकी 1955 मे न्यूजीलैंड
के विरूद्ध 413 रन की प्रथम विकेट की
साझेदारी विश्व कीर्तिमान है।

द्वितीय टैस्ट मैच, 1959-60, कानपुर में आस्ट्रेलिया को हराने वाली भारतीय टीम
कप्तान रामचन्द सहित

खड़े हुए(बायें से दायें): आर.बी.केनी, एन.एस.तमाणे, जी.एम.गार्ड, पी.रॉय, पी.आर.उमरीगर, जी.एस.रामचन्द, जे.एम.पटेल, एन.जे.कांट्रैक्टर ।

भूमि पर : आर.जी.नाडकर्णी, आर.सुरेन्द्रनाथ, सी.जी.बोर्डे और ए.ए.बेग ।

भारत के कप्तान

एन. जे. कांट्रैक्टर

पटौदी के नवाब मनसूर अली

पी. आर. उमरीगर

पोरबन्दर के महाराजा श्री नटवरसिंह जी
कप्तान, 1932 में इंग्लैंड भ्रमण
करने वाली भारतीय टीम

विनू मांकड और पंकज रॉय
दोनों भारत के कप्तान रहे। इनकी 1955 में न्यूजीलैंड
के विरुद्ध 413 रन की प्रथम विकेट की
साझेदारी विश्व कीर्तिमान है।
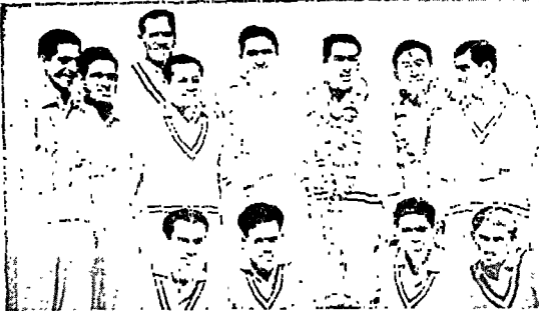
द्वितीय टैस्ट मैच, 1959-60, कानपुर में आस्ट्रेलिया को हराने वाली भारतीय टीम
कप्तान रामचन्द सहित

खड़े हुए(बायें से दायें): आर.बी.केनी, एन.एस.तमाणे, जी.एम.गार्ड, पी.रॉय, पी.आर.उमरीगर, जी.एस.रामचन्द, जे.एम.पटेल, एन.जे.कांट्रैक्टर ।

भूमि पर : आर.जी.नाडकर्णी, आर.सुरेन्द्रनाथ, सी.जी.बोर्डे और ए.ए.बेग ।

भारत के कप्तान

एन. जे. कांट्रैक्टर

पटौदी के नवाब मनसूर अली

ले. कर्नल एच. आर. अधिकारी
(अवैतनिक सचिव, सेना खेलकूद नियंत्रण बोर्ड)

गुलाम अहमद
(अवैतनिक सचिव, हैदराबाद क्रिकेट संघ)

डी. के. गायकवाड़

संस्थापक अवैतनिक सचिव श्री सी० एम० दीवान और अवैतनिक संयुक्त सचिव श्री एच० डी० देसाई थे।

इस संघ के निम्नलिखित पदाधिकारी हैं:—

अध्यक्ष	: श्री रत्तीलाल खुशालदास पटेल
उपाध्यक्ष	: श्री जयकृष्ण भाई हरिवल्लभदास
अवैतनिक सचिव	: श्री जे० जे० ठाकोर
अवैतनिक संयुक्त सचिव	: श्री नानशा ठाकोर
पता	: 535, तिलक रोड, अहमदाबाद—1
तार	: "क्रिकेट", अहमदाबाद
फोन	: 4464

भारत के टैस्ट कप्तान 1932-65

1.	सी० के० नायडू	...	4 टैस्ट मैच
2.	विजयनगरम् के महाराज कुमार	....	3 टैस्ट मैच
3.	पटौदी के नवाब इफ्तीकार अली	....	3 टैस्ट मैच
4.	लाला अमरनाथ	....	15 टैस्ट मैच
5.	वी० एस० हजारे	...	14 टैस्ट मैच
6.	वीनू मांकड	....	6 टैस्ट मैच
7.	गुलाम अहमद	....	3 टैस्ट मैच
8.	पी० आर० उमरीगर	...	8 टैस्ट मैच
9.	एच० आर० अधिकारी	....	1 टैस्ट मैच
10.	डी० के० गायकवाड	....	4 टैस्ट मैच
11.	पी० राय	...	1 टैस्ट मैच
12.	जी० एस० रामचन्द	....	5 टैस्ट मैच
13.	एन० जे० कॉन्ट्रेक्टर	...	12 टैस्ट मैच
14.	पटौदी के नवाब मंसूर अली	....	15 टैस्ट मैच

सबसे छोटी उम्र के टैस्ट कप्तान

भारत	: पटौदी के नवाब मंसूर अली : 21 वर्ष और 2 महीने, वेस्टइंडीज के विरुद्ध, ब्रिज टाउन में, मार्च, 1962
आस्ट्रेलिया	: आई० डी० क्रैग : 22 वर्ष 6 महीने, दक्षिण अफ्रीका के विरुद्ध जोहनीसबर्ग में, दिसम्बर, 1957

दक्षिण अफ्रीका	: एम० बिसेट : 22 वर्ष और 10 महीने, इंग्लैंड के विरुद्ध, जोहनीसबर्ग में 1899
इंग्लैंड	: एम० पी० बाउडेन : 23 वर्ष और 4 महीने, दक्षिण अफ्रीका के विरुद्ध, केपटाउन में, मार्च, 1889
वेस्टइण्डीज	: जी० सी० ग्रांट : 23 वर्ष और 7 महीने, आस्ट्रेलिया के विरुद्ध, एडिलेड में, 1931
न्यूजीलैंड	: जे० आर० रीड : 27 वर्ष और 8 महीने, वेस्टइण्डीज के विरुद्ध, क्राइस्ट चर्च में, फरवरी, 1956
पाकिस्तान	: ए० एच० कारदार : 27 वर्ष और 9 महीने, भारत के विरुद्ध, नई दिल्ली में, अक्टूबर, 1952

सबसे छोटी उम्र के टैस्ट खिलाड़ी

पाकिस्तान	: मुश्ताक मोहम्मद : 16 वर्ष और 70 दिन, वेस्टइण्डीज के विरुद्ध, लाहौर में, मार्च, 1959
वेस्टइण्डीज	: जे० ई० डी० सीले : 17 वर्ष और 4 महीने, इंग्लैंड के विरुद्ध, बारबेडोस में, जनवरी, 1930
आस्ट्रेलिया	: आई० डी० क्रैग : 17 वर्ष और 7 महीने, दक्षिण अफ्रीका के विरुद्ध, मेलबोर्न मे, फरवरी 1953
भारत	: वी एल० मेहरा : 17 वर्ष और 10 महीने, न्यूजीलैंड के विरुद्ध, बम्बई में, दिसम्बर, 1955
इंग्लैंड	: डी० बी० क्लोज : 18 वर्ष और 5 महीने, न्यूजीलैंड के विरुद्ध, ओल्डट्रफोर्ड मे, जुलाई 1949
न्यूजीलैंड	: डी० एल० फ्रीमैन : 18 वर्ष और 6 महीने, इंग्लैंड के विरुद्ध, क्राइस्ट चर्च मे, मार्च, 1933
दक्षिण अफ्रीका	: डब्ल्यू० ए० शैल्डर्स : 19 वर्ष और 1 महीना, इंग्लैंड के विरुद्ध, केपटाउन में, अप्रैल, 1899

भारतीय क्रिकेट में कौन क्या है?

अधिकारी, हेमू आर०

श्री हेमू अधिकारी दाहिने हाथ के बल्लेबाज और दाहिनी भुजा के धीमे लेग ब्रेक गेंदबाज हैं। उनको एक क्रिकेट खिलाड़ी के रूप में ख्याति सर्वप्रथम रोहिंटन बेरिया ट्रॉफी के लिए खेली जाने वाली अन्तर-विश्वविद्यालय क्रिकेट प्रतियोगिता में उनके उच्चकोटि के खेल के कारण प्राप्त हुई थी। बम्बई विश्वविद्यालय की ओर से खेलते हुए उन्होने बनारस के विरुद्ध 123 रन, नागपुर के विरुद्ध, अपराजित 173 रन और पंजाब के विरुद्ध, अपराजित 108 और 222 रन बनाए थे।

श्री अधिकारी का जन्म 12 अगस्त 1919 को हुआ था। सन् 1936 में प्रथम श्रेणी की क्रिकेट प्रतियोगिता में सबसे पहली बार वे पश्चिम भारत के विरुद्ध गुजरात की ओर से खेले और दोनों पारियों मे अपनी टीम में सबसे अधिक रन बनाए। अगले वर्ष वे बड़ौदा की टीम में चले गए और उसकी ओर से भी उन्होने अच्छे रन बनाए। उनका सबसे बढ़िया खेल 1945–46 में नवानगर के विरुद्ध रहा जिसकी दोनों पारियों में उन्होंने शतक बनाए: 129 और अपराजित 151। 1950 में वे सेना में भर्ती हो गए और तब से लेकर प्रथम श्रेणी क्रिकेट से निवृत्त होने तक वे रणजी ट्रॉफी प्रतियोगिता में सेना की टीम का नेतृत्व करते रहे। बल्लेबाजी में उनका सर्वश्रेष्ठ खेल 1951–52 में राजपूताना, वर्तमान राजस्थान, के विरुद्ध रहा जिसमें उन्होंने अपराजित रह कर 230 रन बनाए थे और गेंदबाजी में उनका सर्वोत्तम खेल 1939–40 में गुजरात के विरुद्ध रहा जब कि उन्होंने केवल 2 रन देकर 3 विकेट लिए थे।

श्री अधिकारी 1941, 1943 और 1944 में बम्बई पंचकोणीय प्रतियोगिता मे हिन्दू क्लब की ओर से खेले थे।

1947–48 के आस्ट्रेलिया भ्रमण में उन्होने टैस्ट मैचों में खेलना शुरु किया था। उन्होंने कुल मिलाकर 21 टैस्ट मैच खेले हैं। आस्ट्रेलिया के विरुद्ध 1947–48 में 5; वेस्टइण्डीज के विरुद्ध 1948–49 में 5; इंग्लैंड के विरुद्ध 1951–52 में 3; इंग्लैंड के विरुद्ध 1952 में 3; पाकिस्तान के विरुद्ध 1952–53 में 2; आस्ट्रेलिया के विरुद्ध 1956–57 मे 2; और वेस्टइण्डीज के विरुद्ध 1958–59 में 1। सन् 1952 मे इंग्लैंड का दौरा करने वाली भारतीय टीम के वे उप-कप्तान रहे हैं और

अपने अन्तिम टैस्ट मैच में वे भारतीय टीम के कप्तान रहे हैं। यह टस्ट मैच दिल्ली में वेस्ट इंडीज के विरुद्ध खेला गया था। इसमें उन्होंने 63 और 40 रन बनाए थे और 68 रन देकर 3 विकेट लिए थे। टैस्ट मैचों में उन्होंने सबसे अधिक रन 114, 1948-49 में दिल्ली में वेस्टइंडीज के विरुद्ध अपराजित रह कर बनाए थे।

उन्होंने प्रथम श्रेणी के क्रिकेट मैचों में कुल 7000 से अधिक और टैस्ट मैचो मे 872 रन बनाए हैं। 1963-64 और 1964-65 में वे भारतीय टैस्ट चयन समिति के सदस्य रहे है। वे भारतीय सेना मे लेफ्टिनेन्ट कर्नल है।

अमरनाथ, लाला

अमरनाथ भारत के सर्वश्रेष्ठ सर्वोन्मुखी खिलाड़ियों मे से एक हैं। वे भारत के सबसे पहले खिलाडी हैं जिन्होंने भारत की ओर से सबसे पहली बार खेलकर एक शतक बनाया था। वे 15 टैस्ट मैचों में भारत के कप्तान रहे है और भारतीय टैस्ट चयन समिति के अध्यक्ष भी।

1933-34 से लेकर 1952-53 तक उन्होंने 24 टैस्ट खेले थे। नौ बार इंग्लैंड के विरुद्ध; पांचबार आस्ट्रेलिया के विरुद्ध; पांचबार वेस्टइण्डीज के विरुद्ध और पांचबार पाकिस्तान के विरुद्ध। उनकी कुल रन संख्या 878 और प्रतिपारी औसत 24·39 रन रहा है। उन्होंने 1481 रन देकर 32·91 के औसत से 45 विकेट लिए हैं। इंग्लैंड के विरुद्ध उनकी सर्वोत्तम बल्लेबाजी 1933-34 में बम्बई टैस्ट में रही जिसमे उन्होंने 118 रन बनाए, इसी प्रकार आस्ट्रेलिया के विरुद्ध 1947-48 के चौथे टैस्ट में 46 रन; वेस्टइण्डीज के विरुद्ध 1948-49 के पहले टेस्ट मे 62 रन और पाकिस्तान के विरुद्ध 1952-53 के लखनऊ में हुए दूसरे टैस्ट में अपराजित 61 रन बनाए जो इन देशों के विरुद्ध उनके अधिकतम रन हैं। उन्होंने टैस्ट मैचों में दो बार एक पारी में पाँच-पाँच विकेट लिए हैं। 1946 मे इंग्लैंड के विरुद्ध प्रथम टैस्ट में 116 रन देकर 5 विकेट और उसी वर्ष दूसरे टैस्ट मे 96 रन देकर 5 विकेट लिये थे।

रणजी ट्रॉफी के लिए आयोजित राष्ट्रीय क्रिकेट प्रतियोगिता में वे 1934-35 में इस प्रतियोगिता के प्रारम्भ से ही खेल रहे हैं। इस प्रतियोगिता मे वे 1934-35 से 1951-52 तक दक्षिण पंजाब की ओर से खेलते रहे। 1952-53 में गुजरात की ओर से, 1953-54 और 1956-57 में पटियाला की ओर से, 1954-55 में उत्तर प्रदेश की ओर से और 1955-56 मे रेलवे की ओर से खेले। इन मैचों मे उनकी यह विशेषता रही कि उन्हें इन सभी टीमों का नेतृत्व करने का गौरव प्राप्त

भारतीय टैस्ट खिलाड़ी

वी. एम. मर्चेंट
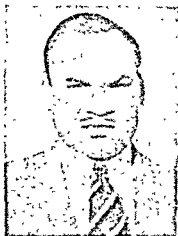
एल. अमरसिंह

एल. पी. जय
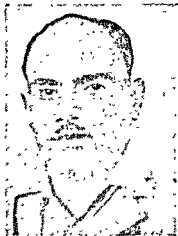
एस. वजीर अली

सी. एस. नायुडू

एस. मुश्ताक अली

अपने अन्तिम टैस्ट मैच में वे भारतीय टीम के कप्तान रहे हैं। यह टस्ट मैच दिल्ली में वेस्ट इंडीज के विरुद्ध खेला गया था। इसमें उन्होने 63 और 40 रन बनाए थे और 68 रन देकर 3 विकेट लिए थे। टैस्ट मैचों में उन्होंने सबसे अधिक रन 114, 1948–49 में दिल्ली में वेस्टइंडीज के विरुद्ध अपराजित रह कर बनाए थे।

उन्होंने *प्रथम श्रेणी के क्रिकेट मैचों में कुल 7000 से अधिक और* टैस्ट मैचों में 872 रन बनाए हैं। 1963–64 और 1964–65 मे वे भारतीय टैस्ट चयन समिति के सदस्य रहे हैं। वे भारतीय सेना में लेफ्टिनेन्ट कर्नल है।

अमरनाथ, लाला

अमरनाथ भारत के सर्वश्रेष्ठ सर्वोन्मुखी खिलाड़ियों में से एक हैं। वे भारत के सबसे पहले खिलाडी हैं जिन्होने भारत की ओर से सबसे पहली बार खेलकर एक शतक बनाया था। वे 15 टैस्ट मैचों मे भारत के कप्तान रहे हैं और भारतीय टैस्ट चयन समिति के अध्यक्ष भी।

1933–34 से लेकर 1952–53 तक उन्होने 24 टैस्ट खेले थे। नौ बार इंग्लैड के विरुद्ध; पांचवार आस्ट्रेलिया के विरुद्ध; पांचवार वेस्टइण्डीज के विरुद्ध और पांचवार पाकिस्तान के विरुद्ध। उनकी कुल रन संख्या 878 और प्रतिपारी औसत 24·39 रन रहा है। उन्होंने 1481 रन देकर 32·91 के औसत से 45 विकेट लिए हैं। इंग्लैंड के विरुद्ध उनकी सर्वोत्तम बल्लेबाजी 1933–34 में बम्बई टैस्ट में रही जिसमें उन्होने 118 रन बनाए, इसी प्रकार आस्ट्रेलिया के विरुद्ध 1947–48 के चौथे टैस्ट में 46 रन; वेस्टइण्डीज के विरुद्ध 1948–49 के पहले टेस्ट में 62 रन और पाकिस्तान के विरुद्ध 1952–53 के लखनऊ मे हुए दूसरे टैस्ट में अपराजित 61 रन बनाए जो इन देशों के विरुद्ध उनके अधिकतम रन हैं। उन्होने टैस्ट मैचों में दो बार एक पारी में पांच-पांच विकेट लिए हैं। 1946 मे इंग्लैंड के विरुद्ध प्रथम टैस्ट में 116 रन देकर 5 विकेट और उसी वर्ष दूसरे टैस्ट मे *96* रन देकर *5* विकेट लिये थे।

रणजी ट्रॉफी के लिए आयोजित राष्ट्रीय क्रिकेट प्रतियोगिता मे वे 1934–35 मे इस प्रतियोगिता के प्रारम्भ से ही खेल रहे हैं। इस प्रतियोगिता मे वे 1934–35 से 1951–52 तक दक्षिण पंजाब की ओर से खेलते रहे। *1952–53* में गुजरात की ओर से, *1953–54* और 1956–57 में पटियाला की ओर से, 1954–55 मे उत्तर प्रदेश की ओर से और 1955–56 मे रेलवे की ओर से खेले। इन मैचों में उनकी यह विशेषता रही कि उन्हें इन सभी टीमों का नेतृत्व करने का गौरव प्राप्त

हुआ। रणजी ट्रॉफी प्रतियोगिता में उन्होंने कुल 57 पारियाँ खेलीं जिनमें दो बार वे अपराजित रहे, 39·30 की औसत से कुल 2162 रन बटोरे और 6 शतक बनाए। उन्होंने अनेक बार शानदार गेंदबाजी भी की है, उदाहरणार्थ, 1958 में पटियाला के विरुद्ध रेलवे की ओर से खेलते हुए शून्य रन पर 4 विकेट और 1938 में सिंध के विरुद्ध दक्षिण पंजाब की ओर से खेलते हुए 2 रन देकर 4 विकेट लिए थे। इस प्रतियोगिता में उन्होंने कुल मिलाकर 14·54 के औसत से 2764 रन देकर 190 विकेट लिए हैं। लालाजी सन् 1934 से 1939 तक बम्बई चतुष्कोणीय (क्वाड्रैंगुलर) और पंचकोणीय (पेंटैंगुलर) प्रतियोगिताओं में हिन्दू क्लब की ओर से बड़ी सफलता के साथ खेलते रहे हैं।

लालाजी का जन्म 11 सितम्बर 1911 को हुआ था। वे इस समय उत्तर रेलवे में एक अधिकारी हैं।

अमरसिंह

भारत माता ने जिन सर्वश्रेष्ठ क्रिकेट खिलाड़ियों को उत्पन्न किया उनमें से अमरसिंह भी एक ऐसे प्रतिभाशाली खिलाड़ी थे जो अपनी युवावस्था में ही यदि कालकवलित न होते तो न जाने कितने कीर्तिमान (रेकार्ड) स्थापित कर जाते। उनका जन्म 4 दिसम्बर 1910 को और निधन 21 मई 1940 को हुआ।

श्री अमरसिंह पहले खिलाड़ी थे जिन्होंने रणजी ट्रॉफी प्रतियोगिता में 100 विकेट लिए और इसी टूर्नामेन्ट के वे दूसरे बल्लेबाज थे जिन्होंने कुल 1000 रन पूरे किए थे; और यह सब कुछ उन्होंने केवल सोलह मैचों में ही कर दिखाया था। उन्होंने 26 पारियों में 43·66 के औसत से कुल 1009 रन बनाए थे, उनमें तीन बार वे अपराजित रहे और 15·56 के औसत रन देकर 105 विकेट लिए थे। 1934–35 और 1935–36 में वे पश्चिम भारत की ओर से खेले और उसके बाद अपने दुःखद निधन तक नवानगर की ओर से खेलते रहे। अनेक मैचों में उनका सर्वोन्मुखी खेल बहुत ही शानदार रहा। सिन्ध के विरुद्ध नवानगर की ओर से खेलते हुए उन्होंने अपने पहले ही मैच में 103 और 55 रन बनाए और 48 रन देकर 6 विकेट और 35 रन देकर 4 विकेट लिए। दूसरे मैच में, जो बम्बई के विरुद्ध खेला गया था, उन्होंने 4 और अपराजित 52 रन बनाए और 62 रन देकर 6 और 101 रन देकर 2 विकेट लिए। अगले वर्ष, बड़ौदा के विरुद्ध खेलते हुए उन्होंने 66 रन बनाए और 14 रन देकर 4 विकेट और 6 रन देकर 2 विकेट लिए; तथा सिंध के विरुद्ध 86 रन बनाए और 35 रन देकर 3 विकेट और 26 रन देकर 7 विकेट लिए। इसके

बाद उन्होंने बम्बई के विरुद्ध अपराजित 140 रन बनाए और 22 रन देकर 6 विकेट और 22 रन देकर 1 विकेट लिया।

श्री अमरसिंह ने बम्बई चतुष्कोणीय प्रतियोगिता में भी अनेक बार अपना शानदार खेल दिखाया।

श्री अमरसिंह 1932 में इंग्लैंड का दौरा करने वाली भारतीय टीम के सदस्य थे और 1936 में भी वे इंग्लैंड में टैस्ट मैचों के लिए तैयार थे। उनके शानदार सर्वोन्मुखी खेल का बड़ा प्रभाव पड़ा। उन्होंने इंग्लैंड के बल्लेबाजों को लोहे के चने चबा दिए। वे इंग्लैंड के विरुद्ध पहले सात टैस्ट मैचों में खेले और उन्होंने 14 पारियों में कुल 292 रन बनाए, उनकी अधिकतम रन संख्या 51 रही। इन मैचों में उन्होंने 30.64 के औसत से कुल 858 रन देकर 28 विकेट लिए। उनकी सर्वोत्तम गेंदबाजी इन टैस्टों में रही : 1933–34 में मद्रास में 86 रनों पर 7 विकेट और 1936 में लार्ड्स में 35 रनों पर 6 विकेट।

महाराजा पटियाला के आस्ट्रेलियाई एकादश के विरुद्ध मद्रास में आयोजित चौथे अनौपचारिक टैस्ट मैच में उन्होंने भारत की ओर से सबसे अधिक 54 रन बनाए थे। इस मैच में केवल 33 रनों से भारत की विजय हुई जिसका अधिकांश श्रेय इन्हीं को है। लार्ड टैनीसन की टीम के विरुद्ध भी उनका खेल इतना ही शानदार रहा जिसमें उन्होंने पहले टैस्ट में 69 रन देकर 4 विकेट; तीसरे टैस्ट में 65 रन देकर 3 विकेट और 76 रन देकर 4 विकेट लिए। चौथे टैस्ट में 36 रन देकर 5 विकेट और 58 रन देकर 6 विकेट लिए और पांचवें टैस्ट में 47 रन देकर 5 विकेट और 95 रन देकर 4 विकेट लिए थे।

अमीर इलाही

श्री अमीर इलाही का जन्म 1 सितम्बर 1908 को हुआ था। वे पहले विकेट-रक्षक के रूप में खेलते थे पर बाद में एक तेज गेंदबाज और अन्ततः एक लेगब्रेक-व-गुगली गेंदबाज बन गए। रणजी ट्रॉफी और अन्य राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में उनका खेल काफी शानदार रहा परन्तु टैस्ट मैचों में यद्यपि वे भारत और पाकिस्तान दो देशों की ओर से खेले परन्तु उन्हें बहुत कम खेलने का मौका मिला। भारत की ओर से वे केवल एक टैस्ट मैच में ही यानी 1947–48 में आस्ट्रेलिया के विरुद्ध खेल सके।

वे रणजी ट्रोफी प्रतियोगिता में उत्तर भारत, दक्षिण पंजाब और बड़ौदा की ओर से खेले। उन्होंने कुल मिलाकर 1564.1 ओवर गेंदबाजी की, इनमें 295 रनहीन यानी मेडन ओवर रहे, 24.72 के औसत से कुल 4771 रन देकर 193 विकेट लिए। बम्बई चतुष्कोणीय और पंचकोणीय

प्रतियोगिताओं में ये मुस्लिम क्लब के सर्वोत्कृष्ट गेन्दबाज थे और इन्होंने इन प्रतियोगिताओं में सबसे अधिक यानी 91 विकेट लिए। वे 7 अनौपचारिक टैस्ट मैचों में खेले थे। उन्होने अपने सबसे अधिक रन 96 सन् 1938 मे बम्बई पंचकोणीय प्रतियोगिता में हिंदू क्लब के विरुद्ध मुस्लिम क्लब की ओर से खेलते हुए बनाए थे।

वे 1936 और 1946 में इंग्लैंड का और 1947–48 में आस्ट्रेलिया का भ्रमण करने वाली भारतीय टीम के सदस्य थे। 1960 में जो पाकिस्तान की टीम भारत में खेलने आई थी, उसके भी वे सदस्य रहे हैं।

आपटे, अरविंद लक्ष्मणराव

श्री आपटे का जन्म 24 सितम्बर 1934 को बम्बई में हुआ था। उन्होने प्रथम श्रेणी के क्रिकेट मैचों मे, अपने खेल का श्रीगणेश, 1955–56 में न्यूजीलैंड के विरुद्ध भारतीय विश्वविद्यालयों की टीम मे खेलकर किया। रणजी ट्रॉफी प्रतियोगिता में वे सर्वप्रथम 1957–58 में, गुजरात के विरुद्ध बम्बई की ओर से, खेले। रणजी ट्रॉफी में उन्होंने दो बार शतक बनाए।

1959 में जो भारतीय टीम इंग्लैंड के दौरे पर गई थी उसमें वे भी शामिल थे और वहां उनकी सर्वोच्च रन संख्या 165 डर्बीशायर के विरुद्ध रही। लीड्स में उन्होंने तीसरा टैस्ट भी खेला जिसमे उन्होंने 8 और 7 रन बनाए थे।

1950–51 में वे अखिल भारतीय स्कूल क्रिकेट प्रतियोगिता में बम्बई स्कूल टीम की ओर से खेले थे और 1953–54, 55–56 और 58–59 में वे बम्बई विश्वविद्यालय की टीम में खेले।

श्री आपटे एक वस्त्र व्यापारी हैं।

आपटे, माधवराव लक्ष्मणराव

श्री आपटे बल्लेबाजी प्रारम्भ करने वाले एक दाहिने हाथ के अच्छे बल्लेबाज रहे हैं। उन्होंने रणजी ट्रॉफी में 1951–52 में एक शतक के साथ प्रवेश किया जबकि उन्होंने सौराष्ट्र के विरुद्ध बम्बई की ओर से 108 रन बनाए। वे रणजी ट्रॉफी में कुल 52 पारी खेले जिनमें ग्यारह बार अपराजित रहे, और उन्होंने प्रतिपारी 44·95 के औसत से कुल 1843 रन बनाए। इस प्रतियोगिता मे उनकी सर्वोच्च रन संख्या 157 बंगाल के विरुद्ध 1958–59 में रही। 1958–59 से 1961–62 के बीच उन्होंने कई मैचों में बम्बई की टीम का नेतृत्व किया।

श्री आपटे का जन्म 5 अक्तूबर 1932 को हुआ था। वे 1950–51, 51–52, 53–54 (कप्तान) और 54–55 में बम्बई विश्वविद्यालय की ओर से खेले थे। 1951–52 में वे एम० सी० सी० के विरुद्ध भारतीय विश्वविद्यालयों की टीम में भी खेले थे।

जो भारतीय टीम 1952–53 में वेस्टइंडीज और 1956 में श्री लंका गई थी उसके वे सदस्य थे। 1952 में वे पाकिस्तान के विरुद्ध दो टैस्टों में और 1952–53 में वेस्टइंडीज के विरुद्ध 5 टैस्टों में खेले। कुल 13 टैस्ट पारियों में वे दो में अपराजित रहे और उन्होंने कुल 542 रन बनाए। टैस्ट मैचों मे उनकी सर्वोच्च रन सख्या 163 वेस्टइण्डीज के विरुद्ध 1952–53 में रही। इस टैस्ट शृंखला में उन्होने पहले टैस्ट में 64 और 52 तथा दूसरे टैस्ट में 64 रन बनाए थे।

वे टेनिस, बैडमिंटन और स्क्वैश के उच्च कोटि के खिलाड़ी हैं और कपड़े का व्यापार करते हैं।

इंजीनियर, फारूख एम.

जोशीले, दाएँ हाथ के बल्लेबाज और फुर्तीले विकेट रक्षक श्री इंजीनियर का जन्म बम्बई में 25 फरवरी, 1938 को हुआ था। उन्होंने प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में 1958–59 मे प्रवेश किया जब उनको वेस्टइण्डीज के विरुद्ध भारतीय विश्वविद्यालयों की ओर से खेलने का अवसर मिला। अगले वर्ष वे सौराष्ट्र के विरुद्ध पहली बार बम्बई की ओर से खेले और उन्होने 50 रन बनाए तथा तीन बल्लेबाजों को स्टम्प आउट किया। तबसे वे लगातार रणजी ट्रॉफी में बम्बई की ओर से और दलीप ट्रॉफी में पश्चिम क्षेत्र की ओर से खेल रहे हैं। 1964–65 में उन्होने दलीप ट्रॉफी के फाइनल मैच मे मध्य क्षेत्र के विरुद्ध लंच से पहले ही अपना शतक पूरा कर लिया था और बाद मे 142 रन बनाकर आउट हुए।

अब तक वे 11 टैस्टों में खेले हैं : 4 इंग्लैंड के विरुद्ध 1961–62 में; 3 वेस्ट इण्डीज के विरुद्ध 1962 में; और 4 न्यूजीलैंड के विरुद्ध 1965 में। उनकी सर्वोत्तम बल्लेबाजी न्यूजीलैंड के विरुद्ध मद्रास में पहले टैस्ट में रही जिसमें उन्होने 90 रन बनाए थे। उनका सर्वोत्तम विकेट रक्षण 1962 में वेस्ट इण्डीज के विरुद्ध (दो बार) और दिल्ली में न्यूजीलैंड के विरुद्ध चौथे टैस्ट में रहा जब कि प्रत्येक बार उन्होने तीन-तीन कैच लिए थे।

वे 1962 में वेस्ट इण्डीज का दौरा करने वाली भारतीय टीम के तथा 1960 में पाकिस्तान में खेलने वाली इण्डियन स्टारलेट्स की टीम के सदस्य रहे हैं। 1964 में उन्होने श्री लंका के विरुद्ध तीन अनौपचारिक टैस्ट खेले थे और हैदराबाद में खेले गए दूसरे टैस्ट में उन्होंने बड़ी तेजी से 102 रन बनाए थे।

1958–59 में वे बम्बई विश्वविद्यालय की ओर से खेल चुके हैं।

इन्दरजीत सिंहजी, के० एस०

पारी प्रारंभ करने वाले दाहिने हाथ के बल्लेबाज और विकेट रक्षक श्री इन्दरजीत सिंहजी का जन्म 15 जून 1937 को जामनगर में हुआ था। प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में उनका प्रथम प्रवेश 1955-56 में हुआ जबकि वे महाराष्ट्र के विरुद्ध सौराष्ट्र की ओर से खेले थे। 1962-63 में उन्होंने रणजी ट्रॉफी में अपने सबसे अधिक रन (123), बड़ौदा के विरुद्ध, बनाए थे। 1960-61 में रणजी ट्रॉफी में दिल्ली और जिला टीम की ओर से विकेट रक्षण करते हुए उन्होंने 22 बल्लेबाजों को धराशायी कर दिया था और इस प्रकार रणजी ट्रॉफी में एक वर्ष में श्री ए० खन्ना के 23 बल्लेबाज आउट करने के कीतिमान से केवल एक सीढ़ी नीचे रह गए थे।

वे 1964 में आस्ट्रेलिया के विरुद्ध तीन टैस्टों में खेले थे और पहले टैस्ट में उन्होने भारत की ओर से बल्लेबाजी का श्रीगणेश किया था। टैस्टों में उन्होंने तीन बल्लेबाजों को स्टम्प आउट किया और पांच को लपका।

1957-58 से 1960-61 तक उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया था।

इब्राहिम, के० सी०

पारी प्रारम्भ करने वाले दाहिने हाथ के बल्लेबाज श्री इब्राहिम ने प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में 1940 में प्रवेश किया जबकि उन्होने महाराष्ट्र के विरुद्ध, बम्बई की ओर से एक पारी में 61 रन बनाए थे। अगले वर्ष वे पश्चिम भारत के विरुद्ध 230 रन बनाकर भी अपराजित रहे। 1948 में उन्होंने बड़ौदा के विरुद्ध 219 रन पीटे थे। रणजी ट्रॉफी की 39 पारियों में, चार बार अपराजित रहकर उन्होने 66.54 रन प्रतिपारी के औसत से 2329 रन बनाए हैं। इनमें सात शतक भी शामिल है।

उन्होने 1948 में वेस्टइण्डीज के विरुद्ध 4 टैस्ट खेले थे। कुल आठ पारियों में उन्होने 169 रन बनाए थे जिसमें उनकी सबसे अधिक रन संख्या 85 दिल्ली टैस्ट में बनी थी।

आपका जन्म 26 जनवरी 1919 को हुआ था।

ईरानी, जे० के०

1947-48 में जो भारतीय टीम आस्ट्रेलिया के दौरे पर गई थी, उसमें श्री ईरानी भी थे। उन्होंने वहां दो टैस्ट मैचों में विकेट रक्षण किया था। इससे पहले उनको प्रथम श्रेणी के मैचों में खेलने का बहुत कम मौका मिला था।

उनका जन्म 18 अगस्त 1923 को हुआ था। रणजी ट्रॉफी में उन्होंने सर्वप्रथम 1937 में खेलना शुरू किया और सिन्ध की ओर से खेले परन्तु विकेट रक्षक के रूप में नहीं। आगे चलकर 1942 में उन्होंने पश्चिम भारत के विरुद्ध सिन्ध की ओर से विकेट रक्षण किया था। रणजी ट्रॉफी में उन्होंने अपने सबसे अधिक रन 46, 1945–46 में महाराष्ट्र के विरुद्ध सिन्ध की ओर से खेलते हुए बनाए थे। उसी वर्ष उन्होंने बम्बई के 5 विकेटों में से (जो 560 रनों पर गिरे थे) 3 को विकेट रक्षण करते हुए गिराया था।

उमरीगर, पहलान आर० 'पोली'

अत्यन्त उपयोगी और आक्रामक बल्लेबाज थी उमरीगर जिस टीम मे भी खेले उसीके लिए लाभप्रद सिद्ध हुए। वे दाहिने हाथ के सशक्त बल्लेबाज है और मौका आने पर गेंद को पीटने में कसर नहीं रखते। वे एक मध्यमगति के ओफ ब्रेक गेंदबाज रहे हैं जो नई गेंद को सफलतापूर्वक उपयोग में ला सकते थे। इसके अलावा वे एक उच्च कोटि के क्षेत्र-रक्षक भी रह चुके हैं जो आमतौर पर स्लिप में खेला करते थे। वे एक योग्य और चतुर कप्तान सिद्ध हुए है।

उनका जन्म 28 मार्च 1926 को शोलापुर (महाराष्ट्र) में हुआ था। प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में उन्होंने प्रथम प्रवेश बम्बई पंचकोणीय प्रतियोगिता में हिन्दू क्लब के विरुद्ध पारसी क्लब की ओर से खेलकर किया। 1946–47 से 1962–63 में अपनी निवृत्ति तक वे लगातार रणजी ट्रॉफी में खेलते रहे। केवल दो वर्ष यानी 1950–51 और 51–52 में ही वे गुजरात की ओर से खेले अन्यथा वे सदा बम्बई की ओर से खेलते रहे और रणजी ट्रॉफी में उन्होंने अपनी टीम को लगातार 5 वर्षों तक विजयी बनाए रखा।

रणजी ट्रॉफी की कुल 70 पारियों में 12 बार अपराजित रहकर, उन्होंने 70·72 रन प्रति पारी के औसत से 4102 रन बनाए हैं। उनकी सर्वोच्च रन संख्या 245 रही जो उन्होंने 1957 में सौराष्ट्र के विरुद्ध बनाई थी। इसी वर्ष उन्होंने गुजरात के विरुद्ध 213 रन बनाए थे। उन्होंने कुल 14 शतक बनाए हैं। उन्होंने 19·72 रन प्रति विकेट के औसत से 2722 रन देकर 138 विकेट लिए है। 1956–57 में उन्होंने रणजी ट्रॉफी में 502 रन देकर 35 विकेट लिए थे।

वे 1952 और 1959 मे इंग्लैंड के दौरे पर गए थे। 1954–55 मे वे टीम के उपकप्तान के रूप में पाकिस्तान गए थे। 1952–53 और 1962 में उन्होंने वेस्टइण्डीज का दौरा किया था और 1956 में श्रीलंका में भारतीय टीम का नेतृत्व किया था। 1952 और 1959 के इंग्लैंड के दौरे

में उन्होंने सबसे अधिक रन बनाए थे, क्रमशः 1688 और 1826 रन। इंग्लैंड की दोनों यात्राओं में इन्होंने तीन दोहरे शतक बनाए थे। 1959 में उन्होंने केम्ब्रिज विश्वविद्यालय के विरुद्ध अपराजित रहकर 252 रन बनाए थे; आज तक कोई भी भारतीय विदेश में जाकर इतने रन नहीं बना सका है। अन्य दौरों में भी वे भारत के सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज सिद्ध हुए हैं।

उन्होंने कुल 59 टैस्ट मैच खेले हैं; अब तक कोई भारतीय खिलाड़ी इतने अधिक टैस्ट मैच नही खेल सका : वेस्टइण्डीज के विरुद्ध 1948 (1), 1953 (5), 1958 (5), 1962 (5); इंग्लैंड के विरुद्ध 1951-52 (5), 1952 (4), 1959 (4), 1961-62 (4); पाकिस्तान के विरुद्ध 1952 (5), 1955 (5), 1960 (5); न्यूजीलैंड के विरुद्ध 1955 (5), और आस्ट्रेलिया के विरुद्ध 1956 (3), 1959 (3)। उन्होंने 1951-52 से लगातार 41 टैस्ट खेले हैं। उन्होंने न्यूजीलैंड के विरुद्ध चार टैस्टों में (1955-56), आस्ट्रेलिया के विरुद्ध एक टैस्ट में (1956) और वेस्टइण्डीज के विरुद्ध एक टैस्ट में (1958-59) भारत का नेतृत्व किया है। टैस्ट क्रिकेट में उनके शतक इस प्रकार हैं : इंग्लैंड के विरुद्ध—अपराजित 130, पांचवां टैस्ट, मद्रास, 1951-52; 118, चौथा टैस्ट, मेंचेस्टर 1959, और अपराजित 147, दूसरा टैस्ट कानपुर, 1961-62; वेस्टइण्डीज के विरुद्ध—117, पांचवां टैस्ट, जमैका 1953; 130, पहला टैस्ट ट्रिनिडाड, 1953; अपराजित 172, चौथा टैस्ट, ट्रिनिडाड, 1962; पाकिस्तान के विरुद्ध—177, चौथा टैस्ट, मद्रास 1960; 115 दूसरा टैस्ट, कानपुर 1960; 112, पांचवां टैस्ट, नई दिल्ली, 1960; 108, चौथा टैस्ट पेशावर, 1955; 102, तीसरा टैस्ट, बम्बई, 1952; और न्यूजीलैंड के विरुद्ध-223, पहला टैस्ट, हैदराबाद, 1955.

अपनी 94 टैस्ट पारियों में, आठ बार अपराजित रहकर, उन्होंने 42·22 रन प्रति पारी के औसत से 3631 रन बनाए है। कोई भारतीय बल्लेबाज इतने रन नहीं बना सका है। गेंदबाजी में उन्होंने 1483 रन देकर 35 विकेट लिए हैं।

उन्होंने कॉमनवेल्थ की दोनों टीमों और सिलवर जुबली ओवरसीज टीम के विरुद्ध अनौपचारिक टैस्ट खेले थे और उनमें उन्होंने कॉमनवेल्थ द्वितीय के विरुद्ध बम्बई में 130; कलकत्ता मे 93; मद्रास मे अपराजित 110, कानपुर में 57 और 63; तथा सिलवर जुबली ओवरसीज टीम के विरुद्ध कलकत्ता में अपराजित 112 और लखनऊ में 87 रन बनाए थे। एक व्यावसायिक खिलाड़ी के रूप में वे 1950 और 1951 में वेरनेय क्लब की ओर से, 1953 और 1954 में चर्च क्लब की ओर से, और 1955 में ओल्डहेम की ओर से खेले थे। उन्होंने 1948-49 में बम्बई विश्वविद्यालय का नेतृत्व

किया था। इससे पहले भी 1944-45 में वे बम्बई विश्वविद्यालय की ओर से खेल चुके थे।

उन्हें भारत सरकार की ओर से 'पद्म श्री' से सम्मानित किया गया है। वे ए० सी० सी० लिमिटेड बम्बई में अधिकारी हैं।

कारदार, अब्दुल हफीज

पाकिस्तान के प्रथम कप्तान श्री कारदार ने सर्वप्रथम 1946 में भारत की ओर से टैस्ट मैच में खेलना प्रारम्भ किया था। वे इंग्लैंड के विरुद्ध तीनो टैस्टों में खेले थे। अपनी पांच टैस्ट पारियों में कुल 80 रन बनाए थे। पहले टैस्ट में उनकी रन संख्या 43 थी जो उनके सबसे अधिक रन हैं। इंग्लैंड की टीम के इस पूरे दौरे में उन्होंने कुल 27 पारियों में, तीन बार अपराजित रहकर, 439 रन बनाए थे।

इससे एक वर्ष पहले वे आस्ट्रेलिया की सेना की टीम के विरुद्ध तीन अनौपचारिक टैस्ट खेल चुके थे। उन्होने 1943-44 और 1944-45 में रणजी ट्रॉफी में उत्तर पंजाब का प्रतिनिधित्व किया था। 1943-44 में उन्होंने पश्चिम भारत के विरुद्ध 143 रन और 1944-45 मे बम्बई के विरुद्ध 145 रन बनाए थे। उन्होंने अपनी सर्वोन्मुखी प्रतिमा 1944-45 में दिल्ली और जिला टीम के विरुद्ध प्रदर्शित की जब उन्होने 68 रन बनाए थे और 25 रन देकर 7 विकेट और 24 रन देकर 3 विकेट गिराये थे।

उनका जन्म 17 जनवरी 1925 को हुआ था। विभाजन के बाद वे पाकिस्तान चले गए और उन्होंने भारत, इंग्लैंड, आस्ट्रेलिया और वेस्टइण्डीज के विरुद्ध पाकिस्तान की टीम का नेतृत्व किया।

किशनचन्द गोगुमल

श्री किशनचन्द का जन्म कराची में 11 अप्रैल 1925 को हुआ था। वे दाहिने हाथ के बल्लेबाज और दाहिनी भुजा से लेगब्रेक गेंद फेंकने वाले गेंदबाज हैं। उन्हें छोटी आयु में ही अपनी प्रतिभा दिखाने का मौका मिल गया था। 1940-41 में रणजी ट्रॉफी में वे सर्वप्रथम खेले थे। पश्चिम भारत के विरुद्ध सिन्ध की ओर से खेलते हुए उन्होने 50 और 33 रन बनाए थे। वे सिन्ध की ओर से 1940-41, 1941-42 और 1945-46 (कप्तान) में, पश्चिम भारत की ओर से 1942-43 और 1943-44 में, गुजरात की ओर से 1948-49 से 1951-52 तक और उसके बाद बड़ौदा की ओर से खेले थे। रणजी ट्राफी में उन्होने कुल 66 पारियों में, 18 बार अपराजित रहकर, 64.45 रन प्रतिपारी के औसत से कुल 3094 रन बनाए हैं। उन्होंने इस प्रतियोगिता में नौ शतक बनाए हैं। 1951-52 मे महाराष्ट्र के विरुद्ध

गुजरात की ओर से खेलते हुए उन्होंने अपने सबसे अधिक 181 रन बनाए थे।

बम्बई पंचकोणीय प्रतियोगिता में 1943-44 और 46 में हिन्दू क्लब की ओर से खेले थे और प्रतिवर्ष उन्होंने एक शतक बनाया था। उन्होंने 1947 में दक्षिण क्षेत्र के विरुद्ध उत्तर क्षेत्र की ओर से खेलते हुए 218 रन बनाए थे और ये रन प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में उनके अपने सबसे अधिक रन हैं।

वे भारतीय टीम में 1945 में श्रीलंका और 1947-48 मे आस्ट्रेलिया गए थे। उन्होने कुल 5 टैस्ट मैच खेले हैं, 1947-48 में आस्ट्रेलिया के विरुद्ध 4 और 1952 में पाकिस्तान के विरुद्ध एक टैस्ट मैच में उनकी सर्वोच्च रन संख्या 44 रही जो उन्होंने सिडनी में आस्ट्रेलिया के विरुद्ध दूसरे टैस्ट में बनाई थी। उन्होंने 6 अनौपचारिक टैस्ट भी खेले थे। वे महाराजा बड़ौदा के यहां कर्मचारी हैं।

कृपालसिंह ए० जी०

श्री कृपालसिंह क्रिकेट के सुप्रसिद्ध खिलाड़ी और कोच श्री ए० जी० रामसिंह के सुयोग्य पुत्र हैं। उन्होंने टैस्ट क्रिकेट मे सर्वप्रथम प्रवेश 1955-56 में किया और न्यूजीलैंड के विरुद्ध अपराजित शतक बना कर दर्शकों को खुश कर दिया। उनका जन्म 6 अगस्त 1933 को मद्रास में हुआ था। वे दाहिने हाथ से बल्लेबाजी और दाहिनी भुजा से गेंदबाजी करते हैं। रणजी ट्रॉफी में वे सर्वप्रथम 1950-51 में हैदराबाद के विरुद्ध खेले थे। तब से वे लगातार मद्रास की ओर से रणजी ट्रॉफी मे खेल रहे हैं। 1959-60 में वे मद्रास के कप्तान रह चुके हैं। इस प्रतियोगिता में वे अब तक 2000 से ऊपर रन बना चुके है और 100 से ऊपर विकेट ले चुके हैं। 1954 की 6 पारियों मे उन्होंने 636 रन बनाए थे; उनमें त्रावणकोर कोचीन के विरुद्ध बनाए हुए 208 रन भी शामिल हैं। उसी वर्ष उनके शानदार खेल के कारण ही मद्रास पहली बार रणजी ट्रॉफी जीत सका था। 1958 की सात पारियों में दो बार अपराजित रहकर, उन्होंने 519 रन बनाये थे; 1961 में उन्होने 275 रन देकर 27 विकेट गिराए थे। उनकी सर्वोत्तम गेंदबाजी 1961-62 में हैदराबाद के विरुद्ध रही जबकि उन्होने केवल 14 रन देकर 6 बल्लेबाज परास्त कर दिए थे (पूरे मैच मे 49 रन देकर 12 विकेट लिए थे)।

दलीप ट्रॉफी मे वे प्रारम्भ से ही खेल रहे हैं और उन्होने दक्षिण क्षेत्र का नेतृत्व किया है।

उन्होंने भारतीय टीम के सदस्य के रूप मे 1956 मे श्री लंका का

और 1959 में इंग्लैंड का दौरा किया था। वे कुल मिलाकर 14 टैस्टों में खेले हैं। 4 न्यूज़ीलैंड, 3 आस्ट्रेलिया, 1 वेस्टइण्डीज और 6 इंग्लैंड के विरुद्ध : अपनी 20 टैस्ट-पारियों में, 5 बार अपराजित रहकर, उन्होंने कुल 422 रन बनाए है।

वे कॉमनवेल्थ प्रथम के विरुद्ध सम्मिलित स्कूल टीम की ओर से खेले थे। अखिल भारतीय स्कूल क्रिकेट प्रतियोगिता में वे 1949–50 में मद्रास की ओर से खेले थे और 1950–51 से 1954–55 तक मद्रास विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया था।

वे पैरी एण्ड कं० लिमिटेड मद्रास में एक कार्यकारी अधिकारी हैं।

कुन्दरन, बुद्धिसागर कृष्णाप्पा

पारी प्रारम्भ करने वाले दाहिने हाथ के आक्रामक बल्लेबाज, चुस्त विकेट रक्षक और उत्तम क्षेत्र रक्षक श्री कुन्दरन का जन्म 1939 में गांधी जयन्ती के दिन हुआ था। उन्होंने रणजी ट्रॉफी में अपने प्रथम प्रवेश में ही दोहरा शतक बनाया था। वे दूसरे खिलाड़ी हैं जिन्हें 265 रन बनाने का गौरव प्राप्त है। ये रन उन्होंने 1959–60 में जम्मू-कश्मीर के विरुद्ध बनाए थे। तब से वे लगातार रेलवे की ओर से खेल रहे है।

उन्होंने अपने सबसे पहले टैस्ट मैच में 1959–60 में आस्ट्रेलिया के विरुद्ध मद्रास में (चौथा टैस्ट) खेलते हुए फटाफट 71 रन बनाकर सबको अपनी ओर आकर्षित कर लिया था। 1964 में, श्री इंजीनियर को चोट लग जाने के कारण इंग्लैंड के विरुद्ध पहले टैस्ट मे उन्हें खेलने का मौका दिया गया था। उन्होंने 192 रन बना कर बड़ी शानदार बल्लेबाजी की थी; यह रन संख्या तब तक इंग्लैंड के विरुद्ध भारत की सर्वोच्च रन संख्या थी। इस टैस्ट मे उन्होंने 6 बल्लेबाजों को (4 कैच और 2 स्टम्प) धराशायी कर दिया था। इसी शानदार खेल के आधार पर उन्हे पांचों टैस्टों में खेलने का मौका मिला। नई दिल्ली में आयोजित चौथे टैस्ट मे उन्होंने फिर शतक बनाया, और इस श्रृंखला में उन्होंने दोनों टीमों मे सबसे अधिक रन 525 (10 पारियों में) बनाए। उन्होंने 14 टैस्टों की 26 पारियां खेली हैं जिनमे कुल मिलाकर 751 रन बनाए हैं। रणजी ट्रॉफी मैच में उनका सर्वोत्तम विकेट रक्षण 1959–60 मे पटियाला के विरुद्ध रहा जिसमें उन्होंने 4 कैच लिए और 4 को स्टम्प आउट किया था।

उन्होंने 1954–55 और 1955–56 (कप्तान) में अखिल भारतीय स्कूल क्रिकेट टूर्नामिण्ट में बम्बई और पश्चिम क्षेत्र की स्कूलों का प्रतिनिधित्व किया था। 1957–58 में वे बम्बई विश्वविद्यालय की ओर से खेले थे।

वे पश्चिम रेलवे, बम्बई मे काम करते हैं।

कुमार, वामन वी०

रणजी ट्रॉफी और टैस्ट क्रिकेट दोनों में ही श्री कुमार का प्रथम प्रवेश बहुत शानदार रहा। 1955-56 में आंध्र के विरुद्ध खेलते हुए उन्होंने 70 रन देकर 3 विकेट और 20 रन देकर 4 विकेट गिराए थे। 1960-61 में पाकिस्तान के विरुद्ध नई दिल्ली में अपना पहला टैस्ट खेलते हुए उन्होने 64 रन देकर 5 विकेट और 68 रन देकर 2 विकेट लिए थे।

उनका जन्म 22 जून 1935 को मद्रास में हुआ था। वे दाहिनी भुजा से लेगब्रेक-व-गुगली गेंद फेंकने में प्रवीण हैं और दाहिने हाथ से बल्लेबाजी करते हैं। रणजी ट्रॉफी में उन्होने अनेक बार बहुत शानदार खेल दिखाया है और उन्होंने 200 से ऊपर विकेट लिए है। उन्होंने 1957-58 में 14·21 के औसत से 398 रन देकर 28 विकेट; 1958-59 मे 16·43 के औसत से 493 रन देकर 33 विकेट; 1959-60 में 14·18 के औसत से 489 रन देकर 33 विकेट और 1960-61 मे 13·98 के औसत से 432 रन देकर 31 विकेट गिराए थे। उनकी सर्वोत्तम गेंदबाजी 1959-60 में हैदराबाद के विरुद्ध रही जबकि उन्होने केवल 27 रन देकर 7 बल्लेबाज परास्त कर दिए थे।

अपने पहले ही टैस्ट में वे भारत के सर्वश्रेष्ठ गेंदबाज सिद्ध हुए जिसमे वे पाकिस्तान के विरुद्ध खेले थे परन्तु ऐसा शानदार खेल फिर वे पाकिस्तान के विरुद्ध दूसरे टैस्ट में और 1961-62 में इंग्लैंड के विरुद्ध अपने अन्तिम टैस्ट में नहीं दिखला सके।

1952-53 और 1954-55 से 1956-57 तक वे मद्रास विश्वविद्यालय की ओर से खेलते रहे। 'इण्डियन स्टारलेट्स' के साथ वे पाकिस्तान के दौरे पर भी गए थे। वे स्टेट बैंक आफ इण्डिया के कर्मचारी हैं।

केनी, रामनाथ बी०

श्री केनी सुरक्षात्मक ढंग से खेलने वाले दाहिने हाथ के शानदार बल्लेबाज और दाहिनी भुजा से लेगब्रेक गेंद फेंकने वाले गेंदबाज हैं। प्रथम श्रेणी के क्रिकेट मे उन्होने 1950-51 मे खेलना शुरू किया था। सर्वप्रथम वे बम्बई की ओर से महाराष्ट्र के विरुद्ध खेले थे और उन्होने 52 रन बनाए थे। वे 29 मार्च 1930 को बम्बई में पैदा हुए थे और 1960-61 तक बम्बई संघ की ओर से ही खेलते रहे; उसके बाद वे बंगाल चले गए। रणजी ट्रॉफी में उन्होने 54·26 रन प्रति पारी के औसत से कुल 2062 रन बनाए हैं। उनके सर्वोत्तम खेल का वर्ष 1956 था जिसमें उन्होंने पांच पारियों में 529 रन बनाए थे और उसी वर्ष उनकी सर्वोच्च रन संख्या

218 महाराष्ट्र के विरुद्ध रही। रणजी ट्रॉफी मे उन्होंने आठ शतक बनाए है।

उन्हें पांच टैस्ट मैचों मे खेलने का अवसर मिला है। 1958-59 मे वेस्टइण्डीज के विरुद्ध (1) और 1959-60 में आस्ट्रेलिया के विरुद्ध (4)। 1953-54 मे उन्होंने सिलवर जुबली ओवरसीज टीम के विरुद्ध दो अनौपचारिक टैस्ट खेले थे। अपनी 10 टैस्ट पारियों में, एक बार अपराजित रहकर, उन्होंने कुल 245 रन बनाए जिसमें आस्ट्रेलिया के विरुद्ध अपने सबसे अधिक रन 62 लिए थे।

1948 से 1953 तक उन्होंने बम्बई विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया था। वे भारतीय विश्वविद्यालयों की ओर से 1951-52 में एम० सी० सी० के विरुद्ध खेले थे जिसमें उन्होंने 86 रन बनाए थे और 1952 मे पाकिस्तान के विरुद्ध खेले थे जिसमें उन्होंने 99 रन बनाए थे। एक व्यावसायिक खिलाडी के रूप मे उन्होंने 1961 में पेनरिथ की ओर से कम्बरलैंड लीग में भाग लिया था।

वे कलकत्ता में क्रिकेट कोच है।

कोएट्रेक्टर, नारीमन जे०

श्री कोण्ट्रेक्टर ने प्रथम श्रेणी के क्रिकेट मे अपना प्रवेश शतकीय प्रहारों के साथ ही किया। 1952 मे उन्होंने अपने पहले ही मैच की दोनो पारियो में बड़ौदा के विरुद्ध गुजरात की ओर से खेलते हुए अपराजित 102 और 152 रन बनाए थे। इस प्रकार का शानदार खेल इससे पहले केवल आस्ट्रेलिया के आर्थर मोरिस ही दिखा सके थे। परन्तु जब वे अपने खिलाड़ी जीवन के चरमोत्कर्ष पर थे तो 1962 में वेस्टइण्डीज के दौरे के समय बारबडोस के विरुद्ध बल्लेबाजी करते हुए, ग्रिफिथ की गेंद से उनके सिर i गम्भीर चोट लगी। कुछ समय तक वे जीवन और मृत्यु के बीच झूलते रहे वे स्वयं तो बच गए परन्तु आत्मविश्वास और बल्लेबाजी के कौशल क नही बचा सके।

श्री कोण्ट्रेक्टर का जन्म गोधरा में 7 मार्च 1934 को हुआ था वे पारी का प्रारम्भ करने वाले बाएँ हाथ से शानदार सुरक्षात्मक खेल खेल वाले बल्लेबाज और संकीर्ण व्यूह के क्षेत्र रक्षक हैं। 1952-53 से 1958-5 तक गुजरात की ओर से खेले थे। 1959-60 मे उन्होने रेलवे की टीम क नेतृत्व किया था। फिर गुजरात लौट आए और 1960-61 और 1961-6 मे गुजरात की टीम का नेतृत्व किया। उन्होंने रणजी ट्रॉफी में कुल 4 पारियाँ खेली हैं; दो मे अपराजित रहे हैं और 49·20 के औसत से कु मिलाकर 2116 रन बनाए हैं। उन्होंने अपने जीवन में 10 शतक बना

है। 1957 उनके चरमोत्कर्ष का वर्ष था जब कि उन्होने रणजी ट्रॉफी की पांच पारियों में 532 रन बनाए थे।

वे 31 टैस्टों में खेल चुके हैं : 9 इंग्लैंड के विरुद्ध; 7 वेस्टइण्डीज के विरुद्ध; 6 आस्ट्रेलिया के विरुद्ध; 5 पाकिस्तान के विरुद्ध; और 4 न्यूजीलैंड के विरुद्ध। वे 1960 में पाकिस्तान के विरुद्ध; 1961–62 में इंग्लैंड के विरुद्ध और 1962 मे वेस्टइण्डीज के विरुद्ध भारतीय टीम के कप्तान रहे हैं। अपनी कुल 52 टैस्ट पारियों मे, एक में अपराजित रह कर, उन्होंने कुल 1611 रन बनाए हैं। वे टैस्टों में केवल एक ही शतक बना सके जो 1959 में आस्ट्रेलिया के विरुद्ध बम्बई के तीसरे टैस्ट में बना था।

भारतीय टीम के सदस्य के रूप मे उन्होंने 1956 में श्री लंका और 1959 में इंग्लैंड का दौरा किया था। 1962 में उन्होंने वेस्टइण्डीज में भारतीय टीम का नेतृत्व किया था।

उन्हें 1952 से 1962 के बीच जो भी विदेशी टीमें भारत में आई थीं उन सबके विरुद्ध खेलने का अवसर मिला था। 1950–51 में उन्होने अखिल भारतीय स्कूल क्रिकेट प्रतियोगिता में बम्बई स्कूलो का प्रतिनिधित्व किया था। 1952–53, 1954–55 (कप्तान), 1955–56 और 1956–57 (कप्तान) मे वे बम्बई की ओर से खेले थे। इन चारों अवसरो पर बम्बई ने ट्रॉफी जीती थी।

वे टाटा लोकोमोटिव लिमिटेड बम्बई मे काम करते हैं।

भारत सरकार ने उन्हें 1962 में "पद्म श्री" से विभूषित किया है।

कोल्हा, एस० एच० एम०

एक शक्तिशाली बल्लेबाज और कवर पंक्ति के शानदार क्षेत्ररक्षक श्री कोल्हा 1932 में इंग्लैंड का दौरा करने वाली भारतीय टीम के सदस्य रहे हैं। इंग्लैंड के विरुद्ध, दो टैस्टों में खेल चुके हैं। 1932 मे लार्ड्स के मैदान में और 1933–34 में बम्बई में और उन्होने चारों पारियों में कुल 69 रन बनाए थे।

वे 1934–35 और 1935–36 की रणजी ट्रॉफी प्रतियोगिताओं में पश्चिम भारत की ओर से खेले थे और इसके बाद 1941–42 मे अपनी निवृत्ति तक नवानगर की ओर से खेलते रहे। उन्होंने 36 पारियो में, पांच बार अपराजित रहकर, 35 रनों के औसत से कुल 1085 रन बनाए थे। उन्होंने अपनी सर्वोत्तम बल्लेबाजी 1935–36 मे गुजरात के विरुद्ध दिखाई जब उन्होने पश्चिम भारत की ओर से खेलते हुए अपराजित रह कर 185 रन बनाए थे। बम्बई चतुष्कोणीय और पंचकोणीय प्रतियोगिताओं मे वे पारसी क्लब की ओर से खेलते थे।

गडकरी, चन्द्र वी०

श्री गडकरी का जन्म 3 फरवरी 1928 को पूना में हुआ था। वे एक उपयोगी सर्वोन्मुखी खिलाड़ी रहे हैं और दाहिने हाथ से बल्लेबाजी एवं दाहिनी भुजा से गेंदबाजी करते है तथा एक शानदार क्षेत्ररक्षक हैं। उन्होंने प्रथमश्रेणी के क्रिकेट मे अपना पहला प्रवेश, 1947–48 में, नवानगर के विरुद्ध महाराष्ट्र की ओर से खेलकर, किया। बाद मे उन्होंने सेना की नौकरी कर ली और 1950–51 से सेना की टीम में लगातार खेल रहे हैं। रणजी ट्रॉफी में उन्होंने कुल 43 पारियों में, 6 बार अपराजित रहकर, 51·10 के औसत से 1891 रन बनाए है। उनकी सर्वोच्च रन संख्या अपराजित 145 है जो उन्होने 1955–56 मे पूर्व पंजाब के विरुद्ध बनाई थी। उनकी सर्वोत्तम गेंदबाजी 1953–54 में सिलवर जुबली ओवरसीज टीम के विरुद्ध रही जबकि उन्होंने उत्तर क्षेत्र की ओर से खेलते हुए 36 रन देकर 6 विकेट लिए थे। रणजी ट्रॉफी म उनकी सर्वोत्तम गेंदबाजी 1951–52 में होल्कर के विरुद्ध रही जबकि उन्होंने 35 रन देकर 4 विकेट लिए थे।

जो भारतीय टीम 1952–53 में वेस्टइण्डीज और 1954–55 में पाकिस्तान गई थी, उसके वे सदस्य रहे हैं। उन्होने वेस्टइण्डीज के विरुद्ध तीन और पाकिस्तान के विरुद्ध भी तीन टैस्ट मैच खेले थे। अपनी 10 टैस्ट पारियों मे, 4 बार अपराजित रहकर, उन्होंने 132 रन बनाए थे। वेस्टइण्डीज के विरुद्ध उन्होने अपराजित रहकर 50 रन बनाए थे। टैस्ट मैचों मे उनकी यही सबसे अधिक रन संख्या है।

1947–48 में वे बम्बई विश्वविद्यालय की ओर से भी खेले थे।

गायकवाड, दत्ताजी राव के०

पूरी सुरक्षा के साथ दाहिने हाथ से शानदार बल्लेबाजी करने वाले और उत्कृष्ट कोटि का क्षेत्ररक्षण करने वाले श्री गायकवाड़ दाहिनी भुजा से मध्यमगति की धीमी गेंदबाजी करने में भी बहुत सफल रहे हैं। प्रथम श्रेणी के क्रिकेट मे उन्होंने सबसे पहले 1947–48 मे प्रवेश किया और काठियावाड के विरुद्ध बडौदा की ओर से खेले। तबसे वे लगातार बड़ौदा की ओर से खेलते रहे हैं। 1957–58 में वे पहली बार अपनी टीम के कप्तान हुए और उनके कुशल नेतृत्व में उनकी टीम विजयी रही। वे 1960–61 तक बडौदा की टीम के कप्तान रहे हैं। उन्होंने रणजी ट्रॉफी मे कुल 69 पारियों मे, 3 बार अपराजित रहकर, 3139 रन बनाए हैं। इस पूरे खेल में उन्होने 11 शतक और 3 दोहरे शतक बनाए थे। उनकी सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाजी 1959 मे महाराष्ट्र के विरुद्ध रही जबकि उन्होंने अपराजित रहकर 249 रन बनाए थे। इसी प्रकार, उन्होंने 1957 मे बम्बई के विरुद्ध 218

रन; 1961 में गुजरात के विरुद्ध अपराजित 201, और 1949 में गुजरात के विरुद्ध 128 और अपराजित 101 रन बनाए थे।

वे 11 टैस्टों में खेल चुके है : 5 इंग्लैंड के विरुद्ध, 3 पाकिस्तान के विरुद्ध और 3 वेस्टइण्डीज के विरुद्ध। अपनी 20 टैस्ट पारियों में वे एक बार अपराजित रहे और कुल 350 रन बनाए। उन्होंने अपने सबसे अधिक रन 52, दिल्ली में 1958–59 में वेस्टइण्डीज के विरुद्ध बनाए थे। उन्होने 1952 और 1959 (कप्तान) में इंग्लैंड का और 1952–53 में वेस्टइण्डीज का दौरा किया। उन्होने अपने 1959 के इंग्लैंड के दौरे में एक हजार रन पूरे कर लिए थे।

उन्होंने 1947–48 तथा 1948–49 में बम्बई विश्वविद्यालय का और 1950–51, 1951–52 (कप्तान) और 1952–53 (कप्तान) में बड़ौदा विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया। उनका जन्म 27 अक्तूबर 1928 को हुआ था। वे महाराजा बड़ौदा के परिसहायक(ए डी सी) है।

गायकवाड़, हीरालाल जी०

बाईं भुजा से मध्यम गति की धीमी गेंद फेंकने वाले और बाएँ हाथ से आक्रामक बल्लेबाजी करने वाले श्री हीरालाल गायकवाड का जन्म 29 अगस्त 1928 को हुआ था। उन्होंने रणजी ट्रॉफी में सर्वप्रथम 1941-42 प्रवेश मे किया जबकि वे मद्रास के विरुद्ध मध्यभारत और बरार की ओर से खेले थे। अगले वर्ष वे होल्कर की टीम में चले गए और तबसे वे लगातार उसी टीम की ओर से खेलते रहे है। उस टीम का नाम होल्कर से बदलकर मध्य भारत और अतत: मध्यप्रदेश हो गया है। वे उन थोड़े से खिलाड़ियों में से एक हैं जिनको रणजी ट्रॉफी मे 200 विकेट लेने और 1000 रन बनाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। उन्होने 22·01 के औसत से कुल 227 विकेट लिए हैं और 23·52 के औसत से 1976 रन बनाए है। प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में उनकी सर्वोच्च रन संख्या 164, बिहार के विरुद्ध 1951-52 में रही और सर्वोत्तम गेंदबाजी 1948-49 में बड़ौदा के विरुद्ध, जबकि उन्होने 67 रन देकर 7 विपक्षी बल्लेबाजो को धराशायी किया था।

उन्हे 1952 में पाकिस्तान के विरुद्ध लखनऊ मे दूसरा टस्ट खेलने का अवसर मिला था। इससे पहले भी वे 'कॉमनवेल्थ प्रथम और द्वितीय के साथ तीन अनौपचारिक टैस्ट खेल चुके थे। 1952 में इंग्लैंड का दौरा करने वाली भारतीय टीम के भी वे सदस्य रहे हैं। 1953 मे वे लंकाशायर लीग में कोल्न की ओर से खेले थे।

गार्डे, गुलाम एम०

श्री गार्डे का जन्म 12 दिसम्बर 1925 को सूरत में हुआ था। वे बाईं भुजा से मध्यम तेज गेंदबाजी करते हैं और बाएँ हाथ से बल्लेबाजी। प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में वे सर्वप्रथम 1947-48 में काठियावाड़ के विरुद्ध बंबई की ओर से उतरे थे। 1953-54 से 55-56 के बीच ही वे गुजरात की ओर से खेले, बाकी वे बम्बई की ओर से नियमित रूप से खेल रहे हैं। रणजी ट्रॉफी में उन्होंने 17.59 के औसत से 100 विकेट लिए हैं। उनकी सर्वोत्तम गेंदबाजी 1947-48 में हैदराबाद के विरुद्ध रही जबकि उन्होंने केवल 46 रन देकर 6 विकेट लिए थे (पूरे मैच में 90 रन देकर 9 विकेट गिराए थे)। उनके लिए 1959-60 का वर्ष सबसे बढ़िया माना जाता है क्योंकि उस वर्ष उन्होंने रणजी ट्रॉफी में 15 के औसत से 31 विकेट लिए थे।

उन्हें दो टैस्ट मैचों में खेलने का अवसर मिला है। 1958-59 में वेस्टइण्डीज के विरुद्ध एक और 1959-60 में आस्ट्रेलिया के विरुद्ध एक। टैस्ट में उनकी सर्वोत्तम गेंदबाजी वेस्टइण्डीज के विरुद्ध रही जिसमें उन्होंने 88 रन देकर 3 विकेट गिराए थे।

वे महाराष्ट्र राज्य पुलिस, बंबई में उपनिरीक्षक (थानेदार) हैं।

गुप्ते, बालू पंढरीनाथ

श्री बालू गुप्ते भी अपने बड़े भाई श्री सुभाष गुप्ते के समान ही दाहिनी भुजा से लेग ब्रेक-व-गुगली गेंद फेंकने वाले गेंदबाज हैं पर उतने मारक नहीं। उनका जन्म 30 अगस्त 1934 को बंबई में हुआ था। उन्होंने प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में प्रथम प्रवेश 1953-54 में किया जबकि वे महाराष्ट्र के विरुद्ध बंबई की ओर से खेले थे और उन्होंने 57 रन देकर तीन विकेट गिराए थे। तब से वे रणजी ट्रॉफी में लगातार बंबई की ओर से खेल रहे हैं परन्तु वे 1957-58 में बंगाल की ओर से और 1959-60 में रैल्वे की ओर से खेले थे। उनकी सर्वोत्तम गेंदबाजी 1961-62 में रही जबकि उन्होंने दिल्ली के विरुद्ध खेलते हुए, 111 रन देकर 8 विकेट (पूरे मैच में 160 रन पर 10 विकेट) लिए थे।

अब तक वे तीन टैस्टों में खेल चुके हैं: पाकिस्तान (1960), इंग्लैंड (1964) और न्यूजीलैंड (1965) तीनों के विरुद्ध एक-एक।

1956-57 में अन्तर विश्वविद्यालय प्रतियोगिता के फाइनल मैच में बंबई की ओर से दिल्ली के विरुद्ध खेलते हुए उन्होंने दूसरी पारी में 116 ओवर फेंके थे और भारत में एक पारी में 100 ओवर से अधिक गेंदबाजी करने का कीर्तिमान स्थापित किया। उन्होंने 1953-54 से 1956-57 तक

और 1959-60 में बंबई विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया था। एक व्यावसायिक खिलाड़ी के रूप में वे 1957 और 1958 में नेलसन की ओर से लंकाशायर लीग में खेले थे।

वे रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया के कर्मचारी हैं।

गुप्ते, सुभाष पंढरीनाथ 'फर्जी'

दाहिनी भुजा से लेग ब्रेक-व-गुगली गेंद फेंकने वाले गेंदबाज श्री गुप्ते जब अपने उत्कर्ष की चरमावस्था में थे तो अपनी किस्म के एक सर्वश्रेष्ठ गेंदबाज थे। उनका जन्म 11 दिसम्बर 1929 को हुआ था। प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में उन्होंने सर्व प्रथम प्रवेश 1948-49 में किया जब वे मद्रास के विरुद्ध बंबई की ओर से खेले थे। 1953-54 और 1957-58 में वे बंगाल की ओर से और 1960-61 से 1963-64 तक राजस्थान की ओर से खेले थे। इसके बाद वे बंबई की ओर से खेले। रणजी ट्रॉफी में उन्होंने 18.71 के औसत से कुल 2264 रन देकर 121 विकेट लिए हैं। 1962 में उन्होंने इस प्रतियोगिता में 311 रन देकर 29 विकेट लिए थे।

अपने जीवन का सबसे पहला टैस्ट मैच उन्होने 1951-52 में इंग्लैंड के विरुद्ध कलकत्ता में खेला था। अब तक वे 36 टैस्ट मैच खेल चुके है : 8 इंग्लैंड, 10 पाकिस्तान, 10 वेस्टइण्डीज, 5 न्यूजीलैंड, और 3 आस्ट्रेलिया के विरुद्ध। उन्होने प्रति विकेट 29.54 के औसत से कुल 4402 रन देकर 149 टैस्ट विकेट गिराए हैं। गेंदबाजी में उनका सर्वोत्कृष्ट खेल 1958-59 में वेस्टइण्डीज के विरुद्ध रहा जिसमें उन्होंने 102 रन देकर 9 विकेट गिराए थे। टैस्ट मैच में उन्होंने, दो बार, एक पारी में 7 विकेट लिए थे : 1953 में वेस्टइण्डीज के विरुद्ध पोर्ट-ऑफ-स्पेन में 162 रन देकर 7 विकेट और 1955-56 में न्यूजीलैंड के विरुद्ध 128 रन देकर 7 विकेट। टैस्ट पारी में उन्होंने 12 बार 5 या अधिक विकेट लिए है।

उन्होंने सिलवर जुबली ओवरसीज टीम के विरुद्ध पांचों अनौपचारिक टैस्ट खेले थे और उस शृंखला में वे ही सर्वश्रेष्ठ गेंदबाज सिद्ध हुए। उन्होने पहले टैस्ट में 91 रन देकर 8 विकेट, दूसरे टैस्ट में 95 रन देकर 6 विकेट, चौथे टैस्ट में 96 रन देकर 4 और 92 रन देकर 3 विकेट लिए थे। पाकिस्तान सेना व भावलपुर एकादश के विरुद्ध बंबई क्रिकेट संघ प्रेजीडेंट एकादश की ओर से खेलते हुए उन्होंने केवल 78 रनों पर दसों बल्लेबाज धराशायी कर दिए थे।

भारतीय टीम के सदस्य के रूप में उन्होंने 1952-53 में वेस्टइण्डीज, 1954-55 में पाकिस्तान, 1956 में श्रीलंका और 1959 में इंग्लैंड का दौरा किया था। 1961-62 में वे रोबर्ट्स की कॉमनवेल्थ टीम के सदस्य थे।

एक व्यावसायिक खिलाड़ी के रूप में वे 1954 से 56 तक रिष्टन की ओर से लंकाशायर लीग में, 1957 और 58 में हेवुड की ओर से केंद्रीय लंकाशायर लीग में, और 1960-61 में लंकास्टर की ओर से उत्तरी लीग में खेले थे।

1947-48 और 49-50 के बीच उन्होंने बंबई विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया था।

गुल मोहम्मद

श्री गुल मोहम्मद उन थोड़े से खिलाड़ियों में से हैं जिन्हें भारत और पाकिस्तान दोनों देशों के लिए खेलने का मौका मिला है। वे पिछली पंक्ति के शानदार क्षेत्ररक्षक रह चुके हैं। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में प्रथम प्रवेश 1945 में किया जब उन्होंने आस्ट्रेलिया की सेना की टीम के विरुद्ध पहले अनौपचारिक टैस्ट में 48 और तीसरे में 55 रन बनाए थे। उनका जन्म 15 अक्तूबर, 1921 को हुआ था। उन्होंने भारतीय टीम के साथ 1946 में इंग्लैंड और 1947-48 में आस्ट्रेलिया का दौरा किया था। उन्होंने एक टैस्ट इंग्लैंड में, पांच आस्ट्रेलिया में और 1952 में पाकिस्तान के विरुद्ध दो टैस्ट खेले थे।

रणजी ट्रॉफी में उनका खेल कुल मिलाकर काफी प्रभावशाली रहा। उन्होंने बारी-बारी से उत्तर भारत, पश्चिम भारत, बड़ौदा और हैदराबाद की ओर से भाग लिया। रणजी ट्रॉफी की अपनी कुल 51 पारियों में, दो बार अपराजित रहकर उन्होंने 37.58 के औसत से कुल 1842 रन बनाए। उनकी सर्वोत्कृष्ट बल्लेबाजी 1946-47 में होल्कर के विरुद्ध रही जब कि उन्होंने बड़ौदा की ओर से खेलते हुए 319 रन फटकारे थे और श्री हजारे के साथ मिलकर चौथे विकेट की साझेदारी में 577 रन बनाए थे जो कि विश्व कीर्तिमान (वर्ल्ड रेकार्ड) है।

बंबई की पंचकोणीय प्रतियोगिता में उन्होंने 1941 में मुस्लिम क्लब की ओर से हिन्दू क्लब के विरुद्ध खेलते हुए 101 रन और 1944 में 'शेष' के विरुद्ध 106 रन बनाए थे।

गुलाम अहमद

भारत के सर्वश्रेष्ठ ऑफ ब्रेक गेंदबाज श्री गुलाम अहमद का जन्म 4 जुलाई 1922 को हैदराबाद में हुआ था। वे दाहिने हाथ से बल्लेबाजी और दाहिनी भुजा से गेंदबाजी करते हैं। 1939-40 में रणजी ट्रॉफी प्रतियोगिता में उनके खेल का श्रीगणेश बहुत ही प्रभावशाली रहा जबकि उन्होंने हैदराबाद की ओर से खेलते हुए, मद्रास को 95 और 62 रन देकर

क्रमशः उनके 5 और 4 विकेट लिए थे। उन्होंने 1952-53, 53-54, 56-57, 57-58, 58-59 में रणजी ट्रॉफी प्रतियोगिता में हैदराबाद का नेतृत्व किया है। 1947 में उन्होंने मद्रास के विरुद्ध खेलते हुए, पहली पारी में 53 रन देकर 9 विकेट और दूसरी पारी में 5 विकेट लिए थे। रणजी ट्रॉफी मैचों में उन्होंने उन्नीस बार 5 या अधिक विकेट लिए हैं। इस प्रतियोगिता में उनके अन्तिम आंकड़े इस प्रकार है : 1480·3 ओवर, 384 मेडन ओवर, 3256 रन, 179 विकेट, 18·18 औसत। उनकी सर्वोच्च रन संख्या 90, मैसूर के विरुद्ध 1946-47 में रही।

1946 में वे बम्बई पंचकोणीय प्रतियोगिता में मुस्लिम क्लब की ओर से खेले थे।

उन्होंने कुल 22 टैस्ट खेले हैं : 8 पाकिस्तान, 6 इंग्लैंड, 5 वेस्टइण्डीज, 2 आस्ट्रेलिया और 1 न्यूजीलैंड के विरुद्ध। 1956-57 में न्यूजीलैंड के विरुद्ध, 1956 में आस्ट्रेलिया के विरुद्ध और 1958-59 में वेस्टइण्डीज के विरुद्ध उन्होंने भारत का नेतृत्व किया है। जो भारतीय टीमें 1952 में इंग्लैंड, 1954-55 में पाकिस्तान और 1956 में श्री लंका के दौरे पर गईं थी उनके वे सदस्य थे। वे 1952-53 में वेस्टइण्डीज और 1959 में इंग्लैंड के लिए भी चुन लिए गए थे परन्तु उन्होने निमन्त्रण अस्वीकार कर दिया। टैस्ट क्रिकेट में उनके आँकड़े इस प्रकार हैं : 941·4 ओवर, 253 मेडन ओवर, 2052 रन, 68 विकेट, 30·11 औसत। टैस्ट मैचों में उन्होंने चार बार 5 या अधिक विकेट लिए हैं। उनकी सर्वोत्तम टैस्ट गेंदबाजी 1956 में आस्ट्रेलिया के विरुद्ध रही जबकि उन्होंने 49 रन देकर आस्ट्रेलिया के 7 दिग्गज बल्लेबाजों को परास्त कर दिया था। उन्होंने अपने सबसे अधिक रन 50, पाकिस्तान के विरुद्ध, 1952 में बनाए थे।

उन्होंने कॉमनवेल्थ प्रथम के विरुद्ध एक अनौपचारिक टैस्ट मैच खेला था। सिलवर जुबली ओवरसीज टीम के विरुद्ध उन्होंने तीन मैच खेले थे जिनमें से एक में उन्होंने 42 रन देकर 7 विकेट लिए थे। रणजी ट्रॉफी की एक पारी में उन्होने अब तक सबसे अधिक ओवर फेंकने का कीर्तिमान स्थापित किया है : 1950-51 में होल्कर के विरुद्ध 92·3 ओवर। 1962 में जिस भारतीय टीम ने वेस्टइण्डीज का दौरा किया था उसके वे व्यवस्थापक (मैनेजर) थे। वे भारतीय टैस्ट चयन समिति के भी सदस्य हैं। वे आन्ध्र प्रदेश सरकार के अंतर्गत एक पदाधिकारी हैं।

गोपालन, एम० जे०

रणजी ट्रॉफी के लिए खेली जाने वाली भारत की राष्ट्रीय क्रिकेट प्रतियोगिता में सबसे पहली गेंद फेंकने का गौरव श्री गोपालन को मिला है।

मैसूर के विरुद्ध मद्रास की ओर से खेलते हुए उन्होंने 4 नवंबर 1934 को श्री एन० कुर्टीस के समक्ष पहली गेंद फेंकी थी। रणजी ट्रॉफी के पहले वर्ष से ही उन्होंने मद्रास की ओर से खेलना शुरू किया था और 1941-42 से 43-44 तक उन्होने अपनी टीम का नेतृत्व भी किया। उनकी सर्वोत्तम बल्लेबाजी 1940-41 में उत्तर प्रदेश के विरुद्ध रही जबकि उन्होंने अपराजित 101 रन बनाए थे। उन्होने सर्वोत्तम गेंदबाजी 1936-37 में मैसूर के विरुद्ध दिखाई जब कि उन्होंने केवल 17 रन देकर चार विकेट और 15 रन देकर 5 विकेट चटका दिए थे। इसके अलावा उन्होने अपने राज्य मद्रास की ओर से खेलते हुए अनेक बार शानदार खेल दिखाया है।

वे 1933-34 में कलकत्ता में इंग्लैंड के विरुद्ध दूसरे टैस्ट में खेले थे और उसमें उन्होंने अपराजित 11 और 7 रन बनाए थे तथा 39 रन देकर एक विकेट लिया था। 1936 में राइडर की आस्ट्रेलियाई टीम के विरुद्ध मद्रास की ओर से खेलते हुए उन्होंने केवल 23 रन देकर 6 बल्लेबाजों को और 62 रन देकर 5 बल्लेबाजों को धराशायी कर दिया था। 1938 में उन्होने लार्ड टेनीसन की टीम के विरुद्ध एक अनौपचारिक मैच खेला था। 1936 में इंग्लैंड के दौरे पर जाने वाली भारतीय टीम के भी वे सदस्य थे।

सभी प्रथम श्रेणी के मैचों में उन्होने कुल मिलाकर 184 विकेट लिए हैं और 4475 रन दिए हैं। इनमें से अकेले रणजी ट्रॉफी में उन्होने 1381 रन देकर 69 विकेट लिए हैं। रणजी ट्रॉफी में उन्होंने 49 पारियों में, 6 बार अपराजित रह कर, 1142 रन बनाए हैं और इनके समेत उन्होंने अब तक कुल 116 पारियों मे, 17 बार अपराजित रह कर, 2581 रन बनाए हैं।

वे भारत की ओर से हॉकी भी खेल चुके हैं। वे भारतीय टैस्ट चयन समिति के सदस्य रह चुके हैं। उन्हें 1961 में भारत के राष्ट्रपति द्वारा 'पद्मश्री' से विभूषित किया गया था।

गोपीनाथ, सी० डी०

दाहिने हाथ से रक्षात्मक खेल खेलने वाले शानदार बल्लेबाज श्री गोपीनाथ कई वर्षों तक मद्रास की बल्लेबाजी के मेरुदण्ड रहे हैं। उन्होंने प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में 1949-50 में खेलना प्रारंभ किया जब कि वे मैसूर के विरुद्ध मद्रास की ओर से खेले थे। 1953-54 में वे मद्रास की टीम के कप्तान बने। रणजी ट्रॉफी में उन्होंने 52 पारियों में, छः बार अपराजित रहकर 51.06 प्रतिपारी के औसत से कुल 2349 रन बनाए हैं। उन्होने कुल सात शतक बनाए हैं और उनकी सर्वोच्च रन संख्या 234 मैसूर के विरुद्ध 1958-59 मे रही है।

उन्होंने आठ टेस्ट मैच खेले हैं : इंग्लैंड के विरुद्ध 1951-52 में तीन और 1952 में एक; पाकिस्तान के विरुद्ध 1952 में एक और 1955 में दो और आस्ट्रेलिया के विरुद्ध 1959 में एक। अपनी 12 टैस्ट पारियों में, एक में अपराजित रह कर, उन्होंने प्रति पारी 22 के औसत से कुल 242 रन बनाए हैं। 1951-52 में इंग्लैंड के विरुद्ध बंबई में उन्होने अपराजित रह कर अपने सबसे अधिक 50 रन बनाए थे। वे 1952 में इंग्लैंड और 1954-55 में पाकिस्तान जाने वाली भारतीय टीम के सदस्य रहे हैं।

वे कॉमनवेल्थ द्वितीय के विरुद्ध एक बार और सिलवर जुबली ओवरसीज टीम के विरुद्ध तीन बार अनौपचारिक टैस्ट खेल चुके हैं।

उनका जन्म 1 मार्च, 1930 को हुआ था। उन्होने 1948-49 से 1950-51 तक मद्रास विश्व विद्यालय का प्रतिनिधित्व किया था।

घोरपडे, जयसिंह एम०

श्री घोरपडे का जन्म 1930 में गांधी जयन्ती के दिन पंचगनी (महाराष्ट्र) में हुआ था। वे चश्मा लगाकर खेलते हैं। एक आक्रामक दाहिने हाथ के बल्लेबाज होने के साथ-साथ वे दाहिनी भुजा से लेगब्रेक-व-गुगली गेंद फेंकने वाले कुशल गेंदबाज और कवर पंक्ति के शानदार क्षेत्र-रक्षक भी हैं। अपनी छात्रावस्था में ही उन्होंने रणजी ट्रॉफी में खेलना प्रारम्भ कर दिया था। रणजी ट्रॉफी में उनका पहला खेल 1948–49 में गुजरात के विरुद्ध बड़ौदा की ओर से था। तब से वे लगातार बड़ौदा की ओर से खेल रहे हैं। उन्होंने रणजी ट्रॉफी में एक हजार से ऊपर रन बनाए हैं। उनकी सर्वोच्च रन संख्या 123, राजस्थान के विरुद्ध 1957–58 में रही। उनकी सर्वोत्तम गेन्दबाजी 1959–60 में गुजरात के विरुद्ध थी जिसमें उन्होने 60 रन देकर 5 विकेट लिए थे। उन्होंने 1952 में पाकिस्तान के विरुद्ध बड़ौदा की ओर से खेलते हुए 19 रन देकर 6 बल्लेबाजों को परास्त कर दिया था।

उन्होंने 8 टैस्ट खेले है : वेस्टइण्डीज के विरुद्ध 1952–53 (2); 1958–59 (1); न्यूजीलैंड के विरुद्ध 1955–56 (1); आस्ट्रेलिया के विरुद्ध 1956 (1) और इंग्लैंड के विरुद्ध 1959 (3)। 15 टैस्ट पारियों में उन्होंने कुल 229 रन बनाए हैं। वे 1952–53 में वेस्टइण्डीज और 1959 में इंग्लैंड जाने वाली भारतीय टीम के सदस्य रहे हैं।

वे 1945–46 और 1949–50 में अखिल भारतीय स्कूल क्रिकेट प्रतियोगिता में बड़ौदा स्कूलों की ओर से, 1949–50 में कॉमनवेल्थ प्रथम के विरुद्ध सम्मिलित स्कूल एकादश की ओर से, और 1950–51 तथा 1952–53 (कप्तान) में बड़ौदा विश्वविद्यालय की ओर से खेले थे। 1956

में वे लंकाशायर लीग में रौटैंस्टाल की ओर से खेले।

वे महाराजा बड़ौदा के परिसहायक हैं।

चन्द्रशेखर, बी० एस०

अपनी दाहिनी भुजा से धीमी घूमती हुई गेंद फेंकने वाले गेंदबाज और दाहिने हाथ के बल्लेबाज श्री चन्द्रशेखर ने अपने प्रथम श्रेणी के पहले क्रिकेट मैच में ही अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कर ली थी। उनका जन्म 17 जून 1946 को हुआ था और उन्होंने 1963–64 में रणजी ट्रॉफी के अपने पहले वर्ष के खेल में ही 12·80 के औसत से 397 रन देकर 31 विकेट लिए थे और उसी वर्ष इंग्लैंड के विरुद्ध चार टैस्ट खेले जिनमें 339 रन देकर 10 विकेट लिए। अपने सर्वप्रथम बम्बई के टैस्ट मैच में उन्होंने 67 रन देकर 4 विकेट लिए थे। वे आस्ट्रेलिया के विरुद्ध भी दूसरे और तीसरे टैस्ट में खेले और बम्बई टैस्ट में 50 रनों पर 4 विकेट और 73 रनों पर 4 विकेट लेकर उन्होंने भारत की विजय में भारी योगदान दिया था। न्यूजीलैंड के विरुद्ध वे तीसरे और चौथे टैस्ट में खेले और तीसरे टैस्ट की दूसरी पारी में उन्होंने 25 रन देकर न्यूजीलैंड के चार बल्लेबाज परास्त किए थे।

चौधुरी, एन० आर०

दाहिनी भुजा से मध्यम गति की आफ ब्रेक गेंद फेंकने वाले गेंदबाज श्री चौधुरी ने प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में पहली बार प्रवेश 1941–42 में किया था। उसमें बंगाल के विरुद्ध बिहार की ओर से खेले थे और उन्होंने 79 रन देकर 7 विकेट और 86 रन देकर 4 विकेट लिए थे। रणजी ट्रॉफी में उन्होंने 100 से अधिक विकेट लिए हैं परन्तु पहले मैच में जैसा उनका खेल रहा था उससे अच्छा खेल वे फिर कभी नहीं दिखा सके।

उनका जन्म मई 1923 में हुआ था। उन्हें दो टैस्ट मैचों में खेलने का अवसर मिला है: पहला 1948–49 मे वेस्टइण्डीज के विरुद्ध और दूसरा 1951–52 में इंग्लैंड के विरुद्ध; परन्तु 206 रन देने के बाद भी उन्हें केवल एक विकेट मिल सका। वे पांच अनौपचारिक टैस्टों में खेल चुके हैं; दो कॉमनवेल्थ प्रथम के विरुद्ध और तीन कॉमनवेल्थ द्वितीय के विरुद्ध। 1952 में इंग्लैंड के दौरे पर जाने वाली भारतीय टीम में वे भी खेले थे और उन्होंने 744 रन देकर 24 विकेट लिए थे।

जमशेदजी, आर० जे०

श्री जमशेदजी एक सफल धीमे गेंदबाज रहे हैं परन्तु भारत ने जब टैस्ट क्रिकेट खेलना शुरू किया तब तक उनका कौशल उतार पर आ गया

था। उन्हें केवल एक ही टैस्ट में खेलने का अवसर मिला है और वह टैस्ट था 1933–34 में इंग्लैंड के विरुद्ध जिसमें उन्होंने 137 रन देकर 3 विकेट लिए थे।

1935–36 में उन्होंने बम्बई की ओर से रणजी ट्रॉफी में दो मैच खेले थे और उनमें उन्होंने 173 रन देकर 10 विकेट लिए थे। उनकी सर्वोत्तम गेंदबाजी मद्रास के विरुद्ध रही जब कि उन्होंने 18 रन देकर 3 विकेट उड़ा दिए थे।

उनका जन्म 18 नवम्बर 1892 में हुआ था। बम्बई चतुष्कोणीय प्रतियोगिता में वे पारसी क्लब की ओर से खेलते थे। उन्होंने दो मैचों में 10 से अधिक विकेट लिए है : 1922 हिन्दू में क्लब के विरुद्ध 122 रन देकर 11 विकेट और 1928 में यूरोपियन क्लब के विरुद्ध 104 रन देकर 10 विकेट।

जहाँगीर खाँ, एम०

दाहिने हाथ के बल्लेबाज और मध्यम तेज गेंद फेंकने वाले गेंदबाज श्री जहाँगीर खाँ उस भारतीय टीम के सदस्य थे जो 1932 में इंग्लैंड के दौरे पर गई थी। इस दौरे में उन्होंने केवल एक मैच लॉर्ड्स में खेला था। जब भारतीय टीम दूसरी बार इंग्लैंड गई तो वे इंग्लैंड में पढ़ रहे थे। परन्तु वे अपने देश की ओर से तीनों टैस्ट मैचों में खेल सके। टैस्ट क्रिकेट में उन्होंने अपनी कुल 7 पारियों मे 39 रन बनाए थे और 255 रन देकर 4 विकेट लिए थे।

रणजी ट्रॉफी में उन्होंने 1940–41 और 1945–46 के बीच उत्तर भारत का नेतृत्व किया। अपनी 11 पारियों में, दो बार अपराजित रहकर, उन्होने 33·33 रन प्रति पारी के औसत से 300 रन बनाए थे। उनकी सर्वोच्च रन संख्या 125 पश्चिमोत्तर सीमाप्रान्त के विरुद्ध 1941–42 में रही। उनकी सर्वोत्तम गेंदबाजी 1941–42 मे बम्बई के विरुद्ध रही जबकि उन्होने 50 रन देकर 5 विकेट गिराए थे।

वे केम्ब्रिज विश्वविद्यालय से पी-एच० डी० हैं। 1960–61 में जिस पाकिस्तानी टीम ने भारत का दौरा किया था उसके वे व्यवस्थापक (मैनेजर) थे।

जय, एल० पी०

कद में छोटे पर गेंद को बराबर पीटने वाले श्री जय पुराने भारतीय खिलाड़ियों में से हैं जो भारत के टैस्ट जगत में प्रवेश करने से पहले खेला करते थे। उन्हें केवल एक टैस्ट खेलने का मौका मिला है जो 1933–34 में इंग्लैंड के विरुद्ध बम्बई में खेला गया था। उसमें इन्होंने पहली पारी में

19 रन बनाए थे । 1936 में जो भारतीय टीम इंग्लैंड गई थी उसके श्री जय भी सदस्य थे ।

रणजी ट्रॉफी में वे 1934–35 से 1941–42 तक बम्बई की ओर से 13 बार खेले हैं जिनमें पहली 11 बार उन्होंने अपनी टीम का नेतृत्व किया है । उनके पहले नेतृत्व मे बम्बई को विजय-श्री प्राप्त हुई थी । अपनी 21 पारियों में, तीन बार अपराजित रहकर, उन्होंने 43 रन प्रति पारी के औसत से 774 रन बनाए हैं । उनकी सर्वोत्तम बल्लेबाजी 1935–36 में महाराष्ट्र के विरुद्ध रही जब कि उन्होंने 81 और 97 रन बनाए थे ।

बम्बई चतुष्कोणीय और पंचकोणीय प्रतियोगिताओं में, वे हिन्दू क्लब की ओर से खेले थे । उन्होने 1924 में मुस्लिम क्लब के विरुद्ध 156 रन, 1925 में पारसी क्लब के विरुद्ध 104 रन और 1938 में 'शेष' के विरुद्ध 103 रन बनाए थे ।

उनका जन्म 1 अप्रैल 1902 को हुआ था । उन्होंने 1926 में एम० सी० सी० के विरुद्ध और 1937–38 मे लार्ड टेनीसन की टीम के विरुद्ध बहुत बढ़िया खेल दिखाया था ।

जयसिम्हा, मोटगन्हल्ली लक्ष्मीनरसु

श्री जयसिम्हा का जन्म 3 मार्च 1939 को हुआ था । वे पारी प्रारम्भ करने वाले दाहिने हाथ के आक्रामक बल्लेबाज और दाहिनी भुजा से मध्यम गति की बाहर की ओर झूलती हुई गेंद फेंकने वाले गेंदबाज हैं । उन्होंने केवल 15 वर्ष की अवस्था मे ही 1954–55 में प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में प्रवेश कर लिया था । रणजी ट्रॉफी में अपने पहले खेल में ही उन्होंने 90 रन बना लिए थे और हैदराबाद की ओर से खेलते हुए आंध्र के तीन बल्लेबाजों को, 51 रन देकर, परास्त कर दिया था । तब से वे लगातार हैदराबाद की ओर से खेल रहे हैं और 1959–60 से अपनी टीम का नेतृत्व कर रहे हैं । इस टूर्नामेण्ट में उन्होंने अब तक 2000 से ऊपर रन बना लिए हैं । उनकी सर्वोच्च रन संख्या 259, बंगाल के विरुद्ध 1964-65 में रही । वे 50 से अधिक विकेट ले चुके हैं । उनकी सर्वोत्तम गेंदबाजी 1959–60 में मद्रास के विरुद्ध रही है जबकि उन्होंने 45 रन देकर 7 विकेट (पूरे मैच मे 122 रन देकर 10 विकेट) गिरा दिए थे । उन्होंने दलीप ट्रॉफी में भी इस प्रतियोगिता के पहले वर्ष से ही खेलना प्रारम्भ कर दिया था । इसमे वे दक्षिण क्षेत्र की ओर से खेलते है और अब उसकी टीम का नेतृत्व करते हैं ।

उन्होंने 27 टेस्ट खेले हैं : 11 इंग्लैंड, 4 आस्ट्रेलिया, 4 पाकिस्तान, 4 वेस्टइण्डीज और 4 न्यूजीलैंड के विरुद्ध । अपनी 49 टेस्ट पारियों में, दो

बार अपराजित रहकर, उन्होंने प्रतिपारी 34·42 रन के औसत से 1618 रन लिए हैं। उन्होने अनेक टैस्ट मैचों में भारत की ओर से आक्रमण शुरु किया था और कुछ विकेट भी लिए थे। उनकी सर्वोच्च रन संख्या 127 है जो उन्होंने 1961–62 में इंग्लैंड के विरुद्ध तीसरे टैस्ट में नई दिल्ली में बनाई थी।

उन्होंने 1964 में श्रीलंका के विरुद्ध दो अनौपचारिक टैस्ट भी खेले थे और हैदराबाद मे खेले गए दूसरे टैस्ट में उन्होने 131 रन बनाए थे।

भारतीय टीम के सदस्य के रूप में उन्होंने 1959 में इंग्लैंड और 1962 में वेस्टइण्डीज का दौरा किया था। वे 'इण्डियन स्टारलेट्स' के साथ 1960 में पाकिस्तान भी गए थे।

उन्होंने अखिल भारतीय स्कूल क्रिकेट प्रतियोगिता में हैदराबाद और दक्षिण क्षेत्र के स्कूलों की टीम का प्रतिनिधित्व किया है। वे 1954–55 से 1956–57 तक और 1959–60 मे उस्मानिया विश्वविद्यालय की ओर से खेले थे। वे टेनिस और बेडमिण्टन के भी अच्छे खिलाड़ी हैं।

जोशी, पी० जी०

पारी प्रारम्भ करने वाले दाहिने हाथ के बल्लेबाज और शानदार विकेट-रक्षक श्री जोशी ने प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में पहला प्रवेश 1946-47 में बड़ौदा के विरुद्ध महाराष्ट्र की ओर से खेल कर किया। वर्षों तक वे महाराष्ट्र की टीम की जान रहे।

वे 12 टैस्ट मैचों में खेले हैं : इंग्लैंड के विरुद्ध 1951-52 में (2) और 1959 में (3); पाकिस्तान के विरुद्ध 1952 मे (1) और 1960 मे (1); वेस्टइंडीज के विरुद्ध 1953 में (3), 1959 में (1) और आस्ट्रेलिया के विरुद्ध 1959 मे (1)। उन्होने अपना सर्वोत्तम खेल 1960-61 में पाकिस्तान के विरुद्ध बम्बई में पहले टैस्ट में दिखलाया था जबकि उन्होने पाकिस्तान के तीन बल्लेबाजों को तो परास्त किया ही, साथ ही उन्होने अपराजित रह कर 52 रन भी बनाए और श्री रमाकान्त देसाई के साथ मिलकर नवें विकेट की साझेदारी में 149 बहुमूल्य रनों का योग दिया।

वे चार अनौपचारिक टैस्टों में खेले थे : कॉमनवेल्थ प्रथम और सिलवर जुबली ओवरसीज टीम दोनों के विरुद्ध एक-एक और कॉमनवेल्थ द्वितीय के विरुद्ध दो मैच। 1953-54 मे वे भारतीय टीम में वेस्टइण्डीज के दौरे पर भी गए थे। प्रथम श्रेणी के क्रिकेट मे उन्होने सबसे अधिक रन अपराजित 100 कॉमनवेल्थ प्रथम के विरुद्ध मध्यप्रदेश गवर्नर एकादश की ओर से खेलते हुए बनाए थे।

उनका जन्म 27 अक्टूबर 1926 को वड़ोदा मे हुआ था। वे स्टैंडर्ड वेकम ऑयल कं० पूना के कर्मचारी हैं।

ताम्हाने, नरेन्द्र एस०

भारत के एक उत्कृष्ट और सुरक्षात्मक विकेट रक्षक श्री ताम्हाने का जन्म 4 अगस्त 1931 को बम्बई में हुआ था। उन्होंने प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में 1951-52 में खेलना प्रारम्भ किया था जब वे एम० सी० सी० के विरुद्ध सम्मिलित विश्वविद्यालय टीम में खेले थे। इसके दो वर्ष बाद वे सर्वप्रथम रणजी ट्रॉफी में बम्बई की ओर से बड़ौदा के विरुद्ध खेले और उन्होने 28 रन बनाए तथा सात विपक्षी बल्लेबाजों को परास्त किया (6 कैच और 1 स्टंप)। रणजी ट्रॉफी में यह उनका सर्वोत्तम विकेट रक्षण रहा है। उन्होंने 1958-59 में बड़ौदा के विरुद्ध अपराजित 100 रन बनाए थे; ये ही उनकी सर्वोच्च रन संख्या है।

उन्होंने 21 टैस्ट मैच खेले हैं: 7 पाकिस्तान, 4 न्यूजीलैंड, 4 आस्ट्रेलिया, 4 वेस्टइण्डीज, और 2 इंग्लैंड के विरुद्ध। वे सिलवर जुबली ओवरसीज क्रिकेट टीम के विरुद्ध एक अनौपचारिक मैच खेले थे। वे भारतीय टीम के साथ 1954-55 मे पाकिस्तान, 1956 में श्रीलंका और 1959 मे इंग्लैंड के दौरे पर गए थे। टैस्टों मे उनका सर्वोत्तम विकेट रक्षण 1954-55 में पाकिस्तान के विरुद्ध रहा जब उन्होंने 6 बल्लेबाज (5 कैच और 1 स्टम्प) धराशायी किए थे।

उन्होंने प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में एक हजार से ऊपर रन बनाए हैं और भारत में, विकेट रक्षण करते हुए, सबसे अधिक बल्लेबाजों को परास्त किया है। उन्होने 1952-53 और 53-54 में बम्बई विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया था। वे टाटा आइरन एण्ड स्टील कं० लि० बम्बई मे काम करते हैं।

तारापोर, के० के०

श्री तारापोर का जन्म 17 दिसम्बर 1910 को हुआ था और उन्होने प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में 1937-38 में प्रवेश किया और नवानगर के विरुद्ध बम्बई की ओर से खेले और फिर काफी वर्षों तक बम्बई की ओर से खेलते रहे। वे बाईं भुजा के धीमे गेंदबाज हैं और उन्हें अनेक बार भारी सफलता मिली है। उनकी सर्वोत्तम गेंदबाजी 1939-40 में नवानगर के विरुद्ध रही जब उन्होने 91 रन देकर आठ विकेट लिए थे। उन्होंने 1940-41 में उत्तर भारत को 85 रन देकर 5 विकेट और 1944-45 में पश्चिम भारत को केवल 20 रन देकर 5 विकेट लिए थे। कुल मिलाकर उन्होंने रणजी ट्रॉफी मे 50 से अधिक विकेट लिए हैं।

वे 1948 में वेस्टइण्डीज के विरुद्ध एक टैस्ट मैच खेले थे। वे भारतीय क्रिकेट क्लब के सचिव हैं और भारतीय क्रिकेट नियन्त्रण बोर्ड की कई उपसमितियों के सदस्य रह चुके हैं।

दानी, हेमचन्द्र टी० 'बाल'

एक उपयोगी सर्वोन्मुखी खिलाड़ी, श्री दानी एक दाहिने हाथ के बल्लेबाज और दाहिनी भुजा के गेंदबाज हैं जो गेंद को दोनों ओर घुमा सकते हैं और नई गेंद को भीतर की ओर घुमाने में बड़े कुशल हैं। महाराष्ट्र के दुढानी गांव में 24 मई 1933 को उनका जन्म हुआ था। प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में उन्होंने 1951-52 में प्रवेश किया था जबकि उन्होंने बड़ौदा के विरुद्ध महाराष्ट्र की ओर से खेलते हुए 33 और 55 रन बनाए थे और 24 रन देकर 3 विकेट लिए थे। वे तीन वर्षों तक महाराष्ट्र की ओर से खेलते रहे और उसके बाद 1955-56 से सेना की टीम में खेल रहे हैं जिसके वे आजकल कप्तान हैं। उन्होंने दलीप ट्रॉफी की अखिल भारतीय अन्तर क्षेत्रीय प्रतियोगिता में उत्तर क्षेत्र की टीम का नेतृत्व किया है। रणजी ट्रॉफी में अब तक उन्होंने आठ शतक बनाए हैं और उनकी रन संख्या कुल मिलाकर 2500 से अधिक हो गई है। उनकी सर्वोच्च रन संख्या अपराजित 166 है जो उन्होंने 1955-56 में दिल्ली के विरुद्ध बनाई थी। उन्होंने प्रथम श्रेणी के मैचों मे एक सौ विकेट लिए हैं। उनकी सर्वोत्तम गेंदबाजी 1959-60 में राजस्थान के विरुद्ध रही जबकि उन्होंने 35 रन देकर 5 विकेट लिए थे।

वे केवल एक टैस्ट में खेले हैं जो पाकिस्तान के विरुद्ध 1952 मे हुआ था, उसमें भी उन्होंने बल्लेबाजी नही की। 1954-55 में जिस भारतीय टीम ने पाकिस्तान का दौरा किया था, उसके वे सदस्य थे।

श्री दानी ने 1948-49 में अखिल भारतीय स्कूल क्रिकेट प्रतियोगिता में महाराष्ट्र स्कूलों की टीम का नेतृत्व किया था। वे 1949-50 से 1952-53 तक पूना विश्वविद्यालय की ओर से खेले थे। 1952-53 में वे अपने विश्वविद्यालय की टीम के कप्तान थे।

श्री दानी भारतीय नौ सेना मे एक पदाधिकारी हैं।

दिलावर हुसैन

एक सधे हुए और पारी प्रारम्भ करने वाले बल्लेबाज तथा बड़े सुरक्षात्मक ढंग से विकेट-रक्षण करने वाले श्री दिलावर हुसैन ने अपने पहले ही टैस्ट मैच में सिर में चोट लग जाने के बावजूद भी दोनों पारियों में आधा शतक तो पूरा कर ही लिया था। 1933-34 में इंग्लैंड के विरुद्ध कलकत्ता में आयोजित दूसरे टैस्ट में उनके सिर में गंभीर चोट लगी थी परन्तु प्राथमिक चिकित्सा के बाद उन्होंने दोनों पारियों में क्रमशः 59 और

57 रन बनाए थे। उन्हें कुल 6 टैस्ट पारियों में खेलने का मौका मिला था और प्रत्येक में उन्होंने दो अंकों में रन बनाए और कुल मिलाकर उनकी रन संख्या 254 रही। विकेट रक्षक के रूप में उन्होने सात बल्लेबाजों को परास्त किया, छः कैच लिए और एक स्टम्प आउट किया।

1936 में जो भारतीय टीम इंग्लैंड गई थी उसके सभी मैचों में वे नहीं खेल सके क्योंकि वे कैम्ब्रिज मे उच्च अध्ययन कर रहे थे, परन्तु वे ओवल में खेले गए तीसरे टैस्ट में और कुछ प्रथम श्रेणी के मैचो में खेले थे।

1934-35 में वे रणजी ट्रॉफी में मध्यभारत की ओर से खेले थे और 1938-39 में उन्होने अपनी टीम का नेतृत्व किया था। 1940 41 में वे उत्तरप्रदेश की ओर से खेले थे। उनकी सर्वोत्तम बल्लेबाजी 1938-39 में उत्तरप्रदेश के विरुद्ध रही जबकि उन्होंने मध्यभारत के लिए 70 रन बनाए थे।

उनका जन्म 19 मार्च 1907 को हुआ था। देश के विभाजन के बाद के पाकिस्तान चले गये।

दिवेचा, रमेश विट्ठलदास

दाहिनी भुजा से मध्यम गति की तेज गेंद फेंकने वाले श्री दिवेचा ने अपनी छात्रावस्था में ही ख्याति प्राप्त करली थी जबकि उनको 1950 में ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय की टीम में स्थान मिल गया था। इससे पहले 1947 में उन्होने लंदन के ग्रोवर क्रिकेट स्कूल मे प्रवेश ले लिया था। 1948 मे वे आस्ट्रेलिया के विरुद्ध नोर्थम्पटनशायर की ओर से खेले थे और पहली पारी मे उन्होंने अपनी टीम में सबसे अधिक रन 33 बनाए थे। इंग्लैंड में रहते हुए उन्होंने 1950 के अपने पहले वर्ष मे ऑक्सफोर्ड की ओर से खेलते हुए 23·26 के औसत रन देकर 52 विकेट लिए थे। अगले वर्ष भी उन्होंने 21·53 के औसत रन देकर उतने ही विकेट लिए। ऑक्सफोर्ड-कैम्ब्रिज के मैच की दो पारियों में उन्होने 36 रन देकर 2 विकेट और 62 रन देकर 7 विकेट लिए थे।

इंग्लैंड से आने के बाद वे रणजी ट्रॉफी में बंबई की ओर से खेले। बंबई की ओर से एम० सी० सी० के विरुद्ध खेलते हुए उन्होंने 74 रन देकर 6 विकेट लिए थे और उनकी इसी शानदार गेंदबाजी से प्रभावित होकर उन्हें 1951-52 में इंग्लैंड के विरुद्ध तीसरे और चौथे टैस्ट में भारतीय टीम में खेलने का मौका दिया गया। वे 1952 में इंग्लैंड के दौरे पर जाने वाली टीम के लिए भी चुने गए। उन्होंने 25·88 औसत रन देकर 50 विकेट लिए। उनकी सर्वोत्तम गेंदबाजी सर्रे और ग्लेमोर्गन के विरुद्ध रही। सर्रे के विरुद्ध उन्होने एक तिकड़ी (हैट ट्रिक) बनाई और 29 रन देकर 6 विकेट

लिए। ग्लेमोर्गन के विरुद्ध उन्होंने 74 रन देकर 8 विकेट लिए। वे दो टैस्ट मैचों में भी खेले थे और उनकी गेंदबाजी बहुत ही सही रही। मेंचेस्टर मे उनके आंकड़े थे : 45 ओवर, 12 रन-हीन ओवर, 102 रन और 3 विकेट तथा ओवल में, 33 ओवर, 9 रन-हीन ओवर, 60 रन और एक विकेट। वे 1952 में पाकिस्तान के विरुद्ध एक टैस्ट खेले थे। टैस्टों मे कुल मिलाकर उनके आंकड़े हैं : 174 ओवर, 44 रन-हीन ओवर, 361 रन और 11 विकेट।

उनका जन्म 18 अक्तूबर 1927 को हुआ था। वे एक उच्चकोटि के एथलीट रह चुके हैं। अब वे बर्मा शैल कंपनी में पदाधिकारी है।

दुर्रानी, सलीम ए०

श्री दुर्रानी पहले क्रिकेट खिलाड़ी है जिनको अर्जुन पुरस्कार (1962 में) मिला है। वे सचमुच एक प्रतिभाशाली खिलाड़ी है। वे लबे, सुशिष्ट और सुन्दर बाएँ हाथ के बल्लेबाज, बाईं भुजा से धीमी पर घूमती हुई गेंद फेंकने वाले सफल गेंदबाज और विश्वसनीय विकेट रक्षक हैं। उनका जन्म कराची में 15 अगस्त 1935 को हुआ था। उन्होंने अपनी छात्रावस्था में ही 1953-54 मे रणजी ट्रॉफी मे खेलना शुरू कर दिया था और उसमें उन्होने गुजरात के विरुद्ध सौराष्ट्र की ओर से शतकीय प्रहार किया। फिर वे तीन वर्ष तक गुजरात की ओर से खेलते रहे। तत्पश्चात् वे राजस्थान आ गए और तब से लगातार राजस्थान की ओर से ही खेल रहे हैं। उन्होंने रणजी ट्रॉफी में 1000 से ऊपर रन बना लिए है। 1958-59 में विदर्भ के विरुद्ध उन्होने अपराजित 137 रन बनाए थे और यही उनके सर्वाधिक रन है। 1961-62 में दलीप ट्रॉफी प्रतियोगिता में उन्होने पूर्वी क्षेत्र के विरुद्ध मध्य क्षेत्र की ओर से खेलते हुए 110 रन बनाए थे और 1964-65 मे दलीप ट्रॉफी प्रतियोगिता के फाइनल मैच में पश्चिम क्षेत्र के विरुद्ध 119 रन बनाए थे। उन्होने कई बार उच्च कोटि की गेंदबाजी से भी दर्शको को मुग्ध कर दिया है। 1960 में रणजी ट्रॉफी के फाइनल में उन्होंने बम्बई के विरुद्ध खेलते हुए 99 रन पर 8 विकेट गिराकर अपनी सर्वोत्तम गेंदबाजी दिखाई थी। इस वर्ष इस प्रतियोगिता में उन्होने 10.94 के औसत से रन देकर कुल 35 विकेट लिए थे।

उन्होंने 1959-60 में आस्ट्रेलिया के विरुद्ध बंबई टैस्ट खेलकर अपने टैस्ट खेल का श्रीगणेश किया। 1961-62 में इंग्लैंड के विरुद्ध उनका खेल सर्वोत्तम रहा। इस टैस्ट मे उन्होंने 27.04 के औसत से रन देकर 23 विकेट लिए थे। इतनी अच्छी गेंदबाजी दोनों टीमों में और किसी की भी नही रही थी। उन्होने 8 पारियों में 199 रन बनाए थे। 1962 मे वे भारतीय टीम

में वेस्टइण्डीज के दौरे पर गए और वहां भी उन्होंने एक बार फिर अपना सर्वोन्मुखी खेल दिखाया। पोर्ट आफ स्पेन के चौथे टैस्ट में उन्होंने 104 रन बनाए थे। अब तक वे 22 टैस्ट खेल चुके हैं जिनमें उन्होंने 863 रन बनाए हैं और 70 विकेट लिए हैं।

1951-52 में वे सौराष्ट्र स्कूलों की ओर से और 1952-53 मे वंबई स्कूलो की ओर से अखिल भारतीय स्कूल क्रिकेट प्रतियोगिता मे खेले थे। 1960 मे वे स्टॉकपोर्ट की ओर से लकाशायर लीग मे खेले थे।

देसाई, रमाकान्त बी०

श्री देसाई कद में काफी छोटे है और उनका डीलडौल एक तेज गेंदबाज जैसा नही है फिर भी वे दाहिनी भुजा से मध्यम तेज गेंद फेंकने वाले वस्तुतः सफल गेंदबाज हैं। उनका जन्म बंबई मे 20 जून 1939 को हुआ था। प्रथम श्रेणी के क्रिकेट मे उनका पहला प्रवेश ही बडा प्रभावशाली रहा। 1958-59 मे वेस्टइण्डीज के विरुद्ध भारतीय क्रिकेट क्लब की ओर से खेलते हुए उन्होने 60 रन देकर 5 विकेट और 68 रन देकर 3 विकेट लिए थे। इसी वर्ष उन्होने अपने पहले रणजी ट्रॉफी मैच में गुजरात के विरुद्ध खेलते हुए 11 रन देकर 3 विकेट और 28 रन देकर 4 विकेट लिए थे। अपने प्रथम श्रेणी के क्रिकेट खेल के पहले वर्ष मे ही उन्होने रणजी टॉफी मे 11.10 के औसत रन देकर 50 विकेट ले लिए थे। रणजी ट्रॉफी में उनका यह कीतिमान आज तक किसी से खंडित नही हो सका। 1959-60 मे उन्होने 402 रन देकर 34 विकेट उड़ाए थे। अगले वर्ष उन्होंने 324 रनो पर 25 विकेट लिए। उन्होने रणजी ट्रॉफी मे 471.5 ओवर मे 100 विकेट लेकर अपना कीतिमान स्थापित किया। 1964 तक रणजी ट्रॉफी में वे 13.80 के औसत से 1275 रन देकर 125 विकेट ले चुके थे और यह रणजी ट्रॉफी मे अब तक की सर्वोत्तम गेंदबाजी है। उन्होने 1960-61 में राजस्थान के विरुद्ध फाइनल मैच में 120 रन देकर 11 विकेट लिए थे; रणजी ट्रॉफी में यही उनकी सर्वोत्कृष्ट गेंदबाजी का उदाहरण है। उनकी सर्वोत्तम बल्लेबाजी भी 1962-63 के रणजी ट्रॉफी फाइनल मैच मे राजस्थान के विरुद्ध ही रही जबकि उन्होने 107 रन बनाए थे।

श्री देसाई 26 टैस्टों में खेल चुके हैं : 11 इंग्लैंड के, 5 पाकिस्तान के, 4 वेस्टइण्डीज के, 3 आस्ट्रेलिया और 3 न्यूजीलैंड के विरुद्ध। उन्होंने 36.43 के औसत से 2623 रन देकर 72 टैस्ट विकेट लिए हैं। जब वे वेस्टइण्डीज के विरुद्ध दिल्ली के कोटला फिरोजशाह मैदान मे पहली बार टैस्ट मैच मे उतरे तो उन्होंने 169 रन देकर 4 विकेट लिए जबकि न्यूजीलैंड की शक्तिशाली टीम ने 8 विकेट पर 644 रन बना लिए थे। उनकी सर्वोत्तम

गेंदबाजी न्यूजीलैंड के विरुद्ध 1965 में बम्बई में आयोजित तीसरे टैस्ट मे रही जबकि उन्होने 56 रन देकर 6 बल्लेबाजों को धराशायी कर दिया था। 1960-61 में उन्होंने पाकिस्तान के विरुद्ध बम्बई में पहले टैस्ट में 85 रन बनाए थे और श्री पी० जी० जोशी के साथ मिलकर 149 रनों की नवें विकेट की साझेदारी का कीर्तिमान स्थापित किया था। 1959 में इंग्लैंड और 1962 में वेस्टइण्डीज के दौरे पर जाने वाली भारतीय टीम के वे सदस्य रहे है।

श्री देसाई ने 1958-59 से 60-61 तक बम्बई विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया है। वे एसोसिएटेड सीमेंट कंपनीज लिमि०, बम्बई के कर्मचारी है।

नजीरअली, सैयद

श्री वजीर अली के भाई श्री नजीर अली एक बहुत अच्छे सर्वोन्मुखी खिलाड़ी रह चुके हैं। वे बहुत समय तक देश से बाहर रहे अतः उनको रणजी ट्रॉफी में 1934-35 से 41-42 तक केवल 12 मैच खेलने का मौका मिला जिनमे वे दक्षिण पंजाब और महाराष्ट्र की ओर से खेले थे। 1941-42 मे उन्होंने खेलना छोड़ दिया था। रणजी ट्रॉफी की 19 पारियों मे 33.57 रन प्रति पारी के औसत से उन्होंने कुल 638 रन बनाए थे। उन्होंने 1938-39 में राजपुताना के विरुद्ध 106 और 1939-40 में महाराष्ट्र के विरुद्ध 151 रन बनाए थे। गेंदबाजी मे उन्होंने 396 रन देकर 18 विकेट लिए थे।

वे उस भारतीय टीम के सदस्य थे जो 1932 में इंग्लैंड खेलने गई थी। उन्होंने लार्ड्स के टैस्ट मैच मे 13 और 6 रन बनाए थे। 1933-34 में इंग्लैंड के विरुद्ध मद्रास टैस्ट में उन्होंने 3 और 8 रन बनाए थे तथा दूसरी पारी में 83 रन देकर 4 विकेट लिए थे।

बम्बई चतुष्कोणीय और पंचकोणीय प्रतियोगिताओं मे वे मुस्लिम क्लब की ओर से खेलते थे। 1934 में उन्होंने पारसी क्लब के विरुद्ध 197 और 1935 मे हिन्दू क्लब के विरुद्ध अपराजित 100 रन बनाए थे।

वे पाकिस्तान सरकार में अधिकारी हैं।

नवले, जे० जी०

श्री नवले वह भारतीय बल्लेबाज है जिन्हे सर्वप्रथम टैस्ट मैच मे बल्लेबाजी करने का गौरव मिला था। वे विश्वसनीय पारी प्रारंभ करने वाले बल्लेबाज और शानदार विकेट रक्षक रह चुके है। उन्होंने 1932 में केवल लार्ड्स में ही भारत की पारी का प्रारंभ किया था और उसमें 12 और 13 रन बनाए थे। 1933-34 में उन्होने बम्बई में इंग्लैंड के विरुद्ध पहला टैस्ट खेला था और उसमें 13 और 4 रन बना सके थे।

उनका जन्म 7 दिसंबर 1902 को हुआ था। जब भारत ने टैस्ट क्रिकेट मे प्रवेश किया था। तब तक श्री नवले का सर्वोत्तम खेल लगभग समाप्त हो चुका था; फिर भी 1932 में इंग्लैंड में भारत की ओर से खेलते हुए उन्होंने अपने कुशल विकेट-रक्षरण से सबको प्रभावित कर दिया था। बबई चतुष्कोणीय प्रतियोगिता में वे हिन्दू क्लब की ओर से खेलते थे और रणजी ट्रॉफी मे ग्वालियर की ओर से। उनकी सर्वोत्तम बल्लेबाजी 1926-27 मे रही जबकि उन्होंने बंबई में एम० सी० सी० के विरुद्ध 71 और 51 रन बनाए थे।

वे पुंताम्बा चीनी मिल में सुरक्षा अधिकारी हैं।

नाऊमल, जाऊमल

पारी प्रारंभ करने वाले दाहिने हाथ के बल्लेबाज, श्री नाऊमल ने इंग्लैंड के विरुद्ध भारत की ओर से तीन टैस्ट मैचों में पारी प्रारंभ की थी: 1932 में लार्ड्स में और 1933-34 में कलकत्ता तथा मद्रास में। टैस्ट मैचों में उन्होने कुल 108 रन बनाए थे और कलकत्ता टैस्ट मे वे अपने सबसे अधिक रन 43 बना सके। मद्रास टैस्ट की पहली पारी में ही उनके सिर मे गंभीर चोट लग जाने से वे केवल 5 रन बनाकर बीच में ही निवृत्त हो गए।

उनका जन्म 17 अप्रैल 1904 को हुआ था। रणजी ट्रॉफी में वे 1934-35 से 1944-45 तक सिंध की ओर से खेले थे। अपनी 23 पारियों मे उन्होंने 43·25 रन प्रति पारी के औसत से 865 रन बनाए थे। उनकी सर्वोच्च रन संख्या अपराजित 203 है जो उन्होंने 1938-39 में नवानगर के विरुद्ध बनाई थी। 1937-38 में उन्होने सिंध का नेतृत्व किया था। वे एक उपयोगी धीमे गेंदबाज भी थे। बंबई चतुष्कोणीय प्रतियोगिता में वे हिन्दू क्लब की ओर से खेलते थे। वे कराची (पाकिस्तान) में रहते हैं।

नाडकर्णी, रमेशचन्द्र जी० 'बापू'

श्री नाडकर्णी बहुत ही विश्वसनीय सर्वोन्मुखी खिलाड़ी हैं। वे बाएं हाथ के बल्लेबाज है और बाएं भुजा से गेंदबाजी करते हैं। प्रथम श्रेणी के क्रिकेट मे उनका खेल बहुत प्रभावशाली रहा है। अनेक बार उन्होंने अपनी टीम की मंझधार में डगमगाती नौका को किनारे लगाया है।

उनका जन्म 14 अप्रैल 1933 को नासिक में हुआ था। प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में उन्होंने प्रथम प्रवेश 1951-52 में किया था जबकि उन्होंने बड़ौदा के विरुद्ध महाराष्ट्र की ओर से खेलते हुए, 35 रन देकर, 2 विकेट लिए थे। 1955-56 से 1959-60 तक वे महाराष्ट्र के कप्तान रहे थे।

1960-61 में वे बम्बई आगए और तब से लगातार बम्बई की ओर से खेल रहे हैं। 1963-64 से उनके नेतृत्व में बम्बई की टीम बराबर विजयी हो रही है।

रणजी ट्रॉफी में उन्होंने 3000 से ऊपर रन बनाए हैं जिनमे 10 शतक शामिल हैं। इस प्रतियोगिता में उनकी बल्लेबाजी कई बार बहुत शानदार रही है जैसे, 1960 में बम्बई की ओर से दिल्ली के विरुद्ध अपराजित 283 रन, 1962 में बम्बई की ओर से राजस्थान के विरुद्ध 219 रन और 1957 में महाराष्ट्र की ओर से सौराष्ट्र के विरुद्ध अपराजित 201 रन। 1960 में, पांच पारियों में दो बार अपराजित रहकर, उन्होंने 531 रन बटोरे थे। 1963 मे उन्होंने कुल 281 ओवर फेंके जिनमें 163 रन-हीन थे और 305 रन देकर 31 विकेट लिए थे।

वे 33 टैस्टों में खेले हैं: 5 न्यूजीलैंड, 6 वेस्टइण्डीज, 10 इंग्लैंड, 8 आस्ट्रेलिया और 4 पाकिस्तान के विरुद्ध। अपनी 54 टैस्ट पारियो मे, 11 बार अपराजित रहकर, उन्होंने 1265 रन बनाए हैं। उनका सर्वोत्तम खेल 1964 में इंग्लैंड के विरुद्ध रहा था जबकि आठ पारियो में, 5 बार अपराजित रहकर, 98 रन प्रति पारी के औसत से उन्होने 294 रन बनाए थे। कानपुर में खेले गए अन्तिम टैस्ट मे जब भारत की नैय्या डगमगाने लगी तो उन्होने ही अपराजित 122 रन बनाकर उसे उबारा था। उनकी सर्वोत्तम गेंदबाजी 1964 में आस्ट्रेलिया के विरुद्ध रही जब कि उन्होने मद्रास टैस्ट में 31 रन देकर 5 विकेट और 91 रन देकर 6 विकेट लिए थे। वे उन भारतीय टीमों के सदस्य थे जो 1956 में श्रीलंका, 1959 मे इंग्लैंड और 1962 में वेस्टइण्डीज खेलने गई थी।

उन्होंने 1949-50, 51-52, 53-54 और 54-55 (कप्तान) में पूना विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया था। वे बैडमिंटन के भी अच्छे खिलाड़ी हैं और ए० सी० सी० बम्बई में काम करते हैं।

नायुडू, कोट्टारि कनकैया

भारत के प्रथम टैस्ट कप्तान श्री सी० के० नायुडू का स्थान विश्व के अत्यन्त सजीव क्रिकेट खिलाड़ियों मे रहा है। जब भारत ने टैस्ट मैचों में खेलना प्रारंभ किया तो श्री नायुडू की आयु 37 वर्ष की थी और टैस्ट मैच भी बहुत कम और लम्बे अर्से के बाद होते थे। अतः श्री नायुडू को केवल 7 टैस्ट खेलने का अवसर मिला। ये सातों मैच इंग्लैंड के विरुद्ध खेले गए थे। पहले चारों मैचों में उन्होंने भारत का नेतृत्व किया। कुल 14 पारियों में उन्होने 350 रन बनाए थे। 1936 में ओवल में खेले गए तीसरे टैस्ट में उनकी सर्वोच्च रन संख्या 81 बनी थी। उनके विषय में सबसे उल्लेखनीय

बात यह है कि उन्होंने चालीस वर्षों तक प्रथम दर्जे का क्रिकेट खेला और उनके खेल में इतना अधिक आकर्षण था कि वे जहाँ भी खेलते थे वहाँ दूर दूर से दर्शकों की भीड़ उमड़ पड़ती थी।

उनका जन्म 31 अक्टूबर 1895 को नागपुर में हुआ था। प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में उन्होने 1916 में खेलना प्रारंभ किया था जबकि वे बंबई चतुष्कोणीय प्रतियोगिता में हिन्दू क्लब की ओर से यूरोपीय क्लब के विरुद्ध खेले थे। चतुष्कोणीय और पंचकोणीय प्रतियोगिताओं में वे 1939 तक लगातार खेलते रहे। बम्बई चतुष्कोणीय प्रतियोगिता में उन्होंने सबसे अधिक रन बनाए हैं जिनमें ये 5 शतक भी शामिल हैं : 1920 में यूरोपीय क्लब के विरुद्ध 121; 1924 में यूरोपीय क्लब के विरुद्ध 135; 1929 में मुस्लिम क्लब के विरुद्ध 155; 1935 में मुस्लिम क्लब के विरुद्ध 101 और पारसी क्लब के विरुद्ध 129 रन।

वे रणजी ट्रॉफी प्रतियोगिता में उसके प्रारम्भ यानी 1934-35 से ही खेले हैं। 1934-35 से 1952-53 तक मध्य भारत (जो बाद में होल्कर और अब मध्यप्रदेश कहलाता है) की ओर से, 1953-54 में आंध्र की ओर से और 1956-57 मे उत्तर प्रदेश की ओर से खेले थे। रणजी ट्रॉफी में जब-जब वे खेले हैं तब-तब उन्होने अपनी टीम का नेतृत्व किया है—यह उनकी विशेषता रही है। अन्तिमबार जब वे रणजी ट्रॉफी मे खेले तो उनकी आयु 62 वर्ष की थी और उसमें उन्होंने विदर्भ के विरुद्ध 25, राजस्थान के विरुद्ध 84, और बम्बई के विरुद्ध 22 और 55 रन बनाए थे। जरा कल्पना तो कीजिए कि 62 साल बूढ़े बल्लेबाज ने श्री वीनू मांकड जैसे विख्यात गेंदबाज की गेंद पर लगातार छक्के किस प्रकार उड़ाए होंगे। वे जब बड़े आराम से छक्के लगाते थे तो दर्शक प्रसन्नता से आत्मविभोर हो जाते थे।

वे चार अनौपचारिक टेस्टों में खेले थे : दो एम० सी० सी० के विरुद्ध 1926-27 में और दो महाराजा पटियाला की आस्ट्रेलियाई टीम के विरुद्ध 1935-36 में।

भारतीय टीम के सदस्य के रूप में 1932 और 1936 मे इंग्लैंड भी गए थे। पहले दौरे में उन्होने 40.45 रन प्रति पारी के औसत से, 6 शतकों सहित, 1618 रन बनाए थे और 25.53 रन के औसत से 65 विकेट गिराए थे। अपने दूसरे दौर में, 26.23 के औसत से उन्होने 1102 रन बनाए थे और 31.78 प्रति विकेट के औसत से 51 विकेट लिए थे।

प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में उन्होंने 36.43 रन प्रति पारी के औसत से कुल 8781 रन बनाए और 299 विकेट लिए थे। रणजी ट्रॉफी में

उन्होंने 2000 से ऊपर रन बनाए हैं और 100 से ऊपर विकेट लिए हैं। उन्होंने 1926 मे एम० सी० सी० के विरुद्ध बम्बई मे हिन्दू क्लब की ओर से खेलते हुए 153 रन बनाने मे 11 छक्के उड़ाए थे। एक पारी में सबसे *अधिक छक्के लगाने का उनका यह कीर्तिमान अभी तक किसी से नही टूटा* है। वे भारत के पहले खिलाडी हैं जिनको विज़्डन के पाँच खिलाड़ियों में स्थान मिला है। यह स्थान उन्हें 1933 में दिया गया था।

वे भारतीय टैस्ट चयन समिति के अध्यक्ष रहे हैं। उन्हें लेफ्टिनेंट कर्नल का ओहदा मिला हुआ है। वे अपने समय के एक जाने-माने टेनिस और हॉकी के खिलाड़ी और प्रसिद्ध एथलीट रह चुके है। खेल जगत् में उनकी प्रशंसनीय सेवाओं को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार ने उन्हें 1955 में 'पद्म भूषण' से सम्मानित किया था।

नायुडू, सी० एस०

श्री सी० के० नायुडू के भाई श्री सी० एस० नायुडू दाहिनी भुजा से लेग ब्रेक-व-गुगली गेंद फेंकने वाले प्रतिभावान और सफल गेंदबाज रहे हैं। क्षेत्र रक्षण में तो उनका कोई सानी नही रहा। वे बड़ी सफलता के साथ अपना लम्बा हत्था इस्तेमाल करते थे।

उनका जन्म 14 अप्रैल 1914 को हुआ था। प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में उन्होंने सर्व प्रथम 1933-34 में खेलना प्रारम्भ किया जबकि वे एम० सी० सी० के विरुद्ध खेले थे। जब उन्होने पहले टैस्ट में प्रवेश किया तो वे केवल 19 साल के थे। उन्होंने दूसरा टैस्ट इंग्लैंड के विरुद्ध कलकत्ता में खेला जिसमें उन्होने 36 रन बनाए थे। कुल मिलाकर उन्होने 1933-34 से 1951-52 तक 7 टैस्ट इंग्लैंड के विरुद्ध और 4 टैस्ट आस्ट्रेलिया के विरुद्ध खेले थे।

उन्होंने 12 अनौपचारिक टैस्ट भी खेले: 1935 में महाराजा पटियाला की आस्ट्रेलियाई टीम के विरुद्ध (1); 1945 मे आस्ट्रेलिया की सेना की टीम के विरुद्ध (3); 1949-50 में कॉमनवेल्थ प्रथम के विरुद्ध (4) और 1950-51 में कॉमनवेल्थ द्वितीय के विरुद्ध 4 टैस्ट। भारतीय टीमो के सदस्य के रूप में उन्होंने 1936 और 1946 में इंग्लैंड का, 1945 में श्रीलंका का और 1947-48 में आस्ट्रेलिया का भ्रमण किया था।

वे रणजी ट्रॉफी में 1934-35 से 1960-61 तक खेलते रहे हैं। उन्होने 1934-35 और 35-36 तथा 44-45 से 49-50 तक मध्यभारत (जो आगे चलकर होल्कर और अब मध्यप्रदेश कहलाता है) का प्रतिनिधित्व किया और 1960-61 मे उसके कप्तान रहे: 1939-40 से 43-44 तक बड़ौदा की ओर से, 1950-51 और 51-52 (कप्तान) में बंगाल की

ओर से; 53-54 में आंध्र की ओर से और 56-57 से 58-59 तक उत्तर प्रदेश की ओर से खेले थे। उन्होंने अनेक बार अति उत्कृष्ट खेल दिखाया है। अपनी 87 पारियों में, 3 बार अपराजित रहकर, उन्होंने 30·25 के औसत से 2541 रन बनाए हैं। उनके सबसे अधिक रन 127 हैं। उन्होंने कुल 2282·1 ओवर गेंदबाजी की है जिसमें 391 रनहीन ओवर रहे हैं; 23·49 के औसत से 6931 रन देकर कुल 295 विकेट गिराए हैं। उनकी सर्वोत्तम गेंदबाजी 1957-58 में विदर्भ के विरुद्ध उत्तर प्रदेश की ओर से खेलते हुए रही थी जबकि उन्होंने कुल 13 (85 रन देकर 7 और 69 रन देकर 6) विकेट लिए थे। रणजी ट्रॉफी मैचों में उन्होंने साठ बार 10 या अधिक विकेट गिराए हैं। कुल मिलाकर उनका सर्वोत्तम खेल 1942-43 में राजस्थान के विरुद्ध रहा जबकि उन्होंने बड़ौदा की ओर से खेलते हुए 127 रन बनाए थे और 20 रन देकर 5 विकेट और 36 रन देकर 7 विकेट गिराए थे।

बम्बई चतुष्कोणीय और पंचकोणीय प्रतियोगिताओं में वे हिन्दू क्लब की ओर से खेलते थे। उनकी सर्वोत्तम बल्लेबाजी 1939 में रही जब उन्होंने पारसी क्लब के विरुद्ध 126 रन बनाए थे। उन्होने 1935 में मुस्लिम क्लब को 97 रन देकर उनके 8 विकेट, 1939 में यूरोपीय क्लब को 64 रन देकर उनके 12 विकेट और उसी वर्ष मुस्लिम क्लब को 142 रन देकर उनके 11 विकेट लिए थे।

श्री नायुडु भारत के प्रथम बल्लेबाज हैं जिन्होने प्रथम श्रेणी के क्रिकेट मे 500 से ऊपर विकेट (522, औसत 26·87 रन प्रति विकेट) लिए है। उन्हे एक मैच मे संसार में सबसे अधिक ओवर फेंकने का गौरव प्राप्त है : 1944-45 में बम्बई के विरुद्ध 152·5 ओवर। रणजी ट्रॉफी में उन्होंने सबसे अधिक विकेट (295) लिए हैं। प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में उन्होंने प्रति पारी 24·13 के औसत से 4827 रन लिए हैं। वे एक व्यावसायिक खिलाड़ी के रूप में लंकाशायर लीग में 1951 से 53 तक और 1958 मे साउथ शील्ड के लिए खेले थे।

वे मध्य प्रदेश क्रिकेट संघ के कोच हैं।

न्यालचन्द शाह

बाईं भुजा से मध्यम गति की भीतर की ओर झूमती हुई गेंद फेंकने मे चतुर श्री न्यालचन्द मैटिंग विकेट पर खेलने में अधिक खतरनाक साबित हुए हैं। वे गेंदबाजी में गेंद को दोनों ओर बड़ी खूबी से घुमा सकते हैं। वे बाएँ हाथ से बल्लेबाजी भी करते हैं। उनका जन्म ध्रागधरा में 14 सितम्बर 1919 को हुआ था। उन्होंने प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में खेलना

1939-40 में प्रारंभ किया था जबकि वे सिंध के विरुद्ध पश्चिम भारत की ओर से खेले थे। 1951-52 और 52-53 में वे गुजरात की ओर से खेले थे और 54-55, 55-56 और 61-62 में उन्होंने सौराष्ट्र का नेतृत्व किया था। उन्होंने प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में 200 से ऊपर विकेट लिए हैं। उनकी सर्वोत्तम गेंदबाजी 1961-62 में बड़ौदा के विरुद्ध रही जबकि उन्होंने केवल 32 रन देकर 7 विकेट गिराए थे और उसमे एक तिकड़ी (हैट ट्रिक) बनाई थी।

वे 1952 में पाकिस्तान के विरुद्ध लखनऊ में दूसरे टैस्ट में खेले थे और उन्होंने 97 रन देकर 3 विकेट लिए थे।

वे लोक कर्म विभाग राजकोट में नक्शानवीस हैं

निसार, मोहम्मद

श्री निसार भारत के अब तक के गेन्दबाजों में सबसे अधिक तेज गेंद फेंकने वाले सर्वोत्तम गेंदबाज थे और अपने समय में नई गेंद फेंकने में सबसे अधिक कुशल थे। उनका कद 6'–2" था और शरीर बहुत गठीला था। वे बड़ी सफलता के साथ गेंद को दोनों ओर घुमा देते थे।

1932 और 1934 में जो भारतीय टीम इंग्लैंड खेलने गई थी उसके वे सदस्य थे। वहां जाकर उन्होने इतने जोश-खरोश के साथ गेंदबाजी की कि विपक्षी बल्लेबाजों के कलेजे कांप उठे। भारत के पहले ही टैस्ट में जो 1932 में खेला गया था, उन्होंने इंग्लैड के पारी प्रारम्भ करने वाले सटक्लिफ और होम्स के जोड़े की गिल्लियां क्रमश: 3 और 6 रनों पर ही उड़ा दी। उस टैस्ट मे उन्होंने 93 रन देकर 5 बल्लेबाज परास्त कर दिए थे। टैस्ट मैचों मे फिर दो बार उन्होंने एक पारी में 5 विकेट लिए थे: 1934–35 में बम्बई टैस्ट में 90 रन देकर 5 विकेट और 1936 मे ओवल के तीसरे टैस्ट में 120 रन देकर 5 विकेट। इंग्लैंड के विरुद्ध उन्होने 6 टैस्ट मैच खेले थे और उनमें उन्होंने कुल मिलाकर 707 रन देकर 25 विकेट गिराए थे।

महाराजा पटियाला की आस्ट्रेलियाई टीम के विरुद्ध उन्होंने जितने भी अनौपचारिक मैच खेले थे उन सबमें उनकी गेंदबाजी बहुत ही खतरनाक रही थी। उन्होने पहले टैस्ट में 72 रन देकर 6 विकेट, दूसरे में 36 रन देकर 6 विकेट, तीसरे में 72 रन देकर 4 विकेट और 80 रन देकर 4 विकेट तथा चौथे और अन्तिम टैस्ट में 61 रन देकर 5 विकेट और 36 रन देकर 6 विकेट गिराए थे।

लार्ड टेनीसन की टीम के विरुद्ध तीसरे अनौपचारिक टैस्ट मे उन्होंने 79 रन देकर 5 विकेट लिए थे।

उनका जन्म 1 अगस्त 1910 को हुआ था। वे रणजी ट्रॉफी में दक्षिण पंजाब की ओर से खेला करते थे। उन्होंने तीन बार 5 या अधिक विकेट गिराए थे। उनका सर्वोत्तम खेल 1938–39 में सिन्ध के विरुद्ध रहा जबकि उन्होंने केवल 17 रन देकर 6 बल्लेबाज धराशायी कर दिए थे। एक साल वे उत्तर प्रदेश की ओर से भी खेले थे और तब उन्होंने उस टीम का नेतृत्व भी किया था। रणजी ट्रॉफी में कुल मिलाकर उन्होंने 464 रन देकर 32 विकेट लिए थे।

बम्बई चतुष्कोणीय और पंचकोणीय प्रतियोगिताओं में, वे मुस्लिम क्लब की ओर से खेलते थे। उनकी गेंदबाजी बहुत सफल रही थी। उन्होंने 13·56 के औसत से 678 रन देकर 50 विकेट गिराए थे।

उनकी सर्वोच्च रन संख्या अपराजित 37, 1934–35 में उत्तर प्रदेश के विरुद्ध, दक्षिणी पजाब की ओर से खेलते हुए बनी थी।

देश के विभाजन से पहले वे भारतीय रेलवे में एक अधिकारी थे। फिर वे पाकिस्तान चले गए और वहाँ 11 मार्च 1963 को उनकी मृत्यु हो गई।

पंजाबी, पन्नालाल होतचन्द

श्री पंजाबी ने 1953–54 में, सिलवर जुबली ओवरसीज टीम के विरुद्ध, एक अनौपचारिक टैस्ट मे प्रथम प्रवेश में ही शतक बना कर ख्याति प्राप्त कर ली थी। 1954–55 में वे भारतीय टीम के साथ पाकिस्तान गए। वहा वे पांचों टैस्टों मे खेले और उन्होने 10 पारियों में कुल 164 रन बनाए। उनकी सबसे अधिक रन संख्या 33 रही।

श्री पंजाबी का जन्म 20 सितम्बर 1921 को कराची में हुआ था। वे दाहिने हाथ के बल्लेबाज हैं। प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में उन्होंने 1943–44 में खेलना शुरू किया था जबकि वे गुजरात के विरुद्ध सिन्ध की ओर से खेले थे। देश के विभाजन के बाद वे गुजरात आ गए और 1952–53 के बाद वे गुजरात की ओर से खेले। प्रथम श्रेणी के क्रिकेट मे उन्होने 2000 से ऊपर रन बनाए है। उनकी सर्वोत्तम बल्लेबाजी 1959–60 में सौराष्ट्र के विरुद्ध रही जबकि उन्होंने अपराजित 224 रन बनाए थे। वे वर्मा शैल कपनी के उड्डयन विभाग, बम्बई मे काम करते हैं।

पटियाला, महाराजा श्री यादवेन्द्र सिंहजी

अखिल भारतीय खेल–कूद परिषद् के भूतपूर्व अध्यक्ष महाराजा श्री यादवेन्द्र सिंहजी पटियाला के राजवंश को सुशोभित करते है। उनके तेजस्वी पिता स्व० महाराजा श्री भूपेन्द्र सिंहजी भारतीय क्रिकेट नियन्त्रण बोर्ड के संस्थापकों में से थे और उन्होने ही रणजी ट्रॉफी प्रदान की थी। इस ट्रॉफी

की जो प्रतिकृति प्रतिवर्ष विजेता टीम को प्रदान की जाती है वह भी इसी राजवंश से भेंट स्वरूप मिली है।

दाहिने हाथ के आक्रामक बल्लेबाज और दाहिनी भुजा से मध्यम गति की गेंद फेंकने वाले महाराजा पटियाला ने 1933-34 मे इंग्लैंड के विरुद्ध तीसरा टैस्ट मैच खेला था और उसमे उन्होंने 24 और 60 रन बनाए थे जो उस खेल में भारत की ओर से सर्वोच्च रन संख्या थी। 1935 में जैक राइडर के नेतृत्व में जो आस्ट्रेलियाई टीम भारत आई थी उसके विरुद्ध बम्बई मे प्रथम अनौपचारिक टैस्ट में उन्होने भारत का नेतृत्व किया था। लार्ड टेनीसन की टीम के विरुद्ध भी उन्होने दो अनौपचारिक टैस्ट खेले थे।

उन्होंने 1935-36 में अपने पिता के नेतृत्व में रणजी ट्रॉफी मे पहली बार प्रवेश किया और दक्षिण पंजाब के विरुद्ध खेले। दूसरे वर्ष टीम का नेतृत्व उनको प्रदान किया गया और उन्होने उत्तर प्रदेश के विरुद्ध अपराजित 102 रन बनाकर अपने पद को सम्मानित किया। पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्त के विरुद्ध उन्होने 1937-38 में 79 और 1938-39 मे 75 रन बनाए थे।

बम्बई चतुष्कोणीय प्रतियोगिता में वे हिन्दू क्लब की ओर से खेला करते थे।

पटेल, जसु एम०

आस्ट्रेलिया के विरुद्ध प्रथम टैस्ट में भारत को जिताने में श्री पटेल का प्रमुख हाथ था। 1959-60 मे कानपुर मे आयोजित दूसरे टैस्ट में उन्होने प्रथम पारी में केवल 69 रन देकर आस्ट्रेलिया के 9 बल्लेबाजों को धराशायी कर दिया था और दूसरी बार 55 रन देकर 5 बल्लेबाजों को परास्त कर दिखाया था। इस उत्तम खेल को भारत सरकार की ओर से भी मान्यता मिली और 1960 में श्री पटेल को 'पद्म श्री' से सम्मानित किया गया।

उन्होंने 7 टैस्ट मैच खेले है : 1955 में पाकिस्तान और न्यूजीलैंड दोनों के विरुद्ध एक-एक, आस्ट्रेलिया के विरुद्ध 1956 में दो और 1959 में तीन। भारतीय टैस्ट गेंदबाजी में उनका औसत सर्वश्रेष्ठ रहा है। 21·93 प्रति विकेट के औसत से 636 रन देकर 29 विकेट गिराए हैं।

उनका जन्म 26 नवम्बर 1924 को अहमदाबाद में हुआ था। ये दाहिनी भुजा के ऑफ स्पिनर कई वर्षों तक गुजरात की टीम के मेरुदण्ड रहे है। मैटिंग विकेट पर उन्हें अधिक सफलता मिली है। प्रथम श्रेणी के क्रिकेट मे उन्होने 1943-44 मे प्रवेश किया था जब वे सिंध के विरुद्ध खेले थे और उन्होने 32 रन देकर 3 विकेट लिए थे। उन्होने दो बार प्रति पारी आठ विकेट गिराए हैं : 1950 में सेना के विरुद्ध, 53 रन देकर, 8 विकेट (पूरे मैच

में 81 रन देकर 13 विकेट) और 1960 में सौराष्ट्र के विरुद्ध 21 रन देकर 8 विकेट। 1950 की रणजी ट्रॉफी प्रतियोगिता में उन्होंने 421 रन देकर 29 विकेट लिए थे। रणजी ट्रॉफी में कुल मिलाकर उन्होंने 2827 रन देकर 140 विकेट लिए हैं।

वे दाहिने हाथ के बल्लेबाज हैं। उन्होंने 1950-51 में होल्कर के विरुद्ध 152 रन बनाए थे। यही उनकी सर्वोच्च रन संख्या है।

1954-55 में वे भारतीय टीम के साथ पाकिस्तान गए और उनकी गेंदबाजी सर्वश्रेष्ठ रही : 10·68 रन प्रति विकेट के औसत से रन देकर उन्होंने 35 विकेट लिए थे।

वे बम्बई विश्वविद्यालय के भी खिलाड़ी रह चुके हैं। अब वे हार्ड काशल वॉड एण्ड कं० अहमदाबाद के विक्रय प्रतिनिधि हैं।

पटौदी, नवाब इफ्तिकार अली

नवाब पटौदी ने अपने जीवन के पहले टैस्ट में ही शतक बनाकर मानो रणजी और दलीपजी की बराबरी की थी। 1932 में आस्ट्रेलिया के विरुद्ध इंग्लैंड की ओर से खेलते हुए उन्होने पहले ही टैस्ट मे एक शतक जमाया था। उन्होंने लगातार दो शतकों के साथ अपना दौरा प्रारम्भ किया। यद्यपि दूसरे टैस्ट के बाद वे नही खेल सके तथापि पूरे दौरे में उनका खेल काफी प्रभावशाली रहा।

उनका जन्म 17 मार्च 1910 को हुआ था। छोटी आयु में ही वे एक उत्कृष्ट कोटि के बल्लेबाज बन गए थे। 1929 में जब उन्होने ऑक्सफोर्ड की ओर से पहली बार मैदान में प्रवेश किया तब उन्होने शतक बनाया था। 1931 मे ऑक्सफोर्ड-केम्ब्रिज के मैच में वे 238 रन बनाकर भी अपराजित रहे थे। यह रन संख्या आज भी वहाँ बल्लेबाजी का अखण्ड कीर्तिमान है।

1932 में जो भारतीय टीम इंग्लैंड खेलने गई थी उसमें खेलने के लिए उन्हें कप्तान बनने का लालच दिया गया था परन्तु उन्होने इनकार कर दिया क्योंकि वे इंग्लैंड की ओर से खेलना चाहते थे।

वे 1933 मे आस्ट्रेलिया के दौरे से इंग्लैंड लौटे थे। वहाँ आकर उन्होने केन्ट के विरुद्ध 224; इसेक्स के विरुद्ध अपराजित 231, सोमरसेट के विरुद्ध 222 और वैस्टइंडीज के विरुद्ध अपराजित 162 रन बनाए थे। इंग्लैंड और वैस्टइण्डीज के बीच टैस्ट मैच शुरू होने से पहले ही उनका स्वास्थ्य गिर गया था। इसके बाद वे केवल एक बार 1934 में आस्ट्रेलिया के विरुद्ध टैस्ट मैच में उतरे थे परन्तु इसके बाद वे बहुत कम खेल सके।

1945-46 की रणजी ट्रॉफी प्रतियोगिता में वे पश्चिम पंजाब की

ओर से दिल्ली और जिला क्रिकेट संघ के विरुद्ध खेले थे और क्षेत्रीय चतुष्कोणीय प्रतियोगिता में उन्होने उत्तर क्षेत्र का नेतृत्व किया था।

वे 1946 मे इंग्लैंड में भारतीय टीम के नेता थे। इस दौरे में उनका स्वास्थ्य ठीक नही था फिर भी उन्होंने अपनी 26 पारियों में, 5 बार अपराजित रह कर, 46·52 रन प्रति पारी के औसत से कुल 977 रन बना लिए थे। उन्होने केम्ब्रिज के विरुद्ध 121, डर्बीशायर के विरुद्ध 193, ससेक्स के विरुद्ध अपराजित 110 और नोटिंघमशायर के विरुद्ध अपराजित 101 रन बनाए थे। टैस्ट मैचों में उनकी बल्लेबाजी निराशाजनक रही।

मौत के निर्दयी हाथों ने इस रंग-बिरंगी जिन्दगी को 5 जनवरी 1952 को काट दिया। एक पोलो खेल के तत्काल बाद उनके प्राण पखेरू उड़ गए।

पटौदी, नवाब मंसूर अली

श्री पटौदी ने वेस्टइंडीज के विरुद्ध तीसरे टैस्ट में केवल 21 वर्ष की आयु मे भारत का नेतृत्व किया था। आज तक किसी भी खिलाड़ी को इतनी कम आयु में टैस्ट कप्तान बनने का सौभाग्य नही मिला है। श्री पटौदी भी अपने यशस्वी पिता के कदमों पर ही चले और भारत के कप्तान बने। उनका जन्म 5 जनवरी 1941 को भोपाल में हुआ था और उनकी शिक्षा-दीक्षा इंग्लैंड में हुई थी। प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में उन्होंने 1959 में प्रवेश किया था जब कि वे छात्रावस्था मे ही सोमरसेट के विरुद्ध ससेक्स की ओर से खेले थे। 1960-61 में वे रणजी ट्रॉफी में दिल्ली की ओर से उत्तर पंजाब के विरुद्ध खेले। अगले ही वर्ष उन्होंने टैस्ट क्रिकेट में भी प्रवेश कर लिया और इंग्लैंड के विरुद्ध दिल्ली में आयोजित तीसरे टैस्ट में खेले। इसी शृंखला के तीसरे मद्रास टैस्ट में उन्होंने एक शतक बना डाला। 1962 में जो भारतीय टीम वेस्टइंडीज गई उसके वे कप्तान बने और उप-कप्तान कॉण्ट्रैक्टर को सिर में गंभीर चोट लग जाने के कारण शेष तीन टैस्टों मे उन्होंने भारत का नेतृत्व किया। तबसे वे 1964 में इंग्लैंड के विरुद्ध, 1964 मे आस्ट्रेलिया के विरुद्ध, और 1965 में न्यूजीलैंड में विरुद्ध भारत के कप्तान रहे हैं।

श्री पटौदी एक शानदार, आक्रामक, दाहिने हाथ के बल्लेबाज और भारत के श्रेष्ठ क्षेत्र-रक्षकों में से एक हैं। अब तक उन्होने 18 टैस्ट खेले हैं और 31 पारियों में, 2 बार अपराजित रहकर, उन्होंने 1231 रन बनाए हैं। उन्होने पांच टैस्ट शतक बनाए हैं: 1961 मे इंग्लैंड के विरुद्ध पांचवें टैस्ट मे 103; 1964 मे इंग्लैंड के विरुद्ध चौथे टैस्ट में अपराजित 203; 1964 में आस्ट्रेलिया के विरुद्ध पहले टैस्ट में अपराजित 128 और दूसरे टैस्ट मे 153 तथा 1965 मे न्यूजीलैंड के विरुद्ध चौथे टैस्ट में 113 रन।

1961 मे जब ई० डब्लू० स्वाण्टन की टीम ने वेस्टइंडीज का दौरा

किया था तो श्री पटौदी भी उसके सदस्य थे। एक मैच में उन्होंने दो शतकीय प्रहार किए थे : 1961 में यॉर्कशायर के विरुद्ध ससेक्स की ओर से 106 और अपराजित 103 तथा इसके बाद मिडिलसेक्स के विरुद्ध 144 रन।

वे प्रथम भारतीय हैं जिन्हें ऑक्सफोर्ड का कप्तान बनने का गौरव प्राप्त हुआ। परन्तु 1951 की गर्मियों में, जब उनका खेल चोटी पर था, एक कार दुर्घटना के कारण वे विश्वविद्यालय मैच में नहीं खेल सके।

रणजी ट्रॉफी में उन्होंने दिल्ली की टीम का नेतृत्व किया है और 1963–64 मे दलीप ट्रॉफी में वे उत्तर क्षेत्र की ओर से खेले जिसमें उन्होंने दक्षिण क्षेत्र के विरुद्ध 141 रन बनाए थे।

पाटणकर, चन्द्रकान्त टी०

श्री पाटणकर एक दाहिने हाथ के बल्लेबाज और विकेट-रक्षक हैं। उनका जन्म 24 नवम्बर 1930 को हुआ था और उन्होने प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में पहला प्रवेश 1949–50 में किया था जब कि वे कॉमनवेल्थ प्रथम के विरुद्ध बम्बई की ओर से खेले थे। वे कॉमनवेल्थ द्वितीय के विरुद्ध भी खेले थे और उन्होने 1953–54 में सिलवर जुबली ओवरसीज टीम के विरुद्ध सम्मिलित विश्वविद्यालय टीम का नेतृत्व किया था।

1953-54 मे वे पहली बार रणजी ट्रॉफी में खेले थे जिसमे बम्बई की ओर से विकेट रक्षण करते हुए, उन्होंने मद्रास के चार बल्लेबाजों को धराशायी कर दिया था। यही उनका सर्वश्रेष्ठ विकेट-रक्षण रहा है। वे 1955–56 में न्यूजीलैंड के विरुद्ध कलकत्ता के चौथे टैस्ट में खेले थे और उन्होंने चार बल्लेबाजो को (3 कै० और 1 स्टम्प) परास्त किया था।

वे 1949–50 से 1953–54 तक बम्बई विश्वविद्यालय के खिलाड़ी रहे हैं। वे बी० ई० एस० टी० अण्डरटेकिंग, बम्बई में काम करते हैं।

पाटिल, सदाशिव आर०

श्री पाटिल का जन्म 10 अक्टूबर 1933 को कोल्हापुर में हुआ था। वे दाहिनी भुजा से मध्यम तेज गेंद फेंकने वाले और दाहिने हाथ के आक्रामक बल्लेबाज रह चुके हैं। उन्होने रणजी ट्रॉफी में खेलना 1952-53 में शुरु किया था जब वे महाराष्ट्र के विरुद्ध खेले थे और उन्होने 45 रन देकर 5 विकेट तथा 68 रन देकर 3 विकेट लिए थे। प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में यही अब तक उनकी सर्वोत्तम गेंदबाजी रही है।

उन्होंने 1955–56 में बम्बई में न्यूजीलैंड के विरुद्ध दूसरा टैस्ट खेला था और उन्होने दोनों पारियों में श्री रीड को क्रमशः 36 और 15 रनो पर परास्त कर दिया था तथा स्वयं 14 रन बना कर अपराजित रहे थे।

उनकी सर्वोत्तम रन संख्या 69 है जो उन्होंने 1956-57 में बम्बई के विरुद्ध महाराष्ट्र की ओर से खेलते हुए बनाई थी। वे एक व्यावसायिक खिलाड़ी के रूप में, 1956 में उत्तरी स्टैफॉर्डशायर लीग में नांटविच की ओर से और 1959 में चर्च की ओर से तथा 1961 में वेकप की ओर से खेले थे।

वे टाटा उद्योग, बम्बई में काम करते हैं।

पालिया, पी० ई०

श्री पालिया ने रणजी ट्रॉफी में उतने ही रन बनाए हैं जितने उन्होंने इस प्रतियोगिता में गेंदबाजी करते हुए दिए हैं। अपनी 29 पारियों में, एक बार अपराजित रह कर, उन्होंने 1156 रन बनाए हैं। गेंदबाजी करते हुए इन्होंने इस प्रतियोगिता में 1156 रन देकर 57 विकेट लिए हैं।

उनका जन्म 5 सितम्बर 1910 को हुआ था। रणजी ट्रॉफी में वे 1934-35 से 1942-43 तक उत्तर प्रदेश की ओर से खेले थे जिनमें 6 वर्ष तक उन्होंने अपनी टीम का नेतृत्व किया था। 1937-38 मे वे बम्बई की ओर से खेले थे। उनकी सर्वोच्च रन संख्या 216 है जो उन्होंने 1939-40 में उत्तर प्रदेश के लिए महाराष्ट्र के विरुद्ध बनाई थी। इस प्रतियोगिता में उन्होंने दो और शतक बनाए थे : उत्तर भारत के विरुद्ध 128 और मद्रास के विरुद्ध अपराजित 110 रन। उनकी सर्वोत्तम गेंदबाजी 1936-37 में दिल्ली और जिला क्रिकेट संघ के विरुद्ध रही जब कि उन्होंने 70 रन देकर 4 विकेट और 35 रन देकर 4 विकेट लिए थे।

वे बाएँ हाथ के आक्रामक बल्लेबाज और बाईं भुजा के धीमे गेंदबाज रहे हैं। भारतीय टीम के सदस्य के रूप में उन्होंने 1932 और 1936 में इंग्लैंड का दौरा किया था। उन्हें दो टैस्ट मैचों मे खेलने का अवसर मिला था जिनमें उन्होने चार पारियों में 29 रन बनाए थे।

प्रसन्ना, ई० ए० एस०

1961-62 में एम० सी० सी० के विरुद्ध दक्षिण क्षेत्र की ओर से शानदार गेंदबाजी (56 रन देकर 6 विकेट) के कारण श्री प्रसन्ना प्रकाश मे आए और उसके फलस्वरूप उनको इंग्लैंड के विरुद्ध मद्रास के पाँचवे टैस्ट में और 1962 में वेस्टइण्डीज के दौरे पर जाने वाली भारतीय टीम में स्थान मिला। वे वेस्टइण्डीज में दूसरे टैस्ट मे खेले और उन्होंने 122 रन देकर 3 विकेट लिए।

श्री प्रसन्ना का जन्म 22 मई 1940 को हुआ था। वे दाहिनी भुजा से आफ ब्रेक गेंद फेंकते हैं और दाहिने हाथ से बल्लेबाजी करते हैं। रणजी ट्रॉफी मे उन्होने 1961-62 में खेलना शुरु किया था जबकि उन्होंने हैदराबाद

के विरुद्ध मैसूर की ओर से खेलते हुए 26 रन बनाए थे और 15 रन देकर 3 विकेट तथा 65 रन देकर 2 विकेट लिए थे। रणजी ट्रॉफी में उनकी सर्वोत्तम गेंदबाजी 1961-52 मे मद्रास के विरुद्ध रही जबकि उन्होंने 38 रन देकर 4 विकेट लिए थे। दलीप ट्रॉफी में वे दक्षिण क्षेत्र की ओर से खेल चुके हैं।

फड़कर, दत्तात्रेय गजानन

श्री फड़कर भारत के एक उच्चकोटि के सर्वोन्मुख खिलाड़ी रहे हैं। वे दाएँ हाथ के शक्तिशाली बल्लेबाज और दाहिनी भुजा के मध्यम तेज गेंदबाज तथा उत्तम निकटवर्ती क्षेत्ररक्षक रह चुके हैं। उनका जन्म 12 दिसम्बर 1925 को बम्बई में हुआ था। प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में उन्होंने 1942-43 में प्रवेश किया था और बड़ौदा के विरुद्ध महाराष्ट्र की ओर से खेले थे। वे 1944-45 से 1951-52 तक बम्बई की ओर से खेले और 1950-51 में बम्बई के कप्तान रहे। वे 1954-55 मे बंगाल की ओर से खेले थे और उसके बाद रेलवे की ओर से। कुल 47 पारियों में, 6 बार अपराजित रहकर, उन्होंने 46.82 के औसत से 1920 रन बनाए है। उनकी सर्वोत्तम बल्लेबाजी 1950 मे महाराष्ट्र के विरुद्ध रही जबकि उन्होंने बम्बई की ओर से खेलते हुए 217 रन बनाए थे। 1948 मे उन्होंने फिर महाराष्ट्र के विरुद्ध दोनों पारियों मे शतक यानी 131 और 160 रन बनाए थे। उन्होंने 1588 रन देकर 216 विकेट लिए हैं। रणजी ट्रॉफी के तीन वर्षों में उन्होंने 25 से अधिक विकेट लिए थे, अर्थात् 1948-49 में 617 रन देकर 29 विकेट, 1951-52 मे 302 रन देकर 32 विकेट और 1958-59 में 313 रन देकर 26 विकेट लिए थे। उनकी सर्वोत्तम गेंदबाजी 1951-52 में मैसूर के विरुद्ध रही जबकि उन्होंने केवल 8 रन देकर 5 विकेट गिरा दिए थे।

भारतीय टीम के सदस्य के रूप में 1947-48 मे आस्ट्रेलिया, 1952 में इंग्लैंड, 1952-53 मे वेस्टइण्डीज और 1954-55 में पाकिस्तान गए थे। उन्होंने 31 टैस्ट खेले हैं: 5 आस्ट्रेलिया, 8 वेस्टइण्डीज, 8 इंग्लैंड, 6 पाकिस्तान और 4 न्यूजीलैंड के विरुद्ध। अपनी 45 टैस्ट पारियों में 7 बार अपराजित रहकर उन्होंने प्रतिपारी 32.34 के औसत से 1229 रन बनाए हैं। 1947-48 मे एडीलेड में आस्ट्रेलिया के विरुद्ध खेले गए चौथे टैस्ट मे उन्होंने 123 रन और 1951-52 में कलकत्ता मे इंग्लैंड के विरुद्ध खेले गए तीसरे टैस्ट में 115 रन बनाए थे। टैस्ट मैचों में उन्होंने 36.85 के औसत से 2285 रन देकर 62 विकेट गिराए हैं। उन्होंने तीन बार पाँच से अधिक विकेट लिए हैं: 1948-49 मे वेस्टइण्डीज के विरुद्ध चौथे टैस्ट मे 159 रन देकर 7 विकेट, 1953 में वेस्टइण्डीज के विरुद्ध दूसरे टैस्ट में 64 रन देकर

5 विकेट और 1952 में पाकिस्तान के विरुद्ध तीसरे टैस्ट में 72 रन देकर 5 विकेट लिए थे। उनकी सर्वोत्तम गेंदबाजी 1947-48 में आस्ट्रेलिया के विरुद्ध दूसरे टैस्ट में रही जबकि उन्होंने 14 रन देकर 3 विकेट लिए थे।

उन्होंने 13 अनौपचारिक टैस्ट भी खेले हैं : 1 आस्ट्रेलियाई सेना, 5 कॉमनवेल्थ प्रथम, 5 कॉमनवेल्थ द्वितीय और 2 सिलवर जुबली ओवरसीज टीम के विरुद्ध। उन्होंने कई बार बहुत सुन्दर खेल दिखाया है, जैसे—कॉमनवेल्थ प्रथम के विरुद्ध पहले टैस्ट में 110 रन, और दूसरे टैस्ट में अपराजित 78 रन बनाए; पांचवें टैस्ट में 89 रन देकर 4 विकेट और 28 रन देकर 3 विकेट लिए; कॉमनवेल्थ द्वितीय के विरुद्ध चौथे टैस्ट में 61 रन बनाए और 99 रन देकर 5 विकेट लिए, इसी प्रकार सिलवर जुबली ओवरसीज टीम के विरुद्ध पांचवें टैस्ट में 63 रन बनाए और केवल 8 रन देकर तीन विकेट लिए।

वे केन्द्रीय लंकाशायर लीग में रोकडेल क्रिकेट क्लब की ओर से खेलते थे। वे भारतीय रेलवे में कर्मचारी हैं।

बनर्जी, एस०

श्री बनर्जी का जन्म 1 नवम्बर 1919 को हुआ था। वे एक दाहिने हाथ के सधे हुए बल्लेबाज और दाहिनी भुजा से मध्यम गति की गेंद फेंकने वाले अच्छे गेंदबाज हैं। उन्होंने प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में पहला प्रवेश दिसम्बर 1939 में किया था जब वे बंगाल के विरुद्ध बिहार की ओर से खेले। उन्होंने अपनी टीम की ओर से पारी की शुरुआत की और दोनों ही पारियों में सबसे अधिक रन यानी 48 और 26, बनाए तथा 33 रन देकर 3 विकेट लिए। 1940-41में उन्होंने 7 रन देकर बंगाल के तीन बल्लेबाजों को परास्त किया था। अगले वर्ष उन्होंने बंगाल के विरुद्ध 73 और अपराजित 22 रन बनाए थे। 1943-44 में उन्होने बंगाल के विरुद्ध एक अपराजित शतक (101) बनाया।

उन दिनों रणजी ट्रॉफी प्रतियोगिता 'नोक आउट' पद्धति से खेली जाती थी और हर बार बिहार पहले ही मैच मे बगाल से पराजित होकर, प्रतियोगिता से बाहर हो जाता था अतः बिहार की टीम के सर्वोन्मुख खिलाड़ी श्री बनर्जी को प्रथम श्रेणी के मैच में खेलने का अधिक अवसर नही मिल सका। यही हालत उस समय भी हुई जबकि वे उत्तर प्रदेश की ओर से खेले जिसमें उन्होंने आसाम के विरुद्ध अपराजित 70 रन बनाए थे और 1950-51 मे 82 रन देकर होल्कर के 5 विकेट लिए थे।

वे वेस्टइण्डीज के विरुद्ध तीसरे कलकत्ता टैस्ट में भी खेले थे और पहली पारी में उन्होंने 120 रन देकर 4 विकेट लिए थे।

बनर्जी, एस० एन०

श्री बनर्जी वस्तुतः दाहिने हाथ के तेज गेंदबाज थे परन्तु जब उनका खेल सर्वोच्च स्तर पर था तो निसार और अमरसिंह ने उनको निष्प्रभ कर दिया। उनका जन्म 3 अक्टूबर 1911 को कलकत्ता में हुआ था। उन्होंने रणजी ट्रॉफी मे प्रथम प्रवेश 1935-36 में किया जबकि वे मध्यभारत के विरुद्ध बंगाल की ओर से खेले थे। 1937–38 से 1941-42 तक वे नवानगर की ओर से खेले और 1942–43 से लेकर 1952–53 तक उन्होंने बिहार का नेतृत्व किया। रणजी ट्रॉफी मे उन्होंने 946 ओवर गेंदबाजी की। इनमे 178 ओवर रन-हीन रहे और उन्होंने 21·44 के औसत से 2831 रन देकर 132 विकेट लिए। उनकी सर्वोत्तम गेंदबाजी महाराष्ट्र के विरुद्ध रही जबकि उन्होंने कुल 25 रन देकर 8 विकेट लिए थे।

वे दाहिने हाथ के अच्छे बल्लेबाज भी रहे हैं। उन्होने कई पारियों की शुरुआत भी की है और उनकी बल्लेबाजी अनेक बार उच्चकोटि की रही है। 1936 और 1946 में इंग्लैंड का और 1945 में श्री लंका का दौरा करने वाली भारतीय टीम के वे सदस्य थे। इंग्लैंड के अपने दूसरे दौरे में उन्होंने इग्लैंड और भारत के अन्तिम विकेट का नया कीतिमान (249 रन) स्थापित किया जबकि उन्होंने श्री सी० टी० सरवटे के साथ खेलते हुए, सर्रे के विरुद्ध 121 रन बनाए थे। उनकी सर्वोच्च रन संख्या 138, 1952–53 में बंगाल के विरुद्ध बिहार की ओर से खेलते हुए बनी थी। उन्होने रणजी ट्रॉफी की 64 पारियों में कुल 1638 रन बनाए हैं और उनमें से सात मे अपराजित रहे हैं।

बाका जिलानी

रणजी ट्रॉफी में सर्व प्रथम तिकड़ी (हैटट्रिक) बनाने वाले श्री बाका जिलानी दाहिनी भुजा से मध्यम गति की तेज बाल फेंकने वाले एक गेंदबाज और दाहिने हाथ के बल्लेबाज थे। 1934–35 में रणजी ट्रॉफी के पहले ही मैच में खेलते हुए उन्होने दक्षिण पंजाब के विरुद्ध दूसरी पारी में तिकड़ी बनाई और केवल 7 रन देकर 5 विकेट लिए। पहली पारी में उन्होने 64 रन देकर चार विकेट लिए थे।

रणजी ट्रॉफी मे उन्होंने कुल सात मैच खेले जिनमें कुल 450 रन देकर 27 विकेट लिए और 14 पारियों मे, एक बार अपराजित रहकर, कुल 284 रन बनाए। उनकी सर्वोत्तम बल्लेबाजी 1935-36 में दिल्ली और जिला संघ के विरुद्ध तथा 1937–38 मे उनके रणजी ट्रॉफी के अन्तिम मैच में दक्षिण पंजाब के विरुद्ध रही थी जबकि उन्होने क्रमशः 76 और 74 रन बनाए थे।

1936 में इंग्लैंड का दौरा करने वाली भारतीय टीम के वे सदस्य थे और वहां ओवल के तीसरे टैस्ट में खेले थे। उन्होंने 1935 में आस्ट्रेलियाई टीम के विरुद्ध दो अनौपचारिक टैस्ट मैचों में भी भाग लिया था और कलकत्ते में आयोजित दूसरे मैच में 15 रन देकर 3 विकेट लिए थे।

उन्होंने बम्बई चतुष्कोणीय प्रतियोगिता में मुस्लिम क्लब का प्रतिनिधित्व किया था। उनका जन्म 20 जुलाई 1911 को हुआ था और छोटी आयु में ही असामयिक मृत्यु 2 जुलाई 1941 को हुई।

बेग, अब्बास अली

श्री बेग 1959 में इंग्लैंड का भ्रमण करने वाली भारतीय टीम के नियमित सदस्य नहीं थे फिर भी मेंचेस्टर में आयोजित चौथे टैस्ट में उन्हें भारत की ओर से खिलाया गया और टैस्ट मैचों में उनका यह पहला ही खेल बहुत शानदार रहा। इंग्लैंड के भीषण आक्रमणकारी ट्रूमैन और उसके सहयोगियों का श्री बेग ने डटकर सामना किया और यद्यपि वे प्रथम प्रयास में केवल 26 रन बना सके परन्तु दूसरे प्रयास में उन्होंने शानदार शतकीय प्रहार किया और 112 रन बनाए। वे एक आक्रामक दाहिने हाथ के बल्लेबाज हैं और गेंद को पीटने में कोई कसर नहीं रखते। परन्तु बाद के मैचों में उनका स्तर वही नहीं रह सका। अब तक उन्होंने 14 टैस्ट पारियां खेली हैं जिनमें उन्होंने 26·85 के औसत से कुल 376 रन बनाए हैं। वे अब तक आठ टैस्ट मैच खेल चुके हैं : इंग्लैंड के विरुद्ध 1959 में 2, आस्ट्रेलिया के विरुद्ध 1959 में 3, और पाकिस्तान के विरुद्ध 1960 में 3।

श्री बेग का जन्म 19 मार्च 1939 को हुआ था। वे रणजी ट्रॉफी प्रतियोगिता में हैदराबाद की ओर से खेलते हैं।

बोर्डे, चन्द्रकान्त गुलाबराव

एक अत्यन्त उपयोगी सर्वोन्मुखी खिलाड़ी श्री बोर्डे ने रणजी ट्रॉफी में अब तक 2000 से ऊपर रन बना लिये हैं और 100 से ऊपर विकेट ले लिये हैं। इनका जन्म 21 जुलाई 1934 को पूना में हुआ था। वे दाहिने हाथ के बल्लेबाज और दाहिनी भुजा से लेग ब्रेक व गुगली गेंद फेंकने वाले गेंदबाज तथा शानदार क्षेत्र-रक्षक हैं। 1952–53 में जब वे स्कूल में पढ़ते थे तब ही उन्होंने रणजी ट्रॉफी प्रतियोगिता में सर्वप्रथम प्रवेश कर लिया था और बम्बई की तगड़ी टीम के विरुद्ध 55 और अपराजित 61 रन बनाए थे। 1954–55 में वे बड़ौदा आ गए और तबसे लेकर 1963–64 तक बड़ौदा की टीम में खेलते रहे जिसमें उन्होंने 1961–62 से 1963–64 तक उस टीम का नेतृत्व भी किया। 1964–65 में वे पुनः महाराष्ट्र की टीम में आ गए और उसके कप्तान बने। अब तक उन्होंने रणजी

ट्रॉफी प्रतियोगिता में 10 शतक बनाए हैं और अनेक बार शानदार खेल दिखाया है। उन्होंने सर्वोच्च रन संख्या 154, महाराष्ट्र के विरुद्ध 1959-60 में बड़ौदा की ओर से खेलते हुए बनाई थी और उनकी सर्वोत्तम गेंदबाजी 1958-59 में महाराष्ट्र के विरुद्ध रही जबकि उन्होंने 44 रन देकर 7 विकेट लिए थे।

श्री बोर्डे 40 टैस्ट मैचों में खेले हैं : 14 इंग्लैंड के विरुद्ध; 9 वेस्ट-इण्डीज के विरुद्ध; 8 आस्ट्रेलिया के विरुद्ध; 5 पाकिस्तान के विरुद्ध और 4 न्यूजलैंड के विरुद्ध। कुल 69 टैस्ट पारियों में उन्होने, 8 बार अपराजित रह कर, 2285 रन बनाए हैं। उन्होने 1998 रन देकर 43 टैस्ट विकेट लिए हैं। उन्होने पाकिस्तान के विरुद्ध (177 रन, चौथा टैस्ट, मद्रास, 1960) और न्यूजीलैंड के विरुद्ध (108 रन, तीसरा टैस्ट, बम्बई 1965) शतक बनाए हैं। परन्तु उनकी सर्वोत्तम बल्लेबाजी 1958में नई दिल्ली में,वेस्टइण्डीज के विरुद्ध पाचवें टैस्ट मैच में रही जबकि उन्होंने 109 और 96 रन बनाए थे। उन्होंने अपनी टीम की डूबती नैया को न जाने कितनी बार किनारे लगाया है। उनकी सर्वोत्तम गेंदबाजी 1960-61 में पाकिस्तान के विरुद्ध रही जब उन्होने 21 रन देकर 4 विकेट लिये थे।

वे 1959 में इंग्लैंड और1962 में वेस्टइण्डीज का भ्रमण करने वाली भारतीय टीम के सदस्य थे।

वे एक व्यावसायिक खिलाड़ी के रूप में 1957 और 1958 में लंकाशायर लीग मे वरनेथ की ओर से और 1960 से 1962 तक रौस्टस्टाल की ओर से खेल चुके हैं।

भंडारी, प्रकाश

श्री भंडारी की प्रतिभा 1951-52 में अखिल भारतीय स्कूल क्रिकेट प्रतियोगिता में दिल्ली स्कूल टीम की ओर से खेलते हुए प्रकाश में आई थी। अगले वर्ष उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय मे प्रवेश किया और 1956-57 तक उसकी ओर से खेलते रहे; अन्तिम वर्ष में विश्वविद्यालय की टीम का नेतृत्व भी किया। उनका जन्म 27 नवम्बर 1935 को दिल्ली मे हुआ था और 1952-53 मे उन्होने अन्तरविश्वविद्यालय और रणजी ट्रॉफी प्रतियोगिताओं मे एक साथ प्रवेश किया। 1957-58 में उन्होंने रणजी ट्रॉफी मे दिल्ली की टीम की बागडोर सम्भाली थी।

वे एक दाहिने हाथ के आक्रामक बल्लेबाज, दाहिनी भुजा से ऑफब्रेक गेंद फेंकने वाले गेंदबाज और एक उच्चकोटि के क्षेत्र-रक्षक रहे हैं। वे 1958-59 मे बंगाल स्थानान्तरित कर दिए गए। उन्होंने रणजी ट्रॉफी मे 1000 से ऊपर रन बनाए हैं। उनकी सर्वोत्तम बल्लेबाजी 1957 में

भारतीय टेस्ट खिलाड़ी

जे. एम. पटेल

जी. किशनचन्द

सी. टी. सरवटे और एस. एन. बनर्जी ने सर्रे के विरुद्ध *1946* में अंतिम विकेट की साझेदारी में 249 रन जोड़े, जो कि इंग्लैंड में कीतिमान है।

भारतीय टैस्ट खिलाड़ी

आर. जी. नाडकर्णी

एस. पी. गुप्ते

पी. जी. जोशी

सी. जी. बोर्डे

आर. बी. केनी

एम. एल. जयसिम्हा

पटियाला के विरुद्ध रही जबकि उन्होंने दिल्ली की ओर से 227 रन बनाए थे। 1961-62 में उन्होंने रणजी ट्रॉफी सेमीफाइनल में राजस्थान के विरुद्ध बंगाल की ओर से खेलते हुए लंच से पहले ही एक शतक बना लिया था। उन्होंने रणजी ट्रॉफी में 50 से अधिक विकेट लिए हैं। उनकी सर्वोत्तम गेंदबाजी 1957-58 में पटियाला के विरुद्ध रही जिसमें उन्होंने 47 रन देकर 5 विकेट लिए थे। उन्होंने 1955-56 में भारतीय विश्वविद्यालयों की ओर से न्यूजीलैंड के विरुद्ध खेलते हुए 50 रन देकर 6 विकेट लिए थे।

श्री भंडारी 1954-55 में पाकिस्तान और 1956 में श्रीलंका का दौरा करने वाली भारतीय टीम के सदस्य रहे हैं। वे कुल तीन टैस्ट मैचों में खेले हैं: 1955 और 1956 में पाकिस्तान, न्यूजीलैंड और आस्ट्रेलिया तीनों के विरुद्ध एक-एक। टैस्ट मैचों में उनकी सर्वोच्च रन संख्या 39, न्यूजीलैंड के विरुद्ध रही। उन्होने सिलवर जुबली ओवरसीज टीम के विरुद्ध एक अनौपचारिक टैस्ट भी खेला था।

मंत्री, माधवजी कृष्णाजी

श्री मत्री का जन्म 1 सितम्बर 1921 को नासिक में हुआ था। प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में अपने श्रीगणेश मे ही उन्होने अपना कीर्तिमान स्थापित कर दिया। 1941-42 में उत्तर भारत के विरुद्ध बम्बई की ओर से विकेट-रक्षण करते हुए उन्होने 9 बल्लेबाजों को धराशायी कर दिया था। वे दाहिने हाथ के सशक्त बल्लेबाज और सुरक्षात्मक विकेट रक्षक रहे हैं। 1942-43 मे वे महाराष्ट्र की ओर से खेले थे। इसके बाद वे फिर बम्बई आ गए और 1949-50, 1951-52, 1955-56 और 1956-57 मे उन्होने बम्बई की टीम का नेतृत्व किया। रणजी ट्रॉफी की 62 पारियों में, सात बार अपराजित रहकर, उन्होने 50·67 रन प्रतिपारी के औसत से कुल मिलाकर 2787 रन बनाए है। उनकी सर्वोच्च रन संख्या 200 1948-49 मे महाराष्ट्र के विरुद्ध रही।

उन्होंने चार टैस्ट मैच खेले हैं: इंग्लैंड के विरुद्ध 1951-52 में (1), 1952 में (2) और पाकिस्तान के विरुद्ध 1955 में (1)। जो भारतीय टीम 1952 में इंग्लैंड और 1954-55 में पाकिस्तान गई थी उसके वे सदस्य थे। टैस्ट में उनकी सबसे अधिक रन संख्या 39 इंग्लैंड के विरुद्ध 1951-52 मे बम्बई मे खेले गए दूसरे टैस्ट में रही। 1952 में लार्ड्स के मैदान में आयोजित दूसरे टैस्ट में उन्होंने एक को स्टम्प आउट और तीन को विकेट के पीछे कैच आउट किया था।

वे कॉमनवेल्थ प्रथम के विरुद्ध चार अनौपचारिक टैस्ट मैचों में खेले थे, जिनमें से दिल्ली में खेले गए प्रथम टैस्ट में उन्होने 54 रन बनाए थे। उन्होंने 1939-40 से 1945-46 तक बम्बई विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व

किया था। इनमें से अन्तिम दो वर्षों में वे अपनी टीम के कप्तान भी रहे थे। इसी अवधि में वे 1945 में आस्ट्रेलिया की सेना टीम के विरुद्ध सम्मिलित विश्वविद्यालय टीम में भी खेले थे।

वे भारतीय टैस्ट चयन समिति के सदस्य हैं और ए० सी० सी० लिमि० बम्बई में काम करते हैं।

मर्चेंट, विजय माधवजी

क्रिकेट की कला में प्रवीण श्री मर्चेंट विश्वस्तर के बल्लेबाज रहे हैं। प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में उन्होंने प्रतिपारी 72·75 के औसत से रन बनाए हैं और इस प्रकार विश्व में केवल ब्रेडमैन के बाद ही उनका नम्बर आता है। उन्होंने कुल 221 पारियां खेली थीं जिनमें 44 बार अपराजित रहे थे। रणजी ट्रॉफी की राष्ट्रीय क्रिकेट प्रतियोगिता में उनकी रन संख्या सभी बल्लेबाजों से बहुत अधिक रही है। 1936 और 1946 के इंग्लैंड के दौरे में उनकी बल्लेबाजी भारतीय खिलाड़ियों में सर्वोत्तम रही। टैस्ट मैचों में उनकी बल्लेबाजी बहुत ही सधी हुई रही है।

1933–34 से 1951–52 के बीच उन्होंने दस टैस्ट मैच खेले थे जो सभी इंग्लैंड के विरुद्ध थे। कुल 18 पारियों में उन्होंने तीन शतक सहित 859 रन बनाए थे। टैस्ट क्रिकेट में उनकी सर्वोच्च रन संख्या 154, 1951–52 में नई दिल्ली में बनी थी। इसके बाद उन्होंने कोई टैस्ट नहीं खेला।

रणजी ट्रॉफी की कुल 47 पारियों में 10 बार अपराजित रह कर उन्होंने प्रतिपारी 98·35 रन के औसत से 3631 रन बनाए हैं। सोलह बार उनकी रन संख्या 99 से ऊपर पहुँची थी। उनकी उल्लेखनीय बल्लेबाजी है: 1943 में महाराष्ट्र के विरुद्ध 359; 1944 में होल्कर के विरुद्ध 278; 1945 में सिन्ध के विरुद्ध अपराजित 234; 1944 में पश्चिम भारत के विरुद्ध 217 और 1947 में इतने ही रन हैदराबाद के विरुद्ध भी रहे। रणजी ट्रॉफी में उन्होंने 1934–35 में बम्बई की ओर से खेलना प्रारम्भ किया था और 1941–42 से वे बम्बई की टीम के कप्तान रहे।

1936 में इंग्लैंड के दौरे में उनकी औसत रन संख्या भारतीयों में सबसे ऊपर रही। उन्होंने अपनी बल्लेबाजी का क्रम बदल दिया और अपने आप को भारत का सर्वोत्कृष्ट पारी प्रारम्भ करने वाला बल्लेबाज सिद्ध कर दिया। मैंचेस्टर में खेले गए दूसरे टैस्ट में उन्होंने 114 रन बनाकर भारत को निश्चित हार से बचा लिया और श्री मुश्ताक अली के साथ मिलकर प्रथम विकेट की साझेदारी में 205 रनों का योग दिया।

1946 में इंग्लैंड की भीगती हुई गर्मियों में उनका खेल वास्तव में बहुत ही आकर्षक रहा। उन्होंने 8 शतक बनाए जिनमें दो दोहरे शतक थे।

लंकाशायर के विरुद्ध अपराजित 242 और ससेक्स के विरुद्ध 205 रन बनाए। 45 पारियों में, 10 बार अपराजित रहकर, 75·14 रन प्रतिपारी के औसत से 2630 रन बनाए थे। इस टैस्ट श्रृंखला में भारत की ओर से केवल वे ही शतक बना पाए थे : ओवल में तीसरे टैस्ट में 128 रन।

उन्होंने अस्वस्थता के कारण 1947–48 में आस्ट्रेलिया के विरुद्ध भारत का कप्तान बनने से इनकार कर दिया था।

1951–52 में वे इंग्लैंड के विरुद्ध पहले दिल्ली टैस्ट में केवल एक पारी खेले थे और उसमें उन्होंने 154 रन बनाए थे।

उन्होंने 1937–38 में लार्ड टेनीसन की टीम के विरुद्ध, 1945 में आस्ट्रेलिया की सेना की टीम के विरुद्ध और कॉमनवैल्थ टीमों के विरुद्ध अनौपचारिक टैस्ट मैचों में भारत का नेतृत्व किया था। इन मैचों में उन्होंने बहुत शानदार बल्लेबाजी दिखाई थी। इनमें कलकत्ता में आस्ट्रेलिया की सेना की टीम के विरुद्ध अपराजित 155 रन और मद्रास में कॉमनवैल्थ द्वितीय के विरुद्ध 107 रन विशेष उल्लेखनीय हैं।

बम्बई चतुष्कोणीय और पंचकोणीय प्रतियोगिताओं में वे हिन्दू क्लब की ओर से खेलते थे। उनमें भी उन्होंने अनेक शानदार पारियां खेली थी; जैसे, 1936 में यूरोपीय क्लब के विरुद्ध 103; 1938 में यूरोपीय क्लब के विरुद्ध अपराजित 107; 1939 में फिर यूरोपीय क्लब के विरुद्ध 192; 1941 में मुस्लिम क्लब के विरुद्ध अपराजित 243 और पारसी क्लब के विरुद्ध 221; 1943 में 'शेष' के विरुद्ध अपराजित 250 और 1944 में पारसी क्लब के विरुद्ध अपराजित 221 रन।

वे बम्बई के बहुत बड़े व्यापारी है। रेडियो पर खेल का आँखों देखा हाल सुनाते हुए अच्छी जानकारी देने वाले कुशल टीकाकार और खेल-कूद विषय के लेखक हैं। वे अखिल भारतीय खेलकूद परिषद के उपाध्यक्ष भी हैं।

माँजरेकर, विजय लक्ष्मण

श्री माँजरेकर तकनीकी दृष्टि से भारत के एक सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज हैं। वे दाहिने हाथ से खेलते है। वे सुरक्षात्मक ढंग से बल्लेबाजी करते हुए भी गेंद बहुत पीटते हैं। वे भारत के दूसरे बल्लेबाज हैं जिन्होंने टैस्ट क्रिकेट में 3000 से ऊपर रन बनाए हैं। अपने 55 टैस्ट मैचों में उन्होंने 39.13 रन के औसत से कुल 3209 रन बनाए हैं। इनमे 7 शतक भी शामिल है।

उनका जन्म बम्बई में 26 सितम्बर 1931 को हुआ था। उन्होंने छात्रावस्था में ही क्रिकेट के अच्छे खिलाड़ी के रूप में अपना नाम कमा लिया था। उन्होंने अखिल भारतीय स्कूल क्रिकेट प्रतियोगिता में बम्बई स्कूलों की टीम का नेतृत्व किया था और छात्रावस्था में ही रणजी ट्रॉफी में खेलना शुरू

कर दिया था। उन्होंने रणजी ट्रॉफी में अपना सबसे पहला मैच 1949-50 में बड़ौदा के विरुद्ध बम्बई की ओर से खेला था। इसी वर्ष उन्होंने कॉमनवेल्थ प्रथम के विरुद्ध बम्बई की ओर से खेलते हुए 69 रन और सम्मिलित स्कूल टीम की ओर से खेलते हुए 91 रन बनाए थे।

रणजी ट्रॉफी में वे विभिन्न पाँच संघों की ओर से खेले हैं : बम्बई की ओर से 1949-50 से 1952-53 तक और फिर 1955-56 में; बंगाल की ओर से 1953-54 में, आन्ध्र की ओर से 1956-57 में, उत्तर प्रदेश की ओर से 1957-58 में और राजस्थान की ओर से 1958-59 से खेल रहे है। रणजी ट्रॉफी में उन्होने दश शतक बनाए हैं और कुल मिलाकर 2500 से ऊपर रन लिए हैं। इस प्रतियोगिता में उनकी सर्वोच्च रन संख्या 186, मध्यप्रदेश के विरुद्ध 1957-58 में उत्तरप्रदेश की ओर से खेलते हुए बनी थी।

उन्होने टैस्ट मैचों में सर्वप्रथम 1951-52 में खेलना शुरू किया था और वे सबसे पहले कलकत्ता में इंग्लैंड के विरुद्ध खेले थे जिसमें उन्होंने 48 रन बनाए थे। तब से लेकर उन्होंने कुल 55 टैस्ट खेले हैं : इंग्लैंड के विरुद्ध 17; वेस्टइण्डीज के विरुद्ध 13; पाकिस्तान के विरुद्ध 13; आस्ट्रेलिया के विरुद्ध 6; और न्यूजीलैंड के विरुद्ध 6, टैस्ट मैचो में उन्होंने तीन बार 100 से ऊपर रन बनाए है : इंग्लैंड के विरुद्ध: 1952 में, लीड्स में 133; 1961-62 में नई दिल्ली में अपराजित 189 और 1964 में मद्रास में 108; वेस्टइण्डीज के विरुद्ध : 1953 में जमैका में 118; न्यूजीलैंड के विरुद्ध : 1955 में हैदराबाद में 118 और नई दिल्ली में 177 तथा 1965 मे मद्रास मे अपराजित 102 रन। इंग्लैंड के विरुद्ध 1961-62 की टैस्ट शृंखला में उन्होने कुल मिलाकर 586 रन (औसत 83·11) बनाए थे; एक टैस्ट शृंखला मे कोई भी भारतीय बल्लेबाज अब तक इतने रन नहीं बना सका है।

उन्होंने कॉमनवेल्थ द्वितीय के विरुद्ध एक और सिलवर जुबली ओवरसीज टीम के विरुद्ध चार अनौपचारिक टैस्ट खेले हैं।

दलीप ट्रॉफी की अखिल भारतीय अन्तरक्षेत्रीय प्रतियोगिता से वे उसके प्रारम्भ से मध्य क्षेत्र की ओर से ही खेल रहे हैं और इस प्रतियोगिता में उन्होंने दो शतक बनाए हैं।

वे उन भारतीय टीमों के सदस्य रह चुके हैं जो 1952 और 1959 मे इंग्लैंड; 1952-53 और 1962 में वेस्टइण्डीज, 1954-55 मे पाकिस्तान और 1956 मे श्रीलंका खेलने गई थी। 1952 में इंग्लैंड के दौरे मे उन्होंने 1000 रन पूरे कर लिए थे परन्तु 1954 के इंग्लैंड के दौरे में घुटने की चोट के कारण वे केवल 14 पारियाँ ही खेल सके और उनमें उन्होंने प्रतिपारी 83·71 के औसत से कुल 586 रन बनाए थे। 1959 में उन्होंने कॉमनवेल्थ

विश्वविद्यालय के विरुद्ध अपराजित 204 रन बनाए थे जो प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में उनके अधिक से अधिक रन हैं।

वे 1956-57 और 58 में केन्द्रीय लंकाशायर लीग में काशल्टन मूर की ओर से एक व्यावसायिक खिलाड़ी के रूप में भी खेले थे। भारतीय क्रिकेट नियन्त्रण बोर्ड ने उन्हें एक व्यावसायिक खिलाड़ी के रूप में पंजीकृत (रजिस्टर) कर रखा है।

मॉंकड, वीनू मुलवन्तराय

श्री मांकड का नाम भारत के ही नहीं, अपितु समस्त विश्व के सर्वोन्मुख प्रतिभावान खिलाड़ियों में लिया जाता है। वे पारी प्रारम्भ करने वाले दाहिने हाथ के बल्लेबाज और बाईं भुजा से धीमी गेंदबाजी करने वाले एक ऐसे उत्कृष्ट खिलाड़ी है जिन्हें अनेक क्षेत्रों में 'प्रथम' रहने का गौरव प्राप्त है। वे पहले भारतीय खिलाड़ी हैं जो विदेशी दौरे में दोहरा शतक बना सके हैं; अब तक दूसरा कोई खिलाड़ी यह गौरव प्राप्त नहीं कर सका। 1946 में इंग्लैंड के दौरे में उन्होंने 1120 रन बनाए थे और 129 विकेट लिए थे। वे ही एक ऐसे भारतीय खिलाड़ी हैं जिन्होंने टैस्ट मैचों मे दो दोहरे शतक बनाए हैं : न्यूजीलैंड के विरुद्ध 1955-56 में बम्बई में दूसरे टैस्ट में 223 और मद्रास में पांचवें टैस्ट में 231 रन। उन्होने टैस्टों में शीघ्रातिशीघ्र 1000 रन बनाने और 100 विकेट गिराने का कीर्तिमान स्थापित किया है। 1962 में उन्होंने केवल 23 टैस्टों में ही यह गौरव प्राप्त कर लिया था। श्री पंकज रॉय के साथ 1955-56 में न्यूजीलैंड के विरुद्ध मद्रास में प्रथम विकेट को साझेदारी में खेलते हुए 413 रन बनाकर, उन्होने विश्व में प्रथम विकेट की साझेदारी का कीर्तिमान स्थापित किया है। वे ही प्रथम भारतीय खिलाड़ी हैं जिन्होंने टैस्ट क्रिकेट में 100 विकेट गिराए हैं। अभी तक कोई भी भारतीय उनके विकेट यानी 162 से अधिक विकेट नहीं गिरा सका है।

उनका जन्म 12 अप्रैल 1957 को हुआ था। 1937-38 में लार्ड टेनीसन की टीम के विरुद्ध खेलते हुए वे पहली बार चमके थे। मद्रास में आयोजित चौथे अनौपचारिक टैस्ट में उन्होने भारत की ओर से सबसे अधिक रन बनाए थे और सबसे अधिक विकेट लिए थे तथा उनकी रन संख्या अपराजित 113 रही थी।

उन्होने कुल 44 टैस्ट मैच खेले हैं : इंग्लैंड के विरुद्ध 11, आस्ट्रेलिया के विरुद्ध 8, वेस्टइण्डीज के विरुद्ध 12, पाकिस्तान के विरुद्ध 9, और न्यूजीलैंड के विरुद्ध 4 मैच। भारतीय टीम के सदस्य के रूप में वे 1945 में श्रीलंका, 1946 में इंग्लैंड, 1947-48 में आस्ट्रेलिया, 1952-53 (उप कप्तान) वेस्टइण्डीज और 1954-55 (कप्तान) में पाकिस्तान गए थे। वे 1958-59 में वेस्ट-इण्डीज के विरुद्ध मद्रास में चौथे टैस्ट में भारत के कप्तान थे। कुल 72 टैस्ट

पारियों में, 5 वार अपराजित रहकर, उन्होंने 31·47 रन के औसत से कुल मिलाकर 2109 रन बनाए हैं। न्यूजीलैंड के विरुद्ध अपने दो दोहरे शतकों के अतिरिक्त उन्होने मेलवोर्न के तीसरे टैस्ट में 116 रन बनाए थे और पांचवें टैस्ट में 1947–48 में आस्ट्रेलिया के विरुद्ध मेलवोर्न में ही 111 रन और 1952 मे लार्ड्स के मैदान में इंग्लैंड के विरुद्ध 184 रन बनाए थे।

उन्होने 32·31 रन प्रति विकेट के औसत से 5235 रन देकर 162 टैस्ट विकेट लिए है। उन्होंने अनेक वार बहुत शानदार गेंदबाजी दिखाई है; जैसे 1951-52 मे इंग्लैंड के विरुद्ध मद्रास मे पांचवें टैस्ट में 55 रन देकर 8 विकेट और 53 रन देकर 4 विकेट और 1952 में पाकिस्तान के विरुद्ध दिल्ली मे पहले टैस्ट में 52 रन देकर 8 विकेट और 59 रन देकर 5 विकेट लिए थे। उनका सबसे बढ़िया सर्वोन्मुख खेल 1952 मे इंग्लैंड के विरुद्ध दूसरे टैस्ट में रहा था जबकि उन्होने 72 और 184 रन बनाए थे और 196 रन देकर 8 विकेट लिए थे।

वे 16 अनौपचारिक टैस्ट भी खेले हैं: लार्ड टेनीसन की टीम के विरुद्ध 4; आस्ट्रेलिया की सेना की टीम के विरुद्ध 2; कॉमनवेल्थ प्रथम के विरुद्ध 4; कॉमनवेल्थ द्वितीय के विरुद्ध 5; और सिलवर जुबली ओवरसीज टीम के विरुद्ध एक, जिसमें उन्होने 154 रन बनाये थे।

बम्बई की पचकोणीय और चतुष्कोणीय प्रतियोगिताओं मे वे हिंदू क्लब की ओर से खेलते थे और उन्होने 1939 मे यूरोपियों के विरुद्ध 133 तथा 1944 में पारसियों के विरुद्ध 128 रन बनाए थे।

रणजी ट्रॉफी में उन्होने प्रथम प्रवेश 1935-36 में किया था जब वे बम्बई के विरुद्ध पश्चिम भारत की ओर से खेले थे। वे 1936-37 से 1941-1942 तक नवानगर की ओर से; 1943-44 में महाराष्ट्र की ओर से; 1944-45 से 46-47 तक और 50-51 में (कप्तान) गुजरात की ओर से; 48-49 में बगाल की ओर से; 51-52, 53-54 और 55-56 मे बम्बई की ओर से तथा 56-57 से 61-62 तक राजस्थान की ओर से खेले थे और 59-60 और 60-61 में राजस्थान की टीम का नेतृत्व किया था। कुल 87 पारियों मे, दो वार अपराजित रहकर, प्रतिपारी 36·74 रन के औसत से उन्होने कुल 3123 रन बनाए हैं। उन्होने 1957-58 मे विदर्भ के विरुद्ध एक दोहरा शतक (221) बनाया था और इसके अलावा 8 शतक और बनाए हैं। गेंदबाजी मे उन्होने 21·85 के औसत से 3936 रन देकर 180 विकेट लिए है। उनकी सर्वोत्तम गेंदवाजी 1958-59 में विदर्भ के विरुद्ध रही थी जब कि उन्होने कुल 27 रन देकर 6 विकेट गिरा दिए थे।

एक व्यावसायिक खिलाड़ी के रूप में वे केन्द्रीय लंकाशायर लीग की 1949 से 1951 तक काशलटन मूर की ओर से, लंकाशायर लीग में 1952 से 1955 तक हसलिंग्डन की ओर से तथा बोल्टन लीग में 1960 और 1961 में टोंग की ओर से खेले थे।

माका ई. एस.

विकेट-रक्षक और पारी प्रारम्भ करने वाले बल्लेबाज श्री माका का जन्म 5 मार्च 1922 को हुआ था। वे रणजी ट्रॉफी में गुजरात की ओर से खेलते थे। वे एक ऐसे विकेट रक्षक थे जिन्होंने अपने खेल के बल पर बड़े-बड़े क्रिकेट मैचों में अपना स्थान बनाया था। उन्होंने 1953 में सौराष्ट्र के विरुद्ध खेलते हुए 6 विपक्षी खिलाड़ियों को आउट कर दिया था जो उनका सर्वश्रेष्ठ खेल रहा।

वे 1953 में भारतीय टीम के साथ वेस्टइण्डीज खेलने गए थे और वहाँ उन्होंने एक टैस्ट मैच खेला था। इससे पहले 1952 में उन्होंने पाकिस्तान के विरुद्ध एक टैस्ट मैच खेला था। 1945 में उन्होंने आस्ट्रेलिया की सेना की टीम के विरुद्ध भी एक अनौपचारिक टैस्ट खेला था।

मिल्खासिंह, ए. जी.

सुप्रसिद्ध क्रिकेट खिलाड़ी श्री ए० जी० रामसिंह के द्वितीय सुपुत्र श्री मिल्खासिंह का जन्म सन् 1941 के अन्तिम दिन मद्रास में हुआ था। अपने पिताजी की देख-रेख में लालित-पालित और प्रशिक्षित श्री मिल्खासिंह ने छोटी आयु में ही अपनी प्रतिभा का परिचय दे दिया था। 1958-59 में ये पहली बार रणजी ट्रॉफी में उतरे और उसमें उन्होंने केरल के विरुद्ध 63 और 31 रन बनाए। दिलीप ट्रॉफी में तो वे सबसे पहले खिलाड़ी थे जिन्होंने 1961-62 में उत्तर क्षेत्र के विरुद्ध दक्षिण क्षेत्र की ओर से खेलते हुए एक शतक (151 रन) बनाया था। 1958-59 के बाद जो भी विदेशी टीमें भारत में आईं उनके विरुद्ध वे भारतीय विश्वविद्यालय टीम में खेले। 1960 में जो 'इण्डियन स्टारलेट' टीम पाकिस्तान गई थी उसमें वे भी गए थे और पाँच मैचों में से तीन में उन्होंने शतक बनाये थे। इससे पहले भी अखिल भारतीय स्कूल क्रिकेट प्रतियोगिता में मद्रास और दक्षिण क्षेत्र की ओर से खेलते हुए उन्होंने बहुत शानदार खेल दिखाया था।

उन्होंने कुल तीन टैस्ट मैच खेले हैं: 1959-60 में आस्ट्रेलिया के विरुद्ध (1), 1960-61 में पाकिस्तान के विरुद्ध (1) और 1961-62 में इंग्लैंड के विरुद्ध (1), परन्तु 6 पारियों में वे केवल 92 रन बना सके हैं।

वे मद्रास विश्वविद्यालय के छात्र हैं।

मुद्दैया, वी. एम.

दाहिनी भुजा से ओफ ब्रेक गेंद फेंकने वाले गेंदबाज और दाहिने हाथ के बल्लेबाज श्री मुद्दैया ने प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में 1949-50 में खेलना प्रारम्भ किया और अपने प्रथम प्रवेश में ही, पश्चिम पंजाब के विरुद्ध सेना की ओर से खेलते हुए 54 रन देकर 8 विकेट और 53 रन देकर 4 विकेट गिराकर क्रिकेट-जगत् में सनसनी पैदा कर दी। प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में यही खेल आज तक उनका सर्वोत्तम खेल रहा है हालांकि वे रणजी ट्रॉफी में 100 से ऊपर विकेट ले चुके हैं।

उनका जन्म बंगलौर में 8 जून 1929 को हुआ था, परन्तु अपने राज्य की टीम में वे बहुत बाद में जाकर 1951-52 में खेले। वे लगातार सेना की टीम में खेलते आ रहे हैं और 1960-61 से उसके कप्तान हैं। दलीप ट्रॉफी में वे उत्तर क्षेत्र की ओर से भी खेले हैं।

उन्होंने दो टैस्ट मैच खेले हैं: 1959-60 में आस्ट्रेलिया के विरुद्ध और 1960-61 में पाकिस्तान के विरुद्ध। 1959 में जो भारतीय टीम इंग्लैंड खेलने गई थी उसमें वे भी थे और वहां उन्होंने 29.46 के औसत से रन देकर 30 विकेट लिये थे। प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में उनकी सर्वोच्च संख्या 67 दिल्ली के विरुद्ध 1961-62 में रही है।

वे भारतीय वायु सेना में एक अधिकारी हैं।

मुश्ताकअली, सैयद

दाहिने हाथ के बल्लेबाज और बाईं भुजा के धीमे गेंदबाज श्री मुश्ताक अली अपने शानदार, जोशीले और नए ढंग के खेल के कारण भारत के बहुत लोकप्रिय खिलाड़ी रहे हैं। उन्होंने संभवतः बहुत अधिक रन न बनाए हों परन्तु उन्होंने जिस तरीके से रन बनाए है वह वास्तव में दर्शकों के लिए बहुत आनन्ददायक रहा है।

उनका जन्म 17 दिसम्बर 1914 को हुआ था। वे सर्वप्रथम 1933 में एम० सी० सी० के विरुद्ध वायसराय एकादश में खेले थे। तब से वे लगातार लगभग 25 साल से प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में भाग लेते रहे। उन्होंने 11 टैस्ट मैच खेले: 8 इंग्लैंड के विरुद्ध और 1948 में 3 वेस्टइण्डीज के विरुद्ध। विदेश में जाकर शतक बनाने वाले वे पहले भारतीय हैं; उन्होंने 1936 में इंग्लैंड के विरुद्ध मैंचेस्टर में 112 रन बनाए थे। उन्होंने टैस्ट में दूसरा शतक (106) वेस्टइण्डीज के विरुद्ध कलकत्ता में बनाया था। अपनी 20 टैस्ट पारियों में, एक बार अपराजित रहकर उन्होंने 612 रन बनाए हैं। 1936 और 1946 मे वे भारतीय टीम

के सदस्य के रूप में इंग्लैंड गए थे। अपने पहले ही दौरे में उन्होंने एक हजार रन पूरे कर लिए थे।

वे 16 अनौपचारिक टैस्टों में खेल चुके हैं। लार्ड टेनीसन की टीम के विरुद्ध कलकत्ता के तीसरे टैस्ट में उन्होंने 101 रन और कॉमनवेल्थ प्रथम के विरुद्ध कानपुर के चौथे टैस्ट में 129 रन बनाए थे।

बंबई चतुष्कोणीय और पंचकोणीय प्रतियोगिता में मुस्लिम क्लब की ओर से खेलते हुए, उन्होंने 1937 में यूरोपीय क्लब के विरुद्ध 135, 1938 में यूरोपीय क्लब के विरुद्ध 157 और 1940 में 'शेष' के विरुद्ध 110 रन बनाए थे। 1944 में उन्होंने अपनी टीम का नेतृत्व किया था।

रणजी ट्रॉफी प्रतियोगिता में वे 1934-35 से लेकर 1957-58 तक खेले थे। 1940-41 में उन्होंने गुजरात का नेतृत्व किया और 1956-57 मे वे उत्तर प्रदेश की ओर से खेले। शेष सभी वर्षों में वे मध्य-प्रदेश की ओर से खेले थे जो पहले मध्य भारत और बाद में होल्कर के नाम से प्रसिद्ध था। वे मध्य-प्रदेश के कप्तान भी रहे हैं। रणजी ट्रॉफी में 5000 रन बनाने वाले ये दूसरे बल्लेबाज हैं। अपनी 108 पारियों में, 6 बार अपराजित रहकर, 19.14 रन प्रति पारी के औसत से उन्होंने कुल 5013 रन बनाए हैं। इस रन संख्या में 17 शतक भी शामिल हैं। उनकी सर्वोच्च रन संख्या 233 रही है जो उन्होंने 1947 में होल्कर की ओर से खेलते हुए उत्तर प्रदेश के विरुद्ध बनाई थी। 1943-44 में रणजी ट्रॉफी के फाइनल मैच मे उन्होंने बंबई के विरुद्ध दोनों पारियों में शतक (109 और 130 रन) बनाए थे। 1950 में उन्होने लगातार चार पारियो में शतक बनाए थे: उत्तर प्रदेश के विरुद्ध 125; बंगाल के विरुद्ध अपराजित 100; हैदराबाद के विरुद्ध 100 और गुजरात के विरुद्ध 187 रन। उन्होने रणजी ट्रॉफी में 63 कैच लिए हैं। अब तक इतने कैच कोई दूसरा खिलाड़ी नही ले सका है।

उन्होंने प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में 37.11 रन प्रति पारी के औसत से कुल 10884 रन बनाए हैं और 88 विकेट (औसत 36.14) लिए हैं जिनमे रणजी ट्रॉफी के 54 विकेट (औसत 29.87) भी शामिल हैं। उनकी सर्वोत्तम गेंदबाजी 1939-40 में उत्तर प्रदेश के विरुद्ध रही जिसमें उन्होंने होल्कर की ओर से खेलते हुए 108 रन देकर 7 विकेट लिए थे।

श्री मुश्ताक अली को राष्ट्रपति द्वारा 'पद्मश्री' से सम्मानित किया जा चुका है। वे महाराजा होल्कर के निजी कर्मचारियों में से हैं।

मेहरा, विजय एल०

पारी प्रारम्भ करने वाले सशक्त बल्लेबाज श्री मेहरा को सबसे छोटी आयु में भारत की ओर से खेलने का गौरव प्राप्त है। उनका जन्म 12 मार्च

1938 को अमृतसर में हुआ था। जब वे केवल 17 वर्ष और 265 दिन के थे तभी उनको 1955-56 में न्यूजीलैंड के विरुद्ध पहला टैस्ट खेलने का अवसर मिला; और इससे भी पहले 1953-54 में जब वे मुश्किल से 15 वर्ष के ही हुए होंगे कि उनको सिलवर जुबली ओवरसीज टीम के विरुद्ध उत्तरी क्षेत्र की ओर से खेलाया गया। उसी वर्ष उन्होंने रणजी ट्रॉफी में भी सर्वप्रथम प्रवेश किया और सेना के विरुद्ध पूर्वी पंजाब की ओर से खेलते हुए उन्होंने 53 रन बनाए। वे 1953-54 से 1957-58 तक पूर्वी पजाब की ओर से, 1958-59 से 1962-63 तक रेलवे की ओर से और इसके बाद दिल्ली की ओर से खेले। दलीप ट्रॉफी प्रतियोगिता के पहले दो वर्षों में उन्होंने उत्तरी क्षेत्र की टीम का नेतृत्व किया। प्रथम श्रेणी के क्रिकेट मे उनकी सर्वोच्च रन संख्या अपराजित 167 रही जो उन्होंने 1963-64 में सेना के विरुद्ध दिल्ली की ओर से खेलते हुए बनाई थी। यही उनके लिए रणजी ट्रॉफी में सर्वोत्तम वर्ष रहा जबकि उन्होंने 60.10 रन प्रति पारी के औसत से कुल 601 रन बनाए थे। रणजी ट्रॉफी मे वे अब तक 2000 से ऊपर रन बना चुके हैं।

अब तक उन्होने 6 टैस्ट खेले हैं: 1955-56 मे न्यूजीलैंड के विरुद्ध (2), 1961-62 में इंग्लैंड के विरुद्ध (1); और 1962 में वेस्टइण्डीज के विरुद्ध (3); 1962 मे जो भारतीय टीम वेस्टइण्डीज खेलने गई थी उसके श्री मेहरा सदस्य थे। वे 1960 में इंडियन स्टारलेट्स के साथ पाकिस्तान भी गए थे और उन्होने वहां पाकिस्तान ईग्लेट्स के विरुद्ध 102 रन बनाए थे।

1953-54 में उन्होने अखिल भारतीय स्कूल क्रिकेट प्रतियोगिता में पंजाब स्कूलों का और उत्तरी क्षेत्र की स्कूलो (कप्तान) का प्रतिनिधित्व किया था। 1954-55 से 57-58 तक वे पंजाब विश्वविद्यालय की ओर से खेले थे और अन्तिम दो वर्षों मे वे अपनी टीम के कप्तान भी रहे।

वे उत्तर रेलवे के कर्मचारी हैं।

मेहरोमजी, के. आर.

श्री मेहरोमजी 1936 में जो भारतीय टीम इंग्लैंड खेलने गई थी उसके साथ गए थे और वे मैंचेस्टर में दूसरे टैस्ट में खेले थे। वे पारी प्रारम्भ करने वाले दाहिने हाथ के बल्लेबाज और चुस्त विकेट रक्षक थे। उनका जन्म 9 अगस्त 1911 को हुआ था। रणजी ट्रॉफी में वे पश्चिम भारत की ओर से खेलते थे। विकेट-रक्षक के रूप में उन्होंने अपना सर्वोत्तम खेल 1934-35 में सिंध के विरुद्ध दिखलाया था जिसमें उन्होंने 6 बल्लेबाज (5 कैच, 1 स्टम्प) परास्त किए थे। इसी मैच में पहली पारी में उन्होंने अपराजित रहकर 25 रन बनाए थे।

बंबई चतुष्कोणीय प्रतियोगिता मे वे पारसी क्लब की ओर से खेलते थे। 1935 में वे महाराजा पटियाला की आस्ट्रेलियाई टीम के विरुद्ध भी खेले थे।

मोदी, रूसी शेरियार

सुरक्षात्मक ढंग से खेलते हुए चौके और छक्के जमाने वाले दाहिने हाथ के शानदार बल्लेबाज श्री मोदी पहले खिलाड़ी हैं जिन्होंने रणजी ट्रॉफी के एक खेल-वर्ष में एक हजार रन बनाए थे : उन्होंने 1944 में, 7 पारियों में दो बार अपराजित रहकर, 1008 रन लिए थे। वे दाहिनी भुजा से मध्यम गति की भीतर की ओर झूलती हुई गेंद फेंकने में बहुत कुशल है। उन्होंने लगातार 5 मैचों में 99 से ऊपर रन बनाए हैं।

उनका जन्म सूरत में 11 नवम्बर 1924 को हुआ था। प्रथम श्रेणी के मैचो में उन्होंने 1942-43 मे खेलना प्रारम्भ किया जबकि उन्होने बंबई पंचकोणीय प्रतियोगिता मे पारसी क्लब की ओर से यूरोपीय क्लब के विरुद्ध खेलते हुए 144 रन बनाए थे। इसी टीम के विरुद्ध उन्होने 1944 में 215 रन बनाए थे।

रणजी ट्रॉफी में उन्होंने 1943-44 में खेलना प्रारम्भ किया था। पहले ही वर्ष बंबई की ओर से खेलते हुए उन्होने महाराष्ट्र के विरुद्ध 168 और पश्चिम भारत के विरुद्ध 128 रन बनाए थे। उन्होंने 1944-45 में सिंध के विरुद्ध 160, पश्चिम भारत के विरुद्ध 210, बड़ौदा के विरुद्ध अपराजित 245 और अपराजित 31, उत्तर भारत के विरुद्ध 113 और होल्कर के विरुद्ध 98 और 151 रन बनाए थे। इस प्रतियोगिता मे उन्होंने अपनी 37 पारियों में, 4 बार अपराजित रहकर 81.69 रन प्रति पारी के औसत से कुल 2696 रन बनाए हैं। उनके रनों का औसत केवल श्री मर्चेन्ट को छोडकर बाकी सब बल्लेबाजों से अधिक है। उनकी सर्वोत्तम गेंदबाजी 1946-47 में नवानगर के विरुद्ध रही जबकि उन्होंने केवल 25 रन देकर 5 विकेट गिरा दिए थे।

वे भारतीय टीम के साथ 1945 में श्रीलंका गए और 1946 में इंग्लैंड, जहाँ लार्ड्स के मैदान में पहली बार उतरते ही उन्होंने अपराजित 57 रन बनाए थे। उन्होंने दस टैस्ट मैच खेले हैं : 1946 में इंग्लैंड के विरुद्ध (3); 1948-49 में वेस्टइण्डीज के विरुद्ध (5); 1951-52 में इंग्लैंड के विरुद्ध (1), और 1952 में पाकिस्तान के विरुद्ध (1)। अपनी 17 टैस्ट पारियों में, एक बार अपराजित रहकर, उन्होने 46 रन प्रतिपारी के औसत से कुल 736 रन बनाए हैं। उन्होने केवल एक शतक बनाया है जबकि उन्होने वेस्टइण्डीज के विरुद्ध बंबई में दूसरे टैस्ट मे खेलते हुए 112 रन बनाए थे।

1947-48 में वे आस्ट्रेलिया के दौरे के लिए चुन लिए गए थे परन्तु वहाँ जा न सके।

उन्होंने नौ अनौपचारिक टैस्ट खेले हैं: 1945 में आस्ट्रेलिया की सेना की टीम के विरुद्ध (3), 1949-50 में कॉमनवेल्थ प्रथम के विरुद्ध (5), और 1950-51 में कामनवेल्थ द्वितीय के विरुद्ध (1)। आस्ट्रेलिया की सेना की टीम के विरुद्ध मद्रास में खेले गए तीसरे टैस्ट में उन्होंने 203 रन बनाए थे। इससे पहले जब वे विदेशी भ्रमणकारी टीम (आस्ट्रेलिया की सेना की टीम) के विरुद्ध सबसे पहली बार बम्बई में मैदान में उतरे तो उन्होंने 168 रन बनाए थे। प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में उनकी कुल रन संख्या 6827 है और उनका प्रतिपारी औसत 55·95 रन। इसमें उनके 4 दोहरे शतक और 15 शतक शामिल हैं। उन्होंने 1941-42 से 46-47 तक बम्बई विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया था। उसमें अन्तिम वर्ष वे उस टीम के कप्तान रहे थे। वे बम्बई विश्वविद्यालय में लान टेनिस और टेबल टेनिस के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी रहे हैं। वे ए०सी०सी० लिमिटेड कलकत्ता में एक अधिकारी हैं।

रंगाचारी, सी० आर०

श्री रंगाचारी मध्यम तेज गेंद फेंकने वाले दाहिनी भुजा के एक ऐसे गेंदबाज रहे है जो गेंद को दोनो ओर घुमा सकते थे। वे उस भारतीय टीम के सदस्य थे जो 1947 में आस्ट्रेलिया के दौरे पर गई थी। उन्होंने दो टैस्ट मैच खेले थे। एडीलेड के चौथे टैस्ट मे जहाँ आस्ट्रेलिया ने 674 रन इकट्ठे कर लिए थे, श्री रंगाचारी ने 141 रन देकर 4 विकेट लिए थे। उन्होने 1948 मे वेस्टइण्डोज के विरुद्ध दो टैस्ट मैच खेले थे। दिल्ली में खेले गए पहले टैस्ट मे वेस्टइण्डीज ने 631 रन पीट लिए थे। विपक्षियो के ऐसे सबल आक्रमण के विरुद्ध श्री रंगाचारी ने 107 रन देकर 5 विकेट लिए थे।

उन्होंने आस्ट्रेलियाई सेना एकादश और कॉमनवेल्थ प्रथम के विरुद्ध एक-एक अनौपचारिक टैस्ट खेला था।

उनका जन्म 14 अप्रैल 1916 को हुआ था। उन्होंने प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में 1938-39 में खेलना शुरू किया था जबकि उन्होंने मद्रास की ओर से हैदराबाद के विरुद्ध खेलते हुए, 26 रन देकर 3 विकेट और 43 रन देकर 2 विकेट लिए थे। उन्होंने रणजी ट्रॉफी मे अनेक बार उत्कृष्ट खेल दिखाया है; जैसे, 1940-41 में उत्तर प्रदेश के विरुद्ध 75 रन पर 5 विकेट; 1941-42 में मैसूर के विरुद्ध 36 रन पर 5 विकेट; 1943-44 में हैदराबाद के विरुद्ध 64 रन पर 5 विकेट; 1944-45 में हैदराबाद के

विरुद्ध 46 रन पर 5 विकेट; 1947-48 में मैसूर के विरुद्ध 34 रन पर 7 विकेट और 1949-50 में हैदराबाद के विरुद्ध 44 रन पर 6 विकेट।

रणजी ट्रॉफी में उन्होंने 21·26 रन प्रति विकेट के औसत से 2263 रन देकर 104 विकेट गिराए हैं।

रंजने, वसन्त बी०

श्री रंजने का जन्म जुलाई 1937 में पूना में हुआ था। उन्होंने 1956-57 में रणजी ट्रॉफी के अपने पहले ही खेल में महाराष्ट्र की ओर से सौराष्ट्र के विरुद्ध खेलते हुए एक तिकड़ी (हेटट्रिक) बनाकर सनसनी पैदा कर दी थी। इसी मैच में उन्होंने केवल 35 रन देकर सौराष्ट्र के 9 बल्लेबाजों को परास्त कर दिया था। (पूरे मैच में 71 रन देकर 13 विकेट गिराए थे)। वे एक दाहिनी भुजा के मध्यम तेज गेंदबाज हैं जो गेंद को दोनों ओर घुमा सकते हैं। वे दाहिने हाथ से बल्लेबाजी करते हैं।

अभी तक वे सात टैस्टों में खेले हैं : 2 वेस्टइण्डीज, 4 इंग्लैंड और 1 आस्ट्रेलिया के विरुद्ध। उन्होंने 649 रन देकर 19 टैस्ट विकेट गिराए हैं। उनका सर्वोत्तम खेल 1962 में वेस्टइण्डीज के विरुद्ध रहा जब उन्होंने 72 रन देकर 4 विकेट लिए थे। 1956 के बाद जितनी भी विदेशी टीमें भारत आई हैं वे उन सबके विरुद्ध खेले हैं।

वे गोलाबारूद फैक्ट्री, पूना में काम करते हैं।

राजेन्द्रनाथ

दाहिने हाथ के बल्लेबाज और विकेट-रक्षक, श्री राजेन्द्रनाथ का जन्म 7 जनवरी 1928 को हुआ था। उन्होंने 1950-51में कॉमनवेल्थ द्वितीय के विरुद्ध तीन अनौपचारिक टैस्टों समेत 6 मैच खेले थे। बंबई गवर्नर एकादश की ओर से खेलते हुए उन्होंने 57 रन बनाए थे। उसी वर्ष उन्होने बिहार की ओर से उड़ीसा के विरुद्ध 136 रन और अगले वर्ष उत्तर प्रदेश के विरुद्ध 76 रन बनाए थे।

वे 1952 में पाकिस्तान के विरुद्ध बम्बई में तीसरे टैस्ट में खेले थे जिसमें भारत 10 विकेट से विजयी हुआ था। उन्हें बल्लेबाजी करने का मौका नही मिला परन्तु उन्होंने एक कैच लिया और तीन बल्लेबाजों को स्टम्प आउट किया था।

राजेन्द्रपाल

दाहिनी भुजा के मध्यम तेज गेंदबाज और दाहिने हाथ के बल्लेबाज श्री राजेन्द्रपाल का जन्म 18 नवम्बर 1938 को हुआ था। उन्होने प्रथम श्रेणी का मैच सर्व प्रथम 1954-55 में सेना के विरुद्ध दिल्ली की ओर से खेला था। तब से वे रणजी ट्रॉफी में लगातार दिल्ली की ओर से

बल्लेबाजी का श्रीगणेश करते आ रहे हैं और उन्होंने 150 से ऊपर विकेट लिए है। 1959 में इस प्रतियोगिता में उन्होंने 16·57 प्रति विकेट के औसत से 431 रन देकर 26 विकेट, 1960 में 14·33 के औसत से 387 रन देकर 27 विकेट और 1961 में 19·85 के औसत से 556 रन देकर 28 विकेट लिए थे। 1960-61 में वे दिल्ली की टीम के कप्तान रहे थे। उनकी सर्वोत्तम गेंदबाजी 1959-60 में रेलवे के विरुद्ध रही जबकि उन्होने केवल 54 रन देकर 8 विकेट (पूरे मैच में 179 रन देकर 12 विकेट) गिराए थे।

वे 1964 में इंग्लैंड के विरुद्ध बंबई मे दूसरा टैस्ट खेले थे।

अखिल भारतीय स्कूल क्रिकेट प्रतियोगिता में वे 1952-53 में उत्तर क्षेत्र की ओर से और 1954-55 से 1956-57 तक दिल्ली विश्वविद्यालय की ओर से खेले थे और 1959-60 में दिल्ली विश्वविद्यालय की टीम का नेतृत्व किया था। दलीप ट्रॉफी में वे उत्तर क्षेत्र की ओर से खेलते हैं।

वे स्टेट बैंक आफ इण्डिया, दिल्ली में काम करते हैं।

रांगणेकर, के० एम०

बाएँ हाथ के आक्रामक बल्लेबाज श्री रांगणेकर का जन्म 27 जून 1917 को हुआ था और उन्होंने रणजी ट्रॉफी में खेलना 1939 से शुरू किया था। उन्होंने अपने पहले ही खेल में पश्चिम भारत के विरुद्ध महाराष्ट्र की ओर से खेलते हुए शतक बनाया था। वे बारी-बारी से बंबई और होल्कर की ओर से खेला करते थे। 1940 में उन्होंने महाराष्ट्र के विरुद्ध बंबई की ओर से खेलते हुए 202 रन और 1950 में हैदराबाद के विरुद्ध होल्कर की ओर से खेलते हुए 217 रन बनाए थे। रणजी ट्रॉफी की 56 पारियो में, चार बार अपराजित रहकर, उन्होने 8 शतकों सहित 49 रन प्रति पारी के औसत से 2548 रन बनाए हैं।

बंबई पंचकोणीय प्रतियोगिता में वे हिन्दू क्लब की ओर से खेलते थे और उन्होंने 1941 में पारसी क्लब के विरुद्ध 117 रन बनाए थे।

भारतीय टीम के सदस्य के रूप मे वे 1947-48 में आस्ट्रेलिया गए थे और वहीं उन्होंने तीन टैस्ट मैच खेले थे।

वे भारतीय क्रिकेट नियन्त्रण बोर्ड के उप-अध्यक्ष हैं।

रामजी, एल०

अत्यन्त सुगठित शरीर वाले श्री रामजी वस्तुतः एक तेज गेंदबाज और सशक्त बल्लेबाज थे। उनके बम्परों के सामने बड़े-बड़े बल्लेबाज कांप उठते थे। 1926-27 और 1933-34 में वे एम. सी. सी. के विरुद्ध खेले

थे। वे केवल एक ही टैस्ट मैच में खेले थे जो 1933-34 में बम्बई में इंग्लैंड के विरुद्ध खेला गया था परन्तु उनका खेल वैसा नहीं रह सका जैसा कि उनका नाम था। उन्होंने 64 रन दिए पर एक भी विकेट नहीं ले सके। बल्लेबाजी में भी वे केवल 1 और शून्य पर ही धराशायी हो गए।

रणजी ट्रॉफी में भी वे केवल एक वर्ष ही खेले। 1934-35 में पश्चिम भारत की ओर से खेलते हुए उन्होंने सिन्ध के विरुद्ध 26 रन बनाए थे और बम्बई के विरुद्ध खेलते हुए, 29 रन देकर 4 विकेट लिए थे। बम्बई चतुष्कोणीय प्रतियोगिता में वे हिन्दू क्लब की ओर से खेलते थे। उन मैचों में उन्होंने दो बार 10 से अधिक विकेट लिए थे। 1927 में यूरोपीय क्लब के विरुद्ध 133 रन देकर, 13 विकेट और 1929 मे मुस्लिम क्लब के विरुद्ध 81 रन देकर 10 विकेट।

वे श्री एल. अमरसिंह के बड़े भाई थे। उनका देहान्त 20 दिसम्बर 1948 को हो गया।

रामचन्द, गुलाबराय, एस०

श्री रामचन्द को रणजी ट्रॉफी के फाइनल में लगातार चार वर्षों तक शतक बनाने का गौरव प्राप्त है। 1962-63 में रणजी ट्रॉफी फाइनल में राजस्थान के विरुद्ध अपराजित शतक बनाकर उन्होने प्रथम श्रेणी के क्रिकेट से संन्यास ले लिया।

चौड़े कंधों और गठीले शरीर वाले श्री रामचन्द दाहिने हाथ के आक्रामक बल्लेबाज रहे हैं जो गेंद पीटने की ओर अधिक ध्यान रखते थे। वे दाहिनी भुजा से मध्यम गति की तेज़ गेंद फेंकनेवाले गेंदबाज और शानदार क्षेत्र-रक्षक भी रह चुके हैं।

उनका जन्म 26 जुलाई 1927 को कराची में हुआ था। उन्होंने प्रथम श्रेणी के क्रिकेट मे 1945-46 मे खेलना शुरू किया और सर्वप्रथम महाराष्ट्र के विरुद्ध सिन्ध की ओर से खेले। 1948-49 से 1955-56 तक वे बम्बई की ओर से खेले और 1957 से 1662-63 में अपनी खेल-निवृत्ति तक कई मैचों में अपनी टीम के कप्तान रहे। 1956-57 में वे राजस्थान की ओर से खेले थे। उन्होंने रणजी ट्रॉफी में 10 शतक बनाए हैं। उनकी सर्वोत्तम बल्लेबाजी 1950 में महाराष्ट्र के विरुद्ध रही जबकि उन्होंने बम्बई की ओर से खेलते हुए अपराजित 230 रन बनाए थे। रणजी ट्रॉफी की कुल 52 पारियों में 18 बार अपराजित रहकर, प्रति पारी 75·55 रनो के शानदार औसत से, 2569 रन बनाए हैं। उनकी सर्वोत्तम गेंदबाजी 1959 मे सौराष्ट्र के विरुद्ध रही जबकि उन्होंने बम्बई की ओर से खेलते हुए केवल 12 रन देकर 8 बल्लेबाज धराशायी कर दिखाए थे।

उन्होंने 33 टैस्ट खेले हैं : 4 इंग्लैंड, 8 पाकिस्तान, 8 वेस्टइण्डीज, 5 न्यूज़ीलैंड और 8 आस्ट्रेलिया के विरुद्ध। उन्होंने 1959 में आस्ट्रेलिया के विरुद्ध सभी टैस्टों में भारत का नेतृत्व किया था और उन्हीं के नेतृत्व में भारत ने कानपुर के पहले टैस्ट में आस्ट्रेलिया को पछाड़ दिया था। अपनी 53 टैस्ट पारियों में, 5 बार अपराजित रहकर, उन्होंने कुल 1180 रन बनाए हैं जिनमें दो शतक भी शामिल हैं : आस्ट्रेलिया के विरुद्ध 109 और न्यूज़ीलैंड के विरुद्ध अपराजित 106 रन। उन्होंने कुल 1894 रन देकर 41 टैस्ट विकेट लिए हैं। उनकी सर्वोत्तम गेंदबाजी 1954-55 में पाकिस्तान के विरुद्ध रही जबकि उन्होंने केवल 49 रन देकर 6 विकेट लिये थे।

वे भारतीय टीम में 1952 में इंग्लैंड, 1952-53 में वेस्टइण्डीज, 1954-55 में पाकिस्तान और 1956 में श्रीलंका गए थे।

वे कॉमनवेल्थ द्वितीय के विरुद्ध एक अनौपचारिक टैस्ट में खेले थे। वे सिलवर जुबली ओवरसीज टीम के विरुद्ध पांचों अनौपचारिक टैस्टों में खेले थे और उन्होंने दिल्ली के पहले टैस्ट में 119 रन, कलकत्ता के तीसरे टैस्ट में 111 रन और मद्रास के चौथे टैस्ट में 96 रन बनाए थे।

1948-49 और 1949-50 में वे बम्बई विश्वविद्यालय के खिलाड़ी रहे थे। वे लंकाशायर लीग में 1953 में फरनैस की ओर से, 1954 और 1955 में नांटविच की ओर से तथा 1056 में नॉर्थ स्टैफोर्डशायर लीग में क्रीव की ओर से खेले थे।

वे एयर इण्डिया इंटरनेशनल, बंबई में काम करते हैं।

रामस्वामी, सी०

श्री रामस्वामी का जन्म 18 जून 1896 को हुआ था। जब टैस्ट मैच में खेलने का उन्हें सर्व प्रथम मौका मिला तो उनकी आयु चालीस वर्ष की थी। जो भारतीय टीम 1936 में इंग्लैंड खेलने गई थी, उसके वे सदस्य थे। वहां वे दो टैस्ट मैचों में खेले थे : उन्होंने दूसरे टैस्ट में 40 और 60 रन और तीसरे टैस्ट में 29 और अपराजित 41 रन बनाए थे। उनकी टैस्ट पारियों का औसत 56·66 रन रहा है। उन्होंने 1936 के इंग्लैंड के दौरे में बल्लेबाज के रूप में अपनी ख्याति और भी बढ़ाली थी क्योंकि उन्होंने वहां लंकाशायर के विरुद्ध शानदार बल्लेबाजी में अपराजित 127 रन बनाए थे।

1926-27 में एम. सी. सी. के विरुद्ध मद्रास की ओर से खेलते हुए उन्होंने 80 रन और महाराजा पटियाला की आस्ट्रेलियाई टीम के विरुद्ध अपराजित 48 और 82 रन बनाए थे।

वे बाएँ हाथ के बल्लेबाज हैं। वे रणजी ट्रॉफी में 1934–35 से 1941–42 तक बंगाल की ओर से खेले थे। 1939-40 में वे अपनी टीम के कप्तान रहे थे। अपनी 25 पारियों में उन्होने एक बार अपराजित रह कर कुल 401 रन बनाए थे। उनकी सर्वोच्च रन संख्या 63 रही है जो उन्होंने 1935–36 में मैसूर के विरुद्ध बनाई थी।

वे टेनिस के भी खिलाड़ी रहे हैं। केम्ब्रिज में पढते हुए वे विम्बलडन में खेले थे जो एक टेनिस खिलाड़ी के लिए संसार में सबसे अधिक सम्मानप्रद है। उन्होने भारत में और विदेश मे भी अनेक टेनिस प्रतियोगिताएँ जीती हैं और वे 1921 में भारत की ओर से डेविस कप मे रूमानिया और बेल्जियम के विरुद्ध खेले थे।

वे कुछ समय तक भारतीय क्रिकेट नियन्त्रण बोर्ड की टैस्ट चयन समिति के सदस्य रह चुके हैं। 1952–53 में जो भारतीय टीम वेस्टइण्डीज के दौरे पर गई थी, वे उसके व्यवस्थापक थे।

रायसिंह

दाएँ हाथ के शक्तिशाली बल्लेबाज श्री रायसिंह उस भारतीय टीम के सदस्य थे जो 1947–48 में आस्ट्रेलिया के दौरे पर गई थी और उन्होने वहाँ एक टैस्ट खेला था। इस दौरे से पहले वे मर्चेंट एकादश और महाराजा पटियाला एकादश के बीच दिल्ली में खेले गए, चयन-मैच में खेले थे और उसमें उन्होंने महाराजा पटियाला एकादश की ओर से शानदार 158 रन बनाए थे। परन्तु दौरे के लिए उनका चुनाव तभी हुआ जब इस टीम के चार खिलाड़ी हताहत हो गए थे।

उनका जन्म 24 फरवरी 1922 को हुआ था। रणजी ट्रॉफी में वे दक्षिण पंजाब की ओर से खेलते थे। उनकी सर्वोत्तम बल्लेबाजी 1945–46 मे रही जबकि उन्होंने चार पारियों में 303 रन बनाए और उन्हीं में दो शतक : दिल्ली और जिला क्रिकेट संघ के विरुद्ध 132 रन और उत्तर भारत के विरुद्ध 117 रन। वे प्रिंसेस XI की ओर से आस्ट्रेलियाई सेना की टीम के विरुद्ध दिल्ली में खेले थे।

रॉय, पंकज

श्री रॉय ने प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में 1946–47 मे बड़ी शान के साथ पहली बार प्रवेश किया और उत्तर प्रदेश के विरुद्ध बंगाल की ओर से खेलते हुए अपराजित शतक बनाकर उन्होंने भारतीय टैस्ट क्रिकेट में अपने भावी प्रवेश की सूचना दे दी। तेजी से रन बनाने मे वे बहुत कुशल रहे हैं। उन्होंने इंग्लैंड के विरुद्ध अपनी पहली टैस्ट श्रृंखला में ही दो शतक बना डाले थे। रणजी ट्रॉफी में उन्होंने दो मैचों मे दोनों पारियों में शतक

बनाए हैं : 1953 में उड़ीसा के विरुद्ध 170 और 143 रन; और 1962 में हैदराबाद के विरुद्ध 112 और 118 रन। रणजी ट्रॉफी मे उन्होंने अब तक 4500 से अधिक रन बनाए हैं जिनमें उनके 19 शतक शामिल हैं। उनकी सर्वोच्च रन संख्या 202 है जो उन्होने 1963 में उड़ीसा के विरुद्ध बनाई थी।

उन्होंने 43 टैस्ट मैच खेले है : 14 इंग्लैंड, 9 पाकिस्तान, 9 वेस्ट-इण्डीज, 3 न्यूजीलैंड और 8 आस्ट्रेलिया के विरुद्ध। अपनी 79 पारियों में, चार बार अपराजित रहकर, उन्होंने 32·54 रन प्रतिपारी के औसत से कुल 2441 रन बनाए है। जिन पारियो में उन्होंने 99 से ऊपर रन बनाए थे वे है : 1951–52 में इंग्लैंड के विरुद्ध 140 और 111; 1953 में जमैका में वेस्टइण्डीज के विरुद्ध 150; और 1955 में न्यूजीलैंड के विरुद्ध 173 और 100 रन। उन्होंने श्री वीनू मांकड के साथ मिलकर, 1955 में न्यूजीलैंड के विरुद्ध मद्रास के पांचवें टैस्ट में, 413 रन बनाकर प्रथम विकेट की साझेदारी का कीतिमान स्थापित किया था। उन्होंने 1952 और 1959 में इंग्लैंड का, 1952–53 मे वेस्टइण्डीज का और 1954–55 में पाकिस्तान का दौरा किया था। उन्होंने 1959 मे लार्ड्स के दूसरे टैस्ट में भारत का नेतृत्व किया था। उन्होंने सिलवर जुबली ओवरसीज टीम के विरुद्ध चार अनौपचारिक टैस्ट खेले थे और मद्रास के चौथे टैस्ट में 141 रन बनाए थे।

उनका जन्म 31 मई 1928 को कलकत्ता में हुआ था। 1955-56 से वे बंगाल का नेतृत्व कर रहे है। वे दलीप ट्रॉफी मे प्रारम्भ से ही पूर्व क्षेत्र की टीम का नेतृत्व करते आ रहे हैं और वे सबसे सधे हुए बल्लेबाज सिद्ध हुए हैं।

वे एक व्यापारी हैं और फुटबॉल के भी अच्छे खिलाड़ी रहे हैं।

रेगे, एम० आर०

श्री रेगे का जन्म 18 मार्च 1924 को हुआ था। इस पारी प्रारम्भ करने वाले दाहिने हाथ के बल्लेबाज ने प्रथम श्रेणी के क्रिकेट मे 1944-45 में प्रवेश किया था जबकि उन्होंने महाराष्ट्र की ओर से नवानगर के विरुद्ध खेलते हुए 52 और 25 रन बनाए थे। महाराष्ट्र की ओर से उन्होंने अनेक बार शानदार खेल दिखलाया है। 1953–54 में उन्होंने गुजरात के विरुद्ध अपराजित 164 रन बनाए थे जो उनकी सर्वोच्च रन संख्या है। गेंदबाज के रूप में भी वे बहुत उपयोगी सिद्ध हुए हैं और उन्होंने कई बार बहुत अच्छी गेंदबाजी की है।

वे 1948 में वेस्टइण्डीज के विरुद्ध एक टैस्ट खेले थे। कॉमनवेल्थ

द्वितीय के विरुद्ध भी वे दो अनौपचारिक टैस्टों में खेले थे और कलकत्ता के तीसरे टैस्ट में उन्होंने अपनी सर्वोत्तम बल्लेबाजी (48 रन) दिखाई थी।

लालसिंह

उच्च कोटि के क्षेत्र-रक्षक और दाहिने हाथ से जोरदार बल्लेबाजी करने वाले श्री लालसिंह का जन्म 16 दिसम्बर 1909 को हुआ था। जो भारतीय टीम 1932 मे इंग्लैंड खेलने गई थी, वे उसके सदस्य थे। वे लार्ड्स के टैस्ट में खेले थे और उन्होने 15 और 29 रन बनाए थे। अपने अति उत्तम क्षेत्र-रक्षण से उन्होंने दर्शकों को बहुत प्रभावित किया था।

1934–35 में वे दक्षिण पंजाब की ओर से रणजी ट्रॉफी मे खेले और उन्होंने पहले ही मैच में उत्तर प्रदेश के विरुद्ध 57 रन बनाये परन्तु दूसरे मैच में उत्तर भारत के विरुद्ध खेलते हुए वे केवल 4 और 1 रन बना कर परास्त हो गए।

1935 मे वे महाराजा पटियाला की आस्ट्रेलियाई टीम के विरुद्ध एक अनौपचारिक टैस्ट भी खेले थे।

वजीर अली, सैयद

पारी प्रारम्भ करनेवाले शानदार सुरक्षात्मक बल्लेबाज श्री वजीर अली का जन्म 15 सितम्बर 1903 को हुआ था। वे तीसरे और चौथे दशक मे बहुत ही लोकप्रिय खिलाड़ी रहे थे। उन्होंने 1932 और 1936 मे भारतीय टीम के सदस्य के रूप में इंग्लैंड की यात्रा की थी। वे इंग्लैंड के विरुद्ध पहले सात टैस्टों मे खेले थे और 14 पारियों मे उन्होने 237 रन बनाए थे। उनकी सर्वोच्च रन संख्या 42 रही थी।

रणजी ट्रॉफी मे वे 1934–35 से 1939–40 तक मध्य भारत (अब मध्य प्रदेश) और पंजाब की ओर से खेले थे। उन्होंने दोनों टीमों का नेतृत्व भी किया था। रणजी ट्रॉफी की 18 पारियों में, तीन बार अपराजित रहकर उन्होंने 644 रन बनाए थे। उनकी उच्चतम रन संख्या अपराजित 222 थी जो उन्होंने 1939 की फरवरी मे बंगाल के विरुद्ध दक्षिण पंजाब की ओर से खेलते हुए बनाई थी।

उन्होंने बंबई चतुष्कोणीय और पंचकोणीय प्रतियोगिताओं में भी शानदार खेल दिखाया था और अपनी टीम का नेतृत्व भी किया था। उन्होंने पाँच शतक बनाए थे: 1924 में हिन्दू क्लब के विरुद्ध 197 रन, 1927 में पारसी क्लब के विरुद्ध 105 रन, 1935 में यूरोपीय क्लब के विरुद्ध 148 और हिन्दू क्लब के विरुद्ध 108 तथा 1938 में यूरोपीय क्लब के विरुद्ध 112 रन बनाए थे।

श्री वजीर अली विभाजन के बाद पाकिस्तान चले गये थे जहाँ

17 जून 1950 को उनका देहान्त हो गया। उनके सुपुत्र श्री खालिद वज़ीर पाकिस्तान की ओर से खेलते हैं।

विजयनगरम्, महाराजकुमार डॉ॰ विजय आनन्द, एल-एल. डी.

महाराजकुमार विजयनगरम् को टैस्ट क्रिकेट में भारत का नेतृत्व करने और भारतीय क्रिकेट नियन्त्रण बोर्ड के अध्यक्ष का पद धारण करने का गौरव प्राप्त है। वे 'विज्जी' के नाम से अधिक लोकप्रिय हैं। जो भारतीय टीम 1936 मे इंग्लैंड गई थी उसके वे कप्तान थे और 1955-56 तथा 1956-57 में भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड के अध्यक्ष रहे थे। उन्होंने लंदन मे आयोजित इम्पीरियल क्रिकेट कान्फ्रेंस में भारत का प्रतिनिधित्व किया था।

दाहिने हाथ के बल्लेबाज "विज्जी" ने 1936 में तीनों टैस्ट मैचों मे भारत का नेतृत्व किया था। 1942 में जो भारतीय टीम इंग्लैंड के दौरे पर गई थी उसके लिए भी उनका चयन हो गया था परन्तु अस्वस्थता के कारण वे नही जा सके। उनके नेतृत्व में विजयनगरम् एकादश ने 1933-34 में बनारस मे जारडीन की एम. सी. सी. टीम को पछाड़ दिया था। इस टीम को अपने दौरे मे केवल एक यही हार मिली थी। 1934-35 में 'विज्जी' ने रणजी ट्रॉफी में उत्तर प्रदेश का नेतृत्व किया।

उन्होंने सर्वश्री जे. बी. होब्स और हर्बर्ट सटक्लिफ को भारत बुलाया और उनके साथ अपनी टीम बनाकर पूरे देश मे दौरा करते हुए अनेक मैच खेले। इससे अनेक नवयुवक खिलाड़ियों को विश्व ख्याति-प्राप्त पारी प्रारंभ करने वाले जोड़े के साथ खेलने का अवसर मिला। 1935 में उन्होंने वेस्टइण्डीज के प्रसिद्ध खिलाड़ी श्री लीयरी कोन्स्टेन्टाइन को भारत में मैच खेलने के लिए बुलाया था। विज्जी कई वर्षो तक उत्तर प्रदेश क्रिकेट संघ के अध्यक्ष रहे थे।

वे एक बड़े निशानेबाज थे और उन्होंने बहुत से बाघ और अन्य जंगली जानवरों का शिकार किया था। वे रेडियो टीकाकार और लेखक के रूप मे भी वहुत प्रसिद्ध थे। एक मेजवान के रूप मे भी उनकी बराबरी करने वाले बहुत कम मिलेंगे। वे उत्तर प्रदेश विधान सभा और संसद के सदस्य रहे थे।

भारत के राष्ट्रपति ने 1957 मे उन्हें "पद्म भूषण" से सम्मानित करके खेलकूद के क्षेत्र में उनकी अनुकरणीय सेवाओं को मान्यता प्रदान की थी।

वे लेफ्टिनेंट कर्नल थे। वे अखिल भारतीय खेल कूद परिषद् के उपाध्यक्ष भी रहे थे। वे 2 दिसम्बर 1965 को सोने के बाद फिर नहीं उठे।

वेंकट राघवन

1965 में न्यूज़ीलैंड के विरुद्ध दिल्ली के चौथे टैस्ट में भारत को विजय-श्री दिलाने में श्री वेंकट राघवन ने भारी योगदान दिया था। पहली पारी में उन्होंने केवल 72 रन देकर 8 विपक्षी बल्लेबाज धराशायी कर दिए

थे। अब तक कोई भारतीय गेंदबाज न्यूजीलैंड के विरुद्ध इतना शानदार खेल नहीं दिखा सका है। दूसरी पारी में उन्होंने 80 रन देकर 4 विकेट लिए थे। कीवस के विरुद्ध चारों टैस्टों में भी उनकी गेंदबाजी बहुत सधी हुई थी और उन्होंने अपनी पहली टैस्ट शृंखला में 19 रन प्रति विकेट के औसत से, 399 रन देकर 21 विकेट लिए थे। इसी खेल के फलस्वरूप, टैस्ट मैचों में, उनकी गेंदबाजी का औसत भारत में सर्वश्रेष्ठ रहा है।

वे दाहिनी भुजा के ऑफ स्पिन गेंदबाज और दाहिने हाथ के बल्लेबाज हैं। रणजी ट्रॉफी में उन्होंने सर्वप्रथम 1963-64 में मद्रास की ओर से खेलना शुरु किया था। मद्रास विश्वविद्यालय की क्रिकेट टीम के वे सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी हैं और इंजीनियरी के छात्र हैं।

शिंदे, एस. जी.

श्री शिंदे दाहिनी भुजा से तेगब्रेक-व-गुगली गेंद फेंकने वाले अच्छे गेंदबाज थे जो रणजी ट्रॉफी में महाराष्ट्र और बम्बई की ओर से खेला करते थे। प्रथमश्रेणी के क्रिकेट में उन्होंने 1940-41 में प्रवेश किया था और मद्रास के विरुद्ध महाराष्ट्र की ओर से खेले थे। वे महाराष्ट्र की ओर से 1946 तक खेलते रहे। तब तक उनका सर्वोत्तम खेल था: 1944-45 में नवानगर के विरुद्ध खेलते हुए 17 रन देकर 5 विकेट और 21 रन देकर 4 विकेट। बम्बई के लिए उनकी सर्वोत्तम गेंदबाजी थी: 1950 में गुजरात के विरुद्ध, 162 रन देकर 8 विकेट।

वे भारतीय टीम के साथ 1946 और 1952 में इंग्लैंड गए थे। वे सात टैस्ट मैचों में खेले थे: इंग्लैंड के विरुद्ध 1946 (1), 1951-52 (3), 1952 (2) और वेस्टइण्डीज के विरुद्ध 1948 (1), उनकी सर्वोत्तम गेंदबाजी 1951-52 में इंग्लैंड के विरुद्ध पहले दिल्ली टैस्ट में रही जब उन्होंने 91 रन देकर 6 विकेट लिए थे। कुल मिलाकर उन्होंने 59·75 प्रति विकेट के औसत से 717 रन देकर 12 टैस्ट विकेट लिए थे।

उनका जन्म 18 अगस्त 1923 को हुआ था और छोटी आयु में ही उनकी मृत्यु 22 जून 1955 को हो गई।

शोधन, डी. एच.

श्री शोधन उन थोड़े से खिलाड़ियों में से हैं जिन्होंने अपने पहले टैस्ट में ही शतक बनाकर दिखा दिया था। देश में उनकी टैस्ट बल्लेबाजी की औसत भी सर्वोच्च रही फिर भी उन्हें अपने जीवन में केवल तीन टैस्ट मैच खेलने का ही अवसर मिला। श्री शोधन बाएँ हाथ के सशक्त बल्लेबाज और बाईं भुजा के मध्यम गति के गेंदबाज रहे हैं।

पाकिस्तान के विरुद्ध पाँचवें टैस्ट में उन्होंने 110 रन बनाए थे। वे 1952-53 मे भारतीय टीम के साथ वेस्टइण्डीज गए थे और वहाँ उन्होंने कुल दो टैस्ट खेले थे। पहले टैस्ट में 45 रन बनाए थे। चार टैस्ट पारियो में, एक बार अपराजित रहकर, उन्होंने 60·33 रन प्रतिपारी के औसत से कुल 181 रन बनाए थे।

उनका जन्म अहमदाबाद में 10 अक्तूबर 1928 को हुआ था। प्रथम श्रेणी के क्रिकेट मे उन्होंने प्रथम प्रवेश 1946-47 मे किया जब उन्होंने गुजरात की ओर से खेलते हुए, काठियावाड़ के, 45 रन देकर, 4 विकेट और 47 रन देकर, 3 विकेट लिए थे। प्रथम श्रेणी के क्रिकेट मे यही उनकी सर्वश्रेष्ठ गेंदबाजी रही है। प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में उन्होंने 1000 से ऊपर रन बनाए हैं। 1957 मे महाराष्ट्र के विरुद्ध बडोदा की ओर से खेलते हुए उन्होंने अपने सबसे अधिक रन 261 बनाए थे। उन्होंने 1952-53 में गुजरात का नेतृत्व किया था।

वे भारतीय विश्वविद्यालय टीम की ओर से 1951-52 में कॉमनवेल्थ प्रथम और एम०सी०सी० के विरुद्ध तथा सिलवर जुबली ओवरसीज टीम के विरुद्ध खेले थे। वे बम्बई विश्वविद्यालय की ओर से 1948-49 और 1949-50 मे तथा गुजरात विश्वविद्यालय की ओर से 1953-54 में खेले थे।

सरदेसाई, दिलीप नारायण

अपनी निर्दोष तकनीक के कारण, दाहिने हाथ के बल्लेबाज श्री सरदेसाई न्यूजीलैंड के विरुद्ध टैस्ट मे लगातार दो शतक बनाकर भारत के एक सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज बन गए। 1965 मे बम्बई मे खेले गए तीसरे टैस्ट मे वे लगातार तीन दिन तक बल्लेबाजी करते रहे, उन्होंने 200 रन बनाए पर न्यूजीलैंड का कोई भी माई का लाल गेंदबाज उन्हे पराजित नहीं कर सका। इससे भारत अपनी निश्चित हार से ही नहीं बचा अपितु विजय के बहुत पास आ पहुँचा था। दिल्ली के दूसरे टैस्ट में उन्होंने 127 मिनट मे फटाफट शतक बनाकर अपना नाम शूरवीरो मे लिखा दिया। इससे एक वर्ष पहले भी जब वे इंग्लैंड के विरुद्ध खेले थे तो उन्होंने बहुत सधा हुआ खेल दिखलाया था और 10 पारियो मे 499 रन बनाए थे। अब तक उन्होंने 15 टैस्ट खेले हैं और उनमे उन्होंने प्रतिपारी 40 से ऊपर के औसत से 1060 रन बनाए हैं।

1962 मे जो भारतीय टीम वेस्टइंडीज गई थी, श्री सरदेसाई उसके सदस्य थे।

उनका जन्म मड़गाव (गोआ) में 8 अगस्त 1940 को हुआ था। उन्होंने प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में 1960-61 मे खेलना शुरु किया था और तब उन्होने पाकिस्तान के विरुद्ध विश्वविद्यालयों की सम्मिलित टीम मे खेलते हुए 87 रन बनाए थे। उसी वर्ष वे रणजी ट्रॉफी मे भी खेले और तब से वे वम्बई की ओर से नियमित रूप से खेल रहे हैं। इस प्रतियोगिता में उनकी सर्वोच्च रन संख्या 117 रही है जो उन्होने 1964-65 में सेना के विरुद्ध बनाई थी। दिलीप ट्रॉफी में वे पश्चिम क्षेत्र की ओर से खेलते हैं।

वे 1958-59 से 1961-62 तक वम्बई विश्वविद्यालय की ओर से खेले थे और उन्होंने मद्रास विश्वविद्यालय के विरुद्ध 202, गुजरात विश्वविद्यालय के विरुद्ध 100, और आनन्द- विद्यापीठ के विरुद्ध अपराजित 165 रन बनाए थे।

सरवटे, चन्दू टी.

श्री सरवटे दाहिने हाथ के बल्लेबाज और दाहिनी भुजा के धीमे गेंदबाज हैं। रणजी ट्रॉफी में उन्होने अनेक बार बहुत सुन्दर खेल दिखाया है। सर्वश्री हजारे और मुश्ताक अली को छोड़कर कोई भी बल्लेबाज उनसे अधिक रन नही बना सका है, और केवल सर्वश्री सी० एस० नायुडू, हजारे और एच० जी० गायकवाड ही उनसे अधिक विकेट ले सके हैं।

उनका जन्म 22 जून 1920 को हुआ था। रणजी ट्रॉफी में उन्होने 1936-37 में खेलना शुरू किया और पहले ही मैच मे हैदराबाद के विरुद्ध मध्य भारत व बरार की ओर से खेलते हुए 3 रन देकर 5 विकेट और 15 रन देकर 1 विकेट लिया था। वे 1940-41 से तीन वर्ष तक महाराष्ट्र की ओर से खेले। 1943-44 में उन्होने बम्बई का प्रतिनिधित्व किया। उसके बाद वे होलकर में आ गए जहाँ वे लगातार खेल रहे है। उनकी रन संख्या 5000 तक पहुँचने ही वाली है। अब तक उन्होंने 12 शतक बनाए हैं। उनकी सर्वोत्तम बल्लेबाजी 1950 में बंगाल के विरुद्ध 246 रन, 1949 में दिल्ली और जिला क्रिकेट संघ के विरुद्ध 235 और 1950 मे गुजरात के विरुद्ध 234 रन रही है। गेंदबाजों में उन्होने 275 से अधिक विकेट लिए हैं। 1948 में उन्होंने बिहार के विरुद्ध तिकड़ी (हैट ट्रिक) बनाई थी। उनकी सर्वोत्तम गेंदबाजी 1945 मे मैसूर के विरुद्ध रही जब कि उन्होंने 61 देकर 9 विकेट लिए थे।

उन्होंने भारतीय टीम के साथ 1945 में श्रीलंका, 1946 और 1952 में इंग्लैंड और 1947-48 मे आस्ट्रेलिया का दौरा किया था। उन्होंने 9 टेस्ट मैच खेले हैं: इंग्लैड के विरुद्ध 1946 (1) और 1951-52 (1); आस्ट्रेलिया के विरुद्ध 1947-48 (5) और वेस्टइंडीज के विरुद्ध 1948

(2), उन्होंने आस्ट्रेलिया की सेना की टीम और कॉमनवेल्थ प्रथम के विरुद्ध अनौपचारिक टैस्ट भी खेले थे।

1946 में इंग्लैंड के दौरे में उन्होंने श्री एस० बनर्जी के साथ मिलकर अन्तिम विकेट की साझेदारी में, सर्रे के विरुद्ध, 249 रन बनाए थे जिनमें उनकी अपनी रन संख्या अपराजित 124 थी और उसी मैच में उन्होंने केवल 54 रन देकर 5 विकेट गिराए थे। उन्होंने स्काटलैंड के विरुद्ध तिकड़ी बनाई थी।

बम्बई पंचकोणीय प्रतियोगिता में वे हिन्दू क्लब की ओर से खेलते थे। 1945 के बाद जो-जो विदेशी टीमें भारत आई हैं, वे उन सबके विरुद्ध खेल चुके हैं। उन्होंने 1936–37, 1939–40 और 1941–42 मे नागपुर विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया था। 1955–56 से लेकर वे मध्यप्रदेश की टीम का नेतृत्व कर रहे है। व्यवसाय से वे एक अंगुलि-छाप विशेषज्ञ है।

सुन्दरम, जी. आर.

श्री सुन्दरम उन थोड़े से खिलाड़ियो मे से हैं जिन्हें अपने राज्य की ओर से खेलने से पहले ही देश की ओर से खेलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। उन्होने 1953-54 में सिलवर जुबली ओवरसीज टीम के विरुद्ध दो अनौपचारिक टैस्ट खेले थे। पहले औपचारिक टैस्ट में वे दिल्ली में न्यूजीलैंड के विरुद्ध खेले थे और उसमें भारतीय गेंदबाजो को बहुत कठिनाई का सामना करना पड़ा था क्योंकि न्यूजीलैंड ने केवल दो विकेट खोकर 450 रन बना लिए थे। उसमें श्री सुन्दरम को भी केवल एक ही विकेट मिला और बदले में 99 रन देने पड़े। कलकत्ता में खेले गए दूसरे मैच में उन्होंने 46 रन देकर 2 विकेट लिए थे।

दाहिनी भुजा के मध्यम तेज गेंदबाज और दाहिने हाथ के बल्लेबाज श्री सुन्दरम ने प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में 1951–52 में खेलना शुरू किया था जब कि ये एम० सी० सी० के विरुद्ध सम्मिलित विश्वविद्यालय टीम से खेले थे। उसमें उन्होने 73 रन देकर 2 विकेट लिए थे। उनका जन्म 29 मार्च 1930 को हुआ था। रणजी ट्रॉफी में वे पहलीबार 1953-54 में उतरे जबकि उन्होने बड़ोदा के विरुद्ध बम्बई की ओर से खेलते हुए 29 रन देकर 3 विकेट और 55 रन देकर 1 विकेट लिया था। 1961–62 में वे राजस्थान आगए और तब से रणजी ट्रॉफी में और अन्य प्रमुख मैचों में उसी ओर से नियमित रूप से खेल रहे हैं। उनकी सर्वोत्तम गेंदबाजी 1961–62 में विदर्भ के विरुद्ध रही जब कि उन्होंने 64 रन देकर 6 विकेट (पूरे मैच में 118 रन देकर 10 विकेट) लिए थे। उनके सबसे अधिक रन 52 हैं

भारतीय टैस्ट खिलाड़ी

ए. जी. कृपालसिंह

सलीम दुर्रानी

सुरेन्द्रनाथ

पी. पी. [illegible]

ट
नट
ब
दगा
अधि

5 को हुआ
पर बहुत
। वे भारत

एस. के. [illegible]

भारतीय टैस्ट खिलाड़ी

बी. एस. चन्द्रशेखर

एस. वेंकटराघवन

हनुमन्त सिंह

डी. एन. सरदेसाई

एफ. एम. इंजीनियर

बी. के. कुन्दरन

जो उन्होंने 1962-63 में रणजी ट्रॉफी के फाइनल मे बम्बई के विरुद्ध बनाए थे।

वे 1951-52 और 1952-53 में बम्बई विश्वविद्यालय की ओर से खेले थे। उन्होंने इंग्लैंड के आल्फ गोवर क्रिकेट स्कूल में 1953 मे प्रशिक्षण लिया था।

वे मान मेमोरियल कारपोरेशन लि०, जयपुर में अधिकारी हैं।

सुब्रमण्यम्, वेंकटरामन्

1962-63 की दलीप ट्रॉफी में उत्तर क्षेत्र ने पहली पारी में 285 रन बना लिए थे। दक्षिण क्षेत्र की पारी का श्रीगणेश ठीक नहीं हुआ और उनके एक के बाद एक विकेट गिरते जा रहे थे। तभी करुणा में वीर रस की भांति श्री सुब्रमण्यम् का आगमन हुआ। उन्होंने अकेले ही अपना युद्ध प्रारम्भ किया और शानदार 120 रन बना डाले; और अपनी टीम को 297 रनों पर पहुँचा दिया। इस प्रकार श्री सुब्रमण्यम् ने अपने प्रबल प्रहारों से अपनी टीम की लाज बचाई।

श्री सुब्रमण्यम् का जन्म 16 जुलाई 1936 को बंगलौर में हुआ था। वे दाहिने हाथ से बल्लेबाजी करते हैं और दाहिनी भुजा से गेंदबाजी। उन्होंने 1959-60 में सर्वप्रथम रणजी ट्रॉफी मे खेलना शुरु किया था। उसमें उन्होने हैदराबाद के विरुद्ध मद्रास की ओर से खेलते हुए दोनों पारियों में क्रमश: 32 और 16 रन बनाए थे। उसी वर्ष उन्होंने बंबई के विरुद्ध शतक बनाया था। 1963-64 मे, उन्होंने हैदराबाद के विरुद्ध 105 रन लिए थे। उनकी सर्वोत्तम गेंदबाजी 1959-60 में केरल के विरुद्ध रही जबकि उन्होंने 78 रन देकर 7 विकेट लिए थे।

उन्होने दिल्ली में न्यूजीलैंड के विरुद्ध चौथा टैस्ट खेला था। उसमें वे केवल 9 रन बनाकर परास्त हो गए पर उन्होंने न्यूजीलैंड की दूसरी पारी में 32 रन देकर 2 विकेट लिए थे।

उन्होंने 1956-57 और 57-58 में मैसूर विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया था। वे भारतीय टेलीफोन उद्योग,बंगलौर मे काम करते हैं।

सुरेन्द्रनाथ

श्री सुरेन्द्रनाथ का जन्म 4 जनवरी 1937 को मेरठ में हुआ था। वे दाहिनी भुजा से मध्यम तेज भीतर की ओर भूमती हुई गेंद फेंकते हैं और दाहिने हाथ से बल्लेबाजी करते हैं। उन्होंने प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में खेलना 1955-56 में शुरु किया था और पूर्व पंजाब के विरुद्ध खेलते हुए 21 रन देकर 1 विकेट और 29 रन देकर 3 विकेट लिए थे। तबसे वे

लगातार सेना की ओर से खेल रहे हैं। 1960–61 में वे अपनी टीम के कप्तान रहे हैं। रणजी ट्रॉफी में उनका सर्वोत्तम वर्ष 1959-60 रहा जब उन्होंने 458 रन देकर 26 विकेट लिए थे। रणजी ट्रॉफी में अब तक उन्होंने प्रति विकेट 20·05 के औसत से 2527 रन देकर 126 विकेट लिए हैं। उनकी सर्वोत्तम गेंदबाजी 1958–59 मे रेलवे के विरुद्ध रही जब उन्होंने प्रथम पारी में 14 रन देकर 7 विकेट और दूसरी मे 62 रन देकर 6 विकेट लिए थे। उनकी उच्चत्तम रन संख्या 119 है जो उन्होंने 1961–62 में दक्षिण पंजाब के विरुद्ध बनाई थी।

उन्होने 11 टैस्ट खेले हैं : वेस्टइंडीज के विरुद्ध 1958 मे (2), इंग्लैंड के विरुद्ध 1959 में (5), आस्ट्रेलिया के विरुद्ध 1959 में (2) और पाकिस्तान के विरुद्ध 1960 में (2)। उन्होंने 1053 रन देकर 26 टैस्ट विकेट लिए हैं। उनकी सर्वोत्तम गेंदबाजी मैंचेस्टर में इंग्लैंड के विरुद्ध चौथे टैस्ट में रही जबकि उन्होंने 115 रन देकर 5 विकेट लिए थे।

उन्होने 1952–53 में अखिल भारतीय स्कूल क्रिकेट प्रतियोगिता में दिल्ली स्कूल टीम का प्रतिनिधित्व किया था और 1954–55 में अन्तर-विश्वविद्यालय क्रिकेट प्रतियोगिता में राष्ट्रीय रक्षा अकादमी की ओर से खेले थे और अगले वर्ष उसका नेतृत्व किया था।

वे भारतीय वायु सेना में अधिकारी हैं।

सूद, मन मोहन

श्री सूद का जन्म 6 जुलाई 1939 को हुआ था और उन्होंने रणजी ट्रॉफी में खेलना 1956–57 मे शुरु किया। उस वर्ष दिल्ली की ओर से सेना के विरुद्ध खेलते हुए उन्होने 28 और अपराजित 12 रन बनाए थे। वे दाहिने हाथ के बल्लेबाज हैं। कवर में गेंद पीटना उनकी विशेषता है। 1960–61 में उनका खेल बहुत अच्छा था जबकि उन्होंने प्रति पारी 60·62 के औसत से रन बनाए थे। उसी वर्ष उन्होंने दक्षिण पंजाब के विरुद्ध 170 रन बनाए थे। इसके बाद वे कभी इतने रन नही बना सके। वे 1959-60 में आस्ट्रेलिया के विरुद्ध मद्रास में चौथे टैस्ट मे खेले थे। वे 1956–57 से 1959–60 तक दिल्ली विश्वविद्यालय की ओर से खेले थे जिसमें अन्तिम वर्ष में उन्होंने अपनी टीम का नेतृत्व किया था।

सुरती, रुसी फ्रेमरोज

एक उपयोगी, तेज और चुस्त सर्वोन्मुख खिलाड़ी श्री सूरती का जन्म 25 मई 1936 को सूरत में हुआ था। वे एक आक्रामक तेज बल्लेबाज हैं और उन्होंने अपनी बाईं भुजा से भीतर की ओर झूलती हुई गेंद फेंककर

कई बार भारत के आक्रमण को प्रारम्भ किया है। उन्होंने रणजी ट्रॉफी में 1956-57 में खेलना प्रारम्भ किया था और गुजरात की ओर से बम्बई के विरुद्ध खेलते हुए उन्होने 72 और 14 रन बनाए थे। वे 1959-60 और 1960-61 में राजस्थान की ओर से खेले थे। 1959-60 में उत्तर प्रदेश के विरुद्ध उन्होने अपराजित रहकर 246 रन बनाए थे; यही अब तक उनकी सर्वोच्च रन संख्या है।

उन्होने अब तक 11 टैस्ट मैच खेले हैं : पाकिस्तान के विरुद्ध 1960 में (2); वेस्टइंडीज के विरुद्ध 1962 में (5), इंग्लैंड के विरुद्ध 1964 में (1), आस्ट्रेलिया के विरुद्ध 1964 में (2) और न्यूजीलैंड के विरुद्ध 1965 में (1), टैस्टों में उनकी सर्वोच्च रन संख्या 64 रही है जो उन्होने 1960-61 मे पाकिस्तान के विरुद्ध बनाई थी और उनकी सर्वोत्तम गेंदबाजी 1964 में आस्ट्रेलिया के विरुद्ध रही है जबकि उन्होने 38 रन देकर 3 विकेट लिए थे।

वे 1953-54 और 1954-55 में अखिल भारतीय स्कूल क्रिकेट प्रतियोगिता मे बम्बई और पश्चिम क्षेत्र स्कूलों की ओर से खेले थे। एक व्यावसायिक खिलाड़ी के रूप में उन्होने 1959 और 1961 मे लंकाशायर लीग में हेसलिंग्डन की सहायता की थी। वे टाटा उद्योग बम्बई मे काम करते हैं।

स्वामी वी० एन०

दाहिनी भुजा के मध्यम गति के तेज गेंदबाज और दाहिने हाथ के बल्लेबाज, श्री स्वामी रणजी ट्रॉफी में सेना की ओर से खेलते थे। वे 1955 मे हैदराबाद मे न्यूजीलैंड के विरुद्ध प्रथम टैस्ट में खेले थे और श्री फडकर के साथ भारत की ओर से गेंदबाजी शुरू की थी परन्तु कोई विकेट नहीं ले सके।

उनका जन्म 23 मई 1924 को हुआ था।

सेन, प्रोबीर

दाहिने हाथ के बल्लेबाज श्री सेन भारत के सर्वश्रेष्ठ विकेट रक्षकों मे से हैं। उनका जन्म 31 मई 1925 को हुआ था। उन्होने रणजी ट्रॉफी मे खेलना 1943 में शुरु किया और दूसरे मैच में होल्कर के विरुद्ध एक शतक बनाया। रणजी ट्रॉफी की 59 पारियों में उन्होने 30·44 रन प्रति पारी के औसत से 1796 रन बनाए हैं। उनकी सर्वोच रन संख्या 168 है जो उन्होने 1950-51 में बिहार के विरुद्ध बनाई थी।

उन्होने 14 टैस्ट मैच खेले हैं: 1647-48 मे आस्ट्रेलिया के विरुद्ध (3); 1948 में वेस्टइंडीज के विरुद्ध (5); इंग्लैंड के विरुद्ध

1951–52 में (2), 1952 में (2), और पाकिस्तान के विरुद्ध (2)। उन्होंने 1947–48 मे आस्ट्रेलिया और 1952 मे इंग्लैंड का दौरा किया था। 1951–52 मे इंग्लैंड के विरुद्ध मद्रास में खेले गए पांचवें टैस्ट में भारत को जिताने में उनका बहुत बड़ा हाथ था क्योंकि उन्होंने 5 बल्लेबाजों को स्टम्प आउट कर दिया था। 1952–53 में उन्होंने पाकिस्तान के विरुद्ध 25 रन बनाए थे; टैस्ट मैच में वे ही उनके सर्वोच्च रन हैं। वे सिलवर जुबली ओवरसीज टीम के विरुद्ध एक अनौपचारिक टैस्ट में खेले थे।

सेनगुप्ता, ए० के०

दाहिने हाथ के बल्लेबाज और दाहिनी भुजा के गेंदबाज श्री सेनगुप्ता का जन्म 3 अगस्त 1939 को लखनऊ में हुआ था। 1958-59 में वेस्टइंडीज की शक्तिशाली टीम के विरुद्ध अपराजित शतक बनाकर श्री सेनगुप्ता ने प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में बड़ी शान के साथ प्रवेश किया। इसी खेल के आधार पर उन्हें उस वर्ष एक टैस्ट मैच में भी खिलाया गया था। उसी वर्ष उन्होंने रणजी ट्रॉफी में भी प्रथम प्रवेश किया और दिल्ली के विरुद्ध खेलते हुए उन्होंने 32 रन पर 6 विकेट गिराकर अपना शानदार खेल दिखाया। अगले वर्ष उन्होंने रणजी ट्रॉफी में कुल 419 रन बनाए और बम्बई के विरुद्ध 146 रन बनाकर अपराजित रहे। यही उनकी सर्वोच्च रन संख्या रही है। वे 1958-59 में राष्ट्रीय रक्षा अकादमी की टीम को श्री लंका ले गए थे और वहाँ लगातार तीन मैचों मे उन्होंने शतक जमाए थे।

वे भारतीय सेना में अधिकारी हैं।

सोहनी, एस० डब्लू०

दाहिने हाथ के आक्रामक बल्लेबाज और दाहिनी भुजा के मध्यम गति के तेज गेंदबाज श्री सोहनी ने रणजी ट्रॉफी में 2000 से ऊपर रन बनाए हैं और वे 100 से ऊपर विकेट ले चुके हैं। वे बम्बई और महाराष्ट्र की ओर से खेलते थे। उन्होंने अपनी 66 पारियों में, चार बार अपराजित रहकर 34.87 रन प्रतिपारी के औसत से कुल 2162 रन बनाए हैं। गेंदबाजी में उन्होंने 24.49 रन प्रति विकेट के औसत से 3405 रन देकर 139 विकेट लिए हैं। 1940–41 मे उनका खेल चोटी पर था जब उन्होंने बम्बई के विरुद्ध 120, गुजरात के विरुद्ध अपराजित 134, पश्चिम भारत के विरुद्ध अपराजित 218 और मद्रास के विरुद्ध 104 रन बनाए थे। 1948 में उन्होंने 15.12 रन प्रति विकेट के औसत से 499 रन देकर 33 विकेट लिए थे।

वे भारतीय टीम के साथ 1946 में इंग्लैंड और 1947-48 में आस्ट्रेलिया गए थे। वे चार टैस्ट मैचों खेले हैं: इंग्लैंड के विरुद्ध 1946 में

(2), 1951–52 में (1) और आस्ट्रेलिया के विरुद्ध 1947–48 में (1)। कुल 7 टैस्ट पारियों में, दो बार अपराजित रह कर, उन्होंने 18·60 रन प्रति पारी के औसत से 93 रन बनाए हैं।

उनका जन्म 5 मार्च 1918 को हुआ था। अपने 47 वें जन्मदिन को दिल्ली मे अन्तर राज्य सचिवालय क्रिकेट प्रतियोगिता में मद्रास के विरुद्ध महाराष्ट्र की ओर से खेलते हुए, उन्होंने केवल 6 रन देकर सभी देशों के बल्लेबाजों को परास्त कर दिया था।

वे महाराष्ट्र में सरकारी अधिकारी हैं।

हजारे, विजय सेमुअल

भारत के केवल एक ही क्रिकेट खिलाड़ी श्री हजारे को ही यह सौभाग्य मिला है कि वे जिस देश के विरुद्ध खेले, उसी के विरुद्ध उन्होंने शतक अवश्य बनाया। उन्होंने 1951–52 में इंग्लैंड के विरुद्ध नई दिल्ली में अपराजित 164 और बम्बई में 155, आस्ट्रेलिया के विरुद्ध एडीलेड में 116 और 145; वेस्टइण्डीज के विरुद्ध बम्बई में (पाँचवें टैस्ट में) 122 और (दूसरे टैस्ट में) अपराजित 134 और 1952 में पाकिस्तान के विरुद्ध बम्बई में अपराजित 146 रन बनाए थे। केवल वे ही एक ऐसे भारतीय खिलाड़ी हैं जिन्होंने प्रत्येक टैस्ट पारी में शतक बनाया है। भारतीय खिलाड़ियों में केवल उन्हें ही दो पारियों में 300 से ऊपर रन बनाने का सौभाग्य मिला है। उन्होंने रणजी टॉफी में 6312 से ऊपर रन बनाए हैं, और 291 से ऊपर विकेट गिराए हैं। ऐसा और कोई खिलाड़ी नहीं कर पाया है। रणजी ट्रॉफी में उन्हें सबसे अधिक शतक (22) बनाने का गौरव प्राप्त है। उन्होंने 1946–47 में होल्कर के विरुद्ध गुलमोहम्मद के साथ चौथे विकेट की साझेदारी में 577 रन बनाए थे। सारे संसार में प्रथम श्रेणी के क्रिकेट के इतिहास में अब तक किसी भी विकेट की साझेदारी मे इतने रन नहीं बन सके हैं। उनका यह कीर्तिमान उनके कीर्तिदीप को कभी बुझने न देगा। प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में उन्होंने भारतीय खिलाड़ियो में सबसे अधिक शतक बनाए हैं।

श्री हजारे का जन्म सांगली (महाराष्ट्र) में 11 मार्च 1915 को हुआ था। वे दाहिने हाथ से पूरी सुरक्षा के साथ खेलते हुए गेंद पीटने पर बहुत जोर रखते हैं। वे दाहिनी भुजा से मध्यम तेज गेंदबाजी करते हैं। वे भारत के एक सर्वश्रेष्ठ सर्वोन्मुख खिलाड़ी रह चुके हैं। प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में उनका प्रथम प्रवेश 1934–35 में हुआ था जब कि वे बम्बई के विरुद्ध महाराष्ट्र की ओर से खेले थे। वे 1935–36 से 1938–39 तक मध्य भारत की ओर से खेलते रहे, तदुपरान्त 1938–39 से 1940–41 तक फिर महाराष्ट्र

की ओर से खेले और अन्त में 1941–42 से 1960–61 तक जब कि उन्होंने खेल से पूरी छुट्टी ली, वे बड़ोदा की ओर से खेले । 1950-51 से 1955–56 तक वे बड़ोदा के कप्तान रहे । रणजी ट्राफी में उनका खेल सर्वोत्कृष्ट रहा : कुल 103 पारियों में, 12 बार अपराजित रहकर, उन्होंने 69 36 रन प्रति पारी की औसत से 6312 रन बनाए । उनकी सर्वोच्च रन संख्या अपराजित 316 रही जो उन्होंने 1939 में बड़ोदा के विरुद्ध महाराष्ट्र की ओर से खेलते हुए बनाई थी । उन्होंने 1946 में होल्कर के विरुद्ध बड़ोदा के लिए 288 रन; 1954 मे गुजरात के विरुद्ध बड़ोदा के लिए अपराजित 204 रन, और 1957 में सेना के विरुद्ध बड़ौदा के लिए 203 रन बनाए थे । अपनी कुल गेंदबाजी मे उन्होंने 19·87 प्रति विकेट की औसत से 5785 रन देकर 219 विकेट लिए हैं । उनकी सर्वोत्तम गेंदबाजी 1946 मे महाराष्ट्र के विरुद्ध रही जबकि उन्होंने बड़ोदा की ओर से खेलते हुए 90 रन देकर 8 विकेट गिराए थे ।

बम्बई पंचकोणीय प्रतियोगिता में 'शेष' की ओर से खेलते हुए, श्री हजारे ने अपनी विद्युतीय बल्लेबाजी से सारे देश को चकाचौंध कर दिया । इस प्रतियोगिता में सर्वाधिक रन बनाने का उनका कीर्तिमान अभी तक अटूट है । उन्होने 1943 में हिन्दू क्लब के विरुद्ध 309 रन बनाए थे । अभी तक कोई भी बल्लेबाज इस प्रतियोगिता मे 300 से ऊपर नहीं पहुँचा । उन्होंने 1943 मे मुस्लिम क्लब के विरुद्ध 248; 1940 में यूरोपीय क्लब के विरुद्ध 1८2; और 1941 में मुस्लिम क्लब के विरुद्ध अपराजित 101 रन बनाए थे । इस टूर्नामेंट में उन्होंने 1943 में हिन्दू क्लब के विरुद्ध अपने भाई श्री वी० के० हजारे के साथ खेलते हुए छठे विकेट की साझेदारी में 300 रन बनाए थे । यह साझेदारी इस टूर्नामेंट में किसी भी विकेट की सर्वोत्तम साझेदारी है ।

श्री हजारे ने 30 टैस्ट मैच खेले हैं : इंग्लैंड के विरुद्ध 1946 (3); 1951–52 (5) कप्तान; 1952 (4) कप्तान; आस्ट्रेलिया के विरुद्ध 1947–48 (5); वेस्टइण्डीज के विरुद्ध 1948–49 (5); 1952–53 (5) कप्तान और पाकिस्तान के विरुद्ध 1952 (3) । अपनी 52 टैस्ट पारियों में, 6 बार अपराजित रहकर, उन्होंने प्रतिपारी 47·65 रन के औसत से, कुल 2192 रन बनाए हैं । गेंदबाजी मे उन्होंने 1220 रन देकर 20 विकेट लिए हैं ।

श्री हजारे ने लार्ड टेनीसन की टीम के विरुद्ध (3), आस्ट्रेलिया की सेना की टीम के विरुद्ध (3), कॉमनवेल्थ प्रथम के विरुद्ध (5), कॉमनवेल्थ द्वितीय के विरुद्ध (5) और सिलवर जुबली ओवरसीज टीम के विरुद्ध (3) अनौपचारिक टैस्ट खेले हैं । इन टीमों के विरुद्ध भी उन्होंने काफी

बढ़िया बल्लेबाजी की थी, जैसे कॉमनवेल्थ प्रथम के विरुद्ध अपराजित 175 और कॉमनवेल्थ द्वितीय के विरुद्ध 144, 115 और 134 रन।

सभी प्रथम श्रेणी के मैचों में उन्होंने कुल मिलाकर, 55·99 प्रति पारी के औसत से, 16071 रन बनाए हैं, तथा 24·86 रन प्रति विकेट के औसत से रन देकर 507 विकेट लिए हैं।

एक व्यावसायिक खिलाड़ी के रूप में, वे 1949 और 1955 में रौटैंस्टाल की ओर से लंकाशायर लीग में, और 1950 तथा 1951 में रॉयटन की ओर से सेण्ट्रल लंकाशायर लीग में खेल चुके हैं। 1960–61 में वे भारतीय टैस्ट चयन समिति के अध्यक्ष रहे हैं।

भारत सरकार ने उन्हें 1960 में 'पद्म श्री' से विभूषित किया था। वे महाराजा बड़ौदा के परिसहायक (ए डी सी) और बड़ौदा क्रिकेट संघ के अवैतनिक सचिव हैं।

हनुमन्त सिंह

आज भारत के सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज श्री हनुमन्त सिंह उन बहुत थोड़े-से खिलाड़ियों में से एक हैं जिन्होंने अपने पहले ही टैस्ट मैच में शतक के साथ प्रवेश किया था। वे दाहिने हाथ के शक्तिशाली बल्लेबाज और दाहिनी भुजा के लेगब्रेक गेंदबाज हैं। उनका जन्म 29 मार्च 1939 को हुआ था और उन्होंने प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में 1956–57 में प्रवेश किया जबकि उन्होंने राजस्थान के विरुद्ध मध्यप्रदेश की ओर से खेलते हुए 14 और अपराजित 61 रन बनाए थे। वे राजस्थानी हैं और 1957–58 से लगातार राजस्थान की ओर से खेल रहे हैं। उन्होंने रणजी ट्रॉफी में 2000 से ऊपर रन बना लिए हैं। उनकी सर्वोच्च रन संख्या अपराजित 200 है जो उन्होंने 1961–62 में उत्तर प्रदेश के विरुद्ध बनाई थी। 1963–64 मे उन्होंने रणजी ट्रॉफी की 9 पारियों में, तीन बार अपराजित रहकर, 90·33 के औसत से 542 रन बनाए थे। उनकी सर्वोत्तम गेंदबाजी 1959–60 में रही जबकि उन्होंने मध्यप्रदेश को 48 रन देकर उनके 5 विकेट गिरा दिए थे।

दलीप ट्रॉफी मे वे मध्य क्षेत्र की ओर से नियमित रूप से खेल रहे हैं। 1962–63 मे उन्होंने दक्षिण क्षेत्र के विरुद्ध जो शानदार शतक बनाया था उसके अलावा वे 1964-65 में फिर उसी क्षेत्र के विरुद्ध हैदराबाद में शानदार दोहरा शतक बनाने में सफल हुए।

वे 1964 में इंग्लैंड के विरुद्ध दिल्ली में अपना पहला टैस्ट मैच खेले और उसमें उन्होंने अपने चकाचौंध करने वाले शतकीय प्रहारों से दर्शकों का मन मोह लिया। उसी वर्ष मद्रास में आस्ट्रेलिया के विरुद्ध पहला टैस्ट खेलने का उन्हें अवसर मिला और उन्होंने फिर अपना शानदार खेल दिखाया, यद्यपि

वे केवल 6 रन से अपना शतक चूक गए। बंगलौर में श्री लंका के विरुद्ध प्रथम अनौपचारिक टैस्ट में उन्होंने अपराजित रहकर 149 रन बनाए थे और हैदराबाद में दूसरे टैस्ट में उन्होंने 98 रन लिए। न्यूजीलैंड के विरुद्ध तीसरे टैस्ट मे वे 75 रन बनाकर अपराजित रहे और चौथे टैस्ट में 82 रन बना सके।

वे 1958-59 और 1959-60 में विक्रम विश्वविद्यालय और 1960-61 मे दिल्ली विश्वविद्यालय की ओर से खेले थे।

वे बांसवाड़ा के राजकुमार हैं और स्टेट बैंक आफ इण्डिया, बम्बई में एक पदाधिकारी हैं।

हार्डीकर, मनोहर एस०

श्री हार्डीकर का जन्म 8 फरवरी 1936 को बड़ौदा में हुआ था। वे दाहिने हाथ के बल्लेबाज और दाहिनी भुजा से मध्यम गति से गेंद फेंकने वाले गेंदबाज हैं। रणजी ट्रॉफी तथा टैस्ट क्रिकेट में भी उनका प्रथम प्रवेश बहुत प्रभावशाली रहा। 1955-56 में गुजरात के विरुद्ध बम्बई की ओर से खेलते हुए उन्होंने 52 रन बनाए थे और 48 रन देकर 4 विकेट तथा 30 रन देकर 3 विकेट लिए थे। टैस्ट में तो पहले ही ओवर में उन्हें एक विकेट लेने का सौभाग्य मिला। परन्तु वे केवल दो टैस्टों में ही खेल सके: 1958-59 में वेस्टइण्डीज के विरुद्ध दो बार। उनके सबसे अधिक रन 32 रहे।

रणजी ट्रॉफी में वे एक हजार से ऊपर रन बना चुके हैं। 1956-57 में गुजरात के विरुद्ध उन्होंने अपने सबसे अधिक रन 204 बनाए हैं। उनकी सर्वोत्तम गेंदबाजी 1955-56 में बंगाल के विरुद्ध रही जबकि उन्होंने 39 रन देकर 8 विकेट गिराए थे।

1953-54 से 1956-57 तक वे बम्बई विश्वविद्यालय की ओर से खेलते रहे और 1956-57 में वे अपनी टीम के कप्तान भी रहे। 1957-58 में वे एक व्यावसायिक खिलाड़ी के रूप मे हेवरिंग क्लब की ओर से उत्तर लंकाशायर लीग में भी खेले थे।

वे चश्मा लगाकर खेलते हैं। वे रिजर्व बैंक आफ इण्डिया, बम्बई मे कर्मचारी हैं।

हिंडलेकर, डी० डी०

श्री हिंडलेकर का जन्म 1 जनवरी 1909 को हुआ था। वे गुरुत्वाकर्षक ढंग से खेलने वाले भारत के श्रेष्ठ विकेट रक्षक और पारी प्रारम्भ करने वाले विश्वसनीय बल्लेबाज थे। 1936 में जब वे इंग्लैंड में भारत की ओर से

खेले तो उन्होंने अपने शानदार विकेट रक्षण से दर्शकों को प्रभावित कर दिया। वे 1946 में इंग्लैंड के दौरे पर जाने वाली भारतीय टीम के भी सदस्य थे।

1936 में इंग्लैंड के विरुद्ध टैस्ट में उन्होंने 26 और 17 रन बनाए थे और तीनों टैस्टों में खेले थे। वे लार्ड टेनीसन की टीम के विरुद्ध भी खेले थे। बम्बई चतुष्कोणीय और पंचकोणीय प्रतियोगिताओं में वे हिन्दू क्लब की ओर से खेलते थे। उन्होंने अपनी सर्वोत्तम बल्लेबाजी 1936 में मुस्लिम क्लब के विरुद्ध दिखाई थी जबकि उन्होंने 135 रन बनाए थे।

वे 1934–35 से 1945–46 के बीच रणजी ट्रॉफी में बम्बई की ओर से खेलते रहे और उसमें उन्होने 34 पारियों में कुल 577 रन बनाए। इस टूर्नामेंट में उन्होने अधिक से अधिक 54 रन दो बार यानी 1935–36 में मद्रास के विरुद्ध और 1937-38 में नवानगर के विरुद्ध बनाए थे। 1934–35 में उन्होंने विकेट रक्षण करते हुए, पश्चिम भारत के 6 बल्लेबाजों को, विकेट के पीछे लपक लिया था।

उनकी मृत्यु 30 मार्च 1949 को हुई।

एम.सी.सी.की टीम भारत में 1926-27

भारत, वर्मा और श्रीलंका का भ्रमण करने वाला अंग्रेज क्रिकेट खिलाड़ियों का चौथा दल 16 अक्टूबर, 1926 को कराची पहुँचा जिसके निम्नलिखित सदस्य थे :

1. ए. ई. आर. गिलीगन (कप्तान)
2. एम. डब्लू. टेट
3. ए. सेन्डम
4. जी. एफ. अर्ले
5. एम. एल. हिल
6. जी. गियेरी
7. इ. डब्लू. एस्टिल
8. जे. ब्राउन
9. जी. एस. बोयज
10. आर. सी. चीचेस्टर कॉन्स्टेबल
11. आर. ई. एस. वायट
12. पी. टी. ऐकेर्सली
13. जे. एच. पारसन्स
14. जे. मरसर
15. एम. लीलैण्ड
16. ए. डोलफिन

पटियाला नरेश सर भूपेन्द्र सिंह जी ने अतिथि टीम की ओर से कतिपय मैचों में भाग लेकर 6 पारी में 75 रन बनाये।

इस टीम ने 31 मैच खेले जिनमें नौ मैचों में वे विजयी रहे और शेष मैचों में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका। खेले गये मैचों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :

कराची में :

1. पारसी मुसलिम एकादश के विरुद्ध : एम. सी. सी. : 339 और 4 विकटों पर 77 रन। पारसी-मुसलिम एकादश : 187 और 3 विकटों पर 138 रन। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।
2. हिन्दू व शेष संयुक्त एकादश के विरुद्ध : हिन्दू व शेष संयुक्त एकादश :

इंग्लैंड का 1911 में भ्रमण करने वाली पटियाला के महाराजा की भारतीय क्रिकेट टीम

•

भारत का 1926–27 में भ्रमण करने वाली एम. सी. सी. टीम

भूमि पर : पी. टी. ऐकेर्सली और आर. ई. एस. वायट

कुर्सी पर : जे. एच. पारसन्स, आर. सी. चीचेस्टर कॉन्स्टेबल, ए. इ. आर. गिलीगन (कप्तान) इ. डब्लू. एस्टिल और जी. एफ. अर्ल।

खड़े हुए : जे. मरसर, जे. ब्राउन, ए. सेन्डम, जी. गियेरी, एम. एल. हिल, जी. एस. बोयज और एम. डब्लू. टेट।

इंग्लैंड को 1932 में भ्रमण करने वाली भारतीय टीम
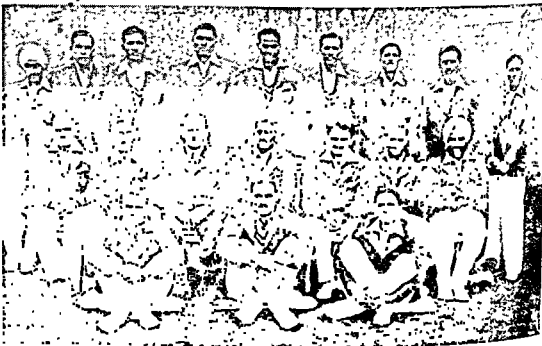
र पर : जे. नाऊमल, एस. एच. एम. कोल्हा और एन. डी. मार्शल ।
ीं पर एस. वजीर अली, सी. के. नायुड़, इ. डब्लू. सी. रिकेट्स (प्रबन्धक), पोरबन्दर के महाराजा नटवर सिहजी (कप्तान), घनश्याम सिहजी (उप-कप्तान), एस. नजीर अली और एस. जोगेन्द्र सिह ।
हुए : लालसिह, पी. ई. पालिया, एम. जहांगीर खां, मोहम्मद निसार, एल. अमरसिह, बी. ई. कापडिया, एस. आर. गोदाम्बे, गुलाम मोहम्मद और जे. जी. नवले ।

भारत का 1933-34 में भ्रमण करने वाली एम. सी. सी. टीम

: ए. एच. वेकवेल्म और आर. जे. ग्रिगरी ।
एम. एस. निकल्स, जे. एच. ह्यू मन, सी. एफ. वालटर्स (उप-कप्तान), डी. आर. जारडीन (कप्तान), बी. एच. वेलेनटाइन, सी. मेरियट और एच. वेरीटी ।
एच. इलियट, एम. एस. टाउनसेंड, ई. डब्लू. क्लार्क, ई. डब्लू. सी. रिकेट्स, (प्रबन्धक)

335। एम. सी. सी. : 5 विकटों पर 249। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

3. सिन्ध निवासी यूरोपियों के विरुद्ध : एम. सी. सी. 377 और 3 विकटों पर 139. सिन्ध निवासी यूरोपीय : 151. मैच मे हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।
4. अखिल कराची एकादश के विरुद्ध : एम. सी. सी. . 517. अखिल कराची एकादश : 129 और 240. एम. सी. सी. एक पारी और 148 रनों से विजयी।

रावलपिंडी में :

5. पिंडी स्थित यूरोपियों के विरुद्ध : एम. सी. सी. 8 विकटों पर 432 और पारी समाप्ति की घोषणा और 5 विकटों पर 185 और पारी समाप्ति की घोषणा। पिंडी स्थित यूरोपीय : 145 और 1 विकेट पर 75। मैच में हार-जीत का फैसला नही हो सका।
6. रावलपिंडी व उत्तर-पश्चिमी सीमान्त एकादश के विरुद्ध : रावलपिंडी व उत्तर-पश्चिमी सीमान्त एकादश : 195 और 3 विकटों पर 108. एम. सी. सी. 4 विकटों पर 330 और पारी समाप्ति की घोषणा। मैच में हार-जीत का फैसला नही हो सका।

लाहौर में :

7. उत्तर भारत के विरुद्ध : उत्तर भारत : 100 और 101. एम. सी. सी. : 6 विकटों पर 333 और पारी समाप्ति की घोषणा। एम.सी. सी. एक पारी और 132 रनों से विजयी।
8. भारतीय सेना के विरुद्ध : सेना : 73 और 5 विकटो पर 212. एम. सी. सी. : 6 विकटों पर 252 और पारी समाप्ति की घोषणा। मैच में हार-जीत का फैसला नही हो सका।
9. दक्षिणी पंजाब के विरुद्ध : एम. सी. सी. : 285. दक्षिणी पंजाब : 81 और 9 विकटों पर 148. मैच मे हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

अजमेर में :

10. राजपुताना व मध्य भारत संयुक्त एकादश के विरुद्ध : राजपुताना व मध्य भारत : 123. और 47. एम. सी. सी. : 337. एम. सी. सी. एक पारी और 167 रनो से विजयी।
11. राजपुताना व बी. बी. एंड सी. आई. रेलवे संयुक्त एकादश के विरुद्ध : राजपुताना व बी. बी. एंड सी. आई. रेलवे : 155 और 4 विकटों

पर 126. एम. सी. सी. : 287. मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

बम्बई में :

12. हिन्दू जीमखाना के विरुद्ध : एम. सी. सी. : 356 और 1 विकेट पर 74 रन। हिन्दू जीमखाना : 363 रन। मैच में हार-जीत का फैसला नही हो सका।
13. यूरोपीय पारसी एकादश के विरुद्ध : एम. सी. सी. : 334 और 135. यूरोपीय-पारसी एकादश : 252. मैच में हार-जीत का फैसला नही हो सका।
14. हिन्दू-मुसलिम एकादश के विरुद्ध : हिन्दू-मुसलिम एकादश : 167 और 4 विकटों पर 148. एम. सी. सी. : 324. मैच में हार-जीत का फैसला नही हो सका।
15. बम्बई प्रान्त के विरुद्ध : बम्बई प्रान्त : 115 और 203. एम. सी. सी. : 435. एम. सी. सी. एक पारी और 117 रनों से विजयी।
16. अखिल भारतीय एकादश के विरुद्ध : एम सी. सी. : 362 और 5 विकटों पर 97. अखिल भारतीय एकादश : 437. मैच मे हार-जीत का फैसला नही हो सका।

कलकत्ता में :

17. बगाल निवासी अंग्रेजो के विरुद्ध : बंगाल निवासी अंग्रेज : 7 विकटों पर 152 और पारी समाप्ति की घोषणा। एम. सी. सी : 5 विकटों पर 102. मैच में हार-जीत का फैसला नही हो सका।
18. अखिल भारतीय एकादश के विरुद्ध : अखिल भारतीय एकादश : 146 और 269. एम. सी. सी. 233 और 6 विकटो पर 185. एम. सी. सी. चार विकटों से विजयी।
19. आंग्ल-भारतीयों व भारतीयों के विरुद्ध : एम. सी. सी. : 2 विकटों पर 222 और पारी समाप्ति की घोषणा। भारतीय टीम : 103. मैच में हार-जीत का फैसला नही हो सका।

रंगून में :

20. रंगून जीमखाना के विरुद्ध : एम. सी. सी. : 6 विकटों पर 381 और पारी समाप्ति की घोषणा। रंगून जीमखाना : 173 और 5 विकटों पर 211. मैच मे हार-जीत का फैसला नही हो सका।
21. अखिल बर्मा के विरुद्ध : अखिल बर्मा : 144 और 137.

एम. सी. सी. : 276 और बिना विकेट खोये 7 रन। एम. सी.सी. दस विकटों से विजयी।

मद्रास में :

22. भारतीय एकादश के विरुद्ध : भारतीय टीम : 238. एम. सी. सी. 244. मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।
23. अखिल मद्रास एकादश के विरुद्ध : एम. सी. सी. : 361 और 7 विकटों पर 233 रन और पारी समाप्ति की घोषणा। मद्रास : 256 और 127. एम. सी. सी. 211 रनों से विजयी।

श्रीलंका में :

24. श्रीलंका निवासी यूरोपियों के विरुद्ध : श्रीलंका निवासी यूरोपीय : 154 और 4 विकटों पर 194. एम. सी. सी. : 419. मैच में हार-जीत का फैसला नही हो सका।
25. श्रीलंकावासियों के विरुद्ध : श्रीलंकावासी : 165 और 8 विकटो पर 190. एम. सी. सी. : 483. मैच में हार-जीत का फैसला नही हो सका।
26. अपकंट्री के विरुद्ध : एम. सी. सी. : 223 और 1 विकेट पर 74. अप-कंट्री : 66. मैच में हार-जीत का फैसला नही हो सका।
27. अखिल श्रीलका के विरुद्ध : एम. सी. सी. : 8 विकटों पर 431 और पारी समाप्ति की घोषणा। अखिल श्रीलंका : 105 और 235. एम. सी. सी. एक पारी और 91 रनों से विजयी।

अलीगढ़ में :

28. एम. ए. ओ. कालेज के विरुद्ध : एम. ए. ओ. कालेज : 86 और 97. एम. सी. सी. : 197. एम सी. सी. एक पारी और 14 रनों से विजयी।

दिल्ली में :

29. दिल्ली व जिला एकादश के विरुद्ध : एम. सी सी. : 232. दिल्ली व जिला : 9 विकटों पर 92. मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।
30. उत्तर भारत के विरुद्ध : एम. सी. सी. 9 विकटों पर 369 और पारी समाप्ति की घोषणा। उत्तर भारत : 185 और एक विकेट पर 260. मैच मे हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

पटियाला में :

31. पटियाला एकादश के विरुद्ध : पटियाला एकादश : 4 विकटों पर 303 और पारी समाप्ति की घोषणा। एम. सी. सी. : 9 विकटों पर 252. मैच में हार-जीत का फैसला नही हो सका।

इस मैच-शृंखला मे निम्नलिखित खिलाड़ियों ने अपने शतक पूरे किये :

एम. सी. सी. की ओर से :

ए सेन्डम (8)

129 वि० हिन्दू व शेष एकादश, कराची में।
150 वि० रावलपिंडी व उत्तर-पश्चिम सीमान्त, रावलपिंडी मे।
141* वि० भारतीय सेना, लाहौर में।
103 वि० राजपुताना व बी. बी. एंड सी. आई. रेलवे, अजमेर में।
124 वि० बम्बई प्रान्त, बम्बई में।
112* वि० भारतीय और आंग्ल भारतीय, कलकत्ता में।
112 वि० बंगाल निवासी यूरोपीय, कलकत्ता में।
108 वि० अप-कंट्री, श्रीलंकावासी, दिलकोया मे।

आर. ई. एस. वायट (5)

125* वि० संयुक्त एकादश, रावलपिंडी मे।
130* वि० उत्तर भारत, लाहौर में।
138 वि० बम्बई प्रान्त, बम्बई में।
124 वि० श्रीलंकावासी, कोलम्बो में।
101 वि० अखिल श्रीलंका, कोलम्बो में।

एम. डब्लू. टेट (3)

103 वि० संयुक्त एकादश, रावलपिंडी में।
133 वि० यूरोपियन-पारसी, बम्बई मे।
121 वि० श्रीलंकावासी, कोलम्बो में।

जे. एच. पारसन (2)

139 वि० संयुक्त एकादश, कराची मे।
160 वि० रंगून जीमखाना, रंगून में।

जी. एफ. अर्ल (1)

130 वि० हिन्दू जीमखाना, बम्बई में।

एम. सी सी. के विरुद्ध :

सी. के. नायडू

153 हिन्दू जीमखाना की ओर से बम्बई में

डी. बी. देवधर

148 अखिल भारतीय टीम की ओर से, बम्बई में।

एस. वजीर अली

113* उत्तर भारत की ओर से, दिल्ली मे और

149 पटियाला नरेश एकादश की ओर से, पटियाला में।

एम. सी. सी. के निम्नलिखित बल्लेबाजो ने इस भ्रमण में अपने हजार रन पूरे किए :

1. ए. सेन्डम ... 1977 रन। बल्लेबाजी मे इनका औसत 86.17 रन प्रति पारी रहा जो सर्वोच्च था।
2. आर. ई. एस. वायट .... 1821 रन।
3. जे. एच. पारसन्स ... 1303 रन।
4. एम. डब्लू. टेट ... 1249 रन।

एम डब्लू. टेट ने 1721 रन देकर 128 विकट लिये। उनका औसत 13.44 रन प्रति विकेट रहा और इस प्रकार उन्होंने "क्रिकेटियर्स डबल" (क्रिकेटियर-युगल) पूरा किया।

---

* अपराजित।

लीटन में : मई 28, 29 और 31 को

इसेक्स : 169 (अमरसिंह ने 49 रन देकर 5 विकटें लीं) और एक विकेट पर 142 (क्रौले 77*)। भारत : 7 विकटों पर 307 और पारी समाप्ति की घोषणा (वजीर अली 100, सी० के० नायुडु 82)। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

नॉरविच में : जून 2 और 3 को

भारत : 101 और 9 विकटों पर 204 और पारी समाप्ति की घोषणा (पालिया 56) नॉरफोक : 49 (निसार ने 14 रन देकर 6 विकटें लीं) और 128 (निसार ने 43 रन देकर 8 विकटें लीं)। भारत 128 रनों से विजयी।

कीटरिंग में : जून 4, 6 और 7 को

नार्थम्पटनशायर : 155 (गुलाम मोहम्मद ने 45 रन देकर 5 विकटें लीं) और 151 (स्नोडेन 51)। भारत : 279 (सी० के० नायुडु 80, कोल्हा 63) और बिना विकेट खोये 29। भारत दस विकटों से विजयी।

केम्ब्रिज में : जून 8, 9 और 10 को

केम्ब्रिज विश्वविद्यालय : 92 (अमरसिंह ने 30 रन देकर 5 विकटें लीं) और 274 (रेटक्लिफ 112*, हेडिंगम 80, अमरसिंह ने 70 रन देकर 6 विकटें लीं) भारत : 308 (कोल्हा 96, राउट ने 71 रन देकर 5 विकटें लीं) और एक विकेट पर 59। भारत 9 विकटों से विजयी।

लिवरपूल में : जून 11, 13 और 14 को

भारत : 493 (अमरसिंह 131*, सी० के नायुडु 125, जहांगीर खाँ 68, नवले 64) और 2 विकटों पर 36. लंकाशायर : 399 (पेंटर 153, टायडस्ली 78)। मैच मे हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

लिंकन में : जून 15 और 16 को

इस्टर्न काउंटीज : 122 और 173 (एस० डी० रोड्स 90)। भारत : 7 विकटों पर 424 और पारी समाप्ति की घोषणा (मार्शल 146, घनश्यामसिंह जी 100*, वजीर अली 64)। भारत एक पारी और 129 रनों से विजयी।

---

* अपराजित

वूर्सेस्टर में : जून 18, 20 और 21 को

वूर्सेस्टरशायर : 294 (पटौदी के नवाब 83, गिबन्स 69, नाऊमल ने 68 रन देकर 5 विकटें ली) और 210 (राइट 86, अमरसिंह ने 78 रन देकर 7 विकटें ली)। भारत : 297 (नजीर अली 58, लालसिंह 52) और 7 विकटों पर209 (सी० के० नायुडू 61, नजीर अली 56)। भारत सात विकटो से विजयी।

ऑक्सफोर्ड में : जून 29 और 30 को

भारत : 373 (वजीर अली 155, निसार 53)
ऑक्सफोर्डशायर : 165 (अमरसिंह ने 50 रन देकर 5 विकटें ली)।
मैच में हार-जीत का फैसला नही हो सका।

नौटिंगम में : जुलाई 2, 4 और 5 को

नौटिंगम : 188 (अमरसिंह ने 55 रन देकर 7 विकटें ली और 288 (हेरिस 67, लिले 55, सी० के० नायुडू ने 95 रन देकर 5 विकटें ली) भारत : 125 (वोस ने 51 रन देकर 5 विकटें ली) और 127. भारत की 224 रनों से पराजय।

स्ट्रोक-इन-ट्रेन्ट में : जुलाई 6 और 7 को

स्टेफोर्डशायर : 209 (गेल 66) और 6 विकटों पर 142 और पारी समाप्ति की घोषणा (मेयर 57*) भारत : 162 (टेलर ने 61 रन देकर 7 विकटें ली) और 6 विकटों पर 94। मैच में हार-जीत का फैसला नही हो सका।

मैनचेस्टर में : जुलाई 9, 11 और 12 को

लंकाशायर : 7 विकटो पर 442 और पारी समाप्ति की घोषणा (टायडस्ले 196, वॉटसन 142) और 4 विकटों पर 27. भारत : 204 (कोल्हा 122, बटरवर्थ ने 85 रन देकर 6 विकटें ली) और 264 (नाऊमल 86)। भारत की 6 विकटों से पराजय।

हेरोगेट में : जुलाई 16, 18 और 19 को

भारत : 160 (वेरीटी ने 65 रन देकर 5 विकटें ली) और 68 (मेकॉले ने 21 रन देकर 8 विकटें ली)। यार्कशायर : 8 विकटों पर 161 और पारी समाप्ति की घोषणा (निसार ने 21 रन देकर 5 विकटें ली) और 4 विकटो पर 68। भारत की 6 विकटों से पराजय।

---

* अपराजित

लार्ड्स में : जुलाई 20, 21 और 22 को

भारत : 7 विकटों पर 409 और पारी समाप्ति की घोषणा (नाऊमल 164, सी० के० नायुडू 101, नजीर अली 55) और 2 विकटों पर 14. मिडलसेक्स : 253 (हेन्डरेन 51) और 292 (हर्न 60,हेन्डरेन 58, सी० के० नायुडू ने 53 रन देकर 5 विकटें ली)। भारत आठ विकटों से विजयी।

ब्रोरफ्टी फेरी में : जुलाई 23, 25 और 26 को

भारत : 146 (मेलविली ने 32 रन देकर 6 विकटें ली) और 245 (वजीर अली 126, ऐन्डरसन ने 51 रन देकर 6 विकटें ली)। स्काटलैण्ड : 81 और 110, भारत 200 रनों से विजयी।

न्यूकासल में : जुलाई 27 और 28 को

भारत : 101 (जे० ऐलन ने 32 रन देकर 5 विकटें ली) और 8 विकटों पर 138 और पारी समाप्ति की घोषणा। नार्थम्बरलैण्ड : 143 और 2 विकटों पर 45. मैच में हार-जीत का फैसला नही हो सका।

स्वान सी में : जुलाई 30, अगस्त 1 और 2 को

भारत : 229 (सी० के० नायुडू 67, मरसर ने 44 रन देकर 5 विकटें ली) और 87. ग्लेमोरगन : 81 (अमरसिंह ने 31 रन देकर 6 विकटें ली) और 181. भारत 34 रनों से विजयी।

बरमिंघम में : अगस्त 3, 4 और 5 को

भारत : 282 (नाऊमल 72, अमरसिंह 57, पेयनी ने 110 रन देकर 5 विकटें ली) और 7 विकटों पर 344 और पारी समाप्ति की घोषणा (वजीर अली 162, मार्शल 102*, जेरेट ने 158 रन देकर 5 विकटें ली)। वारविकशायर : 354 (वायर 83, किलनर 60, पारसन 53) और 3 विकटों पर 110। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

ब्रिसटल में : अगस्त 6, 8 और 9 को

भारत : 236 (वजीर अली 82) और 390 (कोल्हा 94, जोगेन्द्रसिंह 79, अमरसिंह 63, गोडार्ड ने 115 रन देकर 6 विकटें ली। ग्लाउस्टरशायर : 230 (नायन 70, अमरसिंह ने 90 रन--देकर 8 विकटें ली) और 341 (डाको 95)। भारत 55 रनों ने विजयी।

वेस्टन-सुपर-मेयर में : अगस्त 10, 11 और 12 को

भारत : 285 (नाऊमल 81, नजीर अली 62) और 7 विकटों पर

---

* अपराजित

234 और पारी समाप्ति की घोषणा (सी० के० नायुडू 130*)। सोमरसेट 177 (निसार ने 45 रन देकर 6 विकटें ली) और 179। भारत 163 रनों से विजयी।

ओवल में : अगस्त 13, 15 और 16 को

सर्रे : 9 विकटों पर 387 और पारी समाप्ति की घोषणा (वाइटर फील्ड 101*, एम० ऐलम 60, पारकर 56*) और 3 विकटों पर 95 रन। भारत : 204 (नजीर अली 64, फेंडर ने 58 रन देकर 5 विकटें ली) और 8 विकटों पर 322 और पारी समाप्ति की घोषणा (नजीर अली 84, वजीर अली 82)। मैच मे हार-जीत का फैसला नही हो सका।

आइलोस्टन में : अगस्त 17, 18 और 19 को

डर्बीशायर 248 (डी० स्मिथ 87) और 168 (रिचार्डसन 56)। भारत 205 (नाऊमल 101, टी० मिचेल ने 77 रन देकर 5 विकटें ली) और 202। भारत की 9 रनो से पराजय।

लीस्टर में : अगस्त 20, 22 और 23 को

भारत : 7 विकटों पर 412 और पारी समाप्ति की घोषणा (वजीर अली 178, नाऊमल 63, पालिया 53)। लीस्टरशायर 106 (सी० के० नायुडू ने 21 रन देकर 5 विकटें ली) और 291 (स्लेरी 124*)। भारत की एक पारी और 15 रनो से विजय।

कैंटरबरी में : अगस्त 24, 25 और 26 को

कैंट : 295 (चेपमैन 96, वूले 68, निसार ने 92 रन देकर 6 विकटें ली) और 154 (पियर्स 65, अमरसिंह ने 57 रन देकर 5 विकटें ली)। भारत : 270 (सी० के० नायुडू 99) और 154 (फ्री मैन ने 69 रन देकर 6 विकटें ली)। भारत की 25 रनों से पराजय।

वेस्ट ब्रिजफोर्ड में : अगस्त 27 और 29 को

भारत : 152 (जहांगीर खाँ 63*) और 104। सर जूलियन कहान एकादश : 342 (न्यूमैन 97, मेक्सवेल 81, अमरसिंह ने 107 रन देकर 6 विकटें ली)। भारत की एक पारी और 86 रनों से पराजय।

ऑस्टरली पार्क में : अगस्त 31 और सितम्बर 1 को

भारत : 4 विकटों पर 343 और पारी समाप्ति की घोषणा (वजीर अली 141, सी० के० नायुडू 104*)। भारतीय जीमखाना : 320

---

* अपराजित

(टी० के० कॉन्ट्रेक्टर 80, एच० एस० मलिक 75, डी० लीवर्ज 58, ए० डीअवोनी 50, सी० के० नायुडू ने 81 रन देकर 5 विकटें लीं)। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

फॉकस्टोन में : सितम्बर 3, 5 और 6 को

इंग्लैंड : 5 विकटों पर 282 और पारी समाप्ति की घोषणा(ऐम्स 105*, होन 67)। भारत : 165 और 77। भारत की एक पारी और 40 रनों से पराजय।

स्कारबॉरो में : सितम्बर 7, 8 और 9 को

एच० डी० जी० लिवीसन गोवर एकादश : 5 विकटों पर 305 और पारी समाप्ति की घोषणा (सटक्लिफ 106, लीलैण्ड 70) और बिना विकट खोये 99 (स्टेपल्स 58*)। भारत : 280 (अमरसिंह 107, वी० जप ने 86 रन देकर 5 विकटें लीं)। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

टैस्ट मैच

भारत ने सबसे पहले टैस्ट मैच के लिए लार्ड्स के विख्यात मैदान में शनिवार, 25 जून, 1932 को प्रवेश किया और वह भी बहुत गौरव से। इन तीन दिनों में भारत ने, जो अभी क्रिकेट में दूध मुंहा बच्चा ही था, इंग्लैंड को लोहे के चने चबा दिये और अपनी इज्जत बचाने के लिये इंग्लैंड के खिलाड़ियों को अपनी पूरी शक्ति लगानी पड़ी। इंग्लैंड की क्या ही बढ़िया टीम थी। उसमें सटक्लिफ और होम्स का पारी प्रारम्भ करने वाला जमा हुआ जोड़ा जिसने पिछले सप्ताह ही इसेक्स के विरुद्ध प्रथम विकेट की साझेदारी में 555 रन बनाए थे; वूले, इंग्लैंड का सर्वश्रेष्ठ बायें हाथ से खेलने वाला बल्लेबाज; हेमंड, इंग्लैंड का हर क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी; जारडीन, संकट में काम आने वाला बल्लेबाज और पराजय न मानने वाला जोशीला कप्तान; ऐम्स, इंग्लैंड का निपुण विकेट-कीपर बल्लेबाज, पेंटर, शेरे-दिल खिलाड़ी; रोबिन्स, चतुर और सर्वोन्मुख खिलाड़ी; ब्राउन, वोस और वाउज, उत्तम और दक्ष गेंदबाज। भारत ने अब तक जितने भी टैस्ट मैच इंग्लैंड अथवा अन्य देशों के साथ खेले है उनमें से किसी में भी उसे इससे अधिक शक्तिशाली टीम का सामना शायद ही कभी करना पड़ा हो।

टॉस जीत कर जारडीन ने प्रथम बल्लेबाजी ली और सटक्लिफ और होम्स ने पारी प्रारम्भ की। लम्बे-तगड़े निसार ने मण्डप की ओर से गोली के समान तेज गेंदबाजी की। मेधावी और शानदार गेंदबाज अमर सिंह ने

---

* अपराजित

गेंद को दक्षता से इधर-उधर घुमा कर बल्लेबाजों को विस्मित कर दिया। अपने तीसरे ओवर में निसार ने दोनों बल्लेबाजो के डंडे उखाड दिये जब कुल रन संख्या 11 थी। सात रन ही और बने थे कि दूसरा, रन लेते समय वूले और हेमन्ड मे आपस में गलत फहमी हो गई और लाल सिंह ने पलक मारते ही गेंद नवले के पास फेंक दी जिसने कि गिल्लियाँ उडा दी। तीस मिनट के खेल में ही तीन अंग्रेज बल्लेबाजों को वापस मण्डप को लौट जाना पड़ा।

इंग्लैंड के ऐसे कठिन समय में उसका सधा हुआ बल्लेबाज, जारडीन विकटो पर पहुँचा और हेमण्ड की साझेदारी में भारत की भयंकर गेंदबाजी को उसने धीरे-धीरे निस्तेज किया। इस जोड़े ने 82 बहुमूल्य रन जोड़े थे कि अमरसिंह ने हेमण्ड का डंडा उखाड दिया। अचूक गेंदबाजी करते हुए नायुडू ने पेंटर को भी आउट कर दिया। ऐम्स ने अपने कप्तान का अच्छा साथ दिया लेकिन इस युगल के बिछुड़ते ही पारी 259 रनो पर समाप्त हो गई। निसार ने 5 विकटें 93 रन देकर गिराईं; नायुडू ने 2 विकटें 40 रनों पर ली और अमर सिंह ने 75 रन देकर 2 विकटें प्राप्त की।

इस दिन के खेल की समाप्ति पर भारत ने बिना विकेट खोये 30 रन बना लिए थे। नाऊमल और नवले खेल रहे थे।

खेल के दूसरे दिन नायुडू (40) और वजीर अली (31) ने साहसिक बल्लेबाजी की और एक समय भारत के केवल 2 विकटो पर 110 रन बन गये थे। लेकिन इस युगल के अलग होने पर विकटें बराबर गिरने लगीं और अन्तिम विकेट गिरने पर भारत इंग्लैंड की कुल रन संख्या से 70 रन पीछे था। इस कमी को भारत ने इंग्लैंड की द्वितीय पारी मे सटक्लिफ, होम्स, हेमण्ड और वूले को केवल 67 रनों पर आउट करके पूरा कर लिया।

तीसरे दिन जारडीन और पेंटर के प्रयत्नो से स्थिति में सुधार हुआ और 8 विकटों पर 275 रन बना कर इंग्लैंड ने पारी समाप्ति की घोषणा कर दी। *भारत को जीत के लिये 346 रन बनाने थे।*

कार्य तो कठिन था लेकिन नवले, नाऊमल, अमर सिंह, वजीर अली और लाल सिंह की बल्लेबाजी ने आशा उत्पन्न की। दूसरे बल्लेबाज असफल रहे और पारी 187 पर समाप्त हो गई। इंग्लैंड 158 रनों से विजयी हुआ लेकिन इसके लिये उसे काफी समय तक चिन्तित रहना पड़ा।

रनों का सविस्तार विवरण इस प्रकार है: मैच लॉर्ड्स में जून 25, 26 और 27 को खेला गया। टॉस इंग्लैंड ने जीता और 158 रनो से मैच भी जीता। कप्तान: डी० आर० जारडीन (इंग्लैंड) और सी० के० नायुडू (भारत), विकेट-रक्षक: एल० ई० जी० ऐम्स (इंग्लैंड) और जे० जी० नवले (भारत), निर्णायक: एफ० चेस्टर और जे० हार्डस्टाफ (वरिष्ठ)।

इंग्लैंड

सटक्लिफ बा० निसार	3	कैं० नायुडू बा० अमर सिंह	19
होम्स बा० निसार	6	बा० जहाँगीर खाँ	11
वूले रन आउट	9	कैं० कोल्हा बा० जहाँगीर खाँ	21
हेमण्ड बा० अमरसिंह	35	बा० जहाँगीर खाँ	12
जारडीन कैं० नवले बा० नायुडू	79	अपराजित	85
पेंटर पगबाधा बा० नायुडू	14	बा० जहाँगीर खाँ	54
ऐम्स बा० निसार	65	बा० अमर सिंह	6
रोबिन्स कैं० लाल सिंह बा० निसार	21	कैं० जहाँगीर खाँ बा० निसार	30
ब्राउन कैं० अमर सिंह बा० निसार	1	कैं० कोल्हा बा० नाऊमल	29
वोस अपराजित	4	अपराजित	0
बाउज कैं० निसार बा० अमरसिंह	7		
अतिरिक्त	15	अतिरिक्त	8
		आठ विकटों पर पारी समाप्ति की घोषणा	
	259		275

विकटों का पतन

प्रथम पारी : 1—8, 2—11, 3—19, 4—101, 5—149, 6—166, 7—229, 8—231, 9—252, 10—259

द्वितीय पारी : 1—30, 2—38, 3—54, 4—67, 5—156, 6—169, 7—222, 8—271

भारत की गेंदबाजी

	ओ	मे ओ	रन	विकेट	ओ	मे ओ	रन	विकेट
निसार	26	3	93	5	18	5	42	1
अमर सिंह	31·1	10	75	2	41	13	84	2
जहाँगीर खाँ	17	7	26	0	30	12	60	4
सी. के. नायुडू	24	8	40	2	9	0	21	0
पालिया	4	3	2	0	3	0	11	0
नाऊमल	3	0	8	0	8	0	40	1
वजीर अली	—	—	—	—	1	0	9	0

भारत

नवले बा० बाउज	12	पगवाधा बा० रोबिन्स	13
नाऊमल पगवाधा बा० रोबिन्स	33	बा० ब्राउन	25
वजीर अली पगवाधा बा० ब्राउन	31	कै० हेमण्ड बा० बोस	39
सी० के० नायुडू कै० रोबिन्स बा० वोस	40	बा० बाउज	10
कोल्हा कै० रोबिन्स बा० बाउज	22	बा० ब्राउन	4
नजीर अली बा० बाउज	13	कै० जारडीन बा० बाउज	6
पालिया बा० बोस	1	अपराजित	1
लाल सिंह कै० जारडीन बा० बाउज	15	बा० हेमण्ड	29
जहाँगीर खाँ बा० रोबिन्स	1	बा० बोस	0
अमरसिंह कै० रोबिन्स बा० बोस	5	कै० और बा० हेमण्ड	51
निसार अपराजित	1	बा० हेमण्ड	0
अतिरिक्त	15	अतिरिक्त	9
	189		187

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1—39, 2—63, 3—110, 4—139, 5—160, 6—165, 7—181, 8—182, 9—188, 10—189.

द्वितीय पारी : 1—41, 2—41, 3—52, 4—65, 5—83, 6—108, 7—108, 8—182, 9—182, 10—187.

इंग्लैंड की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
बाउज	30	13	49	4	14	5	30	2
बोस	17	6	23	3	12	3	28	2
ब्राउन	25	7	48	1	14	1	54	2
रोबिन्स	17	4	39	2	14	5	57	1
हेमण्ड	4	0	15	0	5.3	3	9	3

एम. सी. सी. भारत में, 1933-34

मेरलीबोन क्रिकेट क्लब का भारत में डगलस जारडीन के नेतृत्व में एक शक्तिशाली टीम भेजना उचित ही था क्योंकि लॉर्ड्स पर भारत के शानदार प्रदर्शन को इंग्लैंड भूला नही था। अतिथि टीम इकतीस मे से पन्द्रह मैचों मे विजयी रही और केवल एक मैच में उसकी पराजय हुई। टीम के खिलाड़ी निम्नलिखित थे :

1. डी० आर० जारडीन (कप्तान)
2. सी० एफ० वालटर्स (उप-कप्तान)
3. बी० एच० वेलेनटाइन
4. एच० वेरीटी
5. एच० ईलियट
6. जेम्स लेंग्रिज
7. ए० मिचल
8. एल० एफ० टाउनसेंड
9. सी० जे० बारनेट
10. ई० डब्लू० क्लार्क
11. एम० एस० निकल्स
12. ए० एच० बेकवेल
13. डब्लू० एच० वी० लेवेट
14. जे० एच० ह्यूमन
15. आर० जे० ग्रिगरी
16. सी० मेरियट

मेजर ई० डब्लू० सी० रिकेट्स (प्रबन्धक)

टैस्ट मैचों के अतिरिक्त अन्य खेले गये मैचो का संक्षेप में विवरण इस प्रकार है :

कराची में, अक्टूबर 15 और 16 को

एम० सी० सी० 292 (वालटर्स 71, बारनेट 62, वेलेनटाइन 59, जे० हेरिस ने 89 रन देकर 5 विकटें ली) और चार विकटों पर 70 रन और पारी समाप्ति की घोषणा। सी० बी० रूबी एकदाश : 99 और 6 विकटों पर 103 रन। मैच में हार-जीत का फैसला नही हो सका।

कराची में, अक्टूबर 18 और 19 को

एम० सी० सी० : 8 विकटों पर 362 और पारी समाप्ति की घोषणा (वालटर्स 101, वेकवेल 96, वेलेनटाइन 59, मिचल 53)। कराची एकादश : 89 और 4 विकटों पर 112 रन। मैच मे हार-जीत का फैसला नही हो सका।

कराची में, अक्टूबर 21, 22 और 23 को

एम० सी० सी० : 5 विकटों पर 307 और पारी समाप्ति की घोषणा (बारनेट 122, जारडीन 10।*) और 8 विकटों पर 140 और पारी समाप्ति की घोषणा (बारनेट 54)। सिन्ध : 189 (वेरीटी ने 46 रन देकर 6 विकटें ली) और 167 (एम० जे० मोबेद 60)। एम०सी०सी० 91 रनो से विजयी।

पेशावर में, अक्टूबर 28 और 29 को

पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्त : 94 (निकल्स ने 28 रन देकर 5 विकटें ली) और 121. ए० सी० सी० : 7 विकटों पर 350 और पारी समाप्ति की घोषणा (टाउनसेंड 94, मिचल 84, जारडीन 67)। एम० सी० सी० एक पारी और 135 रनों से विजयी।

लाहौर में, नवम्बर 1 और 2 को

एम० सी० सी० : 7 विकटों पर 402 और पारी समाप्ति की घोषणा (मिचल 184, लैंग्रिज 52, वेलेनटाइन 51, टाउनसेंड 50)। राज्यपाल एकादश : 8 विकटों पर 253 (सी० के० नायुडू 116)। मैच में हार जीत का फैसला नही हो सका।

अमृतसर में, नवम्बर 9, 10 और 11 को

दक्षिण पंजाब : 264 (अमरनाथ 109, पटियाला के युवराज 66) और 3 विकटों पर 103 (वजीर अली 63)। एम० सी० सी० 7 विकटों पर 450 और पारी समाप्ति की घोषणा (टाउनसेंड 93, वालटर्स 86, वेलेनटाइन 75, निकल्स 55)। मैच में हार-जीत का फैसला नही हो सका।

पटियाला में, नवम्बर 12, 13 और 14 को

ए० सी० सी० : 330 (जारडीन 80, मिचल 59)। पटियाला : 6 विकेटों पर 335 (वजीर अली 156, अमरनाथ 53)। मैच मे हार-जीत का फैसला नही हो सका।

नई दिल्ली में, नवम्बर 18 और 19 को

दिल्ली 99 और 102 रन। एम० सी० सी० 333 (मिचल 109,

पटियाला के महाराजा 54, बारनेट 52)। एम० सी० सी० एक पारी और 132 रनों से विजयी।

नई दिल्ली में, नवम्बर 21,22 और 23 को

वाइसराय एकादश : 160 (वेरीटी ने 37 रन देकर 7 विकटें ली) और 63 (निकल्स ने 14 रन देकर 5 विकटें ली)। एम. सी. सी. : 8 विकटों पर 431 और पारी समाप्ति की घोषणा (वेलेनटाइन 145, जारडीन 93, वालटर्स 65, मिचल 59)। एम. सी. सी. एक पारी और 208 रनों से विजयी।

अजमेर में, नवम्बर 25 और 26 को

एम सी. सी. : 213 (बारनेट 75)। राजपुताना : 32 (क्लार्क ने 10 रन देकर 5 विकटें ली) और 74 (टाउनसेंड ने 22 रन देकर 7 विकटें ली)। एम. सी. सी. एक पारी और 107 रनों से विजयी।

राजकोट में, नवम्बर 29, 30 और दिसम्बर 1 को

पश्चिम भारत की रियासतें : 64 (टाउनसेंड ने 16 रन देकर 7 विकटें ली) और 249 (डा० मुर्द 61, वेरीटी ने 83 रन देकर 6 विकटें ली)। एम. सी. सी. : 5 विकटों पर 254 और पारी समाप्ति की घोषणा (बारनेट 84, निकल्स 52) और 6 विकटों पर 60 रन। एम. सी. सी. चार विकटो से विजयी।

जामनगर में, दिसम्बर 3 और 4 को

जामनगर : 90 (लेंग्रिज ने 45 रन देकर 5 विकटें ली) और 6 विकटो पर 180 रन। एम० सी० सी : 6 विकटों पर 151 रन और पारी समाप्ति की घोषणा (वालटर्स 60, अमरसिंह ने 73 रन देकर 6 विकटें ली)। मैच मे हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

बम्बई में, दिसम्बर 8, 9 और 10 को

एम० सी० सी० : 8 विकटों पर 481 और पारी समाप्ति की घोषणा (ग्रिगरी 148, जारडीन 102, लेंग्रिज 66, वालटर्स 54, आर० जमशेदजी ने 127 रन देकर 6 विकटें ली। बम्बई प्रान्त : 87 और 5 विकटों पर 191 (वी० एम० मर्चेन्ट 67*)। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

बम्बई में, दिसम्बर 12 और 13 को

बम्बई नगर : 140 और 2 विकटों पर 56 रन। एम० सी० सी० : 8 विकटों पर 319 रन और पारी समाप्ति की घोषणा (वेकवेल 107, ग्रिगरी 53)। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

पूना में, दिसम्बर 20 और 21 को

एम० सी० सी० : 5 विकटों पर 161 और पारी समाप्ति की घोषणा (वालटर्स 84)। पूना एकादश : 83 (नजीर अली 57, वेरीटी ने 37 रन देकर 8 विकटें ली) और 2 विकटों पर 39 रन। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

कलकत्ता में, दिसम्बर 27 को

एम० सी० सी : 5 विकटों पर 187 और पारी समाप्ति की घोषणा (बारनेट 94)। बंगाल का अंग्रेज एकादश : 8 विकटों पर 121 रन। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

कलकत्ता में, दिसम्बर 28 को

बंगाल : 123, एम० सी० सी० : 6 विकटों पर 179 (वेकवेल 54)। एम० सी० सी० चार विकटों से विजयी।

कलकत्ता में, दिसम्बर 30, 31 और जनवरी 2 को

एम० सी० सी० : 331 (वेरीटी 91*, टाउनसेंड 69 रन) और 5 विकटो पर 279 और पारी समाप्ति की घोषणा (निकल्स 79, वेलेनटाइन 74)। एक भारतीय एकादश: 168 और 1 विकेट पर 152 (एच० पी० वार्ड 77*, सी० पी० जॉन्सटन 69)। मैच में हार-जीत का फैसला नही हो सका।

बनारस में, जनवरी 10, 11 और 12 को

विजयनगरम् एकादश : 124 (टाउनसेंड ने 30 रन देकर 5 विकटें ली) और 140 रन। एम० सी० सी० : 111 (वेलेनटाइन 53, निसार ने 60 रन देकर 6 विकटें ली) और 139 रन। एम० सी० सी० की 14 रनों से पराजय।

इन्दौर में, जनवरी 16 और 17 को

एम० सी० सी० : 157 (वालटर्स 54, सी० के० नायुडु ने 36 रन देकर 6 विकटें ली) और बिना विकेट खोये 52 रन। मध्य भारत : 157 रन। मैच मे हार-जीत का फैसला नही हो सका।

नागपुर में, जनवरी 19, 20 और 21 को

मध्य भारत और बरार : 195 (सी०के० नायुडु 107, मेरियट ने 35 रन देकर 6 विकटें ली) और 188 (सी०एस० नायुडु 61*)। एम०सी०सी० : 261 (बारनेट 140, सी० के० नायुडु ने 87 रन देकर 5 विकटें ली) और 4 विकटो पर 129 (वेलेनटाइन 50*)। एम० सी० सी० 6 विकटो से विजयी।

सिकन्दराबाद में, जनवरी 23, 24 और 25 को

एम० सी० सी० : 112 (मुश्ताक अली ने 37 रन देकर 5 विकटें ली) और 303 (निकल्स 55*, अमरसिंह ने 82 रन देकर 5 विकटें ली)। मोइनुद्दौला एकादश : 194 (अमरसिंह 58, वेरीटी ने 63 रन देकर 5 विकटें ली) और 9 विकटों पर 188 (सी० के नायुडू 79)। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

मैसूर में, जनवरी 28 और 29 को

एम० सी० सी० : 7 विकटों पर 451 और पारी समाप्ति की घोषणा (वालटर्स 155, लैंग्रिज 104, जारडीन 66*)। मैसूर : 107 (क्लार्क ने 8 रन देकर 7 विकटें ली) और 56 (क्लार्क ने 19 रन देकर 5 विकटें ली) एम० सी० सी० एक पारी और 288 रनों से विजयी।

मद्रास में, फरवरी 3, 4 और 5 को

एम० सी० सी० : 603 (मिचल 161, वेकवेल 158, ग्रिगरी 66, टाउनसेंड 53*)। मद्रास : 106 और 145 (सी० पी० जॉन्सटन 69, मेरियट ने 43 रन देकर 5 विकटें ली)। एम० सी० सी० एक पारी और 352 रनों से विजयी।

मद्रास में, फरवरी 7 को

एम० सी० सी० : 6 विकटों पर 268 और पारी समाप्ति की घोषणा (निकल्स 67, लैंग्रिज 61, वालटर्स 56)। इंडियन क्रिकेट फेडरेशन एकादश: 81 रन। एम० सी० सी० 187 रनों से विजयी।

कोलम्बो में, फरवरी 16, 17 और 18 को

श्रीलंका एकादश : 106(क्लार्क ने 24 रन देकर 6 विकटें ली)और 189 (जोसफ 78)। एम० सी० सी : 272 (बारनेट 116, ब्रिडले ने 40 रन देकर 5 विकटें ली) और बिना विकेट खोये 25 रन। एम०सी०सी० दस विकटों से विजयी।

कोलम्बो में, फरवरी 22, 23 और 24 को

एम० सी० सी० : 155 (टाउनसेंड 56, अमरसिंह ने 62 रन देकर 6 विकटें ली) और 78 (ई० कैलार्ट ने 17 रन देकर 5 विकटें ली)। भारत और श्रीलंका एकादश : 104 और 121 रन। एम०सी०सी० 8 रनों से विजयी।

बम्बई में, मार्च 4, 5 और 6 को

एम० सी० सी० : 224 (मिचल 91) और 215 (वेकवेल 56, अमरसिंह ने 109 रन देकर 5 विकटें ली)। एक भारतीय एकादश :

238 (वी० एम० मर्चेंट 89*) और 4 विकटों पर 112 रन। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

टैस्ट मैच

प्रथम टैस्ट के पहले ही इंग्लैंड के खिलाड़ियों का खेल काफी जम गया था। भारतीय खिलाड़ियों का प्रदर्शन भी उत्साहवर्द्धक था। राज्यपाल एकादश की ओर से लाहौर में सी० के० नायुडू ने फटाफट 116 रन बनाये थे। तरुण अमरनाथ ने दक्षिण पंजाब की ओर से शानदार शतक जमाया था। वजीर अली ने भी अगले मैच में, जो पटियाला में खेला गया, अपना शतक पूरा किया था। बम्बई की ओर से मर्चेंट दृढ़ आत्मविश्वास के साथ 67 रन बनाकर अपराजित रहे थे। फिर भी इंग्लैंड की टीम अधिक शक्तिशाली थी।

भारतीय टीम के कप्तान सी. के. नायुडू ने टॉस जीता और वजीर अली और नवले ने आत्म-विश्वास के साथ भारत की प्रथम पारी प्रारम्भ की। इन दोनों के उखड़ जाने के बाद अमरनाथ और सी. के. नायुडू ने स्थिति को अधिक दृढ़ बनाया और भारत के 117 रन केवल दो विकटें खोने पर बन गये थे। तत्पश्चात् खेल का पासा पलटा और भारत के अन्तिम आठ विकटों पर केवल 102 रन और जोड़े जा सके। [illegible], वेरीटी और लैंग्रिज ने तीन-तीन विकटें ली।

इंग्लैंड की पारी की शुरूआत बहुत घटिया रही क्योंकि [illegible] ने 12 रनों पर ही मिचल का डंडा उखाड़ दिया था। भारत ने [illegible] ढील दिखाई और उसे कुछ विकटों से वंचित रहना पड़ा। [illegible] छूट गया और उसने 78 रन बनाये। वेलेनटाइन से [illegible] थी कि उसको भी छोड़ा गया और उसने अपने प्रथम [illegible] 136 रन बनाये। ये चूकें भारत को बहुत महँगी पड़ीं। [illegible] रन बनाकर भारत से 219 रन आगे हो गया। निसार ने [illegible] 90 [illegible] गिराई। क्षेत्र-रक्षण की कमजोरी से उसकी गेंदबाजी [illegible]।

क्लार्क ने भारत के दोनों प्रारम्भिक [illegible] 21 [illegible] पर ही परास्त कर दिया। अमरनाथ और [illegible] साझेदारी में इंग्लैंड की गेंदबाजी को [illegible] के पराजय से बचने के आसार दिखाई [illegible] नायुडू ने आत्मविश्वास और [illegible] बल्लेबाजी साहसिक थी और [illegible]

---

*अपराजित

वे 205 मिनट तक खेलते रहे और उन्होंने 21 बार गेंद को मैदान के बाहर पहुँचा दिया। उनकी बल्लेबाजी के आगे सबके खेल फीके पड़ गए। परन्तु निकल्स की शानदार लपक ने अमरनाथ की रनों की लूट को समाप्त कर दिया। लेकिन परास्त होने से पहले ही उन्होंने अपना पहला शतक पूरा करके, क्रिकेट के इतिहास में अपना नाम अमर कर लिया था क्योंकि भारत की ओर से टैस्ट मैच में यह पहला शतक था और अमरनाथ ने अपने पहले ही टैस्ट मैच मे शतक बनाने का गौरव प्राप्त किया। तत्पश्चात् केवल मर्चेंट ने जम कर बल्लेबाजी की और 258 रनों पर पारी समाप्त हो गई। इंग्लैंड ने मिचल का विकेट खोकर जीत के लिए आवश्यक रन पूरे कर लिये।

कलकत्ता में खेले गये द्वितीय टैस्ट मैच की टीम में भारत ने पांच परिवर्तन किये। नवले, कोल्हा, जय, जमशेदजी और रामजी का स्थान दिलावर हुसैन, नाऊमल, मुश्ताक अली, सी. एस. नायुडू और एम. जे. गोपालन ने ले लिया।

इंग्लैंड ने पहले बल्लेबाजी शुरू की और पहले दिन की खेल समाप्ति पर पांच विकटें खोकर 257 रन बना लिये। दूसरे दिन जारडीन बहुमूल्य 61 रन बनाकर बाहर हो गए। वेरीटी और टाउनसैंड ने नवें विकेट की साझेदारी में 70 रन जोड़े। अन्तिम विकेट गिरने पर इंग्लैंड की कुल रन संख्या 403 पर पहुँच गई। अमर सिंह ने 106 रन देकर 4 विकटें गिराईं और सी के. नायुडू ने 40 रन देकर 3 विकटें प्राप्त कीं।

क्लार्क और निकल्स की घातक गेंदबाजी ने भारत के प्रारम्भ के बल्लेबाजों को जम कर खेलने ही नहीं दिया बल्कि निकल्स की एक तेज गेंद दिलावर हुसैन के सिर में लगी और उन्हें बीच में ही निवृत्त होना पड़ा। अमरनाथ जिन पर भारत को आशा थी, शून्य पर निकल आए। दिलावर हुसैन (59), मर्चेंट (54), वजीर अली (39) और सी. एस. नायुडू (36) की बल्लेबाजी ने भारत की कुल रन संख्या को 247 तक पहुँचाया लेकिन भारत फॉलो-ऑन से बच नहीं सका।

भारत को तुरन्त अपनी द्वितीय पारी प्रारम्भ करनी पड़ी जिसमें भारतीय खिलाड़ी अधिक जमकर खेले। नाऊमल और मुश्ताक अली ने प्रथम विकेट की साझेदारी मे 57 रन बनाए। नाऊमल ने 105 मिनट विकटों पर टिक कर 43 रन बनाये। सी. के. नायुडू जैसे आक्रामक बल्लेबाज को केवल 38 रन बनाने में 150 मिनट विकटो पर खड़े रहना पड़ा। मर्चेंट ने 17 रन 80 मिनट में बनाये और सी. एस. नायुडू ने एक छक्का, दो चौके और एक रन के लिये 150 मिनट तक बल्लेबाजी की। भारत ने अपने आपको पारी की हार से ही नहीं बचाया अपितु अतिथि टीम को जीतने के लिये 82 रन बनाने थे और केवल 30 मिनट का समय बाकी था। इंग्लैंड

दो विकटें खो कर केवल सात रन बना सका और मैच में हार-जीत का फैसला नही हुआ।

कहा गया है कि मुफलिसी में आटा गीला। मद्रास में खेले गये तृतीय टैस्ट मैच में भारत के लिये यह कहावत सत्य निकली। निसार सख्त बीमार हो गये और भारत को अपने तेज साहसिक गेंदबाज की सेवायें उपलब्ध नही हो सकी। नायुडू टॉस हार गये। जैसे ही खेल प्रारम्भ हुआ नजीर अली के पाव में मोच आ गई। नाऊमल ने क्लार्क की तेज गेंद अपने मुँह पर खीचली और घायल होकर बीच में ही बाहर आ गए।

इंग्लैंड ने पारी बड़े इतमीनान के साथ प्रारम्भ की, वालटर्स और बेकवेल ने प्रथम विकेट की साझेदारी में 111 रन बनाए। भोजन के समय इनकी रन संख्या केवल एक विकेट खोकर 125 हो गई। भोजन और चाय के बीच के समय में अमरसिंह ने अपनी प्रेरणादायक गेंदबाजी से 4 विकटें 48 रनों पर गिरा कर खेल का स्वरूप बदल दिया। इंग्लैंड के अगले छह विकेट केवल 97 रन जोड़ सके। जारडीन की बल्लेबाजी से उनकी टीम की कुल रन संख्या 335 हो गई। अमरसिंह ने सात विकटें 86 रन देकर प्राप्त की। इंग्लैंड की कैसी दुर्दशा होती अगर अमरसिंह का साथ देने को निसार होते।

भारतीय टीम को बड़ा आघात पहुँचा जब पारी प्रारम्भ करते ही नाऊमल गंभीर रूप से घायल हो गए। बायें हाथ से गेंदबाजी करने वाले इंग्लैंड के महान् गेंदबाज वेरीटी ने बड़ी चतुराई और अचूकता से घातक गेंदबाजी की और भारतीय बल्लेबाजों को उनका सामना करने में बहुत कठिनाई अनुभव हुई। उन्होंने केवल 49 रन देकर 7 विकटें प्राप्त की और उनकी गेंदबाजी के कारण भारत 145 रनो पर ही उखड़ गया।

जारडीन ने भारत को फॉलो-ऑन के लिए बाध्य नही किया। वालटर्स ने द्वितीय पारी में अपना शतक पूरा किया। इंग्लैंड ने 7 विकटों पर 261 रन बनाकर पारी समाप्ति की घोषणा कर दी और भारत से 452 रन आगे हो गया।

भारत के लिये आवश्यक रन बनाना कठिन था क्योंकि विकेट पर गेंद अब अधिक घूम रही थी और नाऊमल घायल होने के कारण बल्लेबाजी करने में असमर्थ थे। अमरसिंह ने आक्रामक बल्लेबाजी कर 40 मिनट में 48 रन बनाये जिसमें आठ चौके थे। पटियाला के युवराज ने भारत की ओर से सबसे सुन्दर बल्लेबाजी कर दस चौकों सहित 60 रन बनाये। भारत की कुल रन संख्या 249 रही और इंग्लैंड 203 रनों से विजयी हुआ।

रनों का सविस्तार विवरण नीचे दिया जा रहा है :

प्रथम टैस्ट

बम्बई में दिसम्बर 15, 16, 17 और 18 को खेला गया; टॉस भारत ने जीता और इंग्लैंड ने मैच नौ विकटों से जीता।

कप्तान : सी. के. नायुडु (भारत) और डी. आर. जारडीन (इंग्लैंड)

विकेट-रक्षक : जे. जी. नवले (भारत) और एच. ईलियट (इंग्लैंड)

निर्णायक : एफ. ए. टारेंट और जे. डब्लू. हिच

भारत

वजीर अली पगबाधा बा. निकल्स	36	कै. निकल्स बा. क्लार्क	5
नवले कै. निकल्स बा. वेरीटी	13	कै. ईलियट बा. क्लार्क	4
अमरनाथ पगबाधा बा. लैंग्रिज	38	कै. निकल्स बा. क्लार्क	118
सी. के. नायुडु पगबाधा बा. क्लार्क	28	कै. वेलेनटाइन बा. निकल्स	67
जय कै. मिचल बा. लैंग्रिज	19	कै. जारडीन बा. निकल्स	0
मर्चेंट पगबाधा बा. निकल्स	23	कै. ईलियट बा. लैंग्रिज	30
कोल्हा कै. ईलियट बा. निकल्स	31	कै. ईलियट बा. निकल्स	12
अमरसिंह स्ट. ईलियट बा. लैंग्रिज	0	बा. वेरीटी	1
निसार कै. मिचल बा. वेरीटी	13	पगबाधा बा. निकल्स	1
रामजी बा. वेरीटी	1	पगबाधा बा. निकल्स	0
जमशेदजी अपराजित	4	अपराजित	1
अतिरिक्त	13	अतिरिक्त	19
	219		258

विकटों का पतन

प्रथम पारी : 1–44, 2–71, 3–117, 4–135, 5–148, 6–175, 7–186, 8–209, 9–212, 10–219.

द्वितीय पारी : 1–9, 2–21, 3–207, 4–208, 5–208, 6–214, 7–248, 8–249, 9–258, 10–258.

इंग्लैंड की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
निकल्स	23.2	8	53	3	23.5	7	55	5
क्लार्क	13	3	41	1	19	5	69	3
वारनेट	2	1	1	0	—	—	—	—
वेरीटी	27	11	44	3	20	9	50	1
लैंग्रिज	17	4	42	3	16	7	32	1
टाउनसेंड	9	2	25	0	12	5	33	0

इंग्लैंड

मिचल बा. निसार	5	पगबाधा बा. अमरसिंह	9
वालटर्स कै. मर्चेंट बा. अमरसिंह	78	अपराजित	14
बारनेट कै. और बा. जमशेदजी	33	अपराजित	17
लैंग्रिज पगबाधा बा. निसार	31		
जारडीन बा. निसार	60		
वेलेनटाइन कै. मर्चेंट बा. जमशेदजी	136		
टाउनसेंड कै. और बा. जमशेदजी	15		
निकल्स रन आउट	2		
वेरीटी कै. रामजी बा. निसार	24		
ईलियट अपराजित	37		
क्लार्क बा. निसार	1		
अतिरिक्त	16		
	438	एक विकेट पर	40

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1- 12, 2- 67, 3-143, 4-164, 5-309, 6-362, 7-371, 8-373, 9-431, 10-438.

द्वितीय पारी : 1-15

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
निसार	33·5	3	90	5	4	1	25	0
रामजी	23	5	64	0	—	—	—	—
अमरसिंह	36	5	119	1	3·2	1	15	1
जमशेदजी	35	4	137	3	—	—	—	—
सी.के.नायुडू	7	2	10	0	—	—	—	—
अमरनाथ	2	1	2	0	—	—	—	—

द्वितीय टैस्ट

कलकत्ता में जनवरी 5, 6, और 7 को खेला गया, टॉस इंग्लैंड ने जीता और मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका। कप्तान : सी. के. नायुडू (भारत) और डी. आर. जारडीन (इंग्लैंड)। विकेट-रक्षक : दिलावर हुसैन (भारत) और डब्लू. एच. वी. लेवेट (इंग्लैंड)। निर्णायक : एफ. ए. टारेंट और जे. डब्लू. हिच।

इंग्लैंड

वालटर्स कै. गोपालन बा. अमरसिंह	29	अपराजित	2
मिचल कै. गोपालन बा. सी. के. नायुडू	47		
बोरनेट पगबाधा बा. अमरसिंह	8	कै. गोपालन बा. निसार	0
लॅंग्रिज कै. निसार बा. गोपालन	70		
जारडीन कै.सी.एस.नायुडू बा. मुश्ताक	61		
वेलेनटाइन पगबाधा बा.सी.के. नायुडू	40	स्ट. हुसैन बा. नाऊमल	3
लेवेट बा. सी. के. नायुडू	5	अपराजित	2
निकल्स पगबाधा बा. निसार	13		
टाउनसेंड कै. हुसैन बा. अमरसिंह	40		
वेरीटी अपराजित	55		
क्लार्क कै. मर्चेंट बा. अमरसिंह	10		
अतिरिक्त	25		
	403	दो विकटों पर	7

विकटों का पतन

प्रथम पारी : 1- 45, 2-55, 3-135, 4-185, 5-256, 6-281, 7-281, 8-301, 9-371, 10-403.

द्वितीय पारी : 1-0, 2-5.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
निसार	34	6	112	1	2	1	2	1
अमरसिंह	54·5	13	106	4	2	1	1	0
गोपालन	19	7	39	1	—	—	—	—
मुश्ताक अली	19	5	45	1	—	—	—	—
अमरनाथ	2	0	10	0	—	—	—	—
सी.एस.नायुडू	8	1	26	0	—	—	—	—
सी.के नायुडू	23	7	40	3	—	—	—	—
नाऊमल	—	—	—	—	1	0	4	1

भारत

नाऊमल कै. जारडीन बा. निकल्स	2	कै. लेवेट बा. टाउनसेंड	43
दिलावर हुसैन कै. जारडीन बा. क्लार्क	59	बा. क्लार्क	57
वजीर अली कै. निकल्स बा. वेरीटी	39	कै. निकल्स बा. वेरीटी	0
सी. के. नायुडू बा. क्लार्क	5	कै. निकल्स बा. वेरीटी	38
अमरनाथ कै. जारडीन बा. क्लार्क	0	कै. लेवेट बा. क्लार्क	9
मर्चेंट बा. वेरीटी	54	कै. जारडीन बा वेरीटी	17
मुश्ताक अली पगवाघा बा. निकल्स	9	कै. बारनेट बा. निकल्स	18
सी. एस. नायुडू कै. वेरीटी बा. निकल्स	36	पगवाघा बा. वेरीटी	15
अमरसिंह कै. निकल्स बा. वेरीटी	10	कै. जारडीन बा. टाउनसेंड	18
निसार कै. वालटर्स बा. वेरीटी	2	अपराजित	0
गोपालन अपराजित	11	कै. लेवेट बा. क्लार्क	7
अतिरिक्त	20	अतिरिक्त	15
	247		237

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–12, 2–23, 3–27, 4–90, 5–131, 6–158, 7–211, 8–223, 9–236, 10–247.

द्वितीय पारी : 1–57, 2–58, 3–76, 4–88, 5–129, 6–149, 7–201, 8–214, 9–230, 10–237.

इंग्लैंड की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
क्लार्क	26	8	39	3	19.3	4	50	3
निकल्स	28	6	78	3	20	6	48	1
वेरीटी	23.4	13	64	4	31	12	76	4
लैंग्रिज	17	7	27	0	10	4	19	0
टाउनसेंड	8	4	19	0	8	3	22	2
बारनेट	—	—	—	—	2	0	7	0

तृतीय टैस्ट

मद्रास में फरवरी 10, 11, 12 और 13 को खेला गया, टॉस इंग्लैंड ने जीता और 202 रनों से मैच भी।

कप्तान : सी. के. नायुडू (भारत) और डी. आर. जारडीन (इंग्लैंड)
विकेट-रक्षक : दिलावर हुसैन (भारत) और एच. ईलियट (इंग्लैंड)
निर्णायक : जे. डब्लू. हिच और जे. बी. हिगिन्स।

इंग्लैंड

वेकवेल कै. सी. एस. नायुडू बा. अमरनाथ	85	कै. पटियाला बा. अमरसिंह	4
वालटर्स पगबाधा बा. अमरसिंह	59	कै. एवजी बा. अमरनाथ	102
मिचल पगबाधा बा. अमरनाथ	25	कै. और बा. अमरनाथ	28
लेंग्रिज पगबाधा बा. अमरसिंह	1	कै. हुसैन बा. नजीर अली	46
जारडीन कै. वजीर अली बा. अमरसिंह	65	अपराजित	35
बारनेट कै. पटियाला बा. अमरसिंह	4	कै. मुश्ताक बा. नजीर अली	26
निकल्स बा. अमरसिंह	1	कै. हुसैन बा. नजीर अली	8
टाउनसैंड बा. अमरसिंह	10	कै. सी. के. नायुडू बा. नजीर अली	8
वेरीटी पगबाधा बा. मुश्ताकअली	42		
ईलियट कै. मुश्ताक अली बा. अमरसिंह	14		
क्लार्क अपराजित	4		
अतिरिक्त	25	अतिरिक्त	4
	335	सात विकटों पर पारी समाप्ति की घोषणा	261

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1-111, 2-167, 3-170, 4-174, 5-178, 6-182, 7-208, 8-305, 9-317, 10-335.

द्वितीय पारी : 1-10, 2-76, 3-90, 4-102, 5-184, 6-209, 7-261.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
अमरसिंह	44.4	13	86	7	23	6	55	1
सी. के. नायुडू	11	1	32	0	9	0	38	0
अमरनाथ	31	14	69	2	11.5	3	32	2
मुश्ताक अली	25	3	64	1	4	0	16	0
सी. एस. नायुडू	13	1	43	0	2	0	17	0
नाऊमल	6	0	16	0	—	—	—	—
वजीर अली	1	1	0	0	3	0	16	0
नजीर अली	—	—	—	—	23	0	83	4

भारत

दिलावर हुसैन कै. बारनेट बा: वेरीटी	13	बा• लैंग्रिज	36
नाऊमल चोट के कारण निवृत्त	5	बल्लेबाजी नहीं की	—
वजीर अली बा. निकल्स	2	कै. मिचल बा. वेरीटी	21
सी० के० नायुडू बा. वेरीटी	20	स्ट. ईलियट बा• लैंग्रिज	2
अमरनाथ कै. ईलियट बा. लैंग्रिज	12	अपराजित	26
मर्चेंट बा. वेरीटी	26	कै. और बा. वेरीटी	28
पटियाला के युवराज बा. वेरीटी	24	कै. ईलियट बा. लैंग्रिज	60
नजीर अली कै. मिचल बा. वेरीटी	3	कै. निकल्स बा. लैंग्रिज	8
सी. एस. नायुडू कै. निकल्स बा. वेरीटी	11	स्ट. ईलियट बा. वेरीटी	0
मुश्ताक अली अपराजित	7	कै. मिचल बा. वेरीटी	8
अमरसिंह कै. बारनेट बा. वेरीटी	16	कै. बारनेट बा. लैंग्रिज	48
अतिरिक्त	6	अतिरिक्त	12
	145		249

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–15, 2–39, 3–42, 4–66, 5–99, 6–107, 7–122, 8–127, 9–145, 10–145.

द्वितीय पारी : 1–16, 2–45, 3–119, 4–120, 5–125, 6–209 7–237, 8–248, 9–249, 10–249.

इंग्लैंड की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
फ्लार्क	15	4	37	0	8	2	27	0
निकल्स	12	3	30	1	6	1	23	0
वेरीटी	23.5	10	49	7	27.2	6	104	4
लैंग्रिज	6	1	9	1	24	5	63	5
टाउनसेंड	3	0	14	0	3	0	19	0
बारनेट	—	—	—	—	1	0	1	0

भारत की टीम इंग्लैंड में, 1936

भारतीय टीम के श्रेष्ठ खिलाड़ी, अमरनाथ, जब अपने खेल की चोटी पर थे तो अनुशासनिक कारणों से उन्हें वापस भारत भेज दिया गया। क्रिकेट के इतिहास में इस प्रकार की घटना पहली बार हुई। उनकी अनुपस्थिति से और खिलाड़ियो के आपसी मतभेद के कारण टीम की शक्ति कम हो गई। इंग्लैंड की टीम आस्ट्रेलिया जाने की तैयारी कर रही थी जहाँ के लिये सर्वश्रेष्ठ टीम का चयन करना था। भारत के विरुद्ध टैस्ट मैचों का आयोजन सर्वश्रेष्ठ टीम के चयन और परीक्षा के लिये सुअवसर था। मौसम ने भी भारत का साथ नहीं दिया। ऐसी परिस्थितियों में भारत की टीम केवल पांच मैचों में विजयी रही जबकि तेरह बार हारी। टीम के खिलाड़ी निम्नलिखित थे :

1. विजयनगरम् के महाराजकुमार
2. सी० के० नायुडू
3. वजीर अली
4. मोहम्मद निसार
5. पी० ई० पालिया
6. वी० एम० मर्चेंट
7. मोहम्मद हुसैन
8. एल० पी० जय
9. अमरनाथ
10. सी० रामस्वामी
11. बाका जिलानी
12. एम० जे० गोपालन
13. अमीर इलाही
14. मुश्ताक अली
15. डी० डी० हिंडलेकर
16. एस० एन० बनर्जी
17. के० आर० मेहरोमजी
18. सी० एस० नायुडू (कुछ समय पश्चात् टीम में सम्मिलित हुए)

अमरसिंह, जहांगीर खां और दिलावर हुसैन जो उस समय इंग्लैंड में थे भारतीय टीम की ओर से कतिपय मैचों में खेले।

टैस्ट मैचों के अतिरिक्त अन्य खेले गये मैचों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :

वूस्टरशायर में : मई 2, 4 और 5 को

मारत : 229 और 150 (मोहम्मद हुसैन 55, पर्क्स ने 37 रन देकर 5 विकटें ली)। वूस्टरशायर : 248 (होवर्थ 58, ह्यूमन 54) और 7 विकटों पर 134 (निसार ने 50 रन देकर 5 विकटें ली)। भारत की तीन विकटों से पराजय।

ऑक्सफोर्ड में : मई 6, 7 और 8 को

ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय : 202 (सिंगलिटन 51) और 297 (किम्पटन 77, मिचलइनिस 68)। भारत : 352 (सी० के० नायुडू 83, पालिया 63, विजयनगरम् 60, मर्चेंट 59) और 5 विकटों पर 103 रन। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

टोंटन में : मई 9, 11 और 12 को

सोमरसेट : 496 (गिम्बलेट 103, ब्यूरफ 85, हॉकिन्स 79, वेल्डाक 63) और एक विकेट पर 89 रन। भारत : 228 (सी० के० नायुडू 73) और 356 (मर्चेंट 151, सी० के० नायुडू 68, वेलार्ड ने 92 रन देकर 6 विकटें ली)। भारत की नौ विकटों से पराजय।

नार्थम्पटन में: मई 13, 14 और 15 को

भारत : 405 (अमरनाथ 114*, सी० के० नायुडू 76, मर्चेंट 71, अमरसिंह 53)। नार्थम्पटनशायर : 242 और एक विकेट पर 275 (वेकवेल 100*, ए० ऐलन 90, ग्रिमशॉ 73*)। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

लार्ड्स में : मई 16, 18 और 19 को

एम० सी० सी० : 382 (ह्यूमन 115, हेंडरन 88, वायट 65, जी० ओ ऐलन 54) और बिना विकेट खोये 36 रन। भारत : 185 और 230 (जहांगीर खाँ 80)। भारत की दस विकटों से पराजय।

लीस्टर में : मई 20, 21 और 22 को

मारत : 426 (बाका जिलानी 113, अमरसिंह 77) और 6 विकटों पर 171 और पारी समाप्ति की घोषणा। लीस्टरशायर : 327 (डेम्पस्टर 79, प्रेंटिस 72) और बिना विकेट खोये 47 रन। मैच मे हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

---

* अपराजित

लार्ड्स में: मई 23 और 25 को

भारत 110 (रोबिन्स ने 18 रन देकर 5 विकटें लीं) और 158 रन। मिडलसेक्स : 173 (ह्यूम 59) और 6 विकटों पर 96 रन। भारत की चार विकटों से पराजय।

ब्रेंटवुड में : मई 27, 28 और 29 को

भारत · 184 (अमरनाथ 130) और 227 (अमरनाथ 107)। ईसेक्स: 351 (कटमोर 137, पी० स्मिथ 105) और 3 विकटों पर 61 रन। भारत की सात विकटों से पराजय।

केम्ब्रिज में : मई 30, जून 1 और 2 को

भारत : 161 (वजीर अली 85*) और बिना विकेट खोये 3 रन। केम्ब्रिज विश्वविद्यालय : 217 (व्हाइट 82)। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

ब्रेडफोर्ड में : जून 6 और 8 को

भारत : 86 और 115 (स्माईल्स ने 36 रन देकर 6 विकटें लीं)। यॉर्कशायर : 352 (वेरिटी 96*, स्माईल्स 77, निसार ने 74 रन देकर 6 विकटें लीं। भारत की एक पारी और 151 रनों से पराजय।

सुन्दरलैंड में : जून 10 और 11 को

भारत : 174 और 2 विकटों पर 203 और पारी समाप्ति की घोषणा (वजीर अली 139 *)। डरहम : 176 (डॉब्सन 52*, बनर्जी ने 54 रन देकर 5 विकटें लीं) और 5 विकटों पर 203 (रेंडले 85 बनर्जी ने 65 रन देकर 5 विकटें लीं)। भारत की पांच विकटों से पराजय।

नोटिंघम में : जून 13, 15 और 16 को

नोटिंघम शायर : 154 (नॉल्स 66*)। भारत : 2 विकटों पर 124 रन। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

लार्ड्स में : जून 17, 18 और 19 को

माइनर काउण्टीज : 286 (एफ० सी० डी० सरम 86) और 42 (अमर सिंह ने 12 रन देकर 5 विकटें लीं, निसार ने 24 रन देकर 5 विकटें लीं)। भारत : 402 (मुश्ताक अली 135, मर्चेंट 95, बूथ ने 131 रन देकर 5 विकटें लीं)। भारत एक पारी और 74 रनों से विजयी।

---

* अपराजित

ओवल में : जून 20, 22 और 23 को

भारत : 226 (जय 59*) और 5 विकटों पर 421 रन और पारी समाप्ति की घोषणा (मुश्ताक अली 141, जय 85, हिंडलेकर 80)। सर्रे : 452 (सँडम 105, फिशलॉक 68, पारकर 77) और 3 विकटों पर 52 रन। मैच मे हार-जीत का फैसला नही हो सका।

मैंचेस्टर में : जुलाई 4, 6 और 7 को

लंकाशायर : 435 (वाशब्रुक 113, ओल्डफील्ड 107, होपवुड 55, लिस्टर 50) और एक विकेट पर 25 रन। भारत : 405 (रामस्वामी 127, मर्चेंट 70, नटर ने 98 रन देकर 6 विकटें ली)। मैच मे हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

डबलिन में : जुलाई 9, 10 और 11 को

आयरलैंड : 161 और 119 (सी० के० नायुडू ने 44 रन देकर 7 विकटें ली)। भारत : 150 (बाउचर ने 30 रन देकर 6 विकटें ली) और बिना विकेट खोये 131 (मर्चेंट 71*)। भारत दस विकटो से विजयी।

लिवरपूल में : जुलाई 15, 16 और 17 को

भारत : 271 (मर्चेंट 135*, रामस्वामी 78) और 161 (मर्चेंट 77*, होपवुड ने 49 रन देकर 5 विकटें ली)। लंकाशायर : 234 (नटर 64, वाशब्रुक 52) और 114 (सी० के० नायुडू ने 56 रन देकर 6 विकटें ली)। भारत 84 रनों से विजयी।

डर्बी में : जुलाई 18, 20 और 21 को

भारत : 228 (सी. के. नायुडू 60, कॉपसन ने 44 रन देकर 5 विकटें ली) और 7 विकटों पर 232 रन और पारी समाप्ति की घोषणा (मर्चेंट 75)। डर्बीशायर : 160 (ईलियट 77) और दो विकटों पर 169 (टाउनसँड 77, ऐल्डरमैन 61*)। मैच में हार-जीत का फैसला नही हो सका।

स्वानसी में, अगस्त 1, 3 और 4 को

भारत : 112 (मरसर ने 48 रन देकर 7 विकटें ली) और 114 (क्ले ने 43 रन देकर 8 विकटें ली)। ग्लेमोरगन : 238 (स्मार्ट 58, टर्नबुल 50)। भारत की एक पारी और 12 रनों से पराजय।

---

* अपराजित

बरमिंघम में, अगस्त 5, 6 और 7 को

वारविकशायर : 181 (क्रूम 52, अमीर इलाही ने 48 रन देकर 5 विकटें ली) और 3 विकटों पर 219 और पारी समाप्ति की घोषणा (वायट 57, क्रूम 56)। भारत : 249 (दिलावर हुसैन 101*) और 3 विकटों पर 54 रन। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

चेल्टनहेम में, अगस्त 8, 10 और 11 को

भारत : 154 और 260 (वाकाजिलानी 59, सिनफील्ड ने 79 रन देकर 5 विकटें ली)। ग्लाऊसेस्टरशायर : 313 (हेमंड 81) और 2 विकटों पर 104। भारत की आठ विकटों से पराजय।

बूर्नमाउथ में, अगस्त 22, 24 और 25 को

भारत : 192 (मर्चेंट 76, जय 50) और 190 (सी. एस. नायुडू 58, हरमैन ने 59 रन देकर 5 विकटें ली)। हेम्पशायर : 238 (पेरिस 74, मीड 53, सी. एस. नायुडू ने 91 रन देकर 5 विकटें ली) और 142 (मीड 53*)। भारत दो रनों से विजयी।

कैंटरबरी में, अगस्त 26, 27 और 28 को

भारत : 173 और 148। कैन्ट : 523 (फेग 172, एम्स 145, ऐशडाउन 117)। भारत की एक पारी और 202 रनों से पराजय।

होव में, अगस्त 29, 31 और सितम्बर 1 को

भारत : 309 (दिलावर हुसैन 122, मर्चेंट 52) और 239 (वजीर अली 67, रामस्वामी 60 दिलावर हुसैन 50, जेम्सलैंग्रिज ने 47 रन देकर 7 विकटें ली)। ससेक्स : 479 (जॉन लैंग्रिज 168, मेलविली 152, जेम्स लैंग्रिज 52) और दो विकटों पर 71 रन। भारत की आठ विकटों से पराजय।

फोकस्टोन में, सितम्बर 2, 3 और 4 को

इंग्लैंड एकादश : 377 (वेलेंटाइन 115, टॉड 79) और 3 विकटों पर 212 और पारी समाप्ति की घोषणा (एम्स 107, वूले 79)। भारत : 372 (वजीर अली 155*, मर्चेंट 68, रोबिन्स ने 105 रन देकर 8 विकटें ली) और एक विकेट पर 152 (मर्चेंट 64*)। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

नोटिंघम में, सितम्बर 5 और 7 को

भारत : 9 विकटों पर 242 और पारी समाप्ति की घोषणा (मुश्ताक

---

* अपराजित

अली 83)। सर जुलियन काहून एकादश: 6 विकटों पर 138 रन। मैच मे हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

स्कारबरो में, सितम्बर 9, 10 और 11 को

लिविंगसन गोवर एकादश : 225 (सटक्लिफ 94) और 329 (डैम्पस्टर 57, डी. स्मिथ 52)। भारत : 333 (मुश्ताक अली 140) और 6 विकटों पर 146 रन (मुश्ताक अली 74)। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

ओस्टरली में, सितम्बर 14 और 15 को

भारत : 303 (जय 100*)। भारतीय जीमखाना : 144 और 83 रन। भारत एक पारी और 76 रनों से विजयी।

टैस्ट मैच :

इंग्लैंड के कप्तान ऐलन ने टॉस जीतकर भारतीय टीम से गीले विकेट पर बल्लेबाजी करवाई। मर्चेंट और हिंडलेकर ने दृढ़ता से पारी प्रारम्भ कर प्रतिद्वन्द्वी की तेज गेंदबाजी को भोथरा कर दिया। ऐलन को अपने निर्णय पर शंका उत्पन्न हुई होगी क्योंकि भारत के बिना विकेट गिरे 62 रन बन गये थे। तत्पश्चात् खेल में आकस्मिक परिवर्तन हुआ। ऐलन ने मर्चेंट, मुश्ताक, सी. के. नायुडू और वजीर अली को वापस कर दिया और भारत की चार विकटें 66 रनों पर उखड़ गईं। फिर तो विकटें बराबर गिरती गईं और 147 पर पारी समाप्त हो गई। अपनी अचूक गेंदबाजी से ऐलन ने 5 विकटें, 35 रन देकर, प्राप्त की।

जब इंग्लैंड ने बल्लेबाजी की तो अपनी घातक गेंदबाजी के द्वारा अमरसिंह और निसार ने बदला लिया। केवल लेलैण्ड ने जमकर बल्लेबाजी की और 60 रन बनाये। फिर भी इंग्लैंड की रन संख्या भारत की रन संख्या से 13 रन कम रही। अमरसिंह ने 6 विकटें 35 रन देकर गिराईं और निसार ने तीन बल्लेबाजों को 36 रनो पर उखाड़ दिया।

ऐलन ने 5 विकटें 43 रनों पर और वेरिटी ने 4 विकटें 17 रनों पर गिराकर भारत की द्वितीय पारी को केवल 93 रनों तक ही सीमित रखा। इंग्लैंड के कप्तान ने अपनी प्रथम परीक्षा मे 10 विकटें 78 रनों पर प्राप्त कर बहुत ही प्रशंसनीय खेल दिखाया। निसार ने मिचल को शून्य पर परास्त कर दिया लेकिन गिम्बलेट और टर्नबुल ने आवश्यक रन बना कर इंग्लैंड को नौ विकटों से विजयी बनाया।

---

* अपराजित

द्वितीय टैस्ट मैच मे इंग्लैंड की टीम में पांच परिवर्तन हुए जिससे टीम अधिक शक्तिशाली बन गई। भारत ने पहले बल्लेबाजी की लेकिन केवल 203 रनों पर पारी समाप्त हो गयी। आठ बल्लेबाजों की रन संख्या दोहरे अंको मे थी और जब वे जमते हुए प्रतीत हुए तभी वे उखड़ गये। इंग्लैंड का क्षेत्र-रक्षण शानदार रहा।

अपने प्रतिद्वन्द्वी के विपरीत इंग्लैंड के बल्लेबाजों ने प्रतिभाशाली बल्लेबाजी की। गिम्बलेट के बारह रन पर आउट होने पर हेमंड ने उसका स्थान लिया और बड़ी दृढ़ता और सुन्दरता से बल्लेबाजी की। मैदान में चारो ओर सुगमतापूर्वक और बडी दक्षता से उसने गेंद पहुँचाना प्रारम्भ किया और रन संख्या बडी तेज गति से बढ़ने लगी। द्वितीय विकेट पर फेग के साथ उसने 134 रन जोड़े और वर्दींगटन के साथ 127 रन तृतीय विकेट पर जोडे उसने 190 मिनट बल्लेबाजी कर 167 रन बनाये जिसमें 21 चौके थे। उसके चले जाने के बाद वर्दींगटन, हार्डस्टाफ, रोबिन्स और वेरिटी ने गेंदबाजी की बडी दुर्गति बनाई और जब 8 विकटों पर रन संख्या 571 पहुँच गई तो पारी समाप्ति की घोषणा कर दी गई।

द्वितीय पारी प्रारम्भ करने के समय भारत की स्थिति दयनीय थी क्योंकि इंग्लैड 368 रन आगे था। खेल के दूसरे दिन चाय के बाद मर्चेंट और मुश्ताक अली ने पारी प्रारम्भ की। उन्होंने बड़े आत्मविश्वास से खुलकर खेलना शुरु किया। दोनो बल्लेबाजों के तरीके भिन्न थे। मर्चेंट की बल्लेबाजी उच्च कोटि की और नियन्त्रित थी। मुश्ताक अली की बल्लेबाजी रोमांचकारी और साहसिक थी। इस आदर्श जोड़ी ने दिन की खेल समाप्ति तक 190 रन बनाए। इंग्लैड की भूमि पर भारत की ओर से टैस्ट मैच मे पहला शतक लगाने का गौरव मुश्ताक अली को प्राप्त हुआ और अब तक उसने 109 रन बना लिये थे। मर्चेंट के 79 रन बन चुके थे।

अन्तिम दिन इस जोड़े ने उतने ही रन (203) बना लिये जितने कि भारत की प्रथम पारी में बने थे, तब मुश्ताक अली को रोबिन्स ने अपनी ही गेंद पर लपक लिया। मर्चेंट ने अपना शतक पूरा किया। रामस्वामी, अमरसिंह और सी. के. नायुडु ने भी जमकर आक्रामक बल्लेबाजी की। प्रथम पारी में 40 रन बनाने के बाद रामस्वामी ने द्वितीय पारी में 60 रन बनाये जो भारत के लिये उपयोगी थे। हमेशा की तरह अमरसिंह ने धुआंधार बल्लेबाजी की और एक छक्का और छै चौके के साथ 48 रन बनाकर अपराजित रहा। जब भारत के पांच विकटों पर 390 रन बन गये थे तो वर्षा ने खेल बन्द करा दिया और मैच में हार-जीत का फैसला नही हो सका।

ओवल में खेले गये तृतीय टैस्ट मैच में हेमंड के हाथो भारतीय गेंदबाजी की फिर दुर्दशा हुई और उनके 217 रनों ने इंग्लैंड की कुल रन संख्या को खेल के प्रथम दिन ही 471 तक पहुँचा दिया। खेल की कहानी भिन्न होती अगर सी. के. नायुडू उन्हें लपक लेते जबकि उनके केवल तीन रन थे हालांकि लपक बहुत कठिन थी। तत्पश्चात् उन्होने पूरी शक्ति से गेंदो की पिटाई की और 290 मिनटों में 217 रन बनाये। चतुर्थ विकेट की साझेदारी में उन्होंने वर्दीगटन (128) के साथ 190 मिनटों में 266 रनों की वृद्धि की। चाय के पश्चात् निसार की घातक और प्रेरणादायक गेंदबाजी के फलस्वरूप इंग्लैंड के अगले पांच विकेट केवल 46 रनों पर ही उखड़ गये और कुल रन संख्या जो एक समय तीन विकटों पर 422 थी, दिन की खेल-समाप्ति पर आठ विकटों पर 471 हो गई। ऐलन ने पारी समाप्ति की घोषणा कर दी।

इस बार भी मर्चेंट और मुश्ताक अली ने भारत की पारी उत्तम ढंग से प्रारम्भ की। अगले बल्लेबाज भी इनकी तरह ही खेलते तो भारत को न तो तुरन्त दूसरी पारी की बल्लेबाजी करनी पड़ती और शायद वह पराजय से भी बच जाता। मर्चेंट की बल्लेबाजी हमेशा की तरह पुष्ट थी। मुश्ताक अली ने पहली गेंद से ही आक्रामक बल्लेबाजी शुरू करदी। फलस्वरूप तेज गति से रन बनने लगे। जब कुल रन संख्या 81 थी तो वेरीटी की गेंद पर डकवर्त ने बड़ी सफाई से उन्हें स्टम्प आउट कर दिया। दिलावर हुसैन ने स्थिति को अधिक मजबूत बनाने मे मर्चेंट का साथ दिया। उस समय तक भारत के 125 रन बन चुके थे और केवल एक विकेट गिरा था। लेकिन ऐलन द्वारा मर्चेंट का डंडा उखाड फेंकने के पश्चात् भारत की पारी 222 रनों पर ही समाप्त हो गई।

द्वितीय पारी मे भी मर्चेंट और मुश्ताक अली ने इंग्लैंड की तेज गेंदबाजी को भोथरा कर दिया और प्रथम विकेट की साझेदारी में 64 रन बनाए। दिलावर हुसैन, अमरसिंह और रामस्वामी की पारी भी उपयोगी रही। लेकिन सबसे अधिक आकर्षण तो सी. के. नायुडू की प्रतिभाशाली और शानदार बल्लेबाजी मे था। ऐलन ने ऊपर बहुत बार तेज गेंदें उचकाई लेकिन आगे बढकर नायुडू ने उन्हे उतनी ही तेजी से पीटा। इसी प्रकार की एक गेंद इस मंजे हुए खिलाड़ी के सीने पर लगी। चोट खाकर भी नायुडू ने आगे बढ कर अगली गेंद को बड़ी शक्ति से मैदान के बाहर पीट दिया। जब उनके 81 रन बन चुके थे तो ऐलन बदला लेने में सफल हुआ और उनकी गिल्लियां उखड़ गई। इंग्लैंड के कप्तान की गेंदबाजी के आगे अगले बल्लेबाज टिक न सके और पारी 312 पर समाप्त हो गई। ऐलन ने 7 विकटें 80 रनों पर गिराई। फेग का विकट खोकर इंग्लैंड ने 64 रन बना लिये और नौ विकटों से मैच मे विजयी रहा।

रन संख्या का सविस्तार विवरण नीचे दिया जा रहा है :

प्रथम टेस्ट

लार्ड्स में जून 27, 29 और 30 को खेला गया, टॉस इंग्लैंड ने जीता और नौ विकटों से मैच भी। कप्तान : जी० ओ० ऐलन (इंग्लैंड) और विजयनगरम् के महाराज कुमार (भारत)। विकेट रक्षक : जी० डकवर्त (इग्लैंड) और डी० डी० हिंडलेकर (भारत) निर्णायक : ए० डोलफिन और एफ० वेलडेन।

भारत

मर्चेन्ट बा० ऐलन	35	कै० डकवर्त बा० ऐलन	0
हिंडलेकर बा० रोबिन्स	26	पगबाधा बा० रोबिन्स	17
मुश्ताक अली कै० लैंग्रिज बा० ऐलन	0	पगबाधा बा० ऐलन	8
सी० के० नायुडू पगबाधा बा० ऐलन	1	कै० रोबिन्स बा० ऐलन	3
वजीर अली बा० ऐलन	11	कै० वेरीटी बा० ऐलन	4
अमरसिंह कै० लैंग्रिज बा० रोबिन्स	12	पगबाधा बा० वेरीटी	7
पालिया कै० मिचल बा० वेरीटी	11	कै० लेलैण्ड बा० वेरीटी	16
जहांगीर खाँ बा० ऐलन	13	कै० डकवर्त बा० वेरीटी	13
विजयनगरम् अपराजित	19	कै० मिचल बा० वेरीटी	6
सी० एस० नायुडू कै० वायट बा० रोबिन्स	6	कै० हार्डस्टाफ बा० ऐलन	9
निसार स्ट० डकवर्त बा० वेरीटी	9	अपराजित	2
अतिरिक्त	4	अतिरिक्त	8
	147		93

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1—62, 2—62, 3—64, 4—66, 5—85, 6—97, 7—107, 8—119, 9—137, 10—147.

द्वितीय पारी : 1—0, 2—18, 3—22, 4—28, 5—39, 6—45, 7—64, 8—80, 9—90, 10—93.

इंग्लैंड की गेंदबाजी

	ओ०	मे०	ओ०	रन	विकेट	ओ०	मे०	ओ०	रन	विकेट
ऐलन	17	7		35	5	18	1		43	5
वायट	3	2		7	0	7	4		8	0
वेरीटी	18	5		42	2	16	8		17	4
जेम्स लैंग्रिज	4	1		9	0	—	—		—	—
रोबिन्स	13	4		50	3	5	1		17	1

इंग्लैंड

ए० मिचल बा० अमरसिंह	14	कै० मर्चेंट बा० निसार	0
गिम्बलेट कै० मुश्ताक बा० अमरसिंह	11	अपराजित	67
टर्नबुल बा० अमरसिंह	0	अपराजित	37
लेलैण्ड पगबाधा बा० अमरसिंह	60		
वायट कै० जहाँगीर खाँ बा० अमरसिंह	0		
हार्डस्टाफ बा० निसार	2		
लैंग्रिज कै० जहाँगीर खाँ बा० सी० के० नायुडू	19		
ऐलन कै० जहाँगीर खाँ बा० अमरसिंह	13		
डकवर्त कै० विजयनगरम् बा० निसार	2		
रोबिन्स कै० सी० के० नायुडू बा० निसार	0		
वेरीटी अपराजित	2		
अतिरिक्त	11	अतिरिक्त	4
	134	एक विकेट पर	108

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1—16, 2—16, 3—30, 4—34, 5—41, 6—96, 7—129, 8—132, 9—132, 10—134.

द्वितीय पारी : 1—0.

भारतीय गेंदबाजी

	ओ०	मे०ओ०	रन	विकेट	ओ०	मे०ओ०	रन	विकेट
निसार	17	5	36	3	6	3	26	1
अमरसिंह	25·1	11	35	6	16·3	5	36	0
जहाँगीर खाँ	9	9	27	0	10	3	20	0
सी० के० नायुडू	7	2	17	1	7	2	22	0
सी०एस० नायुडू	3	0	8	0	—	—	—	—

द्वितीय टैस्ट

मैंचेस्टर में जुलाई 25, 27 और 28 को खेला गया, टॉस भारत ने जीता और मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका। कप्तान : जी० ओ० ऐलन (इंग्लैंड) और विजयनगरम् के महाराजकुमार (भारत), विकेट रक्षक : जी० डकवर्त (इंग्लैंड) और के० आर० मेहरोमजी (भारत)। निर्णायक : एफ० चेस्टर और एफ० वेलडेन।

भारत

मर्चेंट कै० हेमंड बा० वेरीटी	33	पगबाधा बा० हेमंड	114
मुश्ताक अली रन आउट	13	कै० और बा० रोबिन्स	112
अमरसिंह कै० डकवर्त बा० वर्दीगटन	27	अपराजित	48
सी० के० नायुडू पगबाधा बा० ऐलन	16	स्ट. डकवर्त बा० वेरीटी	34
वजीर अली कै० वर्दीगटन बा० वेरीटी	42	बा० रोबिन्स	4
रामस्वामी बा० वेरीटी	40	बा० रोबिन्स	60
जहाँगीर खाँ कै० डकवर्त बा० ऐलन	2		
सी० एस० नायुडू बा० वेरीटी	10		
विजयनगरम् बा० रोबिन्स	6	अपराजित	0
मेहरोमजी अपराजित	0		
निसार कै० हार्डस्टाफ बा० रोबिन्स	13		
अतिरिक्त	1	अतिरिक्त	18
	203	पांच विकटों पर	390

विकटों का पतन :
प्रथम पारी : 1—18, 2—67, 3—73, 4—100, 5—161, 6—164, 7—181, 8—188, 9—190, 10—203.
द्वितीय पारी : 1—203, 2—279, 3—313, 4—317, 5—390.

इंग्लैंड की गेंदबाजी

	ओ०	मे० ओ०	रन	विकेट	ओ०	मे०ओ०	रन	विकेट
ऐलन	14	3	39	2	19	2	96	0
गोवर	15	2	39	0	20	2	61	0
हेमंड	9	1	34	0	12	2	19	1
रोबिन्स	9-1	1	34	2	29	2	103	3
वेरीटी	17	5	41	4	22	8	66	1
वर्दीगटन	4	0	15	1	13	4	27	0

इंग्लैंड

गिम्बलेट बा० निसार	9
फेग पगबाधा बा० मुश्ताक अली	39
हेमंड बा० सी० के० नायुडू	167
वर्दीगटन कै० सी० के० नायुडू बा० सी० एस० नायुडू	87
फिशलॉक बा० सी० के० नायुडू	6
हार्डस्टाफ कै० और बा० अमरसिंह	94
ऐलन कै० मेहरोमजी बा० अमरसिंह	1
रोबिन्स कै० मर्चेंट बा० निसार	76
वेरीटी अपराजित	66
डकवर्त अपराजित	10
अतिरिक्त	16
आठ विकटों पर पारी समाप्ति की घोषणा	571

विकटों का पतन :

1—12, 2—146, 3—273, 4—289,
5—375, 6—376, 7—409, 8—547.

भारत की गेंदबाजी

	ओ०	मे० ओ०	रन	विकेट
निसार	28	5	125	2
अमरसिंह	41	8	121	2
सी० एस० नायुडू	17	1	87	1
सी० के० नायुडू	22	1	84	2
जहाँगीर खाँ	18	5	57	0
मुश्ताकअली	13	1	64	1
मर्चेंट	3	0	17	0

तृतीय टैस्ट

ओवल मे अगस्त 15, 17 और 18 को खेला गया, टॉस इंग्लैंड ने जीता और मैच भी नौ विकटो से जीता। कप्तान : जी० ओ० ऐलन (इंग्लैंड) और विजयनगरम् के महाराजकुमार (भारत)। विकेट-रक्षक : जी० डकवर्थ (इंग्लैंड) और दिलावर हुसैन (भारत)। निर्णायक : एफ० चेस्टर और एफ० वेलडेन।

इंग्लैंड

बारनेट पगबाधा बा० सी० के० नायुडू	43	अपराजित	32
फेग कै० हुसैन बा० अमरसिंह	8	कै० अमरसिंह बा० निसार	22
हेमंड बा० निसार	217	अपराजित	5
लेलैण्ड बा० निसार	26		
वर्दीगटन बा० निसार	128		
फिशलॉक अपराजित	19		
ऐलन कै० हुसैन बा० निसार	13		
वेरीटी कै० हुसैन बा० निसार	4		
सिम्स पगबाधा बा० अमरसिंह	1		
वोस अपराजित	1		
डकवर्थ बल्लेबाजी नहीं की			
अतिरिक्त	11	अतिरिक्त	5
आठ विकटों पर पारी समाप्ति की घोषणा	471	एक विकेट पर	64

विकटों का पतन
प्रथम पारी : 1—19, 2—93, 3—156, 4—422, 5—437, 6—455, 7—463, 8—468.
द्वितीय पारी : 1—48.

भारत की गेंदबाजी

	ओ०	मे०ओ०	रन	विकेट	ओ०	मे०ओ०	रन	विकेट
निसार	26	2	120	5	7	0	36	1
अमरसिंह	39	8	102	2	6	0	23	0
वाका जिलानी	15	4	55	0				
सी०के० नायुडू	24	1	82	1				
जहांगीर खाँ	17	1	65	0				
मुश्ताकअली	2	0	13	0				
मर्चेंट	6	0	23	0				

भारत

मर्चेंट बा. ऐलन	52	कै. वर्दींगटन बा. ऐलन	48
मुश्ताक अली स्ट. डकवर्त बा. वेरीटी	52	कै. हेमंड बा. ऐलन	17
दिलावर हुसैन स्ट. डकवर्त बा. वेरीटी	35	पगबाधा बा. सिम्स	54
सी. के. नायुडू कै. ऐलन बा. वोस	5	बा. ऐलन	81
रामस्वामी बा. सिम्स	29	अपराजित	41
वजीर अली पगबाधा बा. सिम्स	2	कै. डकवर्त बा. ऐलन	1
अमरसिंह बा. वेरीटी	5	कै. सिम्स बा. वेरीटी	44
जहांगीर खाँ कै. फेग बा. सिम्स	9	कै. वोस बा. ऐलन	1
विजयनगरम् बा. सिम्स	1	बा. ऐलन	1
बाका जिलानी अपराजित	4	कै. फेग बा. ऐलन	12
निसार कै. वर्दींगटन बा. सिम्स	14	कै. वोस बा. सिम्स	0
अतिरिक्त	14	अतिरिक्त	12
	222		312

विकटों का पतन :
प्रथम पारी : 1—81, 2—125, 5—130, 4—185, 5—187, 6—192, 7—195, 8—203, 9—206, 10—222.
द्वितीय पारी : 1—64, 2—71, 3—122, 4—159, 5—212, 6—222, 7—225, 8—307, 9—309, 10—312.

इंग्लैंड का 1936 में भ्रमण करने वाली भारतीय टीम

मि पर : मुश्ताक अली, डी. डी. हिंडलेकर, एस. एन. बनर्जी और के. आर. मेहरोमजी ।
र्सी पर : वी. एम. मर्चेंट, मोहम्मद निसार, सी. के. नायुडू, विजयनगरम् के महाराजकु (कप्तान), एम. वजीर अली, पी. ई. पालिया और मोहम्मद हुसैन ।
ड़े हुए : बाका जिलानी, एम. जे. गोपालन, एल. पी. जय, एल. अमरनाथ, अमीर इलाही सी. रामस्वामी ।

इंग्लैंड का 1946 में भ्रमण करने वाली भारतीय टीम

मि पर : गुल मोहम्मद और सी. टी. सरवटे ।
र्सी पर : एस. एन. बनर्जी, मुश्ताक अली, वी. एम. मर्चेंट (उप-कप्तान), पटौदी के. नवा (कप्तान), लाला अमरनाथ, डी. डी. हिंडलेकर और सी. एस. नायडू ।
ड़े हुए : पंकज गुप्ता (प्रबन्धक), वी. एस. हजारे, वीनू मांकड, अब्दुल हाफ़िज़ कारदार आर. एस. मोदी, एस. डब्लू. सोहनी, आर. वी. निम्बालकर, एस. डब्लू. फरगूसन (गणक) ।

इंग्लैंड की गेंदबाजी

	ओ०	मे० ओ०	रन	विकेट	ओ०	मे० ओ०	रन	विकेट
वोस	20	5	46	1	20	5	40	0
ऐलन	12	3	37	1	20	3	80	7
हेमंड	8	2	17	0	7	0	24	0
वेरीटी	25	12	30	3	16	6	32	1
सिम्स	18·5	1	73	5	25	1	95	2
सेलैण्ड	2	0	5	0	3	0	19	0
वर्दींगटन	—	—	—	—	2	0	10	0

भारत की टीम इंग्लैंड में, 1946

भारत से बाहर जाने वाली तीसरी औपचारिक टीम का नेतृत्व पटौदी के नवाब इफ्तिकार अली ने किया जिसके उपकप्तान विजय मर्चेंट थे और प्रबन्धक थे पकज गुप्ता।

टीम मे निम्नलिखित खिलाड़ी थे :

1. पटौदी के नवाब (कप्तान)
2. विजय मर्चेंट (उप-कप्तान)
3. लाला अमरनाथ
4. मुश्ताक अली
5. डी० डी० हिंडलेकर
6. सी० एस० नायुडू
7. एस० एन० बनर्जी
8. वी० एस० हजारे
9. वीनू मांकड
10. अब्दुल हफिज कारदार
11. आर० एस० मोदी
12. एस० डब्लू० सोहनी
13. आर० बी० निम्बालकर
14. एस० जी० शिन्दे
15. सी० टी० सरवटे
16. गुल मोहम्मद

पकज गुप्ता (प्रबन्धक)

यह भ्रमण मई 4, 1946 से प्रारम्भ हुआ जब प्रथम मैच वूस्टरशायर से खेला गया और अन्तिम मैच सितम्बर 10 से लेवेनिसन गोवर एकादश से खेला गया। कुल 33 मैचो मे भारत 13 मैच जीता, 4 में हारा और शेष 16 मैचो मे हार-जीत का फैसला नही हो सका।

टैस्ट मैचों के अतिरिक्त अन्य खेले गये मैचों का संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है :

वूस्टरशायर के विरुद्ध, मई 4, 6 और 7 को

वूस्टरशायर : 191 (मांकड ने 26 रन देकर 4 विकटें ली) और 284 (हॉवर्त 105, शिंदे ने 50 रन देकर 5 विकटें ली, मांकड ने 74 रन देकर

4 विकटें ली) । भारत : 192 (पार्क्स ने 53 रन देकर 5 विकटें ली) और 267 (मोदी 84, बनर्जी 59, मर्चेन्ट 51) । भारत की 16 रनों से हार ।

ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के विरुद्ध, मई 8, 9 और 10 को

ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय : 256 और 3 विकटों पर 245 रन । भारत : 248 (हजारे 64) । मैच में हार-जीत का फैसला नही हो सका ।

सरे के विरुद्ध, मई 11, 13 और 14 को

भारत : 454 (सरवटे 124*, बनर्जी 121, गुल मोहम्मद 89, मर्चेंट 53) और 1 विकेट पर 24 रन । सरे : 135 और 338 (ग्रिगोरी 100, सरवटे ने 54 रन देकर 5 विकटें ली) । भारत 9 विकटों से विजयी । सरवटे और बनर्जी ने अन्तिम विकेट की साझेदारी में 190 मिनट में 249 रन जोड़े । सी० एस० नायुडू ने सरे की प्रथम पारी मे *लगातार तीन विकेट लेकर तिकड़ी हैट-ट्रिक) बनाई ।*

केम्ब्रिज विश्वविद्यालय के विरुद्ध, मई 15, 16 और 17 को

केम्ब्रिज विश्वविद्यालय : 178 और 138 (सरवटे ने 58 रन देकर 5 विकटें ली) । भारत ; 6 वकटों पर 335 और पारी समाप्ति की घोषणा (पटौदी 121, मोदी 103, मुश्ताक अली 54) । भारत एक पारी और 19 रनों से विजयी ।

लीस्टरशायर के विरुद्ध, मई 18, 20 और 21 को

भारत : 198 (मर्चेंट 111*) और 6 विकटो पर 107 और पारी समाप्ति की घोषणा (मर्चेन्ट 57*) । लीस्टरशायर : 144 (अमरनाथ ने 14 रन देकर 4 विकटें ली) और एक विकेट पर 24 रन । मैच में हार-जीत का फैसला नही हो सका ।

स्कॉटलैंड के विरुद्ध, मई 22 और 23 को

भारत : 247 (हजारे 101, मेकाना ने 92 रन देकर 6 विकटें ली) । स्कॉटलैंड : 101 (सरवटे ने 30 रन देकर 5 विकटें ली) और 90 (सरवटे ने 42 रन देकर 7 विकटें ली) । भारत एक पारी और 56 रनों से विजयी । सरवटे ने स्कॉटलैंड की द्वितीय पारी मे लगातार 3 गेंदों पर 3 विकटे लेकर तिकड़ी (हैट-ट्रिक) बनाई ।

एम० सी० सी० के विरुद्ध, मई 25, 27 और 28 को

भारत : 438 (मर्चेंट 148,हजारे 94, हिंडलेकर 79) । एम०सी०सी०: 139 और 105 (मांकड ने 37 रन देकर 7 विकटें ली) । भारत एक पारी और 194 रनों से विजयी ।

भारतीय जीमखाना के विरुद्ध, मई 29 को

भारतीय जीमखाना : 97 । भारत : 8 विकटों पर 149 । भारत ने केवल 4 विकटें ही खोकर आवश्यक रन बना लिये थे अतः 6 विकटों से विजयी ।

हेम्पशायर के विरुद्ध, जून 1, 3 और 4 को

हेम्पशायर : 197 और 142 (हजारे ने 18 रन देकर 4 विकटें ली)। भारत : 130(नॉट ने 36 रन देकर 7 विकटें ली) और 4 विकटों पर 212 रन । भारत 6 विकटों से विजयी ।

ग्लेमोरगन के विरुद्ध, जून 8, 10 और 11 को

भारत : 376 (अमरनाथ 104*, मांकड 86, हजारे 79, मर्चेंट 52)। ग्लेमोरगन : 149 (सरवटे ने 30 रन देकर 5 विकटें ली) और 73 रन 7 विकटों पर । मैच में हार-जीत का फंसला नहीं हो सका ।

सेना एकादश के विरुद्ध, जून 12, 13 और 14 को

सेना : 4 विकटों पर 241 और पारी समाप्ति की घोषणा (डिवीज 99*) और 135 (हजारे ने 66 रन देकर 7 विकटें ली)। भारत : 159 (हजारे 62*) और 5 विकटों पर 116 । मैच में हार-जीत का फंसला नही हो सका ।

नोटिंघमशायर के विरुद्ध, जून 15, 17 और 18 को

भारत : 5 विकटों पर 345 और पारी समाप्ति की घोषणा (पटौदी 101*, मर्चेंट 86) । नोटिंघम : 1 विकेट पर 24 रन । मैच में हार-जीत का फंसला नही हो सका । वर्षा के कारण कुछ समय के लिये खेल को प्रथम और अन्तिम दिन रोकना पड़ा ।

नॉर्थम्पटनशायर के विरुद्ध, जून 26, 27 और 28 को

भारत : 328 (मर्चेंट 110, मोदी 63, अमरनाथ 52) और 1 विकेट पर 171 (अमरनाथ 82*, मर्चेंट 72*) । नॉर्थम्पटनशायर : 362 (टिम्म 107, मांकड ने 99 रन देकर 5 विकटें ली) । मैच में हार-जीत का फंसला नही हो सका ।

लंकाशायर के विरुद्ध, जून 29, जुलाई 1 और 2 को

लंकाशायर : 140 (बनर्जी ने 32 रन देकर 4 विकटें ली) और 185 रन । भारत : 126 (पोलार्ड ने 49 रन देकर 7 विकटें ली) और 2 विकटों पर 200 रन (मर्चेंट 93*, पटौदी 80*) । भारत 8 विकटों से विजयी ।

यार्कशायर के विरुद्ध, जुलाई 3, 4 और 5 को

भारत : 138 (बूथ ने 33 रन देकर 6 विकटें ली) और 124। यार्कशायर : 9 विकटों पर 344 और पारी समाप्ति की घोषणा (हट्न 183*, नायुडू ने 27 रन देकर 5 विकटें ली। भारत की एक पारी और 82 रनों से हार।

लंकाशायर के विरुद्ध, जुलाई 6, 8 और 9 को

लंकाशायर : 406 (आईकिन 139, वाशब्रुक 108, सोहनी ने 82 रन देकर 5 विकटें ली) और 172 (मांकड ने 62 रन देकर 5 विकटें ली)। भारत : 8 विकटों पर 456 और पारी समाप्ति की घोषणा (मर्चेंट 242*) । मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

डर्बीशायर के विरुद्ध, जुलाई 10, 11 और 12 को

भारत : 9 विकटों पर 380 और पारी समाप्ति की घोषणा (पटौदी 113, मोदी 99, गुलमोहम्मद 62*) और 8 विकटों पर 313 रन और पारी समाप्ति की घोषणा (अमरनाथ 89, मोदी 68) । डर्बीशायर : 366 और 209 । भारत 118 रनों से विजयी।

यार्कशायर के विरुद्ध, जुलाई 13, 15 और 16 को

यार्कशायर : 6 विकटों पर 300 और पारी समाप्ति की घोषणा और बिना विकेट खोये 64 रन। भारत : 5 विकटों पर 490 और पारी समाप्ति की घोषणा (हजारे 244*, मांकड 132, पटौदी 51*) । मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

डरहम के विरुद्ध, जुलाई 17 और 18 को

भारत : 5 विकटों पर 149 और पारी समाप्ति की घोषणा (मर्चेंट 64)। डरहम : 5 विकटों पर 109 रन। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

क्लब क्रिकेट कॉन्फ्रेंस के विरुद्ध, जुलाई 25 को

भारत : 5 विकटों पर 281 और पारी समाप्ति की घोषणा (मर्चेंट 141*, सोहनी 52, मुश्ताक अली 50) । क्लब क्रिकेट कॉन्फ्रेंस : 4 विकटों पर 223 रन। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

ससेक्स के विरुद्ध, जुलाई 27, 29 और 30 को

भारत : 3 विकटों पर 533 और पारी समाप्ति की घोषणा (मर्चेंट 205, पटौदी 110*, अमरनाथ 106, मांकड 105) और 1 विकेट पर 148 (मोदी 72*, मर्चेंट 63*)। ससेक्स : 253 और 427 (कॉक्स 234*, मांकड ने 140 रन देकर 5 विकटें ली)। भारत 9 विकटों से विजयी।

सोमरसेट के विरुद्ध : जुलाई 31, अगस्त 1 और 2 को

भारत : 64 (ब्यूम ने 27 रन देकर 5 विकटें ली, एन्ड्र्यूज ने 36 रन देकर 5 विकटें ली) और 431 (मर्चेंट 87, पटौदी 76, सरवटे 66*)। सोमरसेट : 6 विकटों पर 506 और पारी समाप्ति की घोषणा (वालफोर्ड 141*, गिम्बलेट 102)। भारत की एक पारी और 11 रनों से हार।

ग्लेमोरगन के विरुद्ध : अगस्त 3, 5 और 6 को

ग्लेमोरगन : 238 और 8 विकटों पर 237 और पारी समाप्ति की घोषणा। भारत : 203 (मर्चेंट 66, मोदी 56) और 5 विकटों पर 274 (मुश्ताक अली 93, हजारे 59*)। भारत पाँच विकटो से विजयी।

वारविकशायर के विरुद्ध : अगस्त 7, 8 और 9 को

वारविकशायर : 9 विकटों पर 375 और पारी समाप्ति की घोषणा (सेल 157)। भारत : 195 (मर्चेंट 86*) और 1 विकेट पर 21 रन। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

ग्लउसेस्टरशायर के विरुद्ध : अगस्त 10, 12 और 13 को

ग्लउसेस्टरशायर : 3 विकटो पर 132 और पारी समाप्ति की घोषणा और 187 (मांकड ने 72 रन देकर 5 विकटें ली)। भारत : 8 विकटों पर 135 और पारी समाप्ति की घोषणा (पटौदी 71) और 9 विकटो पर 177 (हजारे 56)। मैच मे हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

इसेक्स के विरुद्ध : अगस्त 24, 26 और 27 को

इसेक्स : 303 और 3 विकटों पर 201 और पारी समाप्ति की घोषणा (क्रैबट्री 118)। भारत : 138 (रे स्मिथ ने 56 रन देकर 6 विकटें ली) और 9 विकटों पर 370 (मर्चेंट 181, मोदी 65, मांकड 52)। भारत एक विकेट से विजयी।

कैंट के विरुद्ध : अगस्त 28, 29 और 30 को

कैंट : 3 विकटों पर 248 और पारी समाप्ति की घोषणा (फेग 109)। वर्षा के कारण द्वितीय और तृतीय दिन खेल नही हो सका। फलतः मैच मे हार-जीत का फैसला नही हो सका।

मिडलसेक्स के विरुद्ध : अगस्त 31, सितम्बर 2 और 3 को

भारत : 5 विकटों पर 469 और पारी समाप्ति की घोषणा (हजारे 193*, मांकड 109*, मोदी 80)। मिडलसेक्स : 124 (मांकड ने 48 रन देकर 5 विकटें ली, हजारे ने 25 रन देकर 4 विकटें ली) और 82 (बनर्जी ने 21 रन देकर 4 विकटें ली, मांकड ने 22 रन देकर 3 विकटें ली, हजारे ने 24 रन देकर 3 विकटें ली)। भारत एक पारी और 263 रनो से विजयी।

दक्षिण इंग्लैंड के विरुद्ध : सितम्बर 4, 5 और 6 को

भारत : 241 (मर्चेंट 82) और 3 विकटों पर 253 और पारी समाप्ति की घोषणा (मुश्ताक अली 66, गुल मोहम्मद 54*)। दक्षिण इंग्लैंड : 9 विकटों पर 218 और पारी समाप्ति की घोषणा और 266। भारत 10 रनों से विजयी।

लिविन्सन गोवर एकादश के विरुद्ध : सितम्बर 7, 9 और 10 को

भारत : 139 और 8 विकटों पर 194 (गुल मोहम्मद 57)। लिविन्सन गोवर एकादश : 345 (हॉवर्त 114)। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

इस दौरे में मर्चेंट टीम के प्रमुख बल्लेबाज रहे। उन्होंने कुल 45 पारियों मे, दस बार अपराजित रहकर, 2630 रन बनाये और प्रति पारी औसत 75.14 रहा। किसी भी भारतीय बल्लेबाज ने विदेशी भ्रमण में इतनी गौरवपूर्ण बल्लेबाजी नही की। उन्होंने आठ शतक भी पूरे किये जिसमें दो दोहरे शतक थे और एक बार तो पारी प्रारम्भ कर अन्त तक अपराजित रहे।

मॉंकड प्रथम भारतीय खिलाड़ी हैं जिन्होने "क्रिकेटियर्स डबल" का गौरव प्राप्त किया। उन्होंने प्रति पारी 26.73 के औसत से 1096 रन बनाये और 20.52 रन प्रति विकेट औसत पर 134 विकटें प्राप्त की।

टैस्ट मैच :

भारत प्रथम टैस्ट हार गया और द्वितीय और तृतीय में हार-जीत का फैसला नही हो सका। अतिथि प्रथम टैस्ट मैच मे रक्षात्मक खेल खेलकर पराजय को टाल सकते थे लेकिन उनके खेल की बड़ी प्रशंसा हुई। इंग्लैंड के प्रमुख समाचार-पत्र 'डेली मेल' ने उनके खेल को शानदार प्रदर्शन की संज्ञा दी। 'लन्दन टेलीग्राफ' ने लिखा, "भारतीय टीम को हार का दुःख नहीं होना चाहिये। उसका हर एक सशक्त बल्लेबाज उस समय आउट हुआ जब कि उससे बहुत सारे रन बनने की आशा थी। उनकी स्वप्न साकार करने वाली बल्लेबाजी हर तरह से उत्तम रही।"

द्वितीय टैस्ट मैच में अमरनाथ और मॉंकड की सफल गेंदबाजी ने इंग्लैंड की कुल रन संख्या को 294 रन तक सीमित रखा। मर्चेंट और मुश्ताक अली ने प्रथम विकेट की साझेदारी मे 124 रन बनाकर भारत की प्रथम पारी की नींव को दृढ़ बना दिया। तत्पश्चात् पासा पलटा और 170 रनों में पारी समाप्त हो गई। इंग्लैंड की द्वितीय पारी में भी अमरनाथ और मॉंकड ने अपनी अचूक और घातक गेंदबाजी से इंग्लैंड की प्रायी टीम को

*अपराजित

84 रनों पर ही धराशायी कर दिया। कॉम्पटन की 71 रनों की अपराजित पारी ने इंग्लैंड की रक्षा की और 153 रनों पर पारी समाप्ति की घोषणा कर दी गई। विजय के लिये भारत को 278 रन 195 मिनट में बनाने थे। भारत की द्वितीय पारी का प्रारम्भ दुर्भाग्यपूर्ण रहा क्योंकि केवल पांच रनों पर ही उनकी तीन विकटें उखड़ गई। जब खेल में दस मिनट बाकी थे तो भारत का अन्तिम जोड़ा खेल रहा था। सोहनी और हिंडलेकर ने प्रतिद्वन्द्वी गेंदबाजी का डट कर सामना किया और मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका। डेली टेलीग्राफ ने लिखा, "जब इतना गतियुक्त क्रिकेट का खेल होता है तो सारे दोष भुला दिये जाते हैं। खेलने या देखने के लिये इससे अधिक आकर्षक और आनन्ददायक खेल की कल्पना नहीं की जा सकती।"

तृतीय टैस्ट मैच में वर्षा के कारण पहले दिन केवल 90 मिनट का खेल हो सका और तीसरे और अन्तिम दिन तो खेल बिल्कुल बन्द रहा। भारतीय टीम ने पहले बल्लेबाजी की और 331 रन बनाये। मर्चेंट ने शानदार शतक पूरा किया। दूसरे दिन खेल समाप्ति तक इंग्लैंड ने तीन विकटें खोकर 95 रन बनाये।

रनों का सविस्तार विवरण नीचे दिया गया है :

प्रथम टैस्ट

लॉर्ड्स मे जून 22, 24 और 25 को खेला गया, टॉस भारत ने जीता और मैच इंग्लैंड ने 10 विकटों से। कप्तान : डब्लू० आर० हेमंड (इंग्लैंड) और पटौदी के नवाब (भारत)। विकेट-रक्षक पी० ए० गिब (इंग्लैंड) और डी० डी० हिंडलेकर (भारत)। निर्णायक एच० जी० बाल्डविन और जे० स्मार्ट।

भारत

मर्चेंट कै. गिब बा. वेडसर	12	पगबाधा बा. आइकिन	27
मांकड बा. राइट	14	कै. हेमंड बा. स्माइल्स	63
अमरनाथ पगबाधा बा. बेडसर	0	बा. स्माइल्स	50
हजारे बा. बेडसर	31	कै. हेमंड बा. बेडसर	34
मोदी अपराजित	57	पगबाधा बा. स्माइल्स	21
पटौदी कै. आइकिन बा. बेडसर	9	बा. राइट	22
गुलमोहम्मद बा. राइट	1	पगबाधा बा. राइट	9
कारदार बा. बाउज	43	बा. वेडसर	0
हिंडलेकर पगबाधा बा. बेडसर	3	कै. आइकिन बा. बेडसर	17
नायुडू स्ट. गिब बा. बेडसर	4	बा. बेडसर	13
शिंदे बा. बेडसर	10	अपराजित	4
अतिरिक्त	16	अतिरिक्त	15
	200		275

विकटों का पतन

प्रथम पारी : 1–15, 2–15, 3–44, 4–74, 5–86, 6–87, 7–144, 8–147, 9–157, 10–200.

द्वितीय पारी : 1–67, 2–117, 3–126, 4–129, 5–174, 6–185, 7–190, 8–249, 9–263, 10–275.

इंग्लैंड की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
बाउज	25	7	64	1	4	1	9	0
बेडसर	29.1	11	49	7	32.1	3	96	4
स्माइल्स	5	1	18	0	15	2	44	3
राइट	17	4	53	2	20	3	68	2
आइकिन	—	—	—	—	10	1	43	1

इंग्लैंड

हट्टन कै. नायुडू बा. अमरनाथ	7	अपराजित	22
वाशब्रुक कै. मांकड बा. अमरनाथ	27	अपराजित	24
कॉम्पटन बा. अमरनाथ	0		
हैमंड बा. अमरनाथ	33		
हार्डस्टाफ अपराजित	205		
गिब कै. हजारे बा. मांकड	60		
आइकिन कै. हिंडलेकर बा. शिंदे	16		
स्माइल्स कै. मांकड बा. अमरनाथ	25		
बेडसर बा. हजारे	30		
राइट बा. मांकड	3		
बाउज पगबाधा बा. हजारे	2		
अतिरिक्त	20	अतिरिक्त	2
	428	बिना विकेट खोये	48

विकटों का पतन

प्रथम पारी : 1–16, 2–16, 3–61, 4–70, 5–252, 6–284, 7–344, 8–416, 9–421, 10–428.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
हजारे	34.4	4	100	2	4	2	7	0
अमरनाथ	37	18	118	5	4	0	15	0
गुलमोहम्मद	2	0	2	0	—	—	—	—
मांकड	48	11	107	2	4.5	1	11	0
शिंदे	23	2	66	1	—	—	—	—
नायुडू	5	1	15	0	4	0	13	0

द्वितीय टैस्ट

मेंचेस्टर में जुलाई 20, 22 और 23 को खेला गया, टॉस भारत ने जीता और मैच मे हार-जीत का फैसला नहीं हो सका। कप्तान: डब्लू० आर० हेमंड (इंग्लैंड) और पटौदी के नवाब (भारत)। विकेट-रक्षक: पी० ए० गिब (इंग्लैंड) और डी० डी० हिंडलेकर (भारत)। निर्णायक: एफ० चेस्टर और जी० बीट।

इंग्लैंड

हट्टन कै. मुश्ताक बा. मांकड	67	कै. हिंडलेकर बा. अमरनाथ	2
वाशब्रुक कै हिंडलेकर बा. मांकड	52	पगबाधा बा. मांकड	26
कॉम्पटन पगबाधा बा. अमरनाथ	51	अपराजित	71
हेमंड बा. अमरनाथ	69	कै. कारदार बा. मांकड	8
हार्डस्टाफ कै. मर्चेंट बा. अमरनाथ	5	बा. अमरनाथ	0
गिब बा. मांकड	24	कै. मोदी बा. अमरनाथ	0
आइकिन कै. मांकड बा. अमरनाथ	2	अपराजित	29
वोस बा. मांकड	0		
पोलार्ड अपराजित	10		
बेडसर पगबाधा बा. अमरनाथ	8		
राइट पगबाधा बा. मांकड	0		
अतिरिक्त	6	अतिरिक्त	17
	294	5 विकटों पर पारी समाप्ति की घोषणा	153

विकटों का पतन

प्रथम पारी : 1–81, 2–156, 3–186, 4–193, 5–250, 6–265, 7–270, 8–274, 9–287, 10–294.

द्वितीय पारी : 1–7, 2–48, 3–68, 4–68, 5–84.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
सोहनी	11	1	31	0	—	—	—	—
अमरनाथ	51	17	96	5	30	9	71	3
हजारे	14	2	48	0	10	3	20	0
मांकड	46	15	101	5	21	6	45	2
सरवटे	7	0	12	0	—	—	—	—

भारत

मर्चेंट कै. वेडसर बा. पोलार्ड	78	कै. ग्राइकिन बा. पोलार्ड	0
मुश्ताक अली बा. पोलार्ड	46	बा. पोलार्ड	1
कारदार कै. और बा. पोलार्ड	1	कै. और बा. वेडसर	35
मांकड बा. पोलार्ड	0	कै. पोलार्ड बा. वेडसर	5
हजारे बा. पोप	3	बा. वेडसर	44
मोदी कै. आइकिन बा. वेडसर	2	बा. वेडसर	30
पटौदी बा. पोलार्ड	11	बा. वेडसर	4
अमरनाथ बा. वेडसर	8	बा. वेडसर	3
सोहनी कै. और बा. वेडसर	3	अपराजित	11
सरवटे कै. ग्राइकिन बा. वेडसर	0	कै. गिब बा. वेडसर	2
हिंडलेकर अपराजित	1	अपराजित	4
अतिरिक्त	17	अतिरिक्त	13
	170	9 विकटों पर	152

विकटों का पतन

प्रथम पारी : 1–124, 2–130, 3–130, 4–141, 5–141, 6–146, 7–156, 8–168, 9–169, 10–170.

द्वितीय पारी : 1–0, 2–3, 3–5, 4–79, 5–84, 6–87, 7–113, 8–132, 9–138.

इंग्लैंड की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
वोस	20	3	44	1	6	5	2	0
बेडसर	29	9	41	4	25	4	52	1
पोलार्ड	27	16	24	5	25	10	63	2
राइट	2	0	12	0	2	0	17	0
कॉम्पटन	4	0	18	0	3	1	5	0
आइकिन	2	0	11	0	—	—	—	—
हैमंड	1	0	3	0	—	—	—	—

तृतीय टैस्ट

ओवल में अगस्त 17, 19 और 20 को खेला गया, टॉस भारत ने जीता और मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका। कप्तान : डब्लू० आर० हेमण्ड (इंग्लैंड) और पटौदी के नवाब (भारत)। विकेट-रक्षक : टी० जी० ईवान्स (इंग्लैंड) और डी० डी० हिंडलेकर (भारत)। निर्णायक : एफ० चेस्टर और जे. स्मार्ट।

भारत

मर्चेंट रन आउट	128
मुश्ताक अली रन आउट	59
पटौदी बा. एडरिच	9
अमरनाथ बा. एडरिच	8
हजारे कै. कॉम्पटन बा. गोवर	11
मोदी बा. स्मिथ	27
कारदार बा. एडरिच	1
मॉकड बा. बेडसर	42
सोहनी अपराजित	29
नायडू कै. वाशब्रुक बा. बेडसर	4
हिंडलेकर पगबाधा बा. एडरिच	3
अतिरिक्त	10
	331

विकटों का पतन

1–94, 2–124, 3–142, 4–162, 5–225, 6–226, 7–272, 8–313, 9–325, 10–331.

इंग्लैंड की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
गोवर	21	3	56	1
बेडसर	32	6	60	2
टी.बी.पी. स्मिथ	21	4	58	1
एडरिच	19.2	4	68	4
लेंग्रिज	29	9	64	0
कॉम्पटन	5	0	15	0

इंग्लैंड

हट्टन पगबाधा बा. मांकड	25
वाशब्रुक कै. मुश्ताक बा. मांकड	17
फिशलॉक कै. मर्चेंट बा. नायुडू	8
कॉम्पटन अपराजित	24
हेमण्ड अपराजित	9
एडरिच, लेंग्रिज, टी.बी.पी. स्मिथ, इवान्स, बेडसर, गोवर — बल्लेबाजी नहीं की	
अतिरिक्त	12
तीन विकटों पर	95

विकटों का पतन

1–48, 2–55, 3–66.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
अमरनाथ	15	6	50	0
सोहनी	4	3	2	0
हजारे	2	1	4	[illegible]
मांकड	20	7	28	[illegible]
नायुडू	9	2	19	

भारत की टीम आस्ट्रेलिया में, 1947-48

देश के स्वतन्त्र होने के चार महीने पश्चात् अमरनाथ के नेतृत्व में भारतीय क्रिकेट टीम ने पहली बार आस्ट्रेलिया का भ्रमण किया। टीम के चयन और भ्रमण के बीच देश का भारत और पाकिस्तान में विभाजन हो गया। चुने हुए चार खिलाड़ी आस्ट्रेलिया नहीं जा सके, फलस्वरूप भारतीय टीम की शक्ति कम हो गई। भारतीय सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज और कप्तान, विजय मर्चेंट के अस्वस्थ होने का कारण; साहसी बल्लेबाज मुश्ताक अली शोक संतप्त होने के कारण, आकर्षक बल्लेबाज रूसी मोदी बीमारी के कारण और उपयोगी तेज गेंदबाज फजल महमूद पाकिस्तान में रह जाने के कारण टीम में सम्मिलित नहीं हो सके। इनका स्थान सरवटे, रणवीर सिंह, रायसिंह और रंगाचारी ने लिया।

टीम के खिलाड़ी थे :

1. लाला अमरनाथ (कप्तान)
2. विजय हजारे (उप-कप्तान)
3. वीनू मांकड
4. सी० एस० नायुडू
5. एस० डब्लू० सोहनी
6. गुल मोहम्मद
7. अमीर इलाही
8. सी० टी० सरवटे
9. एच० आर० अधिकारी
10. डी० जी० फडकर
11. के० एस० रणवीर सिंह
12. पी० सेन
13. के० रायसिंह
14. के० एम० रांगणेकर
15. जी० किशनचन्द
16. सी० आर० रंगाचारी
17. जे० के० ईरानी

पंकज गुप्ता (प्रबन्धक)
फरग्युसन (गणनाकर)

टैस्ट मैचों के अतिरिक्त खेले गये अन्य मैचों की संक्षिप्त विवरणों इस प्रकार है :

पर्थ में : अक्टूबर 17, 18, 20 और 21 को

पश्चिम आस्ट्रेलिया : 171 (मांकड ने 68 रन देकर 5 विकटें ली) और 4 विकटों पर 70 रन। भारत : 127 (मांकड 57)। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

एडिलेड में : अक्टूबर 24, 25 27 और 28 को

दक्षिण आस्ट्रेलिया : 8 विकटों पर 518 और पारी समाप्ति की घोषणा (ब्रेडमेन 156, निहल्स 137, क्रेग 100) और 219 (नॉवल्स 50*)। भारत : 451 (अमरनाथ 144, हजारे 95, मांकड 57) और 5 विकटों पर 235 (मांकड 116, अमरनाथ 94*)। मैच में हार-जीत का फैसला नही हो सका।

मेलबोर्न में : अक्टूबर 30, 31, नवम्बर 1 और 3 को

भारत : 403 (अमरनाथ 228,* नायुडू 58) और 203 (हजारे 83, मांकड 59)। विक्टोरिया : 273 (हार्वे 87, लॉक्स्टन 77, फोदरगिल 54) और 2 विकटों पर 138 रन (हेसेट 67*)। मैच में हार-जीत का फैसला नही हो सका।

सिडनी में : नवम्बर 7, 8, 10 और 11 को

न्यूसाउथ वेल्स : 8 विकटों पर 561 और पारी समाप्ति की घोषणा (मॉरिस 162, मोरोनी 96, पेटीफोर्ड 73, मिलर 72, ल्यूकमेन 58)। भारत : 298 (हजारे 142, मांकड 67) और 215 (अधिकारी 65)। न्यूसाउथ वेल्स एक पारी और 48 रनों से विजयी।

सिडनी में : नवम्बर 14, 15, 17 और 18 को

भारत : 326 (गुलमोहम्मद 85, किशनचन्द 75) और 304 (किशनचन्द 63*, सरवटे 58)। आस्ट्रेलिया एकादश : 380 (ब्रेडमेन 172, मिलर 86) और 203 (हार्वे 56, मांकड ने 84 रन देकर 8 विकटें ली)। भारत 47 रनों से विजयी।

ब्रिसबेन में : नवम्बर 21, 22, 24 और 25 को

क्वीन्सलैंड : 341 (मॉरिस 115, रैमर 82, मांकड ने 76 रन देकर 6 विकटें ली) और 7 विकटों पर 269 और पारी समाप्ति की घोषणा (मेकूल 101, रेमर 52)। भारत : 369 (अमरनाथ 172, मांकड 65, एल. जॉनसन ने 83 रन देकर 6 विकटें ली) और 217 (मेकूल ने 68 रन देकर 5 विकटें ली)। क्वीन्सलैंड 24 रनो से विजयी।

होवर्ट में : जनवरी 10, 12 और 13 को

तस्मानिया : 142 (रंगाचारी ने 45 रन देकर 6 विकटें ली) और 125 रन। भारत : 7 विकटो पर 406 और पारी समाप्ति की घोषणा (अमरनाथ 171, हजारे 115)। भारत एक पारी और 139 रनों से विजयी।

लॉनसेस्टन में : जनवरी 15, 16 और 17 को

भारत : 7 विकटो पर 457 और पारी समाप्ति की घोषणा (अमरनाथ 135, सरवटे 128, हजारे 59) और एक विकेट पर 12 रन। तस्मानिया : 458 (वाम्सले 180, मॉरिसबी 130)। मैच में हार-जीत का फैसला नही सका।

माइल्डूरा में : फरवरी 2, 3 और 4 को

विक्टोरिया काउंटी एकादश : 153 और 114 रन। भारत : 6 विकटो पर 291 और पारी समाप्ति की घोषणा (सरवटे 59, रणवीर सिंह 52)। भारत एक पारी और 24 रनो से विजयी।

जीलॉंग में : फरवरी 14 और 16 को

भारत : 375 (रांगणेकर 120, हजारे 74, फड़कर 68)। विक्टोरिया काउंटी एकादश : 67 (फड़कर ने 33 रन देकर 6 विकटें ली) और 8 विकटों पर 210 (वी० हेसेट 84), मैच मे हार-जीत का फैसला नही सका।

पर्थ में : फरवरी 20, 21, 23 और 24 को

पश्चिम आस्ट्रेलिया : 270 (कारमोडी 85, लॉगडन 55, मांकड ने 60 रन देकर 5 विकटें ली) और 172 (रिंग 54*)। भारत : 252 (गुलमोहम्मद 70, पकेट ने 56 रन देकर 5 विकटें ली) और 184 (पकेट ने 78 रन देकर 6 विकटें ली)। पश्चिम आस्ट्रेलिया 6 रनों से विजयी।

टैस्ट मैच

क्रिकेट से शीघ्र ही अवकाश ग्रहण करने वाले उनचालीस वर्षीय ब्रेडमेन अभी तक सशक्त खिलाड़ी थे और उनकी बल्लेबाजी ने टैस्ट शृंखला का निर्णय आस्ट्रेलिया के पक्ष मे कर दिया। अपराजित घरेलू टीम ने चार टैस्ट जीत लिये। प्रथम टैस्ट के पहले दिन, खेल की समाप्ति पर आस्ट्रेलिया ने केवल तीन विकटों पर 273 रन बना लिये थे और ब्रेडमेन 160 रन बना

---

*अपराजित

कर भी अपराजित थे । दूसरे दिन वर्षा के कारण केवल एक घंटे खेल हो सका और आस्ट्रेलिया ने अपनी कुल रन संख्या में 36 रनों की वृद्धि की । तीसरे दिन अमरनाथ की गेंद पर ब्रेडमेन ज्योंही पीछे हटकर खेले उन्होंने स्वयं ही अपने विकटों को गिरा लिया । तुरन्त पारी समाप्ति की घोषणा कर दी गई जबकि कुल रन संख्या 8 विकटों पर 382 थी ।

भारत को निकृष्ट विकेट पर बल्लेबाजी करनी पड़ी थी, जहाँ टोशक की घूमती हुई गेंदों का सामना करना टेढ़ी खीर थी । इस गेंदबाज ने प्रथम पारी मे केवल 2 रन देकर 5 विकटें उखाड़ डाली और द्वितीय पारी मे 6 विकटें 29 रनों पर प्राप्त की । भारत बेचारा दोनों पारियों में केवल 58 और 98 रन बना सका और एक पारी और 226 रनो से बुरी तरह पराजित हुआ ।

द्वितीय टैस्ट सिडनी में खेला गया । वहां भी वर्षा ने भारत के पैर नही जमने दिए । पहले दिन भोजन के बाद खेल नहीं हुआ और दूसरे दिन खेल देर से प्रारम्भ हुआ । अमरनाथ ने टॉस जीता । पारी प्रारम्भ करने वाले दोनों बल्लेबाज केवल 16 रन बनाकर परास्त हो गए । केवल फडकर (51) और किशनचन्द (44) ने सातवें विकेट पर 70 रन बना कर भारत की थोड़ी बहुत लाज रखी । भारतीय पारी 188 पर समाप्त हो गई । ब्राउन, बार-बार चेतावनी मिलने पर भी, गेंद के छूटने के पहले अपनी क्रीज छोड़ रहा था । मांकड ने इसका ठीक इलाज कर दिया और दूसरे दिन खेल समाप्ति पर आस्ट्रेलिया एक विकेट खोकर 28 रन बना सकी । तीसरे और चौथे दिन वर्षा के कारण खेल नही हुआ ।

खतरनाक विकेट का मजा आस्ट्रेलिया ने भी चखा और बचे हुए नौ विकेट केवल 79 रन जोड़ सके । हजारे ने ब्रेडमेन का डंडा 13 रनों पर उखाड़ दिया और 4 विकटें 29 रनों पर प्राप्त की और फडकर ने तीन विकटें 14 रनो पर ।

भारत 81 रन आगे रहा लेकिन पांचवें दिन का खेल समाप्त होने पर उसने 7 विकटें 61 रन पर खो दी । हजारे और अधिकारी बल्लेबाजी कर रहे थे । यदि अन्तिम दिन कुछ तेज गति से रन बनाकर आस्ट्रेलिया को खतरनाक विकेट पर बल्लेबाजी दे दी जाती तो भारत विजय की स्थिति में हो जाता; लेकिन भाग्य ने साथ नहीं दिया । थोड़ी-थोड़ी देर बाद वर्षा होती गई, खेल संभव नहीं हुआ और हार-जीत का फैसला नहीं हो सका ।

तृतीय टैस्ट मैच में ब्रेडमेन ने मेलबोर्न में दोनों पारियों में शतक लगाकर नया कीर्तिमान स्थापित किया । अमरनाथ और मांकड़ की गेंदबाजी अचूक थी लेकिन ब्रेडमेन ने भारत की गेंदबाजी पर अपना पूर्ण प्रभुत्व

हजारे ने ब्रेडमेन के पहले टैस्ट के आश्चर्यजनक खेल की बराबरी दोनों पारियों में शतक बनाकर करली हालांकि उनका कार्य अधिक कठिन था क्योंकि आस्ट्रेलिया की गेंदबाजी और क्षेत्र रक्षण दोनों ही उच्चकोटि के थे। भारत ने आस्ट्रेलिया की इस विशाल रन संख्या का सामना दुर्बलतापूर्वक किया क्योंकि सरवटे और सेन केवल 6 रनों पर ही वापस लौट आये। मांकड और अमरनाथ ने स्थिति मे सुधार किया लेकिन जब भारत ने पांच विकटें 133 रनों पर खो दी तो हालत फिर बिगड़ गई। हजारे और फडकर ने उत्साहजनक बल्लेबाजी कर छठे विकेट की साझेदारी में 188 रन जोड़े। दोनों ने अपने-अपने शतक पूरे किये और अन्तिम विकेट गिरने पर भारत की कुल रन संख्या 331 थी।

भारत को तत्काल द्वितीय पारी प्रारम्भ करनी पड़ी जो अशुभ रही क्योंकि प्रारम्भ करने वाले दोनों ही बल्लेबाज शून्य पर आउट हो गये। लेकिन हजारे ने समय पर फिर शानदार बल्लेबाजी कर बड़ी कुशलता से 145 रन बनाये। अधिकारी (51) और गुलमोहम्मद (34) ने उनका साथ दिया। लिडवॉल ने 7 विकटें 38 रनो पर गिरा कर अन्य बल्लेबाजों को विकेट पर टिकने नहीं दिया और 277 रनों पर पारी समाप्त हो गई। आस्ट्रेलिया एक पारी और 16 रनों से विजयी रहा।

पंचम टैस्ट के प्रारम्भ होने के एक सप्ताह पूर्व राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की हत्या कर दी गई। इस दुखद समाचार ने गहरा आघात पहुंचाया। खेल प्रारम्भ करने के पूर्व दोनो टीमो ने और अपार जन समुदाय ने मौन खड़े रह कर दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की।

ब्रेडमेन का आस्ट्रेलिया में यह अन्तिम टैस्ट मैच था और कौन इस अद्भुत बल्लेबाज को टैस्ट क्रिकेट को बिदाई देते नही देखता?

ब्रेडमेन ने टॉस जीता और आस्ट्रेलिया के बल्लेबाजों ने प्रतिभाशाली खेल दिखाया। भारतीय खिलाड़ियों ने भी क्षेत्र-रक्षण में विशेष दक्षता दिखाई। अधिकारी ने तेज गेंद फेंक कर बार्न्स की पारी का अन्त कर दिया और मांकड की क्षेत्र-रक्षण दक्षता ने ब्राउन की पारी समाप्त कर दी जब उसे शतक पूरा करने में केवल एक रन की आवश्यकता थी। ब्रेडमेन ने बड़े जोश-खरोश के साथ बल्लेबाजी प्रारम्भ की और गेंद को सभी दिशायें दिखादी। जब उनके 57 रन बने थे तो शरीर में लचक आने के कारण उन्हें अपनी पारी समाप्त करनी पड़ी। मैदान से लौटते समय दर्शकों ने उनका उच्च स्वर से जय-जयकार किया। प्रथम दिन की खेल समाप्ति पर आस्ट्रेलिया ने 3 विकटें खोकर 336 रन बना लिये थे। उन्नीस वर्षीय नील हार्वे ने आकर्षक बल्लेबाजी कर 153 रन बनाये। आठ विकटों पर 575 रन बनाने पर पारी समाप्ति की घोषणा कर दी गई।

जमा लिया था। हेसैट ने उसका साथ दिया और जब पारी समाप्त हुई तो कुल रन संख्या 394 थी। अमरनाथ ने 78 रन देकर चार विकटें और मांकड ने 135 रन देकर चार विकटें ली थीं।

मांकड और सरवटे ने प्रथम विकेट की साझेदारी में 124 रन बना कर भारत की पारी की नींव दृढ़ कर दी। मांकड़ ने बहुत कुशलता से बल्लेबाजी कर आस्ट्रेलिया की भूमि पर भारत की ओर से प्रथम शतक लगाने का सौभाग्य प्राप्त किया। फडकर 55 रन बना कर अपराजित रहे।

अमरनाथ ने जब विकेट को गेंदबाजी के हित में पाया तो उन्होंने भारत की पारी 9 विकटों पर 291 रन बन जाने पर समाप्त घोषित कर दी, हालांकि भारत आस्ट्रेलिया से 103 रन पीछे था। ब्रेडमेन ने अपने कमजोर बल्लेबाजों को पहले भेजकर अमरनाथ की युक्ति पर पानी फेर दिया। भारत ने प्रथम चार विकेट 32 रनों पर गिरा दी लेकिन विकेट की निष्क्रियता कम होती गई। ब्रेडमेन और मौरिस ने तीव्र गति से रन बनाना प्रारम्भ किया और दोनों ने मिलकर बहुमूल्य 223 रन का योग दिया। इसके बाद पारी समाप्ति की घोषणा कर दी गई। ब्रेडमेन ने अपने महान क्रिकेट के जीवन काल में प्रथम बार टैस्ट मैच की दोनों पारियों में शतक बनाए और 127 रन बना कर अपराजित रहे। मौरिस के पूरे सौ रन बन चुके थे और वह भी अपराजित थे।

डूलैंड ने 35 रन देकर 4 विकटें लेकर और जॉन्सटन ने भी उतनी ही विकटें 44 रनों पर प्राप्त कर भारत की द्वितीय पारी को 125 रनों तक सीमित रखा। भारत का खेल बेजान था। आस्ट्रेलिया 233 रनों से विजयी रहा।

ब्रेडमेन ने चतुर्थ टैस्ट मैच में भी भारतीय गेंदबाजों की दुर्दशा की। फडकर ने मौरिस का डंडा 20 रन पर निकाल बाहर किया। तत्पश्चात् ब्रेडमेन और बार्न्स ने खेल पर अपना प्रभुत्व जमा लिया और आक्रामक बल्लेबाजी कर तेज गति से 236 रन जोड़े। बार्न्स के चले जाने पर हेसैट ने उनका स्थान लिया और उतनी ही तेज गति से रनों में वृद्धि होती रही। ब्रेडमेन ने अपना पहला शतक 193 मिनट में पूरा किया और दोहरा शतक अगले 79 मिनटों में पूरा कर लिया। जब कुल रन संख्या 361 थी तो हजारे ने 201 रनों पर उन्हें परास्त कर दिया। मिलर अगले बल्लेबाज थे और उन्होंने भी रनों की गति को तेज बनाये रखा। आस्ट्रेलिया की पारी 674 रनों पर समाप्त हुई जिसमें हेसैट 198 रनों पर अपराजित रहे। अपने प्रथम टैस्ट मैच में, गेंदबाजी की इतनी दुर्गति होने पर भी, रंगाचारी ने 4 विकटें 141 रन देकर गिराईं।

हजारे ने ब्रेडमेन के पहले टैस्ट के आश्चर्यजनक खेल की बराबरी दोनों पारियों में शतक बनाकर करली हालांकि उनका कार्य अधिक कठिन था क्योंकि आस्ट्रेलिया की गेंदबाजी और क्षेत्र रक्षण दोनों ही उच्चकोटि के थे। भारत ने आस्ट्रेलिया की इस विशाल रन संख्या का सामना दुर्बलतापूर्वक किया क्योंकि सरवटे और सेन केवल 6 रनों पर ही वापस लौट आये। मांकड और अमरनाथ ने स्थिति में सुधार किया लेकिन जब भारत ने पांच विकटें 133 रनों पर खो दी तो हालत फिर बिगड़ गई। हजारे और फडकर ने उत्साहजनक बल्लेबाजी कर छठे विकेट की साझेदारी में 188 रन जोड़े। दोनों ने अपने-अपने शतक पूरे किये और अन्तिम विकेट गिरने पर भारत की कुल रन संख्या 331 थी।

भारत को तत्काल द्वितीय पारी प्रारम्भ करनी पड़ी जो अशुभ रही क्योंकि प्रारम्भ करने वाले दोनों ही बल्लेबाज शून्य पर आउट हो गये। लेकिन हजारे ने समय पर फिर शानदार बल्लेबाजी कर बड़ी कुशलता से 145 रन बनाये। अधिकारी (51) और गुलमोहम्मद (34) ने उनका साथ दिया। लिंडवॉल ने 7 विकटें 38 रनों पर गिरा कर अन्य बल्लेबाजों को विकेट पर टिकने नहीं दिया और 277 रनों पर पारी समाप्त हो गई। आस्ट्रेलिया एक पारी और 16 रनों से विजयी रहा।

पंचम टैस्ट के प्रारम्भ होने के एक सप्ताह पूर्व राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की हत्या कर दी गई। इस दुखद समाचार ने गहरा आघात पहुंचाया। खेल प्रारम्भ करने के पूर्व दोनों टीमों ने और अपार जन समुदाय ने मौन खड़े रह कर दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की।

ब्रेडमेन का आस्ट्रेलिया में यह अन्तिम टैस्ट मैच था और कौन इस अद्भुत बल्लेबाज को टैस्ट क्रिकेट को बिदाई देते नहीं देखता?

ब्रेडमेन ने टॉस जीता और आस्ट्रेलिया के बल्लेबाजों ने प्रतिभाशाली खेल दिखाया। भारतीय खिलाड़ियों ने भी क्षेत्र-रक्षण में विशेष दक्षता दिखाई। अधिकारी ने तेज गेंद फेंक कर बार्न्स की पारी का अन्त कर दिया और मांकड की क्षेत्र-रक्षण दक्षता ने ब्राउन की पारी समाप्त कर दी जब उसे शतक पूरा करने में केवल एक रन की आवश्यकता थी। ब्रेडमेन ने बड़े जोश-खरोश के साथ बल्लेबाजी प्रारम्भ की और गेंद को सभी दिशायें दिखादीं। जब उनके 57 रन बने थे तो शरीर में लचक आने के कारण उन्हें अपनी पारी समाप्त करनी पड़ी। मैदान से लौटते समय दर्शकों ने उनका उच्च स्वर से जय-जयकार किया। प्रथम दिन की खेल समाप्ति पर आस्ट्रेलिया ने 3 विकटें खोकर 336 रन बना लिये थे। उन्नीस वर्षीय नील हार्वे ने आकर्षक बल्लेबाजी कर 153 रन बनाये। आठ विकटों पर 575 रन बनाने पर पारी समाप्ति की घोषणा कर दी गई।

भारत ने सरवटे को पारी प्रारम्भ होते ही खो दिया लेकिन माँकड और अधिकारी जम कर खेले और द्वितीय विकेट की साझेदारी में 124 रन जोड़े गये। माँकड ने अपना द्वितीय टेस्ट शतक पूरा किया। हजारे (74) और फडकर (56) ने भी शानदार बल्लेबाजी की और 331 रनों पर भारत की पारी समाप्त हुई।

भारत को तत्काल बल्लेबाजी करनी पड़ी लेकिन निकृष्ट विकेट पर भारतीय खिलाड़ी जल्दी ही उखड़ गये और केवल 67 रन ही बना सके। आस्ट्रेलिया की एक पारी और 177 रनों से विजय हुई।

रनों का सविस्तार विवरण इस प्रकार है :

प्रथम टेस्ट

ब्रिसबेन में नवम्बर 28, 29, दिसम्बर 1, 2 और 3 को खेला गया। टॉस आस्ट्रेलिया ने जीता और मैच भी एक पारी और 226 रनों से। कप्तान डी० जी० ब्रेडमेन (आस्ट्रेलिया) और लाला अमरनाथ (भारत)। विकेट-रक्षक डी० टैलन (आस्ट्रेलिया) और जे० के० ईरानी (भारत)। निर्णायक : जी० बोरविक और ए० एन० बारलो।

आस्ट्रेलिया

ब्राउन कै० ईरानी बा० अमरनाथ	11
मौरिस बा० सरवटे	47
ब्रेडमेन बा० अमरनाथ	185
हैसेट कै० गुलमोहम्मद बा० माँकड	48
मिलर कै० माँकड बा० अमरनाथ	58
मेकूल कै० सोहनी बा० अमरनाथ	10
लिन्डवाल स्ट० ईरानी बा० माँकड	7
टैलन अपराजित	3
आई० डब्लू० जॉनस्टन कै० रागणेकर बा० माँकड	6
टोशक अपराजित	0
डब्लू० ए० जॉनसन : बल्लेबाजी नहीं की	
अतिरिक्त	7
आठ विकटों पर पारी समाप्ति की घोषणा	382

विकटों का पतन

1—38, 2—97, 3—198, 4—318,
5—344, 6—373, 7—373, 8—380.

भारत की गेंदबाजी

	ओ०	मे० ओ०	रन	विकेट
सोहनी	23	4	81	0
अमरनाथ	39	10	84	4
मांकड	34	3	113	3
सरवटे	5	1	16	1
हजारे	11	1	63	0
नायुडू	3	0	18	0

भारत

मांकड कै० टैलन बा० लिंडवॉल	0	बा० लिंडवॉल	7
सरवटे कै० जॉनस्टन बा० मिलर	12	बा० जॉनस्टन	26
गुलमोहम्मद बा० लिंडवॉल	0	बा० टोशक	13
अधिकारी कै० मेकूल बा० जॉनस्टन	8	पगबाधा बा० टोशक	13
किशनचन्द कै० टैलन बा० जॉनस्टन	1	कै० ब्रेडमेन बा० टोशक	0
हजारे कै० ब्राउन बा० टोशक	10	कै० मॉरिस बा० टोशक	18
रांगणेकर कै० मिलर बा० टोशक	1	कै० हेसेट बा० टोशक	0
सोहनी कै० मिलर बा० टोशक	2	कै० ब्राउन बा० मिलर	4
अमरनाथ कै० ब्रेडमेन बा० टोशक	22	बा० टोशक	5
नायुडू अपराजित	0	कै० हेसेट बा० लिंडवॉल	6
ईरानी कै० हेसेट बा० टोशक	0	अपराजित	2
अतिरिक्त	2	अतिरिक्त	4
	58		98

विकटों का पतन

प्रथम पारी : 1—0, 2—0, 3—19, 4—23, 5—23, 6—53, 7—56, 8—58, 9—58, 10—58.

द्वितीय पारी : 1—14, 2—27, 3—41, 4—41, 5—72, 6—80, 7—80, 8—89, 9—94, 10—98.

आस्ट्रेलिया की गेंदबाजी

	ओ०	मे० ओ०	रन	विकेट	ओ०	मे० ओ०	रन	विकेट
लिंडवॉल	5	2	11	2	10·7	2	19	2
जॉनस्टन	8	4	17	2	9	6	11	1
मिलर	6	1	26	1	10	2	30	1
टोशक	2·3	1	2	5	17	6	29	6
जॉनसन	—	—	—	—	3	1	5	0

द्वितीय टैस्ट

सिडनी में दिसम्बर 12, 13, 15, 16, 17 और 18 को खेला गया, टॉस भारत ने जीता और मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका। कप्तान: डी० जी० ब्रेडमेन (आस्ट्रेलिया) और लाला अमरनाथ (भारत)। विकेट-रक्षक : डी० टैलन (आस्ट्रेलिया) और जे० के० ईरानी (भारत)। निर्णायक : जी० बोरविक और ए० एन० बारलो।

भारत

मॉकड बा. लिंडवॉल	5	बा. लिंडवॉल	5
सरवटे बा. जॉनस्टन	0	कै. जॉनसन बा. जानस्टन	3
गुलमोहम्मद कै. ब्राउन बा. मिलर	29	कै. ब्रेडमेन बा. जॉनसन	5
हजारे बा. मिलर	16	अपराजित	13
अमरनाथ बा. जॉनसन	25	कै. मॉरिस बा. जॉनसन	14
किशनचन्द बा. जॉनसन	44	कै. मेकूल बा. जॉनस्टन	0
अधिकारी पगबाधा बा. जानस्टन	0	अपराजित	0
फडकर कै. मिलर बा. मेकूल	51	कै. टैलन बा. मिलर	2
नायडू कै. और बा. मेकूल	6		
अमीर इलाही कै. मिलर बा. मेकूल	4	कै. मिलर बा. जॉनस्टन	13
ईरानी अपराजित	1		
अतिरिक्त	7	अतिरिक्त	6
	188	7 विकटों पर	61

विकटों का पतन

प्रथम पारी : 1—2, 2—16, 3—52, 4—57, 5—94, 6—95, 7—165, 8—174, 9—182, 10—188.

द्वितीय पारी : 1—17, 2—19, 3—26, 4—29, 5—34, 6—53, 7—55.

आस्ट्रेलिया की गदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
लिंडवॉल	12	3	30	1	5	1	13	1
जॉनस्टन	17	4	33	2	13	5	15	3
मिलर	9	3	25	2	6	2	5	1
मेकूल	18	2	71	3	—	—	—	—
जॉनसन	14	3	22	2	13	7	22	2

आस्ट्रेलिया

बार्न्स बा. मांकड	12	कै. सेन बा. अमरनाथ	15
मॉरिस बा. अमरनाथ	45	अपराजित	100
ब्रेडमेन पगबाधा बा. फडकर	132	अपराजित	127
हेसेट पगबाधा बा. मांकड	80		
मिलर पगबाधा बा. मांकड	29		
हेमेन्स स्ट. सेन बा. अमरनाथ	25		
लिंडवॉल बा. अमरनाथ	26		
टैलन कै. मांकड बा. अमरनाथ	2		
टूलैण्ड अपराजित	21	पगबाधा बा. फडकर	6
जॉनसन पगबाधा बा. मांकड	16	कै. हजारे बा. अमरनाथ	0
जॉनस्टन रन आउट	5	पगबाधा बा. अमरनाथ	3
अतिरिक्त	1	अतिरिक्त	4
	394	चार विकटों पर पारी समाप्ति की घोषणा	255

विकटों का पतन

प्रथम पारी : 1—29, 2—99, 3—268, 4—289, 5—302, 6—339, 7—341, 8—352, 9—387, 10-394.

द्वितीय पारी : 1—1, 2—11, 3—13, 4—32.

भारत की गेंदबाज़ी

	ओ.	मे.	ओ. रन	विकेट	ओ.	मे.	ओ. रन	विकेट
फडकर	15	1	80	1	10	1	28	1
अमरनाथ	21	3	78	4	20	3	52	3
हजारे	16.1	0	62	0	11	1	55	0
मांकड	37	4	135	4	18	4	74	0
सरवटे	3	0	16	0	5	0	41	0
नायुडू	2	0	22	0	—	—	—	—
गुलमोहम्मद	—	—	—	—	1	0	1	0

भारत

मांकड कै. टैलन बा. जानस्टन	116	बा. जानस्टन	13
सरवटे कै. टैलन बा. जानस्टन	36	बा. जानस्टन	1
गुलमोहम्मद कै. और बा. इुलैण्ड	12	कै. मॉरिस बा. जॉनसन	28
हजारे कै. टैलन बा. बार्न्स	17	कै. बार्न्स बा. मिलर	10
अमरनाथ पगबाधा बा. बार्न्स	0	बा. लिंडवॉल	8
फडकर अपराजित	55	कै. बार्न्स बा. जॉनस्टन	13
अधिकारी स्ट. टैलन बा. जॉनसन	26	कै. लिंडवॉल बा. जॉनसन	1
रायसिंह कै. बार्न्स बा. जॉनसन	2	कै. टैलन बा. जानस्टन	24
रांगणेकर कै. और बा. जॉनसन	6	कै. हेमेन्स बा. जॉनसन	18
सेन बा. जॉनसन	4	कै. हैसेट बा. जॉनसन	2
नायुडू अपराजित	4	अपराजित	0
अतिरिक्त	13	अतिरिक्त	7
नौ विकटों पर पारी समाप्ति की घोषणा	291		125

विकटों का पतन

प्रथम पारी : 1–124, 2–145, 3–188, 4–188, 5–198, 6–260, 7–264, 8–280, 9–284.

द्वितीय पारी : 1–10, 2–27, 3–44, 4–60, 5-60, 6–69, 7–100, 8–107, 9–125, 10–125.

आस्ट्रेलिया की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
लिंडवॉल	12	0	47	0	3	0	10	1
मिलर	13	2	46	0	7	0	29	1
जॉनस्टन	12	0	33	2	10	1	44	4
जॉनसन	14	1	59	4	5·7	0	35	4
इुलैण्ड	12	0	68	1	—	—	—	—
बार्न्स	6	1	25	2	—	—	—	—

चतुर्थ टैस्ट

एडिलेड में जनवरी 23, 24, 26, 27 और 28 को खेला गया। टॉस आस्ट्रेलिया ने जीता और मैच भी एक पारी और 16 रनों से। कप्तान : डी० जी०.ब्रेडमेन (आस्ट्रेलिया) और लाला अमरनाथ (भारत)। विकेट–रक्षक : डी० टैलन (आस्ट्रेलिया) और पी० सेन (भारत)। निर्णायक : जी० बोरविक और आर० विन।

आस्ट्रेलिया

बार्न्स पगबाधा बा. मांकड	112
मॉरिस बा. फड़कर	7
ब्रेडमेन बा हजारे	201
हैसेट अपराजित	198
मिलर बा. रंगाचारी	67
हार्वे पगबाधा बा. रंगाचारी	13
मेकूल बा. फड़कर	27
जॉनसन बा. रंगाचारी	22
लिंडवॉल बा. रंगाचारी	2
टैलन पगबाधा बा. मांकड	1
टोशक पगबाधा बा. हजारे	8
अतिरिक्त	16
	674

विकटों का पतन : 1-20, 2-256, 3-361, 4-503, 5-523, 6-576, 7-634, 8-640, 9-641, 10-674.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
फड़कर	15	0	74	2
अमरनाथ	9	0	42	0
रंगाचारी	41	5	141	4
मांकड	43	8	170	2
सरवटे	22	1	121	0
हजारे	21·3	1	110	2

भारत

मांकड बा. मेकूल	49	कै. टैलन बा. लिंडवॉल	0
सरवटे बा. मिलर	1	बा. टोशक	11
सेन बा. मिलर	0	अपराजित	0
अमरनाथ कै. ब्रेडमेन बा. जॉनसन	46	बा. लिंडवॉल	0
हजारे पगबाधा बा. जॉनसन	116	बा. लिंडवॉल	145
गुलमोहम्मद स्ट. टैलन बा. जॉनसन	4	बा. बार्न्स	34
फड़कर पगबाधा बा. टोशक	123	पगबाधा बा. लिंडवॉल	14
किशनचन्द बा. लिंडवॉल	10	बा. लिंडवॉल	0
अधिकारी रन आउट	2	पगबाधा बा. मिलर	51
रांगणेकर स्ट. टैलन बा. जॉनसन	8	बा. लिंडवॉल	0
रंगाचारी अपराजित	0	कै. मेकूल बा. लिंडवॉल	0
अतिरिक्त	22	अतिरिक्त	22
	381		277

विकटों का पतन

प्रथम पारी : 1–6, 2–6, 3–99, 4–124, 5–133, 6–321, 7–353, 8–359, 9–375, 10–381.

द्वितीय पारी : 1–0, 2–0, 3–33, 4–99, 5–139, 6–139, 7–271, 8–273, 9–273, 10–277.

आस्ट्रेलिया की गेंदबाजी

	ओ.	मे.	ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.	ओ.	रन	विकेट
लिंडवॉल	21	6	61	1	16·5	4	38	7
मिलर	9	1	39	2	9	3	13	1
मेकूल	28	2	102	1	4	0	26	0
जॉनसन	23·1	5	64	4	20	4	54	0
टोशक	18	2	66	1	25	8	73	1
बार्न्स	9	0	23	0	18	4	51	1
ब्रेडमेन	1	0	4	0	—	—	—	—

पंचम टैस्ट

मेलबोर्न में फरवरी 6 ,7, 9 और 10 को खेला गया। टॉस आस्ट्रेलिया ने जीता और मैच भी एक पारी और 117 रनों से। कप्तान : डी० जी० ब्रेडमेन (आस्ट्रेलिया) और लाला अमरनाथ (भारत)। विकेट-रक्षक : डी० टैलन (आस्ट्रेलिया) और पी० सेन (भारत)। निर्णायक : ए० एन० बारलो और जी० एस० कूपर।

आस्ट्रेलिया

बार्न्स रन आउट	33
ब्राउन रन आउट	99
ब्रेडमेन चोट के कारण निवृत्त	57
मिलर कै. सेन बा. फडकर	14
हार्वे कै. सेन बा. मांकड	153
लॉक्सटन कै. सेन बा. अमरनाथ	80
लिंडवॉल कै. फडकर बा. मांकड	35
टैलन कै. सेन बा. सरवटे	37
जॉनसन अपराजित	25
रिंग कै. किशनचन्द बा. हजारे	11
जॉनस्टन अपराजित	23
अतिरिक्त	8
आठ विकटों पर पारी समाप्ति की घोषणा	575

विकटों का पतन : 1–48, 2–182, 3–219, 4–378, 5–457, 6–497, 7–527, 8–554.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
फडकर	9	0	58	1
अमरनाथ	23	1	79	1
रंगाचारी	17	1	97	0
हजारे	14	1	63	1
मांकड	33	2	107	2
सरवटे	18	1	82	1
नायुडू	13	0	77	0
अधिकारी	1	0	4	0

भारत

मांकड कै. टैलन बा. लॉक्सटन	111	कै. बा. लिंडवॉल	0
सरवटे बा. लिंडवॉल	0	पगबाधा बा. जॉनसन	10
अधिकारी कै. टैलन बा लॉक्सटन	38	कै. ब्रेडमेन बा. लॉक्सटन	17
हजारे पगबाधा बा. लिंडवॉल	74	कै. और बा. जॉनसन	10
अमरनाथ कै. बार्न्स बा. रिंग	12	कै. जॉनसन बा. रिंग	8
फडकर अपराजित	56	पगबाधा बा. जॉनस्टन	0
गुलममोहम्मद कै. लिंडवॉल बा. जॉनसन	1	कै. बार्न्स बा. रिंग	4
किशनचन्द बा. रिंग	14	कै. बार्न्स बा. जॉनसन	0
नायुडू कै. ब्रेडमेन बा. रिंग	2	कै. ब्राउन बा. रिंग	0
सेन बा. जॉनसन	13	बा. जॉनस्टन	10
रंगाचारी बा. जॉनसन	0	अपराजित	0
अतिरिक्त	10	अतिरिक्त	8
	331		67

विकटों का पतन

प्रथम पारी : 1–3, 2–127, 3–206, 4–231, 5–257, 6–260, 7–284, 8–286, 9–331, 10–331.

द्वितीय पारी : 1-0, 2-22, 3-28, 4-35, 5-51, 6-51, 7-56, 8-56, 9-66, 10-67.

आस्ट्रेलिया की गेंदबाजी

	ओ	मे. ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे ओ.	रन	विकेट
लिडवॉल	25	5	66	2	3	0	9	1
जॉनसन	30	8	66	3	5.2	2	8	3
लॉक्सटन	19	1	61	2	4	1	10	1
जॉनस्टन	8	4	14	0	7	0	15	2
रिंग	36	8	103	3	5	1	17	3
मिलर	3	0	10	0	—	—	—	—
बार्न्स	2	1	1	0	—	—	—	—

वेस्ट इंडीज की टीम भारत में, 1948-49

वेस्ट इंडीज की प्रथम टीम भारत में 1948-49 में आई। कुछ ही मास पहले इस टीम ने इग्लैंड को दो टैस्ट मैचों में हराया था और अन्य दो टैस्ट मैचो मे हार-जीत का फैसला नहीं हो सका था। इसलिये इस टीम का सम्मान था और भारत में आक्रामक खेल प्रदर्शित कर उसने इस सम्मान मे अधिक वृद्धि करली। विशेष रूप से वीक्स की बल्लेबाजी बहुत उच्च कोटि की रही और टैस्ट मैचो मे उनकी रन संख्या इस प्रकार रही: 128, 194, 162,101,90,56 और 48 रन। भारतीय खिलाड़ियो ने आस्ट्रेलिया मे खेलकर बहुमूल्य अनुभव प्राप्त किया था और उनका प्रदर्शन भी सुन्दर रहा था। इस टैस्ट शृंखला में मद्रास के चतुर्थ टैस्ट मैच में उनकी पराजय हुई लेकिन बम्बई में पांचवें और अन्तिम टैस्ट मैच मे वे विजय के बिलकुल निकट आ गये थे। जीत के लिये 6 रनो की आवश्यकता थी और दो विकटें गिरनी बाकी थी।

टीम मे निम्नलिखित खिलाड़ी थे:

1. जे. डी. गोडार्ड (कप्तान)
2. जार्ज हेडले
3. जी. ई. गोमेज
4. जे. बी. स्टॉलमेयर
5. आर. जे. क्रिश्चियानी
6. जी. केरयू
7. एफ. जे. केमेरन
8. ई. डी. वीक्स
9. सी. एल. वॉलकॉट
10. डब्लू. फरग्यूसन
11. के. रिकार्ड
12. सी. मेकवॉट
13. पी. जोन्स
14. डी. एटकिन्सन
15. ए. एफ. रे
16. जे. ट्रिम

डी. पी. प्रब॰

टैस्ट मैचो के अलावा खेले गये अन्य मैचों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है:—

बड़ौदा में : अक्टूबर 23, 24 और 25 को

वेस्ट इंडीज : 206 और 3 विकटों पर 183 और पारी समाप्ति की घोषणा (वॉलकॉट 73*)। बड़ौदा एकादश: 143 और 5 विकटों पर 164 । मैच मे हार-जीत का फैसला नही हो सका ।

इन्दौर में : अक्टूबर 28, 29 और 30 को

होल्कर एकादश : 117 और 179 । वेस्ट इंडीज : 189 (गायकवाड़ ने 63 रन देकर 6 विकटें ली) और बिना विकेट खोये 109 (केरयू 50*) । वेस्ट इंडीज की टीम दस विकटो से विजयी ।

पटियाला में : नवम्बर 3, 4, 5, और 6 को

उत्तर क्षेत्र : 219 (असवन्त सिंह 70) और 7 विकटों पर 378 (अमरनाथ 223) । वेस्टइंडीज : 7 विकटो पर 591 और पारी समाप्ति की घोषणा (वीक्स 172*, रे 113, क्रिश्चियानी 85, वॉलकॉट 75, बलबीर चन्द ने 172 रन देकर 5 विकटें ली) । मैच में हार-जीत का फैसला नही हो सका ।

पूना में : दिसम्बर 3, 4, 5 और 6 को

वेस्ट इडीज : 274 (स्टॉलमेयर 92, गोमेज 58, एम. एन. रायजी ने 103 रन देकर 5 विकटें ली) और 8 विकटों पर 478 और पारी समाप्ति की घोषणा (वॉलकॉट 120, रिकार्ड 99, रे 61) । पश्चिम क्षेत्र : 474 (हजारे 137, यू. एम. मर्चेंट 82, आर. बी. निम्बालकर 56, किशनचन्द 53, बी. बी. निम्बालकर 52) । मैच में हार-जीत का फैसला नही हो सका ।

बम्बई में : दिसम्बर 15,16 और 17 को

क्रिकेट क्लब ऑफ इंडिया : 6 विकटों पर 463 और पारी समाप्ति की घोषणा (यू. एम. मर्चेंट 134, इब्राहिम 128, के. बोस 85, एम. एन. रायजी 57*) । वेस्टइंडीज : 9 विकटों पर 589 (रे 160, रिकार्ड 98, एटकिन्सन 83, केमेरन 50) । मैच मे हार-जीत का फैसला नहीं हो सका ।

नागपुर में : दिसम्बर 19, 20 और 21 को

राज्यपाल एकादश : 139 (गोमेज ने 40 रन देकर 5 विकटें ली) और 184 (सी. के. नायुडू 72, जोन्स ने 52 रन देकर 5 विकटें ली) । वेस्टइंडीज : 178 (गुलाम अहमद ने 47 रन देकर 5 विकटें ली) और 4 विकटों पर 148 (स्टॉलमेयर 52*) । वेस्टइंडीज 6 विकटों से विजयी ।

कलकत्ता में : दिसम्बर 26, 27 और 28 को

वेस्टइंडीज : 255 (वॉलकॉट 97, एन॰ चौधरी ने 105 रन देकर 6 विकटें ली) और 2 विकटों पर 124 (केरयू 52)। राज्यपाल एकादश: 315 (पंकजरॉय 101*, गिरधारी 88)। मैच मे हार-जीत का फैसला नही हो सका।

जमशेदपुर में : जनवरी 7, 8 और 9 को

वेस्टइडीज : 5 विकटो पर 445 और पारी समाप्ति की घोषणा (वॉलकॉट 128, वीक्स 63*, क्रिश्चियानी 63, गोमेज 55)। बिहार राज्यपाल एकादश : 156 और 191 रन। वेस्टइंडीज एक पारी और 98 रनों से विजयी।

इलाहाबाद में : जनवरी 13, 14 और 15 को

पूर्व क्षेत्र : 298 (बी. फ्रैंक 123) और बिना विकेट खोये 6 रन। वेस्टइंडीज : 118 (हीरालाल गायकवाड ने 40 रन देकर 5 विकटें ली, गिरधारी ने 31 रन देकर 5 विकटें ली) और 184 (एम. एन. बनर्जी ने 67 रन देकर 7 विकटें ली)। पूर्व क्षेत्र 10 विकटो से विजयी।

मद्रास में : जनवरी 21, 22 और 23 को

दक्षिण क्षेत्र : 46 (गोमेज ने 24 रन देकर 9 विकटें ली) और 268 (एम. जे. गोपालन 64)। वेस्टइंडीज : 7 विकटों पर 514 और पारी समाप्ति की घोषणा (स्टॉलमेयर 244, गोडार्ड 77, क्रिश्चियानी 54)। वेस्टइडीज एक पारी और 200 रनों से विजयी।

टैस्ट मैच :

इंग्लैंड के एफ. एस. जेक्सन, आस्ट्रेलिया के एम. ए. नॉवल और दक्षिण अफीका के एच. जी. डीन के समान गोडार्ड ने पाँचों टैस्ट मैचो में टॉस जीतने का श्रेय प्राप्त किया। हर बार अतिथियो ने पहले बल्लेबाजी की और विशाल रन संख्या बना ली। भारतीय टीम इस विशाल रन संख्या को पार करने के पश्चात् ही आगे के लिये युक्ति सोच सकती थी।

रंगाचारी की घातक गेंदबाजी ने रे, स्टॉलमेयर और हेडले को एक घंटे के खेल में केवल 27 रनों पर वापस कर दिल्ली मे खेले गये प्रथम टैस्ट मैच में भारतीय टीम ने खेल का श्रीगणेश बहुत सफलता से किया। वॉलकॉट और गोमेज ने आकर अपनी टीम को दुर्गति से बचा लिया और खेल समाप्ति पर बिना अलग हुए कुल रन संख्या को 294 तक पहुँचा दिया। खेल के दूसरे दिन भारतीय गेंदबाजी की, वॉलकॉट (152), गोमेज (101), वीक्स

---

* अपराजित

(128) और त्रिश्चियानी (107) द्वारा, अधिक दुर्गति हुई। तीसरे दिन खेल प्रारम्भ होने के कुछ समय पश्चात् वेस्टइंडीज की पारी 631 रनों पर समाप्त हुई। रंगाचारी ने बड़े साहस के साथ गेंदबाजी की और प्रतिद्वन्द्वी की इस विशाल रन संख्या के होते हुए भी उन्होंने 107 रनों पर 5 विकेटें प्राप्त कीं।

भारत की पारी प्रारम्भ होते ही मांकड तो वापस लौट गये लेकिन ईब्राहिम (85) और मोदी (63) ने साबित कर दिया कि वेस्टइंडीज की गेंदबाजी भयानक नहीं है। अमरनाथ ने भी आक्रामक बल्लेबाजी की और तीसरे दिन की खेल समाप्ति पर भारत के तीन विकटों पर 223 रन बन चुके थे। अधिकारी 114 रन बना कर अपराजित रहे, फडकर और सरवटे की बल्लेबाजी ने भी अच्छा योगदान दिया लेकिन भारत फोलो-ऑन से नहीं बच सका क्योंकि पारी 454 रनों पर ही समाप्त हो गई।

द्वितीय पारी में ईब्राहिम, मोदी और अमरनाथ जम कर खेले फिर भी भारत ने 6 विकटें 162 रनों पर खो दीं। अधिकारी और सरवटे ने कुशलता से बल्लेबाजी की और बिना अलग हुए कुल रन संख्या को 220 तक पहुँचा दिया। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

वेस्टइंडीज के बल्लेबाजों ने रनों का लोभ बम्बई में भी दिखाया, जहाँ द्वितीय टैस्ट मैच खेला गया। केवल 6 विकटों पर 629 रन बनाकर पारी समाप्ति की घोषणा कर दी गई। रे (104) और स्टॉलमेयर (66) ने अपनी टीम की पारी बड़े शानदार ढंग से प्रारम्भ की। प्रथम विकेट पर 134 रन बने। वीकस ने लगातार दूसरा शतक पूरा किया और त्रिश्चियानी के साथ पांचवें विकेट पर 170 रनों की वृद्धि की।

भारत की पारी प्रारम्भ करने वाले दोनों खिलाड़ी, मांकड और ईब्राहिम, रन आउट हो गये और जब भारत के तीन विकेट 32 रनों पर गिर गये तो स्थिति खराब हो गई। बचे हुए बल्लेबाज विशेषकर फडकर (74) ने पारी में उचित योगदान किया और जब भारत का अन्तिम विकेट गिरा तो कुल रन संख्या 273 थी।

भारत की द्वितीय पारी का प्रारम्भ भी दुर्भाग्यपूर्ण रहा। ईब्राहिम शून्य पर लौट आये और जब कुल रन संख्या 33 थी तो गोमेज द्वारा मांकड भी लौटा दिये गये। मोदी और हजारे ने अपनी टीम को दुर्गति से बचाया और कुल रन संख्या को 189 तक पहुँचा दिया जबकि मोदी ने साथ छोड़ दिया लेकिन इसके पहले इस खिलाड़ी ने 112 रन बना लिये थे। अमरनाथ ने भी हजारे के साथ प्रभावशाली बल्लेबाजी की। कुल रन संख्या 333 पर पहुँच गई लेकिन भारत ने और विकेट नहीं खोया। हजारे 134 रन बनाकर अपराजित रहे। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

कलकत्ता में भारत का प्रदर्शन अधिक अच्छा रहा और यदि भाग्य साथ देता तो उसे विजय भी प्राप्त हो जाती। जीतने के लिये भारत को 415 मिनट मे 431 रन बनाने थे लेकिन बल्लेबाजों ने रक्षात्मक खेल अपनाया और 3 विकटें खोकर 325 रन बनाये।

टॉस जीत कर पहले बल्लेबाजी करने का लाभ वेस्टइण्डीज ने खो दिया, जब एटकिन्सन एक पर और रे 28 पर आउट हो गये। मोंटू बनर्जी की अचूक गेंदबाजी का ही यह परिणाम था। तत्पश्चात् वीक्स (162) ने भारतीय गेंदबाजी की दुर्गति की, वॉलकॉट ने उनका साथ दिया और पारी 366 पर जाकर समाप्त हुई।

भारत की पारी का प्रारम्भ भी दुर्भाग्यपूर्ण ही रहा क्योंकि केवल एक रन पर गोमेज ने ईब्राहिम का डंडा उखाड़ दिया। मुश्ताक अली, मोदी और हजारे ने आत्मविश्वास और दृढ़ता से बल्लेबाजी की और दूसरे दिन की खेल समाप्ति पर भारत की कुल रन संख्या 204 थी जबकि उसके केवल दो खिलाड़ी आउट हुए थे। लेकिन तीसरे दिन खेल का पासा पलटा और भारत की पारी 272 रनों पर समाप्त हो गई।

द्वितीय पारी मे वॉलकॉट और वीक्स ने भारतीय गेंदबाजी को दिल खोलकर पीटा और दोनों खिलाड़ियो ने अपने शतक पूरे किये। नौ विकटों पर 336 रन बनाकर पारी समाप्ति की घोषणा कर दी गई।

भारत को 415 मिनट मे 431 रन बनाने थे। मुश्ताक अली और ईब्राहिम केवल 110 मिनट में 66 रन बना पाये। खेल के अन्तिम दिन मुश्ताक अली ने शानदार शतक जमाया। मोदी, हजारे और अमरनाथ ने सशक्त बल्लेबाजी की लेकिन खेल का समय समाप्त होने तक भारत 3 विकटें खोकर 325 रन ही बना सका।

भारत की क्षेत्र-रक्षण मे दुर्बलता का पूरा लाभ उठाते हुए रे और स्टॉलमेयर दोनों ने चतुर्थ टैस्ट में अपने शतक पूरे किये और प्रथम विकेट की साझेदारी में 239 रन बनाए। वीक्स को शतक पूरा करने में जब दस रनो की आवश्यकता थी तो वह रन आउट हो गए। पारी 582 पर समाप्त हुई। फडकर ने आक्रामक तेज गेंदबाजी कर 7 विकटें 159 रनो पर प्राप्त की लेकिन दूसरे भारतीय गेंदबाज बिलकुल असफल रहे।

जोन्स और ट्रिम ने जैसे-को-तैसा कर दिखाया और अपनी आक्रामक तेज गेंदबाजी से भारत को 245 और 144 रनों पर उखाड़ दिया। प्रथम पारी में केवल मोदी (56), फडकर (48), मुश्ताक अली (32), अधिकारी (32) और हजारे (27) विकटों पर हिम्मत के साथ रुक सके और द्वितीय पारी में तो केवल हजारे (52) ही ट्रीम और जोन्स की गेंदबाजी का सामना कर सके जिन्होंने दोनों पारियों में क्रमशः 7 विकटें 76 रनो पर और

6 विकेट 58 रनों पर लेकर अपनी टीम को एक पारी और 193 रनों से विजयी होने में महान योगदान दिया।

बम्बई में खेले गये पंचम टैस्ट मैच में भारत ने टैस्ट शृंखला को बराबर करने का भरसक प्रयत्न किया। अतिथि खिलाड़ियों ने समय की बर्बादी कर भारत को अपने उद्देश्य से वंचित रखा। भारत का कैसा दुर्भाग्य था। फडकर सर्वोत्तम बल्लेबाजी कर रहा था। भारत को विजय के लिये 6 रनों की आवश्यकता थी और उसके दो विकेट बाकी थे। ऐसे उत्तेजनापूर्ण क्षणों में निर्णायक ने खेल समाप्ति की घोषणा करदी जबकि डेढ़ मिनट का खेल बाकी था।

भारतीय गेंदबाजों ने वेस्टइण्डीज की रन संख्या को 286 तक सीमित रखा। स्टालमेयर (85) और वीक्स (56) ने तीसरे विकेट पर 110 रन जोड़े। गेंद को लपकने में सेन को चोट लग गई और अमरनाथ ने उनके बदले विकेट-रक्षण करते हुए, पांच बल्लेबाजों को धराशायी किया। भारतीय टीम प्रथम पारी में केवल 193 रन बना सकी। हजारे (40) और मोदी (33) ने तीसरे विकेट पर 72 रन जोड़े।

द्वितीय पारी में रे (97) और वीक्स (48) ने वेस्टइंडीज की बल्लेबाजी में जान डाली और एक समय तो केवल दो विकटों पर उनकी कुल रन संख्या 148 थी। लेकिन एस. बनर्जी की घातक गेंदबाजी ने दूसरे बल्लेबाजों को नहीं टिकने दिया और पारी 267 रनों पर समाप्त हो गई। भारत को विजय के लिये 395 मिनटों में 361 रन बनाने थे। पारी प्रारम्भ करने वाले दोनों बल्लेबाज 9 रनों पर उखड़ गये। अमरनाथ ने तेज गति से 39 रन बनाये। हजारे और मोदी ने गेंदबाजों पर अपना प्रभुत्व जमा लिया और रन संख्या तेजी से बढने लगी और जीत का समय भी निकट आ रहा था। अतिथियों ने समय बर्बाद करने की युक्ति अपनाई। कप्तान गोडार्ड की भावनाओं मे एकदम कितना परिवर्तन आया। सेन के घायल हो जाने पर तो उन्होने अमरनाथ को दूसरा विकेट-रक्षक रखने की आज्ञा दे दी थी, कितना प्रशंसनीय रुख था। और अब विकेट-रक्षक वालकॉट का दूसरे सब खिलाड़ियों के होते हुए भी मैदान के बाहर जाकर गेंद लेकर आना कितना अजीब मालूम होता था। मोदी की बहुमूल्य पारी 220 रनो पर गोडार्ड ने समाप्त कर दी जब कि उन्होंने 86 रन बना लिये थे। हजारे ने अपना शतक पूरा किया और भारत विजय के पास पहुँच रहा था। लेकिन कानो के ब्याह को नौ सौ जोखिम। हजारे के पेट के निचले भाग में जोन्स की एक तेज गेंद आकर लगी और वे पृथ्वी पर गिर पड़े। इसमें समय ही बर्बाद नहीं हुआ बल्कि पीड़ा के कारण वे विकटों पर खड़े भी मुश्किल से हो सके और 122 रनों पर आउट हो गए। फडकर और गुलाम अहमद

आठवें विकेट की साझेदारी में खेल रहे थे, जीत के लिये 6 रनों की आवश्यकता थी, अकस्मात् ही निर्णायक ने विकेट बाहर निकाल कर खेल की समाप्ति की घोषणा कर दी जबकि न तो समय ही पूरा हुआ था और न ओवर ही।

टैस्ट मैचों के रनों का सविस्तार विवरण इस प्रकार है :

प्रथम टैस्ट

दिल्ली में नवम्बर 10, 11, 12, 13 और 14 को खेला गया। टॉस वेस्टइंडीज ने जीता और मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।
कप्तान : लाला अमरनाथ (भारत) और जे० डी० गोडार्ड (वेस्टइंडीज)।
विकेट-रक्षक : पी० सेन (भारत) और सी० एल० वॉलकॉट (वेस्टइंडीज)।
निर्णायक : डी० के० नायक और जे० आर० पटेल।

वेस्टइण्डीज

रै कै. सेन बा. रंगाचारी	8
स्टॉलमेयर पगबाधा बा. रंगाचारी	13
हेडले बा. रंगाचारी	2
वॉलकॉट रन आउट	152
गामेज स्ट. सेन बा. अमरनाथ	101
गोडार्ड बा. मांकड	44
वीक्स कै. हजारे बा. मांकड	128
क्रिश्चियानी कै. हजारे बा. मांकड	107
केमेरन पगबाधा बा. सरवटे	2
एटकिन्सन कै. सेन बा. रंगाचारी	45
जोन्स अपराजित	1
अतिरिक्त	28
	631

विकटों का पतन

1–15, 2–22, 3–27, 4–294, 5–302, 6–403, 7–521, 8–524, 9–630, 10–631।

भारत की गेंदबाजी

	रन	ओ.	मे.ओ.	विकेट
फडकर	18	1	61	0
अमरनाथ	24	4	73	1
रंगाचारी	29.4	4	107	5
मांकड	58	7	176	2
तारापोर	19	2	72	0
हजारे	17	1	62	0
सरवटे	16	0	52	1

द्वितीय टैस्ट

बम्बई में दिसम्बर 9, 10, 11, 12 और 13 को खेला गया। टॉस वेस्टइंडीज ने जीता और मैच में हार–जीत का फैसला नहीं हो सका। कप्तान : लाला अमरनाथ (भारत) और जे० डी० गोडार्ड (वेस्टइंडीज)। विकेट-रक्षक : पी० सेन (भारत) और सी० एल० वॉलकॉट (वेस्टइंडीज)। निर्णायक : टी० ए० रामचन्दर और पी० के० सिन्हा।

वेस्ट इण्डीज

रे कै. और बा. फडकर	104
स्टॉलमेयर बा. मांकड	66
वॉलकॉट रन आउट	68
वीक्स कै. सेन बा. मांकड	194
गोमेज कै. सेन बा. हजारे	7
क्रिश्चियानी पगबाधा बा. मांकड	74
केमेरन अपराजित	75
एटकिन्सन अपराजित	23
अतिरिक्त	18
6 विकटों पर पारी समाप्ति की घोषणा	629

विकटों का पतन

1–134, 2–206, 3–295, 4–311, 5–481, 6–574.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
फडकर	16	5	35	1
रंगाचारी	34	1	148	0
हजारे	42	12	74	1
उमरीगर	15	2	51	0
मांकड	75	16	202	3
शिन्दे	16	0	68	0
अमरनाथ	8	1	33	0

भारत

मांकड रन आउट	21	कै. फरग्यूसन बा. गोमेज	16
इब्राहिम रन आउट	9	कै. गोडार्ड बा. जोन्स	0
मोदी कै. एटकिन्सन बा. फरग्यूसन	1	कै. गोमेज बा. फरग्यूसन	112
हजारे पगबाधा बा. एटकिन्सन	26	अपराजित	134
अधिकारी पगबाधा बा. फरग्यूसन	34		
फड़कर कै. जोन्स बा. गोमेज	74		
अमरनाथ कै. और बा. फरग्यूसन	24	अपराजित	58
उमरीगर कै. गोडार्ड बा. फरग्यूसन	30		
सेन पगबाधा बा. गोडार्ड	19		
शिन्दे स्ट. वॉलकॉट बा. गोमेज	13		
रंगाचारी अपराजित	8		
अतिरिक्त	14	अतिरिक्त	13
	273	3 विकटों पर	333

विकटों का पतन

प्रथम पारी : 1–27, 2–28, 3–32, 4–82, 5–116, 6–150, 7–229, 8–233, 9–261, 10–273 ।

द्वितीय पारी : 1–1, 2–33, 3–189 ।

वेस्टइंडीज की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
जोन्स	21	7	34	0	12	2	52	1
गोमेज	24	9	32	2	28	12	37	1
एटकिन्सन	14	5	21	1	13	4	26	0
फरग्यूसन	57	8	126	4	39	14	105	1
गोडार्ड	12.2	7	19	1	3	1	6	0
केमेरन	10	3	9	0	27	9	52	0
स्टॉलमेयर	4	0	18	0	4	0	12	0
क्रिश्चियानी	—	—	—	—	6	0	30	0

तृतीय टैस्ट

कलकत्ता में दिसम्बर 31, 1948, जनवरी 1, 2, 3 और 4, 1949 को खेला गया। टॉस वेस्टइंडीज ने जीता और मैच में हार-जीत का

फैसला नहीं हो सका। कप्तान : लाला अम गोडार्ड (वेस्टइंडीज) । विकेट रक्षक : पी० वॉलकॉट (वेस्टइंडीज) । निर्णायक : बी० जे०

वेस्टइंडीज

रे पगबाधा बा० बनर्जी	15
एटकिन्सन बा० बनर्जी	0
वॉलकॉट कै० बनर्जी बा० गुलाम	54
वीक्स कै० और बा० गुलाम	162
गोमेज बा० मांकड	26
केरयू पगबाधा बा० मांकड	11
गोडार्ड अपराजित	39
क्रिश्चियानी कै० और बा० बनर्जी	23
केमेरन कै० मुश्ताक बा० बनर्जी	23
फरग्यूसन बा० गुलाम	2
जोन्स बा० गुलाम	6
अतिरिक्त	5
	366

विकटों का पतन

प्रथम पारी : 1–1, 2–28, 3–109, 4–130, 5–181, 6–244, 7–309, 8–340, 9–342,

द्वितीय पारी : 1–13, 2–32, 3–104, 7–304, 8–321, 9–336।

भारत की गेंदबा

	ओ०	मे०ओ०	रन	विकेट
बनर्जी	30	3	120	4
अमरनाथ	20	6	34	0
हजारे	5	0	33	0
गुलाम अहमद	35.2	5	94	4
मांकड	23	5	74	2
मरवटे	2	0	6	0

रनाथ (भारत) और जे० डी० सेन (भारत) और सी० एल० मोहनी और ए० आर० जोशी।

रन आउट 34

अपराजित 5

कै० अमरनाथ बा० मांकड 108

कै० और बा० गुलाम 101

बा० गुलाम 29

बा० बनर्जी 9

कै० बनर्जी बा० अमरनाथ 9

बा० अमरनाथ 22

कै० और बा० मांकड 2

पगबाधा बा० मांकड 6

अतिरिक्त 11

336

विकटों पर पारी समाप्ति की घोषणा

–188, 5–238, 6–284, 10–366।

ओ०	मे०ओ०	रन	विकेट
21	0	61	1
23	4	75	2
11	3	33	0
25	0	87	2
24.3	5	68	3
1		1	0

भारत

मुश्ताक अली कै. रे बा. गोडार्ड	54	पगबाधा बा. एटकिन्सन	106
ईब्राहिम बा. गोमेज	1	कै. एटकिन्सन बा. गोमेज	25
मोदी बा. जोन्स	80	कै. क्रिश्चियानी बा. गोडार्ड	87
हजारे बा. गोमेज	59	अपराजित	58
अमरनाथ कै. क्रिश्चियानी बा. गोमेज	3	अपराजित	34
मांकड कै. फरग्यूसन बा. गोडार्ड	29		
अधिकारी अपराजित	31		
मरचटे बा. गोडार्ड	0		
सेन पगबाधा बा. फरग्यूसन	1		
गुलाम अहमद स्ट. क्रिश्चियानी बा. फरग्यूसन	0		
एस. बनर्जी स्ट. क्रिश्चियानी बा. फरग्यूसन	0		
अतिरिक्त	14	अतिरिक्त	15
	272	तीन विकटों पर	325

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–12, 2–77, 3–206, 4–206, 5–210, 6–267, 7–267, 8–268, 9–269, 10–272.

द्वितीय पारी : 1–84, 2–154, 3–262.

वेस्टइण्डीज की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
जोन्स	17	3	48	1	21	5	49	0
गोमेज	32	10	65	3	29	10	47	1
फरग्यूसन	29	8	66	3	9	0	35	0
गोडार्ड	13	3	34	3	23	11	41	1
केमेरन	7	2	12	0	30	7	67	0
एटकिन्सन	9	0	27	0	14	3	42	1
क्रिश्चियानी	2	0	6	0	3	0	12	0
केरयू	—	—	—	—	3	2	2	0
मॉलकॉट	—	—	—	—	3	0	12	0
वीक्स	—	—	—	—	1	0	3	0

चतुर्थ टैस्ट

मद्रास में जनवरी 27, 28, 29 और 31 को खेला गया। टॉस वेस्टइण्डीज ने जीता और मैच भी एक पारी और 193 रनों से।
कप्तान : लाला अमरनाथ (भारत) और जे. डी. गोडार्ड (वेस्टइंडीज)।
विकेट-रक्षक : पी. सेन (भारत) और सी.एल. वॉलकॉट (वेस्टइंडीज)।
निर्णायक : बी. जे. मोहनी और ए. आर. जोशी।

वेस्ट इण्डीज

रे कै. सेन बा. फड़कर	109
स्टॉलमेयर कै. सेन बा. चौधुरी	160
वॉलकॉट पगबाधा बा. फड़कर	43
वीक्स रन आउट	90
क्रिश्चियानी कै. मोदी बा. फड़कर	18
गोडार्ड कै. सेन बा. फड़कर	24
गोमेज कै. मांकड बा. फड़कर	50
केमेरन कै. हजारे बा. फड़कर	48
जोन्स कै. गुलाम बा. मांकड	10
ट्रिम कै. सेन बा. फड़कर	9
फरग्यूसन अपराजित	2
अतिरिक्त	19
	582

विकटों का पतन : 1–239, 2–319, 3–319, 4–339, 5–420, 6–472, 7–532, 8–551, 9–565, 10–582.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
फड़कर	45·3	10	159	7
हजारे	12	1	44	0
अमरनाथ	13	4	39	0
चौधुरी	37	6	130	1
मांकड	33	4	93	1
गुलाम अहमद	32	3	88	0
अधिकारी	1	0	10	0

भारत

मुश्ताक अली पगबाधा बा. ट्रिम	32	कैं. वॉलकॉट बा. जोन्स	14
रेगे बा. जोन्स	15	कैं. वॉलकॉट बा. जोन्स	0
मोदी बा. फरग्यूसन	56	बा गोमेज	6
हजारे कैं. गोडार्ड बा. फरग्यूसन	27	कैं. स्टॉलमेयर बा ट्रिम	52
अमरनाथ बा. ट्रिम	13	बा. जोन्स	6
अधिकारी कैं. स्टालमेयर बा. जोन्स	32	कैं. वॉलकॉट बा. जोन्स	1
फडकर कैं. जोन्स बा. गोडार्ड	48	कैं. रे बा. ट्रिम	10
मांकड बा. ट्रिम	1	बा. ट्रिम	21
सेन कैं. स्टॉलमेयर बा. गोमेज	2	अपराजित	19
गुलाम अहमद बा. ट्रिम	5	कैं. एवजी बा. गोमेज	11
चौधुरी अपराजित	3	कैं. रे बा. गोमेज	0
अतिरिक्त	11	अतिरिक्त	4
	245		144

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–41, 2–52, 3–116, 4–136, 5–158, 6–220, 7–225, 8–228, 9–233, 10–245.

द्वितीय पारी : 1-0, 2-7, 3–29, 4–42, 5–44, 6–61, 7–106, 8–119, 9–132, 10–144.

वेस्टइण्डीज की गेंदबाजी

	ओ.	मे. श्रो.	रन	विकेट	ओ.	मे. श्रो.	रन	विकेट
जोन्स	16	5	28	2	10	3	30	4
गोमेज	28	10	60	1	20·3	12	35	3
ट्रिम	27	7	48	4	16	5	28	3
फरग्यूसन	20	2	72	2	11	1	39	0
गोडार्ड	8	1	26	1	6	3	8	0

पंचम टैस्ट

बम्बई में फ़रवरी 4, 5, 6, 7 और 8 को खेला गया। टॉस वेस्टइंडीज ने जीता और मैच मे हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

कप्तान : लाला अमरनाथ (भारत) और जे· डी· गोडार्ड (वेस्टइंडीज)।

विकेट-रक्षक : पी० सेन (भारत) और सी· एल· वॉलकॉट(वेस्टइंडीज)।

निर्णायक : बी० जे० मोहनी और ए० आर० जोशी।

वेस्टइण्डीज

रे कँ. मुश्ताक वा. फड़कर	7	कँ. मॉकड वा. फड़कर	97
स्टॉलमेयर कँ. मॉकड वा. गुलाम	85	वा. मॉकड	18
वॉलकॉट वा. फड़कर	11	वा. फड़कर	16
वीक्स कँ. मॉकड वा. गुलाम	56	वा. हजारे	48
गोमेज कँ. मोदी वा. मॉकड	19	कँ. और वा. मॉकड	24
क्रिश्चियानी वा. बनर्जी	40	पगबाधा वा. मॉकड	10
गोडार्ड कँ. अमरनाथ वा. मॉकड	41	अपराजित	33
केमेरन कँ. अमरनाथ वा. मॉकड	0	पगबाधा वा. बनर्जी	1
एटकिन्सन कँ. अमरनाथ वा. मॉकड	6	कँ. अमरनाथ वा. बनर्जी	0
जोन्स पगबाधा वा. फड़कर	3	कँ. अमरनाथ वा. बनर्जी	1
ट्रिम अपराजित	0	पगबाधा वा. बनर्जी	12
अतिरिक्त	18	अतिरिक्त	7
	286		267

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–11, 2–27, 3–137, 4–176, 5–190, 6–248, 7–253, 8–281, 9–284, 10–286.

द्वितीय पारी : 1–47, 2–68, 3–148, 4–152, 5–166, 6–192, 7–228, 8–230, 9–240, 10–267.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
बनर्जी	21	2	73	1	24.3	5	54	3
फड़कर	29.2	8	74	4	31	7	82	2
अमरनाथ	4	2	9	0	—	—	—	—
गुलाम अहमद	23	4	58	2	14	3	34	0
मॉकड	26	4	54	3	3		77	3
हजारे	1	1		0			13	1

भारत का 1948-49 में भ्रमण करने वाली वेस्टइंडीज टीम
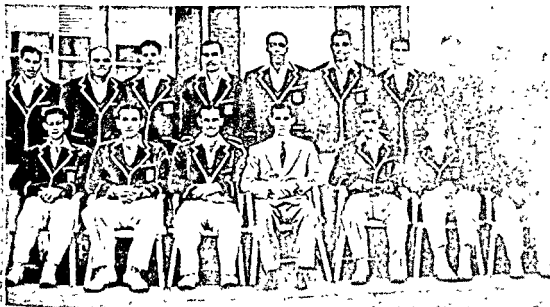
खड़े हुए : एफ. जे. केमेरन, डब्लू. फरग्यूसन, के रिकार्ड, सी. मेकवॉट, पी. जोन्स, सी ...
वॉलकॉट, डी. एटकिन्सन, ए. एफ रे, जे. ट्रिम और इ डी वीक्स।

कुर्सी पर : आर. जे. क्रिश्चियानी, जी. ई. गोमेज, जे. डी. गोडार्ड (कप्तान), डी. पी. ले...
(प्रबन्धक), जार्ज हेडले, जे. बी. स्टॉलमेयर और जी. केरयू।

इंग्लैंड का 1952 में भ्रमण करने वाली भारतीय टीम

कुर्सी पर : एस. जी. शिन्दे, वीनू मांकड, पंकज गुप्ता (प्रबन्धक), विजय हजारे (कप्तान), एच. आर. अधिकारी (उप-कप्तान), सी. टी. सरवटे और डी. जी. फडकर।

खड़े हुए : डब्लू. फरग्यूसन (गणक), पी. रॉय, एन. चौधुरी, सी. डी. गोपीनाथ, गुलाम अहमद, पी. आर. उमरीगर, आर. वी. दिवेचा, जी. एस. रामचन्द, वी. एल. मांजरेकर और डी. के. गायकवाड़।

अंतिम पंक्ति : एच. जी. गायकवाड, पी. सेन और एम. के. मंत्री।

भारत का 1951-52 में भ्रमण करने वाली एम.सी.सी. टीम
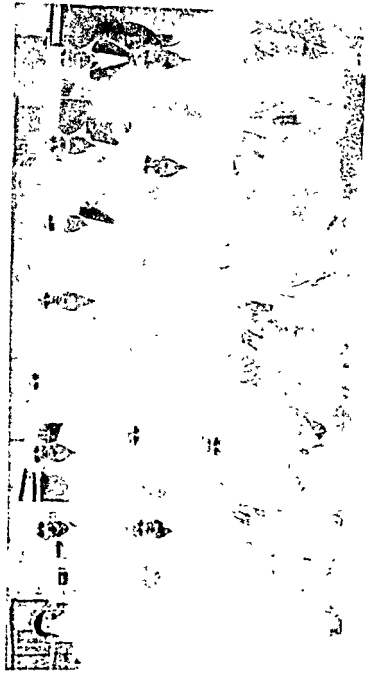
, डी. शैकल्टन, टी. डब्लू. ग्रेवनी, आर. टैंटरसाल, जे. बी. स्टैथम, एफ. ए. लौसन, और ए. ई. जी. रोड्स।

गवे, ए. जे. वॉटकिन्स, सी. जी. होवर्ड (प्रबन्धक), एन. डी. होवर्ड (कप्तान), डी. बी. कार उप-कप्तान), डी. बी. ब्रेनन और जे. डी. राबर्टसन।

: सी. जे. पूली और एम. जे. हिल्टन।

भारत

मुश्ताक अली कै. एटकिन्सन बा. गोमेज	28	कै. वॉलकॉट बा. जोन्स	6
ईब्राहिम कै. एटकिन्सन बा. गोमेज	4	बा. गोमेज	1
मोदी कै. ट्रिम बा. एटकिन्सन	33	कै. वॉलकॉट बा. गोडार्ड	86
हजारे कै. क्रिश्चियानी बा. एटकिन्सन	40	बा. जोन्स	122
अधिकारी कै. वॉलकॉट बा. ट्रिम	5	कै. ट्रिम बा. जोन्स	8
फड़कर बा. ट्रिम	25	अपराजित	37
अमरनाथ बा. ट्रिम	19	बा. एटकिन्सन	39
मांकड रन आउट	19	कै. वॉलकॉट बा. जोन्स	14
बनर्जी बा. जोन्स	5	बा. जोन्स	8
गुलाम अहमद अपराजित	6	अपराजित	9
सेन अनुपस्थित (आहत)	0		
अतिरिक्त	9	अतिरिक्त	25
	193	आठ विकटों पर	355

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–10, 2–37, 3–109, 4–112, 5–122, 6–146, 7–180, 8–181, 9–193.

द्वितीय पारी : 1–2, 2–9, 3–81, 4–220, 5–275, 6–285, 7–303, 8–321.

वेस्टइण्डीज की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
जोन्स	14.4	4	31	1	41	8	85	5
गोमेज	21	8	30	2	26	5	55	1
ट्रिम	30	3	69	3	7	0	43	0
एटकिन्सन	23	2	54	2	3	0	16	1
कैमेरन	—	—	—	—	3	0	15	0
गोडार्ड	—	—	—	—	27	1	116	0

——

एम. सी. सी. भारत में, 1951-52

एन० डी० होवेंड के नेतृत्व में इंग्लैंड की द्वितीय औपचारिक टीम ने, करीब बीस वर्षों के पश्चात् भारत का भ्रमण किया। हट्टन, कोम्पटन, बेडसर, मे, शेपर्ड और इवान्स जैसे विश्व-विख्यात खिलाड़ी इस टीम में नहीं थे। इस कारण इस टीम को इंग्लैंड की द्वितीय एकादश की संज्ञा दी गई। देश और विदेश में क्रिकेट के लिये बहुत अधिक मांग होने से इंग्लैंड के खिलाड़ी सभी निमन्त्रणों को स्वीकार नहीं कर सकते। इस टीम के खिलाड़ी निम्नलिखित थे:—

1. एन० डी० होवर्ड (कप्तान)
2. डी० बी० कार (उप-कप्तान)
3. जे० डी० रॉबर्टसन
4. टी० डब्लू० ग्रेवनी
5. एस० ए० लौसन
6. डी० जे० केनियन
7. जे० बी० स्टेथम
8. आर० टी० स्पूनर
9. डी० वी० ब्रेनन
10. एम० जे० हिल्टन
11. आर० टैटरसाल
12. ए० ई० जी० रोड्स
13. ई० लीडबीटर
14. ए० जे० वॉटकिन्स
15. सी० जे० पूली
16. डी० शैकल्टन
17. एफ० रिगवे

सी० जी० होवर्ड (प्रबन्धक)

टैस्ट मैचों के अलावा खेले गये अन्य मैचों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है:—

भारतीय विश्वविद्यालयों के विरुद्ध, बम्बई : अक्टूबर 5, 6 और 7 को

एम० सी० सी० 340 (ग्रेवनी 101, रॉबर्टसन 58, दानी ने 79 रन

देकर 5 विकटें ली) और बिना विकेट खोये 40 रन । विश्वविद्यालय : 375 (रॉय 89, केनी 86*, दानी 66) । मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका ।

पश्चिम भारत के विरुद्ध, अहमदाबाद : अक्टूबर 9, 10 और 11 को

पश्चिम भारत : 164 (किशनचन्द 65) और 139 (डी० के० गायकवाड़ 66*)। एम० सी० सी० : 192 (ग्रेवनी 62, जसु पटेल ने 40 रन देकर 5 विकटें ली) और 8 विकटों पर 112 (ग्यालचन्द ने 36 रन देकर 5 विकटें ली)। एम० सी० सी० दो विकटों से विजयी ।

होल्कर के विरुद्ध, इन्दौर : अक्टूबर 13, 14 और 15 को

होल्कर : 281 (निम्बालकर 63, एच० एल० गायकवाड़ 62*, सरवटे 59) और 5 विकटों पर 142 (सरवटे 56*)। एम० सी० सी० : 329 (रॉबर्टसन 131, लौसन 70)। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका ।

उत्तर भारत के विरुद्ध, अमृतसर : अक्टूबर 20, 21 और 22 को

एम० सी० सी० : 340 (लौसन 138, ग्रेवनी 79, के. राजदान ने 72 रन देकर 6 विकटें ली) और 4 विकटों पर 173 (रॉबर्टसन 105)। उत्तर भारत : 209 (अमरनाथ 97*, शैकल्टन ने 36 रन देकर 5 विकटें ली)। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका ।

नेशनल डिफेन्स अकादमी के विरुद्ध, देहरादून : अक्टूबर 26 को

एन० डी० ए० : 80 (रोड्स ने 22 रन देकर 5 विकटें ली, हिल्टन ने 7 रन देकर 4 विकटें ली) । एम० सी० सी० : 1 विकेट पर 87 (वॉटकिन्स 59*)। एम० सी० सी० नौ विकटों से विजयी ।

सेना के विरुद्ध, देहरादून : अक्टूबर 28, 29 और 30 को

सेना : 167 और 175 (अधिकारी 64)। एम० सी० सी० : 4 विकटों पर 338 और पारी समाप्ति की घोषणा (ग्रेवनी 101, स्पूनर 70, होवर्ड 51) और बिना विकेट खोये 4 रन । मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका ।

बम्बई क्रिकेट संघ के विरुद्ध, बम्बई : दिसम्बर 8, 9 और 10 को

एम० सी० सी० : 338 (केनियन 95, लौसन 76, दिवेचा ने 74 रन देकर 6 विकटें ली) और 3 विकटों पर 126 (लौसन 71*)। बम्बई क्रिकेट संघ : 291 (मोदी 86, सोहनी 58*)। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका ।

---

* अपराजित

महाराष्ट्र के विरुद्ध, पूना : दिसम्बर 21, 22 और 23 को

महाराष्ट्र : 249 (एम० आर० रेगे 133) और 2 विकटों पर 124 (शेल्के 72*)। एम० सी० सी० : 410 (लौसन 76, केनियन 76 ब्रेनन 67*, शैकल्टन 66, पूली 50, चौधरी ने 124 रन देकर 5 विकटें ली)। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

पश्चिम बंगाल के विरुद्ध, कलकत्ता : दिसम्बर 26, 27 और 28 को

पश्चिम बंगाल : 188 (सी० एस० नायुडू 57, टैटरसाल ने 58 रन देकर 7 विकटें ली) और 134 (एन० चटर्जी 59)। एम० सी० सी० : 8 विकटों पर 342 और पारी समाप्ति की घोषणा (वॉटकिन्स 113*)। एम० सी० सी० एक पारी और 20 रनों से विजयी।

पूर्व क्षेत्र के विरुद्ध, जमशेदपुर : जनवरी 6, 7 और 8 को

एम० सी० सी० : 5 विकटों पर 370 और पारी समाप्ति की घोषणा (रॉबर्टसन 183, कार 66*, वॉटकिन्स 63) और 1 विकेट पर 20 रन। पूर्व क्षेत्र . 158 (वी० फ्रॅंक 98* शैकल्टन ने 64 रन देकर 5 विकटें ली) और 228 (वी. फ्रॅंक 75)। एम० सी० सी० नौ विकटों से विजयी।

मध्य क्षेत्र के विरुद्ध, नागपुर : जनवरी 20, 21 और 22 को

मध्य क्षेत्र : 134 और 196 (सरवटे 54)। एम० सी० सी० : 296 (पूली 87, केनियन 59, सरवटे ने 107 रन देकर 6 विकटें ली) और एक विकेट पर 38 रन। एम० सी० सी० नौ विकटों से विजयी।

हैदराबाद के विरुद्ध : जनवरी 27, 28 और 29 को

हैदराबाद : 320 (अली हुसैन 95, आईबारा 76, बोवजी 66) और 3 विकटों पर 82 रन। एम० सी० सी० 441 (केनियन 112, ब्रेनन 96, पूली 79, लीडबीटर 63*, गुलाम अहमद ने 123 रन देकर 5 विकटें ली)। मैच मे हार-जीत का फैसला नही हो सका।

दक्षिण क्षेत्र के विरुद्ध, बंगलौर : फरवरी 1, 2 और 3 को

दक्षिण क्षेत्र : 217 (आदिशेष 69) और 221 (कन्हैयाराम 56*, हिल्टन ने 44 रन देकर 5 विकटें ली)। एम० सी० सी० : 9 विकटों पर 335 और पारी समाप्ति की घोषणा (लौसन 98, स्पूनर 63, कार 56, टी० डी० कृष्णा ने 93 रन देकर 5 विकटें ली) और एक विकेट पर 104 (लौसन 57*)। एम० सी० सी० नौ विकटों से विजयी।

---

* अपराजित

टैस्ट मैच

शिन्दे और मॉकड ने दिल्ली में खेले गये प्रथम टैस्ट मैच में इंग्लैंड की पारी को 203 रनों पर ही समाप्त कर दिया। खेल के तीसरे दिन की समाप्ति पर भारत ने केवल 6 विकटों पर 418 रन बना लिये थे जिसमे मर्चेंट के 154 रन थे और हजारे 164 रन बना कर अपराजित थे। इंग्लैंड 215 रन पीछे था और खेल के दो दिन बाकी थे फिर भी मैच मे हार-जीत का फैसला नहीं हो सका। वॉटकिन्स, कार और लौसन ने अपनी टीम के लिये प्रभावशाली बल्लेबाजी की फिर भी विजय भारत की होती अगर क्षेत्र-रक्षण में वह इतनी कमजोरी नहीं दिखाता।

द्वितीय टैस्ट मैच बम्बई मे खेला गया जहाँ भारत ने नौ विकटें खोकर 485 रन बनाये। रॉय और हजारे ने अपने शतक पूरे किये लेकिन भारत ने रन बहुत धीमी गति से बनाये। इंग्लैंड ने भी 456 रन बनाकर उपयुक्त उत्तर दिया जिसमें ग्रेवनी के 175 रन थे। खेल के चौथे दिन चाय के पांच मिनट पहले भारत ने अपनी द्वितीय पारी प्रारम्भ की और ऐसा प्रतीत होता था कि मैच में हार-जीत का फैसला नही हो सकेगा। लेकिन क्रिकेट की अनिश्चितता तो अपरम्पार है। खेल की समाप्ति पर भारत के चार मुख्य बल्लेबाज केवल 42 रनों पर ही वापस लौट गये थे। पांचवें दिन भारत के तीन और विकेट गिर गये और रन संख्या केवल 88 तक पहुँच पाई। इंग्लैंड ने विजय के लिये भरसक प्रयत्न किया लेकिन गोपीनाथ, मॉकड और सोहनी ने उनकी आशाओं पर पानी फेर दिया। अतिथियो के लिये 100 मिनटों मे 238 रन बनाना असम्भव था और मैच, बिना हार-जीत का फैसला हुए, समाप्त हो गया।

कलकत्ता मे तृतीय टैस्ट खेला गया और उसका भाग्य भी वैसा ही रहा। इंग्लैंड ने पहले बल्लेबाजी कर 342 रन बनाये जिसमे वॉटकिन्स और पूली का योग सराहनीय था। भारत ने इसका उत्तर 344 रनो से दिया जिसमे फड़कर का शानदार शतक था। स्पूनर और पूली की साहसिक बल्लेबाजी के फलस्वरूप इंग्लैंड अपनी द्वितीय पारी 5 विकटों पर 252 रन बनाकर समाप्त घोषित कर सका। बचे हुए 90 मिनट में मांकड और रॉय ने बिना अलग हुए 103 रन बना लिये थे।

इंग्लैंड ने केवल ढाई दिन में कानपुर का चतुर्थ टैस्ट मैच जीत लिया। टैटरसाल और हिल्टन की स्पिन गेंदबाजी के आगे भारतीय टीम केवल 121 रनों पर उखड़ गई। मांकड और गुलाम अहमद ने भी इंग्लैंड के बल्लेबाजो को नही टिकने दिया और अतिथि टीम केवल 203 रन बना सकी। द्वितीय पारी में अधिकारी के अलावा दूसरे भारतीय बल्लेबाज इंग्लैंड

इंग्लैंड

रॉबर्टसन पगबाधा वा. शिन्दे	50	कॅ. फडकर वा. मांकड	22
लौसन पगबाधा वा. फडकर	4	कॅ. फडकर वा. मांकड	68
केनियन वा. शिन्दे	35	कॅ. रॉय वा. शिन्दे	6
कार कॅ. जोशी वा. शिन्दे	14	कॅ. उमरीगर वा. शिन्दे	76
वॉटकिन्स कॅ. जोशी वा. मांकड	40	अपराजित	138
स्पूनर हिट विकेट वा. शिन्दे	11	वा. मांकड	1
होवर्ड स्ट. जोशी वा. मांकड	13	पगबाधा वा. मांकड	9
शॅकल्टन स्ट. जोशी वा. मांकड	10	अपराजित	20
टॅटरसाल अपराजित	4		
रिगवे वा. मांकड	15		
स्टेयम वा. शिन्दे	4		
अतिरिक्त	3	अतिरिक्त	28
	203	6 विकटों पर	368

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–9, 2–79, 3–102, 4–111, 5–153, 6–161, 7–175, 8–184, 9–184, 10–203 ।

द्वितीय पारी : 1–61, 2–78, 3–116, 4–274, 5–275, 6–309 ।

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
फडकर	11	4	26	1	14	3	28	0
चौधुरी	18	4	30	0	31	11	45	0
हजारे	5	5	0	0	12	4	24	0
मांकड	33	15	53	3	76	47	58	4
शिन्दे	35.3	9	91	6	73	27	162	2
उमरीगर	—	—	—	—	6	1	8	0
मोदी	—	—	—	—	5	1	14	0
रॉय	—	—	—	—	4	3	1	0

की स्पिन गेंदबाजी के शीघ्र ही शिकार हो गये और टीम की कुल रन संख्या केवल 157 रही। अतिथियों ने जीत के लिये 76 रन केवल 57 मिनटों मे पूरे कर लिये जिसमें अकेले ग्रेवनी के 48 रन थे।

पंचम और अन्तिम टैस्ट मैच में खेल के प्रारंभ से अन्त तक भारत का पलड़ा भारी रहा। भारतीय टीम की एकता की भावना ने भारत को आगे बढ़ाया लेकिन विजय का सबसे अधिक श्रेय वीनू मांकड को है जिन्होंने अपनी अचूक और घातक गेंदबाजी से प्रतिद्वन्द्वी बल्लेबाजों को भौचक्का कर दिया और केवल 108 रन देकर 12 विकटें प्राप्त की। इससे सुन्दर प्रदर्शन किसी भी भारतीय खिलाड़ी ने अभी तक टैस्ट मैच में नहीं किया था। टॉस जीतकर इंग्लैंड ने पहले बल्लेबाजी की और 266 रन बनाये जिसमें रॉबर्टसन (77) और स्पूनर (66) का सर्वाधिक योग था। मांकड ने 8 विकटें 55 रनों पर गिराई। भारत ने 9 विकटों पर 457 रन बनाकर अपनी प्रथम पारी को समाप्त घोषित कर दिया। रॉय ने टैस्ट मैच में अपना द्वितीय शतक पूरा किया और अधिकारी के घायल हो जाने से उसका स्थान लेने वाला खिलाड़ी, उमरीगर 130 रन बनाकर अपराजित रहा। इंग्लैंड की द्वितीय पारी में मांकड के साथ गुलाम अहमद ने भी अचूक गेंदबाजी की और क्रमशः 4 विकटें 53 रनों पर और 4 विकटें 77 रनों पर गिराकर इंग्लैंड को केवल 183 रन बनाने दिये। भारत की विजय एक पारी और आठ रन से हुई।

वॉटकिन्स और ग्रेवनी इंग्लैंड के प्रधान बल्लेबाज रहे। अतिथियो के सफल गेंदबाज हिल्टन ने 11 विकटें 17.55 रनो के औसत पर गिराई। टैटरसाल ने 21 विकटें 28.43 रनों के औसत पर ली। मर्चेंट की अन्तिम टैस्ट पारी 154 रनो की थी। अस्वस्थ होने से वह अगले टैस्ट मैचो में भाग नही ले सके इससे भारतीय बल्लेबाजी को गहरा धक्का पहुँचा। रॉय एक योग्य और पारी प्रारंभ करने वाला बल्लेबाज सिद्ध हुआ। हजारे ने लगातार दो शतक लगाये लेकिन बम्बई के टैस्ट मैच में चोट लग जाने के बाद उनका भाग्य बदल गया। इन टैस्ट मैचों के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी वीनू माकड सिद्ध हुए जिन्होने 34 विकटें, 16.79 रनों के औसत पर, प्राप्त कीं।

रनों का सविस्तार विवरण इस प्रकार है :

प्रथम टैस्ट

दिल्ली मे नवम्बर 2, 3, 4, 6 और 7 को खेला गया। टॉस इंग्लैंड ने जीता और मैच मे हार-जीत का फैसला नही हो सका। कप्तान : वी०एम० हजारे (भारत) और एन०डी० होवर्ड (इंग्लैंड)। विकेट-रक्षक : पी०जी० जोशी (भारत) और आर०टी० स्पूनर (इंग्लैंड)। निर्णायक : एम०जी० विजयसारथी और बी० जे० मोहनी।

इंग्लैंड

रॉबर्टसन पगबाधा बा. शिन्दे	50	कै. फडकर बा. मांकड	22
लौसन पगबाधा बा. फडकर	4	कै. फडकर बा. मांकड	68
केनियन बा. शिन्दे	35	कै. रॉय बा. शिन्दे	6
कार कै. जोशी बा. शिन्दे	14	कै. उमरीगर बा. शिन्दे	76
वॉटकिन्स कै. जोशी बा. मांकड	40	अपराजित	138
स्पूनर हिट विकेट बा. शिन्दे	11	बा. मांकड	1
होवर्ड स्ट. जोशी बा. मांकड	13	पगबाधा बा. मांकड	9
शैकल्टन स्ट. जोशी बा. मांकड	10	अपराजित	20
टैटरसाल अपराजित	4		
रिगवे बा. मांकड	15		
स्टैयम बा. शिन्दे	4		
अतिरिक्त	3	अतिरिक्त	28
	203	6 विकटों पर	368

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–9, 2–79, 3–102, 4–111, 5–153, 6–161, 7–175, 8–184, 9–184, 10–203।

द्वितीय पारी : 1–61, 2–78, 3–116, 4–274, 5–275, 6–309।

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
फडकर	11	4	26	1	14	3	28	0
चौधुरी	18	4	30	0	31	11	45	0
हजारे	5	5	0	0	12	4	24	0
मांकड	33	15	53	3	76	47	58	4
शिन्दे	35.3	9	91	6	73	27	162	2
उमरीगर	—	—	—	—	6	1	8	0
मोदी	—	—	—	—	5	1	14	0
रॉय	—	—	—	—	4	3	1	0

भारत

मर्चेंट बा. स्टेथम	154
रॉय बा. शैकल्टन	12
उमरीगर रन आउट	21
हजारे अपराजित	164
फडकर रन आउट	3
मॉकड कै. स्पूनर बा. टैटरसाल	4
मोदी पगबाधा बा. टैटरसाल	7
अधिकारी अपराजित	38
शिन्दे, जोशी, चौधुरी — बल्लेबाजी नहीं की	
अतिरिक्त	15
6 विकटों पर पारी समाप्ति की घोषणा	418

विकटों का पतन :

1–18, 2–64, 3–275, 4–278, 5–292, 6–328 ।

इंग्लैंड की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
स्टेथम	21	4	49	1
रिगवे	20	1	55	0
वॉटकिन्स	31	7	60	0
शैकल्टन	29	7	76	1
टैटरसाल	53	17	95	2
कार	16	4	56	0
रॉबर्टसन	5	1	12	0

द्वितीय टैस्ट

बम्बई में दिसम्बर 14, 15, 16, 18 और 19 को खेला गया। टॉस भारत ने जीता और मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।
कप्तान : वी० एस० हजारे (भारत) और एन० डी० होवर्ड (इंग्लैंड)।
विकेट-रक्षक : एम० के० मंत्री (भारत) और आर० टी० स्पूनर (इंग्लैंड)।
निर्णायक : जे० आर० पटेल और एम० एम० नायुडू ।

भारत

रॉय कै. केनियन बा. स्टेथम	140	पगबाधा बा. रिगवे	0
मंत्री कै. स्पूनर वा. स्टेथम	39	कै. स्पूनर वा. रिगवे	7
उमरीगर पगबाधा बा. लीडबीटर	8	कै. वॉटकिन्स बा. स्टेथम	38
हजारे रन आउट	155	कै. ऐवजी बा. वॉटकिन्स	6
अमरनाथ कै. होवर्ड बा. टैटरसाल	32	कै. होवर्ड बा. वॉटकिन्स	4
सरवटे बा. टैटरसाल	18	रन आउट	16
अधिकारी कै. स्पूनर बा. टैटरसाल	25	कै. होवर्ड बा. वॉटकिन्स	15
गोपीनाथ अपराजित	50	कै. लीडबीटर बा. टैटरसाल	42
सोहनी कै. रॉबर्टसन बा. स्टेथम	6	रन आउट	28
मांकड बा. स्टेथम	0	बा. वॉटकिन्स	41
शिन्दे अपराजित	8	अपराजित	3
अतिरिक्त	4	अतिरिक्त	8
नौ विकटों पर पारी समाप्ति की घोषणा	485		208

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–75, 2–99, 3–286, 4–368, 5–388, 6–397, 7–460, 8–471, 9–471.

द्वितीय पारी : 1–2, 2–13, 3–24, 4–34, 5–72, 6–77, 7–88, 8–159, 9–177, 10–208।

इंग्लैंड की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
स्टेथम	29	5	96	4	20	11	30	1
रिगवे	2	5	137	0	16	3	33	2
वॉटकिन्स	32	2	97	0	13	4	20	3
लीडबीटर	11	3	38	1	14.1	4	62	0
टैटरसाल	34	8	112	3	20	6	55	2
रॉबर्टसन	1	0	1	0	—	—	—	—

इंग्लैंड

लौसन कै. मंत्री बा. सोहनी	5	कै. सोहनी बा. गोपीनाथ	22
रॉवर्टसन कै. अमरनाथ बा. मांकड	44		25
ग्रेवनी कै. अधिकारी बा. शिन्दे	175	अपराजित	5
स्पूनर पगबाधा बा. हजारे	46	अपराजित	2
केनियन पगबाधा बा. अमरनाथ	21	पगबाधा बा. सोहनी	
वॉटकिन्स कै. और बा. मांकड	80		
होवर्ड कै. उमरीगर बा. मांकड	20		
लीडबीटर पगबाधा बा. मांकड	2		
स्टेथम कै. मांकड बा. अमरनाथ	27		
टैटरसाल अपराजित	10		
रिगवे कै. और बा. अमरनाथ	5		
अतिरिक्त	21	अतिरिक्त	1
	456	2 विकटों पर	55

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–18, 2–79, 3–166, 4–233, 5–381, 6–389, 7–407, 8–408, 9–448, 10–456.

द्वितीय पारी : 1–3, 2–43.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
सोहनी	30	7	72	1	13	5	16	1
अमरनाथ	34·1	9	61	3	5	1	6	0
शिन्दे	53	13	151	1	5	0	11	0
मांकड	57	22	91	4	5	1	10	0
सरवटे	13	2	27	0	—	—	—	—
हजारे	17	5	30	1	—	—	—	—
उमरीगर	3	1	3	0	—	—	—	—
गोपीनाथ	—	—	—	—	8	2	11	1

तृतीय टैस्ट

कलकत्ता में दिसम्बर 30, 31, 1951, जनवरी 1, 3 और 4, 1952 को खेला गया। टॉस इंग्लैंड ने जीता और मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका। कप्तान : वी० एस० हजारे (भारत) और

एन० डी० होवर्ड (इंग्लैंड)। विकेट-रक्षक : पी० सेन (भारत) और टी० स्पूनर (इंग्लैंड)। आर० निर्णायक : बी० जे० मोहनी और ए० आर० जोशी।

इंग्लैंड

रॉबर्टसन कै. फड़कर बा. दिवेचा	13	स्ट० सेन बा. मांकड	22
स्पूनर कै. सेन बा. मांकड	71	बा. मांकड	92
ग्रेवनी कै. अमरनाथ बा. दिवेचा	24	कै. सेन बा. दिवेचा	21
वॉटकिन्स कै. सेन बा. फड़कर	68	बा. दिवेचा	2
केनियन कै. मांजरेकर बा. मांकड	3	बा. फड़कर	0
पूली कै. दिवेचा बा. फड़कर	55	अपराजित	69
होवर्ड कै. अमरनाथ बा. मांकड	23	अपराजित	20
स्टेथम बा. फडकर	1		
लीडबीटर रन आउट	38		
रिगवे स्ट० सेन बा. मांकड	24		
टैटरसाल अपराजित	5		
अतिरिक्त	17	अतिरिक्त	26
	342	पांच विकटों पर पारी समाप्ति की घोषणा	252

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–22, 2–76, 3–133, 4–139, 5–246, 6–247, 7–259, 8–290, 9–332, 10–342.

द्वतीय पारी : 1–52, 2–93, 3–99, 4–102, 5–184.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
फड़कर	38	11	89	3	20	7	27	1
दिवेचा	33	9	60	2	25	7	55	2
अमरनाथ	20	5	35	0	22	5	43	0
मांकड	52·5	16	89	4	35	13	64	2
सुभाष गुप्ते	13	0	43	0	5	0	14	0
हजारे	3	0	9	0	9	4	14	0
उमरीगर	—	—	—	—	4	1	12	0

भारत

रॉय कै. स्पूनर बा. रिगवे	42 अपराजित		31
मांकड कै. टैटरसाल बा. लीडबीटर	59 अपराजित		71
उमरीगर कै. होवर्ड बा. रिगवे	10		
हजारे बा. टैटरसाल	2		
अमरनाथ बा. टैटरसाल	0		
फड़कर कै. लीडबीटर बा. रिगवे	115		
मांजरेकर बा. टैटरसाल	48		
गोपीनाथ कै. रॉबर्टसन बा. रिगवे	19		
दिवेचा कै. वॉटकिन्स बा. टैटरसाल	26		
सुभाष गुप्ते कै. लीडबीटर बा. स्टेथम	0		
सेन अपराजित	7		
अतिरिक्त	16	अतिरिक्त	1
	344	बिना विकेट खोये	103

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–72, 2–90, 3–93, 4–93, 5–144, 6–220, 7–272, 8–320, 9–327, 10–344.

इंग्लैंड की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
स्टेथम	27	10	46	1	3	0	4	0
रिगवे	38·1	10	83	4	2	1	8	0
टैटरसाल	48	13	104	4	5	2	8	0
लीडबीटर	15	2	64	1	8	0	54	0
वॉटकिन्स	21	9	31	0	—	—	—	—
पूली	—	—	—	—	5	1	9	0
रॉबर्टसन	—	—	—	—	5	1	10	0
ग्रेवनी	—	—	—	—	1	0	9	0

चतुर्थ टैस्ट

कानपुर मे जनवरी 12, 13 और 14 को खेला गया। टॉस भारत ने जीता और इंग्लैंड ने आठ विकटों से मैच जीता। कप्तान : वी० एस० हजारे (भारत) और एन० डी० होवर्ड (इंग्लैंड)।

विकेट-रक्षक : पी० जी० जोशी (भारत) और आर. टी. स्पूनर (इंग्लैंड)।
निर्णायक : एम० जी० विजय सारथी और जे० आर० पटेल ।

भारत

राय बा. टैटरसाल	37	कै. रिगवे बा. हिल्टन	14
मांकड बा. टैटरसाल	19	कै. स्टेथम बा. हिल्टन	7
उमरीगर बा. टैटरसाल	0	कै. स्पूनर बा रॉबर्टसन	36
हजारे कै. रिगवे बा. टैटरसाल	0	बा. हिल्टन	0
फडकर बा. टैटरसाल	8	पगबाधा बा. हिल्टन	2
अधिकारी बा. हिल्टन	6	कै. लौसन बा. टैटरसाल	60
मांजरेकर कै. ग्रेवनी बा. हिल्टन	6	कै. रिगवे बा. हिल्टन	20
सी० एस० नायुडू स्ट. स्पूनर बा. हिल्टन	21	बा. रॉबर्टसन	0
जोशी बा. टैटरसाल	4	रन आउट	0
शिन्दे अपराजित	5	कै. लौसन बा. टैटरसाल	14
गुलाम अहमद कै. पूली बा. हिल्टन	6	अपराजित	2
अतिरिक्त	9	अतिरिक्त	2
	121		157

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–39, 2–39, 3–39, 4–49, 5–66, 6–76, 7–101, 8–106, 9–110, 10–121.

द्वितीय पारी : 1–7, 2–37, 3–37, 4–42, 5–44, 6–102, 7–102, 8–142, 9–143, 10–157.

इंग्लैंड की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
स्टेथम	6	3	10	0	—	—	—	—
रिगवे	7	1	16	0	—	—	—	—
वॉटकिन्स	5	3	6	0	—	—	—	—
हिल्टन	22.5	10	32	4	32	11	61	5
टैटरसाल	21	3	48	6	27.5	7	77	2
रॉबर्टसन	—	—	—	—	7	1	17	2

इंग्लैंड

लौसन हिट विकेट बा. मांकड	26	कै. अधिकारी बा. गुलाम	12
स्पूनर बा. शिन्दे	21	बा. मांकड	0
ग्रेवनी बा. मांकड	6	अपराजित	48
रॉबर्टसन पगबाधा बा. मांकड	21	अपराजित	5
वॉटकिन्स कै. जोशी बा. गुलाम	66		
हिल्टन स्ट. जोशी बा. गुलाम	10		
पूली बा. गुलाम	19		
होवर्ड बा. मांकड	1		
स्टेथम अपराजित	12		
रगवे बा. गुलाम	5		
टैटरसाल स्ट. जोशी बा. गुलाम	2		
अतिरिक्त	14	अतिरिक्त	11
	203	2 विकटों पर	76

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–46, 2–57, 3–60, 4–103, 5–114, 6–174, 7–181, 8–181, 9–197, 10–203.

द्वितीय पारी : 1–1, 2–57.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
फडकर	2	2	0	0	2	0	11	0
हजारे	2	0	5	0	—	—	—	—
गुलाम अहमद	37.1	14	70	5	10	1	10	1
मांकड	35	13	54	4	7.2	0	44	1
शिन्दे	17	4	46	1	—	—	—	—
सी. एस.नायुडू	2	0	14	0	—	—	—	—

पंचम टैस्ट

मद्रास में फरवरी 6, 8, 9 और 10 को खेला गया। टॉस इंग्लैंड ने जीता और भारत ने मैच एक पारी और 8 रनों से जीता।
कप्तान : वी० एस० हजारे (भारत) और डी० बी० कार (इंग्लैंड)।
विकेट-रक्षक : पी० सेन (भारत) और आर० टी० स्पूनर (इंग्लैंड)।
निर्णायक : एम० जी० विजय सारथी और बी० जे० मोहनी।

इंग्लैंड

लौसन बा. फडकर	1	कं. मांकड बा. फडकर	7
स्पूनर कं. फडकर बा. हजारे	66	पगबाधा बा. दिवेचा	6
ग्रेवनी स्ट. सेन बा. मांकड	39	कं. दिवेचा बा. गुलाम	25
रॉबर्टसन कं. और बा. मांकड	77	पगबाधा बा. गुलाम	56
वॉटकिन्स कं. गोपीनाथ बा. मांकड	9	कं. और बा. मांकड	48
पूली बा. मांकड	15	कं. दिवेचा बा. गुलाम	3
कार स्ट. सेन बा. मांकड	40	कं. मांकड बा. गुलाम	5
हिल्टन स्ट. सेन बा. मांकड	0	स्ट. सेन बा. मांकड	15
स्टैथम स्ट. सेन बा. मांकड	6	कं. गोपीनाथ बा. मांकड	9
रिगवे पगबाधा बा. मांकड	0	बा. मांकड	0
टैटरसाल अपराजित	2	अपराजित	0
अतिरिक्त	11	अतिरिक्त	9
	266		183

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–3, 2–71, 3–131, 4–174, 5–197, 6–244, 7–252, 8–261, 9–261, 10–266.

द्वितीय पारी : 1–13, 2–15, 3–68, 4–117, 5–135, 6–159, 7–159, 8–178, 9–178, 10–183.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
फडकर	16	2	49	1	9	2	17	1
दिवेचा	12	2	27	0	7	1	21	1
अमरनाथ	27	6	56	0	3	0	6	0
गुलाम अहमद	18	5	53	0	26	5	77	4
मांकड	38.5	15	55	8	30.4	9	53	4
हजारे	10	5	15	1	—	—	—	—

भारत

मुश्ताक अली स्ट. स्पूनर बा. कार	22
रॉय कै. वॉटकिन्स बा. टैटरसाल	111
हजारे बा. हिल्टन	20
मांकड कै. वॉटकिन्स बा. कार	22
अमरनाथ कै. स्पूनर बा. स्टेथम	31
फडकर बै. हिल्टन	61
उमरीगर अपराजित	130
गोपीनाथ बा. टैटरसाल	35
दिवेचा कै. स्पूनर बा. रिगवे	12
सेन बा. वॉटकिन्स	2
गुलाम अहमद अपराजित	1
अतिरिक्त	10
9 विकटों पर पारी समाप्ति की घोषणा	457

विकटों का पतन :

1–53, 2–97, 3–157, 4–191, 5–216, 6–320, 7–413, 8–430, 9–448.

इंग्लैंड की गेंदबाजी

	ओ.	मे ओ.	रन	विकेट
स्टेथम	19	3	54	1
रिगवे	17	2	47	1
टैटरसाल	40	9	100	2
हिल्टन	39	13	94	2
कार	19	2	84	2
वॉटकिन्स	14	1	50	1
रॉबर्टसन	5	1	18	0

भारत की टीम इंग्लैंड में, 1952

इंग्लैंड का भ्रमण करने वाली चतुर्थ भारतीय टीम का नेतृत्व वी० एस० हजारे ने किया। इस टीम के उप-कप्तान हेमू अधिकारी थे और पंकज गुप्ता प्रबन्धक। टीम के खिलाड़ी निम्नलिखित थे :

1. वी० एस० हजारे (कप्तान)
2. हेमू अधिकारी (उप-कप्तान)
3. सी० टी० सरवटे
4. डी० जी० फड़कर
5. एस० जी० शिन्दे
6. पी० आर० उमरीगर
7. पी० सेन
8. एन० चौधुरी
9. आर० वी० दिवेचा
10. डी० के० गायकवाड़
11. एच० जी० गायकवाड़
12. गुलाम अहमद
13. सी० डी० गोपीनाथ
14. वी० एल० मांजरेकर
15. एम० के० मन्त्री
16. जी० एस० रामचन्द
17. पी० रॉय

पंकज गुप्ता (प्रबन्धक)

वीनू मॉकड टीम के सदस्य नहीं थे लेकिन उन्होने तीन टैस्ट मैचो मे भाग लिया।

टीम ने 35 मैच खेले जिनमे से 6 में विजय प्राप्त की, 5 में पराजित हुई और शेष मैचों में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

टैस्ट मैचों के अलावा खेले गये मैचो का संक्षेप में विवरण इस प्रकार है :

विरुद्ध भारतीय ज्यूमखाना : अप्रेल 30 और मई 1 को

भारत : 455 (फडकर 158, रामचन्द 62, हजारे 60, मॉकड ने 140 रन देकर 5 विकटें ली)। भारतीय ज्यूमखाना : सात विकटों पर 147 (बी० बी० निम्बालकर 80)। मैच मे हार-जीत का फ़ैसला नहीं हो सका।

विरुद्ध वूस्टरशायर : मई 1 को

वूस्टरशायर : 6 विकटों पर 101 रन । वर्षा के कारण मैच बन्द करना पड़ा और हार-जीत का फैसला नहीं हो सका ।

विरुद्ध सर्रे : मई 7, 8 और 9 को

सर्रे : 219 (रामचन्द ने 20 रन देकर 5 विकटें ली) और 188 रन।
भारत : 158 (लेकर ने 64 रन देकर 6 विकटें ली) और 108 रन।
भारत 141 रनों से पराजित ।

विरुद्ध लीस्टरशायर : मई 10, 12 और 13 को

लीस्टरशायर : 161 और 8 विकटों पर 156 (गुलाम अहमद ने 52 रन देकर 5 विकटें ली) । भारत : 9 विकटों पर 202 और पारी समाप्ति की घोषणा (हजारे 57) । मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका ।

विरुद्ध केम्ब्रिज : मई 14, 15 और 16 को

भारत : 285 (रामचन्द 134, मेकार्थी ने 60 रन देकर 5 विकटें ली) और 8 विकटों पर 202 और पारी समाप्ति की घोषणा (उमरीगर 61, मन्त्री 52, बार ने 53 रन देकर 5 विकटें ली) । केम्ब्रिज : 257 (पी० बी० एच० मे 92) और 2 विकटों पर 76 रन । मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका ।

विरुद्ध एम० सी० सी० : मई 17, 19 और 20 को

एम० सी० सी० : आठ विकटों पर 383 और पारी समाप्ति की घोषणा (ग्रेवनी 158, सिम्पसन 101) और दो विकटों पर 83 रन । भारत : 255 (रॉय 62) और तीन विकटों पर 188 (उमरीगर 91*)। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका ।

विरुद्ध ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय : मई 21, 22 और 23 को

ऑक्सफोर्ड : 227 (काउड्रे 92, गुलाम अहमद ने 84 रन देकर 8 विकटें ली) और 232 (डार्लिंग 69, काउड्रे 64, गुलाम अहमद ने 66 रन देकर 5 विकटें ली) । भारत : तीन विकटों पर 398 और पारी समाप्ति की घोषणा (उमरीगर 229*, हजारे 161*) और 1 विकेट पर 62 रन । भारत 9 विकटों से विजयी ।

विरुद्ध इसेक्स : मई 24, 26 और 27 को

भारत : 195 (अधिकारी 61, आर० स्मिथ ने 36 रन देकर 6 विकटें ली) और छः विकटों पर 368 और पारी समाप्ति की घोषणा (फड़कर 86, मांजरेकर 81, डी० के० गायकवाड़ 75, उमरीगर 75) । इसेक्स : 410 (इनसोल 116, डोडस 81, बैली 67) और 9 विकटों पर 144

(एच० जी० गायकवाड़ ने 44 रन देकर 5 विकटें ली) । मैच मे हार-जीत का फैसला नही हो सका ।

विरुद्ध सोमरसेट : मई 28, 29 और 30 को

सोमरसेट : 330 (लारेन्स 103*) और 9 विकटों पर 188 और पारी समाप्ति की घोषणा (रॉय ने 53 रन देकर 5 विकटें ली) । भारत : 238 (डी० के० गायकवाड़ 83) और 8 विकटो पर 118 रन । मैच में हार-जीत का फैसला नही हो सका ।

विरुद्ध ग्लेमोरगन : मई 31, जून 2 और 3 को

ग्लेमोरगन : 164 (रामचन्द ने 33 रन देकर 8 विकटें ली) और 170 रन । भारत : 217 (उमरीगर 55, मांजरेकर 55) और 8 विकटों पर 85 रन । मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका ।

विरुद्ध आयरलैंड : जून 13 और 14 को

भारत : 304 (मांजरेकर 88, उमरीगर 62) । आयरलैंड 126 और 169 (शिन्दे ने 49 रन देकर 5 विकटें ली)। भारत एक पारी और 9 रनों से विजयी ।

विरुद्ध आयरलैंड : जून 16 और 17 को

भारत : 8 विकटों पर 289 और पारी समाप्ति की घोषणा (फडकर 103, मंत्री 78) । आयरलैंड · 150 (शिन्दे ने 35 रन देकर 5 विकटें ली) और 6 विकटों पर 68 रन । मैच मे हार-जीत का फैसला नही हो सका ।

विरुद्ध सेना : जून 25 और 26 को

भारत: 225 (वेल्स ने 74 रन देकर 5 विकटें ली) और 1 विकेट पर 69 रन । सेना : 115 (शिन्दे ने 60 रन देकर 6 विकटें ली) और 178 रन । भारत नौ विकटों से विजयी ।

विरुद्ध लंकाशायर : जून 28, 30 और जुलाई 1 को

लंकाशायर : 363 (होवर्ड 87, ग्लेस 85) और 68 (रामचन्द ने 27 रन देकर 7 विकटें ली) । भारत : 427 (उमरीगर 204, दिवेचा 61) और बिना विकेट खोये 5 रन । भारत दस विकटों से विजयी ।

विरुद्ध डरहम : जुलाई 2 और 3 को

डरहम : 6 विकटो पर 302 और पारी समाप्ति की घोषणा (कीलर 135) । भारत : 156 (उमरीगर 61, रॉय 54, ऐसपीनाल ने 64 रन देकर 6 विकटें ली) और 3 विकटो पर 101 रन । मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका ।

विरुद्ध नोटिंघम : जुलाई 5, 7 और 8 को

मारत : चार विकटों पर 436 और पारी समाप्ति की घोषणा (रॉय 163, हजारे 96, डी० के० गायकवाड़ 70) और बिना विकेट खोये 16 रन। नोटिंघम : 468 (पूली 222*, शिन्दे ने 107 रन देकर 5 विकटें ली)। मैच मे हार-जीत का फ़ैसला नही हो सका।

विरुद्ध डर्बीशायर : जुलाई 9, 10 और 11 को

डर्बीशायर : 162 (चौधुरी ने 30 रन देकर 5 विकटें ली) और 296 (हेमर 76)। भारत : 86 (जेकसन ने 39 रन देकर 6 विकटें ली) और 3 विकटों पर 115 रन। मैच में हार-जीत का फ़ैसला नहीं हो सका।

विरुद्ध यार्कशायर : जुलाई 12, 14 और 15 को

यार्कशायर : 192 (दिवेचा ने 81 रन देकर 5 विकटें ली)और 4 विकटों पर 298 (लेस्टर 110*, हेलीडे 77, लॉसन 69)। भारत। 5 विकटो पर 377 (उमरीगर 137*, अधिकारी 82, मन्त्री 80)। मैच मे हार-जीत का फ़ैसला नहीं हो सका।

विरुद्ध कॉमनवेल्थ एकादश : जुलाई 23, 24 और 25 को

भारत : 362 (फड़कर 94, गोपीनाथ 79) और तीन विकटों पर 213 और पारी समाप्ति की घोषणा (डी० के० गायकवाड 61, मन्त्री 55, एच० जी० गायकवाड़ 51*)। कॉमनवेल्थ : 215 और 6 विकटो पर 254 (बारनेट 114)। मैच मे हार-जीत का फ़ैसला नही हो सका।

विरुद्ध सर्रे : जुलाई 26, 28 और 29 को

सर्रे : 71 (दिवेचा ने 29 रन देकर 6 विकटें ली, रामचन्द ने 23 रन देकर 4 विकटें ली) और 319 (पी० बी० एच० मे 143)। भारत : 179 और 4 विकटों पर 214 (अधिकारी 98*, फड़कर 50*)। भारत छह विकटों से विजयी।

विरुद्ध नोर्थम्पटनशायर : जुलाई 30, 31 और अगस्त 1 को

नोर्थम्पटनशायर : 7 विकटो पर 365 और पारी समाप्ति की घोषणा (ब्रुक्स 156) और 1 विकेट पर 107 (ब्रुक्स 51*)। भारत : 309 (मांजरेकर 83, अधिकारी 73, उमरीगर 59)। मैच में हार-जीत का फ़ैसला नहीं हो सका।

विरुद्ध ग्लेमोरगन : अगस्त 3, 4 और 5 को

ग्लेमोरगन : 9 विकटो पर 204 और पारी समाप्ति की घोषणा (दिवेचा ने 74 रन देकर 8 विकटें ली) और बिना विकेट खोये 5 रन। भारत :

9 विकटों पर 306 और पारी समाप्ति की घोषणा (रामचन्द 78, सेन 75*, मांजरेकर 59)। मैच में हार-जीत का फैसला नही हो सका।

विरुद्ध वॉरविकशायर : अगस्त 6, 7 और 8 को

(वर्षा के कारण केवल 250 मिनट खेल हो सका) भारत : 2 विकटों पर 172 और पारी समाप्ति की घोषणा (अधिकारी 101*)। वॉरविकशायर : 2 विकटों पर 96 (हार्नर 57)। मैच मे हार-जीत का फैसला नही हो सका।

विरुद्ध ग्लॉसेस्टरशायर : अगस्त 9, 11 और 12 को

ग्लॉसेस्टरशायर : 198 (ऐमेट 63, ग्रेवनी 56) और 7 विकटों पर 47 और पारी समाप्ति की घोषणा। भारत : 138 (अधिकारी 80) और 4 विकटों पर 108 रन। भारत छह विकटो से विजयी।

विरुद्ध ससेक्स : अगस्त 20, 21 और 22 को

भारत : 186 (डी० के० गायकवाड़ 87, वुड ने 34 रन देकर 5 विकटें ली) और 210 (हजारे 52, थोमसन ने 54 रन देकर 5 विकटें ली)। ससेक्स : 220 (रामचन्द ने 67 रन देकर 6 विकटें ली) और 4 विकटो पर 177 (जोन लैंग्रिज 80)। भारत छह विकटों से पराजित।

विरुद्ध मिडलसेक्स : अगस्त 23, 25 और 26 को

भारत : 289 (मांजरेकर 104, डी० के० गायकवाड़ 62) और 5 विकटो पर 294 और पारी समाप्ति की घोषणा (रॉय 131, उमरीगर 86)। मिडलसेक्स : 255 (राबर्टसन 85, हजारे ने 50 रन देकर 7 विकटें ली) और 5 विकटों पर 280 (ऐडरिच 129, राबर्टसन 81, कोम्पटन 70)। मैच मे हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

विरुद्ध केंट : अगस्त 27, 28 और 29 को

केंट : 217 (फेग 76, फिवे 61) और 225 (काउड्रे 101)। भारत : 392 (उमरीगर 204, सरवटे 57) और चार विकटों पर 45 रन। मैच में हार-जीत का फैसला नही हो सका।

विरुद्ध हेम्पशायर : अगस्त 30, सितम्बर 1 और 2 को

हेम्पशायर : 256 (मेकेंजी 91, ईगर 88) और आठ विकटों पर 206 और पारी समाप्ति की घोषणा। भारत : 7 विकटों पर 357 और पारी समाप्ति की घोषणा (उमरीगर 165*, डी० के० गायकवाड़ 69) और 8 विकटों पर 100 (शेकेल्टन ने 41 रन देकर 8 विकटें ली)। मैच में हार-जीत का फैसला नही हो सका।

विरुद्ध इंग्लैंड का एक एकादश : सितम्बर 3, 4 और 5 को

भारत : 222 (डी० के० गायकवाड़ 75, हजारे 67, रिगवे ने 50 रन देकर 6 विकटें ली) और 7 विकटों पर 241 और पारी समाप्ति की घोषणा (फड़कर 66*, मांजरेकर 60, मन्त्री 54)। इंग्लैंड एकादश : 6 विकटों पर 257 और पारी समाप्ति की घोषणा (काम्पटन 132) और 7 विकटो पर 194 रन। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

विरुद्ध टी० एन० पियर्स एकादश : सितम्बर 10, 11 और 12 को

भारत : 258 (हजारे 72, राय 51, बेली ने 41 रन देकर 8 विकटें ली)। टी० एन० पियर्स एकादश : 68 (फड़कर ने 26 रन देकर 7 विकटें ली) और 7 विकटो पर 116 रन। मैच में हार-जीत का फैसला नही सका।

खिलाड़ियों के कम अनुभवी होने, इंग्लैंड की भयानक सर्दी और वर्षा और मांकड के टीम मे न होने के कारण भारतीय टीम का खेल सन्तोषजनक नही रहा। अपने हजार रन पूरे करने पर भी हजारे अपनी श्रेष्ठ बल्लेबाजी नही दिखा सके। उमरीगर ने सबसे अधिक 1688 रन बनाए। उनकी प्रति पारी औसत 48.22 रन रहा। लेकिन टैस्ट मैचों में उनकी बल्लेबाजी निराशाजनक रही, 7 पारी में वे केवल 43 रन बना सके। मांजरेकर ने हजार रन पूरे किये। गुलाम अहमद की गेंदबाजी सबसे उत्तम रही। उन्होंने प्रति विकेट 21.92 औसत रन देकर 80 विकटें प्राप्त की। रामचन्द ने 25.85 औसत पर 64 विकटें ली। फडकर ने 26.92 औसत पर 53 विकटें और दिवेचा ने 25.88 औसत पर 50 विकटें ली।

टैस्ट मैच

भारतीय टीम का खेल टैस्ट मैचों में बहुत निराशाजनक रहा। प्रथम तीन टैस्ट मैचों मे हार हुई और चौथे और अन्तिम टैस्ट में वर्षा ने उन्हें हार से बचा लिया। प्रथम टैस्ट की कहानी कुछ और ही होती अगर मांकड टीम मे होते और गुलाम अहमद का साथ देते जिन्होंने अद्भुत गेंदबाजी की। केवल हजारे, मांजरेकर और फडकर ने सन्तोषजनक बल्लेबाजी की।

द्वितीय टैस्ट मैच मे मांकड ने कमाल कर दिखाया। प्रथम विकेट की साझेदारी मे रॉय के साथ 106 रन बनाकर मांकड ने भारत की प्रथम पारी का श्रीगणेश सुन्दर ढग से किया। शेष बल्लेबाजो मे केवल हजारे विकटो

* अपराजित

पर टिके परन्तु पारी 235 रनों पर समाप्त हो गई। इंग्लैंड ने इसका उत्तर 537 रनों से दिया। हट्टन और इवान्स ने अपने शतक पूरे किये। मांकड ने 73 ओवर गेंदबाजी कर 5 विकटें, 196 रनों पर प्राप्त की। तत्पश्चात् उन्होंने श्रेष्ठ बल्लेबाजी दिखाई और 184 रन बनाये। हजारे और रामचन्द ने उनका साथ दिया और भारत द्वितीय पारी में 378 रन बना सका। इंग्लैंड ने दो विकटें खोकर जीत के लिये आवश्यक रन पूरे कर लिये।

हट्टन ने तृतीय टैस्ट मैच में भी शतक पूरा किया और जब 9 विकटों पर 347 रन बन गये तो इंग्लैंड ने पारी समाप्ति की घोषणा कर दी। भारत को बिगड़े हुए विकेट पर बल्लेबाजी करनी पड़ी। बेडसर, ट्रूमेन और लॉक ने इसका पूरा लाभ उठाया और अतिथि टीम केवल 58 और 82 रन बना सकी।

चतुर्थ और अन्तिम टैस्ट मैच में इंग्लैंड ने 6 विकटों पर 326 रन बना कर पारी समाप्ति की घोषणा कर दी। शेपर्ड ने शतक बनाया। भारत फिर बिगड़े हुए विकेट के चक्कर में फंस गया जिसका बेडसर और ट्रूमेन ने पूरा लाभ उठाया और प्रतिद्वन्द्वी टीम को 98 रनों पर निकाल बाहर किया। वर्षा के कारण खेल आगे न हो सका और हार-जीत का फैसला हुए बिना ही मैच समाप्त हो गया।

रनों का सविस्तार विवरण इस प्रकार है :

प्रथम टैस्ट

लीड्स में जून 5, 6, 7 और 9 को खेला गया, टॉस भारत ने जीता और इंग्लैंड ने सात विकटों से मैच जीता।
कप्तान : एल० हट्टन (इंग्लैंड) और वी० एस० हजारे (भारत)।
विकेट-रक्षक : टी०जी० इवान्स (इंग्लैंड) और एम०के० मंत्री (भारत)।
निर्णायक : एच० जी० बॉल्डविन और एच० ईलियट।

भारत

रॉय स्ट. इवान्स बा. जेनकिन्स	19	कै. कोम्पटन बा. ट्रूमेन	0
डी. के. गायकवाड बा. बेडसर	9	कै. लेकर बा. बेडसर	0
उमरीगर कै. इवान्स बा. ट्रूमेन	8	कै. मोर बा. जेनकिन्स	9
हजारे कै. इवान्स बा. बेडसर	89	बा. ट्रूमेन	56
मांजरेकर कै. वाटकिन्स बा. ट्रूमेन	133	बा. ट्रूमेन	0
फड़कर कै. वाटकिन्स बा. लेकर	12	बा. बेडसर	64
गोपीनाथ बा. ट्रूमेन	0	पगबाधा बा. जेनकिन्स	8
मंत्री अपराजित	13	बा. ट्रूमेन	0
रामचन्द कै. वाटकिन्स बा. लेकर	0	स्ट. इवान्स बा. जेनकिन्स	0
शिन्दे कै. मे बा. लेकर	2	अपराजित	7
गुलाम अहमद बा. लेकर	0	स्ट. इवान्स बा. जेनकिन्स	14
अतिरिक्त	8	अतिरिक्त	7
	295		165

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1-18, 2-40, 3-42, 4-264, 5-264, 6-264, 7-291, 8-291, 9-293, 10-295।

द्वितीय पारी : 1-0, 2-0, 3-0, 4-0, 5-26, 6-131, 7-143, 8-143, 9-143, 10-165.

इंग्लैंड की गेंदबाजी

	ओ०	मे०ओ०	रन	विकेट	ओ०	मे०ओ०	रन	विकेट
वेडसर	33	13	38	2	21	9	32	2
ट्रूमेन	26	6	89	3	9	1	27	4
लेकर	22.3	9	39	4	13	4	17	0
वाटकिन्स	11	1	21	0	11	2	32	0
जेनकिन्स	27	6	78	1	13	2	50	4
कोम्पटन	7	1	20	0	—	—	—	—

इंग्लैंड

हट्टन कै. रामचन्द बा. गुलाम	10	बा. फड़कर	10
सिम्पसन कै. रामचन्द बा. गुलाम	23	कै. मंत्री बा. गुलाम	51
मे. बा. शिन्दे	16	कै. फड़कर बा. गुलाम	4
कोम्पटन कै. रामचन्द बा. गुलाम	14	अपराजित	35
ग्रेवनी बा. गुलाम	71	अपराजित	20
वाटकिन्स पगबाधा बा. गुलाम	48		
इवान्स पगबाधा बा. हजारे	66		
जेनकिन्स कै. मंत्री बा. रामचन्द	38		
लेकर बा. फड़कर	15		
वेडसर बा. रामचन्द	7		
ट्रूमेन अपराजित	0		
अतिरिक्त	26	अतिरिक्त	8
	344	3 विकटों पर	128

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1-21, 2-48, 3-62, 4-92, 5-182, 6-211, 7-290, 8-325, 9-329, 10-334.

द्वितीय पारी : 1-16, 2-42, 3-89।

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
फड़कर	24	7	54	1	11	2	21	1
रामचन्द	36.2	14	61	2	17	3	43	0
गुलाम अहमद	63	24	100	5	22	8	37	2
हजारे	20	7	22	1	3	0	11	9
शिन्दे	22	5	71	1	2	0	8	0

द्वितीय टैस्ट

लार्ड्स में जून 19, 20, 21, 23 और 24 को खेला गया, टॉस भारत ने जीता और इंग्लैंड ने मैच 8 विकटों से जीता।
कप्तान : एल० हट्टन (इंग्लैंड) और वी० एस० हजारे (भारत)।
विकेट-रक्षक : टी०जी० इवान्स (इंग्लैंड) और एम०के० मंत्री (भारत)।
निर्णायक : एफ० चेस्टर और एफ० एम० ली।

भारत

मांकड कै. वॉटकिन्स बा. ट्रुमेन	72	बा. लेकर	184
रॉय कै. और बा. वेडसर	35	बा. वेडसर	0
उमरीगर बा. ट्रुमेन	5	बा. ट्रुमेन	14
हजारे अपराजित	69	कै. लेकर बा. वेडसर	49
मांजरेकर पगबाधा बा. वेडसर	5	बा. लेकर	1
फड़कर बा. वाटकिन्स	8	बा. लेकर	16
अधिकारी पगबाधा बा. वाटकिन्स	0	बा. ट्रुमेन	16
रामचन्द बा. ट्रुमेन	18	बा. ट्रुमेन	42
मंत्री बा. ट्रुमेन	1	कै. कोम्पटन बा. लेकर	5
शिन्दे स्ट. इवान्स बा. वाटकिन्स	5	कै. हट्टन बा. ट्रुमेन	14
गुलाम अहमद बा. जेनकिन्स	0	अपराजित	1
अतिरिक्त	17	अतिरिक्त	36
	235		378

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–106, 2–116, 3–118, 4–126, 5–135, 6–139, 7–167, 8–180, 9–221, 10–235.

द्वितीय पारी : 1–7, 2–59, 3–270, 4–272, 5–289, 6–312, 7–314, 8–323, 9–377, 10–378

इंग्लैंड की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
बेडसर	33	8	62	2	36	13	60	2
ट्रूमेन	25	3	72	4	27	4	110	4
जेनकिन्स	7.3	1	26	1	10	1	40	0
लेकर	12	5	21	0	39	15	102	4
वॉटकिन्स	17	7	37	3	8	0	20	0
कोम्पटन	—	—	—	—	2	0	10	0

इंग्लैंड

हट्टन कै. मंत्री बा. हजारे	150	अपराजित	39
सिम्पसन बा. मांकड	53	रन आउट	2
मे कै. मन्त्री बा. मांकड	74	कै. रॉय बा. गुलाम	26
कोम्पटन पगबाधा बा. हजारे	6	अपराजित	4
ग्रेवनी कै. मन्त्री बा. गुलाम	73		
वॉटकिन्स बा. मांकड	0		
इवान्स कै. और बा. गुलाम	104		
जेनकिन्स स्ट. मन्त्री बा. मांकड	21		
लेकर अपराजित	23		
बेडसर कै. रामचन्द बा. मांकड	3		
ट्रूमेन बा. गुलाम	17		
अतिरिक्त	13	अतिरिक्त	8
	537	2 विकटों पर	79

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–106, 2–264, 3–272, 4–292, 5–292, 6–451, 7–468, 8–506, 9–514, 10–573.

द्वितीय पारी : 1–8, 2–71.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
फडकर	27	8	44	0	—	—	—	—
रामचन्द	29	8	67	0	1	0	5	0
हजारे	24	4	53	2	1	1	0	0
मांकड	73	24	196	5	42	12	35	0
गुलाम अहमद	43.4	12	106	3	23.2	9	31	1
शिन्दे	6	0	43	0	—	—	—	—
उमरीगर	4	0	15	0	—	—	—	—

तृतीय टेस्ट

मैनचेस्टर में जुलाई 17, 18 और 19 को खेला गया, टॉस इंग्लैंड ने जीता और मैच भी एक पारी और 207 रनों से।
कप्तान : एल० हट्टन (इंगलैंड) और वी० एस० हजारे (भारत)।
विकेट-रक्षक : टी० जी० इवान्स (इंग्लैंड) और पी० सेन (भारत)।
निर्णायक : एफ० एस० ली और डी० डेविस।

इंग्लैंड

हट्टन कै. सेन बा. दिवेचा	104
शेपर्ड पगबाधा. बा रामचन्द	34
आइकिन कै. दिवेचा बा. गुलाम	29
मे. कै. सेन बा. मौकड	69
ग्रेवनी पगबाधा बा. दिवेचा	14
वॉटकिन्स कै. फडकर बा. मौकड	4
इवान्स कै. और बा. गुलाम	71
लेकर कै. सेन बा. दिवेचा	0
बेडसर कै. फडकर बा. गुलाम	17
लॉक अपराजित	1
ट्रूमैन बल्लेबाजी नहीं की	
अतिरिक्त	4
नौ विकटों पर पारी समाप्ति की घोषणा	347

विकटों का पतन

1–78, 2–133, 3–214, 4–248, 5–252, 6–284, 7–292, 8–336, 9–347।

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
फडकर	22	10	30	0
दिवेचा	45	12	102	3
रामचन्द	33	7	78	1
मौकड	28	9	67	2
गुलाम अहमद	9	3	43	3
हजारे	7	3	23	0

भारत

प्रथम पारी	रन	द्वितीय पारी	रन
मांकड कै. लॉक बा. बेडसर	4	पगबाधा बा. बेडसर	6
रॉय कै. हट्टन बा. ट्रुमेन	0	कै लेकर बा. ट्रुमेन	0
अधिकारी कै. ग्रेवनी बा. ट्रुमेन	0	कै. मे बा. लॉक	27
हजारे बा. बेडसर	16	कै. आइकिन बा. लॉक	16
उमरीगर बा. ट्रुमेन	4	कै. वॉटकिन्स बा. बेडसर	3
फडकर कै. शेपर्ड बा. ट्रुमेन	0	बा. बेडसर	5
मांजरेकर बा. ट्रुमेन	22	कै.इवान्स बा. बेडसर	0
दिवेचा बा. ट्रुमेन	4	बा. बेडसर	2
रामचन्द कै. ग्रेवनी बा. ट्रुमेन	2	कै. वॉटकिन्स बा. लॉक	1
सेन कै. लॉक बा. ट्रुमेन	4	अपराजित	13
गुलाम अहमद अपराजित	1	कै. आइकिन बा. लॉक	0
अतिरिक्त	1	अतिरिक्त	9
	58		82

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–4, 2–4, 3–5, 4–17, 5–17, 6–45, 7–51, 8–53, 9–53, 10–58.

द्वितीय पारी : 1–7, 2–7, 3–55, 4–59, 5–66, 6–66, 7–66, 8–67, 9–77, 10–82.

इंग्लैंड की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
बेडसर	11	4	19	2	15	6	27	5
ट्रुमेन	8.4	2	31	8	8	5	8	1
लेकर	2	0	7	0	—	—	—	—
वॉटकिन्स	—	—	—	—	4	3	1	0
लॉक	—	—	—	—	9.3	2	36	4

चतुर्थ टैस्ट

ओवल में अगस्त 14, 15, 16, 18 और 19 को खेला गया, टॉस इंग्लैंड ने जीता और मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।
कप्तान : एल० हट्टन (इंग्लैंड) और वी० एस० हजारे (भारत)।
विकेट रक्षक : टी० जी० इवान्स (इंग्लैंड) और [illegible] (भारत)।
निर्णायक : एफ० चेस्टर और एस० [illegible]

इंग्लैंड

हट्टन कै. फडकर बा. रामचन्द	86
शेपर्ड पगबाधा बा. दिवेचा	119
आइकिन कै. सेन बा. फडकर	53
मे कै. मांजरेकर बा. मांकड	17
ग्रेवनी कै. दिवेचा बा. गुलाम	13
वॉटसन अपराजित	18
इवान्स कै. फडकर बा. मांकड	1
लेकर अपराजित	6
बेडसर, लॉक, ट्रूमेन — बल्लेबाजी नही की	
अतिरिक्त	13
छह विकटों पर पारी समाप्ति की घोषणा	326
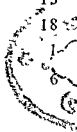
विकटों का पतन :

1–143, 2–261, 3–273, 4–293, 5–304, 6–307.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
दिवेचा	33	9	60	1
फडकर	32	8	61	1
रामचन्द	14	2	50	1
मांकड	48	23	88	2
गुलाम अहमद	24	1	54	1
हजारे	3	3	0	0

भारत

मॉकड कै. इवान्स बा. ट्रूमेन	5
रॉय कै. लॉक बा. ट्रूमेन	0
अधिकारी कै. ट्रूमेन बा. बेडसर	0
हजारे कै. मे बा. ट्रूमेन	38
मांजरेकर कै. आइकिन बा. बेडसर	1
उमरीगर बा. बेडसर	0
फडकर बा. ट्रूमेन	17
दिवेचा बा. बेडसर	16
रामचन्द कै. हट्टन बा. बेडसर	5
सेन. बा. ट्रूमेन	9
गुलाम अहमद अपराजित	2
अतिरिक्त	5
	98

विकटों का पतन :

1–0, 2–5, 3–5, 4–6, 5–6, 6-64, 7–71, 8-78, 9–94, 10–98.

इंग्लैंड की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
बेडसर	14.5	4	41	5
ट्रूमेन	16	4	48	5
लॉक	6	5	1	0
लेकर	2	0	3	0

पाकिस्तान की टीम भारत में, 1952

पाकिस्तान के निर्माण के पांच वर्ष पश्चात् वहां की क्रिकेट टीम ने भारत का भ्रमण किया। दोनों टीमों के खिलाड़ी आपस में परिचित थे क्योंकि 15 अगस्त, 1947 तक वे सब एक ही देश के निवासी थे और साथ-साथ खेलते रहे थे। कतिपय खिलाड़ी तो भारत की ओर से खेले भी थे। प्रथम बार भारत ने 'रबर' जीता और पाकिस्तान ने भी प्रथम बार टैस्ट मैच जीता।

टीम के निम्नलिखित खिलाड़ी थे :

1. अब्दुल हफीज कारदार (कप्तान)
2. अनवर हुसैन (उप-कप्तान)
3. इम्तियाज अहमद
4. नजर मोहम्मद
5. फजल महमूद
6. मकसूद अहमद
7. अमीर इलाही
8. हनीफ मोहम्मद
9. जुल्फिकार अहमद
10. वजीर मोहम्मद
11. खालिद इबादुल्ला
12. वकार हसन
13. खालिद कुरेशी
14. महमूद हुसन
15. आर. दीनशा
16. खुर्शीद अहमद
17. इसरार अली

टैस्ट मैचों के अलावा खेले गये अन्य मैचों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :

अमृतसर में : अक्तूबर 10, 11 और 12 को

पाकिस्तान : 319 (हनीफ मोहम्मद 121, इसरार अली 73, कारदार 64, प्रकाश भन्डारी ने 39 रन देकर 5 विकटें ली) और 2 विकटों

पर 241 (हनीफ मोहम्मद 109*, अनवर हुसैन 65*)। उत्तर क्षेत्र: 220 (गडकरी 59)। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

इन्दौर में : अक्टूबर 30, 31 और नवम्बर 1 को

पाकिस्तान : 356 (इम्तियाज 213*) और 5 विकटों पर 275 और पारी समाप्ति की घोषणा (कारदार 106, खुर्शीद अहमद 101)। मध्य क्षेत्र : 271 (मुश्ताक अली 73, वी. बी. निम्बालकर 55, महमूद हुसैन ने 116 रन देकर 5 विकटें लीं) और 8 विकटों पर 98 (कुरेशी ने 21 रन देकर 5 विकटें लीं)। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

अहमदाबाद में : नवम्बर 4, 5 और 6 को

पश्चिम क्षेत्र : 6 विकटों पर 332 और पारी समाप्ति की घोषणा (पंजाबी 142, शोधन 89*) और 3 विकटों पर 123 और पारी समाप्ति की घोषणा (माका 56)। पाकिस्तान : 292 (वजीर मोहम्मद 104*, इसरार अली 55, कारदार 51, ग्याल चन्द ने 114 रन देकर 5 विकटें लीं) और 2 विकटों पर 54 रन। मैच मे हार-जीत का फैसला नही हो सका।

बम्बई में : नवम्बर 8, 9 और 10 को

पाकिस्तान : 4 विकटों पर 517 और पारी समाप्ति की घोषणा (हनीफ मोहम्मद 203*, इम्तियाज अहमद 96, नजर मोहम्मद 61, मकसूद अहमद 61, अनवर हुसैन 59*)। बम्बई क्रिकेट संघ : 3 विकटों पर 324 (मांजरेकर 173, ईरानी 103*)। मैच मे हार-जीत का फैसला नही हो सका।

हैदराबाद में : नवम्बर 21, 22 और 23 को

पाकिस्तान : 6 विकटों पर 351 और पारी समाप्ति की घोषणा (नजर मोहम्मद 156*, हनीफ मोहम्मद 135) और 2 विकटों पर 44 रन; दक्षिण क्षेत्र : 6 विकटों पर 352 और पारी समाप्ति की घोषणा (आदिशेष 87, सूर्य नारायण 58*, आईबारा 57, श्याम सुन्दर 55)। मैच में हार-जीत का फैसला नही हो सका।

बंगलौर में : दिसम्बर 5, 6 और 7 को

विश्वविद्यालय टीम : 8 विकटों पर 340 और पारी समाप्ति की घोषणा (केनी 99)। पाकिस्तान : 99 (घोरपडे ने 19 रन देकर 6 विकटें लीं) और बिना विकेट खोये 16 रन। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

भारत का 1952 में भ्रमण करने वाली पाकिस्तान की टीम
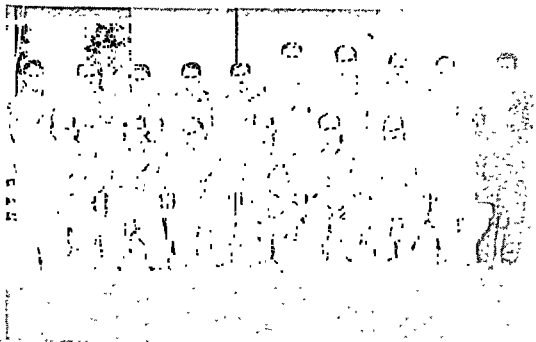
कुर्सी पर : मकसूद अहमद, फजल महमूद, इम्तियाज अहमद, अब्दुल हफीज कारदार (कप्तान), अनवर हुसैन (उप-कप्तान), नजर मोहम्मद और अमीर इलाही।

खड़े हुए : हनीफ मोहम्मद, जुल्फिकार अहमद, वजीर मोहम्मद, खालिद इबादुल्ला, वकार हसन, खालिद कुरैशी, महमूद हुसैन, आर. दीनशा, खुर्शीद अहमद और इसरार अली।

वेस्टइंडीज का 1953 में भ्रमण करने वाली भारतीय टीम
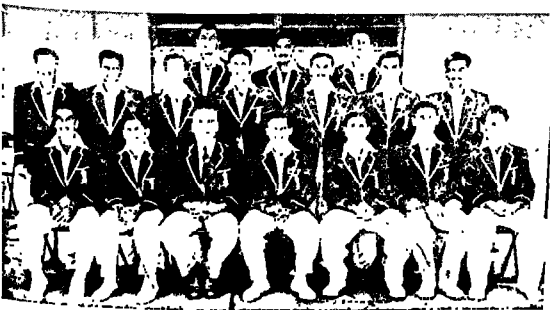
कुर्सी पर : जी. एम. रामचन्द, डी. जी. फडकर, सी. रामस्वामी (प्रबन्धक), वी. एस. हजारे (कप्तान), वीनू मांकड (उप-कप्तान), पी. आर. उमरीगर और वी. एल. मांजरेकर।

खड़े हुए : पी. रॉय, एम. एल. आपटे, डी. के. गायकवाड, पी. जी. जोशी, सी. वी. गड़कारी, ई. एस. माका और सुभाष गुप्ते।

अंतिम पंक्ति: डी. एच. शोधन, एन. कन्हैयाराम और जे. एम. घोरपडे।

पाकिस्तान का 1954-55 में भ्रमण करने वाली भारतीय टीम

कुर्सी पर : वी. एल. मांजरेकर, गुलाम अहमद, लाला अमरनाथ (प्रबन्धक), वीनू मांकड (कप्तान), पी. आर. उमरीगर (उप-कप्तान), डी. जी. फडकर और एम. के. मंत्री ।
खड़े हुये : प्रकाश भंडारी, पी. रॉय, सुभाष गुप्ते, एच. टी. दानी, सी. डी. गोपीनाथ, जी. एम. रामचन्द, पी. एल. पंजाबी, जे. एम. पटेल, सी. जी. बोर्डे, सी. वी. गडकारी और एन. एस. तम्हाने ।

भारत का 1955-56 में भ्रमण करने वाली न्यूजीलैंड की टीम

कुर्सी पर : जे.ए. हेज, ए. आर. मैकगिबन, बर्ट सटक्लिफ, एच. बी. केव (कप्तान), डब्लू. एच. कुरर ( ), जे. आर. रीड, जे. जी. लेगेट, एम. बी. पूर और ए. एम. मोइर ।
खड़े हुये : पी. पेट्री, टी. जी. मेकमहोन, जे. डब्लू. गाई, एन. एस. हार्डफोर्ड, जे. सी. एलेक्जेंडर, जी. जेर. हैरिस और एस. एन. मैकगिबर ।

जमशेदपुर में : दिसम्बर 19, 20 और 21 को

पाकिस्तान : 7 विकटों पर 345 और पारी समाप्ति की घोषणा (नज़र मोहम्मद 123, इम्तियाज अहमद 103) और 7 विकटों पर 200 और पारी समाप्ति की घोषणा (खुर्शीद अहमद 69। पूर्व क्षेत्र : 211 (बैंक 93, महमूद हुसैन ने 52 रन देकर 5 विकटें लीं) और 6 विकटों पर 157 (ओम प्रकाश 50*)। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

टैस्ट मैच

प्रथम टैस्ट दिल्ली में खेला गया जिसे भारत ने सरलता से जीत लिया। बल्लेबाजी की विशेष कुशलता प्रदर्शित कर हजारे ने 76 रन बनाये। अन्तिम विकेट की साझेदारी में अधिकारी और गुलाम अहमद ने 109 रन जोड़ कर प्रतिद्वन्दियों की गेंदबाजी की कमज़ोरी प्रकट कर दी। गुलाम अहमद ने 50 रन बनाये और अधिकारी 81 रन बनाकर अपराजित रहे। नज़र मोहम्मद और हनीफ ने पाकिस्तान की पारी सुन्दर ढंग से प्रारम्भ की। उम्र और कद में छोटे हनीफ ने 240 मिनट में 51 रन बनाकर अपनी चातुरी दिखाई। मांकड की गेंदबाजी ने अतिथि बल्लेबाजों को विकेट पर टिकने नहीं दिया और प्रथम पारी में 8 विकटें 52 रनों पर लेकर और द्वितीय पारी में 5 विकटें 79 रनों पर लेकर पाकिस्तान को केवल दोनों पारियों में 150 और 152 रनों तक ही सीमित रखा। भारत एक पारी और 70 रनों से विजयी रहा।

हजारे, मांकड, अधिकारी और फड़कर जैसे महान् खिलाड़ी लखनऊ में मेटिंग विकेट पर खेले गये द्वितीय टैस्ट में नहीं खेले। भारत ने मैदान में कमज़ोर टीम उतारी और एक पारी और 43 रनों से हार कर फल भी पा लिया।

भारत ने टॉस तो जीता लेकिन फजल महमूद, महमूद हुसैन और मक्सूद अहमद की घातक गेंदबाजी के सामने वह केवल 106 रन बना सका। नज़र मोहम्मद और हनीफ ने प्रथम विकेट पर 63 रन बना कर पाकिस्तान की पारी की दृढ़ नींव रखी। अपने जीवन की सर्वश्रेष्ठ पारी खेलते हुए नज़र मोहम्मद पारी के प्रारम्भ से लेकर अंत तक 124 रन बना कर अपराजित रहे। पाकिस्तान की पारी 331 रनो पर समाप्त हुई।

कप्तान अमरनाथ ने तो शानदार बल्लेबाजी की और 61 रन बना कर अपराजित रहे लेकिन दूसरे बल्लेबाज फजल महमूद (जिसने 7 विकटें

---

*अपराजित

42 रन पर गिराई) की गेंदबाजी के आगे टिक न सके और भारत की द्वितीय पारी 182 रनों पर समाप्त हो गई।

भारत ने इस हार का बदला बम्बई में तुरन्त ही अगले टैस्ट मैच मे ले लिया। उसने पाकिस्तान को करारी हार दी। अमरनाथ की घातक गेंदबाजी ने पाकिस्तान की बल्लेबाजी को पारी के प्रारम्भ होते ही छिन्न-भिन्न कर दिया। उन्होने नजर का डंडा उखाड़ दिया, कारदार को दानी द्वारा लपका लिया और इम्तियाज को शून्य पर ही वापस कर दिया। वकार (81) और फजल महमूद (33) ने पारी को दुर्गति से बचाया। पारी समाप्त होने तक कुल रन संख्या 186 तक पहुँची।

मांकड और माधव आपटे ने पाकिस्तानी गेंदबाजी को मन्दा कर दिया और तत्पश्चात् हजारे (146) और उमरीगर (102) ने बहुत तेज गति से रन बनाये। अमरनाथ ने साहसिक निर्णय लिया और दूसरे दिन की खेल समाप्ति के पहले ही पारी समाप्ति की घोषणा कर दी। यह निर्णय लाभदायक सिद्ध हुआ क्योकि दानी ने नजर महमूद को शून्य पर लौटा दिया।

हनीफ और वकार बहुत सावधानी से खेले और तीसरे दिन की खेल समाप्ति के कुछ समय पहले तक साथ रहे। मांकड ने हजारे के द्वारा लपका कर वकार की पारी समाप्त कर बहुत जल्दी ही (23 टैस्ट मैचो मे) 'डबल' प्राप्त कर लिया और आस्ट्रेलिया के एम. ए. नोबल और जी. गिफन और इंग्लैंड के डब्लू. एच. रोड्स और एम. डब्लू. टेट के साथ इस गौरव के भागीदार हो गए। हनीफ के शतक में जब चार रन बाकी थे तो मांकड ने उनकी पारी का भी अन्त कर दिया और दिन की खेल समाप्ति पर पाकिस्तान के तीन विकटो पर 176 रन बन चुके थे।

बचे हुए सात विकटो को अगले दिन मांकड और गुप्ते ने 90 मिनट में 66 रन देकर उखाड़ दिया। बिना विकेट खोये, भारत ने आवश्यक रन बनाकर दस विकटो से मैच जीत लिया।

चतुर्थ टैस्ट मैच मद्रास में खेला गया जहाँ प्रतियियों का खेल पहले से अधिक अच्छा रहा। वर्षा ने खेल में विघ्न डाला। कारदार (79) और वकार (49) ने अपनी टीम की कुल रन संख्या को ऊँचा उठाने का प्रयत्न किया लेकिन जब 9 विकटें 240 रनों पर उखड़ गईं तो पाकिस्तान की स्थिति बहुत सन्तोषजनक नहीं रही। जुल्फिकार और अमीर इलाही ने अन्तिम विकेट की साझेदारी में धड़ल्ले से बल्लेबाजी कर पारी मे 104 रनों का योग कर कुल रन संख्या 344 को पर पहुँचा दिया।

भारत ने बल्लेबाजी शुरू की। उसके तीन विकेट 30 रनों पर ही गिर गये। तत्पश्चात् आपटे (42) और उमरागर (62) ने अपनी टीम को कठिन स्थिति में से उबारा। भारत के 6 विकटों पर 175 रन बने थे जब वर्षा ने खेल समाप्त कर दिया।

अन्तिम टैस्ट मैच कलकत्ता में खेला गया वहां भी हार-जीत का फैसला न हो सका हालांकि पूरे खेल में भारत की स्थिति बढ़िया रही। नजर महमूद और हनीफ ने पाकिस्तान की पारी फिर ढंग से प्रारम्भ की। वकार और इम्तियाज ने स्थिति अधिक दृढ़ करदी और केवल 4 विकटों पर कुल रन संख्या 215 हो गई। फडकर और रामचन्द ने अन्तिम 6 विकटों को 42 रनों पर गिरा कर पारी को अकस्मात समाप्त कर दिया।

अपने प्रथम टैस्ट मैच में शोधन ने अपना शतक पूरा किया और उनकी शानदार बल्लेबाजी ने भारत की कुल रन संख्या 397 पर पहुँचाने में बहुत कुछ सहायता दी।

रनों की कमी को पूरा करने में पाकिस्तान ने अपने आधे खिलाडी खो दिये। वकार विकेट पर डट कर खड़े रहे और फजल ने उनका साथ दिया। वकार ने अपनी टीम को हार से बचा लिया लेकिन अपना शतक केवल 3 रनों से खो दिया। कारदार ने 7 विकटों पर पारी समाप्ति की घोषणा करदी जब पाकिस्तान के 236 रन बन चुके थे। बचे हुए समय में भारत ने बिना विकेट खोये 28 रन बना लिये थे।

रनों का सविस्तार विवरण इस प्रकार है:

प्रथम टैस्ट

दिल्ली में अक्टूबर 16, 17 और 18 को खेला गया, टॉस भारत ने जीता और मैच भी एक पारी और 70 रनों से। कप्तान : लाला अमरनाथ (भारत) और ए० एच० कारदार (पाकिस्तान)। विकेट रक्षक : पी० सेन (भारत) और हनीफ मोहम्मद (पाकिस्तान)। निर्णायक : एम० जी० विजयसारथी और बी० जे० मोहनी।

भारत

माँकड बा. खान मोहम्मद	11
रॉय बा. खान मोहम्मद	7
हजारे बा. अमीर इलाही	76
माँजरेकर कै. नजर बा. अमीर इलाही	23
अमरनाथ कै. खान मोहम्मद बा. फजल	59
उमरीगर पगबाधा बा. कारदार	25
गुल मोहम्मद कै. हनीफ बा. अमीर इलाही	24
अधिकारी अपराजित	81
रामचन्द कै. इम्तियाज बा. फजल	13
सेन कै. नजर बा. कारदार	2
गुलाम अहमद बा. अमीर इलाही	50
अतिरिक्त	28
	372

विकटों का पतन

1–19, 2–26, 3–67, 4–76, 5–110, 6–180, 7–195, 8–229, 9–263, 10–372.

पाकिस्तान की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
खान मोहम्मद	20	5	52	2
मकसूद अहमद	6	1	13	0
फजल महमूद	40	13	92	2
अमीर इलाही	39.4	4	134	4
कारदार	34	12	53	2

पाकिस्तान

प्रथम पारी		द्वितीय पारी	
नजर मोहम्मद रन आउट	27	बा. मांकड	7
हनीफ कै. रामचन्द बा. मांकड	51	बा. अमरनाथ	1
इसरार अली बा. मांकड	1	पगबाधा बा. मांकड	9
इम्तियाज पगबाधा बा. मांकड	0	पगबाधा बा. गुलाम	41
मकसूद कै. राय बा. मांकड	15	कै. अधिकारी बा. मांकड	5
कारदार कै. राय बा. मांकड	4	अपराजित	43
अनवर हुसैन कै. और बा. मांकड	4	पगबाधा बा. गुलाम	4
वकार हसन पगबाधा बा. मांकड	8	कै. गुल मोहम्मद बा. गुलाम	5
फजल महमूद अपराजित	21	कै. और बा. गुलाम	27
खान मोहम्मद कै. रामचन्द बा. मांकड	0	स्ट. सेन बा. मांकड	5
अमीर इलाही कै. गुल मोहम्मद बा. गुलाम	9	कै. रामचन्द बा. मांकड	0
अतिरिक्त	10	अतिरिक्त	5
	150		152

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–64, 2–65, 3–65, 4–97, 5–102, 6–111, 7–112, 8–129, 9–129, 10–150.

द्वितीय पारी : 1–2, 2–17, 3–42, 4–48, 5–73, 6–79, 7–87, 8–121, 9–152, 10–152.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
रामचन्द	14	7	24	0	6	1	21	0
अमरनाथ	13	9	10	0	5	2	12	1
मांकड	47	27	52	8	24.2	3	79	5
गुलाम अहमद	26.3	6	51	1	23	7	35	4
हजारे	8	5	3	0	—	—	—	—
गुल मोहम्मद	2	2	0	0	—	—	—	—

द्वितीय टेस्ट

लखनऊ में अक्टूबर 23, 24, 25 और 26 को खेला गया, टॉस भारत ने जीता और पाकिस्तान ने मैच एक पारी और 43 रनों से जीता।
कप्तान : लाला अमरनाथ (भारत) और ए० एच० कारदार (पाकिस्तान)।
विकेट रक्षक : पी०जी० जोशी (भारत) और हनीफ मोहम्मद (पाकिस्तान)।
निर्णायक : बी० जे० मोहिनी और जे० आर० पटेल।

भारत

रॉय पगबाधा बा. फजल	30	कै. इम्तियाज बा. हुसैन	2
डी. के. गायकवाड बा. मकसूद	6	कै. नजर बा. फजल	32
गुल मोहम्मद पगबाधा बा. मकसूद	0	पगबाधा बा. फजल	2
मांजरेकर बा. फजल	3	पगबाधा बा. फजल	3
किशनचन्द पगबाधा बा. फजल	0	कै. नजर बा. फजल	20
उमरीगर बा. हुसैन	15	पगबाधा बा. फजल	32
अमरनाथ कै. जुल्फिकार बा. हुसैन	10	अपराजित	61
जोशी बा. हुसैन	9	बा. अमीर इलाही	15
एच. जी. गायकवाड बा. फजल	14	बा. फजल	8
न्यालचन्द अपराजित	6	पगबाधा बा फजल	1
गुलाम अहमद कै. हनीफ बा. फजल	8	कै. इसरार बा. अमीर इलाही	0
अतिरिक्त	5	अतिरिक्त	6
	106		182

विकटों का पतन

प्रथम पारी : 1–17, 2–17, 3–20, 4–22, 5–55, 6–65, 7–68, 8–85, 9–93, 10–106.

द्वितीय पारी : 1–4, 2–27, 3–43, 4–73, 5–77, 6–103, 7–115, 8–170, 9–170, 10–182.

पाकिस्तान की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
महमूद हुसैन	23	7	35	3	19	5	57	1
कारदार	3	2	2	0	13	5	15	0
फजल महमूद	24.1	8	52	5	27.3	11	42	7
मकसूद अहमद	5	1	12	2	3	0	25	0
अमीर इलाही	—	—	—	—	7	1	20	2
जुल्फिकार अहमद	—	—	—	—	5	1	17	0

पाकिस्तान

नजर मोहम्मद अपराजित	124
हनीफ कै. उमरीगर बा. गुलाम	34
वकार हसन पगबाधा बा. अमरनाथ	23
इम्तियाज अहमद पगबाधा बा. अमरनाथ	0
मकसूद अहमद पगबाधा बा. न्यालचन्द	41
कारदार कै. गुलाम बा. न्यालचन्द	16
अनवर हुसैन बा. न्यालचन्द	5
फजल महमूद कै. जोशी बा. गुल मोहम्मद	29
जुल्फिकार अहमद पगबाधा बा. गुलाम	34
महमूद हुसैन बा. गुलाम	4
अमीर इलाही बा. गुल मोहम्मद	4
अतिरिक्त	8
	331

विकटों का पतन :

1–63, 2–118, 3–120, 4–167, 5–194, 6–201, 7–239, 8–302, 9–318, 10–331.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
ग्रमरनाथ	40	18	74	2
उमरीगर	1	0	1	0
न्यालचन्द	64	33	97	3
हीरालाल गायकवाड	37	21	47	0
गुलाम अहमद	45	19	83	3
गुल मोहम्मद	7.3	3	21	2

तृतीय टेस्ट

बम्बई में नवम्बर 13, 14, 15, ग्रौर 16 को खेला गया। टॉस पाकिस्तान ने जीता और भारत ने 10 विकटों से मैच जीता। कप्तान : लाला अमरनाथ (भारत) और ए० एच० कारदार (पाकिस्तान)। विकेट-रक्षक : राजेन्द्रनाथ (भारत) और हनीफ मोहम्मद (पाकिस्तान)। निर्णायक : एम० जी० विजयसारथी और जे० आर० पटेल।

पाकिस्तान

नजर मोहम्मद बा. अमरनाथ	4	कै. उमरीगर बा. दानी	0
हनीफ मोहम्मद बा. मांकड	15	कै. एवजी बा. मांकड	96
कारदार कै. दानी बा. ग्रमरनाथ	20	पगबाधा बा. मांकड	3
इम्तियाज ग्रहमद बा. अमरनाथ	0	कै. अधिकारी बा. गुप्ते	28
मकसूद बा. अमरनाथ	6	कै. हजारे बा. मांकड	9
वजीर मोहम्मद कै. और बा. मांकड	8	पगबाधा बा. मांकड	4
वकार हसन स्ट.राजेन्द्रनाथ बा. मांकड	81	कै. हजारे बा. मांकड	65
फजल महमूद कै. ग्रमरनाथ बा. हजारे	33	स्ट. राजेन्द्रनाथ बा. गुप्ते	0
इसरार अली बा. गुप्ते	10	स्ट. राजेन्द्रनाथ बा. गुप्ते	5
महमूद हुसैन कै. राजेन्द्रनाथ बा. गुप्ते	2	अपराजित	21
ग्रमीर इलाही अपराजित	0	रन आउट	1
ग्रतिरिक्त	7	अतिरिक्त	10
	186		242

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–10, 2–40, 3–40, 4–44, 5–58, 6–60, 7–147, 8–174, 9–182, 10–186.

द्वितीय पारी : 1-1, 2–166, 3–171, 4–183, 5–201, 6–215, 7–215, 8–215, 9–232, 10–242.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
अमरनाथ	21	10	40	4	18	9	25	0
दानी	4	2	10	0	6	3	9	1
हजारे	7	1	21	1	6	2	13	0
मांकड	25	11	52	3	65	31	72	5
गुलाम अहमद	7	1	14	0	21	8	36	0
सुभाष गुप्ते	9	1	42	2	33.2	10	77	3

भारत

मांकड कै. नजर वा. कारदार	41	अपराजित	35
माधव आपटे कै. इम्तियाज वा. हुसैन	30	अपराजित	10
मोदी वा. हुसैन	32		
हजारे अपराजित	146		
उमरीगर बा. हुसैन	102		
अधिकारी अपराजित	31		
अतिरिक्त	5	अतिरिक्त	0
4 विकटो पर पारी समाप्ति की घोषणा	387	बिना विकेट खोये	45

विकटों का पतन

प्रथम पारी : 1–55, 2–103, 3–122, 4–305.

पाकिस्तान की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
महमूद हुसैन	35	5	121	3	6	2	21	0
फजल महमूद	39	10	111	0	7.2	2	22	0
मक्सूद अहमद	7	2	20	0	—	—	—	—
कारदार	14	2	54	1	2	1	2	0
अमीर इलाही	14	0	65	0	—	—	—	—
इसरार अली	3	1	11	0	—	—	—	—

चतुर्थ टेस्ट

मद्रास में नवम्बर 28, 29, 30 और दिसम्बर 1 को खेला गया, टॉस पाकिस्तान ने जीता और मैच में हार-जीत का फैसला न हो सका।

कप्तान : लाला अमरनाथ (भारत) और ए० एच० कारदार (पाकिस्तान)।
विकेट रक्षक : इ०एस० माका (भारत) और इम्तियाज अहमद (पाकिस्तान)।
निर्णायक : पी० के० सिन्हा और एन० डी० नागरवाला।

पाकिस्तान

नजर मोहम्मद रन आउट	13
हनीफ मोहम्मद पगबाधा बा. दिवेचा	22
वकार हसन स्ट. माका बा. मांकड	49
इम्तियाज अहमद कै. माका बा. दिवेचा	6
कारदार बा. रामचन्द	79
मक्सूद कै. एवजी बा. मांकड	1
अनवर हुसैन रन आउट	17
फजल महमूद कै. माका बा. फडकर	30
जुल्फिकार अहमद अपराजित	63
महमूद हुसैन बा. फडकर	0
अमीर इलाही बा. अमरनाथ	47
अतिरिक्त	17
	344

विकटों का पतन :

1–26, 2–46, 3–73, 4–111, 5–115, 6–195, 7–195, 8–240, 9–240, 10–344.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
फडकर	19	3	61	2
दिवेचा	19	4	36	2
रामचन्द	20	3	66	1
अमरनाथ	6.5	3	9	1
मांकड	35	3	113	2
सुभाष गुप्ते	5	2	14	0
हजारे	6	0	28	0

भारत

मांकड बा. फजल	7
माधव आपटे कै. मकसूद बा. कारदार	42
हजारे कै. जुल्फिकार बा. हुसैन	1
गोपीनाथ कै. नजर बा. हुसैन	0
उमरीगर कै. नजर बा. फजल	62
अमरनाथ कै. इम्तियाज बा. कारदार	14
फडकर अपराजित	18
रामचन्द अपराजित	25
अतिरिक्त	6
6 विकटों पर	175

विकटों का पतन :

1–21, 2–28, 3–30, 4–104, 5–132, 6–134.

पाकिस्तान की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
महमूद हुसैन	22	4	70	2
फजल महमूद	27	11	52	2
मकसूद अहमद	4	1	10	0
कारदार	23	7	37	2

पंचम टैस्ट

कलकत्ता में दिसम्बर 12, 13, 14 और 15 को खेला गया, टॉस पाकिस्तान ने जीता और मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका। कप्तान : लाला अमरनाथ (भारत) और ए० एच० कारदार (पाकिस्तान)। विकेट-रक्षक : पी० सेन (भारत) और इम्तियाज अहमद (पाकिस्तान)। निर्णायक : एम० जी० विजयसारथी और जे० आर० पटेल ।

पाकिस्तान

नजर मोहम्मद कै. अमरनाथ बा. गुलाम	55	पगयाधा बा. मांकड	47
हनीफ कै. रामचन्द बा. फडकर	56	बा. रामचन्द	12
वकार हसन पगयाधा बा. फडकर	29	बा. रामचन्द	97
इम्तियाज कै. गायकवाड बा. फडकर	57	बा. मांकड	13
कारदार बा. फडकर	7	कै. रामचन्द बा. गुलाम	1
मकसूद कै. मांजरेकर बा. अमरनाथ	17	कै. शोधन बा. गुलाम	8
अनवर हुसैन पगयाधा बा. फडकर	9	कै. मांकड बा. गुलाम	3
फजल कै. मांकड बा. रामचन्द	5	अपराजित	28
जुल्फिकार अहमद अपराजित	6	अपराजित	5
महमूद हुसैन स्ट. सेन बा. रामचन्द	5		
अमीर इलाही कै. सेन बा. रामचन्द	4		
अतिरिक्त	7	अतिरिक्त	22
	257	7विकटों पर पारी समाप्ति की घोषणा	236

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–94, 2–128, 3–169, 4–185, 5–215, 6–233, 7–240, 8–242, 9–253, 10–257.

द्वितीय पारी : 1–18, 2–96, 3–126, 4–131, 5–141, 6–152, 7–216.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
फडकर	32	10	72	5	21	8	30	0
रामचन्द	13	6	20	3	16	3	43	2
अमरनाथ	21	7	31	1	3	2	1	0
मांकड	28	7	78	0	41	18	68	2
गुलाम अहमद	22	6	49	1	33	11	56	3
शोधन	—	—	—	—	2	1	6	0
रॉय	—	—	—	—	2	1	4	0
मांजरेकर	—	—	—	—	2	0	6	0

भारत

रॉय कै. जुल्फिकार वा. अमीर इलाही	29	अपराजित	8
डी. के. गायकवाड वा. हुसैन	21	अपराजित	20
मॉकड के. पगवाधा बा. फजल	35		
मांजरेकर कै. फजल बा. हुसैन	29		
उमरीगर कै. कारदार बा. फजल	22		
फडकर कै. इम्तियाज बा. कारदार	57		
अमरनाथ कै. मकसूद बा. फजल	11		
शोधन कै. इम्तियाज बा. फजल	110		
रामचन्द वा. हुसैन	25		
सेन वा. अनवर	13		
गुलाम अहमद अपराजित	20		
अतिरिक्त	25	अतिरिक्त	—
	397	बिना विकेट खोये	28

विकटों का पतन :

1–37, 2–87, 3–99, 4–135, 5–157, 6–179,
7–265, 8–319, 9–357, 10–397.

पाकिस्तान की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
महमूद हुसैन	46	11	114	3	—	—	—	—
फजल महमूद	64	19	141	4	—	—	—	—
मकसूद अहमद	8	2	20	0	—	—	—	—
अमीर इलाही	6	0	29	1	—	—	—	—
कारदार	15	3	43	1	—	—	—	—
अनवर हुसैन	5	1	25	1	1	0	4	0
नजर मोहम्मद	—	—	—	—	2	1	4	0
हनीफ मोहम्मद	—	—	—	—	2	0	10	0
वकार हसन	—	—	—	—	1	0	10	0

भारत की टीम वेस्टइंडीज में, 1953

वेस्टइंडीज का भ्रमण करने वाली भारतीय टीम का नेतृत्व वी०एस० हजारे ने किया। वेस्टइंडीज में क्रिकेट का यह स्वर्ण-युग था। वीक्स, वॉलकॉट और वॉरेल का शक्तिशाली संयोग था। चतुर कप्तान स्टालमेयर की बल्लेबाजी किसी भी टीम के लिये उपयोगी थी। रे, पेरुडिये बल्लेबाजी से, वेलेंटाइन और रामादीन गेंदबाजी से किसी भी टीम में स्थान पा सकते थे। उमरीगर, माधव आपटे, रॉय और मांजरेकर की बल्लेबाजी और गुप्ते की गेंदबाजी के द्वारा अतिथियों का प्रदर्शन बहुत सुन्दर रहा। भारतीय टीम की सबसे अधिक शक्ति उसका उत्कृष्ट क्षेत्र-रक्षण था।

टीम के निम्नलिखित खिलाड़ी थे :

1. वी० एस० हजारे (कप्तान)
2. वीनू मांकड (उप कप्तान)
3. डी० जी० फड़कर
4. पी० आर० उमरीगर
5. जी० एस० रामचन्द
6. वी० एल० मांजरेकर
7. सुभाष गुप्ते
8. पंकज रॉय
9. माधव आपटे
10. डी० के० गायकवाड
11. डी० एच० शोधन
12. पी० जी० जोशी
13. एन० कन्हैयाराम
14. सी० वी० गड़करी
15. जे० एम० घोरपडे
16. ई० एस० माका

सी० रामस्वामी (प्रबन्धक)

टैस्ट मैचों के अलावा खेले गये मैचों का संक्षेप मे विवरण इस प्रकार है :

फारनेंडो में : जनवरी 10 और 12 को

भारत : 153 (मांकड 73) और 1 विकेट पर 66 और पारी समाप्ति

की घोषणा । ईस्टइंडीज एकादश : 62 (गुप्ते ने 29 रन देकर 6 विकटें लीं) और 3 विकटों पर 85 रन । मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका ।

पोर्ट-ऑफ-स्पेन में : जनवरी 13, 14, 15, 16 और 17 को

भारत : 322 (हजारे 153*) और बिना विकेट खोये 81 रन। ट्रिनीडाड : 280 (स्टालमेयर 64, टॉग 58) । मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका ।

ब्रिजटाउन में : जनवरी 31, फरवरी 2, 3, 4 और 5 को

बारबेडोस : 7 विकटों पर 606 और पारी समाप्ति की घोषणा (वीक्स 253, एटकिन्सन 81, विलियम्स 60, वॉलकॉट 51, गोडार्ड 50) । भारत : 209 (उमरीगर 63) और 9 विकटों पर 445 (मांजरेकर 154, उमरीगर 88) । मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका ।

जार्जटाउन में : मार्च 1 और 2 को

भारत : 5 विकटों पर 160 और पारी समाप्ति की घोषणा (रामचन्द्र 68) । स्थानीय भारतीय एकादश : 117 (गुप्ते ने 48 रन देकर 6 विकटें लीं) । भारत 43 रनों से विजयी ।

जार्जटाउन में : मार्च 4, 5, 6, 7 और 8 को

ब्रिटिश गियाना : 290 (वेट 79, ट्रिम 78, गुप्ते ने 131 रन देकर 7 विकटें लीं) और 1 विकेट पर 92 (पेरूडियो 54*) । भारत : 398 (मांजरेकर 169) । मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका ।

किंग्सटन में : मार्च 20, 21 और 23 को

जमैका : 194 (सोनिटो 74, गुप्ते ने 88 रन देकर 5 विकटें लीं) और 89 (गुप्ते ने 43 रन देकर 7 विकटें लीं) । भारत : 139 (गुडरिज ने 28 रन देकर 6 विकटें लीं) और 4 विकटों पर 147 रन। भारत 6 विकटों से विजयी ।

टैस्ट मैच

उमरीगर ने अगले दिन तीव्र गति से बल्लेबाजी की। रामादीन के एक ही ओवर में उन्होंने चार चौके मारने के बाद एक छक्का भी जमा दिया। गोमेज की गेंद पर भी छक्का लगा। उनके 130 रनों के योगदान से और फड़कर, गायकवाड़ और शोधन की उपयोगी पारियों के कारण भारत की कुल रन संख्या 417 तक पहुँच गई।

वेस्टइंडीज की बल्लेबाजी में दो खिलाड़ियों का खेल अग्रगण्य रहा। वीक्स ने 426 मिनट बल्लेबाजी करके 19 चौकों की सहायता से 207 रन बनाये। अपने प्रथम टैस्ट मैच में पेरूडियै ने शतक पूरा किया और पाचवें विकेट की साझेदारी में वीक्स के साथ 209 रन जोड़े। जब तक यह दो बल्लेबाज खेलते रहे भारतीय गेंदबाजी की दुर्गति होती रही लेकिन इनके आउट होने के बाद गुप्ते ने अन्तिम पाँच विकटों को 32 गेंदों में, 12 रन देकर, उखाड़ दिया। पूरी पारी में उन्होंने 7 विकट, 162 रन देकर, प्राप्त किये। वेस्टइंडीज की कुल रन संख्या 438 रही।

द्वितीय पारी में भारत 4 विकेट खोकर 106 रन बना सका। उमरीगर और फडकर की पंचम विकेट की 131 रन की साझेदारी ने दशा में कुछ सुधार किया और भारत का जब अन्तिम विकेट गिरा तो कुल रन संख्या 294 थी। वेस्टइंडीज को 170 मिनट में 274 रन बनाने थे। रे (63) और स्टालमेयर (76) बेधड़क होकर खेले और खेल की समाप्ति पर कुल रन संख्या को 142 तक पहुँचा दिया।

ब्रिजटाउन में खेले गये द्वितीय टैस्ट मैच में भारतीय गेंदबाजों का खेल कुछ अच्छा रहा। उन्होंने अपनी प्रतिद्वन्द्वी टीम को दोनों पारियों मे 296 और 228 रनों पर आउट कर दिया। भारतीय बल्लेबाजी द्वितीय पारी मे बेजान रही। अपनी कुल रन संख्या साधारण होते हुए भी वेस्टइंडीज ने 142 रनों से मैच जीत लिया।

टॉस हार कर भी भारत ने वेस्टइंडीज के 6 बल्लेबाजों को 177 रनों पर लौटा कर अपना पलड़ा भारी कर लिया। वॉलकॉट ने इस कठिन परिस्थिति में दृढ़ता से बल्लेबाजी की लेकिन जब उनके शतक में दो रन बाकी थे तब फडकर ने उनकी पारी का अन्त कर दिया। वेस्टइंडीज की कुल रन संख्या 296 रही। भारत ने भी पारी सुन्दर ढंग से प्रारम्भ नही की लेकिन जब केवल दो विकटों को खोकर 156 रन बन गए तो विशाल रन संख्या की आशा बनी। आपटे (64), हजारे (63) और उमरीगर (56) ने शानदार बल्लेबाजी की लेकिन दूसरे बल्लेबाजों की घटिया बल्लेबाजी के कारण पारी 253 रनों पर समाप्त हो गई।

फडकर ने अपनी घातक गेंदबाजी से भारत का पलड़ा फिर भारी कर दिया। उन्होंने पेरुडिये को शून्य पर और वॉरेल को सात रनों पर निकाल बाहर किया और 64 रन देकर पांच विकेट प्राप्त किये। स्टॉलमेयर (54), गोमेज (35), वॉलकॉट (34) और क्रिश्चियानी (33) जम कर खेले लेकिन पारी 228 रनों पर ही समाप्त हो गई।

विजय के लिये 272 रन बनाना भारत के लिये कठिन कार्य न था। रॉय, रामचन्द और मांजरेकर की बल्लेबाजी ने विजय की आशा बँधाई। रामदीन ने पाँच विकटें 26 रनों पर गिरा दीं। गायकवाड़ को छोड़कर, जो घायल होने के कारण बल्लेबाजी नहीं कर सका, भारत के दस बल्लेबाज केवल 129 रन बना सके और उनके प्रतिद्वन्द्वी ने 142 रनों से मैच जीत लिया।

पोर्ट-ऑफ-स्पेन में खेले गये तृतीय टैस्ट मैच में भी भारत ने अपनी पारी उत्तम ढंग से प्रारम्भ नहीं की लेकिन रॉय और रामचन्द ने द्वितीय विकेट पर 81 रन जोड़ कर प्रतिद्वन्द्वी की गेंदबाजी को निस्तेज कर दिया। फिर भी आधे खिलाड़ी 136 रनों पर आउट हो गये। उमरीगर (61) और घोरपडे ने भारत को सर्वनाश से बचाया और पारी 279 रनों पर समाप्त हुई।

वीक्स ने 338 मिनट में 315 रनों में से 161 रन बनाकर भारतीय गेंदबाजी पर अपना प्रभुत्व दिखाया। द्वितीय पारी में भारत ने रॉय, रामचन्द और मांजरेकर को केवल 10 रनों पर खो दिया। आपटे की श्रेष्ठ बल्लेबाजी ने न केवल उन्हें टैस्ट क्रिकेट में प्रथम शतक दिया बल्कि भारत की पारी को निष्फल नहीं होने दिया। उमरीगर (67) के साथ उन्होंने चौथे विकेट की साझेदारी में 135 रन जोड़े और मॉकड के साथ सातवें विकेट की साझेदारी में 153 रन जोड़े। मॉकड के शतक में जब चार रन बाकी थे तो वे रन आउट हो गये और उसी समय भारत की पारी समाप्त करने की घोषणा कर दी गई जब कुल रन संख्या 362 थी। बचे हुए समय में वेस्टइंडीज ने दो विकेट खोकर 192 रन बना लिये। स्टॉलमेयर की बल्लेबाजी बड़ी शानदार रही और वे 104 रन बनाकर अपराजित रहे।

चतुर्थ टैस्ट मैच जार्जटाउन में खेला गया जहाँ वर्षा ने विघ्न डाला और खेल ग्यारह घंटे कम खेला गया। भारत के आधे खिलाड़ी केवल 64 रन ही बना सके लेकिन मॉकड (66), गडकरी (50) और फडकर (30) की सफल बल्लेबाजी ने टीम की कुल रन संख्या को 262 तक पहुँचा दिया।

वेस्टइंडीज ने भी अपनी पारी उत्तम ढंग से प्रारम्भ नहीं की लेकिन वॉरेल (56), वीक्स (86) और वॉलकॉट (125) ने रनों की कमी को

पूरा कर दिया और उनकी टीम की कुल रन संख्या भारत से 102 रन अधिक रही। इस कमी को भारत ने तीन विकेट खोकर पूरा कर दिया। खेल की पूर्ण समाप्ति के समय उमरीगर (40) और फडकर (20) बल्लेबाजी कर रहे थे और भारत की कुल रन संख्या 5 विकटें खोकर 190 थी।

किंग्सटन में खेले गये पांचवें टैस्ट मैच में हजारे ने टॉस जीता और भारत ने बल्लेबाजी प्रारम्भ की और केवल पाँच विकटें खोकर रन संख्या को 295 पर पहुँचा दिया। रॉय (८5) और उमरीगर (117) की बल्लेबाजी से भारत की स्थिति दृढ़ बन सकी। लेकिन अन्तिम चार विकटों के 17 रनों पर गिर जाने से पारी 312 रनों पर ही समाप्त हो गई।

वीक्स (109), वॉलकॉट (118) और वॉरेल (237) ने भारतीय गेंदबाजी की दुर्गति की और एक समय उनकी टीम के केवल तीन विकटों पर 543 रन थे। इन तीनों खिलाड़ियों के निकल जाने के बाद मॉकड और गुप्ते ने बचे हुए विकटों को तुरन्त ही उखाड़ दिया और 576 रनों पर पारी समाप्त हो गई।

भारत को 264 रनों की कमी को पूरा करना था। कार्य कठिन था लेकिन रॉय और आपटे ने प्रथम विकेट की साझेदारी में 80 रन बना कर आशा बंधाई। मांजरेकर ने आपटे का स्थान लिया और दोनों बल्लेबाजों ने गेंदबाजी पर अपना प्रभुत्व जमा लिया। इस जोड़े ने रन संख्या में 237 रनों की वृद्धि की। मांजरेकर ने 118 और राय ने 150 रन बनाये। रामचन्द और घोरपडे की बल्लेबाजी ने भी भारत को हार से बचाने मे अपना योग दिया। जब भारत की पारी 444 पर समाप्त हुई तो 140 मिनट का खेल बाकी था और वेस्टइंडीज को विजय के लिये 180 रनों की आवश्यकता थी। प्रथम दो विकटें 15 रनों पर गिर गई, वॉरेल और वीक्स भी जब तुरन्त आउट हो गये तो वेस्टइडीज ने रनो को पूरा करने का प्रयत्न छोड़ दिया और मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

रनो का सविस्तार विवरण नीचे दिया गया है :

प्रथम टैस्ट

पोर्ट-आफ-स्पेन मे जनवरी 21, 22, 23, 24, 27 और 28, 1953 को खेला गया, टॉस भारत ने जीता और मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका। कप्तान : जे० बी० स्टालमेयर (वेस्टइंडीज) और वी० एस० हजारे (भारत)। विकेट रक्षक : ए० पी० बिन्स (वेस्टइंडीज) और पी० जी० जोशी (भारत)। निर्णायक : सी० जॉन और ई० ली कौ।

भारत

मांकड	पगवाधा बा० किंग	2	बा० रामादीन	10
माधव आपटे	कै० विन्स बा० स्टालमेयर	64	बा० वेलेंटाइन	52
रामचन्द	कै० स्टालमेयर बा० रामादीन	61	कै० बिन्स बा० वॉलकॉट	17
हजारे	कै० वॉरेल बा० वेलेंटाइन	29	कै० और बा० वॉलकॉट	0
उमरीगर	कै० विन्स बा० वेलेंटाइन	130	बा० वॉरेल	69
फडकर	बा० गोमेज	30	कै० वॉलकॉट बा० वारेल	65
गायकवाड	कै० वॉरेल बा० स्टालमेयर	43	पगवाधा बा० किंग	24
शोधन	कै० वॉरेल बा० गोमेज	45	बा० रामादीन	11
गड़करी	कै० वॉलकॉट बा० गोमेज	7	अपराजित	11
जोशी	कै० विन्स बा० किंग	3	रन आउट	32
सुभाष गुप्ते	अपराजित	0	कै० वॉलकाट बा० रामादीन	1
	अतिरिक्त	3	अतिरिक्त	2
		417		294

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1—16, 2—110, 3—157, 4—158, 5—210, 6—328, 7—379, 8—412, 9—417, 10—417.

द्वितीय पारी : 1—55, 2—90, 3—90, 4—106, 5—237, 6—238, 7—257, 8—273, 9—291, 10—294.

वेस्टइ डोज की गेंदबाजी

	ओ०	मे०ओ०	रन	विकेट	ओ०	मे०ओ०	रन	विकेट
किंग	41·1	10	75	2	24	12	35	1
गोमेज	42	12	84	3	18	5	51	0
रामादीन	37	13	107	1			58	3
वेलेंटाइन	56	28	92	2			47	1
स्टालमेयर	16		6	2	1		7	0
वॉरेल	—				20		2	
वॉलकॉट	—				16			
वीक्स	—				2			

वेस्टइंडीज

रे बा० रामचन्द	1	अपराजित	63
स्टालमेयर कै० फडकर बा० गुप्ते	33	अपराजित	76
वॉरेल बा० गुप्ते	18		
वीक्स कै० गड़करी बा० गुप्ते	207		
वॉलकॉट कै० रामचन्द बा० मांकड	47		
पेरूडिये स्ट० जोशी बा० गुप्ते	115		
गोमेज कै० मांकड बा० गुप्ते	0		
बिन्स रन आउट	2		
किंग पगबाधा बा० गुप्ते	0		
रामादीन अपराजित	5		
वेलेंटाइन स्ट० जोशी बा० गुप्ते	0		
अतिरिक्त	10	अतिरिक्त	3
	438	बिना विकेट खोये	142

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–3, 2–36, 3–89, 4–190, 5–409, 6–409, 7–413, 8–419, 9–438, 10–438.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
फडकर	13	4	38	0	9	4	12	0
रामचन्द	22	7	56	1	13	2	31	0
सुभाष गुप्ते	66	15	162	7	2	1	2	0
मांकड	63	16	129	1	12	1	32	0
हजारे	12	1	30	0	—	—	—	—
शोधन	1	0	1	0	7	2	19	0
गड़करी	5	0	12	0	9	3	25	0
उमरीगर	—	—	—	—	2	0	14	0
गायकवाड	—	—	—	—	1	0	4	0

द्वितीय टैस्ट

ब्रिजटाउन में फरवरी 7, 9, 10, 11, 12 और 13 को खेला गया, टॉस वेस्टइंडीज ने जीता और मैच भी 142 रनों से जीता। कप्तान : जे० बी० स्टालमेयर (वेस्टइंडीज) और वी० एस० हजारे (भारत)। विकेट रक्षक : आर० लेगाल (वेस्टइंडीज) और पी० जी० जोशी (भारत)। निर्णायक : एच० जोरडन और एफ० वॉलकॉट।

वेस्टइंडीज

स्टॉलमेयर कैं० जोशी बा० हजारे	43	पगवाधा बा० फड़कर		0
स्टॉलमेयर कैं० मांकड बा० गुप्ते	32	कैं० गुप्ते बा० मांकड		54
वॉरेल पगवाधा बा० मांकड	24	बा० फड़कर		7
वीक्स कैं० जोशी बा० हजारे	47	बा० मांकड		15
वॉलकॉट पगवाधा बा० फड़कर	98	बा० फड़कर		34
क्रिश्चियानी स्ट० जोशी बा० गुप्ते	4	स्ट० जोशी बा० गुप्ते		33
गोमेज कैं० गडकरी बा० गुप्ते	0	पगवाधा बा० फड़कर		35
लेगाल कैं० रामचन्द बा० मांकड	23	बा० गुप्ते		1
किंग बा० मांकड	0	कैं० मांजरेकर बा० रामचन्द		19
रामादीन अपराजित	16	बा० फड़कर		12
वेलेंटाइन बा० फड़कर	6	अपराजित		0
अतिरिक्त	3		अतिरिक्त	15
	296			228

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–52, 2–81, 3–123, 4–168, 5–173, 6–177, 7–222, 8–222, 9–280, 10–296.

द्वितीय पारी : 1–0, 2–25, 3–47, 4–105, 5–135, 6–165, 7–190, 8–205, 9–228, 10–228.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
फड़कर	11·4	2	24	2	29·3	4	64	5
रामचन्द	9	1	32	0	4	1	9	1
गुलाम गुप्ते	41	10	99	3	36	12	82	2
मांकड	46	15	125	3	19	3	54	2
हजारे	9	2	13	2	2	1	1	0

भारत

रॉय कै० वॉरेल बा० किंग	1	कै० लेगाल बा० वेलेंटाइन	22
माधव आपटे कै० वॉरेल बा० वेलेंटाइन	64	बा० किंग	9
मांजरेकर पगबाधा बा० रामादीन	25	अपराजित	32
हजारे कै० विक्स बा० किंग	63	बा० रामादीन	0
उमरीगर कै० क्रिश्चियानी बा. वेलेंटाइन	56	बा० रामादीन	6
रामचन्द बा० रामादीन	17	बा० रामादीन	34
गायकवाड कै० और बा० वेलेंटाइन	0	अनुपस्थित	0
फड़कर बा० वॉरेल	17	कै० वेलेंटाइन बा० रामादीन	8
जोशी कै० वॉरेल बा० वेलेंटाइन	0	कै० वॉरेल बा० वेलेंटाइन	0
सुभाष गुप्ते रन आउट	2	पगबाधा बा० रामादीन	5
मांकड़ अपराजित	0	बा० गोमेज	3
अतिरिक्त	8	अतिरिक्त	10
	253		129

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–6, 2–44, 3–156, 4–164, 5–204, 6–205, 7–242, 8–243, 9–250, 10–253.

द्वितीय पारी : 1–9, 2–13, 3–70, 4–72, 5–89, 6–89, 7–107, 8–110, 9–129, 10–129.

वेस्टइंडीज की गेंदबाजी

	ओ०	मे० ओ०	रन	विकेट	ओ०	मे०ओ०	रन	विकेट
किंग	28	7	66	2	9	3	18	1
गोमेज	17	9	27	0	5	2	9	1
रामादीन	30	13	59	2	24·5	11	26	5
वॉरेल	13	4	25	1	6	2	13	0
वेलेंटाइन	41	21	58	4	35	16	53	2
स्टालमेयर	5	2	10	0	—	—	—	—

तृतीय टैस्ट मैच

पोर्ट-आफ-स्पेन में फरवरी 19, 20, 21, 23, 24 और 25, 1953 को खेला गया, टॉस भारत ने जीता और मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका। कप्तान : जे० बी० स्टालमेयर (वेस्टइंडीज) और वी० एस० हजारे (भारत)। विकेट रक्षक : आर० लेगाल (वेस्टइंडीज) और ई० एस० माका (भारत)। निर्णायक : सी० जॉन और ई० ली को।

भारत

बल्लेबाज (प्रथम पारी)	रन	द्वितीय पारी	रन
रॉय कै० वीक्स बो० वॉरेल	49	कै० एवजी बो० गोमेज	0
माधव आपटे बो० गोमेज	0	अपराजित	163
रामचन्द कै० लेगाल बो० किंग	62	कै० वीक्स बो० किंग	1
हजारे कै० रे बो० वॉरेल	11	पगबाधा बो० वॉरेल	24
उमरीगर कै० गोमेज बो० किंग	61	स्ट० लेगाल बो० वेलेंटाइन	67
मांजरेकर कै० वीक्स बो० किंग	3	कै० लेगाल बो० वॉरेल	2
मांकड पगबाधा बो० किंग	87	रन आउट	96
फड़कर कै० पेरूडियं बो० किंग	13		
घोरपड़े कै० वॉलकॉट बो० वेलेंटाइन	35	रन आउट	0
माका (घायल होने से निवृत्त)	2		
सुभाष गुप्ते अपराजित	17		
अतिरिक्त	9	अतिरिक्त	9
	279	सात विकटों पर पारी समाप्ति की घोषणा	362

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–6, 2–87, 3–117, 4–124, 5–136, 6–177, 7–211, 8–225, 9–279, 10–279.

द्वितीय पारी : 1–1, 2–4, 3–10, 4–145, 5–209, 6–209, 7–362.

वेस्टइंडीज की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
किंग	31	9	74	5	22	9	29	1
गोमेज	16	5	26	1	46·1	20	42	1
वॉरेल	26	9	47	2	34	7	62	2
वेलेंटाइन	37·2	18	62	1	50	17	105	1
रामादीन	21	7	61	0	28	13	47	0
स्टालमेयर	—	—	—	—	15	3	54	0
वॉलकॉट	—	—	—	—	7	2	13	0
वीक्स	—	—	—	—	1	0	1	0

वेस्टइंडीज

रे कैं० एवजी बा० गुप्ते	15		
पेरुडियें बा० रामचन्द	8	कैं० घोरपडे बा० गुप्ते	29
वॉलकॉट स्ट० मांजरेकर बा० गुप्ते	30		
वीक्स रन आउट	161	अपराजित	55
वॉरेल बा० गुप्ते	31	कैं० मांजरेकर बा० रामचन्द	2
गोमेज कैं० हजारे बा० फडकर	15		
लेगाल रन आउट	17		
स्टालमेयर अपराजित	20	अपराजित	104
किंग कैं० एवजी बा० गुप्ते	12		
रामादीन कैं० मांजरेकर बा० फडकर	1		
वेलेंटाइन कैं० घोरपडे बा० गुप्ते	0		
अतिरिक्त	5	अतिरिक्त	2
	315	दो विकटो पर	192

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–12, 2–41, 3–82, 4–178, 5–215, 6–281, 7–286, 8–299, 9–304, 10–315.
द्वितीय पारी : 1–47, 2–65.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
फडकर	43	14	85	2	7	5	7	0
रामचन्द	15	3	48	1	20	3	61	1
सुभाष गुप्ते	48	14	107	5	7	0	19	1
मांकड	33	16	47	0	—	—	—	—
हजारे	2	0	6	0	2	0	12	0
घोरपडे	5	0	17	0	11	0	53	0
रॉय	—	—	—	—	6	0	35	0
आपटे	—	—	—	—	1	0	3	0

चतुर्थ टेस्ट

जार्ज टाउन में मार्च 11, 12, 13, 14, 16 और 17 को खेला गया, टॉस भारत ने जीता और मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।
कप्तान : जे० बी० स्टालमेयर (वेस्टइंडीज) और वी० एस० हजारे (भारत)।
विकेट रक्षक : आर० लेगाल (वेस्टइंडीज) और पी० जी० जोशी (भारत)।
निर्णायक : ए० बी० रोलोक्स और ई० एस० गिलेटी।

भारत

रॉय पगबाधा बा० वेलेंटाइन	28	कै० वॉरेल बा० वेलेंटाइन	48
माधव आपटे पगबाधा बा० रामादीन	30	हिट विकेट बा० स्टालमेयर	30
रामचन्द रन आउट	0	बा० वेलेंटाइन	2
मांजरेकर रन आउट	0	बा० वेलेंटाइन	31
उमरीगर कै० वॉलकॉट बा० वेलेंटाइन	1	अपराजित	40
हजारे कै० वॉलकॉट बा० वेलेंटाइन	30	पगबाधा बा० किंग	9
मांकड कै० लेगाल बा० वेलेंटाइन	66	अपराजित	20
फडकर कै० लेगाल बा० वेलेंटाइन	30		
गडकरी अपराजित	50		
जोशी पगबाधा बा० रामादीन	7		
सुभाष गुप्ते रन आउट	12		
अतिरिक्त	8	अतिरिक्त	10
	262		190

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–47, 2–47, 3–56, 4–62, 5–64, 6–120, 7–183, 8–211, 9–236, 10–262.

द्वितीय पारी : 1–66, 2–72, 3–91, 4–117, 5–161.

वेस्टइण्डीज की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
किंग	6	3	4	0	17	6	32	1
मिलर	16	8	28	0	—	—	—	—
वेलेंटाइन	53·5	20	127	5	34	15	71	3
रामादीन	41	18	74	2	26	14	38	0
स्टालमेयर	1	0	1	0	8	2	15	1
वॉलकॉट	3	0	8	0	—	—	—	—
वॉरेल	4	1	12	0	13	2	24	0

वेस्टइण्डीज

पेल्हियर बा० रामचन्द	2
स्टालमेयर पगबाधा बा० मांकड	13
वॉरेल बा० मांकड	56
वीक्स पगबाधा बा० रामचन्द	86
वॉलकॉट पगबाधा बा० हजारे	125
वेट बा० मांकड	21
लेगाल पगबाधा बा० गुप्ते	8
मिलर कै० आपटे बा० गुप्ते	23
किंग बा० गुप्ते	2
रामादीन अपराजित	6
वेलेंटाइन कै० हजारे बा० गुप्ते	13
अतिरिक्त	9
	364

विकटों का पतन

1–2, 2–44, 3-101, 4–231, 5–302,
6–311, 7–343, 8–345, 9–345, 10–364.

भारत की गेंदबाजी

	ओ०	मे० ओ०	रन	विकेट
रामचन्द	17	4	48	2
हजारे	12	3	22	1
गडकरी	3	1	8	0
सुभाष गुप्ते	56·2	19	122	4
मांकड	68	23	155	3

पंचम टैस्ट

किंग्सटन में मार्च 28, 30, 31, अप्रैल 2 और 4 को खेला गया। टॉस भारत ने जीता और मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका। कप्तान : जे० बी० स्टालमेयर (वेस्टइंडीज) और वी० एस० हजारे (भारत)। विकेट-रक्षक : आर० लेगाल (वेस्टइंडीज) और वी० एल० मांजरेकर (भारत)। निर्णायक : टी० ए० ऐवर्ट और आर० सी० बर्क।

वेस्टइंडीज

पेरूडिये बा. गुप्ते	58	रन आउट	2
स्टालमेयर बा. मांकड	13	बा. रामचन्द	9
वॉरेल कै. हजारे बा. मांकड	237	कै. आपटे बा. मांकड	23
वीक्स कै. गड़करी बा. गुप्ते	109	कै. घोरपडे बा. रामचन्द	36
वॉलकॉट कै. गड़करी बा. मांकड	118	अपराजित	5
क्रिश्चियानी पगबाधा बा. मांकड	4	अपराजित	1
गोमेज कै. हजारे बा. मांकड	12		
लेगाल कै. एवजी बा. गुप्ते	1		
किंग स्ट. मांजरेकर बा. गुप्ते	0		
स्कॉट कै. ओर बा. गुप्ते	5		
वेलेंटाइन अपराजित	4		
अतिरिक्त	15	अतिरिक्त	16
	577	4 विकटों पर	92

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–36, 2–133, 3–330, 4–543, 5–554, 6–554, 7–567, 8–567, 9–569, 10–576.

द्वितीय पारी : 1–11, 2–15, 3–82, 4–91.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
रामचन्द	37	9	84	0	15	6	33	2
हजारे	17	2	47	0	2	1	1	0
गुप्ते	65·1	14	180	5	8	2	16	0
मांकड	82	17	228	5	22	11	26	1
घोरपडे	6	1	22	0	—	—	—	—

भारत

रॉय कै. लेगाल बा. किंग	85	पगबाधा बा. वेलेंटाइन	150
माधव आपटे रन आउट	15	पगबाधा बा. वेलेंटाइन	33
रामचन्द पगबाधा बा. वेलेंटाइन	22	कै. पेरूडिये बा. वेलेंटाइन	33
हजारे कै. वेलेंटाइन बा. किंग	16	कै. वीक्स बा. वेलेंटाइन	12
उमरीगर बा. वेलेंटाइन	117	कै. वीक्स बा. किंग	13
मांजरेकर कै. वीक्स बा. वेलेंटाइन	43	कै. वीक्स बा. गोमेज	118
मांकड पगबाधा बा. वेलेंटाइन	6	कै. वीक्स बा. गोमेज	9
गडकरी कै. लेगाल बा. वेलेंटाइन	0	कै. स्टालमेयर बा. गोमेज	0
घोरपडे कै. लेगाल बा. गोमेज	4	बा. किंग	24
सुभाष गुप्ते अपराजित	0	बा. गोमेज	8
शोधन अनुपस्थित अस्वस्थ		अपराजित	15
अतिरिक्त	5	अतिरिक्त	29
	312		444

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–30, 2–57, 3–80, 4–230, 5–277, 6–295, 7–312, 8–312, 9–312.

द्वितीय पारी : 1–80, 2–317, 3–327, 4–346, 5–360, 6–360, 7–368, 8–408, 9–431, 10–444.

वेस्टइंडीज की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
किंग	34	13	64	2	26	6	83	2
गोमेज	28	13	40	1	47	24	72	4
वरिल	16	6	31	0	6	2	17	0
स्कॉट	31	7	88	0	13	2	52	0
वेलेंटाइन	27·5	9	64	5	67	22	149	4
स्टालमेयर	4	0	20	0	11	3	28	0
वॉलकॉट	1	0	1	0	8	2	14	0

टेस्ट मैचों के अलावा खेले गये मैचों का संक्षेप में विवरण इस प्रकार है :

विरुद्ध पूर्व पाकिस्तान : चटगांव में, दिसम्बर 27, 28 और 29 को

पूर्व पाकिस्तान : 98 (गुप्ते ने 19 रन देकर 4 विकटें ली) और 87 (गुप्ते ने 37 रन देकर 6 विकटें ली)। भारत : 7 विकटों पर 200 रन और पारी समाप्ति की घोषणा (मंत्री 51)। भारत एक पारी और 15 रनों से विजयी।

विरुद्ध कराची क्रिकेट एसोसियेशन : कराची में, जनवरी 7, 8, और 9 को

भारत 4 विकटों पर 404 और पारी समाप्ति की घोषणा (मांकड 130, पंजाबी 111, मांजरेकर 103) और बिना विकेट खोये 31 रन। कराची क्रिकेट एसोसियेशन : 8 विकटों पर 268 और पारी समाप्ति की घोषणा (नजीर मोहम्मद 96, अलीमुद्दीन 55)। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

विरुद्ध सिंध : हैदराबाद में, जनवरी 11, 12 और 13 को

सिंध : 97 (मथाईस 50*) और 116 (गुप्ते ने 39 रन देकर 4 विकटें ली)। भारत : 283 (उमरीगर 95)। भारत एक पारी और 70 रनों से विजयी।

विरुद्ध मध्य क्षेत्र : मोंटगुमरी में, जनवरी 21, 22 और 23 को

मध्य क्षेत्र : 123 (नयार हुसैन 60*, गुप्ते ने 51 रन देकर 6 विकटें ली) और 304 (शकूर अहमद 104, शुजाउद्दीन 62, मांकड ने 56 रन देकर 4 विकटें ली, गुप्ते ने 110 रन देकर 4 विकटें ली)। भारत : 7 विकटो पर 307 और पारी समाप्ति की घोषणा (मांजरेकर 100, मांकड 61, गोपीनाथ 60) और 4 विकटो पर 110 रन। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

विरुद्ध विश्वविद्यालय : लाहौर में, जनवरी 25, 26 और 27 को

विश्वविद्यालय : 69 (पटेल ने 22 रन देकर 4 विकटें ली) और 85 (पटेल ने 25 रन देकर 8 विकटें ली)। भारत : 164 (उमरीगर 58, अजिज ने 12 रन देकर 4 विकटें ली)। भारत एक पारी और 10 रनों से विजयी।

[illegible] क्रिकेट ऐसोसियेशन : स्यालकोट में, फरवरी 4, 5

422 और पारी समाप्ति की घोषणा (मांजरेकर . 56, मंत्री 50)। पंजाब : 153 (पटेल ने

भारत की टीम पाकिस्तान में, 1954-55

भारत की टीम के प्रथम पाकिस्तानी भ्रमण में पाँचों टैस्ट बिना हार-जीत का फैसला हुए समाप्त हो गये। इसके पहले वाली मुठभेड़ में भारत ने एक के मुकाबले दो टैस्ट मैचों में पाकिस्तान को हरा दिया था और इस भ्रमण मे भी भारत को विजय की आशा थी। पाकिस्तान ने तब तक खेल में काफी उन्नति करली थी और साथ ही हर संकट के समय दोनों टीमों ने निषेधार्थक युक्ति अपनाई। परिणामस्वरूप कोई भी टीम एक भी मैच में विजय प्राप्त नही कर सकी। चौदह मैच खेले गए जिनमे अतिथि पाँच मैचों में विजयी रहे और शेष मैचों मे हार-जीत का फैसला नही हो सका।

टीम मे निम्नलिखित खिलाड़ी थे :

1. वीनू मांकड (कप्तान)
2. पी. आर. उमरीगर (उप-कप्तान)
3. डी. जी. फड़कर
4. गुलाम अहमद
5. एम. के. मंत्री
6. प्रकाश भंडारी
7. वी. एल. मांजरेकर
8. सी. जी. बोर्डे
9. पंकज रॉय
10. सुभाष गुप्ते
11. पी. एल. पंजाबी
12. जी. एस. रामचन्द
13. सी. डी. गोपीनाथ
14. जे. एम. पटेल
15. सी. वी. गडकरी
16. एन. एस. तम्हाने
17. एच. डी. दानी

लाला अमरनाथ (प्रबन्धक)

टैस्ट मैचों के अलावा खेले गये मैचों का संक्षेप में विवरण इस प्रकार है :

विरुद्ध पूर्व पाकिस्तान : चटगांव में, दिसम्बर 27, 28 और 29 को

पूर्व पाकिस्तान : 98 (गुप्ते ने 19 रन देकर 4 विकटें ली) और 87 (गुप्ते ने 37 रन देकर 6 विकटें ली)। भारत : 7 विकटों पर 200 रन और पारी समाप्ति की घोषणा (मंत्री 51)। भारत एक पारी और 15 रनों से विजयी।

विरुद्ध कराची क्रिकेट एसोसियेशन : कराची में, जनवरी 7, 8, और 9 को

भारत 4 विकटों पर 404 और पारी समाप्ति की घोषणा (मांकड 130, पंजाबी 111, मांजरेकर 103) और बिना विकेट खोये 31 रन। कराची क्रिकेट एसोसियेशन : 8 विकटों पर 268 और पारी समाप्ति की घोषणा (नजीर मोहम्मद 96, अलीमुद्दीन 55)। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

विरुद्ध सिंध : हैदराबाद में, जनवरी 11, 12 और 13 को

सिंध : 97 (मथाईस 50*) और 116 (गुप्ते ने 39 रन देकर 4 विकटें ली)। भारत : 283 (उमरीगर 95)। भारत एक पारी और 70 रनों से विजयी।

विरुद्ध मध्य क्षेत्र : मोंटगुमरी में, जनवरी 21, 22 और 23 को

मध्य क्षेत्र : 123 (नयार हुसैन 60*, गुप्ते ने 51 रन देकर 6 विकटें ली) और 304 (शकूर अहमद 104, शुजाउद्दीन 62, मांकड ने 56 रन देकर 4 विकटें ली, गुप्ते ने 110 रन देकर 4 विकटें ली)। भारत : 7 विकटों पर 307 और पारी समाप्ति की घोषणा (मांजरेकर 100, मांकड 61, गोपीनाथ 60) और 4 विकटों पर 110 रन। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

विरुद्ध विश्वविद्यालय : लाहौर में, जनवरी 25, 26 और 27 को

विश्वविद्यालय : 69 (पटेल ने 22 रन देकर 4 विकटें ली) और 85 (पटेल ने 25 रन देकर 8 विकटें ली)। भारत : 164 (उमरीगर 58, अजिज ने 12 रन देकर 4 विकटें ली)। भारत एक पारी और 10 रनों से विजयी।

विरुद्ध पंजाब क्रिकेट ऐसोसियेशन : स्यालकोट में, फरवरी 4, 5 और 6 को

भारत 6 विकटो पर 422 और पारी समाप्ति की घोषणा (मांजरेकर 129*, रॉय 105, रामचन्द 56, मंत्री 50)। पंजाब : 153 (पटेल ने

---

* अपराजित

द्वितीय टैस्ट बहावलपुर में खेला गया जहां चार दिन में केवल 756 रन बने। भारत ने बल्लेबाजी की शुरूग्रात की और रॉय और मांकड को 16 रनों पर खो दिया। मांजरेकर, रामचन्द और तम्हाने हर एक ने 50 रन बनाये और कुल रन संख्या 235 पर पहुँच गई। सफल गेंदबाजी का सम्मान खान मोहम्मद और फजल महमूद को मिला। हनीफ और अलीमुद्दीन ने पाकिस्तान की पारी बड़ी कुशलता से प्रारम्भ की और एक समय पाकिस्तान के 200 रन बन चुके थे और उसका केवल एक ही बल्लेबाज आउट हुआ था। अलीमुद्दीन और वकारहसन के चले जाने पर किसी ने भी टिक कर हनीफ का साथ नही दिया जिन्होने 142 रन बनाये। नौ विकटों पर 312 रन बनने पर पारी समाप्ति की घोषणा करदी गई। उमरीगर ने अचूक गेंदबाजी कर 6 विकटें, 74 रनों पर, गिराई। बचे हुए समय में भारत ने पाँच विकटें खोकर 209 रन बनाये। रॉय (78) और मांजरेकर (59) ने तृतीय विकेट की साझेदारी में 123 रन जोड़कर भारत की स्थिति मजबूत की।

तृतीय टैस्ट मैच मे पाकिस्तान की पहली पारी 328 रनों पर समाप्त हुई। यह संख्या तो सन्तोषजनक थी लेकिन रन बनाने की रफ्तार बहुत धीमी थी। इस लाहौर टैस्ट में चार दिनों में केवल 789 रन बने और इस मैच मे भी हार-जीत का फैसला नहीं हो सका। मकसूद अहमद को तम्हाने ने बड़ी सफाई से स्टम्प आउट कर दिया जब उनके शतक में केवल एक रन बाकी था। वजीर मोहम्मद और इम्तियाज, दोनों ने 55 रन बनाये और इनकी बल्लेबाजी बड़ी ठोस थी। भारत ने 251 रन बनाकर उत्तर दिया जिसमें उमरीगर ने आकर्षक 78 रन बनाए थे। पाकिस्तान ने 5 विकटों पर 136 रन बनाकर अपनी पारी समाप्त कर दी। बचे हुए समय में भारत ने दो विकटें खोकर 74 रन बना लिये थे।

मांकड और गुप्ते की घातक गेंदबाजी और उमरीगर की सशक्त बल्लेबाजी ने भारत की स्थिति को अधिक सुदृढ बना दिया था लेकिन पेशावर में खेले गये इस चतुर्थ टैस्ट मैच में चार दिनों में केवल 638 रन बने और बिना कोई निर्णय हुए यह टैस्ट भी समाप्त हो गया। पाकिस्तान प्रथम पारी में केवल 188 रन बना सका लेकिन इसके लिये भारत को 176·3 ओवर गेंदबाजी करनी पड़ी। गुप्ते ने 6 विकटें 63 रनों पर गिराईं। भारत ने गेंदबाजी के 108 ओवरों मे 245 रन बनाये जिसमें उमरीगर ने 285 मिनटों मे 108 रन बनाये थे। पाकिस्तान ने द्वितीय पारी में 122 ओवरों में 182 रन बनाये। शेष समय में भारत ने पंजाबी का विकेट खोकर 23 रन बनाये।

34 रन देकर 4 विकटें ली, गुलाम अहमद ने 81 रन देकर 4 विकटें ली) और 107 रन । भारत एक पारी और 162 रनों से विजयी ।

विरुद्ध पाकिस्तानी सेना : रावलपिंडी में, फरवरी 8, 9 और 10 को

पाकिस्तानी सेना : 201 (इम्तियाज अहमद 59) और 183 (इम्तियाज अहमद 105, मांकड ने 68 रन देकर 5 विकटें ली, गुप्ते ने 87 रन देकर 4 विकटें ली) । भारत : 5 विकटों पर 304 और पारी समाप्ति की घोषणा (उमरीगर 151, मांकड 64, अमरनाथ 54*) । भारत एक पारी और 20 रनों से विजयी ।

विरुद्ध उत्तर क्षेत्र : लायलपुर में, फरवरी 18, 19 और 20 को

भारत : 8 विकटों पर 300 और पारी समाप्ति की घोषणा (रॉय 73, गोपीनाथ 55*) और 2 विकटों पर 191 (रामचन्द 85, रॉय 70) । उत्तर क्षेत्र : 153 (निसार 50, पटेल ने 69 रन देकर 7 विकटें ली) । मैच में हार-जीत का फैसला नही हो सका ।

विरुद्ध स्कूलों की सम्मिलित टीम : कराची में, फरवरी 22, 23 और 24 को

भारत : 5 विकटों पर 252 और पारी समाप्ति की घोषणा (गोपीनाथ 130*, बोर्डे 99, रामचन्द 56) और 2 विकटों पर 36 रन । स्कूल टीम : 267 (हनीफ मोहम्मद 163) । मैच में हार-जीत का फैसला नही हो सका ।

टैस्ट मैच :

ढाका में खेले गए प्रथम टैस्ट के पहले दिन पाकिस्तान ने भोजन से पहले 35 रन बनाये; और रन बनाने की यह धीमी रफ्तार खेल के चारों दिनों में ही नही सुधरी जबकि कुल 709 रन बनाये गये । मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका । प्रथम पारी में पाकिस्तान केवल 157 रन बना सका लेकिन उसने भारत को केवल 148 रनों पर ही आउट कर दिया । पाकिस्तान की द्वितीय पारी भी 158 पर समाप्त हो गई । गुप्ते ने 5 विकटें 18 रनों पर गिराईं । खान मोहम्मद ने पंकज राय और मंत्री को केवल 17 रनों पर वापस कर दिया जबकि 200 मिनट का खेल बाकी था । लेकिन रॉय और मांजरेकर ने शानदार बल्लेबाजी की और बिना आउट हुए कुल रन संख्या को 146 तक पहुँचा दिया ।

---

* अपराजित

द्वितीय टैस्ट बहावलपुर में खेला गया जहां चार दिन में केवल 756 रन बने। भारत ने बल्लेबाजी की शुरूआत की और रॉय और मॉकड को 16 रनों पर खो दिया। मांजरेकर, रामचन्द और तम्हाने हर एक ने 50 रन बनाये और कुल रन संख्या 235 पर पहुँच गई। सफल गेंदबाजी का सम्मान खान मोहम्मद और फजल महमूद को मिला। हनीफ और अलीमुद्दीन ने पाकिस्तान की पारी बड़ी कुशलता से प्रारम्भ की और एक समय पाकिस्तान के 200 रन बन चुके थे और उसका केवल एक ही बल्लेबाज आउट हुआ था। अलीमुद्दीन और वकारहसन के चले जाने पर किसी ने भी टिक कर हनीफ का साथ नहीं दिया जिन्होंने 142 रन बनाये। नौ विकटों पर 312 रन बनने पर पारी समाप्ति की घोषणा करदी गई। उमरीगर ने अचूक गेंदबाजी कर 6 विकटें, 74 रनों पर, गिराई। बचे हुए समय में भारत ने पाँच विकटें खोकर 209 रन बनाये। रॉय (78) और मांजरेकर (59) ने तृतीय विकेट की साझेदारी में 123 रन जोड़कर भारत की स्थिति मजबूत की।

तृतीय टैस्ट मैच में पाकिस्तान की पहली पारी 328 रनों पर समाप्त हुई। यह संख्या तो सन्तोषजनक थी लेकिन रन बनाने की रफ्तार बहुत धीमी थी। इस लाहौर टैस्ट में चार दिनों में केवल 789 रन बने और इस मैच में भी हार-जीत का फैसला नहीं हो सका। मकसूद अहमद को तम्हाने ने बड़ी सफाई से स्टम्प आउट कर दिया जब उनके शतक में केवल एक रन बाकी था। वजीर मोहम्मद और इम्तियाज, दोनों ने 55 रन बनाये और इनकी बल्लेबाजी बड़ी ठोस थी। भारत ने 251 रन बनाकर उत्तर दिया जिसमें उमरीगर ने आकर्षक 78 रन बनाए थे। पाकिस्तान ने 5 विकटों पर 136 रन बनाकर अपनी पारी समाप्त कर दी। बचे हुए समय में भारत ने दो विकटें खोकर 74 रन बना लिये थे।

मॉकड और गुप्ते की घातक गेंदबाजी और उमरीगर की सशक्त बल्लेबाजी ने भारत की स्थिति को अधिक सुदृढ बना दिया था लेकिन पेशावर में खेले गये इस चतुर्थ टैस्ट मैच में चार दिनों में केवल 638 रन बने और बिना कोई निर्णय हुए यह टैस्ट भी समाप्त हो गया। पाकिस्तान प्रथम पारी में केवल 188 रन बना सका लेकिन इसके लिये भारत को 176·3 ओवर गेंदबाजी करनी पड़ी। गुप्ते ने 6 विकटें 63 रनों पर गिराई। भारत ने गेंदबाजी के 108 ओवरों में 245 रन बनाये जिसमें उमरीगर ने 285 मिनटों मे 108 रन बनाये थे। पाकिस्तान ने द्वितीय पारी में 122 ओवरों में 182 रन बनाये। शेष समय में भारत ने पंजाबी का विकेट खोकर 23 रन बनाये।

34 रन देकर 4 विकटें ली, गुलाम अहमद ने 81 रन देकर 4 विकटें ली) और 107 रन । भारत एक पारी और 162 रनों से विजयी ।

विरुद्ध पाकिस्तानी सेना : रावलपिंडी में, फरवरी 8, 9 और 10 को

पाकिस्तानी सेना : 201 (इम्तियाज अहमद 59) और 183 (इम्तियाज अहमद 105, मांकड ने 68 रन देकर 5 विकटें ली, गुप्ते ने 87 रन देकर 4 विकटें ली) । भारत : 5 विकटों पर 304 और पारी समाप्ति की घोषणा (उमरीगर 151, मांकड 64, अमरनाथ 54*) । भारत एक पारी और 20 रनो से विजयी ।

विरुद्ध उत्तर क्षेत्र : लायलपुर में, फरवरी 18, 19 और 20 को

भारत : 8 विकटो पर 300 और पारी समाप्ति की घोषणा (रॉय 73, गोपीनाथ 55*) और 2 विकटों पर 191 (रामचन्द 85, रॉय 70) । उत्तर क्षेत्र : 153 (निसार 50, पटेल ने 69 रन देकर 7 विकटें ली) । मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका ।

विरुद्ध स्कूलों की सम्मिलित टीम : कराची में, फरवरी 22, 23 और 24 को

भारत : 5 विकटों पर 252 और पारी समाप्ति की घोषणा (गोपीनाथ 130*, बोर्डे 99, रामचन्द 56) और 2 विकटों पर 36 रन । स्कूल टीम : 267 (हनीफ मोहम्मद 163) । मैच में हार-जीत का फैसला नही हो सका ।

टैस्ट मैच :

ढाका में खेले गए प्रथम टैस्ट के पहले दिन पाकिस्तान ने भोजन के पहले 35 रन बनाये; और रन बनाने की यह धीमी रफ्तार खेल के चारों दिनों में ही नहीं सुधरी जबकि कुल 709 रन बनाये गये । मैच में हार-जीत का फैसला नही हो सका । प्रथम पारी मे पाकिस्तान केवल 157 रन बना सका लेकिन उसने भारत को केवल 148 रनों पर ही आउट कर लिया । पाकिस्तान की द्वितीय पारी भी 158 पर समाप्त हो गई । गुप्ते ने 5 विकटें 18 रनों पर गिराई । खान मोहम्मद ने पंजाबी और मंत्री को केवल 17 रनों पर वापस कर दिया जबकि 200 मिनट का खेल बाकी था । लेकिन रॉय और मांजरेकर ने शानदार बल्लेबाजी की और बिना अलग हुए कुल रन संख्या को 146 तक पहुँचा दिया ।

---

* अपराजित

द्वितीय टैस्ट बहावलपुर में खेला गया जहां चार दिन में केवल 756 रन बने। भारत ने बल्लेबाजी की शुरुआत की और रॉय और मांकड को 16 रनों पर खो दिया। मांजरेकर, रामचन्द और तम्हाने हर एक ने 50 रन बनाये और कुल रन संख्या 235 पर पहुँच गई। सफल गेंदबाजी का सम्मान खान मोहम्मद और फजल महमूद को मिला। हनीफ और अलीमुद्दीन ने पाकिस्तान की पारी बड़ी कुशलता से प्रारम्भ की और एक समय पाकिस्तान के 200 रन बन चुके थे और उसका केवल एक ही बल्लेबाज आउट हुआ था। अलीमुद्दीन और वकारहसन के चले जाने पर किसी ने भी टिक कर हनीफ का साथ नही दिया जिन्होने 142 रन बनाये। नौ विकटों पर 312 रन बनने पर पारी समाप्ति की घोषणा करदी गई। उमरीगर ने अचूक गेंदबाजी कर 6 विकटें, 74 रनों पर, गिराईं। बचे हुए समय में भारत ने पांच विकटें खोकर 209 रन बनाये। रॉय (78) और मांजरेकर (59) ने तृतीय विकेट की साझेदारी में 123 रन जोड़कर भारत की स्थिति मजबूत की।

तृतीय टैस्ट मैच में पाकिस्तान की पहली पारी 328 रनों पर समाप्त हुई। यह संख्या तो सन्तोषजनक थी लेकिन रन बनाने की रफ्तार बहुत धीमी थी। इस लाहौर टैस्ट मे चार दिनों में केवल 789 रन बने और इस मैच में भी हार-जीत का फैसला नहीं हो सका। मकसूद अहमद को तम्हाने ने बड़ी सफाई से स्टम्प आउट कर दिया जब उनके शतक में केवल एक रन बाकी था। वजीर मोहम्मद और इम्तियाज, दोनों ने 55 रन बनाये और इनकी बल्लेबाजी बड़ी ठोस थी। भारत ने 251 रन बनाकर उत्तर दिया जिसमे उमरीगर ने आकर्षक 78 रन बनाए थे। पाकिस्तान ने 5 विकटों पर 136 रन बनाकर अपनी पारी समाप्त कर दी। बचे हुए समय में भारत ने दो विकटें खोकर 74 रन बना लिये थे।

मांकड और गुप्ते की घातक गेंदबाजी और उमरीगर की सशक्त बल्लेबाजी ने भारत की स्थिति को अधिक सुदृढ़ बना दिया था लेकिन पेशावर में खेले गये इस चतुर्थ टैस्ट मैच में चार दिनों में केवल 638 रन बने और बिना कोई निर्णय हुए यह टैस्ट भी समाप्त हो गया। पाकिस्तान प्रथम पारी मे केवल 188 रन बना सका लेकिन इसके लिये भारत को 176·3 ओवर गेंदबाजी करनी पड़ी। गुप्ते ने 6 विकटें 63 रनों पर गिराईं। भारत ने गेंदबाजी के 108 ओवरों मे 245 रन बनाये जिसमे उमरीगर ने 285 मिनटों में 108 रन बनाये थे। पाकिस्तान ने द्वितीय पारी में 122 ओवरों में 182 रन बनाये। शेष समय मे भारत ने पंजाबी का विकेट खोकर 23 रन बनाये।

कराची में खेले गये पंचम टैस्ट मैच में चार दिन में 617 रन बने और हार-जीत का फैसला हुए बिना ही यह मैच भी समाप्त हो गया। रामचन्द ने अपनी घातक गेंदबाजी से 6 विकटें 49 रनों पर उखाड़ी, पटेल ने 3 विकटें 49 रन पर लेकर उनका साथ दिया और पाकिस्तान अपनी प्रथम पारी में केवल 162 रन बना सका। भारतीय टीम की बल्लेबाजी भी कोई विशेष उत्तम नहीं रही क्योंकि वह केवल 145 रन ही बना सका। खान मोहम्मद और फजल महमूद ने पाँच-पाँच विकटें लीं। अलीमुद्दीन 103 रन बनाकर अपराजित रहे और कारदार ने 93 रन बना कर पाकिस्तान की कुल रन संख्या को पाँच विकिट पर 241 तक पहुँचा दिया जबकि पारी समाप्ति की घोषणा कर दी गई। बचे हुए समय में भारत ने दो विकटें खोकर 69 रन बनाये।

रनों का सविस्तार विवरण इस प्रकार है :

प्रथम टैस्ट

ढाका में जनवरी 1, 2, 3 और 4 को खेला गया, टॉस पाकिस्तान ने जीता और मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका। कप्तान : ए० एच० कारदार (पाकिस्तान) और वीनू मांकड (भारत)। विकेट-रक्षक : इम्तियाज अहमद (पाकिस्तान) और एन० एस० तम्हाने (भारत)। निर्णायक : दाउद खां और इदरीस बेग।

पाकिस्तान

हनीफ मोहम्मद कै. तम्हाने बा. गुलाम	41	कै. उमरीगर बा. फडकर	14
अलीमुद्दीन कै. फडकर बा. गुलाम	7	कै. एवजी बा. गुप्ते	51
वकार हसन कै. और बा. गुलाम	52	स्ट. तम्हाने बा. गुप्ते	51
मकसूद अहमद कै. तम्हाने बा. गुलाम	11	कै. मंत्री बा. गुप्ते	16
वजीर मोहम्मद कै. फडकर बा. गुप्ते	23	रन आउट	0
इम्तियाज अहमद बा. फडकर	54	कै. उमरीगर बा. गुप्ते	5
कारदार बा. रामचन्द	29	कै. मंत्री बा. फडकर	3
शुजाउद्दीन स्ट. तम्हाने बा. मांकड	25	रन आउट	1
फजल महमूद कै. तम्हाने बा. रामचन्द	0	अपराजित	15
महमूद हुसैन बा. गुलाम	9	कै. पंजाबी बा. गुप्ते	0
खान मोहम्मद अपराजित	4	रन आउट	0
अतिरिक्त	2	अतिरिक्त	2
	257		158

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–21, 2–74, 3–88, 4–125, 5–157, 6–207, 7–227, 8–227, 9–240, 10–257.

द्वितीय पारी : 1–24, 2–116, 3–122, 4–137, 5–139, 6–140, 7–140, 8–148, 9–156, 10–158.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
फडकर	18	11	24	1	28·2	11	57	2
रामचन्द	15	7	19	2	19	10	30	0
गुलाम ग्रहमद	45	8	109	5	—	—	—	—
सुभाष गुप्ते	46	14	79	1	6	0	18	5
मांकड	12·2	3	24	1	18	6	34	0
उमरीगर	—	—	—	—	15	8	17	0

भारत

रॉय बा. हुसैन	0	अपराजित	67
पंजाबी बा. खान	26	पगवाधा बा. खान	3
मंत्री बा. हुसैन	0	कै. इम्तियाज बा. खान	2
मांजरेकर बा. खान	18	अपराजित	74
उमरीगर कै. कारदार बा. हुसैन	32		
रामचन्द कै. इम्तियाज बा. हुसैन	37		
फडकर कै. इम्तियाज बा. हुसैन	11		
मांकड कै. इम्तियाज बा. हुसैन	2		
तम्हाने बा. खान	5		
गुलाम ग्रहमद बा. खान	2		
सुभाष गुप्ते ग्रपराजित	1		
अतिरिक्त	14	अतिरिक्त	0
	148	दो विकटों पर	146

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–17, 2–19, 3–45, 4–56, 5–115, 6–129, 7–131, 8–143, 9–145, 10–148.

द्वितीय पारी : 1–15, 2–17.

पाकिस्तान की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
महमूद हुसैन	27	6	67	6	7	2	21	0
फजल महमूद	25	19	18	0	23	11	34	0
खान मोहम्मद	26·5	12	42	4	12	5	18	2
शुजाउद्दीन	4	2	7	0	14	6	25	0
कारदार	—	—	—	—	12	4	17	0
हनीफ मोहम्मद	—	—	—	—	5	1	14	0
अलीमुद्दीन	—	—	—	—	5	0	13	0
इम्तियाज अहमद	—	—	—	—	1	1	0	
मकसूद अहमद	—	—	—	—	3	1	4	0

द्वितीय टैस्ट

बहावलपुर में जनवरी 15, 16, 17 और 18 को खेला गया, टॉस भारत ने जीता और मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका। कप्तान : ए० एच० कारदार (पाकिस्तान) और वीनू मॉकड (भारत)। विकेट-रक्षक : इम्तियाज अहमद (पाकिस्तान) और एन० एस० तम्हाने (भारत)। निर्णायक : इदरीस बेग और शुजाउद्दीन।

भारत

रॉय बा. फजल महमूद	0	कै. कारदार बा खान	77
पंजाबी बा. खान	18	कै. मकसूद बा. महमूद हुसैन	33
मॉकड कै. इम्तियाज बा. फजल महमूद	6	कै. इम्तियाज बा. फजल महमूद	1
मॉजरेकर कै. हुसैन बा. खान	50	कै. इम्तियाज बा. फजल महमूद	59
उमरीगर बा. खान	20		
रामचन्द बा. हुसैन	53		
गढकरी पगबाधा बा. खान	2	अपराजित	8
गोपीनाथ कै. वकार बा. फजल	0	कै. मकसूद बा. खान	8
तम्हाने अपराजित	54	अपराजित	9
गुप्ते बा. खान	15		
गुलाम अहमद बा. फजल	8		
अतिरिक्त	9	अतिरिक्त	14
	235	पांच विकटों पर	209

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–0, 2–16, 3–61, 4–93, 5–95, 6–100, 7–107, 8–189, 9–205, 10–235.

द्वितीय पारी : 1–58, 2–62, 3–185, 4–189, 5–193.

पाकिस्तान की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
फजल महमूद	62·5	23	86	4	28	6	58	2
महमूद हुसैन	25	8	56	1	17	3	47	1
खान मोहम्मद	33	7	74	5	22	6	50	2
शुजाउद्दीन	9	4	10	0	8	6	2	0
मकसूद अहमद	—	—	—	—	7	3	19	0
कारदार	—	—	—	—	7	0	19	0

पाकिस्तान

हनीफ मोहम्मद कै. गडकरी बा. उमरीगर	142
अलीमुद्दीन बा. गुलाम अहमद	64
वकार हुसन कै. गुप्ते बा. उमरीगर	48
मकसूद अहमद कै. गडकरी बा. उमरीगर	10
इम्तियाज अहमद स्ट. तम्हाने बा. गुप्ते	3
कारदार कै. पंजाबी बा. उमरीगर	13
फजल महमूद बा. उमरीगर	9
महमूद हुसैन कै. गडकरी बा. उमरीगर	0
शुजाउद्दीन रन आउट	7
वजीर मोहम्मद अपराजित	4
खान मोहम्मद अपराजित	1
अतिरिक्त	11
नौ विकटों पर पारी समाप्ति की घोषणा	312

विकटों का पतन :

1–127, 2–200, 3–226, 4–229, 5–258, 6–286, 7–286, 8–301, 9–307.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
रामचन्द	13	5	26	0
उमरीगर	58	25	74	6
सुभाष गुप्ते	17	8	49	1
गुलाम अहमद	36	4	63	1
मांकड	40	19	89	0

तृतीय टैस्ट

लाहौर में जनवरी 29, 30, 31 और फरवरी 1 को खेला गया, टॉस पाकिस्तान ने जीता और मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका। कप्तान : ए० एच० कारदार (पाकिस्तान) और वीनू मांकड (भारत)। विकेट-रक्षक : इम्तियाज अहमद (पाकिस्तान) और एन० एस० तम्हाने (भारत)। निर्णायक : इदरीस बेग और शुजाउद्दीन।

पाकिस्तान

हनीफ मोहम्मद कै. तम्हाने बा. गुप्ते	12	अपराजित	0
अलीमुद्दीन रन आउट	38	बा. मांकड	58
वकार हसन कै. मांकड बा. गुप्ते	9	कै. तम्हाने बा. मांकड	12
मकसूद अहमद स्ट. तम्हाने बा. गुप्ते	99	कै. पंजाबी बा. मांकड	15
कारदार कै. रामचन्द बा. मांकड	44		
वजीर मोहम्मद पगबाधा बा. मांकड	55		
इम्तियाज अहमद रन आउट	55	कै. तम्हाने बा. गुप्ते	9
शुजाउद्दीन कै. मांकड बा. गुलाम	3	कै. एवर्जी बा. गुप्ते	40
फजल महमूद स्ट. तम्हाने बा. गुप्ते	12		
महमूद हुसैन बा. गुप्ते	0		
मीरान बक्स अपराजित	1		
अतिरिक्त	0	अतिरिक्त	2
	328	पांच विकटों पर पारी समाप्ति की घोषणा	136

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–32, 2–55, 3–62, 4–198, 5–202, 6–286, 7–302, 8–327, 9–327, 10–328.

द्वितीय पारी : 1–83, 2–109, 3–112, 4–135, 5–136.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
उमरीगर	14	4	23	0	—	—	—	—
रामचन्द	10	5	12	0	6	1	20	0
गुलाम अहमद	46	11	95	1	14	2	47	0
सुभाष गुप्ते	73.5	32	133	5	36.3	11	34	2
मांकड	44	25	65	2	28	17	33	3

भारत

रॉय बा. हुसैन	23	कै. इम्तियाज बा. कारदार	23
पंजाबी बा. मीरान बक्स	27	कै. मकसूद बा. कारदार	1
गडकरी बा. फजल	13	अपराजित	27
मांजरेकर बा. मीरान बक्स	0	अपराजित	22
उमरीगर कै. हनीफ बा. हुसैन	78		
रामचन्द कै. मकसूद बा. फजल	12		
गोपीनाथ कै. फजल बा. शुजाउद्दीन	41		
मांकड कै. इम्तियाज बा. हुसैन	33		
ताम्हाने कै इम्तियाज बा. हुसैन	0		
गुलाम अहमद कै. इम्तियाज बा. फजल	0		
गुप्ते अपराजित	0		
अतिरिक्त	24	अतिरिक्त	1
	251		74

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–52, 2–56, 3–58, 4–91, 5–117, 6–179, 7–243, 8–243, 9–251, 10-251.

द्वितीय पारी : 1–3, 2–40.

पाकिस्तान की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
फजल महमूद	47	24	62	3	1	0	2	0
महमूद हुसैन	26·1	5	70	4	1	0	1	0
मिरान बक्स	48	20	82	2	—	—	—	—
शुजाउद्दीन	7	1	13	1	6	1	20	0
मकसूद अहमद	—	—	—	—	4	2	4	0
कारदार	—	—	—	—	12	3	20	2
अलीमुद्दीन	—	—	—	—	3	0	12	0
हनीफ मोहम्मद	—	—	—	—	3	0	9	0
वजीर मोहम्मद	—	—	—	—	2	0	5	0

चतुर्थ टैस्ट

पेशावर में फरवरी 12, 13, 14 और 15 को खेला गया, टॉस पाकिस्तान ने जीता और मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका। कप्तान : ए० एच० कारदार (पाकिस्तान) और वीनू मांकड़ (भारत)। विकेट-रक्षक: इम्तियाज अहमद (पाकिस्तान) और एन० एस० तम्हाने (भारत)। निर्णायक : इदरीस बेग और शुजाउद्दीन।

पाकिस्तान

हनीफ मोहम्मद कै. फडकर बा. गुप्ते	13	कै. और बा. मांकड	21
अलीमुद्दीन बा. रामचन्द	0	पगबाधा बा. गुलाम	4
वकार हसन कै. और बा. गुप्ते	43	पगबाधा बा. गुप्ते	16
मकसूद अहमद कै. पंजाबी बा. फडकर	31	कै. और बा. मांकड	44
इम्तियाज अहमद बा. फडकर	0	कै. पंजाबी बा. मांकड	69
वजीर मोहम्मद हिट विकेट बा. मांकड	34	बा. मांकड	0
कारदार बा. गुप्ते	11	बा. फडकर	0
शुजाउद्दीन कै. तम्हाने बा. गुप्ते	37	रन आउट	11
खान मोहम्मद कै. मांकड बा. गुलाम	4	कै. एवजी बा. मांकड	2
महमूद हुसैन अपराजित	5	स्ट. तम्हाने बा. फडकर	3
मीरान बक्स पगबाधा बा. गुप्ते	0	अपराजित	0
अतिरिक्त	10	अतिरिक्त	12
	188		182

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1-2, 2-31, 3-81, 4-81, 5-96, 6-111, 7-171, 8-176, 9-188, 10-188.

द्वितीय पारी : 1-10, 2-50, 3-68, 4-70, 5-153, 6-156, 7-176, 8-177, 9-182, 10-182.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
फडकर	21	14	19	2	18	2	42	2
रामचन्द	7	2	13	1	2	1	3	0
सुभाष गुप्ते	41·3	22	63	5	35	16	52	1
मांकड	61	34	71	1	54·1	26	64	5
गुलाम अहमद	13	7	12	1	13	9	9	1

भारत

रॉय रन आउट	16	अपराजित	13
पंजाबी बा. खान	16	बा. हनीफ मोहम्मद	6
उमरीगर रन आउट	108	अपराजित	3
मांजरेकर रन आउट	32		
गडकरी कै. मकसूद बा. हुसैन	15		
रामचन्द कै. शुजाउद्दीन बा. खान	18		
मांकड अपराजित	3		
तम्हाने रन आउट	0		
फडकर बा. खान	13		
गुप्ते कै. वकार बा. हुसैन	2		
गुलाम अहमद बा. खान	8		
अतिरिक्त	14	अतिरिक्त	1
	245	एक विकेट पर	23

विकटों का पतन :
प्रथम पारी : 1–30, 2–44, 3–135, 4–182, 5–210, 6–218, 7–219, 8–232, 9–236, 10–245.
द्वितीय पारी : 1–19.

पाकिस्तान की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
खान मोहम्मद	36	14	79	4	4	0	10	0
महमूद हुसैन	38	11	78	2	2	1	2	0
मीरान बक्स	8	2	30	0	2	0	3	0
कारदार	19	6	34	0	1	1	0	0
मकसूद अहमद	7	3	10	0	6	2	6	0
हनीफ मोहम्मद	—	—	—	—	4	3	1	1

पंचम टैस्ट

कराची में फरवरी 26, 27, 28 और मार्च 1 को खेला गया, टॉस पाकिस्तान ने जीता और मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका। कप्तान : ए० एच० कारदार (पाकिस्तान) और वीनू मांकड (भारत)। विकेट-रक्षक : इम्तियाज अहमद (पाकिस्तान) और एन० एस० तम्हाने (भारत)। निर्णायक : सलाउद्दीन और दाउद खाँ।

पाकिस्तान

बल्लेबाज़		पहली पारी	दूसरी पारी	
हनीफ मोहम्मद कै. तम्हाने बा. फड़कर		2	कै. तम्हाने बा. उमरीगर	28
अलीमुद्दीन कै. तम्हाने बा. रामचन्द		7	अपराजित	103
वकार हसन कै. उमरीगर बा. रामचन्द		12	अपराजित	1
मकसूद अहमद कै. तम्हाने बा. रामचन्द		22	कै. भंडारी बा. उमरीगर	2
इम्तियाज अहमद कै. रामचन्द बा. पटेल		37	रन आउट	1
वजीर मोहम्मद कै. फड़कर बा. पटेल		23		
कारदार कै. तम्हाने बा. रामचन्द		14	स्ट. तम्हाने बा. गुप्ते	93
शुजाउद्दीन कै. मांकड बा. रामचन्द		0	बा. रामचन्द	8
फजल महमूद पगबाधा बा. पटेल		3		
खान मोहम्मद अपराजित		15		
महमूद हुसैन कै. रामचन्द बा. फड़कर		14		
	अतिरिक्त	13	अतिरिक्त	5
		162	पांच विकटों पर पारी समाप्ति की घोषणा	241

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–2, 2–19, 3–37, 4–66, 5–88, 6–119, 7–122, 8–122, 9–135, 10–162.

द्वितीय पारी : 1–25, 2–69, 3–77, 4–81, 5–236.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
फड़कर	10	6	7	1	34	6	94	0
रामचन्द	27·4	9	49	6	11	4	27	1
पटेल	33	12	49	3	7	1	22	0
सुभाष गुप्ते	15	3	24	0	6	0	24	1
मांकड	5	0	16	0	1	0	3	0
उमरीगर	5	3	4	0	28	3	66	2

भारत

रॉय कै. कारदार बा. खान	37	पगवाधा बा मकसूद	16
पंजाबी पगवाधा बा. खान	12	कै. इम्तियाज बा. फजल	22
उमरीगर बा. फजल	16	अपराजित	14
मांजरेकर कै. कारदार बा. खान	14		
मांकड कै. मकसूद बा. फजल	6		
रामचन्द्र कै. हनीफ बा. फजल	15	अपराजित	12
तम्हाने बा. फजल	9		
भंडारी बा. खान	19		
फडकर, अपराजित	6		
पटेल बा. खान	0		
गुप्ते कै. शुजाउद्दीन बा. फजल	1		
अतिरिक्त	10	अतिरिक्त	5
	145	दो विकटों पर	69

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–22, 2–45, 3–68, 4–89, 5–95, 6–110, 7–131, 8–144, 9–144, 10–145.

द्वितीय पारी : 1–34, 2–49.

पाकिस्तान की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
खान मोहम्मद	30	5	72	5	7	5	4	0
महमूद हुसैन	7	0	14	0	3	0	16	0
फजल महमूद	27·3	6	49	5	9	4	22	1
हनीफ मोहम्मद	—	—	—	—	6	1	17	0
मकसूद अहमद	—	—	—	—	5	2	5	1

न्यूजीलैंड की टीम भारत में, 1955

न्यूजीलैंड की टीम प्रथम बार भारत भ्रमण पर आई थी, लेकिन वह खेल के किसी भी क्षेत्र में भारत की बराबरी नहीं कर सकी और दो टैस्ट मैचों मे उसकी करारी हार हुई। भारतीय बल्लेबाजी चोटी पर रही। मांकड (231) और रॉय (173) ने मद्रास में खेले गये पंचम टैस्ट में प्रथम विकेट की साझेदारी में 413 रन बनाकर विश्व का नया कीर्तिमान स्थापित किया। अतिथियों में दो बल्लेबाज विशेष योग्यता वाले थे। बर्ट सटक्लिफ बायें हाथ से खेलने वाले बल्लेबाजों में सर्वश्रेष्ठ थे और जे० आर० रीड उच्च स्तर के बल्लेबाज और गेंदबाज थे। हैदराबाद में पहली बार टैस्ट मैच खेला गया जिसमे भारत का नेतृत्व वहीं के निवासी प्रसिद्ध खिलाड़ी गुलाम अहमद ने किया। अन्य टैस्ट मैचों में, चोट लग जाने के कारण, वह नहीं खेल सके अतः उमरीगर भारत के कप्तान बने।

टीम के निम्नलिखित खिलाड़ी थे :

1. एच० बी० केव (कप्तान)
2. जे० आर० रीड (उप कप्तान)
3. बर्ट सटक्लिफ
4. जे० जी० लेगेट
5. ए० आर० मैक्गिबन
6. एम० बी० पूर
7. जे० ए० हेज
8. ए० एम० मोइर
9. ई० जी० पेट्री
10. टी० सी० मेकमहोन
11. जे० डब्लू० गाई
12. एन० एस० हार्डफोर्ड
13. जे० सी० एलवेस्टर
14. पी० जी० जेड० हेरिस
15. एस० एन० मैक्ग्रिगर

डब्लू० एच० कूपर (प्रबन्धक)

टैस्ट मैचों के अलावा खेले गये मैचों का संक्षेप में विवरण इस प्रकार है :

पूना में : नवम्बर 15, 16 और 17 को

न्यूजीलैंड : 162 और 269 (मोइर 55)। पश्चिम क्षेत्र : 179 और 4 विकटों पर 254 (वीनू मांकड 103, कांट्रेक्टर 68)। पश्चिम क्षेत्र 6 विकटों से विजयी।

बंगलौर में : नवम्बर 26, 27 और 28 को

दक्षिण क्षेत्र : 134 और 322 (गोपीनाथ 175, एलवेस्टर ने 99 रन देकर 5 विकटें लीं)। न्यूजीलैंड : 6 विकटों पर 459 और पारी समाप्ति की घोषणा (सटक्लिफ 106, पूर 86, रीड 78, मैक्गिबन 61*, हेरिस 53)। न्यूजीलैंड एक पारी और तीन रनों से विजयी।

अहमदाबाद में : दिसम्बर 10, 11 और 12 को

न्यूजीलैंड : 285 (गाई 109, लेगेट 64, जे० एस० पटेल ने 68 रन देकर 6 विकटें ली) और 3 विकटों पर 234 और पारी समाप्ति की घोषणा (मैक्ग्रिगर 80, हार्डफोर्ड 69, लेगेट 51)। भारतीय एकादश: 145 (सरवटे 66, हेज ने 44 रन देकर 5 विकटें ली, केव ने 52 रन देकर 5 विकटें ली) और 9 विकटों पर 292 (प्रकाश भंडारी 93, जे० एम० पटेल 69*, मुश्ताकअली 67)। मैच में हार-जीत का फैसला नही हो सका।

बनारस में : दिसम्बर 23, 24 और 25 को

बोर्ड अध्यक्ष एकादश : 247 (पी० आर० उमरीगर 82, महीपतसिंह 55) और 6 विकटों पर 203 और पारी समाप्ति की घोषणा (मुश्ताक अली 74, महीपतसिंह 72*)। न्यूजीलैंड : 6 विकटों पर 252 और पारी समाप्ति की घोषणा (लेगेट 58, मैक्ग्रिगर 56) और 3 विकटो पर 149 (मैक्ग्रिगर 51, रीड 51*)। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

नागपुर में : जनवरी 12, 13 और 14 को

न्यूजीलैंड : 173 (प्रकाश भंडारी ने 50 रन देकर 6 विकटें ली) और 8 विकटों पर 267 और पारी समाप्ति की घोषणा (हेरिस 95, बालू गुप्ते ने 106 रन देकर 6 विकटें ली)। भारतीय विश्व विद्यालय एकादश : 148 और 173 (पूर ने 27 रन देकर 5 विकटें ली)। न्यूजीलैंड 119 रनों से विजयी।

---

*अपराजित

टैस्ट मैच

हैदराबाद में खेले गये प्रथम टैस्ट मैच में, भारत ने श्रीगणेश सुन्दर ढंग से नहीं किया। रॉय शून्य पर आउट हो गये और मांकड भी 30 रन बनाकर वापस लौट आये। तत्पश्चात् भारतीय बल्लेबाजों ने आक्रामक खेल खेला और पहले दिन के खेल के अंत तक बिना और विकेट खोये कुल रन संख्या को 256 पर पहुँचा दिया। उमरीगर (112) और मांजरेकर (102) का जोड़ा जम कर खेल रहा था।

खेल के दूसरे दिन मांजरेकर 118 रन बनाकर आउट हो गये जिसमें उन्होंने 20 चौके लगाए थे। अपने प्रथम टैस्ट मैच में कृपालसिंह ने साहसिक बल्लेबाजी की और अपना शतक 246 मिनटों में 12 चौके लगा कर पूरा किया। उमरीगर ने 510 मिनटों तक दृढ़ता से बल्लेबाजी की, रन बनाने का कोई भी अवसर नहीं खोया और 27 चौके लगाकर 223 रन बना डाले। भारत की ओर से टैस्ट क्रिकेट में यह पहला दोहरा शतक बना। चार विकटों पर 498 रन बन जाने के बाद गुलाम अहमद ने पारी समाप्ति की घोषणा करदी।

फड़कर और स्वामी की तेज गेंदबाजी न्यूजीलैंड के बल्लेबाजों को हिला न सकी लेकिन सुभाष गुप्ते की अचूक गेंदबाजी सफल रही। गाई (102), मैकगिबन (59) और रीड (54) ने न्यूजीलैंड की कुल रन संख्या को 326 तक पहुँचाने मे योगदान दिया। गुप्ते ने 7 विकेट 128 रन देकर प्राप्त की। न्यूजीलैंड फोलो-आन से न बच सका। लेकिन द्वितीय पारी में उसके बल्लेबाजों ने सराहनीय खेल खेला और केवल दो विकटों पर ही कुल रन संख्या 212 पहुँच गई थी। स्थिति में सुधार करने का श्रेय सटक्लिफ को था जिन्होंने 15 चौके सहित 137 रन बनाकर अपराजित रहे। रीड के 45 रन बन चुके थे और वे भी अपराजित रहे। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

मांकड ने बम्बई मे द्वितीय टैस्ट मैच में उमरीगर के कीर्तिमान की बराबरी करली। पहली गेंद से ही उन्होंने आक्रामक बल्लेबाजी प्रारम्भ की। चौथे विकेट की साझेदारी में कृपालसिंह ने उनका पूरा साथ दिया। वे विकटों पर 472 मिनट टिके रहे और उन्होंने 223 रन बनाए जिसमें 22 चौके थे। भारत ने आठ विकटों पर 421 रन बनाकर पारी समाप्ति की घोषणा करदी।

जब अतिथियों ने बल्लेबाजी प्रारम्भ की तो सटक्लिफ ने भी उच्च स्तर की बल्लेबाजी का प्रदर्शन किया। दृढ़ता और प्रभावशाली ढंग से बल्लेबाजी करके उन्होंने 73 रन इकट्ठे कर लिये जबकि कुल रन संख्या

94 थी। लेकिन गुप्ते की गेंद पर वह रामचन्द द्वारा लपक लिए गए। मैक्गिबन (46) और रीड (39) ने भी सुन्दर खेल दिखाया, लेकिन अतिथि कुल 258 रन बना सके। न्यूजीलैंड को फिर तुरन्त बल्लेबाजी करनी पड़ी और गुप्ते और मांकड की अचूक गेंदबाजी के सामने वे टिक न सके और केवल 136 रनों पर उनकी द्वितीय पारी समाप्त हो गई। भारत एक पारी और 27 रनों से विजयी रहा।

दिल्ली में खेले गये तृतीय टैस्ट मैच में कुल रन संख्या उच्चतम बिन्दु तक पहुँची। केवल 10 विकेट गिरीं और कुल 1093 रन बनाये गये। सटक्लिफ और रीड ने बल्लेबाजी का श्रेष्ठ प्रदर्शन किया। प्रथम बार न्यूजीलैंड के विरुद्ध भारतीय गेंदबाजों की बड़ी दयनीय दशा हुई क्योंकि 450 रन देने के बाद भी वे केवल दो विकेट ही प्राप्त कर सकें। सटक्लिफ 230 रन बना कर अपराजित रहे और उन्होंने न्यूजीलैंड की ओर से डोनले द्वारा 1949 मे इंग्लैंड के विरुद्ध बनाए गए 209 रनों को पीछे रख दिया। उन्होंने 420 मिनट तक बल्लेबाजी की और तीस बार गेंद को मैदान के बाहर पहुँचा दिया। रीड की 119 रनों की अपराजित पारी ने 220 मिनट का समय लिया और इसमे दस चौके और एक छक्का लगा।

अपने प्रथम टैस्ट मैच में कांट्रेक्टर ने बड़ी शान्ति और आत्मविश्वास के साथ बल्लेबाजी कर 62 रन बनाये। दो विकटों के गिरने पर मांजरेकर ने बल्लेबाजी प्रारम्भ की और 360 मिनटों में बीस चौके लगाकर 177 रन बनाये। रामचन्द ने बड़ी मजेदार आक्रामक बल्लेबाजी की और सात चौके और एक छक्का लगाकर 72 रन जोड़े। बड़े अध्यवसाय से खेलते हुए नाडकर्णी 68 रन बनाकर अपराजित रहे। सात विकटों के गिरने पर उमरीगर ने पारी समाप्ति की घोषणा कर दी जबकि गणनापट्ट पर भारत के 531 रन शोभायमान थे।

बचे हुए समय में न्यूजीलैंड ने एक विकेट खोकर 112 रन बनाये और मैच में हार-जीत का फैसला नही हो सका।

चतुर्थ टैस्ट मैच कलकत्ता मे खेला गया और न्यूजीलैंड ने भारत को 132 रनो पर आउट करके पिछले टैस्ट का बदला ले लिया। रीड (120) और गाई (91) ने तृतीय विकेट की साझेदारी मे 184 रन जोड़े और अपनी टीम की कुल रन संख्या को 336 तक पहुँचाने में सहायक हुए। एक समय तो न्यूजीलैंड की कुल रन संख्या केवल दो विकटों के गिरने पर 239 थी, लेकिन रीड और गाई के आउट हो जाने पर गुप्ते ने शेष बल्लेबाजो को जल्दी ही वापस लौटा दिया।

भारत ने जब द्वितीय पारी प्रारम्भ की तो उसे 204 रन का घाटा पूरा करना था। धीरे धीरे खेल का रूप बदलने लगा क्योंकि भारतीय

बल्लेबाजों ने अधिक साहस और धैर्य का प्रदर्शन किया। केवल मांकड और कांट्रेक्टर के आउट होने तक ही घाटा पूरा हो गया था। रॉय ने शतक पूरा कर नूतन वर्ष मनाया और तीसरे विकेट की साझेदारी में मांजरेकर (90) के साथ 144 रन जोड़े। भारत के लिये संकट का समय समाप्त हुआ और तत्पश्चात् रामचन्द ने 220 मिनट तक जोरदार बल्लेबाजी की और 106 रन बनाकर भी अपराजित रहे। सात विकटों पर 438 रन बने और पारी समाप्ति की घोषणा करदी गई।

केवल 90 मिनट का खेल बाकी था और मैच में कोई परिणाम निकलना असम्भव लगता था। लेकिन आखिरी मिनटों में खेल बहुत रोमाचकारी हुआ और भारत जो एक समय हार से बचने के लिये संघर्ष कर रहा था अब विजय के निकट पहुँच गया था। उमरीगर ने गेंदबाजी मे जल्दी-जल्दी परिवर्तन करके 6 प्रतिद्वन्द्वी खिलाड़ियों को 55 रनों पर धराशायी कर दिया। खेल में समय बाकी था। मैक्ग्रिगर और मैक्गिबन अपने विकेट बचाने का भरसक प्रयत्न कर रहे थे। दूसरी ओर मांकड और गुप्ते बड़ी सूझबूझ और चतुराई से गेंदबाजी कर रहे थे कि शेष विकेट गिर जाएं और भारत को विजयश्री प्राप्त हो। लेकिन ऐसा नहीं हुआ क्योंकि दोनो बल्लेबाज हर गेंद के सामने सीधा बल्ला रख देते थे। आखिर उन्होंने अपने आपको पराजय से बचा ही लिया।

पंचम टैस्ट मद्रास में खेला गया जहां मांकड और रॉय ने प्रथम विकेट की साझेदारी में 413 रन जोड़कर क्रिकेट के इतिहास मे अपना नाम अमर कर दिया। इससे पहले इस विकेट की साझेदारी का विश्व कीर्तिमान 359 रनों का था जो हट्टन और वॉशब्रुक द्वारा इंग्लैंड की ओर से दक्षिण अफ्रीका के विरुद्ध 1948-49 मे स्थापित किया गया था। खेल के दूसरे दिन भोजन के पश्चात् न्यूजीलैंड को प्रथम विकेट प्राप्त हुआ जब पूर ने रॉय का डंडा उखाड़ दिया। मांकड ने 525 मिनट बल्लेबाजी की और 21 चौके लगाकर 231 रन बनाये जो टैस्ट क्रिकेट में भारत की ओर से अधिकतम रन संख्या की पारी थी। उमरीगर और रामचन्द ने न्यूजीलैंड की थकी गेंदबाजी पर हावी होकर धावा बोल दिया और द्वितीय दिन के खेल की समाप्ति पर कुल रन संख्या को 537 पर पहुँचा दिया। रामचन्द तो मैक्गिबन की गेंद पर आउट हो गए लेकिन उमरीगर 79 रन बनाकर अपराजित रहे। इस रन संख्या पर पारी समाप्ति की घोषणा करदी गई।

लेगेट और सटक्लिफ ने खेल के तीसरे दिन न्यूजीलैंड की पारी सुन्दर ढंग से प्रारम्भ की। रीड की पारी भी उपयोगी थी और एक समय

तो अतिथि टीम के केवल एक विकेट पर 109 रन बन गये थे। तत्पश्चात् गुप्ते और पटेल ने बचे हुए बल्लेबाजों को सरलता से पछाड़ दिया और 209 रनों पर पारी समाप्त हो गई। गुप्ते ने 72 रन देकर पांच विकट लीं।

न्यूजीलैंड को फिर बल्लेबाजी प्रारम्भ करनी पड़ी। फिर लेगेट और सटक्लिफ ने दूसरी पारी की मजबूत नींव रखने का प्रयत्न किया। रीड ने स्थिति मे सुधार किया और एक समय अतिथियों के केवल एक विकेट खोने पर 114 रन बन चुके थे लेकिन बाद में आने वाले बल्लेबाज मांकड और गुप्ते की गेंदबाजी के आगे टिक न सके और न्यूजीलैंड का अन्तिम विकेट 219 रन पर गिर गया। भारत एक पारी और 109 रनो से जीत गया।

रनों का सविस्तार विवरण इस प्रकार है :

प्रथम टैस्ट

हैदराबाद में नवम्बर 19, 20, 22, 23 और 24, 1955 को खेला गया, टॉस भारत ने जीता और मैच में हार-जीत का फैसला नही हो सका। कप्तान : गुलाम अहमद (भारत) और एच० बी० केव (न्यूजीलैंड)। विकेट-रक्षक : एन० एस० तम्हाने (भारत) और ई० सी० पेट्री (न्यूजीलैंड)। निर्णायक : एम० जी० विजयसारथी और जे० आर० पटेल।

भारत

मांकड कै. एलबेस्टर बा. मैक्गिबन	30
रॉय कै. पेट्री बा. हेज	0
उमरीगर कै. पेट्री बा. हेज	223
मांजरेकर कै. मैक्गिबन बा. हेज	118
कृपालसिंह अपराजित	100
रामचन्द अपराजित	12
फडकर, तम्हाने, सुभाप गुप्ते, गुलाम अहमद, स्वामी — बल्लेबाजी नहीं की	
अतिरिक्त	15
चार विकटों पर पारी समाप्ति की घोषणा	498

विकटों का पतन :

1-1, 2-48, 3-286, 4-457.

न्यूजीलैंड की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
हेज	26	5	91	3
मैकगिबर्न	43.1	15	102	1
रीड	16	2	63	0
केव	41	20	59	0
एलवेस्टर	30	5	94	0
पूर	9	2	36	0
सट्क्लिफ	10	1	38	0

न्यूजीलैंड

सट्क्लिफ कै. उमरीगर बा. गुप्ते	17	अपराजित	137
पेट्री बा. गुप्ते	15	पगबाधा बा. गुप्ते	4
गाई कै. गुलाम अहमद बा. मांकड़	102	कै. गुलाम अहमद बा. मांकड़	21
रीड पगबाधा बा. रामचन्द	54	अपराजित	45
मैक्ग्रिगर स्ट. तम्हाने बा. गुप्ते	19		
हार्डफोर्ड पगबाधा बा. गुप्ते	4		
मैक्गिबन कै. कृपाल बा. गुलाम	59		
पूर पगबाधा बा. गुप्ते	23		
केव स्ट. तम्हाने बा. गुप्ते	14		
एलवेस्टर पगबाधा बा. गुप्ते	11		
हेज अपराजित	1		
अतिरिक्त	7	अतिरिक्त	5
	326	दो विकटों पर	212

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1-27, 2-36, 3-119, 4-154, 5-166, 6-253, 7-292, 8-305, 9-325, 10-326.

द्वितीय पारी : 1-42, 2-104.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
फडकर	25	11	34	0	12	5	25	0
स्वामी	8	2	15	0	10	3	30	0
सुभाष गुप्ते	76·4	35	128	7	18	7	28	1
गुलाम अहमद	39	15	56	1	13	2	36	0
मांकड	36	16	48	1	25	7	74	
रामचन्द	20	12	33	1	14	7	14	0
कृपालसिंह	1	0	5	0	—	—	—	—
उमरीगर	4	4	0	0	—	—	—	—

द्वितीय टैस्ट

बम्बई में दिसम्बर 2, 3, 4, 6 और 7, 1955 को खेला गया, टॉस भारत ने जीता और मैच भी एक पारी और 27 रनों से। कप्तान : पी० आर० उमरीगर (भारत) और एच० बी० केव (न्यूजीलैंड), विकेट-रक्षक : एन० एस० तम्हाने (भारत) और ई० सी० पेट्री (न्यूजीलैंड)। निर्णायक : एम० जी० विजय सारथी और बी० जे० मोहनी।

भारत

मांकड कै. मैक्गिबन बा. पूर	223
मेहरा कै. हेरिस बा. हेज	10
उमरीगर बा. केव	15
मांजरेकर कै. एलवेस्टर बा. केव	0
कृपालसिंह बा. केव	63
रामचन्द बा. मैक्गिबन	22
कांट्रेक्टर कै. पेट्री बा. मैक्गिबन	16
फडकर अपराजित	37
तम्हाने बा. पूर	10
पाटिल अपराजित	14
सुभाष गुप्ते बल्लेबाजी नहीं की	
अतिरिक्त	11
आठ विकटों पर पारी समाप्ति की घोषणा	421

विकटों का पतन :

1–36, 2–61, 3–63, 4–230,
5–281, 6–347, 7–365, 8–377.

न्यूजीलैंड की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
हेज	26	4	79	1
मैक्गिबन	23	6	56	2
केव	48	23	77	3
रीड	3	1	6	0
एलवेस्टर	25	4	83	0
मोइर	12	2	51	0
पूर	19	3	49	2
सट्क्लिफ	2	0	9	0

न्यूजीलैंड

सट्क्लिफ कै. गुप्ते बा. रामचन्द	73	कै. मांकड बा. गुप्ते	37
पेट्री पगबाधा बा. गुप्ते	4	कै. गुप्ते बा. फडकर	4
गाई कै. गुप्ते बा. रामचन्द	23	पगबाधा बा. गुप्ते	2
रीड पगबाधा बा. पाटिल	39	कै. फडकर बा. पाटिल	4
हेरिस पगबाधा बा. गुप्ते	19	कै. तम्हाने बा. मांकड	7
मैक्गिबन कै. मांकड बा. फडकर	46	कै. पाटिल बा. गुप्ते	24
पूर कै. उमरीगर बा. फडकर	17	बा. मांकड	0
केव रन आउट	12	कै. उमरीगर बा. मांकड	21
मोइर पगबाधा बा. गुप्ते	0	कै. मांजरेकर बा. गुप्ते	28
एलवेस्टर बा. मांकड	16	बा. गुप्ते	4
हेज अपराजित	0	अपराजित	0
अतिरिक्त	9	अतिरिक्त	5
	258		136

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–21, 2–94, 3–133, 4–156, 5–166, 6–218, 7–231, 8–232, 9–258, 10–258.

द्वितीय पारी : 1–13, 2–22, 3–33, 4–45, 5–67, 6–68, 7–86, 8–117, 9–136, 10–136.

भारत की गेंदबाजी

	म्रो.	मे.म्रो.	रन	विकेट	म्रो.	मे. म्रो.	रन	विकेट
फड़कर	28	10	53	2	6	4	5	1
पाटिल	14	3	36	1	9	4	15	1
सुभाष गुप्ते	51	26	83	3	32·4	19	45	5
रामचन्द	31	15	48	2	6	4	9	0
मॉकड	10.1	3	29	1	27	8	57	3

तृतीय टैस्ट

दिल्ली में दिसम्बर 16, 17, 18, 20 और 21, 1955 को खेला गया। टॉस न्यूजीलैंड ने जीता और मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका। कप्तान : पी० आर० उमरीगर (भारत) और एच० बी० केव (न्यूजीलैंड)। विकेट रक्षक : एन० एस० तम्हाने (भारत) और टी० जी० मेकमहोन (न्यूजीलैंड)। निर्णायक : डी० डी० देसाई और एन० डी० नागरवाला।

न्यूजीलैंड

लेगेट कैं. मांजरेकर बा. गुप्ते	37	अपराजित	50
सटक्लिफ अपराजित	230		
गाई कैं. मेहरा बा. सुन्दरम	52	अपाजित	10
रीड अपराजित	119		
मैक्ग्रिगर, मैक्गिबन, पूर, केव, एलवेस्टर, मेकमहोन, हेज — बल्लेबाजी नहीं की	—	कैं. तम्हाने बा. मांजरेकर	49
अतिरिक्त	12	अतिरिक्त	3
दो विकटों पर पारी समाप्ति की घोषणा	450	एक विकेट पर	112

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–98, 2–228.

द्वितीय पारी : 1–101.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
सुन्दरम	39	5	99	1	3	0	6	0
रामचन्द	38	11	82	0	3	0	11	0
सुभाष गुप्ते	39	10	98	1	6	1	22	0
नाडकर्णी	54	13	132	0	3	1	11	0
भंडारी	6	0	27	0	7	2	12	0
मांजरेकर	—	—	—	—	20	13	15	1
कृपाल सिंह	—	—	—	—	7	3	10	0
कांट्रेक्टर	—	—	—	—	6	1	19	0
मेहरा	—	—	—	—	3	0	3	0

भारत

मेहरा कै. मैक्ग्रिगर बा. हेज	32
कांट्रेक्टर बा. रीड	62
उमरीगर बा. मैक्गिबन	18
मांजरेकर कै. मेकमहोन बा. केव	177
कृपालसिंह बा. हेज	36
रामचन्द स्ट. मेकमहोन बा. पूर	72
नाडकर्णी अपराजित	68
प्रकाश भंडारी बा. मैक्गिबन	39
तम्हाने, सुन्दरम, सुभाष गुप्ते — बल्लेबाजी नहीं की	
अतिरिक्त	27
सात विकटों पर पारी समाप्ति की घोषणा	531

विकटों का पतन :
1–68, 2–111, 3–119, 4–208, 5–335, 6–458, 7–531.

न्यूजीलैंड की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
मैक्गिबन	50·5	16	122	2
केव	51	29	67	1
हेज	44	9	105	2
रीड	41	14	86	1
एलवेस्टर	24	9	90	0
पूर	15	4	26	1
सटक्लिफ	3	0	8	0

चतुर्थ टैस्ट

कलकत्ता में दिसम्बर 28, 29, 31, 1955 और जनवरी 1 और 2, 1956 को खेला गया, टॉस भारत ने जीता और मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका। कप्तान : पी० आर० उमरीगर (भारत) और एच० बी० केव (न्यूजीलैंड)। विकेट-रक्षक : सी० टी० पाटणकर (भारत) और टी० जी० मेकमहोन (न्यूजीलैंड)। निर्णायक : डी० डी० देसाई और एस० के० गांगुली।

भारत

मॉकड कै. मेकमहोन बा. रीड	25	कै. मैक्गिबन बा. रीड	17
कांट्रेक्टर बा. हेज	6	बा. हेज	61
रॉय बा. हेज	28	पगबाधा बा. केव	100
मांजरेकर कै. रीड बा. केव	1	कै. मैक्गिबन बा. रीड	90
उमरीगर रन आउट	1	बा. मैक्गिबन	15
रामचन्द बा. रीड	1	अपराजित	106
घोरपडे बा. एलवेस्टर	39	कै. सटक्लिफ बा. केव	4
फडकर रन आउट	0	बा. हेज	17
पाटणकर बा. रीड	13	अपराजित	1
सुन्दरम अपराजित	3		
सुभाष गुप्ते बा. एलवेस्टर	4		
अतिरिक्त	11	अतिरिक्त	27
	132	सात विकटों पर पारी समाप्ति की घोषणा	438

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–13, 2–41, 3–42, 4–47, 5–49, 6–87, 7–88, 8–125, 9–125, 10–132.

द्वितीय पारी : 1–40, 2–119 3–263, 4–287, 5–331, 6–370, 7–424.

न्यूजीलैंड की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
हेज	14	3	38	2	30	4	67	2
मैक्गियन	13	3	27	0	43	16	92	1
केव	14	6	29	1	57	24	85	2
रीड	16	9	19	3	45	21	87	2
एलवेस्टर	2·3	0	8	2	27	7	52	0
सटक्लिफ	—	—	—	—	7	0	28	0

न्यूजीलैंड

लेगेट कै. पाटणकर बा. सुन्दरम	8	कै. मांकड बा. फडकर	7
सटक्लिफ कै. पाटणकर बा. रामचन्द	25	पगबाधा बा. गुप्ते	5
गाई पगबाधा बा. गुप्ते	91	बा. फडकर	0
रीड बा. सुन्दरम	120	बा. मांकड	5
मैक्ग्रिगर बा. गुप्ते	6	बा. मांकड	29
मैक्गिवन स्ट. पाटणकर बा. गुप्ते	23	अपराजित	21
हार्डफोर्ड कै. मांकड बा. रामचन्द	25	कै. फडकर बा. गुप्ते	1
केव कै. उमरीगर बा. गुप्ते	5	अपराजित	4
एलवेस्टर कै. पाटणकर बा. गुप्ते	18		
हेज बा. गुप्ते	1		
मेकमहोन अपराजित	1		
अतिरिक्त	13	अतिरिक्त	2
	336	6 विकटों पर	74

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–25, 2–55, 3–239, 4–255, 5–262, 6–300, 7–310, 8–318, 9–333, 10–336.

द्वितीय पारी : 1-8, 2-9, 3-37, 4-42, 5-47, 6-55.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
फड़कर	35	9	76	0	4	1	11	2
सुन्दरम	21	6	46	2	3	1	13	0
सुभाष गुप्ते	33·5	7	90	6	14	8	30	2
रामचन्द	37	15	64	2	1	0	4	0
मॉकड	1	0	9	0	12	8	14	2
घोरपडे	1	0	17	0	—	—	—	—
उमरीगर	17	7	21	0	—	—	—	—

पंचम टेस्ट

मद्रास में जनवरी 6, 7, 8, 10 और 11, 1956 को खेला गया, टॉस भारत ने जीता और मैच भी भारत ने एक पारी और 109 रनों से। कप्तान : पी० आर० उमरीगर (भारत) और एच० बी० केव (न्यूजीलैंड)। विकेट-रक्षक : एन० एस० तम्हाने (भारत) और टी० जी० मेकमहोन (न्यूजीलैंड)। निर्णायक : एम० जी० विजयसारथी और ए० आर० जोशी।

भारत

मांकड कै. केव बा. मोइर	231
रॉय बा. पूर	173
उमरीगर अपराजित	79
रामचन्द पगबाधा बा. मैक्गिबन	21
मांजरेकर अपराजित	0
कृपालसिंह, कांट्रेक्टर, फड़कर, तम्हाने, पटेल, सुभाष गुप्ते — बल्लेबाजी नहीं की	
अतिरिक्त	33
तीन विकटों पर पारी समाप्ति की घोषणा	537

विकटों का पतन :

1–413, 2–440, 3–537.

न्यूजीलैंड की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ग्रो.	रन	विकेट
हेज	31	2	94	0
मैक्गिबन	38	9	97	1
केव	44	16	94	0
रीड	7	3	10	0
मोइर	26	1	114	1
पूर	31	5	95	1

न्यूजीलैंड

लेगेट पगबाधा वा. फडकर	31	कै. तम्हाने बा. मांकड	61
सटक्लिफ कै. उमरीगर बा. पटेल	47	कै. और वा. गुप्ते	40
रीड बा. पटेल	44	कै. उमरीगर बा. गुप्ते	63
गाई कै. उमरीगर बा. गुप्ते	3	स्ट. तम्हाने वा. गुप्ते	9
मैक्ग्रिगर कै. फडकर वा. गुप्ते	10	कै. गुप्ते बा. मांकड	12
मैक्गिबन कै. फडकर बा. गुप्ते	0	पगबाधा बा. पटेल	0
पूर पगबाधा बा. गुप्ते	15	बा. मांकड	1
मोइर कै. उमरीगर बा. पटेल	30	कै. रामचन्द बा. मांकड	1
केव कै. रॉय बा. गुप्ते	9	अपराजित	22
मेकमहोन अपराजित	4	बा. गुप्ते	0
हेज बीमारी के कारण अनुपस्थित	0	बीमारी के कारण अनुपस्थित	0
अतिरिक्त	16	अतिरिक्त	10
	209		219

विकटों पतन :

प्रथम पारी : 1–75, 2–109, 3–121, 4–141, 5–144, 6–145, 7–190, 8–201, 9–209.

द्वितीय पारी : 1–89, 2–114, 3–116, 4–117, 5–147, 6–148, 7–151, 8–219, 9–219.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
फडकर	15	4	25	1	28	13	33	0
रामचन्द	4	3	1	0	8	5	10	0
सुभाष गुप्ते	49	26	72	5	36·3	14	73	4
पटेल	45	23	63	3	18	7	28	1
मांकड	19	10	32	0	40	14	65	4

भारत का 1956 में भ्रमण करने वाली आस्ट्रेलिया की टीम

खड़े हुए : [illegible]. डब्लू. थर्को, के. मेके, आइ. डी. क्रेग, पी. बर्जे, आर बिनो, पी. क्राफोर्ड, आर. आरचर, जे. रथरफोर्ड और जे. विलसन ।

कुर्सी पर : एल. मेडोक्स, सी. मेकडॉनल्ड, के. आर. मिलर (उप-कप्तान), आई. डब्लू. जॉनसन (कप्तान), आर. आर. लिंडवॉल, जी. लेगले, आर. एन. हार्वे और डेविडसन ।

भारत का 1958-59 में भ्रमण करने वाली वेस्ट इंडीज की टीम
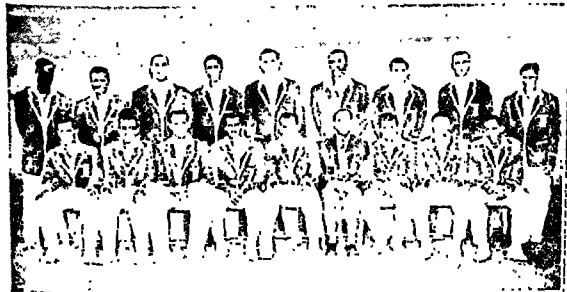
खड़े हुए : जे. टेलर, जे. सोलोमन, जे. एल. हेंड्रिक्स, एल. गिब्स, इ. ए. ऐटकिन्सन, डब्लू. हॉल, डब्लू. रोडरिग्ज, आर. कायनो और बी. बूचर ।

कुर्सी पर : आर. कन्हाई, सी. सी. हंट, जी. ए. सोबर्स, जे. के. होल्ट (उप-कप्तान), एफ. सी. एम. अलेक्जेंडर (कप्तान), बी. एम. गेसकिन (प्रबन्धक), रामादीन, ओ. जी. स्मिथ और आर. गिलक्रिस्ट ।

इंग्लैंड का 1959 में भ्रमण करने वाली भारतीय टीम
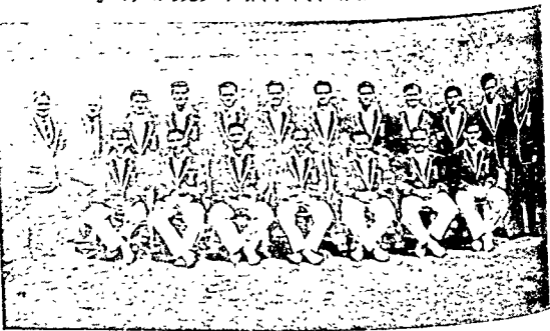
खड़े हुए : बड़ौदा के महाराजा श्री फतहसिंह राव गायकवाड (प्रबन्धक), जी. डकवर्थ (गणक), ए. ए. बेग, एम. एल. जयसिम्हा, ए. एल. आपटे, ए. जी. कृपालसिंह, आर. जी. नाडकर्णी, सी. जी. बोर्डे, एन. जे. कांट्रेक्टर, आर. बी. देसाई, सुरेन्द्रनाथ और श्री ए. एन. घोष (कोषाध्यक्ष)
कुर्सी पर : जे. एम. घोरपडे, पी. जी. जोशी, पी. आर. उमरीगर, डी. के. गायकवाड (कप्तान), पी. रॉय (उप-कप्तान), सुभाष गुप्ते और एन. एस. तम्हाने ।

भारत का 1959-60 में भ्रमण करने वाली आस्ट्रेलिया की टीम

खड़े हुए : एल. एफ. क्लाइन, बी. एन. जारमन, जी. बी. स्टीवेन्स, ए. के. डेविडसन, के. मैके, एन. सी. ओनील और ए. डब्लू. ग्राउट ।
आई. मेकिफ, पी. जे. बर्ज, सी. सी. मेकडोनल्ड, आर. बिनो (कप्तान), आर. एन. हार्वे (उप-कप्तान), आर. आर. लिंडवॉल और एल. ई. फेवेल ।

आस्ट्रेलिया की टीम भारत में, 1956

इंग्लैंड का भ्रमण करने के बाद आस्ट्रेलिया की टीम ने भारत में तीन टैस्ट मैच खेले। मद्रास में खेले गये प्रथम टैस्ट मैच में भारत के कप्तान उमरीगर ने टॉस तो जीत लिया लेकिन बिनो की गेंदबाजी का भारतीय बल्लेबाज डट कर सामना नहीं कर सके और 161 रनों पर ही पारी समाप्त हो गई। बिनो ने सात खिलाड़ियों को केवल 72 रन देकर वापस लौटा दिया। अतिथियों की बल्लेबाजी भी भारतीय गेंदबाज मांकड, गुप्ते और गुलाम अहमद के सामने डगमगा गई और आठ बल्लेबाज केवल 200 रन बना सके। नवें विकेट की 87 रनों की साझेदारी में जॉनसन और क्राफोर्ड ने यह दिखा दिया कि भारतीय गेंदबाजी खतरनाक नहीं है और आस्ट्रेलिया के अन्तिम खिलाड़ी के आउट होने पर रन संख्या 319 थी। भारत की द्वितीय पारी में लिंडवॉल ने सात विकटो को 43 रनो पर उखाड़कर अपनी घातक गेंदबाजी के द्वारा भारत की पारी को 153 रनों पर ही समाप्त कर उसे एक पारी और पांच रनों से हरा दिया।

बम्बई में खेले गये द्वितीय टैस्ट मैच में रामचन्द ने बड़े पराक्रम से बल्लेबाजी की। उमरीगर ने फिर टॉस जीता लेकिन भारतीय बल्लेबाजी का श्रीगणेश अशुभ ही हुआ क्योकि मांकड और उमरीगर जब मंडप में लौटे तो कुल रन संख्या 18 ही थी। तत्पश्चात् रामचन्द ने रॉय, मांजरेकर और अधिकारी की साझेदारी में अपनी टीम की दयनीय दशा को सुधारा। भारत के सात बल्लेबाज केवल 20 रन बना सके फिर भी कुल रन संख्या 251 पर पहुँच गई। आस्ट्रेलिया के बल्लेबाजों ने भारतीय गेंदबाजों की हवा बिगाड़ दी। बर्क विकेट पर चट्टान की तरह टिका रहा और 161 रन बना कर ही वापस लौटा। हार्वे ने 14 चौके लगाकर 140 रन पूरे किये। सात विकटों पर 523 रन बन जाने के पश्चात् पारी समाप्ति की घोषणा की गई। रॉय (79) और उमरीगर (78) ने भारत के भाग्य को फिर चमकाया। मांजरेकर और अधिकारी ने सहयोग दिया और खेल की पूर्ण समाप्ति पर भारत के 250 रन बन चुके थे और इसके आधे खिलाड़ी आउट हुए थे। द्वितीय टैस्ट मैच हार-जीत का फैसला हुए बिना ही समाप्त हो गया।

कलकत्ता मे खेले गये तृतीय टैस्ट मैच मे भारत विजय की मंजिल के बहुत समीप पहुँच गया था। जीत के लिये 157 रनों की आवश्यकता

थी और भारत के केवल दो विकेट गिरे थे। कार्य सरल प्रतीत होता था क्योंकि रामचन्द, उमरीगर, रॉय, मांजरेकर, मांकड और कृपालसिंह पहले के दो टैस्ट मैचों मे आस्ट्रेलिया की गेंदबाजी को परख चुके थे। लेकिन कानी के ब्याह में नौ-सौ जोखिम वाली कहावत चरितार्थ हुई। बल्लेबाजी मे कायरता दिखाकर भारत ने विजय का स्वर्ण अवसर खो दिया और मैच मे 94 रनों से पराजय का मुँह देखना पड़ा।

उमरीगर ने तृतीय बार लगातार टॉस जीत लिया लेकिन गीले विकेट पर अतिथियो को पहले बल्लेबाजी करने को कहा। गुलाम अहमद ने विकेट का पूरा लाभ उठाया और 7 विकटें 49 रनों पर प्राप्त की। आस्ट्रेलिया केवल 177 रन बना सका। विनो और लिंडवॉल की गेंदबाजी भारत के लिये घातक सिद्ध हुई और भारत की पारी 136 रनों पर ही समाप्त हो गई। मांकड और गुलाम अहमद ने भारत का पलड़ा फिर भारी कर दिया। लैंगले अस्वस्थ होने के कारण बल्लेबाजी नहीं कर सके और बाकी के नौ विकेट 189 पर उखाड़ दिये गये। केवल हार्वे ने डटकर बल्लेबाजी की और उनकी 69 रनों की पारी ने अतिथि टीम की लाज रखी।

रॉय और कांट्रैक्टर ने भारत की द्वितीय पारी को बड़े आत्मविश्वास के साथ प्रारम्भ किया और 231, रन जो विजय के लिये प्राप्त करने थे, संभव प्रतीत होने लगे। खेल के चौथे दिन भोजन के समय तक भारत ने दो विकेट खोकर 74 रन बना लिये थे। 157 रनों की आवश्यकता थी और उसके आठ विकेट बाकी थे। उमरीगर, मांजरेकर और मांकड ने प्रभावशाली बल्लेबाजी की। लेकिन अन्तिम 6 बल्लेबाज विकट पर टिक ही नही सके और कुल मिलाकर पांच रन जोड़ कर धराशायी हो गए। इनमे से चार तो अपना खाता ही नहीं खोल सके। बिनो ने पांच विकटें 53 रनो पर और बर्क ने चार विकटें 37 रनों पर गिराई।

रनों का सविस्तार विवरण इस प्रकार है :

प्रथम टैस्ट

मद्रास में अक्टूबर 19, 20, 22 और 23 को खेला गया, टॉस भारत ने जीता और आस्ट्रेलिया ने मैच एक पारी और पांच रनों से। कप्तान : पी० आर० उमरीगर (भारत) और आई० डब्लू० जॉनसन (आस्ट्रेलिया)। विकेट-रक्षक : एन० एस० तम्हाने (भारत) और जी० आर० लैंगले (आस्ट्रेलिया)। निर्णायक : एम० जी० विजयसारथी और डी० डी० देसाई।

भारत

मांकड कै. मैकडॉनल्ड बा. बिनो	27	कै. लैंगले बा. लिंडवॉल	11
रॉय कै. हार्वे बा. बिनो	13	कै. हार्वे बा. लिंडवॉल	9
उमरीगर कै. क्रेग बा. बिनो	31	कै. लैंगले बा. लिंडवॉल	25
मांजरेकर पगवाधा बा. बिनो	41	बा. क्राफोर्ड	16
रामचन्द बा. क्राफोर्ड	0	पगबाधा बा. जॉनसन	28
अधिकारी कै. बर्क बा. क्राफोर्ड	5	पगबाधा बा. लिंडवॉल	0
कृपालसिंह कै. हार्वे बा. क्राफोर्ड	13	अपराजित	20
ताम्हाने अपराजित	9	कै. क्राफोर्ड बा. बिनो	5
पटेल कै. जॉनसन बा. बिनो	3	बा. लिंडवॉल	0
गुलाम महमद कै. हार्वे बा. बिनो	11	कै. बर्क बा. लिंडवॉल	13
एस. पी. गुप्ते कै. मेकडॉनल्ड बा. बिनो	4	बा. लिंडवॉल	8
अतिरिक्त	4	अतिरिक्त	18
	161		153

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–41, 2–44, 3–97, 4–98, 5–106, 6–134, 7–134, 8–137, 9–151, 10–161.

द्वितीय पारी : 1–18, 2–22, 3–39, 4–63, 5–99, 6–100, 7–113, 8–119, 9–143, 10–153.

आस्ट्रेलिया की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
लिंडवॉल	9	1	15	0	22·5	9	43	7
क्राफोर्ड	26	8	32	3	12	6	18	1
बिनो	29·3	10	72	7	20	5	59	1
मेके	20	9	25	0	—	—	—	—
जॉनसन	15	10	13	0	9	5	15	1

आस्ट्रेलिया

मेकडॉनल्ड स्ट. तम्हाने बा. मांकड	29
वर्क कै. तम्हाने बा. गुप्ते	10
हार्वे बा. मांकड	37
क्रेग कै. रामचन्द बा. मांकड	40
बर्ज पगबाधा बा. पटेल	35
मेके कै. तम्हाने बा. गुलाम अहमद	29
बिनो बा. गुलाम अहमद	6
लिंडवॉल कै. अधिकारी बा. गुप्ते	8
जॉनसन कै. राय बा. गुप्ते	73
क्राफोर्ड स्ट. तम्हाने बा. मांकड	34
लेंगले अपराजित	10
अतिरिक्त	8
	319

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1-12, 2-58, 3-97, 4-152, 5-186, 6-187, 7-198, 8-200, 9-287, 10-319.

भारत की गेंदबाजी

	ओ०	मे० ओ०	रन	विकेट
रामचन्द	5	1	12	0
उमरीगर	4	0	17	0
सुभाष गुप्ते	28·3	6	89	3
गुलाम अहमद	38	17	67	2
मांकड	45	15	90	4
पटेल	14	3	36	1

द्वितीय टैस्ट

बम्बई में अक्तूबर 26, 27, 29, 30 और 31 को खेला गया, टॉस भारत ने जीता और मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका। कप्तान : पी० आर० उमरीगर (भारत) और आर० आर० लिंडवॉल (आस्ट्रेलिया)। विकेट-रक्षक : एन० एस० तम्हाने (भारत) और एल० मेडॉक्स (आस्ट्रेलिया)। निर्णायक : बी० जे० मोहनी और ए० आर० जोशी।

भारत

मॉकड कै. वर्ज बा. लिडवॉल	0	कै. बर्क बा. बिनो	16
रॉय कै. वर्ज बा. क्राफोर्ड	31	कै. मेडोक्स बा. बिनो	79
उमरीगर बा. क्राफोर्ड	8	कै. और बा. लिडवॉल	78
माँजरेकर कै. हार्वे बा. बिनो	55	बा. रथरफोर्ड	30
घोरपडे बा. क्राफोर्ड	0		
रामचन्द कै. एवजी बा. मेके	109	कै. मेडोक्स बा. विल्सन	16
फडकर कै. मेडोक्स बा. बिनो	1	अपराजित	3
अधिकारी कै. डेविडसन बा. मेके	33	अपराजित	22
तम्हाने कै. हार्वे बा. डेविडसन	5		
पटेल कै. मेडोक्स बा. मेके	6		
सुभाष गुप्ते अपराजित	0		
अतिरिक्त	3	अतिरिक्त	6
	251	पाँच विकटो पर	250

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–0, 2–18, 3–74, 4–74, 5–130, 6–140, 7–235, 8–240, 9–251, 10-251.

द्वितीय पारी : 1–31, 2–121, 3–191, 4–217, 5–242.

आस्ट्रेलिया की गेंदबाजी

	ओ०	मे० ओ०	रन	विकेट	ओ०	मे० ओ०	रन	विकेट
लिडवॉल	22	7	60	1	23	9	40	1
क्राफोर्ड	12	3	28	3	13	4	24	0
डेविडसन	9	2	24	1	14	9	18	0
बिनो	25	7	54	2	42	15	98	2
मेके	14·2	5	27	3	17	6	22	0
विल्सन	15	6	39	0	21	11	25	1
बर्क	2	0	12	0	2	0	6	0
रथरफोर्ड	1	0	4	0	5	2	11	1

आस्ट्रेलिया

बर्क कै. उमरीगर बा. मांकड	161
रथरफोर्ड कै. तम्हाने बा. गुप्ते	30
हार्वे कै. एवजी बा. पटेल	140
बर्ज कै. पटेल बा. गुप्ते	83
मेके कै. रॉय बा. पटेल	26
डेविडसन पगबाधा बा. रामचन्द	16
बिनो कै. एवजी बा. गुप्ते	2
लिंडवॉल अपराजित	48
मेडोक्स अपराजित	8
अतिरिक्त	9
सात विकटों पर पारी समाप्ति की घोषणा	523

विकटों का पतन :

1–57, 2–261, 3–398, 4–432 5–459, 6–462, 7–470.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
फडकर	39	9	92	0
रामचन्द	18	2	78	1
पटेल	29	10	111	2
सुभाष गुप्ते	38	13	115	3
मांकड	46	9	118	1

तृतीय टैस्ट

कलकत्ता में नवम्बर 2, 3, 5 और 6 को खेला गया, टॉस भारत ने जीता और आस्ट्रेलिया ने मैच 94 रनों से। कप्तान : पी० आर० उमरीगर (भारत) और आई० डब्लू० जॉनसन (आस्ट्रेलिया)। विकेट-रक्षक : एन० एस० तम्हाने (भारत) और जी० आर० लेंगले (आस्ट्रेलिया)। निर्णायक : बी० जे० मोहनी और जी० एलिंग।

आस्ट्रेलिया

मेकडॉनल्ड बा. गुलाम अहमद	3	पगवाधा बा. रामचन्द	0
बर्क कै. मांजरेकर बा. गुलाम अहमद	10	कै. कांट्रेक्टर बा. गुलाम अहमद	2
हार्वे कै. तम्हाने बा. गुलाम अहमद	7	कै. उमरीगर बा. मांकड	69
क्रेग कै. तम्हाने बा. गुप्ते	36	बा. गुलाम अहमद	6
बर्ज कै. रामचन्द बा. गुलाम अहमद	58	बा. गुलाम अहमद	22
मैके पगवाधा बा. मांकड	5	हिट विकेट बा. मांकड	27
बिनो बा. गुलाम अहमद	24	बा. गुप्ते	21
लिडवॉल बा. गुलाम अहमद	8	कै. तम्हाने बा. मांकड	28
जॉनसन कै. गुलाम अहमद बा. मांकड	1	स्ट. तम्हाने बा. मांकड	5
क्राफोर्ड कै. कांट्रेक्टर बा. गुलाम अहमद	18	अपराजित	1
लैंगले अपराजित	1		
अतिरिक्त	6	अतिरिक्त	8
	177	नौ विकटों पर पारी समाप्ति की घोषणा	189

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–6, 2–22, 3–25, 4–93, 5–106, 6–141, 7–152, 8–158, 9–163, 10–177.

द्वितीय पारी : 1–0, 2–9, 3–27, 4–59, 5–122, 6–149, 7–159, 8–188, 9–189.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
रामचन्द	2	1	1	0	2	1	6	1
उमरीगर	16	3	30	0	20	9	21	0
गुलाम अहमद	20.3	6	49	7	29	5	81	3
सुभाष गुप्ते	23	11	35	1	7	1	24	1
मांकड	25	4	56	2	9·4	1	49	4

भारत

रॉय बा. लिडवॉल	13	पगबाधा बा. बर्क	24
कांट्रैक्टर पगबाधा बा. बिनो	22	बा. जॉनसन	20
उमरीगर कै. बर्ज बा. जॉनसन	5	कै. बर्क बा. बिनो	28
मांजरेकर कै. हार्वे बा. बिनो	33	कै. हार्वे बा. बिनो	22
मांकड पगबाधा बा. बिनो	4	बा. बिनो	24
रामचन्द स्ट. लेंगले बा. बिनो	2	बा. बर्क	3
कृपालसिंह कै. मेके बा. बिनो	14	बा. बिनो	0
प्रकाशभंडारी पगबाधा बा. लिडवॉल	17	कै. हार्वे बा. बर्क	2
तम्हाने बा. बिनो	5	बा. बिनो	0
गुलाम अहमद कै. मेके बा. लिडवॉल	10	बा. बर्क	0
सुभाष गुप्ते अपराजित	1	अपराजित	0
अतिरिक्त	10	अतिरिक्त	13
	136		136

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1-15, 2-20, 3-76, 4-80, 5-82, 6-98, 7-99, 8-115, 9-135, 10-136.

द्वितीय पारी : 1-44, 2-50, 3-94, 4-99, 5-102, 6-121, 7-134, 8-136, 9-136, 10-136.

आस्ट्रेलिया की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
लिडवॉल	25·2	12	32	3	12	7	9	0
क्राफोर्ड	3	3	0	0	2	1	1	0
जॉनसन	12	2	27	1	14	5	23	1
बिनो	29	10	52	6	24·2	6	53	5
हार्वे	1	1	0	0	—	—	—	—
बर्क	8	3	15	0	17	4	37	4

वेस्टइंडीज की टीम भारत में, 1958-59

एफ० सी० एम० अलेक्जेंडर ने वेस्टइंडीज की भारत मे आने वाली द्वितीय टीम का नेतृत्व किया। इस टीम ने भारत में 17 मैच खेले जिनमे से 10 में इसकी विजय हुई और शेष सात मैचो में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका। खेल के हर क्षेत्र में इस टीम ने अपने प्रतिद्वन्द्वी को पछाड़ दिया। गुलाम अहमद भारत के पांचों टैस्ट मैचों के लिये कप्तान नियुक्त हुए लेकिन चोट लग जाने के कारण प्रथम टैस्ट मैच में भाग नहीं ले सके। उनके स्थान पर उमरीगर ने भारत का नेतृत्व किया। तृतीय टैस्ट मैच के बाद गुलाम अहमद ने टैस्ट क्रिकेट से संन्यास ले लिया। उमरीगर को चतुर्थ टैस्ट के लिये कप्तान नियुक्त किया गया। लेकिन इस बात पर मतभेद हो गया कि चुने हुए जो खिलाड़ी उपलब्ध नहीं थे उनका स्थान कौन ले। उमरीगर ने भारत की टीम का नेतृत्व करने से इनकार कर दिया लेकिन खेलने से नहीं। *वीनू मांकड भारत के कप्तान बने। पंचम टैस्ट में अधिकारी को भारत* का नेतृत्व सौंपा गया। ऐसी परिस्थितियों में वेस्टइंडीज की शक्तिशाली टीम द्वारा भारत की टीम को उखाड़ फेंकना कोई आश्चर्य की बात नहीं थी।

वेस्टइंडीज टीम में निम्नलिखित खिलाड़ी थे :

1. एफ० सी० एम० अलेक्जेंडर
2. जे० के० होल्ट
3. के० टी० रामादीन
4. जी० ए० सोबर्स
5. सी० सी० हंट
6. आर० कन्हाई
7. ओ० जी० स्मिथ
8. आर० गिलक्रिस्ट
9. जे० टेलर
10. जे० सोलोमन
11. जे० एल० हेंड्रिक्स
12. एल० गिब्स
13. इ० ए० ऐटकिन्सन
14. डब्लू० डब्लू० हॉल
15. डब्लू० रोडरिग्ज
16. आर० बायनो
17. बी० बूचर

बी० एम० गेस्किन (प्रबन्धक)

टैस्ट मैचों के अलावा खेले गये मैचों का संक्षेप में विवरण इस प्रकार है :

विरुद्ध सेना : राष्ट्रीय रक्षा अकादमी, खड़कवासला में : नवम्बर 5, 6 और 7 को

सेना : 170 और 4 विकटों पर 207 और पारी समाप्ति की घोषणा (ए० के० सेनगुप्ता 100*)। वेस्टइंडीज : 9 विकटों पर 308 और पारी समाप्ति की घोषणा (बूचर 95*, हंट 53) और बिना विकेट खोये 43 रन। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

विरुद्ध बडौदा : नवम्बर 10, 11 और 12 को

वेस्टइंडीज : 239 (होल्ट 92, सोबर्स 61) और 1 विकेट पर 223 और पारी समाप्ति की घोषणा (सोबर्स 108*, होल्ट 94*)। बड़ौदा: 133 (रामादीन ने 7 रन देकर 3 विकटें लीं) और 144 (जे० एम० घोरपडे 57, हॉल ने 41 रन देकर 5 विकटें लीं)। वेस्टइंडीज 185 रनों से विजयी।

विरुद्ध बोर्ड अध्यक्ष एकादश : अहमदाबाद में, नवम्बर 14, 15 और 16 को

वेस्टइंडीज : 6 विकटों पर 316 और पारी समाप्ति की घोषणा (कन्हाई 83, स्मिथ 56, सोलोमन 55*, हंट 54)। बोर्ड अध्यक्ष एकादश : 124 (हार्डीकर 64) और 227 (कांट्रेक्टर 110, स्मिथ ने 63 रन देकर 5 विकटें लीं)। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

विरुद्ध महाराष्ट्र : शोलापुर में, नवम्बर 19, 20 और 21 को

वेस्टइंडीज : 6 विकटों पर 312 और पारी समाप्ति की घोषणा (बूचर 76, हंट 74, सोलोमन 51) और 2 विकटों पर 193 और पारी समाप्ति की घोषणा (कन्हाई 68*, होल्ट 62)। महाराष्ट्र : 183 और 6 विकटों पर 199 (नाडकर्णी 95, भोंसले 55)। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

विरुद्ध क्रिकेट क्लब ऑफ इंडिया : बम्बई में, नवम्बर 23, 24 और 25 को

वेस्टइंडीज : 196 (होल्ट 103* पारी प्रारम्भ करने पर रमाकान्त देसाई ने 60 रन देकर 5 विकटें लीं) और 8 विकटों पर 234 रन

---

*अपराजित

और पारी समाप्ति की घोषणा (सोबर्स 93)। क्रिकेट क्लब ऑफ इंडिया : 166 (ए० एन० आपटे 54, सोबर्स ने 31 रन देकर 5 विकटें ली) और 6 विकटों पर 175 (एम० एल० आपटे 70)। मैच मे हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

विरुद्ध मध्य क्षेत्र : जबलपुर में, दिसम्बर 6, 7 और 8 को

वेस्टइंडीज : 349 (हेड्रिक्स 73, सोलोमन 54) और 1 विकेट पर 134 (बायनो 64*, हंट 59)। मध्य क्षेत्र : 265 (मांकड 88, दुर्रानी 80, टेलर ने 75 रन देकर 5 विकटें ली)। मैच मे हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

विरुद्ध भारतीय विश्वविद्यालय : नागपुर में, दिसम्बर 20 और 21 को

वेस्टइंडीज : 4 विकटों पर 368 और पारी समाप्ति की घोषणा (सोवर्स 161*, हंट 137)। भारतीय विश्वविद्यालय : 49 (गिलक्रिस्ट ने 16 रन देकर 6 विकटें ली) और 167 (रोडरिग्ज ने 90 रन देकर 7 विकटें ली)। वेस्टइंडीज एक पारी और 152 रनों से विजयी।

विरुद्ध बिहार राज्यपाल एकादश : जमशेदपुर, दिसम्बर 26, 27 और 28 को

वेस्टइंडीज : 276 (बायनो 76) और 2 विकटो पर 225 और पारी समाप्ति की घोषणा (स्मिथ 140*, कन्हाई 100*)। बिहार राज्यपाल एकादश : 190 (टेलर ने 36 रन देकर 5 विकटें ली) और 181 (एच० डी० अमरोलीवाला 52)। वेस्टइंडीज 130 रनो से विजयी।

विरुद्ध पूर्व क्षेत्र : जोरहाट में, जनवरी 10 और 11 को

पूर्वक्षेत्र : 106 (हॉल ने 54 रन देकर 7 विकटें ली) और 39 (ऐटकिन्सन ने 10 रन देकर 6 विकटें ली)। वेस्टइंडीज : 162 (सोवर्स 54, डी० एस० मुकर्जी ने 55 रन देकर 5 विकटें ली)। वेस्टइंडीज एक पारी और 17 रनों से विजयी।

विरुद्ध दक्षिण क्षेत्र : बंगलौर में, जनवरी 16, 17 और 18 को

वेस्टइंडीज : 7 विकटों पर 373 और पारी समाप्ति की घोषणा (होल्ट 105, स्मिथ 79, हंट 50) और 3 विकटो पर 178 और पारी समाप्ति की घोषणा (एलेक्जेंडर 72*, हंट 61)। दक्षिण क्षेत्र : 136

---

*अपराजित

(ऐटकिन्सन ने 38 रन देकर 5 विकटें ली) और 137 (ए० एम० कृष्णस्वामी 57, गिलक्रिस्ट ने 52 रन देकर 6 विकटें ली)। वेस्टइंडीज 278 रनों से विजयी।

विरुद्ध हैदराबाद : जनवरी 30, 31 और फरवरी 1 को

हैदराबाद : 232 (हबीब अहमद 50) और 137 (जयसिम्ह 52)। वेस्टइंडीज : 315 (हंट 80, बूचर 64, कन्हाई 62) और बिना विकेट खोये 57 रन। वेस्टइंडीज दस विकटों से विजयी।

विरुद्ध उत्तर क्षेत्र : अमृतसर में, फरवरी 13, 14 और 15 को

वेस्टइंडीज : 76 (फडकर ने 29 रन देकर 5 विकटें ली, वी० एन० स्वामी ने 32 रन देकर 5 विकटें ली) और 228 (कन्हाई 79)। उत्तर क्षेत्र : 59 (गिब्ज ने 22 रन देकर 5 विकटें ली) और 172 (स्वर्णजीत सिंह 60, गिब्ज ने 39 रन देकर 5 विकटें ली)। वेस्टइंडीज 73 रनों से विजयी।

टैस्ट मैच

सुभाष गुप्ते को रामचन्द और नाडकर्णी ने सहयोग दिया और प्रथम टैस्ट मैच के प्रथम दिवस भारत ने वेस्टइंडीज की कुल रन संख्या को 227 रनों तक सीमित रखा। कन्हाई (66) और स्मिथ (63) ने आधे से अधिक रन बनाये और अपनी टीम को कठिन परिस्थिति से बचाया। हार्डीकर ने अपने प्रथम टैस्ट के प्रथम ओवर की तीसरी गेंद पर कन्हाई जैसे महान् बल्लेबाज का विकेट गिरा दिया। अपने प्रथम टैस्ट में गार्ड ने सोबर्स को आउट किया।

द्वितीय दिवस का खेल तो वेस्टइंडीज के तेज गेंदबाजों का रहा। हॉल, गिलक्रिस्ट और ऐटकिन्सन की गेंदबाजी के विरुद्ध भारत केवल 152 रन बना सका। भारत की ओर भी बुरी दशा होती अगर उमरीगर (55) और रामचन्द (48) इस तेज गेंदबाजी का डटकर मुकाबला नहीं करते।

अतिथियों ने अपनी बल्लेबाजी की शक्ति द्वितीय पारी में प्रदर्शित की। केवल 4 विकटों पर 323 रन बनाकर उन्होंने पारी समाप्ति की घोषणा कर दी। सोबर्स ने अपना कमाल दिखाया और 142 रन बनाकर भी अपराजित रहे। उन्होंने स्मिथ के साथ चतुर्थ विकेट की साझेदारी में 119 रन जोड़े और पंचम विकेट की असमाप्त साझेदारी में बूचर के साथ 134 रन बनाए। कन्हाई को आउट करके गुप्ते ने टैस्ट क्रिकेट में अपना सौवां विकेट प्राप्त किया।

जैसा कि पहले भी अनेक बार हुआ था, भारत ने द्वितीय पारी में बल्लेबाजी अधिक सफलता से की और केवल पाँच विकटों पर 289 रन बना लिये। दृढ़ता से खेलते हुए रॉय 444 मिनट तक विकेट पर जमे रहे लेकिन दस रनों की कमी से अपना शतक पूरा नहीं कर सके। उमरीगर ने फिर उपयोगी पारी खेलते हुए टैस्ट क्रिकेट में अपने 2000 रन पूरे कर लिये।

कानपुर में खेले गये द्वितीय टैस्ट मैच में सुभाष गुप्ते ने फिर साबित कर दिया कि वह एक श्रेष्ठ गेंदबाज है। उन्होंने वेस्टइंडीज के 9 विकेट केवल 102 रन देकर प्राप्त कर लिये। अतिथि टीम अलेक्जेंडर (70) और सोलोमन (45) के योगदान के बाद भी केवल 222 रन बना सकी।

रॉय और कांट्रैक्टर ने भारत की बल्लेबाजी का श्रीगणेश सुन्दर ढंग से किया। उमरीगर और मांजरेकर ने स्थिति को और सुदृढ़ बना दिया और एक समय भारत के केवल दो विकेट पर 182 रन थे। लेकिन जब हॉल ने भारत के अन्तिम बल्लेबाज गुप्ते को आउट किया तो भारत की भी कुल रन संख्या उतनी ही थी जितनी की वेस्टइंडीज की।

द्वितीय पारी में होल्ट और हंट अपना-सा मुँह लेकर वापस लौट आये और गणना पट्ट पर अतिथियों की रन संख्या शून्य थी। तत्पश्चात् भारत की सफलता की डोरी टूट गई और केवल इसी टैस्ट में ही नहीं बल्कि शेष सभी टैस्ट मैचों में भारत की स्थिति दयनीय रही। सोबर्स ने भारतीय गेंदबाजों के छक्के छुड़ा दिये और जब पारी समाप्ति की घोषणा की गई तो वेस्टइंडीज के 7 विकटों पर 443 रन थे। सोबर्स 198 रन बनाकर रन-आउट हो गये लेकिन इसके पहले उन्होंने बूचर के साथ पांचवें विकेट की साझेदारी में 114 रन जोड़े और सोलोमन के साथ छठे विकेट की साझेदारी में 163 रन जोड़े।

रॉय और कांट्रैक्टर ने भारत की द्वितीय पारी में भी प्रथम विकेट पर 99 रन जोड़ कर पारी का श्रीगणेश सुन्दर ढंग से ही किया। उमरीगर और मांजरेकर ने फिर स्थिति को अधिक सुदृढ़ कर दिया और एक समय भारत के 173 रन बन गये थे और उसने अपने केवल दो बल्लेबाजों को खोया था। लेकिन दूसरी नई गेंद से हॉल और टेलर ने भारत की पारी को 240 रनों पर समाप्त कर दिया और वेस्टइंडीज ने दूसरा टैस्ट मैच 203 रनों से जीत लिया।

भारत की सबसे करारी हार एक पारी और 336 रनो से तृतीय टैस्ट में कलकत्ता में हुई। अतिथि बल्लेबाज रन एकत्रित करने की दावत में जुट गये और 5 विकटों पर 614 रन बनाकर पारी समाप्ति की घोषणा

करदी गई । कन्हाई और बूचर दोनों ने टेस्ट क्रिकेट में अपना पहला शतक पूरा किया । सोबर्स 106 रन बनाकर अपराजित रहे । अपने जीवन की सबसे शानदार पारी खेलते हुए कन्हाई ने 390 मिनट में 42 चौके मार कर 256 रन बनाये ।

उमरीगर ने प्रथम पारी में और मांजरेकर ने द्वितीय पारी में बल्लेबाजी कुशलतापूर्वक की । भारत के दूसरे बल्लेबाज विकेट पर टिक न सके और प्रथम पारी मे 124 और द्वितीय पारी मे 154 रन ही बना पाए ।

मद्रास में चतुर्थ टेस्ट मैच में अतिथियों ने फिर भारी रन संख्या बनाई । बूचर ने शतक लगाया और कन्हाई केवल एक रन की कमी से अपना शतक पूरा नहीं कर सके । 500 रनों की कुल रन संख्या के सामने भारत के बल्लेबाज कमजोरी से खेले और केवल 222 रन बना सके हालांकि रॉय (49) और कृपालसिंह (53) ने शानदार बल्लेबाजी की । अलेक्जेंडर ने भारत को तुरन्त बल्लेबाजी नहीं दी और जब उनकी टीम ने 5 विकटो पर 168 रन बना लिये और खेल में 450 मिनट का समय बाकी था तो उन्होंने भारत को बल्लेबाजी दी । विजय के लिये 447 रनों की आवश्यकता थी लेकिन भारत तो केवल 151 रन ही बना सका । हालांकि बोर्डे 213 मिनट वेस्टइंडीज और विजय के बीच डटे रहे और उन्होंने 9 चौके लगाकर 56 रन बनाये ।

इस टेस्ट शृंखला के चौथे भारतीय कप्तान अधिकारी ने टॉस जीतकर बल्लेबाजी प्रारम्भ की । इस शृंखला में भारतीय कप्तान ने प्रथम बार टॉस जीता, प्रथम बार एक भारतीय बल्लेबाज ने शतक बनाया, प्रथम बार एक पारी में भारत की ओर से दो शतकीय साझेदारियाँ रही । कान्ट्रेक्टर (92) और उमरीगर (76) ने द्वितीय विकेट की साझेदारी में 137 रन जोड़े । बोर्डे और अधिकारी ने छठे विकेट की साझेदारी में कुल रन संख्या को 242 से 376 पर पहुँचा दिया । बोर्डे ने 16 चौके लगाकर 255 मिनट मे 109 रन बनाये । भारत की कुल रन संख्या 415 रही ।

भारतीय गेंदबाजों की गहरी पिटाई हुई जब हंट और होल्ट ने वेस्टइंडीज की पारी प्रारम्भ की । प्रथम विकेट की साझेदारी 159 रनों की रही । होल्ट, स्मिथ और सोलोमन ने अपने शतक पूरे किये । इस भयंकर आक्रामक बल्लेबाजी का अंत अलेक्जेंडर ने आठ विकटों पर 644 रन बन जाने पर पारी समाप्ति की घोषणा से किया । छोटे शरीर वाले रमाकान्त देसाई ने अपने प्रथम टेस्ट मैच मे प्रभावशाली तेज गेंदबाजी की और 4 विकटें 169 रन देकर प्राप्त की ।

भारत के लिये इस मैच में हार से बचना कठिन प्रतीत होता था क्योंकि उमरीगर और मांजरेकर के हाथों में गहरी चोट लगी हुई थी। लेकिन बोर्डे मौके पर फिर चमके। मैच के आखिरी ओवर में गिलक्रिस्ट ने बोर्डे पर बराबर बम्पर फेंके और एक बम्पर को मैदान के बाहर पीटते समय बोर्डे ने अपने विकटों को गिरा लिया जबकि इस मैच के दूसरे शतक के लिये उसे केवल चार रनों की आवश्यकता थी। रॉय, डी० के० गायकवाड़ और अधिकारी ने भी भारत की कुल रन संख्या (275) में अच्छा योगदान दिया।

रनों का सविस्तार विवरण इस प्रकार है:

प्रथम टैस्ट

बम्बई में नवम्बर 28, 29, 30 दिसम्बर 1 और 2 को खेला गया, टॉस वेस्टइंडीज ने जीता और मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका। कप्तान : पी० आर० उमरीगर (भारत) और एफ० सी० एम० अलेक्जेंडर (वेस्टइंडीज)। विकेट रक्षक : एन० एम० तम्हाने (भारत) और एफ० सी० एम० अलेक्जेंडर (वेस्टइंडीज)। निर्णायक : एम० जी० विजयसारथी और जे० आर० पटेल।

वेस्टइंडीज

होल्ट कै. तम्हाने बा. रामचन्द	16	कै. हार्डीकर बा. गार्डे	24
हंट कै. गार्डे बा. रामचन्द	0	कै. नाडकर्णी बा. गार्डे	10
सोबर्स कै. और बा. गार्डे	25	अपराजित	142
कन्हाई पगबाधा बा. हार्डीकर	66	कै. रॉय बा. गुप्ते	22
स्मिथ कै. रामचन्द बा. नाडकर्णी	63	कै. रॉय बा. गुप्ते	58
बूचर पगबाधा बा. गुप्ते	28	अपराजित	64
अलेक्जेंडर स्ट. तम्हाने बा. गुप्ते	5		
ऐटकिन्सन बा. गुप्ते	1		
रामादीन कै. नाडकर्णी बा. गुप्ते	9		
हॉल अपराजित	12		
गिलक्रिस्ट बा. नाडकर्णी	1		
अतिरिक्त	1	अतिरिक्त	3
	227	चार विकटों पर पारी समाप्ति की घोषणा	323

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–2, 2–36, 3–50, 4–118, 5–172,
6–200, 7–202, 8–206, 9–226, 10–227.

द्वितीय पारी : 1–27, 2–37, 3–70, 4–189.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
गार्ड	15	7	19	1	17	2	69	2
रामचन्द	12	2	31	2	10	3	22	0
उमरीगर	3	0	12	0	9	0	22	0
गुप्ते	33	9	86	4	35	4	111	2
बोर्डे	10	1	29	0	16	3	31	0
नाडकर्णी	21·1	7	40	2	15	3	29	0
हार्डीकर	7	5	9	1	10	2	36	0

भारत

रॉय बा. हॉल	18	कै. और बा. हॉल	90
कान्ट्रैक्टर कै. ऐटकिन्सन बा. हॉल	0	रन श्राउट	6
उमरीगर बा. गिलक्रिस्ट	55	बा. गिलक्रिस्ट	36
मांजरेकर कै. सोबर्स बा. हॉल	0	कै. कन्हाई बा. गिलक्रिस्ट	23
नाडकर्णी बा. ऐटकिन्सन	2	कै. कन्हाई बा. ऐटकिन्सन	7
रामचन्द कै. अलेक्जेंडर बा. ऐटकिन्सन	48	अपराजित	67
हार्डीकर पगबाधा बा. गिलक्रिस्ट	0	अपराजित	32
बोर्डे रन आउट	7		
तम्हाने अपराजित	9		
गार्ड बा. गिलक्रिस्ट	4		
एस. पी. गुप्ते कै. सोबर्स बा. गिलक्रिस्ट	1		
अतिरिक्त	8	अतिरिक्त	28
	152	पांच विकटों पर	289

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–0, 2–37, 3–37, 4–40, 5–120,
6–120, 7–132, 8–138, 9–148, 10–152.

द्वितीय पारी : 1–27, 2–88, 3–136, 4–159, 5–204.

वेस्टइंडीज की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
गिलक्रिस्ट	23·2	8	39	4	41	13	75	2
हॉल	14	4	35	3	30	10	72	1
ऐटकिन्सन	19	10	21	2	29	11	56	1
रामादीन	9	0	30	0	11	4	20	0
सोबर्स	3	0	19	0	3	0	8	0
स्मिथ	—	—	—	—	18	4	30	0

द्वितीय टैस्ट

कानपुर में दिसम्बर 12, 13, 14, 16 और 17 को खेला गया, टॉस वेस्टइंडीज ने जीता और मैच भी 203 रनों से। कप्तान: गुलाम अहमद (भारत) और एफ० सी० एम० अलेक्जेंडर (वेस्टइंडीज)। विकेट रक्षक: एन० एस० तम्हाने (भारत) और एफ० सी० एम० अलेक्जेंडर (वेस्टइंडीज)। निर्णायक: जे० आर० पटेल और मोहम्मद यूनस।

वेस्टइंडीज

होल्ट पगबाधा बा. गुप्ते	31	कै. बोर्डे बा. रामचन्द	0
हंट कै. बोर्डे बा. गुप्ते	29	कै. और बा. उमरीगर	0
सोबर्स कै. हार्डीकर बा. गुप्ते	4	रन आउट	198
कन्हाई हिट विकेट बा. गुप्ते	0	कै. तम्हाने बा. गुप्ते	41
स्मिथ कै. और बा. गुप्ते	20	रन आउट	7
बूचर बा. गुप्ते	2	कै. तम्हाने बा. रामचन्द	60
सोलोमन पगबाधा बा. गुप्ते	45	रन आउट	86
अलेक्जेंडर कै. हार्डीकर बा. गुप्ते	70	अपराजित	45
गिब्ज बा. रंजने	16		
हॉल कै. तम्हाने बा. गुप्ते	0		
टेलर अपराजित	0		
अतिरिक्त	5	*अतिरिक्त*	6
	222	सात विकटो पर पारी समाप्ति की घोषणा	443

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–55, 2–63, 3–65, 4–74, 5–76, 6–88, 7–188, 8–220, 9–222, 10–222.

द्वितीय पारी : 1–0, 2–0, 3–73, 4–83, 5–197, 6–360, 7–443.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
रंजने	18	6	35	1	—	—	—	—
रामचन्द	10	3	22	0	40	6	114	2
गुप्ते	34·3	11	102	9	23	2	121	1
गुलामग्रहमद	10	3	29	0	30	8	81	0
बोर्डे	13	4	29	0	5	0	15	0
उमरीगर	—	—	—	—	28	4	96	1
हार्डीकर	—	—	—	—	1	0	10	0

भारत

रॉय पगबाधा बा. सोबर्स	46	रन ग्राउट	45
कांट्रेक्टर पगबाधा बा. सोबर्स	41	बा. टेलर	50
उमरीगर कै. होल्ट बा. हॉल	57	कै. स्मिथ बा. हॉल	34
माँजरेकर पगबाधा बा. टेलर	30	रन ग्राउट	31
बोर्डे कै. अलेक्जेंडर बा. हॉल	0	कै. अलेक्जेंडर बा. टेलर	13
रामचन्द कै. अलेक्जेंडर बा. हॉल	4	बा. हॉल	0
हार्डीकर बा. हॉल	13	बा. हॉल	11
तम्हाने कै. होल्ट बा. हॉल	0	कै. सोलोमन बा. हॉल	20
रंजने बा. टेलर	3	बा. टेलर	12
गुलाम अहमद अपराजित	0	बा. हॉल	0
एस. पी. गुप्ते बा. हॉल	0	अपराजित	8
अतिरिक्त	28	अतिरिक्त	16
	222		240

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–93, 2–118, 3–182, 4–184, 5–191, 6–210, 7–211, 8–222, 9–222, 10–222.

द्वितीय पारी : 1–99, 2–107, 3–173, 4–178, 5–182, 6–194, 7–204, 8–227, 9–227, 10–240.

वेस्टइंडीज की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
हॉल	28·4	4	50	6	32	12	76	5
टेलर	18	7	38	2	30·1	11	68	3
गिब्ज	21	8	28	0	9	4	33	0
सोबर्स	24	4	62	2	21	10	29	0
स्मिथ	8	1	14	0	6	0	12	0
सोलोमन	2	1	2	0	3	2	6	0

तृतीय टैस्ट मैच

कलकत्ता में दिसम्बर 31, जनवरी 1, 3 और 4 को खेला गया, टॉस वेस्टइंडीज ने जीता और मैच भी एक पारी और 336 रनों से। कप्तान : गुलाम अहमद (भारत) और एफ० सी० एम० अलेक्जेंडर (वेस्टइंडीज) । विकेट रक्षक : एन० एस० तम्हाने (भारत) और एफ० सी० एम० अलेक्जेंडर (वेस्टइंडीज)। निर्णायक : एन० डी० नागरवाला और मोहम्मद यूनस।

वेस्टइंडीज

होल्ट कैं. कांट्रैक्टर बा. सुरेन्द्रनाथ	5
हंट कैं. सुरेन्द्रनाथ बा. गुप्ते	23
कन्हाई कै. उमरीगर बा. सुरेन्द्रनाथ	256
स्मिथ बा. उमरीगर	34
बूचर पगबाधा बा. गुलाम अहमद	103
सोबर्स अपराजित	106
सोलोमन अपराजित	69
अलेक्जेंडर, रामादीन, गिलक्रिस्ट, हॉल — बल्लेबाजी नहीं की	
अतिरिक्त	18
पांच विकटों पर पारी समाप्ति की घोषणा	614

विकटों का पतन :

1–13, 2–73, 3–180, 4–387, 5–454.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
फडकर	43	6	173	0
सुरेन्द्रनाथ	46	8	168	2
एस० पी० गुप्ते	39	8	119	1
गुलाम अहमद	16·1	1	52	1
उमरीगर	16	1	62	1
घोरपडे	2	0	22	0

भारत

रॉय कै. सोलोमन बा. गिलक्रिस्ट	11	कै. अलेक्जेंडर बा. हॉल	0
कांट्रेक्टर पगबाधा बा. रामादीन	4	बा. गिलक्रिस्ट	6
घोरपडे कै. अलेक्जेंडर बा. गिलक्रिस्ट	7	बा. सोबर्स	16
कैनी कै. अलेक्जेंडर बा. हॉल	16	बा. हॉल	0
उमरीगर अपराजित	44	कै. अलेक्जेंडर बा. हॉल	2
माँजरेकर बा. हॉल	0	अपराजित	58
फडकर कै. सोबर्स बा. गिलक्रिस्ट	3	बा. गिलक्रिस्ट	35
तम्हाने कै. सोबर्स बा. हॉल	0	बा. गिलक्रिस्ट	0
सुरेन्द्रनाथ रन आउट	8	कै. अलेक्जेंडर बा. गिलक्रिस्ट	3
गुलाम अहमद पगबाधा बा. सोबर्स	4	बा. गिलक्रिस्ट	0
एस० पी० गुप्ते बा. रामादीन	12	बा. गिलक्रिस्ट	15
अतिरिक्त	15	अतिरिक्त	19
	124		154

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–24, 2–26, 3–52, 4–52, 5–52, 6–57, 7–58, 8–89, 9–99, 10–124.

द्वितीय पारी : 1–5, 2–7, 3–10, 4–17, 5–44, 6–115, 7–131, 8–131, 9–131, 10–154.

वेस्टइंडीज की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
गिलक्रिस्ट	23	13	18	3	21	7	55	6
हॉल	15	6	31	3	18	3	55	3
रामादीन	16·5	8	27	2	8	3	14	0
स्मिथ	2	1	1	0	—	—	—	—
सोबर्स	6	0	32	1	2	0	11	1

चतुर्थ टैस्ट मैच

मद्रास में जनवरी 21, 22, 24, 25 और 26 को खेला गया, टॉस वेस्टइंडीज ने जीता और मैच भी 295 रनों से। कप्तान : वीनू मांकड (भारत) और एफ० सी० एम० अलेक्जेंडर (वेस्टइंडीज)। विकेट रक्षक : पी० जी० जोशी (भारत) और एफ० सी० एम० अलेक्जेंडर (वेस्टइंडीज)। निर्णायक : एम० जी० विजयसारथी और ए० आर० जोशी।

वेस्टइंडीज

हंट बा. मांकड	32	कै. सुरेन्द्रनाथ बा. गुप्ते	30
होल्ट पगबाधा बा. गुप्ते	63	अपराजित	81
कन्हाई रन आउट	99	पगबाधा बा. गुप्ते	14
सोवर्स कै. गुप्ते बा. मांकड	29	कै. जोशी बा. बोर्डे	9
स्मिथ बा. मांकड	0	कै. जोशी बा. गुप्ते	5
बूचर बा. रामचन्द	142	पगबाधा बा. गुप्ते	16
सोलोमन पगबाधा बा. बोर्डे	43	अपराजित	8
अलेक्जेंडर रन आउट	11		
ऐटकिन्सन अपराजित	29		
हॉल पगबाधा बा. मांकड	25		
गिलक्रिस्ट कै. रॉय बा. बोर्डे	7		
अतिरिक्त	20	अतिरिक्त	5
	500	पांच विकटों पर पारी समाप्ति की घोषणा	168

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–61, 2–152, 3–206, 4–206, 5–248, 6–349, 7–384, 8–453, 9–489, 10–500.

द्वितीय पारी : 1–70, 2–108, 3–123, 4–130, 5–150.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
रामचन्द	22	5	45	1	6	2	13	0
सुरेन्द्रनाथ	26	5	77	0	7	3	13	0
उमरीगर	8	2	16	0	11	3	25	0
एस. पी. गुप्ते	58	15	166	1	30	6	78	4
मांकड	38	6	95	4	—	—	—	—
बोर्डे	27	2	80	2	22	11	34	1
कृपालसिंह	2	1	1	0	—	—	—	—

भारत

रॉय बा. सोवर्स	49	कै. कन्हाई बा. हॉल	16
सेनगुप्ता कै. सोवर्स बा. हॉल	1	कै. अलेक्जेंडर बा. गिलक्रिस्ट	8
जोशी कै. अलेक्जेंडर बा. गिलक्रिस्ट	17	कै. अलेक्जेंडर बा. हॉल	3
कांट्रेक्टर रन आउट	22	कै. अलेक्जेंडर बा. गिलक्रिस्ट	3
उमरीगर कै. अलेक्जेंडर बा. हॉल	4	बा. सोवर्स	29
रामचन्द कै. गिलक्रिस्ट बा. ऐटकिन्सन	30	बा. गिलक्रिस्ट	1
कृपालसिंह कै. हॉल बा. सोवर्स	53	कै. अलेक्जेंडर बा. हॉल	9
मांकड बा. गिलक्रिस्ट	4	बीमारी के कारण अनुपस्थित	0
बोर्डे कै. स्मिथ बा. सोवर्स	0	कै. बूचर बा. सोवर्स	56
सुरेन्द्रनाथ पगवाधा बा. सोवर्स	0	कै. हंट बा. स्मिथ	8
एम० पी० गुप्ते अपराजित	0	अपराजित	2
अतिरिक्त	42	अतिरिक्त	16
	222		151

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–11, 2–60, 3–102, 4–121, 5–131, 6–135, 7–147, 8–221, 9–222, 10–222.

द्वितीय पारी : 1–11, 2–19, 3–45, 4–97, 5–98, 6–114, 7–118, 8–149, 9–151.

वेस्टइंडीज की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
गिलक्रिस्ट	18	9	44	2	17	9	36	3
हॉल	22	7	57	2	23	8	49	3
ऐटकिन्सन	15	6	31	1	9	5	7	0
सोवर्स	18·1	8	26	4	18	8	39	2
स्मिथ	5	0	22	0	3	1	4	1

पंचम टेस्ट

दिल्ली में फरवरी 6, 7, 8, 10 और 11 को खेला गया। टॉस भारत ने जीता और मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका। कप्तान : एच० आर० अधिकारी (भारत) और एफ० सी० एम० अलेक्जेंडर (वेस्टइंडीज)। विकेट-रक्षक : एन० एस० तम्हाने (भारत) और एफ० सी० एम० अलेक्जेंडर (वेस्टइंडीज)। निर्णायक : एस० के० गांगुली और एन० डी० नागरवाला।

भारत

बल्लेबाज	प्रथम पारी		द्वितीय पारी	
रॉय	कै. सोलोमन बा. गिलक्रिस्ट	1	कै. होल्ट बा. स्मिथ	58
कांट्रैक्टर	पगबाधा बा. हॉल	92	रन आउट	4
उमरीगर	बा. हॉल	76	बिमारी के कारण अनुपस्थित	0
मांजरेकर	कै. अलेक्जेंडर बा. हॉल	6	अपराजित	0
बोर्डे	कै. अलेक्जेंडर बा. स्मिथ	109	हिट विकेट बा. गिलक्रिस्ट	96
डी. के. गायकवाड	कै. होल्ट बा. गिलक्रिस्ट	6	कै. हंट बा. स्मिथ	52
अधिकारी	कै. अलेक्जेंडर बा. स्मिथ	63	कै. ऐवजी बा. स्मिथ	40
मांकड	कै. एवजी बा. गिलक्रिस्ट	21	बा. स्मिथ	0
तम्हाने	कै. गिलक्रिस्ट बा. स्मिथ	3	हिट विकेट बा. स्मिथ	5
एस. पी. गुप्ते	बा. हॉल	5	बा. गिलक्रिस्ट	0
देसाई	अपराजित	2	बा. गिलक्रिस्ट	5
	अतिरिक्त	31	अतिरिक्त	15
		415		275

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–6, 2–143, 3–170, 4–208, 5–242, 6–376, 7–399, 8–407, 9–413, 10–415.

द्वितीय पारी : 1–5, 2–98, 3–135, 4–243, 5–247, 6–260, 7–264, 8–274, 9–275.

वेस्टइण्डीज की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
गिलक्रिस्ट	30·3	8	90	3	24·2	6	62	3
हॉल	26	4	66	4	13	5	39	0
ऐटकिन्सन	14	4	44	0	1	0	4	0
स्मिथ	40	7	94	3	42	19	90	5
सोवर्स	24	3	66	0	—	—	—	—
सोलोमन	7	2	24	0	21	9	44	0
बूचर	—	—	—	—	6	1	17	0
हंट	—	—	—	—	4	2	4	0

वेस्टइण्डीज

हंट पगबाधा बा. अधिकारी	92
होल्ट कै. रॉय बा. देसाई	123
वन्हाई पगबाधा बा. देसाई	40
बूचर पगबाधा बा. अधिकारी	70
स्मिथ कै. तम्हाने बा. देसाई	100
सोलोमन अपराजित	100
सोवर्स कै. तम्हाने बा. देसाई	44
अलेक्जेंडर रन आउट	25
ऐटकिन्सन कै. मोर बा. अधिकारी	37
हॉल अपराजित	0
गिलक्रिस्ट-बल्लेबाजी नहीं की	—
अतिरिक्त	12
आठ विकटों पर पारी समाप्ति की घोषणा	644

विकटों का पतन :

1—159, 2—244, 3—263, 4—390,
5—455, 6—524, 7—565, 8—635.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
देसाई	49	10	169	4
मांकड	55	12	167	0
एस० पी० गुप्ते	60	16	144	0
अधिकारी	26	2	68	3
कांट्रैक्टर	4	1	11	0
बोर्डे	17	3	53	0
रॉय	2	0	12	0
गायकवाड	1	0	8	0

——

भारत की टीम इंग्लैंड में, 1959

इंग्लैंड का भ्रमण करने वाली पांचवीं भारतीय क्रिकेट टीम का नेतृत्व डी० के० गायकवाड ने किया। इस टीम में पंकज रॉय उपकप्तान, बड़ौदा के महाराजा श्री फतेहसिंह राव गायकवाड प्रबन्धक और श्री ए० एन० घोष कोषाध्यक्ष थे। टीम ने 33 प्रथम श्रेणी के मैच खेले जिनमें से 6 में वह विजयी रही, 11 में हार गई और बाकी के 16 मैचों में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका। पांचों टैस्ट मैचों मे भारत की हार हुई।

टीम के खिलाड़ी निम्नलिखित थे:—

1. डी० के० गायकवाड (कप्तान)
2. पंकज रॉय (उप-कप्तान)
3. पी० आर० उमरीगर
4. एस० पी० गुप्ते
5. वी० एल० मांजरेकर
6. ए० जी० कृपालसिंह
7. एन० जे० कांट्रैक्टर
8. ए० एल० आपटे
9. सी० जी० बोर्डे
10. जे० एम० घोरपडे
11. आर० जी० नाडकर्णी
12. एम० एल० जयसिम्ह
13. एन० एस० तम्हाने
14. पी० जी० जोशी
15. सुरेन्द्र नाथ
16. वी० एम० मुद्दैया
17. आर० बी० देसाई

बड़ौदा के महाराजा श्री फतहसिंह राव गायकवाड (प्रबन्धक)
श्री ए० एन० घोष (कोषाध्यक्ष)

टीम के स्थायी सदस्य न होने पर भी अब्बास अली बेग ने प्रथम श्रेणी के कुल बारह मैचों में भाग लिया जिनमें दो टैस्ट मैच थे।

टैस्ट मैचों के अतिरिक्त खेले गये मैचों का संक्षेप में विवरण इस प्रकार है :

विरुद्ध भारतीय जीमखाना : अप्रैल 23 और 24 को

भारत : 268 (उमरीगर 97, गोनासेना ने 46 रन देकर 7 विकटें ली।) भारतीय जीमखाना : 136 (सुरेन्द्र नाथ ने 22 रन देकर 4 विकटें ली) और 7 विकटों पर 132 रन। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

विरुद्ध नोरफोक के ड्यूक का एकादश : अप्रैल 25 को

वर्षा के कारण मैच बिलकुल बन्द रहा।

विरुद्ध वूस्टरशायर अप्रैल 29, 30 और मई 1 को

भारत : 219 (वोर्ड 90) और 3 विकटों पर 153 (उमरीगर 87)। वूस्टरशायर : 305 (जी० ड्यूज 122, आर० जी० ब्रोडबैंट 102*, गुप्ते ने 92 रन देकर 6 विकटें ली)। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

विरुद्ध क्लब क्रिकेट कान्फ्रेंस : मई 4 और 5 को

क्लब क्रिकेट कान्फ्रेन्स : 98 और 95 रन। भारत : 186 (रॉय 70, आपटे 55) और बिना विकेट खोये 9 रन। भारत की दस विकटों से जीत।

विरुद्ध केम्ब्रिज विश्वविद्यालय : मई 6, 7 और 8 को

केम्ब्रिज विश्वविद्यालय : 223 (ग्रीन 80) और 160 (ग्रीन 57, मुद्दया ने 36 रन देकर 6 विकटें ली)। भारत : 6 विकटों पर 436 और पारी समाप्ति की घोषणा (उमरीगर 252*)। भारत की एक पारी और 53 रनों से विजय।

विरुद्ध लीस्टरशायर : मई 9, 10 और 11 को

लीस्टरशायर : 8 विकटो पर 301 और पारी समाप्ति की घोषणा (हेलेम 58) और 4 विकटों पर 163 और पारी समाप्ति की घोषणा (विलसन 85)। भारत : 246 (डी० के० गायकवाड 57, मांजरेकर 51) और 2 विकटों पर 94 रन। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

विरुद्ध सर्रे : मई 13, 14 और 15 को

भारत : 249 (मांजरेकर 148, लोडर ने 37 रन देकर 5 विकटें ली) और 3 विकटो पर 205 और पारी समाप्ति की घोषणा (उमरीगर 83,

---

* अपराजित

कांट्रैक्टर 65) । सरे : 253 (कॉन्स्टेबल 91, बैरिंगटन 85, गुप्ते ने 77 रन देकर 6 विकटें ली) और 2 विकटों पर 151 (बैरिंगटन 59*, स्टीवर्ड 50) । मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका ।

विरुद्ध ग्लेमोरगन : मई 16, 18 और 19 को

ग्लेमोरगन : 182 (प्रेसडी 113, बोर्डे ने 17 रन देकर 4 विकटें ली) और 223 (वाटकिन्स 61, मेकून 52, मुर्दू या ने 79 रन देकर 6 विकटें ली) । भारत : 112 और 242 (बोर्डे 64, गायकवाड 63) । भारत 51 रनों से पराजित ।

विरुद्ध ईसेक्स : मई 20, 21 और 22 को

ईसेक्स : 9 विकटों पर 285 और पारी समाप्ति की घोषणा (नाइट 89, बियर 58) और 4 विकटों पर 83 और पारी समाप्ति की घोषणा । भारत : 158 (कृपालसिंह 52, राल्फ ने 33 रन देकर 5 विकटें ली) और 2 विकटों पर 98 रन । मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका ।

विरुद्ध एम० सी०सी० : मई 23, 25 और 26 को

एम० सी० सी० : 4 विकटों पर 375 और पारी समाप्ति की घोषणा (मिल्टन 104, डेक्सटर 100*, एम० जे० के० स्मिथ 82) और 1 विकेट पर 120 रन और पारी समाप्ति की घोषणा (एम० जे० के० स्मिथ 64*) । भारत : 211 (बोर्डे 88, उमरीगर 82, मॉस ने 41 रन देकर 5 विकटें ली) और 136 (इलिंगवर्थ ने 34 रन देकर 5 विकटें ली) । भारत 148 रनों से पराजित ।

विरुद्ध ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय : मई 27, 28 और 29 को

ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय : 172 (गुप्ते ने 84 रन देकर 4 विकटें ली) और 234 (बर्की 110, गुप्ते ने 110 रन देकर 6 विकटें ली) । भारत : 459 (मांजरेकर 204*, रॉय 155, बोर्डे 57) । भारत एक पारी और 53 रनों से विजयी ।

विरुद्ध सोमरसेट : मई 30, जून 1 और 2 को

भारत : 9 विकटों पर 432 और पारी समाप्ति की घोषणा (उमरीगर 203, गायकवाड 69, मांजरेकर 53) और 8 विकटों पर 119 और पारी समाप्ति की घोषणा (लैंगफोर्ड ने 56 रन देकर 5 विकटें ली) ।

---

*अपराजित

सोमरसेट : 300 (मिकून 92, ऐटकिन्सन 60, बांड ने 42 रन देकर 5 विकटें ली) और 4 विकटों पर 52 रन। मैच में हार-जीत का फैसला नही हो सका ।

विरुद्ध माइनर काउंटीज : जून 10, 11 और 12 को

भारत : 287 (गायकवाड़ 100, घोरपड़े 67, जयसिंह 51) और 7 विकटो पर 274 और पारी समाप्ति की घोषणा (कृपालसिंह 66*, घोरपड़े 52)। माइनर काउंटीज : 228 (आइकिन 118) और 4 विकटो पर 324 (शार्प 202, बेली 79)। भारत 6 विकटों से पराजित ।

विरुद्ध नोर्थम्पटनशायर : जून 13, 15 और 16 को

नोर्थम्पटनशायर : 211 (लाइटफुल 64) और 208 (वाट्स 52)। भारत : 6 विकटों पर 428 और पारी समाप्ति की घोषणा (उमरीगर 202*, मांजरेकर 55, रॉय 53)। भारत एक पारी और 9 रनों से विजयी।

विरुद्ध लंकाशायर : जून 24, 25 और 26 को

लंकाशायर 5 विकटो पर 400 और पारी समाप्ति की घोषणा (पुलर 137, ग्रीव्ज 95, बोंड 66*) भारत : 196 (कृपालसिंह 57, स्टेथम ने 36 रन देकर 5 विकटें ली) और 2 विकटो पर 87 रन। मैच में हार-जीत का फैसला नही हो सका ।

विरुद्ध डर्बीशायर : जून 27, 29 और 30 को

डर्बीशायर : 241 (ली 71, डॉक्स 54) और 5 विकटों पर 240 और पारी समाप्ति की घोषणा (मोरगन 65, कार 52)। भारत : 323 (आपटे 165, घोरपड़े 70, ई० स्मिथ ने 67 रन देकर 5 विकटें ली) और 2 विकटों पर 77 रन। मैच मे हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

विरुद्ध स्कॉटलैंड : जुलाई 8, 9 और 10 को

भारत : 293 (उमरीगर 153*. बार ने 43 रन देकर 5 विकटें ली) और 210 (कृपालसिंह 74)। स्कॉटलैंड : 261 (जोन्स 88) और 8 विकटों पर 153 (नाडकर्णी ने 8 रन देकर 3 विकटें ली)। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

---

* अपराजित

विरुद्ध यॉर्कशायर : जुलाई 11, 13 और 14 को

मारत : 381 (गायकवाड 176, रॉय 87, नाडकर्णी 52) और 2 विकटों पर 117 रन। यॉर्कशायर : 299 (इलिंगवर्थ 162)। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

विरुद्ध ससेक्स : जुलाई 15, 16 और 17 को

भारत : 180 (बोर्डे 50, जेम्स ने 65 रन देकर 5 विकटें लीं) और 5 विकटों पर 363 (जोशी 72, रॉय 63*, उमरीगर 61, बोर्डे 58, घोरपड़े 57*)। ससेक्स : 369 (डी० वी० स्मिथ 145, लेनहम 75)। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

विरुद्ध मिडलसेक्स : जुलाई 18, 20 और 21 को

भारत : 7 विकटों पर 373 और पारी समाप्ति की घोषणा (बेग 102, कांट्रैक्टर 55, रॉय 51, उमरीगर 51) और 6 विकटों पर 67 रन। मिडलसेक्स : 217 (हूकर 80) और 222 (बोर्डे ने 33 रन देकर 5 विकटें लीं)। भारत चार विकटों से विजयी।

विरुद्ध सरें : जुलाई 29, 30 और 31 को

भारत : 154 (रॉय 95, सिडनहेम ने 42 रन देकर 5 विकटें लीं, गिब्सन ने 48 रन देकर 5 विकटें लीं) और 139 (उमरीगर 56, लॉक ने 49 रन देकर 5 विकटें लीं)। सरें : 214 (सुरेन्द्र नाथ ने 46 रन देकर 5 विकटें लीं) और 5 विकटों पर 64 (सुरेन्द्र नाथ ने 28 रन देकर 4 विकटें लीं)। मैच मे हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

विरुद्ध ग्लेमोरगन : अगस्त 1, 3 और 4 को

भारत : 291 (गायकवाड 74, कांट्रैक्टर 50, शेपर्ड ने 77 रन देकर 5 विकटें लीं) और 199 (आपटे 103, शेपर्ड ने 57 रन देकर 5 विकटें लीं)। ग्लेमोरगन : 208 (प्रेसडी 82, पार्क हाउस 60) और 166 रन। भारत 116 रनों से विजयी।

विरुद्ध वॉरविकशायर : अगस्त 6, 7 और 8 को

भारत : 284 (नाडकर्णी 80, घोरपड़े 53) और 3 विकटों पर 241 और पारी समाप्ति की घोषणा (कांट्रैक्टर 73, आपटे 53, बोर्डे 50*)। वॉरविकशायर : 8 विकटों पर 356 और पारी समाप्ति की घोषणा (ब्रिज 56*, एम० जे० के० स्मिथ 52, फोक्स 52,

---

* अपराजित

गार्डनर 51) और 6 विकटों पर 92 रन। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

विरुद्ध नोटिंघमशायर : अगस्त 8, 10 और 11 को

भारत : 172 (उमरीगर 80) और 255 (जयसिम्ह 55)। नोटिंघमशायर : 284 (सिम्पसन 100, विनफील्ड 54, हिल 50, गुप्ते ने 108 रन देकर 8 विकटें लीं) और 2 विकटों पर 144 (मिलमैन 71*)। भारत की आठ विकटों से हार।

विरुद्ध यॉर्कशायर : अगस्त 12, 13 और 14 को

यॉर्कशायर : 146 (बोर्डे ने 17 रन देकर 3 विकटें लीं) और 6 विकटों पर 159 रन। भारत : 256 (जयसिम्ह 66, घोरपडे 59, नाडकर्णी 51, स्टीवर्ड ने 76 रन देकर 7 विकटें लीं)। मैच में हार-जीत का फैसला नही हो सका।

विरुद्ध ग्लॉसेस्टरशायर : अगस्त 15, 17 और 18 को

ग्लॉसेस्टरशायर . 9 विकटो पर 318 और पारी समाप्ति की घोषणा (ऐमेट 85, मिल्टन 77, मेयर 63) और 4 विकटों पर 186 और पारी समाप्ति की घोषणा (मिल्टन 57)। भारत : 179 (उमरीगर 80, कुक ने 27 रन देकर 5 विकटें ली) और 133 (डी० आर० स्मिथ ने 32 रन देकर 5 विकटें ली)। भारत की 192 रनों से हार।

विरुद्ध हेम्पशायर : अगस्त 26, 27 और 28 को

हेम्पशायर : 9 विकटों पर 360 और पारी समाप्ति की घोषणा (बरनर्ड 128, सेन्सबरी 53) और 3 विकटों पर 147 और पारी समाप्ति की घोषणा (ग्रे 58*, मार्शल 56)। भारत : 337 (बेग 116, कृपालसिंह 64, नाडकर्णी 59) और 8 विकटों पर 96 रन। मैच में हार-जीत का फैसला नही हो सका।

विरुद्ध केंट : अगस्त 29, 30 और सितम्बर 1 को

केंट : 258 (डिक्सन 76, बोर्डे ने 44 रन देकर 5 विकटें ली) और 147 (बोर्डे ने 42 रन देकर 5 विकटें ली)। भारत : 303 (गायकवाड 116) और 2 विकटों पर 106 (कांट्रेक्टर 51*)। भारत आठ विकटों से विजयी।

विरुद्ध ए० ई० आर० गिलीगन एकादश : सितम्बर 2, 3 और 4 को

गिलीगन एकादश : 375 (हेलेम 98, मोबर्स 74) और 7 विकटों पर

---

* अपराजित

200 और पारी समाप्ति की घोषणा (वॅरिल 54)। भारत : 285 कांट्रेक्टर 114) और 6 विकटों पर 254 (आपटे 112, बोर्डे 63)। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

विरुद्ध लंकाशायर :सितम्बर 5, 7 और 8 को

लंकाशायर : 7 विकटों पर 486 और पारी समाप्ति की घोषणा (ग्रीन्ज 202, पुलर 78, बॉड 61, क्लेटन 58) और 5 विकटों पर 175 और पारी समाप्ति की घोषणा (बॉंड 58*)। भारत : 448 (कृपालसिंह 178, बोर्डे 59, जयसिम्हा 56) और 3 विकटों पर 148 (बेग 59*, आपटे 55)। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

विरुद्ध टी० एन० पियर्स एकादश : सितम्बर 9, 10 और 11 को

भारत : 176 (जयसिम्हा 83*) और 310 (रॉय 79, गायकवाड 70*, कृपालसिंह 62)। पियर्स एकादश : 252 (सुरेन्द्रनाथ ने 52 रन देकर 5 विकटें ली) और 5 विकटों पर 235 (डेक्सटर 62*, मार्शल 61)। भारत की पांच विकटों से हार।

विरुद्ध डरहम : सितम्बर 12 और 14 को

डरहम : 8 विकटों पर 267 और पारी समाप्ति की घोषणा (मिलबर्न 101, हार्डी 50*) और 7 विकटों पर 152 और पारी समाप्ति की घोषणा। भारत : 181 (गायकवाड 51, वॉटसन ने 23 रन देकर 6 विकटें ली) और 4 विकटों पर 208 (बोर्डे 81)। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

टैस्ट मैच

टैस्ट मैचो मे भारत का खेल बहुत ही निराशाजनक और प्रभावहीन था। हर टैस्ट मैच मे वह अपने प्रतिद्वन्द्वी से पीछे रहा और इंग्लैंड ने प्रथम बार अपनी भूमि पर पाँचों टैस्ट मैच जीते।

उमरीगर, गायकवाड, कांट्रेक्टर, रॉय और बोर्डे ने भ्रमण में अपने हजार रन पूरे किये। चोट लग जाने के कारण मांजरेकर का कई मैचों में भाग न लेना भारत के लिये बहुत नुकसानदेह साबित हुआ।

एस० पी० गुप्ते ने प्रथम श्रेणी के मैचों में 95 विकेट 26·58 के औसत पर लिये लेकिन उन जैसे योग्य और कुशल गेंदबाज के लिये यह प्रदर्शन आशा से कम था। बोर्डे और नाडकर्णी लाभदायक खिलाड़ी सिद्ध हुए। सुरेन्द्रनाथ ने अचूक गेंदबाजी की। टैस्ट मैचों में उन्होंने 16 विकटें 26.62 के औसत से ली। उनकी गेंदबाजी भारत की ओर से सर्वश्रेष्ठ थी।

---

* अपराजित

इंग्लैंड के तेज गेंदबाज स्टेथम और ट्रूमेन ने भारतीय बल्लेबाजों को सबसे अधिक परेशान किया। कुल मिलाकर भारत ने टैस्ट मैचों में 109 पारियां खेली जिनमें केवल दो शतक बने और 6 खिलाड़ियों ने पचास से ऊपर रन बनाए थे। भारतीय हार का मुख्य कारण बल्लेबाजी में असफलता थी।

टैस्ट मैचों में रनों का सविस्तार विवरण इस प्रकार है :

प्रथम टैस्ट

नॉटिंघम में जून 4, 5, 6, और 8 को खेला गया, टॉस इंग्लैंड ने जीता और मैच भी एक पारी और 59 रनों से। कप्तान : पी० बी० एच० मे (इंग्लैंड) और डी० के० गायकवाड (भारत)। विकेट-रक्षक : टी० जी० ईवान्स (इंग्लैंड) और पी० जी० जोशी (भारत)। निर्णायक : जे० एस० बुलर और डब्लू० ई० फिलिप्सन।

इंग्लैंड

सी० ए० मिल्टन बा. सुरेन्द्रनाथ	9
कॅ. टेलर पगबाधा बा. बोर्डे	24
एम० सी० काउड्री कॅ. बोर्डे बा. सुरेन्द्रनाथ	5
पी० बी० एच० मे कॅ. जोशी बा. गुप्ते	106
के० एफ० बैरिंगटन बा. नाडकर्णी	56
एम० जे० होर्टन कॅ. नाडकर्णी बा. देसाई	58
टी० जी० ईवान्स कॅ. उमरीगर बा. नाडकर्णी	73
एफ० एस० ट्रूमेन बा. बोर्डे	28
जे० बी० स्टेथम अपराजित	29
टी० ग्रीनहाउ कॅ. गायकवाड बा. गुप्ते	0
ए० ई० मौस कॅ. रॉय बा. गुप्ते	11
अतिरिक्त	

विकेटों का पतन :

–1

भारत की गेंदबाजी

	मो०	मे० ओ०	रन	विकेट
देसाई	33	7	127	1
सुरेन्द्रनाथ	24	8	59	2
गुप्ते	38·1	11	102	4
नाडकर्णी	28	16	48	2
बोर्डे	20	4	63	1

भारत

रॉय बा. ट्रूमेन	54	कॅ. ट्रूमेन बा. ग्रीनहाउ	49
कांट्रैक्टर कॅ. बॅरिंगटन बा. ग्रीनहाउ	15	कॅ. काउड्री बा. स्टेथम	0
उमरीगर बा. ट्रूमेन	21	बा. स्टेथम	20
मांजरेकर पगबाधा बा. ट्रूमेन	17	पगबाधा बा. ग्रीनहाउ	44
बोर्डे (चोट के कारण निवृत्त)	15	अनुपस्थित	0
गायकवाड कॅ. ईवान्स बा. स्टेथम	33	कॅ. होर्टन बा. स्टेथम	31
नाडकर्णी पगबाधा बा. ट्रूमेन	15	बा. स्टेथम	1
जोशी पगबाधा बा. मोस	21	पगबाधा बा. ट्रूमेन	1
गुप्ते कॅ. टेलर बा. मोस	2	कॅ. मे बा. स्टेथम	8
सुरेन्द्रनाथ अपराजित	4	अपराजित	1
देसाई बा. स्टेथम	0	पगबाधा बा. ट्रूमेन	1
अतिरिक्त	9	अतिरिक्त	1
	205		157

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–34, 2–85, 3–95, 4–126, 5–158, 6–190, 7–198, 8–206, 9–206, 10–206.

द्वितीय पारी : 1–8, 2–52, 3–85, 4–124, 5–140, 6–143, 7–147, 8–156, 9–157, 10–157.

इंग्लैंड की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
स्टेथम	23·5	11	46	2	21	10	31	5
ट्रूमेन	24	9	45	4	22·3	10	44	2
मोस	24	11	33	2	12	7	13	0
ग्रीनहाउ	26	7	58	1	23	5	48	2
होर्टन	5	0	15	0	19	11	20	0

द्वितीय टैस्ट

लार्ड्स में जून 18, 19 और 20 को खेला गया। टॉस भारत ने जीता और मैच इंग्लैंड ने आठ विकटों से। कप्तान : पी० बी० एच० मे (इंग्लैंड) और पंकज रॉय (भारत)। विकेट-रक्षक : टी० जी० ईवान्स (इंग्लैंड) और पी० जी० जोशी (भारत)। निर्णायक : सी० एस० ईलियट और ई० डेविस।

भारत

प्रथम पारी		द्वितीय पारी	
रॉय कै. ईवान्स बा. स्टेथम	15	कै. मे बा. ट्रूमेन	0
कांट्रेक्टर बा. ग्रीनहाउ	81	अपराजित	11
उमरीगर बा. स्टेथम	1	कै. होर्टन बा. ट्रूमेन	0
मांजरेकर पगबाधा बा. ट्रूमेन	12	पगबाधा बा. स्टेथम	61
घोरपडे पगबाधा बा. ग्रीनहाउ	41	कै. ईवान्स बा. स्टेथम	22
कृपालसिंह बा. ग्रीनहाउ	0	बा. स्टेथम	41
जयसिम्ह पगबाधा बा. ग्रीनहाउ	1	पगबाधा बा. मोस	8
पी० जी० जोशी बा. होर्टन	4	बा. मोस	6
सुरेन्द्रनाथ बा. ग्रीनहाउ	0	रन आउट	0
गुप्ते कै. मे बा. होर्टन	0	स्ट. ईवान्स बा. ग्रीनहाउ	7
देसाई अपराजित	2	बा. ग्रीनहाउ	5
अतिरिक्त	11	अतिरिक्त	4
	168		165

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–32, 2–40, 3–61, 4–144, 5–152, 6–158, 7–163, 8–163, 9–164, 10–168.

द्वितीय पारी : 1–0, 2–0, 3–22, 4–42, 5–131, 6–140, 7–147, 8–147, 8–159, 10–165.

इंग्लैंड की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
ट्रूमेन	16	4	40	1	21	3	55	2
स्टेथम	16	6	27	2	17	7	45	3
मोस	14	5	31	0	23	10	30	2
ग्रीनहाउ	16	4	35	5	18·1	8	31	2
होर्टन	15·4	7	24	2	—	—	—	—

इंग्लैंड

मिल्टन कै. सुरेन्द्रनाथ बा. देसाई	14	कै. जोशी बा. देसाई	3
टेलर कै. गुप्ते बा. देसाई	6	पगबाधा बा. सुरेन्द्रनाथ	3
काउड्री कै. जोशी बा. देसाई	34	अपराजित	63
मे बा. सुरेन्द्रनाथ	9	अपराजित	33
बेरिंगटन कै. एवजी बा. देसाई	80		
होर्टन बा. देसाई	2		
ईवान्स बा. सुरेन्द्रनाथ	0		
ट्रूमेन पगबाधा बा. गुप्ते	7		
स्टेथम कै. सुरेन्द्रनाथ बा. गुप्ते	38		
मोस बा. सुरेन्द्रनाथ	26		
ग्रीनहाउ अपराजित	0		
अतिरिक्त	10	अतिरिक्त	6
	226	दो विकटों पर	108

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–9, 2–26, 3–35, 4–69, 5–79, 6–80, 7–100, 8–184, 9–226, 10–226.

द्वितीय पारी : 1–8, 2–12.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
देसाई	31·4	8	89	5	7	1	29	1
सुरेन्द्रनाथ	30	17	46	3	11	2	32	1
उमरीगर	1	1	0	0	1	0	8	0
गुप्ते	19	2	62	2	6	2	21	0
कृपालसिंह	3	0	19	0	1	1	0	0
जयसिम्हा	—	—	—	—	1	0	8	0
रॉय	—	—	—	—	2·2	0	4	0

तृतीय टेस्ट

लीड्स में जुलाई 2, 3 और 4 को खेला गया, टॉस भारत ने जीता और मैच इंग्लैंड ने एक पारी और 173 रनों से। कप्तान : पी० बी० एच० मे (इंग्लैंड) और डी० के० गायकवाड (भारत)। विकेट-रक्षक : आर० स्वीटमैन (इंग्लैंड) और एन० एस० ताम्हाने (भारत)। निर्णायक : एफ० एस० ली और डब्ल्यू० ई० फिलिप्सन।

भारत

रॉय कै. स्वीटमैन बा. रोड्स	2	कै. स्वीटमैन बा. ट्रूमैन	20
मान्टे बा. मोस	8	कै. क्लोस बा. मोस	7
घोरपड़े कै. स्वीटमैन बा. ट्रूमैन	8	पगबाधा बा. ट्रूमैन	0
बोर्डे कै. स्वीटमैन बा. रोड्स	0	कै. मे बा. क्लोस	41
उमरीगर कै. ट्रूमैन बा. मोस	29	कै. ट्रूमैन बा. मोर्टीमोर	39
गायकवाड कै. काउड्री बा. रोड्स	25	कै. और बा. क्लोस	8
नाडकर्णी कै. पार्कहाउस बा. रोड्स	27	कै. बेरिंगटन बा. क्लोस	11
ताम्हाने कै. मोस बा. ट्रूमैन	20	अपराजित	9
सुरेन्द्रनाथ कै. क्लोस बा. ट्रूमैन	5	कै. काउड्री बा. मोर्टीमोर	1
गुप्ते कै. स्वीटमैन बा. क्लोस	21	कै. और बा. क्लोस	1
देसाई अपराजित	7	कै. काउड्री बा. मोर्टीमोर	8
अतिरिक्त	9	अतिरिक्त	4
	161		149

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–10, 2–10, 3–11, 4–23, 5–75, 6–75, 7–103, 8–112, 9–141, 10–161.

द्वितीय पारी : 1–16, 2–19, 3–38, 4–107, 5–115, 6–121, 7–138, 8–139, 9–140, 10–149.

इंग्लैंड की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
ट्रूमैन	15	6	30	3	10	1	29	2
मोस	22	11	30	2	6	3	10	1
रोड्स	18·5	3	50	4	10	2	35	0
मोर्टीमोर	8	3	24	0	18·4	6	36	3
क्लोस	5	1	18	1	11	0	35	4

इंग्लैंड

पार्कहाउस कै. तम्हाने बा. देसाई	78
पुलर कै. बोर्डे बा. नाडकर्णी	75
काउड्री कै. घोरपडे बा. गुप्ते	160
मे बा. देसाई	2
बेरिंगटन कै. तम्हाने बा. नाडकर्णी	80
क्लोस बा. गुप्ते	27
मोर्टीमोर बा. गुप्ते	7
स्वीटमैन अपराजित	19
ट्रूमेन कै. देसाई बा. गुप्ते	17
मोस रोड्स } बल्लेबाजी नहीं की	
अतिरिक्त	18
आठ विकटों पर पारी समाप्ति की घोषणा	483

विकटों का पतन :

1–146, 2–180, 3–186, 4–379,
5–432, 6–439, 7–453, 8–483.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
देसाई	38	10	111	2
सुरेन्द्रनाथ	32	11	84	0
गुप्ते	44·3	13	111	4
उमरीगर	24	8	44	0
बोर्डे	14	1	51	0
नाडकर्णी	22	2	64	2

चतुर्थ टैस्ट

मेनचेस्टर मे जुलाई 23, 24, 25, 27 और 28 को खेला गया, टॉस इंग्लैंड ने जीता और 171 रनों से मैच भी। कप्तान : एम० सी० काउड्री (इंग्लैंड) और डी० के० गायकवाड (भारत)। विकेट रक्षक : आर० स्वीटमैन (इंग्लैंड) और पी० जी० जोशी (भारत)। निर्णायक : सी० एस० ईलियट और जे० एस० बुलर

इंग्लैंड

प्रथम पारी		द्वितीय पारी	
पार्कहाउस कै. रॉय बा. सुरेन्द्रनाथ	17	कै. कान्ट्रैक्टर बा. नाडकर्णी	49
पुलर कै. जोशी बा. सुरेन्द्रनाथ	131	कै. जोशी बा. गुप्ते	14
काउड्री कै. जोशी बा. नाडकर्णी	67	कै. बोर्डे बा. गुप्ते	9
एम. जे. के. स्मिथ कै. देसाई बा. बोर्डे	100	कै. देसाई बा. गुप्ते	9
बैरिंगटन पगबाधा बा. सुरेन्द्रनाथ	87	पगबाधा बा. नाडकर्णी	46
डेक्सटर कै. रॉय बा. सुरेन्द्रनाथ	13	कै. उमरीगर बा. गुप्ते	45
इलिंगवर्थ कै. गायकवाड बा. देसाई	21	अपराजित	47
मोर्टीमोर कै. कान्ट्रैक्टर बा. गुप्ते	29	कै. नाडकर्णी बा. बोर्डे	7
स्वीटमैन कै. जोशी बा. गुप्ते	9	अपराजित	21
ट्रूमैन बा. सुरेन्द्रनाथ	0	कै. बेग बा. बोर्डे	8
रोड्स अपराजित	0		
अतिरिक्त	16	अतिरिक्त	10
	490	आठ विकटों पर पारी समाप्ति की घोषणा	265

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–33, 2–164, 3–262, 4–371, 5–417, 6–440, 7–454, 8–490, 9–490, 10–490.

द्वितीय पारी : 1–44, 2–100, 3–117, 4–132, 5–136, 6–196, 7–209, 8–219.

भारत की गेंदबाजी

ओ. मे.ओ. रन विके[illegible] मे.ओ. रन विकेट

देसाई 39 [illegible] 129 [illegible]

सुरेन्द्रनाथ [illegible] 115 5 [illegible] 14 0

उमरीगर 1[illegible] 0 15 0

गुप्ते 28 [illegible] 4 0

बो[illegible] 28 [illegible] 4

[illegible] 11 2

भारत

रॉय कै. स्मिथ बा. रोड्स	15	कै. इलिंगवर्थ बा. डेक्सटर	21
कांट्रैक्टर कै. स्वीटमैन बा. रोड्स	23	कै. वेरिंगटन बा. रोड्स	56
बेग कै. काउड्री बा. इलिंगवर्थ	26	रन आउट	112
गायकवाड पगबाधा बा. ट्रूमेन	5	कै. इलिंगवर्थ बा. रोड्स	0
उमरीगर बा. रोड्स	2	कै. इलिंगवर्थ बा. बेरिंगटन	118
बोर्डे कै. और बा. वेरिंगटन	75	कै. स्वीटमैन बा. मोर्टीमोर	3
नाडकर्णी बा. वेरिंगटन	31	पगबाध बा. ट्रूमेन	28
जोशी रन आउट	5	बा. इलिंगवर्थ	5
सुरेन्द्रनाथ बा. इलिंगवर्थ	11	कै. ट्रूमेन बा. बेरिंगटन	4
गुप्ते अपराजित	4	बा. ट्रूमेन	8
देसाई बा. वेरिंगटन	5	अपराजित	7
अतिरिक्त	6	अतिरिक्त	14
	208		376

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–23, 2–54, 3–70, 4–72, 5–78, 6–124, 7–154, 8–199, 9–199, 10–208.

द्वितीय पारी : 1–35, 2–144, 3–146, 4–180, 5–243, 6–321, 7–334, 8–358, 9–361, 10–376.

इंग्लैंड की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ	मे.ओ.	रन	विकेट
ट्रूमेन	15	4	29	1	23·1	6	75	2
रोड्स	18	3	72	3	28	2	87	2
डेक्सटर	3	0	3	0	12	2	33	1
इलिंगवर्थ	16	10	16	2	39	13	63	1
मोर्टीमोर	13	6	46	0	16	6	29	1
बेरिंगटन	14	3	36	3	27	4	75	2

इंग्लैंड

प्रथम पारी		द्वितीय पारी	
पार्कहाउस कै. रॉय बा. सुरेन्द्रनाथ	17	कै. कांट्रैक्टर बा. नाडकर्णी	49
पुलर कै. जोशी बा. सुरेन्द्रनाथ	131	कै. जोशी बा. गुप्ते	14
काउड्री कै. जोशी बा. नाडकर्णी	67	कै. बोर्डे बा. गुप्ते	9
एम. जे. के. स्मिथ कै. देसाई बा. बोर्डे	100	कै. देसाई बा. गुप्ते	9
बैरिंगटन पगबाधा बा. सुरेन्द्रनाथ	87	पगबाधा बा. नाडकर्णी	46
डेक्सटर कै. रॉय बा. सुरेन्द्रनाथ	13	कै. उमरीगर बा. गुप्ते	45
इलिंगवर्थ कै. गायकवाड बा. देसाई	21	अपराजित	47
मोर्टीमोर कै. कांट्रैक्टर बा. गुप्ते	29	कै. नाडकर्णी बा. बोर्डे	7
स्वीटमैन कै. जोशी बा. गुप्ते	9	अपराजित	21
ट्रूमैन बा. सुरेन्द्रनाथ	0	कै. बेग बा. बोर्डे	8
रोड्स अपराजित	0		
अतिरिक्त	16	अतिरिक्त	10
	490	आठ विकटों पर पारी समाप्ति की घोषणा	265

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–33, 2–164, 3–262, 4–371, 5–417, 6–440, 7–454, 8–490, 9–490, 10–490.

द्वितीय पारी : 1–44, 2–100, 3–117, 4–132, 5–136, 6–196, 7–209, 8–219.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
देसाई	39	7	129	1	8	2	14	0
सुरेन्द्रनाथ	47·1	17	115	5	8	5	15	0
उमरीगर	19	3	47	0	7	3	4	0
गुप्ते	28	8	98	2	26	6	76	4
नाडकर्णी	28	14	47	1	30	6	93	2
बोर्डे	13	1	38	1	11	1	53	2

भारत

रॉय कै. स्मिथ बा. रोड्स	15	कै. इलिंगवर्थ बा. डेक्सटर	21
कांट्रैक्टर कै. स्वीटमैन बा. रोड्स	23	कै. वेरिंगटन बा. रोड्स	56
बेग कै. काउड्री बा. इलिंगवर्थ	26	रन आउट	112
गायकवाड पगबाधा बा. ट्रूमेन	5	कै. इलिंगवर्थ बा. रोड्स	0
उमरीगर बा. रोड्स	2	कै. इलिंगवर्थ बा. बेरिंगटन	118
बोर्डे कै. और बा. बेरिंगटन	75	कै. स्वीटमैन बा. मोर्टीमोर	3
नाडकर्णी बा. बेरिंगटन	31	पगबाधा बा. ट्रूमेन	28
जोशी रन आउट	5	बा. इलिंगवर्थ	5
सुरेन्द्रनाथ बा. इलिंगवर्थ	11	कै. ट्रूमेन बा. बेरिंगटन	4
गुप्ते अपराजित	4	बा. ट्रूमेन	8
देसाई बा. बेरिंगटन	5	अपराजित	7
अतिरिक्त	6	अतिरिक्त	14
	208		376

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1-23, 2-54, 3-70, 4-72, 5-78, 6-124, 7-154, 8-199, 9-199, 10-208.

द्वितीय पारी : 1-35, 2-144, 3-146, 4-180, 5-243, 6-321, 7-334, 8-358, 9-361, 10-376.

इंग्लैंड की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ	मे.ओ.	रन	विकेट
ट्रूमेन	15	4	29	1	23·1	6	75	2
रोड्स	18	3	72	3	28	2	87	2
डेक्सटर	3	0	3	0	12	2	33	1
इलिंगवर्थ	16	10	16	2	39	13	63	1
मोर्टीमोर	13	6	46	0	16	6	29	1
बेरिंगटन	14	3	36	3	27	4	75	2

पंचम टैस्ट

ओवल में अगस्त 20, 21, 22 और 24 को खेला गया, टॉस भारत ने जीता और मैच इंग्लैंड ने एक पारी और 27 रनों से।
कप्तान : एम० सी० काउड्री (इंग्लैंड) और डी० के० गायकवाड़ (भारत)।
विकेट-रक्षक : आर० स्वीटमैन (इंग्लैंड) और एन एस० तम्हाने (भारत)।
निर्णायक : एफ० एस० ली और ई० डेविस।

भारत

रॉय बा. स्टेथम	3	पगवाघा बा. स्टेथम	0
कांट्रैक्टर कै. इलिंगवर्थ बा. डेक्सटर	22	कै. ट्रूमेन बा. स्टेथम	25
बेग कै. काउड्री बा. ट्रूमेन	23	कै. काउड्री बा. स्टेथम	4
नाडकर्णी कै. स्वीटमैन बा. ट्रूमेन	6	पगवाधा बा. इलिंगवर्थ	76
बोर्डे बा. ग्रीनहाउ	0	रन आउट	6
गायकवाड कै. बेरिंगटन बा. डेक्सटर	11	कै. स्वीटमैन बा. ग्रीनहाउ	15
घोरपडे बा. ग्रीनहाउ	5	बा. ग्रीनहाउ	24
तम्हाने कै. स्वीटमैन बा. स्टेथम	32	बा. ट्रूमेन	9
सुरेन्द्रनाथ कै. इलिंगवर्थ बा. ट्रूमेन	27	अपराजित	17
गुप्ते बा ट्रूमेन	2	कै. ग्रीनहाउ बा. ट्रूमेन	5
देसाई अपराजित	3	कै. स्वीटमैन बा. ट्रूमेन	0
अतिरिक्त	6	अतिरिक्त	13
	140		194

विकटों का पतन :
प्रथम पारी : 1–12, 2–43, 3–49, 4–50, 5–67, 6–72, 7–74, 8–132, 9–134, 10–140.
द्वितीय पारी : 1–5, 2–17, 3–44, 4–70, 5–106, 6–159, 7–163, 8–173, 9–188, 10–194.

इंग्लैंड की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
ट्रूमेन	17	6	24	4	14	4	30	3
स्टेथम	16·3	6	24	2	18	4	50	3
ग्रीनहाउ	29	11	36	2	27	12	47	2
डेक्सटर	16	7	24	2	7	1	11	0
इलिंगवर्थ	1	0	2	0	29	10	43	1
बेरिंगटन	6	0	24	0	—	—	—	—

इंग्लैंड

पुलर कै. तम्हाने बा. सुरेन्द्रनाथ	22
सुब्बाराव कै. तम्हाने बा. देसाई	94
काउड्री कै. बोर्डे बा. सुरेन्द्रनाथ	6
एम० जे० के० स्मिथ बा. देसाई	98
बेरिंगटन कै. एवजी बा. गुप्ते	8
डेक्सटर कै. ट्रूमेन बा. सुरेन्द्रनाथ	0
इलिंगवर्थ कै. गायकवाड बा. नाडकर्णी	50
स्वीटमैन कै. बेग बा. सुरेन्द्रनाथ	65
ट्रूमेन स्ट. तम्हाने बा. नाडकर्णी	1
स्टेथम अपराजित	3
ग्रीनहाउ कै. कांट्रेक्टर बा. सुरेन्द्रनाथ	2
अतिरिक्त	12
	361

विकटों का पतन :

1–38, 2–52, 3–221, 4–232, 5–233,
6–235, 7–337, 8–347, 9–358, 10–361.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
देसाई	33	5	103	2
सुरेन्द्रनाथ	51·3	25	75	5
गुप्ते	38	9	119	1
नाडकर्णी	25	11	52	2

आस्ट्रेलिया की टीम भारत में, 1959-60

आस्ट्रेलिया की टीम ने भारत में सात मैच खेले, जिनमें पांच टैस्ट मैच थे। दो टैस्ट मैचों में इस टीम को विजय मिली और कानपुर में खेले गये मैच में इसकी पराजय हुई।

इस टीम के निम्नलिखित खिलाड़ी थे :

1. आर० बिनो (कप्तान),
2. आर० एन० हार्वे (उप-कप्तान)
3. आर० आर० लिंडवॉल
4. पी० जे० बर्ज
5. ए० के० डेविडसन
6. एल० ई० फेवेल
7. सी० सी० मेकडोनल्ड
8. आई० मेकिफ
9. एन० सी० ओनील
10. एल० एफ० क्लाइन
11. ए० डब्लू० ग्राउट
12. बी० एन० जारमन
13. सी० एफ० रोरकी
14. जी० बी० स्टीवेन्स
15. के० डी० मेके

एस० ई० लॉक्सटन (प्रबन्धक)

दिल्ली में खेले गये प्रथम टैस्ट मैच को अतिथियों ने बड़ी सरलता से एक पारी और 127 रनों से जीत लिया। भारतीय बल्लेबाजों ने पहले खेलना प्रारम्भ किया लेकिन केवल 127 रन बना सके अकेले कांट्रेक्टर ही कुछ समय तक जमकर खेल सके। आस्ट्रेलिया के ने बिना कोई रन दिये तीन विकटें प्राप्त की।

भारत की गेंदबाजी सीमित थी फिर भी गेंदबाजों ने बड़ी कुशलता से गेंदबाजी की और अतिथियों को हर एक रन को बनाने के लिये प्रयत्न करना पड़ा। एक बार जम जाने के बाद हार्वे ने गेंद को सब दिशाओं में पहुँचाना प्रारम्भ किया और 230 मिनट बल्लेबाजी करके चौदह चौके सहित 114 रन बनाये। उमरीगर के शानदार क्षेत्र-रक्षण ने ओनील की अल्प लेकिन तेज पारी का अन्त कर दिया। मेके बुद्धिमानी और सुरक्षात्मक ढंग से खेला और 78 बहुमूल्य रन बना पाने में सफल हुआ। पारी 468 रनों पर समाप्त हुई। उमरीगर ने मितव्ययता से गेंदबाजी की और 4 विकटें केवल 49 रन देकर गिरा दीं।

भारत की द्वितीय पारी की नींव रॉय और कॉन्ट्रेक्टर ने मजबूती के साथ, 121 रनों की साझेदारी से जमाई। लेकिन बिनो की सूझबूझ और बलाईन के साथ उनकी सफल गेंदबाजी ने भारतीय बल्लेबाजों के पांव जमने नहीं दिये और पूरी टीम केवल 206 रन बना सकी। बिनो की सफल चाल ने रॉय का शतक पूरा नहीं होने दिया। उमरीगर ने कुछ समय के लिये गेंद की जोरदार पिटाई की लेकिन और कोई बल्लेबाज अधिक समय टिक नहीं सका। यहाँ तक कि शेष बल्लेबाजों में से कोई भी 9 से ऊपर रन नहीं बना सका।

द्वितीय टैस्ट मैच के लिये दोनों टीमें कानपुर पहुँची। आस्ट्रेलिया की टीम ने अपनी प्रतिद्वन्द्वी टीम पर धाक जमाली थी। इसके पहले भारत की टीम ने वेस्टइंडीज और इंग्लैंड के विरुद्ध घटिया खेल दिखाया था। इस कारण उसकी प्रतिष्ठा गिर गई थी। लेकिन क्रिकेट के खेल की अनिश्चितता भी अजीब है। भारतीय टीम ने विश्व विजेता आस्ट्रेलिया की टीम को पछाड़ दिया। जसु पटेल ने अद्भुत गेंदबाजी की और 14 विकटें 124 रनों पर प्राप्त कर अपने देश को 119 रनों से विजयी बनाया।

भारत ने पहले बल्लेबाजी की लेकिन डेविडसन और बिनो की सफल गेंदबाजी के सामने केवल 152 रन बना सका। केवल तीन विकटों को खोकर प्रतिद्वन्द्वी टीम इस रन संख्या को पार कर गई और हार्वे जमकर बल्लेबाजी कर रहे थे। मैच का परिणाम साफ दिखाई दे रहा था। केवल जसु पटेल की गेंदबाजी का थोड़ा बहुत आदर था। जैसे-जैसे आस्ट्रेलिया की पारी आगे बढ़ती गई पटेल की गेंदबाजी का भी कौशल बढ़ता गया और अतिथियों के अन्तिम सात विकेट केवल 60 रन जोड़ सके। पटेल ने 9 विकटें केवल 69 रन देकर प्राप्त की और भारत की ओर से आस्ट्रेलिया के विरुद्ध सर्वश्रेष्ठ गेंदबाजी का प्रदर्शन किया।

दोनों टीमें अधिक रन नहीं बना पा रही थीं अतः आस्ट्रेलिया का प्रथम पारी में 67 रन आगे रहना काफी महत्वपूर्ण था और विशेषकर ऐसी स्थिति में जबकि भारत ने द्वितीय पारी सन्तोषजनक ढंग से प्रारम्भ नहीं की थी। तत्पश्चात् कांट्रैक्टर, केनी, नाडकर्णी और बोर्डे ने रन संख्या को आगे बढ़ाया और जब भारत का अन्तिम बल्लेबाज आउट हुआ तो गणनाग्रह पर 291 रन थे। डेविडसन ने फिर प्रभावशाली गेंदबाजी की और इस पारी में 7 विकटें 93 रन देकर गिराईं। इस मैच में उन्होंने 12 विकटें 124 रन देकर प्राप्त की।

अतिथियों को विजय के लिये केवल 25 रनों की आवश्यकता थी जो कि उनके लिये सरल कार्य था। मेकडोनल्ड और हार्वे द्वितीय विकेट की साझेदारी में जम गये और एक समय उनकी टीम के केवल एक विकेट खोने पर 49 रन थे। तत्पश्चात् पटेल और उमरीगर की गेंदबाजी ने उनके पांव उखाड़ दिये और श्रेष्ठ खिलाड़ियों की आस्ट्रेलिया की टीम केवल 105 रन बना सकी और भारत 119 रनों से विजयी हुआ। पटेल के साथ उमरीगर ने भी सफल गेंदबाजी का प्रदर्शन दिया और केवल 27 रन देकर 4 विकटें प्राप्त की।

रामचन्द ने लगातार तीसरी बार टॉस जीता और भारत ने बम्बई के ब्रेबोर्न स्टेडियम में तीसरे टैस्ट मैच में बल्लेबाजी प्रारम्भ की। आस्ट्रेलिया ने तुरन्त दो विकटें गिरा दी लेकिन कांट्रैक्टर और बेग ने तीसरे विकेट पर 133 रन जोड़कर भारत की स्थिति मे सुधार कर दिया। कांट्रैक्टर ने बहुत ही उत्तम बल्लेबाजी कर टैस्ट मैच में अपना पहला शतक पूरा किया। भारत की पारी 289 रनों पर समाप्त हुई।

हार्वे और ओनील ने पूरी शक्ति से भारत की गेंदबाजी पर आक्रमण किया और तीसरे विकेट की साझेदारी में 207 रन जोड़े। दोनों ने अपने-अपने शतक पूरे किये। आठ विकटों पर जब 387 रन बन गये तो बिनो ने पारी समाप्ति की घोषणा कर दी। केवल नाडकर्णी की गेंदों को संभलकर खेला गया। उन्होने 105 रन देकर 6 विकटें प्राप्त की।

प्रथम पारी के रनो की कमी को रॉय और कांट्रैक्टर ने पूरा कर दिया। इन दोनों के चले जाने के बाद बेग और केनी की पारी लाभदायक रही और भारत ने पांच विकटों पर 226 रन बना कर पारी समाप्ति की घोषणा कर दी। अतिथियों की द्वितीय पारी मे रॉय ने शून्य पर मेक्फि का डंडा उखाड़ दिया। ग्राउट और बिनो बिना अलग हुए रन संख्या को खेल की

पूर्ण समाप्ति पर 34 पर पहुँचा सके । इस प्रकार ब्रेवोर्न स्टेडियम का टैस्ट मैच भी हार-जीत के फैसले के बिना समाप्त हो गया ।

मद्रास में खेले गये चतुर्थ टैस्ट मैच में आस्ट्रेलिया ने भारत को एक पारी और 55 रनों से करारी हार दी । फेवेल के शतक और मेके के 89 रनों से अतिथियों की कुल रन संख्या 342 पर पहुँच गई । भारत केवल 149 रन ही बना सका, यद्यपि एक समय उसकी संख्या केवल एक विकेट पर 95 थी । कुन्दरन ने असली आक्रामक खेल खेला, अपने 71 रनों में बारह बार गेंद को मैदान के बाहर पहुँचा दिया । बचे हुए बल्लेबाजों मे केवल केनी ने उनका साथ दिया । बिनो ने पांच विकटें 43 रन देकर प्राप्त कीं । भारत को फिर बल्लेबाजी करनी पड़ी और द्वितीय पारी में केवल 138 रन बन सके । कांट्रेक्टर और कुन्दरन ने तो विकटों पर जमने का पूरा प्रयत्न किया परन्तु वे भी इतनी देर न टिक सके कि भारत की इज्जत को पूरी तरह बचा पाते ।

पाँचवा टैस्ट कलकत्ता मे आयोजित किया गया । सिक्का फिर रामचन्द के पक्ष में गिरा लेकिन आस्ट्रेलिया ने प्रथम दिन की खेल समाप्ति तक भारत के सात बल्लेबाजों को 158 रनों पर ही परास्त कर दिया था । अगले दिन जयसिम्ह और देसाई ने नवें विकेट पर 36 रन जोड़े और पारी 194 रनों पर समाप्त हो गई ।

फेवेल और ग्राउट ने आस्ट्रेलिया की पारी सन्तोषजनक ढंग से प्रारम्भ की और प्रथम विकेट पर 76 रन बने । देसाई और पटेल ने तत्पश्चात् तीन विकटें गिराईं । लेकिन अतिथि बल्लेबाजों ने फिर से स्थिति पर काबू पा लिया और ओनील और वर्ज ने भारतीय गेंदबाजी को मामूली समझकर खूब पीटा और कुल रन संख्या को दूसरे दिन की खेल समाप्ति पर 229 तक पहुँचा दिया ।

खेल के तीसरे दिन ओनील ने अपना शतक पूरा किया जो इस शृंखला में उनका दूसरा शतक था । ओनील और बर्ज के इस जोड़े ने आस्ट्रेलिया की कुल रन संख्या को 150 से बढाया और ऐसा प्रतीत होता था कि कुल रन संख्या बहुत अधिक हो जायेगी । लेकिन इस जोड़े के बिछुड़ते ही अन्तिम सात विकेट केवल 65 रन और जोड़ सके और पारी 331 पर समाप्त हो गई । देसाई और पटेल की गेंदबाजी तो उत्तम थी ही लेकिन बोर्डे ने अपनी अचूक निशानेबाजी से 3 विकटें केवल 23 रन देकर प्राप्त की ।

भारत आस्ट्रेलिया से 137 रन पीछे था । उसने अपनी द्वितीय पारी भी ठीक तरह से प्रारम्भ नहीं की । कुन्दरन तो बिना रन बनाये ही आउट

हो गये। कांट्रैक्टर और रॉय ने स्थिति को संभाला और द्वितीय विकेट की साझेदारी में 67 रन जोड़े। खेल की बागडोर फिर अतिथियों के हाथ में आ गई और केवल 11 रनों पर तीन विकटें उखड़ गईं। जयसिम्हा ने खेल के पांचों दिन कुछ समय के लिए बल्लेबाजी की और उन्होंने 390 मिनट बल्लेबाजी करके अपनी टीम की हालत सुधारी और भारत की कुल रन संख्या 339 पर पहुँची। जयसिम्हा ने 74 रनों में आठ चौके लगाये और उनका साथ देने वाले केनी और बोर्डे ने अपने-अपने अर्ध-शतक पूरे किये।

आस्ट्रेलिया को विजय के लिये 155 मिनट में 203 रन बनाने थे। लेकिन उन्होंने इस रन संख्या तक पहुँचने का प्रयत्न नहीं किया और खेल की पूर्ण समाप्ति पर दो विकटें खोकर 121 रन बना सके। इस प्रकार पांचवा टैस्ट हार-जीत के फैसले के बिना ही समाप्त हो गया।

इस अल्पकालीन भ्रमण में आस्ट्रेलिया की टीम ने दो और मैच खेले जिनमें हार-जीत का फैसला नहीं हो सका। उनका संक्षेप में विवरण इस प्रकार है :

विरुद्ध बोर्ड अध्यक्ष एकादश : अहमदाबाद में, दिसम्बर 27, 28 और 29 को

बोर्ड अध्यक्ष एकादश : 293 (एम० एम० सूद 73, मिल्खासिंह 51) और 5 विकटों पर 143 (एम० एस० हार्डीकर 59)। आस्ट्रेलिया : 6 विकटों पर 554 और पारी समाप्ति की घोषणा (ओनील 284, फेवेल 112, स्टीवेन्स 96)।

विरुद्ध भारतीय विश्वविद्यालय : बंगलौर में, जनवरी 9, 10 और 11 को

आस्ट्रेलिया : 9 विकटों पर 556 और पारी समाप्ति की घोषणा (बर्ज 157, ग्राउट 101, फेवेल 95)। भारतीय विश्वविद्यालय : 231 (जयसिम्हा 51) और 6 विकटों पर 213 (जयसिम्हा 66, शेर मोहम्मद 57)।

प्रथम टैस्ट

दिल्ली में दिसम्बर 12, 13, 14 और 16 को खेला गया, टॉस भारत ने जीता और आस्ट्रेलिया ने एक पारी और 127 रनों से मैच जीता।
कप्तान : जी० एस० रामचन्द (भारत) और आर० बिनो (आस्ट्रेलिया)।
विकेट-रक्षक : पी० जी० जोशी (भारत) और डब्लू० ग्राउट (आस्ट्रेलिया)।
निर्णायक : मोहम्मद यूनस और एस० के० गांगुली।

भारत

रॉय कै. ग्राउट बा. डेविडसन	0	कै. विनो बा. क्लाइन	99
कांट्रेक्टर बा. डेविडसन	41	कै. फेवेल बा. विनो	34
उमरीगर कै. ग्राउट बा. डेविडसन	0	कै. फेवेल बा. क्लाइन	32
बेग बा. रोरकी	9	रन आउट	5
बोर्डे कै. ग्राउट बा. मेकिफ	14	कै. डेविडसन बा. विनो	0
रामचन्द कै. ग्राउट बा. क्लाइन	20	कै डेविडसन बा. क्लाइन	6
नाडकर्णी बा. रोरकी	1	पगबाधा बा. विनो	7
जोशी बा. विनो	15	कै. डेविडसन बा. क्लाइन	8
सुरेन्द्रनाथ अपराजित	24	कै. डेविडसन बा. विनो	0
मुईया पगबाधा बा. विनो	0	अपराजित	0
देसाई कै. ओनील बा. विनो	0	कै. मेकिफ बा. विनो	0
अतिरिक्त	11	अतिरिक्त	15
	135		206

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–4, 2–8, 3–32, 4–66, 5–69, 6–70, 7–100, 8–131, 9–135, 10–135.

द्वितीय पारी : 1–121, 2–132, 3–132, 4–172, 5–187, 6–192, 7–202, 8–206, 9–206, 10–206.

आस्ट्रेलिया की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
डेविडसन	18	10	30	3	13	5	17	0
मेकिफ	13	3	44	1	14	4	32	0
रोरकी	14	5	30	2	7	4	5	0
क्लाइन	9	3	15	1	22	12	42	4
विनो	3.4	3	0	3	45	19	76	5
मेके	1	0	1	0	—	—	—	—
ओनील	1	0	4	0	5	0	19	0
हार्वे	—	—	—	—	1	1	0	0

आस्ट्रेलिया

मेकडोनल्ड वा. सुरेन्द्रनाथ	19
फेवेल वा. सुरेन्द्रनाथ	40
हार्वे पगबाधा वा. नाडकर्णी	114
ओनील रन आउट	39
मेके कै. जोशी वा. उमरीगर	78
डेविडसन कै. बेग वा. देसाई	25
बिनो कै. बोर्डे वा. उमरीगर	20
ग्राउट कै. ग्रौर बा. उमरीगर	42
मेकिफ अपराजित	45
क्लाइन कै. और बा. रामचन्द	14
रोरकी कै. एवजी वा. उमरीगर	7
अतिरिक्त	25
	468

विकटों का पतन :

1—53, 2—64, 3—145, 4—275, 5—318, 6—353, 7—398, 8—402, 9—443, 10—468.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
रमाकान्त देसाई	33.3	3	124	1
सुरेन्द्रनाथ	38	8	101	2
बोर्डे	17	4	48	0
मुद्दैया	12	3	32	0
नाडकर्णी	20	6	62	1
रामचन्द	7	1	27	1
उमरीगर	15.4	1	49	4

द्वितीय टैस्ट

कानपुर मे दिसम्बर 19, 20, 21, 23 भौर 24 को खेला गया, टॉस और मैच भी भारत ने 119 रनो से जीता। कप्तान: जी० एस० रामचन्द (भारत) और भार० बिनो (आस्ट्रेलिया)। [illegible] : एन० एस० तम्हाने (भारत) और बी० जारमन (आस्ट्रेलि[illegible]) : ए० भार० जोशी और एस० के गागुली।

भारत

रॉय कै. हार्वे बा. विनो	17	कै. विनो बा. डेविडसन	8
कांट्रेक्टर कै. जारमन बा. विनो	24	कै. हार्वे बा. डेविडसन	74
उमरीगर कै. डेविडसन बा. क्लाइन	6	कै. रोरकी बा. डेविडसन	14
बेग बा. डेविडसन	19	कै. हार्वे बा. विनो	36
बोर्डे कै. क्लाइन बा. डेविडसन	20	कै. ओनील बा. मेकिफ	44
रामचन्द कै. मेके बा. बिनो	24	बा. हार्वे	5
केनी बा. डेविडसन	0	कै. जारमन बा. डेविडसन	51
नाडकर्णी कै. हार्वे बा. डेविडसन	25	पगबाधा बा. डेविडसन	46
तम्हाने बा. विनो	1	कै. हार्वे बा. डेविडसन	0
पटेल कै. क्लाइन बा. डेविडसन	4	बा. डेविडसन	0
सुरेन्द्रनाथ अपराजित	8	अपराजित	4
अतिरिक्त	4	अतिरिक्त	9
	152		291

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–38, 2–47, 3–51, 4–77, 5–112, 6–112, 7–126, 8–128, 9–141, 10–152.
द्वितीय पारी : 1–31, 2–72, 3–121, 4–147, 5–153, 6–214, 7–286, 8–286, 9–291, 10–291.

आस्ट्रेलिया की गेंदबाजी

	ओ०	मे०ओ०	रन	विकेट	ओ०	मे०ओ०	रन	विकेट
डेविडसन	20.1	7	31	5	57.3	22	93	7
मेकिफ	8	2	15	0	18	4	37	1
विनो	25	8	63	4	38	15	81	1
रोरकी	2	1	3	0	7	3	14	0
क्लाइन	15	7	36	1	—	—	—	—
मेके	—	—	—	—	10	5	14	0
हार्वे	—	—	—	—	12	3	31	1
	—	—	—	—	2	0	12	0

आस्ट्रेलिया

	प्रथम पारी		द्वितीय पारी	
मेकडोनल्ड बा. पटेल	53	स्ट. तम्हाने बा. पटेल	34
स्टीवेन्स कै. ओर बा. पटेल	25	कै. केनी बा. पटेल	7
हार्वे बा. पटेल	51	कै. नाडकर्णी बा. उमरीगर	25
ओनील बा. बोर्डे	17	कै. नाडकर्णी बा. उमरीगर	5
मेके पगबाधा बा. पटेल	0	पगबाधा बा. उमरीगर	0
डेविडसन बा. पटेल	41	बा. पटेल	8
विनो बा. पटेल	7	कै. रामचन्द बा. पटेल	0
जारमन पगबाधा बा. पटेल	1	बा. उमरीगर	0
क्लाइन बा. पटेल	8	बा. पटेल	0
मेकिफ अपराजित	1	अपराजित	14
रोरकी कै. बेग बा. पटेल	0	बल्लेबाजी नहीं की	—
अतिरिक्त	15	अतिरिक्त	12
	219		105

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–71, 2–128, 3–149, 4–159, 5-159, 6–174, 7–186, 8–216, 9–219, 10-219.

द्वितीय पारी : 1–12, 2–49, 3–59, 4–61, 5-78, 6–78, 7–79, 8–84, 9–105.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
सुरेन्द्रनाथ	4	0	13	0	4	2	4	0
रामचन्द	6	3	14	0	3	0	7	0
पटेल	36·5	16	69	9	24·4	7	55	5
उमरीगर	15	1	40	0	25	11	27	4
बोर्डे	15	1	61	1	—	—	—	—
नाडकर्णी	2	0	7	0	—	—	—	—

तृतीय टैस्ट

बम्बई में जनवरी 1, 2, 3, 5 और 6 को खेला गया, टॉस भारत ने जीता और मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका। कप्तान : जी० एस० रामचन्द (भारत) और आर० बिनो (आस्ट्रेलिया)। विकेट-रक्षक : पी० के० कुन्दरन (भारत) और डब्लू० ग्राउट (आस्ट्रेलिया)। निर्णायक : एच० ई० चौधरी और एन० डी० नागरवाला।

भारत

रॉय बा. डेविडसन	6	बा. मेकिफ	57
कांट्रेक्टर कै. बिनो बा. मेकिफ	108	बा. लिंडवॉल	43
उमरीगर कै. हार्वे बा. डेविडसन	0		
बेग कै. ग्राउट बा. डेविडसन	50	कै. मेके बा. लिंडवॉल	58
बोर्डे बा. मेकिफ	26	बा. मेकिफ	1
रामचन्द पगबाधा बा. मेकिफ	0		
केनी बा. मेकिफ	20	अपराजित	55
नाडकर्णी अपराजित	18	अपराजित	1
कुन्दरन पगबाधा बा. लिंडवॉल	19	हिट विकेट बा. मेकिफ	2
दुर्रानी कै. स्टीवेन्स बा. बिनो	18		
गार्ड कै. बिनो बा. डेविडसन	7		
अतिरिक्त	17	अतिरिक्त	9
	289	पांच विकटों पर पारी समाप्ति की घोषणा	226

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1-21, 2-21, 3-154, 4-193, 5-193, 6-203, 7-229, 8-246, 9-272, 10-289

द्वितीय पारी : 1-95, 2-99, 3-111, 4-112, 5-221.

आस्ट्रेलिया की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
डेविडसन	34·5	9	62	4	14	4	25	0
लिंडवॉल	23	7	56	1	23	7	56	2
मेके	6	3	11	0	6	4	6	0
मेकिफ	38	12	79	4	28	5	67	3
बिनो	41	24	64	1	24	10	36	0
हार्वे	—	—	—	—	3	1	11	0
ओनील	—	—	—	—	3	1	16	0

आस्ट्रेलिया

मेकडोनल्ड बा. नाडकर्णी	36		
स्टीवेन्स बा. नाडकर्णी	22		
हार्वे बा. नाडकर्णी	102		
ओनील कै. एवजी बा. बोर्डे	163		
फेवेल बा. नाडकर्णी	1		22
ग्राउट बा. नाडकर्णी	31	अपराजित	12
विनो पगवाधा बा. नाडकर्णी	14	अपराजित	
मेके बा. बोर्डे	1		
डेविडसन अपराजित	9		
लिंडवॉल अपराजित	1		0
मेकिफ बल्लेबाजी नहीं की	—	बा. रॉय	
अतिरिक्त	7		—
आठ विकटों पर पारी समाप्ति की घोषणा	387	एक विकेट पर	34

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1—60, 2—63, 3—270, 4—282, 5—358, 6—376, 7—379, 8—380.

द्वितीय पारी . 1—4.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
गाई	33	7	93	0	1	0	1	0
रामचन्द	35	13	85	0	—	—	—	—
उमरीगर	8	2	19	0	—	—	—	—
नाडकर्णी	51	11	105	6	—	—	—	—
बोर्डे	13	1	78	2	—	—	—	—
रॉय	—	—	—	—	2	0	6	1
बेग	—	—	—	—	2	0	13	0
कान्ट्रेक्टर	—	—	—	—	2	1	5	0
दुर्रानी	—	—	—	—	1	0	9	0

चतुर्थ टैस्ट

मद्रास में जनवरी 13, 14, 15 और 17 को खेला गया, टॉस और मैच भी आस्ट्रेलिया ने एक पारी और 55 रनों से जीता। कप्तान : जी० एस० रामचन्द (भारत) और आर० बिनो (आस्ट्रेलिया)। विकेट-रक्षक : बी० के० कुन्दरन (भारत) और डब्लू० ग्राउट (आस्ट्रेलिया)। निर्णायक : एम० जी० विजयसारथी और एन० डी० साने।

आस्ट्रेलिया

मैकडोनल्ड बा. पटेल	16
फैवेल स्ट. कुन्दरन बा. नाडकर्णी	101
हार्वे बा. देसाई	11
ओनील बा. देसाई	40
बर्ज बा. देसाई	35
मेके स्ट. कुन्दरन बा. पटेल	89
डेविडसन पगबाधा बा. नाडकर्णी	6
ग्राउट कै. मिल्खासिंह बा. नाडकर्णी	2
बिनो बा. बोर्डे	25
मेकिफ कै. रॉय बा. देसाई	8
क्लाइन अपराजित	0
अतिरिक्त	9
	342

विकटों का पतन :

1—58, 2—77, 3—147, 4—197, 5—216, 6—238, 7—249, 8—308, 9—329, 10—342.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
देसाई	41	10	93	4
रामचन्द	15	6	26	0
नाडकर्णी	44	15	75	3
पटेल	37	12	84	2
बोर्डे	16	1	55	1

भारत

बल्लेबाज़ (प्रथम पारी)	रन	द्वितीय पारी	रन
रॉय कै. ग्राउट बा. डेविडसन	1	कै. ओनील बा. मेकिफ	3
कुन्दरन बा. बिनो	71	बा. बिनो	33
केनी बा. मेके	33	कै. ग्राउट बा. मेकिफ	1
कान्ट्रेक्टर कै. क्लाइन बा. बिनो	7	कै. मेकिफ बा. क्लाइन	41
बोर्डे कै. ग्राउट बा. क्लाइन	3	कै. डेविडसन बा. बिनो	1
रामचन्द कै. हार्वे बा. बिनो	13	स्ट. ग्राउट बा. बिनो	22
मिल्खासिंह बा. डेविडसन	16	बा. हार्वे	9
नाडकर्णी कै. क्लाइन बा. बिनो	3	रन आउट	18
सूद स्ट. ग्राउट बा. डेविडसन	0	बा. डेविडसन	3
पटेल अपराजित	0	कै. क्लाइन बा. डेविडसन	0
देसाई कै. मेकडोनल्ड बा. बिनो	0	अपराजित	0
अतिरिक्त	2	अतिरिक्त	7
	149		138

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1-20, 2-95, 3-111, 4-114, 5-130, 6-130, 7-145, 8-148, 9-149, 10-149.

द्वितीय पारी : 1-7, 2-11, 3-54, 4-62, 5-78, 6-100, 7-127, 8-138, 9-138, 10-138.

आस्ट्रेलिया की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
डेविडसन	19	0	36	3	19	7	33	2
मेकिफ	7	4	21	0	22	10	33	2
बिनो	32.1	14	43	5	35	19	43	3
क्लाइन	15	8	21	1	12	5	13	1
हार्वे	1	0	9	0	13	7	8	1
मेके	3	1	17	1	4	3	1	0

पंचम टैस्ट

कलकत्ता में जनवरी 23, 24, 25, 27 और 28 को खेला गया, टॉस भारत ने जीता और मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका। कप्तान : जी० एस० रामचन्द (भारत) और आर० विनो (आस्ट्रेलिया)। विकेट-रक्षक : बी० के० कुन्दरन (भारत) और डब्लू० ग्राउट (आस्ट्रेलिया)। निर्णायक : एस० के० गांगुली और ए० आर जोशी।

भारत

कुन्दरन बा. मेके	12	बा. डेविडसन	0
कांट्रैक्टर बा. विनो	36	कै. डेविडसन बा. विनो	30
रॉय कै. ग्राउट बा. डेविडसन	33	पगबाधा बा. विनो	39
नाडकर्णी कै. डेविडसन बा. लिंडवॉल	2	कै. ग्राउट बा लिंडवॉल	29
मेनी कै. ग्राउट बा. लिंडवॉल	7	कै. ग्राउट बा. मेके	62
गोपीनाथ बा. विनो	39	कै. ग्राउट बा. विनो	0
बोर्डे बा. विनो	6	बा. मेकिफ	50
रामचन्द बा. डेविडसन	12	बा. विनो	9
जयसिम्ह अपराजित	20	बा. मेके	74
देसाई पगबाधा बा. डेविडसन	17	अपराजित	17
पटेल रन आउट	0	कै. विनो बा. डेविडसन	12
अतिरिक्त	10	अतिरिक्त	17
	194		339

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–30, 2–59, 3–71, 4–83, 5–112, 6–131, 7–142, 8–158, 9–194, 10–194.

द्वितीय पारी : 1–0, 2–67, 3–78, 4–78, 5–21, 6–206, 7–289, 8–295, 9–316, 10–339.

आस्ट्रेलिया की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
डेविडसन	16	2	37	3	36.2	13	76	2
मेकिफ	17	4	28	0	32	2	41	1
लिंडवॉल	16	5	44	2	20	3	66	1
मेके	11	5	16	1	21	7	36	2
विनो	29·3	12	59	3	48	23	103	4

आस्ट्रेलिया

फेवेल बा. देसाई	26	अपराजित	61
ग्राउट बा. पटेल	50		
हार्वे कै. जयसिम्हा बा. पटेल	17	कै. और बा. कांट्रेक्टर	36
ओनील कै. कुन्दरन बा. देसाई	113		
बर्ज बा देसाई	60		
मेकडोनल्ड पगबाधा बा. बोर्डे	27	रन आउट	6
मेके बा. पटेल	18		
लिंडवॉल कै. कुन्दरन बा. देसाई	10		
डेविडसन बा. बोर्डे	4		
बिनो कै. और बा. बोर्डे	3	अपराजित	10
मेकिफ अपराजित	0		
अतिरिक्त	3	अतिरिक्त	7
	331	दो विकटों पर	121

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–76, 2–76, 3–116, 4–266, 5–273, 6–299, 7–323, 8–325, 9–328, 10–331.

द्वितीय पारी : 1–20, 2–104.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
देसाई	36	4	111	4	11	4	18	0
रामचन्द्र	10	1	37	0	3	2	4	0
पटेल	26	2	104	3	7	1	15	0
नाडकर्णी	22	10	36	0	7	4	10	0
बोर्डे	13.1	4	23	3	13	1	45	0
जयसिंह	4	0	17	0	6	2	13	0
कांट्रेक्टर	—	—	—	—	5	1	9	1

पाकिस्तान की टीम भारत में, 1960-61

भारत भ्रमण करने वाली द्वितीय पाकिस्तानी टीम का भाग्य वैसा ही रहा जैसाकि कुछ वर्ष पहले पाकिस्तान में भ्रमण करने वाली भारतीय टीम का रहा था। पाँचों टैस्ट मैचों में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका। 1952-53 के अन्तिम दो टैस्टों को शामिल करने पर इन दो देशों के बीच खेले गये लगातार बारह टैस्ट मैच अनिर्णीत रहे।

टीम के निम्नलिखित खिलाड़ी थे :

1. फजल महमूद (कप्तान)
2. इम्तियाज अहमद (उप-कप्तान)
3. हनीफ मोहम्मद
4. अलीमुद्दीन
5. महमूद हुसैन
6. सईद अहमद
7. शुजाउद्दीन
8. वालिस मथाइस
9. जे० बर्की
10. जफर अलताफ
11. मोहम्मद फारुक
12. इजाज बट
13. मोहम्मद मुनाफ
14. इन्तेखाब आलम
15. नसीमुल गनी
16. हसीब एहसान
17. मुश्ताक मोहम्मद

डा० जहाँगीर खाँ (प्रबन्धक)

टैस्ट मैचों के अलावा खेले गये मैचों का संक्षेप में विवरण इस प्रकार है :

आस्ट्रेलिया

फेवेल बो. देसाई	26	अपराजित	62
ग्राउट बो. पटेल	50		
हार्वे कै. नरसिंह बो. पटेल	17	कै. और बो. कॉन्ट्रैक्टर	36
ओनील कै. सुन्दरम बो. देसाई	113		
बर्ज बो. देसाई	60		
मैकडोनल्ड पगबाधा बो. बोर्डे	27	रन आउट	6
मैके बो. पटेल	18		
लिंडवॉल कै. सुन्दरम बो. देसाई	10		
डेविडसन बो. बोर्डे	4		
बिनो कै. और बो. बोर्डे	3	अपराजित	10
मेकिफ अपराजित	0		
अतिरिक्त	3	अतिरिक्त	7
	331	दो विकेटों पर	121

विकेटों का पतन :

प्रथम पारी : 1-76, 2-76, 3-116, 4-266, 5-273, 6-299, 7-323, 8-325, 9-328, 10-331.

द्वितीय पारी : 1-20, 2-104.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
देसाई	36	4	111	4	11	4	18	0
रामचन्द	10	1	37	0	3	2	4	0
पटेल	26	2	104	3	7	1	15	0
नाडकर्णी	22	10	36	0	7	4	10	0
बोर्डे	13.1	4	23	3	13	1	45	0
क्रपालसिंह	4	0	17	0	6	2	13	0
कॉन्ट्रैक्टर	—	—	—	—	5	1	9	1

पाकिस्तान की टीम भारत में, 1960-61

भारत भ्रमण करने वाली द्वितीय पाकिस्तानी टीम का भाग्य वैसा ही रहा जैसाकि कुछ वर्ष पहले पाकिस्तान मे भ्रमण करने वाली भारतीय टीम का रहा था। पांचों टैस्ट मैचों में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका। 1952-53 के अन्तिम दो टैस्टो को शामिल करने पर इन दो देशो के बीच खेले गये लगातार बारह टैस्ट मैच अनिर्णीत रहे।

टीम के निम्नलिखित खिलाड़ी थे :

1. फजल महमूद (कप्तान)
2. इम्तियाज अहमद (उप-कप्तान)
3. हनीफ मोहम्मद
4. अलीमुद्दीन
5. महमूद हुसैन
6. सईद अहमद
7. शुजाउद्दीन
8. वालिस मथाइस
9. जे० बर्की
10. जफर अलताफ
11. मोहम्मद फारुक
12. इजाज बट
13. मोहम्मद मुनाफ
14. इन्तेखाब आलम
15. नसीमुल गनी
16. हसीब एहसान
17. मुश्ताक मोहम्मद

- डा० जहांगीर खां (प्रबन्धक)

टैस्ट मैचों के अलावा खेले गये मैचों का संक्षेप में विवरण इस प्रकार है :

आस्ट्रेलिया

फेवेल बा. देसाई	26	अपराजित	62
ग्राउट बा. पटेल	50		
हार्वे कै. जयसिम्ह बा. पटेल	17	कै. और बा. कांट्रेक्टर	36
ओनील कै. कुन्दरन बा. देसाई	113		
बर्ज बा देसाई	60		
मेकडोनल्ड पगबाधा बा. बोर्डे	27	रन आउट	6
मेके बा. पटेल	18		
लिंडवॉल कै. कुन्दरन बा. देसाई	10		
डेविडसन बा. बोर्डे	4		
बिनो कै. और बा. बोर्डे	3	अपराजित	10
मेकिफ अपराजित	0		
अतिरिक्त	3	अतिरिक्त	7
	331	दो विकटों पर	121

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–76, 2–76, 3–116, 4–266, 5–273, 6–299, 7–323, 8–325, 9–328, 10–331.

द्वितीय पारी : 1–20, 2–104.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
देसाई	36	4	111	4	11	4	18	0
रामचन्द	10	1	37	0	3	2	4	0
पटेल	26	2	104	3	7	1	15	0
नाडकर्णी	22	10	36	0	7	4	10	0
बोर्डे	13.1	4	23	3	13	1	45	0
जयसिम्ह	4	0	17	0	6	2	13	0
कांट्रेक्टर	—	—	—	—	5	1	9	1

———

पाकिस्तान की टीम भारत में, 1960-61

भारत भ्रमण करने वाली द्वितीय पाकिस्तानी टीम का भाग्य वैसा ही रहा जैसाकि कुछ वर्ष पहले पाकिस्तान में भ्रमण करने वाली भारतीय टीम का रहा था। पांचों टैस्ट मैचों में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका। 1952-53 के अन्तिम दो टैस्टों को शामिल करने पर इन दो देशों के बीच खेले गये लगातार बारह टैस्ट मैच अनिर्णीत रहे।

टीम के निम्नलिखित खिलाड़ी थे :

1. फजल महमूद (कप्तान)
2. इम्तियाज महमद (उप-कप्तान)
3. हनीफ मोहम्मद
4. अलीमुद्दीन
5. महमूद हुसैन
6. सईद अहमद
7. शुजाउद्दीन
8. वालिस मथाइस
9. जे० बर्की
10. जफर अलताफ
11. मोहम्मद फारुक
12. इजाज बट
13. मोहम्मद मुनाफ
14. इन्तेखाब आलम
15. नसीमुल गनी
16. हसीब एहसान
17. मुश्ताक मोहम्मद

डा० जहांगीर खां (प्रबन्धक)

टैस्ट मैचों के अलावा खेले गये मैचों का संक्षेप में विवरण इस प्रकार है :

विरुद्ध भारतीय विश्वविद्यालय : पूना में, नवम्बर 18, 19 और 20 को

पाकिस्तान 4 विकटों पर 535 और पारी समाप्ति की घोषणा (हनीफ मोहम्मद 222, मुश्ताक मोहम्मद 125*, मथाइस 103*) और 3 विकटों पर 119 रन। भारतीय विश्वविद्यालय : 327 (डी० एन० सरदेसाई 87, एस० जी० अधिकारी 66)। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

विरुद्ध बड़ौदा : बड़ौदा में, नवम्बर 21, 22 और 23 को

पाकिस्तान : 216 (मथाइस 85, जफर अल्ताफ 53, विन ने 51 रन देकर 5 विकटें लीं) और 1 विकेट पर 295 और पारी समाप्ति की घोषणा (सईद अहमद 127*, इम्तियाज अहमद 124*)। बड़ौदा : 242 (डी० के० गायकवाड 50) और 3 विकटों पर 33 रन। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

विरुद्ध पश्चिम क्षेत्र : अहमदाबाद में, नवम्बर 26, 27 और 28 को

पाकिस्तान : 194 (इम्तियाज अहमद 90, बी० पी० गुप्ते ने 56 रन देकर 5 विकटें लीं) और 4 विकटों पर 161 (मुश्ताक मोहम्मद 69*)। पश्चिम क्षेत्र : 9 विकटों पर 352 और पारी समाप्ति की घोषणा (पी० जी० जोशी 85, वाडेकर 79, कांट्रैक्टर 72, हसीब ने 80 रन देकर 6 विकटें लीं)। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

विरुद्ध मध्यक्षेत्र : नागपुर में, दिसम्बर 9, 10 और 11 को

पाकिस्तान : 133 और 5 विकटों पर 274 और पारी समाप्ति की घोषणा (बर्की 56, शुजाउद्दीन 51, मथाइस 50*)। मध्य क्षेत्र : 149 (गनी ने 43 रन देकर 5 विकटें लीं) और 4 विकटों पर 194 (मांकड 76*, ए० के० चतुर्वेदी 69)। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

विरुद्ध पूर्व क्षेत्र : जमशेदपुर में, दिसम्बर 25, 26 और 27 को

पाकिस्तान : 4 विकटों पर 434 और पारी समाप्ति की घोषणा (हनीफ मोहम्मद 104*, मुश्ताक मोहम्मद 90*, बर्की 90)। पूर्व क्षेत्र : 245 (एस० दास० 89, पी० रॉय 54, प्रकाश भंडारी 53) और 4 विकटों पर 185 (पी० सी० पोद्दार 73*, प्रकाश भंडारी 56)। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

---

*अपराजित

विरुद्ध बोर्ड अध्यक्ष एकादश : बंगलौर में, जनवरी 9, 10 और 11 को

पाकिस्तान : 360 (सईद अहमद 55, कुमार 150 रनों पर 6 विकेट)। और बिना विकेट खोये 59 रन। बोर्ड अध्यक्ष एकादश : 6 विकटों पर 364 और पारी समाप्ति की घोषणा (वी० मेहरा 133, डी० एन० सरदेसाई 106*, ए० ए० बेग 52)। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

विरुद्ध दक्षिण क्षेत्र : हैदराबाद में, जनवरी 21, 22 और 23 को

पाकिस्तान : 258 और 5 विकटों पर 194 (इजाज बट 105*)। दक्षिण क्षेत्र : 184 (जयसिम्हृ 63, शुजाउद्दीन ने 35 रन देकर 6 विकटें ली) और 4 विकटों पर 91 रन। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

विरुद्ध मध्यप्रदेश : इन्दौर में, जनवरी 28, 29 और 30 को

पाकिस्तान : 196 और 181 रन। मध्य प्रदेश : 181 (निवसरकर 59, फजल महमूद ने 47 रन देकर 5 विकटें ली) और 3 विकटों पर 64 रन। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

विरुद्ध उत्तर क्षेत्र : अमृतसर में, फरवरी 3, 4 और 5 को

पाकिस्तान : 271 (अलीमुद्दीन 112*, बर्की 78) और 5 विकटों पर 151 (अलीमुद्दीन 51)। उत्तर क्षेत्र : 145 रन (फारुक ने 69 रन देकर 5 विकटें ली)। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

टैस्ट मैच :

कांट्रेक्टर प्रथम बार भारत के कप्तान बने और फजल महमूद भी प्रथम बार पाकिस्तान की पर्यटक टीम का नेतृत्व कर रहे थे। किसी भी कप्तान ने जोखिम उठाने का प्रयत्न नहीं किया। केवल पांच घंटे प्रति दिन का खेल और पैंतालीस मिनटों के बाद पानी के लिये खेल का बन्द किया जाना, दोनों मे से किसी भी टीम मे मैच में विजय दिलाने वाले गेंदबाज का न होना आदि अनेक बातें थी कि इसमें कोई आश्चर्य नही होना चाहिये कि पाँचों टैस्ट मैचों में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

बम्बई में खेले गये प्रथम टैस्ट मैच में अतिथियों ने शानदार प्रारम्भ किया और पहले दिन की खेल समाप्ति पर केवल इम्तियाज का विकेट खोकर 241 रन बना लिये। हनीफ और सईद ने आकर्षक बल्लेबाजी की।

---

*अपराजित

दूसरे दिन इसी जोड़े ने 300 से ऊपर रन संख्या पहुँचा दी। तत्पश्चात् खेल मे परिवर्तन आया और नौ विकटें केवल 50 रन और बना कर उखड़ गई। दूसरा रन लेते समय हनीफ रन आउट हो गये। उन्होंने 380 मिनट बल्लेबाजी की और 160 रनों में 17 चौके लगाये। तुरन्त ही गुप्ते क गेंद पर सईद को जोशी ने स्टम्प कर दिया। इस बल्लेबाज ने 344 मिनट की बल्लेबाजी मे 11 चौके लगाकर 121 रन बनाये।

माँजरेकर (73) और कान्ट्रेक्टर (62) की लाभप्रद बल्लेबाजी के उपरान्त भी भारत ने केवल 300 रनों पर अपने आठ विकेट खो दिये। मैच मे केवल एक ही दिलचस्प बात थी कि प्रथम पारी में किसकी रन सख्या अधिक हो। जोशी और देसाई ने नवें विकेट की साझेदारी ने रन सख्या को 449 तक पहुँचा दिया। महमूद हुसैन ने देसाई का डंडा उखाड़ दिया लेकिन उस समय तक उनके 85 रन बन चुके थे जो टैस्ट मैच मे उनकी अधिकतम रन संख्या रही है। नवें विकेट की साझेदारी पांच रन और जोड़ देती तो इस विकेट की सर्वश्रेष्ठ साझेदारी हो जाती और इससे ब्लेकहेम और ग्रिगॅरी द्वारा आस्ट्रेलिया की ओर से इंग्लैंड के विरुद्ध स्थापित कीर्तिमान टूट जाता।

पाकिस्तान ने जब दूसरी पारी प्रारम्भ की तो उसके 99 रन कम थे और 225 मिनट का खेल बाकी था। देसाई ने अपने दूसरे ओवर मे हनीफ को आउट कर दिया जबकि पाकिस्तान का एक रन भी नही बना था। क्षेत्र-रक्षण मे ढील होने के कारण भारत ने जल्दी विकेट उखाड़ने का अवसर खो दिया। पाकिस्तान ने 4 विकटों पर 166 रन बनाये, समय पूरा हो गया और मैच में हार-जीत का फैसला नही हो सका।

वर्की (79) और गनी (70) ने कानपुर में खेले गये द्वितीय टैस्ट मैच मे पाकिस्तान की कुल रन संख्या को 335 तक पहुँचाने में सहायता की लेकिन इसमे दो दिन का समय लग गया। कान्ट्रेक्टर और जयसिम्हृ ने भारत की प्रथम पारी को उत्तम ढंग से प्रारम्भ किया और प्रथम विकेट की साझेदारी ने 71 रन बनाये। जयसिम्हृ के शतक मे जब एक रन कम था तो उन्होंने एक असम्भव रन लेने की कोशिश की और वह 500 मिनट बल्लेबाजी कर रन आउट हो गए। खेल के पाँचवें दिन उमरीगर ने अपना शतक पूरा किया और 339 मिनट बल्लेबाजी करके उन्होंने अपने 115 रनों में 11 चौके लगाये। भारत की प्रथम पारी 404 पर समाप्त हुई। द्वितीय पारी मे पाकिस्तान ने 3 विकटें 42 रनों पर खो दी लेकिन वर्की (48) और मथाइस (46) ने अगला विकेट खोये बिना कुल रन संख्या को 140 पर पहुँचा दिया।

तृतीय टैस्ट मैच कलकत्ता में खेला गया जहाँ वर्षा के कारण 270 मिनट खेल बन्द रहा। पाकिस्तान की कुल रन संख्या 301 के सामने भारत 180 रन बना सका लेकिन अतिथियो ने द्वितीय पारी में धीमी गति से बल्लेबाजी की और अपनी जीत के अवसर को खो दिया। हनीफ और सईद ने द्वितीय विकेट पर 72 रन जोड़ कर और फिर बर्की, मुश्ताक और इन्तखाब ने अपनी टीम की स्थिति को दृढ बनाया। इतनी अधिक रन संख्या के सामने बोर्डे द्वारा केवल 21 रन देकर 4 विकटों का लेना वस्तुत: सराहनीय कार्य था। कांट्रैक्टर और जयसिम्हृ ने प्रथम विकेट की साझेदारी में 59 रन बनाये और बोर्डे ने 44 रनों का योग दिया फिर भी भारत की कुल रन संख्या 180 ही रही। भारत की बल्लेबाजी को सबसे अधिक हानि फजल महमूद ने पाँच विकटें 26 रन पर लेकर पहुँचाई। द्वितीय पारी में हनीफ 63 रन पर अपराजित रहे और पाकिस्तान ने 3 विकटों पर 146 रन बना कर पारी समाप्ति की घोषणा कर दी। अतिथियों ने भारत की चार विकटें 65 रन पर गिरा दी। मांजरेकर और बोर्डे सावधानी से खेले और पूरे खेल की समाप्ति पर रन संख्या को 127 पर पहुँचा दिया।

मद्रास मे खेले गये चतुर्थ टैस्ट मैच में दोनों टीमों ने अधिक रन बनाये। हनीफ और इम्तियाज ने पाकिस्तान की प्रथम पारी 162 रन जोड़ कर शानदार ढंग से प्रारम्भ की। तत्पश्चात् इम्तियाज और सईद कुल रन संख्या को 252 पर ले गये। दोनों बल्लेबाजों ने अपने शतक पूरे किये और 8 विकटो पर 448 रन बनाकर पाकिस्तान ने पारी समाप्ति की घोषणा की। भारत के विरुद्ध पाकिस्तान की यह अधिकतम कुल रन संख्या थी। भारत ने भी 9 विकटों पर 539 रन बनाये जो कि टैस्ट क्रिकेट में उसकी अधिकतम रन संख्या है। कांट्रैक्टर और जयसिम्हृ ने भारत की पारी सुन्दर ढंग से प्रारम्भ की लेकिन उमरीगर (117) और बोर्डे (177) की प्रभावशाली पारी ने अधिकतम रन संख्या को सम्भव बनाया। बोर्डे ने लगभग 9 घंटे बल्लेबाजी की और 13 चौके लगाये। हसीब एहसान ने 84 ओवर फेंके और 202 रन देकर 6 विकटें ली। भारत पाकिस्तान के मध्य गेंदबाजी का यह सबसे लम्बा प्रदर्शन है। इम्तियाज और सईद ने पाकिस्तान की द्वितीय पारी प्रारम्भ की और बिना विकेट खोये रन संख्या 59 तक पहुँचा दी।

महत्वपूर्ण और गतियुक्त टैस्ट मैच तो दिल्ली में खेला गया। पहली बार कांट्रैक्टर ने टॉस जीता। मैदान गीला होने के कारण खेल एक घंटे बाद प्रारम्भ किया गया। पाकिस्तान ने क्षेत्र-रक्षण में ढील की और भारत ने दो विकेट खोकर 164 रन बनाये जिसमें सूरती के जानदार 64 रन थे। भारत के दूसरे बल्लेबाज बहुत धीमी रफ्तार से खेले। खेल के दूसरे दिन

कांट्रैक्टर चोट लग जाने के बाद जब दुबारा बल्लेबाजी करने आये तो उन्होंने बहुत-सा अमूल्य समय बरबाद कर दिया। खेल समाप्ति के समय भारत पांच विकटें खोकर 393 रन पर था, उमरीगर ने अपना शतक पूरा कर लिया था और फिर भी खेल रहे थे। खेल के तीसरे दिन भी भारत ने 75 मिनिट बल्लेबाजी की और 70 रन जोड़े। पारी 463 रनों पर समाप्त हो गई।

पाकिस्तान ने जैसे ही अपनी पारी प्रारम्भ की तो देसाई ने उसके श्रेष्ठ बल्लेबाज हनीफ को विदा कर दिया। कुमार ने अपने प्रथम टैस्ट के प्रथम ओवर में ही इम्तियाज का डंडा निकाल फेंका। भारत ने 4 विकटें 89 रनों पर गिरा दी। मुश्ताक मोहम्मद ने एक अनुभवी और दृढ़ खिलाड़ी की भाँति बल्लेबाजी की। उन्होंने 19 चौके लगाकर 101 रन बनाये। उनका शतक उनकी टीम को फॉलो-ऑन से तो न बचा सका लेकिन इससे भारत की विजय की सम्भावना अवश्य कम हो गई। क्षेत्र-रक्षण में भारत कमजोर रहा जिससे देसाई को, जिन्होंने 4 विकटें 103 पर ली, भी इस कारण भारी हानि उठानी पड़ी। कुमार ने अपने प्रथम टैस्ट मैच में 5 विकटें केवल 64 रन देकर गिराई। अतिथियों को 286 रन पर आउट होने के कारण फिर बल्लेबाजी करनी पड़ी। जब केवल एक ओवर गेंदबाजी करके देसाई ने शारीरिक पीड़ा के कारण मैदान छोड़ दिया तो पाकिस्तान के बल्लेबाजों को बड़ी राहत मिली। उन्होंने चौथे दिन की खेल समाप्ति पर 57 रन बना लिये थे और कोई भी विकेट नहीं गिरा था।

देसाई, नाडकर्णी और कुमार ने खेल के अन्तिम दिन विशेष कौशल दिखाया और पाकिस्तान की आधी टीम को 142 रन पर बाहर कर दिया। भारत की विजय की सम्भावना बढ़ी लेकिन बाद में खेलने वाले बल्लेबाजों ने दृढ़ता से बल्लेबाजी की और अपनी टीम की कुल रन संख्या को 250 पर पहुँचा दिया। भारत को जीतने के लिये 74 रन बनाने थे और खेल केवल पांच मिनट का बाकी था जिसमें 16 रन बने और भारत और पाकिस्तान के बीच लगातार बारहवां टैस्ट मैच भी हार-जीत का फैसला हुए बिना ही समाप्त हो गया।

रनों का सविस्तार विवरण इस प्रकार है:

प्रथम टैस्ट

बम्बई में दिसम्बर 2, 3, 4, 6 और 7 को खेला गया, टॉस पाकिस्तान ने जीता और मैच में हार–जीत का फैसला नहीं हो सका। कप्तान: एन॰ जे॰ कांट्रैक्टर (भारत) और फजल महमूद (पाकिस्तान)। विकेट-रक्षक: पी॰ जी॰ जोशी (भारत) और इम्तियाज अहमद (पाकिस्तान)। निर्णायक: एस॰ के॰ गांगुली और ए॰ आर॰ जोशी।

पाकिस्तान

हनीफ मोहम्मद रन आउट	160	कैं. उमरीगर बा. देसाई	0
इम्तियाज अहमद बा. देसाई	19	कैं. रॉय बा. नाडकर्णी	69
सईद अहमद स्ट. जोशी बा. गुप्ते	121	कैं. और बा. गुप्ते	41
मुश्ताक़ मोहम्मद पगबाधा बा. गुप्ते	6	पगबाधा बा. नाडकर्णी	19
मथाइस कैं. नाडकर्णी बा. देसाई	0	अपराजित	6
बर्की पगबाधा बा. गुप्ते	7	अपराजित	13
नसीमुल गनी कैं. जोशी बा. देसाई	4		
फजल महमूद कैं. जोशी बा. गुप्ते	1		
महमूद हुसैन कैं. देसाई बा. नाडकर्णी	23		
मोहम्मद फारुक अपराजित	2		
हसीब एहसान कैं. कांट्रैक्टर बा. नाडकर्णी	0		
अतिरिक्त	7	अतिरिक्त	18
	350	चार विकटों पर	166

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–55, 2–301, 3–302, 4–303, 5–318, 6–319, 7–321, 8–331, 9–349, 10-350.

द्वितीय पारी : 1–0, 2–80, 3–142, 4–147.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
देसाई	36	7	116	3	8	2	27	1
सूरती	9	0	37	0	8	1	21	0
उमरीगर	7	2	46	0	—	—	—	—
नाडकर्णी	37·4	14	75	2	15	10	9	2
एस. पी. गुप्ते	31	15	43	4	25	10	46	1
बोर्डे	6	1	26	0	16	4	25	0
कांट्रैक्टर	1	1	0	0	7	2	16	0
रॉय	—	—	—	—	1	0	4	0

भारत

रॉय कै. हुसैन बा. फारुक	23
कॉन्ट्रैक्टर कै. वर्की बा. फारुक	62
वेग कै. हनीफ बा. फारुक	1
मांजरेकर बा. हुसैन	73
उमरीगर कै. एवजी बा. हुसैन	33
बोर्डे पगवाधा बा. हुसैन	41
नाडकर्णी कै. वर्की बा. हुसैन	34
सूरती कै. गनी बा. फारुक	11
जोशी अपराजित	52
देसाई बा. हुसैन	85
गुप्ते (बल्लेबाजी नहीं की)	
अतिरिक्त	34
नौ विकटों पर पारी समाप्ति की घोषणा	449

विकटों का पतन :

1–56, 2–58, 3–121, 4–206, 5–207, 6– 289, 7–296, 8–300, 9–449.

पाकिस्तान की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
महमूद हुसैन	51·4	10	129	5
फजल महमूद	6	2	5	0
मोहम्मद फारुक	46	7	139	4
नसीमुल गनी	41	19	74	0
हसीब एहसान	31	10	68	0
मुश्ताक मोहम्मद	1	1	0	0

द्वितीय टैस्ट

कानपुर में दिसम्बर 16, 17, 18, 20 और 21को खेला गया, *टॉस पाकिस्तान ने जीता और मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।* कप्तान : एन० जे० कांट्रैक्टर (भारत) और फजल महमूद (पाकिस्तान)। विकेट-रक्षक : एन० एस० तम्हाने (भारत) और इम्तियाज महमद *(पाकिस्तान)। निर्णायक : एस० के गांगुली और ए० आर० जोशी।*

पाकिस्तान

हनीफ मोहम्मद कै. कांट्रेक्टर बा. उमरीगर	5	कै. जयसिम्हं बा. मुद्दैया	19
इम्तियाज अहमद बा. गुप्ते	20	कै. कांट्रेक्टर बा. मुद्दैया	16
सईद ग्रहमद कै. तम्हाने बा. देसाई	32	बा. गुप्ते	4
बर्की रन आउट	79	अपराजित	48
मथाइस पगबाधा बा. देसाई	37	अपराजित	46
अलीमुद्दीन कै. नाडकर्णी बा. उमरीगर	24		
मुश्ताक मोहम्मद कै. उमरीकर बा. मुद्दैया	13		
नसीमुल गनी अपराजित	70		
फजल महमूद पगबाधा बा. उमरीगर	16		
महमूद हुसैन कै. बोर्डे बा. उमरीगर	7		
हसीब एहसान कै. तम्हाने बा. गुप्ते	13		
अतिरिक्त	19	अतिरिक्त	7
	335	तीन विकटों पर	140

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–21, 2–29, 3–93, 4–174, 5–177, 6–214, 7–240, 8–293, 9–305, 10–335.

द्वितीय पारी : 1–31, 2–42, 3–42.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
देसाई	36	6	54	2	4	1	3	0
उमरीगर	55	23	71	4	3	0	10	0
एस. पी. गुप्ते	42·4	14	84	2	17	6	29	1
मुद्दैया	22	6	62	1	18	7	40	2
नाडकर्णी	32	24	23	0	7	4	6	0
बोर्डे	6	2	16	0	10	0	36	0
कांट्रेक्टर	1	0	6	0	—	—	—	—
जयसिम्हं	—	—	—	—	3	0	5	0
माँजरेकर	—	—	—	—	1	0	2	0
बेग	—	—	—	—	1	0	2	0

भारत

कांट्रेक्टर बा. एहसान	47
जयसिम्ह रन आउट	99
बेग बा. एहसान	13
मांजरेकर कै. गनी बा. फजल	52
उमरीगर कै. वर्की बा. हुसैन	115
बोर्डे कै. फजल बा. गनी	0
नाडकर्णी बा. एहसान	16
देसाई बा. एहसान	14
तम्हाने कै. मथाइस बा. एहसान	3
मुद्दैया बा. हुसैन	11
गुप्ते अपराजित	1
अतिरिक्त	33
	404

विकटों का पतन :

1-71, 2-92, 3-182, 4-258, 5-262, 6-294, 7-334, 8-342, 9-403, 10-404.

पाकिस्तान की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
महमूद हुसैन	44.5	13	101	2
फजल महमूद	36	14	37	1
नसीमुल गनी	55	17	109	1
हसीब एहसान	56	15	121	5
मुश्ताक मोहम्मद	2	1	3	0

तृतीय टैस्ट

कलकत्ता में दिसम्बर 30 और 31, 1960 और जनवरी 1, 3 और 4, 1961 को खेला गया, टॉस पाकिस्तान ने जीता और मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका। कप्तान : एन० जे० कांट्रेक्टर (भारत) और फजल महमूद (पाकिस्तान)। विकेट-रक्षक : एन० एस० तम्हाने (भारत) और इम्तियाज अहमद (पाकिस्तान)। निर्णायक :-एस० के० गांगुली और बी० सत्याजी राव।

पाकिस्तान

हनीफ मोहम्मद कै. वेग बा. देसाई	56	अपराजित	63
इम्तियाज अहमद बा. सुरेन्द्रनाथ	9	बा. देसाई	9
सईद अहमद कै. नाडकर्णी बा. सुरेन्द्रनाथ	41	बा. सुरेन्द्रनाथ	13
बर्की पगवाधा बा. बोर्डे	48	रन आउट	42
मुश्ताक मोहम्मद कै. जयसिम्ह बा. बोर्डे	61		
मथाइस कै. उमरीगर बा. देसाई	8		
नसीमुल गनी बा. सुरेन्द्रनाथ	0		
इन्तखाब आलम कै. तम्हाने बा. सुरेन्द्रनाथ	56	अपराजित	11
फजल महमूद पगवाधा बा. बोर्डे	8		
महमूद हुसैन बा. बोर्डे	4		
हसीब एहसान अपराजित	1		
अतिरिक्त	9	अतिरिक्त	8
	301	तीन विकटों पर पारी समाप्ति की घोषणा	146

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–12, 2–84, 3–135, 4–164, 5–186, 6–186, 7–274, 8–296, 9–296, 10–301.

द्वितीय पारी : 1–15, 2–34, 3–116.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
देसाई	35	3	118	2	16	4	37	1
सुरेन्द्रनाथ	46	20	93	4	18	2	51	1
उमरीगर	6	2	15	0	7	2	14	0
एस. पी. गुप्ते	18	6	41	0	1	1	0	0
बोर्डे	16·2	7	21	4	—	—	—	—
नाडकर्णी	6	5	4	0	7	1	36	0

भारत

कांट्रेक्टर बा. आलम	25	कै. फजल बा. एहसान	12
जयसिम्ह कै. मथाइस बा. हुसैन	28	कै. मथाइस बा. आलम	26
वेग बा. आलम	19	बा. एहसान	1
मांजरेकर बा. फजल	29	अपराजित	45
उमरीगर कै. इम्तियाज बा. हुसैन	1	बा. आलम	4
बोर्डे कै. इम्तियाज बा. फजल	44	अपराजित	23
नाडकर्णी कै. इम्तियाज बा. फजल	1		
देसाई बा. एहसान	14		
तम्हाने कै. आलम बा. फजल	0		
सुरेन्द्रनाथ अपराजित	5		
गुप्ते बा. फजल	0		
अतिरिक्त	14	अतिरिक्त	16
	180	चार विकटों पर	127

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–59, 2–83, 3–83, 4–85, 5–145, 6–147, 7–174, 8–175, 9–180, 10–180.

द्वितीय पारी : 1–47, 2–47, 3–48, 4–65.

पाकिस्तान की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
महमूद हुसैन	31	12	56	2	8	3	9	0
फजल महमूद	25·3	12	26	5	12	2	19	0
इन्तखाब आलम	24	11	35	2	15	2	33	2
नसीमुल गनी	12	5	32	0	2	1	5	0
हसीब अहमान	7	1	17	1	14	6	25	2
सईद अहमद	—	—	—	—	1	0	2	0
मुश्ताक मोहम्मद	—	—	—	—	3	1	9	0
हनीफ मोहम्मद	—	—	—	—	1	0	6	0
वर्की	—	—	—	—	1	0	3	0

चतुर्थ टैस्ट

मद्रास में जनवरी 13, 14, 15, 17 और 18 को खेला गया, टॉस पाकिस्तान ने जीता और मैच में हार-जीत का फैसला नही हो सका। कप्तान : एन० जे० कांट्रेक्टर (भारत) और फजल महमूद (पाकिस्तान)। विकेट-रक्षक : वी० के० कुन्दरन (भारत) और इम्तियाज अहमद (पाकिस्तान)। निर्णायक : एस० के० रघुनाथ राव और एस० पान।

पाकिस्तान

हनीफ मोहम्मद कै. कुन्दरन बा. सुरेन्द्रनाथ	62		
इम्तियाज अहमद बा. देसाई	135	अपराजित	20
सईद अहमद कै. कुन्दरन बा. देसाई	103	अपराजित	38
बर्की कै. कांट्रेक्टर बा. बोर्डे	19		
मथाइस पगवाधा बा. उमरीगर	49		
मुश्ताक मोहम्मद अपराजित	41		
नसीमुल गनी कै. कुन्दरन बा. उमरीगर	5		
इन्तखाब आलम कै. कुन्दरन बा. देसाई	13		
फजल महमूद पगवाधा बा. देसाई	4		
महमूद हुसैन, हसीब एहसान — बल्लेबाजी नहीं की			
अतिरिक्त	17	अतिरिक्त	1
आठ विकटों पर पारी समाप्ति की घोषणा	448	बिना विकेट खोये	59

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–162, 2–252, 3–322, 4–338, 5–408, 6–420, 7–444, 8–448.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
देसाई	28·5	4	66	4	3	0	14	0
सुरेन्द्रनाथ	38	10	99	1	3	2	8	0
बी. पी. गुप्ते	30	9	97	0	5	0	19	0
उमरीगर	53	24	64	2	—	—	—	—
बोर्डे	33	4	105	1	—	—	—	—
जयसिम्ह	—	—	—	—	3	0	8	0
मिल्खासिंह	—	—	—	—	1	0	2	0
कांट्रेक्टर	—	—	—	—	1	0	1	0
मांजरेकर	—	—	—	—	2	0	6	0

भारत

जयसिम्ह कै. आलम बा. हुसैन	32
कांट्रेक्टर कै. आलम बा. एहसान	81
डी. के. गायकवाड कै. और बा. एहसान	9
मांजरेकर बा. एहसान	30
उमरीगर बा. एहसान	117
बोर्डे अपराजित	177
मिल्खासिंह कै. फजल बा. एहसान	18
कुन्दरन बा. एहसान	12
देसाई स्ट. इम्तियाज बा. गनी	18
सुरेन्द्रनाथ स्ट. इम्तियाज बा. गनी	6
बी. पी. गुप्ते अपराजित	17
अतिरिक्त	22
नौ विकटों पर पारी समाप्ति की घोषणा	539

विकटों का पतन :

1–84, 2–102, 3–146, 4–164, 5–341, 6–396, 7–416, 8–447, 9–476.

पाकिस्तान की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
महमूद हुसैन	37	12	86	1
फजल महमूद	43	22	66	0
हसीब एहसान	84	19	202	6
इन्तखाब आलम	17	5	40	2
नसीमुल गनी	45	12	123	2

पंचम टैस्ट

दिल्ली में फरवरी 8, 9, 11, 12 और 13 को खेला गया, टॉस भारत ने जीता और मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका। कप्तान : एन० जे० कांट्रैक्टर (भारत) और फजल महमूद (पाकिस्तान)। विकेट-रक्षक : वी० के० कुन्दरन (भारत) और इम्तियाज अहमद (पाकिस्तान)। निर्णायक : गोपालकृष्णन् और के० रघुनाथ राव।

भारत

जयसिम्हा बा. फारुक	27	अपराजित	14
कॉन्ट्रैक्टर कै. और बा. आलम	92		
सूरती कै. इम्तियाज बा. फजल	64		
मांजरेकर कै. मथाइस बा. एहसान	18		
उमरीगर बा. फजल	112		
बोर्डे कै. इम्तियाज बा. फारुक	45		
मिल्खासिंह बा. हुसैन	35		
नाडकर्णी बा. फजल	21		
कुन्दरन अपराजित	12	अपराजित	1
देसाई बा. हुसैन	3		
कुमार बा. हुसैन	6		
अतिरिक्त	28	अतिरिक्त	1
	463	बिना विकेट खोये	16

विकटों क तन :

1–43, 2–150, 3–201, 4–324, 5–338, 6–401, 7–439, 8–441, 9–453, 10–463.

पाकिस्तान की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
महमूद हुसैन	40	9	115	3	1	0	7	0
फजल महमूद	38	8	86	3	—	—	—	—
मोहम्मद फारुक	29	2	101	2	1	0	8	0
हसीब एहसान	18	5	57	1	—	—	—	—
इन्तखाब आलम	33	6	76	1	—	—	—	—

पाकिस्तान

इम्तियाज अहमद बा. कुमार	25	पगबाधा बा. नाडकर्णी	53
हनीफ मोहम्मद कै. मिल्खासिंह बा. देसाई	1	बा. देसाई	44
सईद अहमद कै. उमरीगर बा. नाडकर्णी	36	कै. एवजी बा. नाडकर्णी	31
वर्की कै. मांजरेकर बा. देसाई	61	कै. श्रौर बा. कुमार	8
मथाइस कै. नाडकर्णी बा. कुमार	10	कै बोर्डे बा. नाडकर्णी	2
मुश्ताक मोहम्मद कै. कुमार बा. देसाई	101	पगबाधा बा. देसाई	22
इन्तखाब आलम बा. देसाई	0	बा. कुमार	10
फजल महमूद कै. नाडकर्णी बा. कुमार	13	पगबाधा बा. देसाई	18
महमूद हुसैन पगबाधा बा. कुमार	20	बा. नाडकर्णी	35
हसीब एहसान बा. कुमार	5	बा. देसाई	6
मोहम्मद फारुक अपराजित	0	अपराजित	14
अतिरिक्त	14	अतिरिक्त	7
	286		250

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–10, 2–60, 3–78. 4–89, 5–225, 6–229, 7–254, 8–265, 9–281, 10–286.

द्वितीय पारी : 1–83, 2–107, 3–126, 4–131, 5–142, 6–165, 7–189, 8–196, 9–212, 10–250.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
देसाई	28	5	103	4	27	3	88	4
सूरती	11	1	38	0	2	0	34	0
नाडकर्णी	34	24	23	1	52·4	38	43	4
कुमार	37.5	21	64	5	36	17	68	2
बोर्डे	10	3	30	0	2	0	2	0
उमरीगर	5	1	14	0	3	2	8	0

भारत का 1960-61 में भ्रमण करने वाली पाकिस्तान की टीम
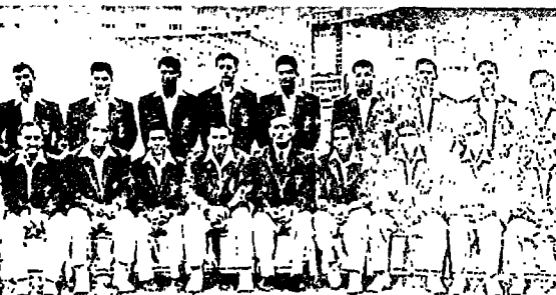
खड़े हुए : जफर अलताफ, जे. बर्की, एम. फारुक, इजाज बट, मोहम्मद मुनाफ, इन्तेखाब आलम, नासीमुल गनी, हसीब ऐहसान और मुश्ताक मोहम्मद ।
कुर्सी पर : शुजाउद्दीन, महमूद हुसैन, हनीफ मोहम्मद, फजल महमूद (कप्तान), डॉ. जहाँगीर (प्रबन्धक), इम्तियाज अहमद (उप-कप्तान), अलीमुद्दीन, सईद अहमद और वालि मथाइस ।

भारत का 1961-62 में भ्रमण करने वाली एम. सी. सी. टीम
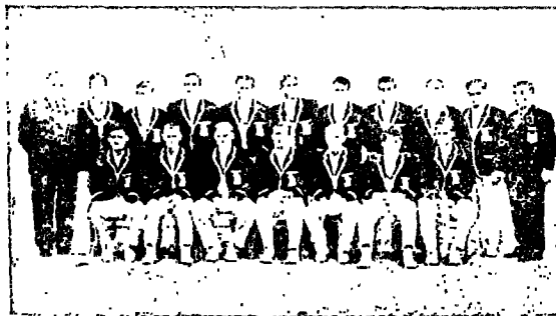
खड़े हुए : टी. एन. पियर्स (प्रबन्धक), डी. ए. ऐलन, पी. एच. पारफिट, डब्लू. ई. रसेल, डी. आर. व्हाइट, ए. आर. ब्राउन, बी. आर. नाइट, डी. आर. स्मिथ, जे. टी. मरे और जी. मिलमैन
कुर्सी पर : जी. पुलर, पी. ई. रिचार्डसन, एम. जे. के. स्मिथ (उप-कप्तान), ई. आर. डेक्सटर (कप्तान), जी. ए. आर. लॉक, के. एफ. बैरिंगटन और आर. डब्लू. बारबर ।

वेस्ट इंडीज का 1962 में भ्रमण करने वाली भारतीय टीम
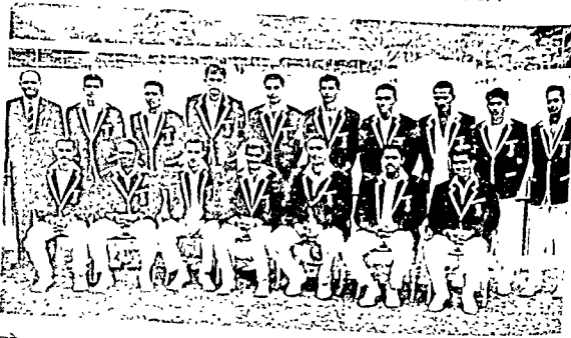
खड़े हुए : गुलाम अहमद (प्रबन्धक), आर. एफ. सूरती, वी. बी. रंजने, सलीम दुर्रानी, एफ. एम इंजीनियर, एम. एल. जयसिम्हा, डी. एन. सरदेसाई, वी. के. कुन्दरन, आर. बी. देसाई और ई. ए. एस. प्रसन्ना।
कुर्सी पर : आर.जे. नाडकर्णी, वी.एल. मांजरेकर, पटौदी के नवाब (उप-कप्तान), एन.जे. कांट्रैक्टर (कप्तान), पी. आर. उमरीगर, सी. जी. बोर्डे, और वी. मेहरा।

भारत का 1964 में भ्रमण करने वाली एम. सी. सी. टीम
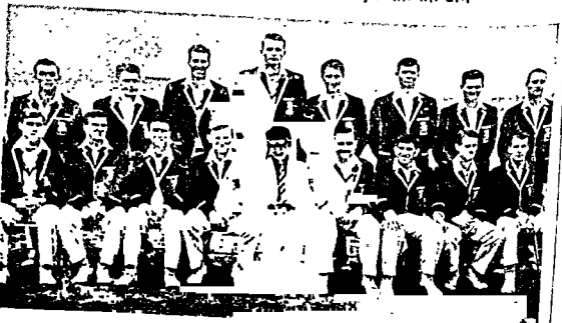
खड़े हुए : जे. एच. ऐडरिच, पी. जे. शार्प, डी. विलसन, जे. डी. एफ. लारटर, आई. जे. जोन्स, जे. एस. ई. प्राइस, जे. बी. बोलस और जे. जी. बिंक।
: पी. एच. पारफिट, जे. एम. पार्क्स, एफ. जे. टिटमस, एम. जे. के. स्मिथ (कप्तान), डी. क्लार्क (प्रबन्धक), एम. सी. काउड्री, के. एफ. बैरिंगटन, जे. मॉर्टीमोर और बी. आर. नाइट।

एम० सी० सी० की टीम भारत में, 1961-62

भारत में आने वाली इंग्लैंड की तीसरी औपचारिक टीम के कप्तान ई० आर० डेक्सटर थे। इंग्लैंड के कुछ महान् खिलाड़ी जैसे पी० बी० एच० मे, एम० सी० काउड्री, सुब्बाराव, स्टेथम और ट्रूमैन इस भ्रमण में सम्मिलित नहीं हुए। आखिरी दो की अनुपस्थिति ने गेंदबाजी को कमजोर कर दिया फिर भी टीम काफी सन्तुलित थी। कुल 15 मैच खेले गये, इंग्लैंड की टीम 4 मे जीती, 2 मे हारी और शेष 9 मैचों में हार-जीत का फैसला नही हो सका।

इस टीम में निम्नलिखित खिलाड़ी थे :

1. ई० आर० डेक्सटर (कप्तान)
2. एम० जे० के० स्मिथ (उप-कप्तान)
3. डी० ए० ऐलन
4. आर० डब्लू० वारबर
5. के० एफ० बैरिंगटन
6. ए० आर० ब्राउन
7. बी० आर० नाइट
8. जी० ए० आर० लॉक
9. जी० मिलमेन
10. जे० टी० मरे
11. पी० एच० पारफिट
12. जी० पुलर
13. पी० ई० रिचार्डसन
14. डब्लू० ई० रसेल
15. डी० आर० स्मिथ
16. डी० आर० व्हाइट

टी० एन० पियर्स (प्रबन्धक)

टैस्ट मैचों के अलावा खेले गये मैचों का संक्षेप में विवरण इस प्रकार है :

विरुद्ध भारतीय विश्वविद्यालय : पूना में, अक्टूबर 28, 29 और 30 को

भारतीय विश्वविद्यालय : 9 विकटों पर 346 और पारी समाप्ति की घोषणा (मिलखासिंह 74, एन० के० गोरे 54, एस० पी० गायकवाड़ 53) और 3 विकटों पर 67 रन। एम० सी० सी० : 417 (वैरिंगटन 149*, मरे 74, पुलर 64, विश्वनाथ ने 161 रन देकर 6 विकटें ली)। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

विरुद्ध पश्चिम क्षेत्र : अहमदाबाद में, नवम्बर 3, 4 और 5 को

एम० सी० सी० : 7 विकटों पर 272 और पारी समाप्ति की घोषणा (पुलर 104) और 5 विकटों पर 167 (पारफिट 58)। पश्चिम क्षेत्र : 211 (वी० एच० भोंसले 62*, डी० आर० स्मिथ ने 58 रन देकर 5 विकटें ली) और 5 विकटों पर 159 (सूरती 51*)। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

विरुद्ध बम्बई : नवम्बर 8, 9 और 10 को

एम० सी० सी० : 5 विकटों पर 286 और पारी समाप्ति की घोषणा (बारबर 71, एम० जे० के० स्मिथ 56, मरे 51*) और 1 विकेट पर 125 और पारी समाप्ति की घोषणा। बम्बई : 224 (एस० जी० अधिकारी 87) और 7 विकटों पर 137 रन। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

विरुद्ध बोर्ड अध्यक्ष एकादश : हैदराबाद में, नवम्बर 18, 19 और 20 को

बोर्ड अध्यक्ष एकादश : 5 विकटों पर 281 और पारी समाप्ति की घोषणा (पटौदी 70, सूरती 69, पी० रॉय 65) और 5 विकटों पर 163 और पारी समाप्ति की घोषणा (ए० एल० आपटे 76*)। एम० सी० सी० : 261 (एम० जे० के० स्मिथ 89, बारबर 54) और 6 विकटों पर 184 (पारफिट 84*)। एम० सी० सी० चार विकटों से विजयी।

विरुद्ध राजस्थान : जयपुर में, नवम्बर 22, 23 और 24 को

राजस्थान : 268 (दुर्रानी 124, डी० आर० स्मिथ ने 47 रन देकर 6 विकटें ली) और 6 विकटों पर 155 और पारी समाप्ति की घोषणा। एम० सी० सी० : 6 विकटों पर 222 और पारी समाप्ति की घोषणा

---

* अपराजित

(वैरिंगटन 91) और 2 विकटों पर 86 रन। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

विरुद्ध मध्य क्षेत्र : नागपुर में, नवम्बर 26, 27 और 28 को

एम० सी० सी० : 3 विकटों पर 405 और पारी समाप्ति की घोषणा (पारफिट 166*, रसेल 101, रिचार्डसन 58) और 3 विकटो पर 58 रन। मध्य क्षेत्र : 234 (एम० आर० शर्मा 68, के० एम० रूंगटा 52) और 6 विकटों पर 235 और पारी समाप्ति की घोषणा (सूर्यवीरसिंह 112)। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

विरुद्ध उत्तर क्षेत्र : जलन्धर में, दिसम्बर 8, 9 और 10 को

उत्तर क्षेत्र : 152 (लॉक ने 17 रन देकर 4 विकटें ली) और 145 (वी० मेहरा 53)। एम० सी० सी० : 256 (डेक्सटर 72, मुद्दैया ने 71 रन देकर 6 विकटें ली) और 1 विकेट पर 42 रन। एम० सी० सी० 9 विकटो से विजयी।

विरुद्ध पूर्व क्षेत्र : कटक में, दिसम्बर 22, 23 और 24 को

एम० सी० सी० : 4 विकटों पर 261 और पारी समाप्ति की घोषणा (वैरिंगटन 80, रिचार्डसन 59) और 5 विकटों पर 277 (रिचार्डसन 147)। पूर्व क्षेत्र : 8 विकटों पर 263 और पारी समाप्ति की घोषणा (आर० बी० केनी 70, एम० पी० बरुआ 66)। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

विरुद्ध सेना : कलकत्ता में, दिसम्बर 26, 27 और 28 को

एम० सी० सी० : 9 विकटों पर 339 और पारी समाप्ति की घोषणा (पारफिट 112, बारवर 58, डेक्सटर 58)। सेना : 172 (वी० के० डांडेकर 69, व्हाइट ने 42 रन देकर 5 विकटें ली) और 130 (नाइट ने 7 रन देकर 4 विकटें ली)। एम० सी० सी० एक पारी और 37 रनों से विजयी।

विरुद्ध दक्षिण क्षेत्र: बंगलोर में, जनवरी 6, 7 और 8 को

एम० सी० सी० : 193 (एम० जे० के० स्मिथ 57, प्रसन्ना ने 56 रन देकर 6 विकटें ली) और 2 विकटों पर 192 और पारी समाप्ति की

---

* अपराजित

घोषणा (एम० जे० के० स्मिथ 67*, पुलर 52)। दक्षिण क्षेत्र : 132 और 216 (एस० नजरथ 65, जगन्नाथ 52, ब्राउन ने 13 रन देकर 4 विकटें ली)। एम० सी० सी० 37 रनों से विजयी।

टैस्ट मैच

भारत और इंग्लैंड ने प्रथम तीन मैचों मे जिनमें हार-जीत का फैसला नही हो सका, अपनी कुल रन संख्या को ऊँचा रखा। बम्बई मे खेले गये प्रथम टैस्ट मैच में इंग्लैंड ने पहले बल्लेबाजी की और आठ विकेटों पर 500 रन बनाकर पारी समाप्ति की घोषणा कर दी। बैरिंगटन 151 रन बनाकर भी अपराजित रहे। डेक्सटर (85), पुलर (83) और रिचार्डसन (71) ने जम कर बल्लेबाजी की। भारत ने भी 390 रन बनाकर उत्तर दिया। बोर्डे, मांजरेकर और जयसिम्हा ने कुल रन संख्या में अच्छा योग दिया। लेकिन सलीम दुर्रानी की आक्रामक बल्लेबाजी ने दर्शकों को मोह लिया। बैरिंगटन ने दूसरी बार भी उत्तम बल्लेबाजी की। पांच विकटों पर 184 रन बना कर इंग्लैंड ने अपनी द्वितीय पारी समाप्ति की घोषणा कर दी। भारत को जीतने के लिये 240 मिनट में 295 रन बनाने थे। जयसिम्ह और मांजरेकर ने द्वितीय विकेट की साझेदारी में 131 रनों का योगदान दिया लेकिन रन बनने की रफ्तार धीमी होने से भारत अपनी पाँच विकटें खोकर 180 रन बना सका।

कानपुर के ग्रीन पार्क में खेले गये द्वितीय टैस्ट मैच में भारत की रन संख्या आठ विकटों पर 467 तक पहुँच गई। उमरीगर 147 रन बना कर अपराजित रहे। मांजरेकर (96) और जयसिम्ह (70) ने आकर्षक बल्लेबाजी की। एस० पी० गुप्ते की सही गेंदबाजी ने मेहमानों को जमने नही दिया और वे केवल 244 रन बना सके। इंग्लैंड को फिर से बल्लेबाजी करनी पड़ी लेकिन इस बार भारतीय गेंदबाजी में उन्होंने कोई विशेषता नहीं पाई और केवल पांच विकटों पर 497 रन बना लिये। पुलर, बैरिंगटन और डेक्सटर ने शतक बनाये।

तृतीय टैस्ट मैच में केवल तीन दिन ही खेल हो सका और इतने समय में 13 विकेट गिरे। भारत ने पहले बल्लेबाजी की और 466 रन बनाये जिनमे मांजरेकर और जयसिम्ह के शतक शामिल थे। तीसरे दिन का खेल समाप्त होने पर इंग्लैंड के तीन विकटों पर 256 रन बने थे। बैरिंगटन ने इस टैस्ट शृंखला मे अपना तीसरा शतक लगाया।

---

* अपराजित

कलकत्ता में खेले गये चतुर्थ टैस्ट मैच में दुर्रानी और बोर्डे की गेंदबाजी ने इंग्लैंड को 212 रनों पर आउट कर लिया। इसके पहले भारत 380 रन बना चुका था। द्वितीय पारी में भारत 252 रन ही बना सका; लेकिन मेहमानों की दूसरी पारी की रन संख्या को 233 रन पर सीमित रखकर भारत ने 187 रनों से मैच में विजय प्राप्त करली। बोर्डे ने 68 और 61 रन बनाये और 65 रन देकर चार विकटें भी ली। लेकिन दुर्रानी की गेंदबाजी भारत को मैच जिताने में सबसे अधिक सहायक सिद्ध हुई।

पांचवें टैस्ट मैच को 128 रनों से जीत कर भारत ने इंग्लैंड पर अपनी धाक जमाली और प्रथम बार इंग्लैंड के विरुद्ध 'रबर' जीता।

पटौदी के शानदार शतक, कांट्रैक्टर (86), इंजीनियर (65) और नाडकर्णी (63) के सुन्दर सहयोग से भारत की कुल रन संख्या 428 हो गई। जब मेहमानों ने बल्लेबाजी प्रारम्भ की तो दुर्रानी ने भी अपनी पूरी योग्यता और साहस के साथ गेंदबाजी की और मेहमानों को 281 रन से आगे नहीं बढ़ने दिया। लॉक की गेंदबाजी ने भी भारत की द्वितीय पारी में कमाल दिखाया और भारत के सभी खिलाडी 190 रनों पर आउट हो गये। मांजरेकर के 85 रनो ने उनकी टीम की लाज रखी। इंग्लैंड दूसरी पारी में 209 रन ही बना सका।

इंग्लैंड के सबसे सफल बल्लेबाज बैरिंगटन की औसत रन संख्या 99 रही। उन्होंने नौ पारियों में तीन बार अपराजित रहकर कुल 594 रन बनाये। मांजरेकर सब भारतीय बल्लेबाजों में आगे रहे; उन्होंने आठ पारियों में एक बार अपराजित रहकर कुल 586 रन बनाए। उनकी प्रति पारी औसत रन संख्या 83·71 रही। भारत की ओर से टैस्ट क्रिकेट मे बल्लेबाजी का यह सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन था। ऐलन और लॉक इंग्लैंड के सबसे उत्तम गेंदबाज रहे लेकिन सलीम दुर्रानी ने 27·04 के औसत से 23 विकटें लेकर गेंदबाजी का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया।

रनों का सविस्तार विवरण इस प्रकार है :

प्रथम टैस्ट

बम्बई में नवम्बर 11, 12, 14, 15 और 16 को खेला गया, टॉस इंग्लैंड ने जीता और मैच में हार-जीत का फैसला नही हो सका। कप्तान : एन० जे० कांट्रैक्टर (भारत) और ई० आर० डेक्सटर (इंग्लैंड)। विकेट-रक्षक : बी० के० कुन्दरन (भारत) और जे० टी० मरे (इंग्लैंड)। निर्णायक : एस० के० गांगुली और ए० आर० जोशी।

इंग्लैंड

रिचार्डसन कै. कुन्दरन बा. बोर्डे	71	कै. कृपालसिंह बा. दुर्रानी	43
पुलर स्ट. कुन्दरन बा. बोर्डे	83		
बैरिंगटन अपराजित	151	अपराजित	52
एम. जे. के. स्मिथ कै. कुन्दरन बा. रंजने	36	बा. दुर्रानी	0
डेक्सटर बा. दुर्रानी	85	कै. एवजी बा. रंजने	27
बारबर स्ट. कुन्दरन बा. बोर्डे	19	रन आउट	31
मरे कै. एवजी बा. रंजने	8	बा. देसाई	2
ऐलन कै. कुन्दरन बा. रंजने	0		
लॉक बा. रंजने	23	अपराजित	22
डी. आर. स्मिथ, ब्राउन } बल्लेबाजी नहीं की			
अतिरिक्त	24	अतिरिक्त	7
आठ विकटों पर पारी समाप्ति की घोषणा	500	पांच विकटो पर पारी समाप्ति की घोषणा	184

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–159, 2–164, 3–228, 4–389,
5–434, 6–458, 7–458, 8–500.

द्वितीय पारी : 1–74, 2–93, 3–93, 4–144, 5–147.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
आर. बी. देसाई	32	3	85	0	13	2	39	1
रंजने	21	2	76	4	13	1	53	1
कृपालसिंह	33	9	64	0	14	3	33	0
वी. वी. कुमार	27	8	70	0	—	—	—	—
दुर्रानी	30	5	91	1	11	1	28	2
बोर्डे	35	5	90	3	7	1	24	0

भारत

कांट्रेक्टर बा. ऐलन	19	कै. ऐलन बा. डी. स्मिथ	1
जयसिम्हं कै. बैरिंगटन बा. डेक्सटर	56	कै. ब्राउन बा. एम. जे. के. स्मिथ	51
मांजरेकर कै. लॉक बा. बारबर	68	पगवाघा बा. लॉक	84
मिल्खासिह कै. ब्राउन बा. ऐलन	2	कै. ऐलन बा. रिचार्डसन	12
बोर्ड बा. डी. स्मिथ	69	अपराजित	12
दुर्रानी कै. बारबर बा. ऐलन	71	कै. और बा. रिचार्डसन	0
कृपालसिंह अपराजित	38	अपराजित	13
सुन्दरन पगवाघा बा. लॉक	5		
देसाई कै. रिचार्डसन बा. लॉक	1		
रंजने कै. बारबर बा. लॉक	16		
कुमार बा. लॉक	0		
अतिरिक्त	45	अतिरिक्त	7
	390	पांच विकटों पर	180

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–80, 2–121, 3–140, 4–173, 5–315, 6–341, 7–356, 8–358, 9–383, 10–390.

द्वितीय पारी : 1–5, 2–136, 3–140, 4–162, 5–162,

इंग्लैंड की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
डी. स्मिथ	31	12	54	1	7	2	18	1
ब्राउन	19	2	64	0	5	0	15	0
डेक्सटर	12	4	25	1	4	0	15	0
बारबर	22	5	74	1	13	2	42	0
लॉक	45	22	74	4	16	9	33	1
ऐलन	39	21	54	3	11	5	12	0
बैरिंगटन	—	—	—	—	3	0	18	0
एम. जे. के. स्मिथ	—	—	—	—	8	3	10	1
रिचार्डसन	—	—	—	—	6	3	10	2

द्वितीय टेस्ट

कानपुर में दिसम्बर 1, 2, 3, 5 और 6 को खेला गया, टॉस भारत ने जीता और मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।
कप्तान : एम० जे० कांट्रेक्टर (भारत) और ई० आर० डेक्सटर (इंग्लैंड)।
विकेट-रक्षक : एफ० एम० इंजीनियर (भारत) और जे० टी० मरे (इंग्लैंड)।
निर्णायक : मोहम्मद यूनस और एस० रॉय।

भारत

जयसिम्ह कै. रिचार्डसन बा. लॉक	70
कांट्रेक्टर बा. नाइट	17
मांजरेकर कै. नाइट बा. ऐलन	96
दुर्रानी कै. लॉक बा. डेक्सटर	37
उमरीगर अपराजित	147
बोर्डे बा. डेक्सटर	21
सरदेसाई हिट विकेट बा. लॉक	28
कृपालसिंह बा. नाइट	7
इंजीनियर स्ट. मरे बा. लॉक	33
रंजने, एस. पी. गुप्ते — बल्लेबाजी नहीं की	
अतिरिक्त	11
आठ विकेटों पर पारी समाप्ति की घोषणा	467

विकटों का पतन :

1–41, 2–150, 3–193, 4–261,
5–293, 6–368, 7–414, 8–467.

इंग्लैंड की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
डी. स्मिथ	44	11	111	0
नाइट	36	11	80	2
डेक्सटर	31	5	48	2
लॉक	44	15	93	3
ऐलन	43	17	88	1

इंग्लैंड

रिचार्डसन कै. इंजीनियर बा. गुप्ते	22	कै. उमरीगर बा. बोर्डे	48
पुलर कै. सरदेसाई बा. गुप्ते	46	कै. कांट्रेक्टर बा. दुर्रानी	119
बैरिंगटन बा. गुप्ते	21	रन आउट	172
एम. जे. के. स्मिथ कै. और बा. गुप्ते	0	पगबाधा बा. गुप्ते	0
डेक्सटर कै. कृपालसिंह बा. गुप्ते	2	अपराजित	126
बारबर अपराजित	69	रन आउट	10
मरे बा. बोर्डे	2	अपराजित	9
नाइट कै. और बा. बोर्डे	12		
ऐलन कै. इंजीनियर बा बोर्डे	12		
लॉक कै. और बा. दुर्रानी	49		
डी. स्मिथ पगबाधा बा. रंजने	0		
अतिरिक्त	9	अतिरिक्त	13
	244	पांच विकटो पर	497

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–29, 2–82, 3–87, 4–95, 5–100, 6–104, 7–128, 8–162, 9–243, 10–244.
द्वितीय पारी : 1–94, 2–223, 3–234, 4–440, 5–459.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
रंजने	21.3	9	38	1	18	1	61	0
उमरीगर	6	1	11	0	19	6	53	0
एस. पी. गुप्ते	40	12	90	5	33	8	89	1
कृपालसिंह	1	0	5	0	36	7	78	0
दुर्रानी	16	6	36	1	53	15	139	1
बोर्डे	22	6	55	3	10	4	44	1
जयसिम्हा	—	—	—	—	6	1	8	0
कांट्रेक्टर	—	—	—	—	2	0	9	0
सरदेसाई	—	—	—	—	1	0	3	0

तृतीय टैस्ट

दिल्ली में दिसम्बर 13, 14, 16, 17 और 18 को खेला गया, टॉस भारत ने जीता और मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका। कप्तान : एन० जे० कांट्रैक्टर (भारत) और इ० आर० डेक्सटर (इंग्लैंड)। विकेट-रक्षक : एफ० एम० इंजीनियर (भारत) और जे० टी० मरे (इंग्लैंड)। निर्णायक : एस० वी० कुमारस्वामी और बी० सत्याजी राव।

भारत

जयसिम्हं कै. और बा. डी. स्मिथ	127
काट्रैक्टर कै. पुलर बा. लॉक	39
मांजरेकर अपराजित	189
पटौदी बा. ऐलन	13
उमरीगर पगबाधा बा. ऐलन	22
बोर्डे बा. बारबर	45
दुर्रानी बा. ऐलन	18
इंजीनियर पगबाधा बा. ऐलन	1
कृपालसिंह रन आउट	2
देसाई पगबाधा बा. नाइट	5
एस० पी० गुप्ते बा. नाइट	0
अतिरिक्त	5
	466

विकटों का पतन :

1–121, 2–199, 3–244, 4–276, 5–408, 6–443, 7–451, 8–455, 9–462, 10–466.

इंग्लैंड की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
डी० स्मिथ	30	11	66	1
नाइट	25·4	4	72	1
ऐलन	47	18	87	4
बारबर	25	3	103	1
डेक्सटर	2	0	11	0
लॉक	40	15	83	1
बैरिंगटन	9	1	39	0

इंग्लैंड

रिचार्डसन पगबाधा बा. देसाई	1
पुलर कै. मांजरेकर बा. कृपालसिंह	89
वॅरिंगटन अपराजित	113
एम० जे० के० स्मिथ बा. गुप्ते	2
डेक्सटर अपराजित	45

बारबर
मरे
नाइट
ऐलन
लॉक
डी० स्मिथ
} बल्लेबाजी नहीं की

अतिरिक्त	6
तीन विकटों पर	256

विकटों का पतन :

1—2, 2—166, 3—177.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
देसाई	28	4	57	1
जयसिम्हा	11	2	28	0
एस. पी. गुप्ते	36	14	78	1
दुर्रानी	13	3	38	0
कृपालसिंह	12	4	27	1
बोर्डे	10	4	19	0
उमरीगर	4	1	3	0

चतुर्थ टैस्ट

कलकत्ता में दिसम्बर 30, 31, 1961 और जनवरी 1, 3, और 4, 1962 को खेला गया, टॉस भारत ने जीता और मैच भी 187 रनों से। कप्तान : एन० जे० काट्रेक्टर (भारत) और ई० आर० डेक्सटर (इंग्लैंड)। विकेट-रक्षक : एफ० एम० इंजीनियर (भारत) और जी० मिलमेन (इंग्लैंड)। निर्णायक : एस० के० रघुनाथराव और एच० ई० चौधुरी।

भारत

कांट्रेक्टर बा. डी. स्मिथ	4	स्ट. मिलमेन बा. ऐलन	11
मेहरा कै. पारफिट बा. लॉक	62	अपराजित	7
मांजरेकर बा. ऐलन	24	स्ट. मिलमेन बा. लॉक	27
पटौदी कै. लॉक बा. ऐलन	64	कै. मिलमेन बा. लॉक	32
उमरीगर कै. डी. स्मिथ बा. ऐलन	36	बा. ऐलन	36
जयसिम्ह कै. मिलमेन बा. डी. स्मिथ	37	बा. लॉक	36
बोर्डे रन आउट	68	कै. बैरिंगटन बा. ऐलन	61
दुर्रानी बा. ऐलन	43	कै. पारफिट बा. लॉक	0
इंजीनियर कै. पारफिट बा. लॉक	12	कै. मिलमेन बा. ऐलन	9
देसाई अपराजित	13	कै. पारफिट बा. नाइट	29
रंजने कै. बारबर बा. ऐलन	7	कै. लॉक बा. नाइट	0
अतिरिक्त	10	अतिरिक्त	4
	380		252

विकटों का पतन :

प्रथम पारी :	1-6,	2-50,	3-114,	4-185,	5-194,
	6-259,	7-314,	8-355,	9-357,	10-380.
द्वितीय पारी :	1-?9,	2-55,	3-102,	4-119,	5-119,
	6-119,	7-192,	8-233,	9-233,	10-252.

इंग्लैंड की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
डी. स्मिथ	31	10	60	2	3	0	15	0
नाइट	18	3	61	0	7	2	18	2
डेक्सटर	29	7	83	0	—	—	—	—
ऐलन	34	13	67	5	43·2	16	95	4
लॉक	36	19	63	2	46	15	111	4
बारबर	3	0	17	0	2	0	9	0
रसेल	5	0	19	0	—	—	—	—

इंग्लैंड

रिचार्डसन कै. कांट्रेक्टर बा. बोर्डे	62	बा. उमरीगर	42
रसेल बा. रंजने	10	बा. रंजने	9
बैरिंगटन बा. दुर्रानी	14	कै. दुर्रानी बा. देसाई	3
पारफिट कै. एवजी बा. बोर्डे	21	पगबाधा बा. उमरीगर	46
डेक्सटर बा. बोर्डे	57	पगबाधा बा. दुर्रानी	62
बारबर बा. बोर्डे	12	कै. जयसिम्हा बा. दुर्रानी	6
नाइट स्ट. इंजीनियर बा. दुर्रानी	12	अपराजित	39
ऐलन बा. दुर्रानी	15	कै. मांजरेकर बा. देसाई	7
मिलमेन कै. इंजीनियर बा. दुर्रानी	0	बा. रंजने	4
लॉक अपराजित	2	रन आउट	1
डी. स्मिथ बा. दुर्रानी	0	कै. मांजरेकर बा. दुर्रानी	2
अतिरिक्त	7	अतिरिक्त	12
	212		233

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–26, 2–69, 3–91, 4–130, 5–155, 6–181, 7–203, 8–209, 9–212, 10–212.

द्वितीय पारी : 1–20, 2–27, 3–92, 4–101, 5–129, 6–195, 7–208, 8–217, 9–224, 10–233.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
देसाई	10	1	34	0	17	4	32	2
रंजने	21	3	59	1	14	3	31	2
दुर्रानी	23·2	8	47	5	33·2	12	66	3
बोर्डे	25	8	65	4	22	10	46	0
उमरीगर	—	—	—	—	30	10	46	2

पंचम टैस्ट

मद्रास में जनवरी 10, 11, 13, 14 और 15 को खेला गया, टॉस भारत ने जीता और मैच भी 128 रनों से । कप्तान : एन० जे० कांट्रेक्टर (भारत) और ई० आर० डेक्सटर (इंग्लैंड) । विकेट-रक्षक : एफ० एम० इंजीनियर (भारत) और जी० मिलमेन (इंग्लैंड) । निर्णायक : एस० पान और डा० आई० गोपालकृष्णन ।

भारत

जयसिम्हा वा. नाइट	12	कै. मिलमेन वा. लॉक	10
कांट्रेक्टर वा. बारबर	86	कै. पारफिट वा. डी. स्मिथ	3
मांजरेकर कै. लॉक वा. पारफिट	13	रन आउट	85
पटौदी कै. लॉक वा. नाइट	103	कै. एम. जे. के. स्मिथ वा. लॉक	10
उमरीगर कै. मिलमेन वा. ऐलन	2	कै. और बा. ऐलन	11
बोर्डे वा. लॉक	31	कै. डेक्सटर वा. पारफिट	7
दुर्रानी वा. ऐलन	21	कै. मिलमेन वा. लॉक	9
नाडकर्णी वा. ऐलन	63	कै. पारफिट वा. लॉक	1
इंजीनियर बा. डेक्सटर	65	अपराजित	15
देसाई पगबाधा बा. बारबर	13	कै. पारफिट वा. लॉक	12
प्रसन्ना अपराजित	9	कै. डेक्सटर वा. लॉक	17
अतिरिक्त	10	अतिरिक्त	10
	428		190

विकटों का पतन :

प्रथम पारी :	1–27,	2–74,	3–178,	4–193,	5–245,
	6–273,	7–277,	8–378,	9–398,	10–428.
द्वितीय पारी :	1–15,	2–30,	3–50,	4–80,	5–99,
	6–122,	7–146,	8–150,	9–158,	10–190.

इंग्लैंड की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
डी. स्मिथ	9	1	20	0	7	0	15	1
नाइट	14	3	62	2	4	0	12	0
लॉक	40	13	106	1	39·3	16	65	6
ऐलन	51·3	20	116	3	33	11	64	1
पारफिट	11	2	22	1	11	3	24	1
बारबर	14	0	70	2	—	—	—	—
डेक्सटर	5	0	22	1	—	—	—	—

इंग्लैंड

रिचार्डसन कै. कांट्रेक्टर वा. देसाई	13	कै. जयसिम्ह वा. देसाई	2
बारबर पगवाधा वा. बोर्डे	16	वा. दुर्रानी	21
बैरिंगटन कै. मांजरेकर वा. दुर्रानी	20	पगवाधा वा. नाडकर्णी	48
डेक्सटर वा. बोर्डे	2	कै. नाडकर्णी वा. बोर्डे	3
एम. जे. के. स्मिथ कै. उमरीगर वा. दुर्रानी	73	कै. बोर्डे वा. दुर्रानी	15
पारफिट कै. प्रसन्ना वा. दुर्रानी	25	कै. कांट्रेक्टर वा. दुर्रानी	33
नाइट कै. नाडकर्णी वा. दुर्रानी	19	कै. इंजीनियर वा. दुर्रानी	33
ऐलन वा. दुर्रानी	34	कै. उमरीगर वा. बोर्डे	21
मिलमैन अपराजित	32	कै. कांट्रेक्टर वा. प्रसन्ना	14
लॉक कै. बोर्डे वा. दुर्रानी	0	कै. नाडकर्णी वा. बोर्डे	11
डी. स्मिथ वा. नाडकर्णी	34	अपराजित	2
अतिरिक्त	13	अतिरिक्त	6
	281		209

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–18, 2–41, 3–45, 4–54, 5–134, 6–180, 7–189, 8–226, 9–226, 10–281.

द्वितीय पारी : 1–2, 2–32, 3–41, 4–86, 5–90, 6–155, 7–164, 8–194, 9–202 10–209.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
देसाई	12	1	56	1	4	0	16	1
जयसिम्ह	5	0	18	0	—	—	—	—
दुरोनी	36	9	105	6	34	12	72	4
बोर्डे	30	9	58	2	25·3	8	59	3
प्रसन्ना	9	2	20	0	11	3	19	1
उमरीगर	12	6	11	0	6	1	12	0
नाडकर्णी	6·1	6	0	1	12	3	25	1

——

भारत की टीम वेस्टइंडीज में, 1962

इंग्लैंड की टीम के विरुद्ध बहुत ही शानदार खेल का प्रदर्शन करने के बाद भारत की टीम को वेस्टइंडीज में अपयश ही मिला। पांच टैस्ट मैचों में भारत की हार ही नहीं हुई बल्कि इस भ्रमण में एक महान् दुर्घटना भी हो गई। भारत के कप्तान कांट्रैक्टर के सिर में ग्रिफिथ की गेंद लगी और तुरन्त शल्य चिकित्सा ने उन्हें नया जीवन प्रदान किया। ग्यारह मैचों में भारत केवल एक मैच जीत सका, छह मैचों में हार हुई और शेष मैचों में हार-जीत का निर्णय नहीं हो सका।

टीम में निम्नलिखित खिलाड़ी थे :

1. एन० जे० कांट्रैक्टर (कप्तान)
2. पटौदी के नवाब (उप-कप्तान)
3. पी० आर० उमरीगर
4. वी० एल० माँजरेकर
5. सी० जी० बोर्डे
6. आर० जी० नाडकर्णी
7. वी० मेहरा
8. एम० एल० जयसिम्हा
9. सलीम दुर्रानी
10. एफ० एम० इंजीनियर
11. डी० एन० सरदेसाई
12. आर० एफ० सूरती
13. वी० वी० रंजने
14. बी० के० कुन्दरन
15. आर० बी० देसाई
16. ई० ए० एस० प्रसन्ना

गुलाम अहमद (प्रबन्धक)

पटियाला के स्वर्गीय महाराजा
श्री भूपेन्द्र सिंह जी,
रणजी ट्रॉफी प्रदान करने वाले

पटियाला के महाराजा श्री यादवेन्द्र सिंहजी,
रणजी ट्रॉफी का प्रतिवर्ष
प्रतिरूप प्रदान करने वाले

रणजी ट्रॉफी के प्रथम विजेता : बम्बई, *1934-35*

ूमि पर : डी. डी. हिंडलेकर और डी. आर. हविवाला।
ुर्सी पर : पी.जे. चूरी, एच.एन. कांट्रैक्टर, एल.पी. जय (कप्तान), वी.एम. मर्चेंट और एफ.ई. कापडिय
ड़े हुए : आर.आर. वाडेकर, पी.एडी. भवानी, डी.एस. तालपडे, के.एन. डिवाकर और ई.वी. गाई

डीप फाइन लेग

थर्ड मैन

लोंग लेग

प्रथम स्लीप

द्वितीय स्लीप

शार्ट फाइन लेग या लेग स्लीप

तृतीय स्लीप

विकिट कीपर

गली

शोर्ट लेग

पोइंट

बल्लेबाज

स्क्वायर लेग

कवर पोइंट

कवर

सिली मिड ओन

शोर्ट एक्स्ट्रा कवर

मिड विकेट

मिड ऑफ

गेंदबाज

मिड ओन

डीप एक्स्ट्रा कवर

लोंग ऑफ

लोंग ऑन

दायें हाथ के बल्लेबाज के लिये क्षेत्र रक्षको का मैदान मे स्थान

भारत का 1964 में भ्रमण करने वाली आस्ट्रेलिया की टीम

कुर्सी पर : बी.एन. जारमैन, पी.जे. बर्ज, आर.बी. सिम्पसन (कप्तान), आर.सी. स्टील (प्रबन्धक
बी. सी. बूथ (उप-कप्तान), एन. सी. ओनील और ए. टी. डब्लू. ग्राउट ।
खड़े हुए : एन. हॉक, जी. डी. मैकेंजी, डब्लू. एम. लॉरी, जे. ए. लेडवार्ड (कोषाध्यक्ष), ए.
कोनोली, जी. ई. कोलिंग और जे. डब्लू. मारटिन ।
अंतिम पंक्तिः ए. ई. जेम्स, आर. एम. कूपर, जे. पौटर, आई. आर. रैडपाथ, आर. एच. डी. सैल
टी. वीवर्स और डी. शेरवुड (गणक) ।

भारत का 1965 में भ्रमण करने वाली न्यजीलैंड की टीम

कुर्सी पर : आर. सी. मोट्ज, बी. सट्क्लिफ, जे. आर. रीड (कप्तान), डब्लू. हेडली (प्रबन्धक
जी. टी. डाउलिंग, एफ. जे. केमेरन और बी. डब्लू. सिंकलेयर ।
खड़े हुए : आर. डब्लू. मौरगन, जी. ई. वीविन, जे. टी. वार्ड, आर. ओ. कौलिज, बी. आर. टेल
बी. ई. कौंगडन, टी. डब्लू. जारविस, वी. टी. पोलार्ड और बी. डब्लू. यूल ।

नवानगर के स्वर्गीय महाराजा
जाम साहिब श्री रणजीत सिंहजी विभाजी

स्वर्गीय कुमार श्री दिलीप सिंहजी

रणजी ट्रॉफी

टस्ट मैचों के अलावा खेले गए दूसरे मैचों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :

विरुद्ध ट्रिनीडाड कोल्ट्स : गिलबर्ट पार्क, कोवा में, फरवरी 5 और 6 को

ट्रिनीडाड कोल्ट्स : 237 (ए० ऐलांग 47, सूरती ने 45 रन देकर 3 विकटें ली) और पांच विकटों पर 143 (एन० रोबिन्सन 85)। भारत : नौ विकटों पर 317* और पारी समाप्ति की घोषणा (सरदेसाई 118, उमरीगर 73, सूरती 52*)। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

विरुद्ध ट्रिनीडाड : क्वीन्स पार्क ओवल, पोर्ट-ऑफ-स्पेन में, फरवरी 9, 10 12 और 13 को

भारत : 366 (मांजरेकर 66, उमरीगर 64, कांट्रेक्टर 62, सरदेसाई 50) और पांच विकटों पर 163 और पारी समाप्ति की घोषणा (सरदेसाई 73*) ट्रिनीडाड : 246 (डब्लू० रोडरिग्ज 77, बी० डेविस 57, जे० केरयू 55) और 4 विकटों पर 147 (एन० रोबिन्सन 80)। मैच में हार-जीत का फैसला नही हो सका।

विरुद्ध जमैका कोल्ट्स : सबीना पार्क, किंग्सटन में, फरवरी 24 और 26 को

भारत : आठ विकटों पर 333 और पारी समाप्ति की घोषणा (मांजरेकर 86 सरदेसाई 58, सूरती 54*)। जमैका कोल्ट्स : 139 (देसाई ने 31 रन देकर 7 विकटें ली) और 6 विकटों पर 127 (पटौदी ने 14 रन देकर 3 विकटें ली)। मैच में हार-जीत का फैसला नही हो सका।

विरुद्ध जमैका : मेलबोर्न पार्क, किंग्सटन में, फरवरी 28, मार्च 1, 2 और 3 को

भारत : 7 विकटों पर 434 और पारी समाप्ति की घोषणा (कांट्रेक्टर 139, पटौदी 84, उमरीगर 67) और 5 विकटों पर 193 और पारी समाप्ति की घोषणा (सूरती 54*)। जमैका : 361 (मैकमोरिस 154, ग्रिफिथ 82) और 4 विकटों पर 129 (वॉरेल 57*)। मैच में हार-जीत का फैसला नही हो सका।

विरुद्ध बारबेडोस : केंसिंग्टन ओवल, ब्रिजटाउन में, मार्च 16, 17 और 19 को

बारबेडोस : 394 (किंग 89, हॉल 88, सी० स्मिथ 61)। भारत : 86 और 213 (मांजरेकर 100*)। भारत एक पारी और 95 रनो से हारा।

---

*अपराजित

विरुद्ध लीवार्ड और विंडवार्ड द्वीप-समूह : बैसेटेरे, सेंट किट्स में, अप्रैल 21, 22 और 23 को

भारत : 218 (इंजीनियर 62, मेसन ने 32 रनों पर 5 विकेट ली) और 7 विकेटों पर 202 और पारी समाप्ति की घोषणा (जयसिम्ह 84)। लीवार्ड और विंडवार्ड द्वीप-समूह : 132 (प्रसन्ना ने 53 रन देकर 5 विकेट ली) और 151 (ऐरवर्ड 52, प्रसन्ना ने 50 रन देकर 4 विकेट ली)। भारत ने 137 रनों से मैच जीता।

टैस्ट मैच

केवल कुछ ही खिलाड़ियों ने टैस्ट मैचों में अच्छा खेल दिखाया। पाँचों मैचों में भारत की हार हुई। हॉल और वेस्टइंडीज के दूसरे तेज गेंदबाजों का भारतीय बल्लेबाज सफलतापूर्वक सामना नहीं कर सके। स्पिन गेंदबाज सोबर्स और गिब्स ने भी बहुत विकेट प्राप्त किये। भारतीय गेंदबाजों को विश्व के कुछ महान् बल्लेबाजों से संघर्ष करना पड़ा।

प्रथम टैस्ट मे कांट्रेक्टर ने टॉस जीता लेकिन उसका कोई लाभ नहीं हुआ क्योंकि भारत ने अच्छी विकेट पर बल्लेबाजी करते हुए भी 89 रनों पर 6 विकेटें खो दी। दुर्रानी (56) और सुरती (57) ने सातवें विकेट की साझेदारी में स्थिति को बिगड़ने से बचाया लेकिन 203 रन संख्या को सन्तोषजनक नहीं कहा जा सकता। भारतीय गेंदबाजों ने वास्तव में कमाल दिखाया और अपनी सुदृढ़ विरोधी टीम को 289 रनों पर आउट कर दिया। लेकिन मेहमान टीम की द्वितीय पारी 98 रनों मे ही समाप्त हो गई। वेस्टइंडीज ने बिना विकेट खोये आवश्यक रन बना लिये और दस विकटों से मैच जीत लिया।

द्वितीय टैस्ट मैच में भारत का प्रारम्भ बहुत खराब हुआ। लेकिन बोर्डे (93), नाडकर्णी (78*), इंजीनियर (53) और उमरीगर (50) के सुन्दर प्रयत्न से कुल रन संख्या 395 पहुँच गई। लेकिन वेस्टइंडीज के 8 विकटों पर बनाये गये 631 रनो के सामने यह अपर्याप्त थी। मैकमौरिस, कन्हाई और सोबर्स ने शतक बनाया। केवल 49 रन देकर हॉल ने 6 विकटें उखाड़ दीं और भारत दूसरी पारी मे 218 रन ही बना सका और अपने विरोधियों को एक पारी और 18 रनों से विजयी बनाने में मजबूर हुआ।

ब्रिजटाउन मे खेले गये तृतीय टैस्ट की भी यही कहानी रही और भारत एक पारी और 30 रनों से हार गया। प्रथम खेलते हुए भारत ने 258 रन बनाये जिसका वेस्टइंडीज ने 475 रन बनाकर उत्तर दिया। सोलोमन ने चार रनों से अपना शतक खोया। जयसिम्ह शून्य पर आउट हो गये। सरदेसाई, मांजरेकर और सुरती ने निडर होकर बल्लेबाजी की और

एक समय तो भारत के केवल 2 विकटों पर 158 रन थे। तत्पश्चात् गिब्स ने केवल 38 रन देकर 8 विकटें उखाड़ दी और भारत की द्वितीय पारी का अन्त 187 रनों पर हो गया।

चतुर्थ टैस्ट मैच में कन्हाई ने फिर शानदार बल्लेबाजी की और 139 रन बनाये। मैकमौरिस और रोडरिग्ज दोनों ने पचास-पचास रन बनाये। वेस्टइंडीज के 9 विकटो पर 346 रन बने थे जब हॉल अपने कप्तान का साथ देने आये। इस जोड़े ने कुल रन संख्या को 444 पर पहुँचा दिया और पारी समाप्ति की घोषणा कर दी गई। वॉरेल 73 रन बना कर अपराजित रहे और हॉल 50 रनों पर। ऐसी आक्रामक बल्लेबाजी के सामने भी उमरीगर ने सही गेंदबाजी की और 56 ओवर में 107 रन देकर पांच विकटें प्राप्त की।

हॉल की भयानक तेज गेंदबाजी के सामने भारतीय बल्लेबाज कांप गये और आधी टीम केवल 30 रन बनाकर धराशायी हो गई। उमरीगर, पटौदी और बोर्डे ने स्थिति को संभाला और कुल रन संख्या को 197 पर पहुँचा दिया; *लेकिन वे अपनी टीम को फालो-आन से नहीं बचा सके।*

दूसरी पारी भी भारत ने ठीक तरह से प्रारम्भ नहीं की लेकिन दूसरे विकेट की साझेदारी में मेहरा और दुर्रानी ने 144 रन जोड़े। दुर्रानी ने टैस्ट मैच में अपना प्रथम शतक बनाया। उनके 104 रनों में 14 चौके थे और वे 194 मिनट विकेट पर रहे। सबसे उत्तम पारी उमरीगर की थी। उन्होंने तेज और स्पिन गेंदबाजी को खूब पीटा और 172 रन बनाकर अपराजित रहे। नाडकर्णी ने नवें विकेट पर उनका खूब साथ दिया और भारत 422 रन बना सका। वेस्टइंडीज की दूसरी पारी में दुरानी ने तीन विकटें ली परन्तु हार को अधिक समय तक नहीं रोक सके।

सोबर्स ने शानदार शतक बनाया, कन्हाई और मैकमौरिस ने भी अच्छा योगदान दिया फिर भी वेस्टइंडीज की टीम पांचवें टैस्ट मैच में अपनी प्रथम पारी में 253 रन ही बना सकी। रंजने, नाडकर्णी और दुर्रानी ने बड़ी समझदारी से ठीक गेंदबाजी की। लेकिन भारत की बल्लेबाजी दुर्भाग्यपूर्ण थी। छह बल्लेबाज केवल 40 रन बना सके। नाडकर्णी (61), सूरती (41) और उमरीगर (32) ने कुल रन संख्या को 178 पर पहुँचा दिया।

सूरती ने हंट और सोलोमन दोनों को शून्य पर वापस भेज दिया और मैच मे भारत की स्थिति बराबर की हो गई। तत्पश्चात् सोबर्स ने आक्रामक बल्लेबाजी की और वॉरेल 98 रन बना कर अपराजित रहे और कुल रन संख्या 283 हो गई।

भारत को जीतने के लिये 359 रनों की आवश्यकता थी। प्रारम्भ फिर खराब रहा और विजय की आशा धूमिल हो गई। मेहरा और बोर्डे ने तीसरे विकेट की साझेदारी में 56 रन जोड़े, उमरीगर और सूरती ने सातवें विकेट पर 83 रन जोड़े, मांजरेकर ने 40 रन बनाये लेकिन दूसरे बल्लेबाजों के असफल खेल के कारण भारत केवल 235 रन बना सका और वेस्टइंडीज ने पांचवां टैस्ट 123 रनों से जीत लिया।

रनों का सविस्तार विवरण इस प्रकार है :

प्रथम टैस्ट

पोर्ट-ऑफ-स्पेन में फरवरी 16, 17, 19 और 20 को खेला गया, टॉस भारत ने जीता और मैच वेस्टइंडीज ने दस विकटों से जीता। कप्तान : एफ० एम० वॉरेल (वेस्टइंडीज) और एन० जे० कान्ट्रैक्टर (भारत)। विकेट-रक्षक : जे० सी० हैंडरिक्स (वेस्टइंडीज) और एफ० एम० इंजीनियर (भारत)। निर्णायक : आर० कोल और ओ० डेविस।

भारत

कान्ट्रैक्टर कै. सोबर्स बा. हॉल	10	बा. हॉल	6
मेहरा कै. हैंडरिक्स बा. हॉल	0	बा. स्टेयर्स	8
मांजरेकर बा. स्टेयर्स	19	पगबाधा बा. हॉल	0
सरदेसाई कै. सोलोमन बा. स्टेयर्स	16	कै. स्मिथ बा. हॉल	2
उमरीगर कै. सोबर्स बा. वाटसन	2	कै. एवजी बा. सोबर्स	23
बोर्डे कै. गिब्स बा. स्टेयर्स	16	बा. सोबर्स	27
दुर्रानी कै. और बा. सोबर्स	56	कै. वॉरेल बा. सोबर्स	7
सूरती स्ट. स्मिथ बा. सोबर्स	57	कै. एवजी बा. सोबर्स	0
नाडकर्णी रन आउट	2	अपराजित	12
इजीनियर कै. एवजी बा. गिब्ज	3	कै. और बा. गिब्ज	2
देसाई अपराजित	4	कै. कन्हाई बा. गिब्ज	2
अतिरिक्त	18	अतिरिक्त	9
	203		98

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–7, 2–32, 3–38, 4–45, 5–76, 6–89, 7–170, 8–186, 9–194, 10–203.

द्वितीय पारी : 1–6, 2–6, 3–8, 4–35, 5–56, 6–70, 7–70, 8–91, 9–96, 10–98.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
देसाई	13	3	46	2	1	0	5	0
उमरीगर	35	8	77	2	—	—	—	—
दुर्रानी	35.2	9	82	4	—	—	—	—
बोर्डे	25	4	65	2	—	—	—	—
नाडकर्णी	3	2	1	0	—	—	—	—
सूरती	2	0	11	0	0·4	0	9	0

द्वितीय टेस्ट

किंग्सटन में मार्च 7, 8, 9, 10 और 12 को खेला गया, टॉस भारत ने जीता और मैच में वेस्टइंडीज एक पारी और 18 रनों से विजयी रहा। कप्तान : एफ० एम० वॉरेल (वेस्टइंडीज) और एन० जे० कांट्रेक्टर (भारत)। विकेट-रक्षक : आई० मेंडोनका (वेस्टइंडीज) और एफ० एम० इंजीनियर (भारत)। निर्णायक : ओ० डेविस और आर० कोल।

भारत

जयसिम्हा कै. गिब्ज बा. स्टेयर्स	28	बा. हॉल	11
कांट्रेक्टर कै. मेंडोनका बा. हॉल	1	बा. हॉल	9
सूरती पगबाधा बा. स्टेयर्स	35	पगबाधा बा. हॉल	26
मांजरेकर कै. सोबर्स बा. गिब्ज	13	पगबाधा बा. सोबर्स	19
उमरीगर पगबाधा बा. सोबर्स	50	कै. सोबर्स बा. गिब्ज	32
बोर्डे बा. हॉल	93	कै. मैकमोरिस बा. हॉल	0
दुर्रानी पगबाधा बा. हॉल	17	बा. गिब्ज	0
नाडकर्णी अपराजित	78	कै. मेंडोनका बा. गिब्ज	35
इंजीनियर स्ट. मेंडोनका बा. गिब्ज	53	कै. हंट बा. हॉल	40
देसाई कै. गिब्ज बा. सोबर्स	0	कै. मेंडोनका बा. हॉल	20
प्रसन्ना कै. मेंडोनका बा. सोबर्स	6	अपराजित	1
अतिरिक्त	21	अतिरिक्त	25
	395		218

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–14, 2–44, 3–79, 4–89, 5–183,
6–234, 7–263, 8–357, 9–358, 10–395.

द्वितीय पारी : 1–16, 2–46, 3–50, 4–116, 5–137,
6–138, 7–141, 8–157, 9–205. 10–218.

वेस्टइंडीज की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
हॉल	28	4	79	3	20.5	5	49	6
स्टेयर्स	23	4	76	1	10	0	25	0
वरिल	9	1	35	0	10	1	26	0
गिब्ज	33	9	69	2	26	8	44	3
सोवर्स	39	8	75	4	17	3	41	1
रोडरिग्ज	7	0	37	0	1	0	8	0
सोलोमन	2	0	3	0	—	—	—	—

वेस्टइण्डीज

हंट कै. कांट्रैक्टर बा. देसाई	9
मैकमोरिस बा. प्रसन्ना	125
कन्हाई कै. उमरीगर बा. प्रसन्ना	138
रोडरिग्ज कै. उमरीगर बा. प्रसन्ना	3
सोवर्स कै. देसाई बा. दुर्रानी	153
सोलोमन रन आउट	9
वॉरेल बा. दुर्रानी	58
मेंडोनका बा. नाडकर्णी	78
स्टेयर्स अपराजित	35
हॉल, गिब्ज — बल्लेबाजी नहीं की	
अतिरिक्त	23
आठ विकटों पर पारी समाप्ति की घोषणा	631

विकटों का पतन :

1–16, 2–271, 3–282, 4–293,
5–320, 6–430, 7–557, 8–631.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
देसाई	20	6	84	1
सूरती	19	2	73	0
बोर्डे	31	6	93	0
दुर्रानी	70	14	173	2
नाडकर्णी	25.4	9	57	1
प्रसन्ना	50	14	122	3
कांट्रैक्टर	2	0	6	0

तृतीय टैस्ट

ब्रिजटाउन में मार्च 23, 24, 26, 27 और 28 को खेला गया, टॉस वेस्टइंडीज ने जीता और मैच भी एक पारी और 30 रनों से।
कप्तान : एफ० एम० वॉरेल (वेस्टइंडीज) और पटौदी के नवाब (भारत)।
विकेट-रक्षक : डी० ऐलन (वेस्टइंडीज) और एफ० एम० इंजीनियर (भारत)।
निर्णायक : सी० जोरडन और जे० रोबर्ट्स।

भारत

जयसिम्ह कै. ऐलन बा. हॉल	41	पगबाधा बा. स्टेयर्स	0
सरदेसाई कै. मैकमौरिस बा. गिब्ज	31	कै. सोबर्स बा. गिब्ज	60
सूरती पगबाधा बा. वॉरेल	7	पगबाधा बा. स्टेयर्स	36
मांजरेकर कै. वॉरेल बा. हॉल	8	कै. वॉरेल बा. गिब्ज	51
उमरीगर कै. ऐलन बा. हॉल	8	कै. ऐलन बा. गिब्ज	0
पटौदी कै. और बा. वैलेंटाइन	48	कै. सोबर्स बा. गिब्ज	0
बोर्डे कै. ऐलन बा. सोबर्स	19	कै. वॉरेल बा. गिब्ज	10
इंजीनियर कै. वॉरेल बा. सोबर्स	12	स्ट. ऐलन बा. गिब्ज	8
नाडकर्णी बा. स्टेयर्स	22	अपराजित	2
दुर्रानी अपराजित	48	कै. हंट बा. गिब्ज	5
देसाई बा. वॉरेल	12	कै. सोबर्स बा. गिब्ज	1
अतिरिक्त	2	अतिरिक्त	14
	258		187

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–56, 2–76, 3–83, 4–89, 5–112,
6–153, 7–171, 8–186, 9–230, 10–258.

द्वितीय पारी : 1–0, 2–60, 3–158, 4–159, 5–159,
6–174, 7–177, 8–177, 9–183, 10–187.

वेस्टइंडीज की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
हॉल	22	4	64	3	10	3	17	0
स्टेयर्स	11	0	81	1	18	8	24	2
वॉरेल	7.1	3	12	2	27	18	16	0
गिब्ज	16	7	25	1	53.3	37	38	8
वैलेंटाइन	17	7	28	1	29	19	26	0
सोबर्स	16	2	46	2	17	10	14	0
सोलोमन	—	—	—	—	29	17	33	0
कन्हाई	—	—	—	—	2	1	5	0

वेस्टइण्डीज

हंट कै. इंजीनियर बा. सूरती	59
मैकमौरिस कै. इंजीनियर बा. दुर्रानी	39
कन्हाई रन आउट	89
सोबर्स कै. इंजीनियर बा. नाडकर्णी	42
सोलोमन कै. देसाई बा. दुर्रानी	96
गिब्ज बा. बोर्डे	7
वॉरेल बा. उमरीगर	77
स्टेयर्स कै. उमरीगर बा. नाडकर्णी	7
हॉल पगबाधा बा. उमरीगर	3
ऐलन अपराजित	40
वैलेंटाइन बा. बोर्डे	4
अतिरिक्त	12
	475

विकटों का पतन :

1–67, 2–152, 3–226, 4–255, 5–282,
6–378, 7–394, 8–399, 9–454, 10–475.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे ओ.	रन	विकेट
देसाई	19		25	0
सूरती	29	6	80	1
दुर्रानी	45	13	123	2
नाडकर्णी	67	28	92	2
बोर्डे	31·3	4	89	2
जयसिम्हृ	1	0	6	0
उमरीगर	49	27	48	2

चतुर्थ टैस्ट

पोर्ट-ऑफ-स्पेन मे अप्रैल 4, 5, 6, 7 और 9 को खेला गया। वेस्टइंडीज ने टॉस जीता और मैच भी सात विकटों से। कप्तान : एफ० एम० वॉरेल (वेस्टइंडीज) और पटौदी के नवाब (भारत)। विकेट-रक्षक : आई० मेंडोनका (वेस्टइंडीज) और बी० के० कुन्दरन (भारत)। निर्णायक : सी० जोरडन और बी० जेसीलोन।

वेस्टइंडीज

हंट बा. उमरीगर	28	कै. कुन्दरन बा. दुर्रानी	30
मैकमौरिस कै. सरदेसाई बा नाडकर्णी	50	बा. दुर्रानी	56
कन्हाई पगबाधा बा. उमरीगर	139	कै. नाडकर्णी बा. दुर्रानी	20
नर्स कै. और बा. दुर्रानी	1	अपराजित	46
सोबर्स पगबाधा बा. जयसिम्हृ	19	अपराजित	16
रोडरिग्ज बा. उमरीगर	50		
मेंडोनका बा. उमरीगर	3		
गिब्ज पगबाधा बा. नाडकर्णी	15		
वॉरेल अपराजित	73		
स्टेयर्स कै सूरती बा. उमरीगर	12		
हॉल अपराजित	50		
अतिरिक्त	4	अतिरिक्त	8
नौ विकटों पर पारी समाप्ति की घोषणा	444	तीन विकटों पर	176

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–50, 2–169, 3–174, 4–212, 5–258,
6–265, 7–292, 8–316, 9–346.

द्वितीय पारी : 1–93, 2–100, 3–132.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
सूरती	26	4	81	0	21	7	48	0
जयसिम्ह	18	4	61	1	4	1	5	0
उमरीगर	56	24	107	5	16	8	17	0
दुर्रानी	18	4	54	1	31	13	64	3
बोर्डे	23	4	68	0	1	1	0	0
नाडकर्णी	35	14	69	2	28	13	34	0

भारत

सरदेसाई बा. हॉल	0	कै. वॉरेल बा. गिब्ज	0
जयसिम्ह कै. मेंडोनका बा. हॉल	10	कै. मेंडोनका बा. स्टेयर्स	15
सूरती कै. नर्स बा. हॉल	0	कै. मेंडोनका बा. गिब्ज	2
मांजरेकर कै. मेंडोनका बा. हॉल	4	कै. नर्स बा. सोबर्स	13
मेहरा बा. हॉल	14	बा. हॉल	62
उमरीगर स्ट. मेंडोनका बा. सोबर्स	56	अपराजित	172
पटौदी कै. सोबर्स बा. रोडरिग्ज	47	कै. कन्हाई बा. सोबर्स	1
बोर्डे कै. नर्स बा. रोडरिग्ज	42	कै. सोबर्स बा. गिब्ज	13
दुर्रानी कै. वॉरेल बा. रोडरिग्ज	12	कै. रोडरिग्ज बा. सोबर्स	104
नाडकर्णी कै. रोडरिग्ज बा. सोबर्स	1	रन आउट	23
कुन्दरन अपराजित	4	कै. रोडरिग्ज बा. गिब्ज	4
अतिरिक्त	7	अतिरिक्त	13
	197		422

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–0, 2–0, 3–9, 4–25, 5–30, 6–124, 7–144, 8–169, 9–175, 10–197.

द्वितीय पारी : 1–19, 2–163, 3–190, 4–192, 5–221, 6–236, 7–278, 8–278, 9–371, 10–422.

वेस्टइंडीज की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
हॉल	9	3	20	5	18	3	74	1
स्टेयर्स	8	1	23	0	10	2	50	1
गिब्ज	19	5	48	0	56·1	18	112	4
सोबर्स	25	6	48	2	47	14	116	3
रोडरिग्ज	19·3	2	51	3	9	1	47	0
वॉरेल	—	—	—	—	3	0	10	0

पंचम टैस्ट

किंग्सटन में अप्रैल 13, 14, 16, 17 और 18 को खेला गया, टॉस वेस्टइंडीज ने जीता और मैच भी 123 रनों से। कप्तान : एफ० एम० वॉरेल (वेस्टइंडीज) और पटौदी के नवाब (भारत)। विकेट रक्षक : डी० एलन (वेस्टइंडीज) और बी० के० कुन्दरन (भारत)। निर्णायक : ओ० डेविस और ई० सैंग।

वेस्टइण्डीज

हंट कै. कुन्दरन बा. रंजने	1	कै. कुन्दरन बा. सूरती	0
मैकमौरिस पगवाधा बा. दुर्रानी	37	पगवाधा बा. बोर्डे	42
कन्हाई कै. और बा. रंजने	44	बा. रंजने	41
सोलोमन बा. दुर्रानी	0	बा. सूरती	0
सोबर्स कै. मांजरेकर बा. रंजने	104	कै. कुन्दरन बा. सूरती	50
वॉरेल पगवाधा बा. रंजने	26	अपराजित	98
हॉल कै. कुन्दरन बा नाडकर्णी	20	पगवाधा बा. रंजने	10
एलन कै. एवजी बा. बोर्डे	1	पगबाधा बा. दुर्रानी	2
गिब्ज पगबाधा बा. नाडकर्णी	3	पगवाधा बा. दुर्रानी	0
किंग बा. नाडकर्णी	0	कै. नाडकर्णी बा. दुर्रानी	13
वैलेंटाइन अपराजित	7	पगवाधा बा. नाडकर्णी	7
अतिरिक्त	10	अतिरिक्त	20
	253		283

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–2, 2–64, 3–64, 4–93, 5–140,
6–174, 7–201, 8–218, 9–218, 10–253.

द्वितीय पारी : 1–1, 2–1, 3–75, 4–118, 5–138,
6–138, 7–154, 8–234, 9–248, 10–283.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
रंजने	19·2	2	72	4	28	3	81	2
सूरती	6	0	25	0	18	3	56	3
नाडकर्णी	17	3	50	3	9	3	13	1
दुर्रानी	18	6	56	2	12	3	48	3
बोर्डे	12	2	33	1	21	5	65	1
जयसिम्हा	4	0	7	0	—	—	—	—

भारत

जयसिम्हा कै. सोबर्स बा. किंग	6	पगबाधा बा. किंग	6
मेहरा कै. एलन बा. किंग	8	कै. एलन बा. सोबर्स	39
दुर्रानी कै. एलन बा. किंग	6	पगबाधा बा. किंग	4
मांजरेकर कै. सोलोमन बा. किंग	0	पगबाधा बा. सोबर्स	40
पटौदी कै. कन्हाई बा. हॉल	14	बा. सोबर्स	4
बोर्डे कै. हॉल बा. किंग	0	बा. सोबर्स	26
नाडकर्णी बा. गिब्ज	61	कै. एलन बा. हॉल	0
सूरती बा. गिब्ज	41	स्ट. एलन बा. सोबर्स	42
उमरीगर पगबाधा बा. गिब्ज	32	बा. हॉल	60
कुन्दरन कै. मैकमोरिस बा. वैलेंटाइन	2	बा. हॉल	1
रंजने अपराजित	0	अपराजित	0
अतिरिक्त	8	अतिरिक्त	13
	178		235

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–11, 2–22, 3–22, 4–26, 5–26, 6–40, 7–112, 8–171, 9–178, 10–178.

द्वितीय पारी : 1–15, 2–21, 3–77, 4–80, 5–86, 6–135, 7–218, 8–219, 9–230, 10–235.

वेस्टइंडीज की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
हॉल	11	3	26	1	20·5	3	47	3
किग	19	4	46	5	13	3	18	2
वॉरेल	5	0	8	0	—	—	—	—
गिब्ज	14·2	2	38	3	25	2	66	0
वैलेंटाइन	12	4	32	1	14	9	28	0
सोबर्स	6	1	20	0	32	9	63	5

—

एम० सी० सी० की टीम भारत में, 1964

इंग्लैंड की औपचारिक टीम ने भारत में कुल दस मैच खेले जिनमे पांच टैस्ट मैच भी शामिल थे और इस बात को सिद्ध कर दिया कि कम समय के भ्रमण भी सफल हो सकते हैं। दुर्भाग्य से इस टीम के कुछ खिलाड़ी बीमार हो गये और बम्बई में खेले गये द्वितीय टैस्ट मैच के बाद, काउड्री और पारफिट सहायता के लिये भेजे गये।

इस टीम में निम्नलिखित खिलाड़ी थे :

1. एम० जे० के० स्मिथ (कप्तान)
2. एम० सी० काउड्री
3. एफ० जे० टिटमस
4. के० एफ० बैरिंगटन
5. जे० एम० पार्क्स
6. जे० मॉर्टीमोर
7. पी० एच० पारफिट
8. बी० आर० नाइट
9. जे० एच० ऐडरिच
10. पी० जे० शार्प
11. डी० विलसन
12. जे० डी० एफ० लारटर
13. आई० जे० जोन्स
14. जे० एस० ई० प्राइस
15. जे० जी० बिंक
16. जे० बी० बोलस

डी० क्लार्क (प्रबन्धक)

टेस्ट मैचों के अलावा खेले गये मैचों का संक्षेप में विवरण इस प्रकार है :

विरुद्ध बोर्ड अध्यक्ष एकादश : बंगलौर में, जनवरी 3, 4 और 5 को

एम० सी० सी० : 3 विकटों पर 272 और पारी समाप्ति की घोषणा (स्टीवर्ट 119, बैरिंगटन 76*, बोलस 59) और 6 विकटों पर 259 और पारी समाप्ति की घोषणा (स्टीवर्ट 82, बोलस 60)। बोर्ड अध्यक्ष एकादश : 4 विकटों पर 298 और पारी समाप्ति की घोषणा (पी० सी० पोद्दार 100*, वी० एल० मेहरा 63, हनुमन्त सिंह 51)। मैच मे हार-जीत का फैसला नही हो सका।

विरुद्ध दक्षिण क्षेत्र : हैदराबाद में, जनवरी 7, 8 और 9 को

दक्षिण क्षेत्र : 140 (विलसन ने 28 रन देकर 4 विकटें ली, बैरिंगटन ने 11 रन देकर 3 विकटें ली) और 313 (पी० के० बलिअप्पा 104)। एम० सी० सी० : 480 (विलसन 112, बैरिंगटन 108, शार्प 71, पार्क्स 52)। एम० सी० सी० एक पारी और 27 रन से विजयी।

विरुद्ध पश्चिम क्षेत्र : अहमदाबाद में, जनवरी 17, 18 और 19 को

पश्चिम क्षेत्र : 208 (ए० मांकड 58*) और तीन विकटों पर 282 (सूरती 83*, एस० पी० गायकवाड 60, वी० एच० भोंसले 55*, एस० जी० अधिकारी 51)। एम० सी० सी० : 5 विकटों पर 400 और पारी समाप्ति की घोषणा (एडरिच 150, बोलस 113, बैरिंगटन 72)। मैच मे हार-जीत का फैसला नही हो सका।

विरुद्ध मध्य व पूर्व क्षेत्र : नागपुर में, फरवरी 4, 5 और 6 को

मध्य व पूर्व क्षेत्र : 246 मॉर्टीमोर ने 75 रन देकर 5 विकटें ली) और 5 विकटों पर 165 और पारी समाप्ति की घोषणा (पी० रॉय 69)। एम० सी० सी० : 5 विकटो पर 173 और पारी समाप्ति की घोषणा (पारफिट 52*) और 2 विकटों पर 184 (पारफिट 50*)। मैच में हार-जीत का फैसला नही हो सका।

विरुद्ध उत्तर क्षेत्र : अमृतसर में, फरवरी 22, 23 और 24 को

एम० सी० सी० : 3 विकटों पर 299 और पारी समाप्ति की घोषणा (शार्प 86, नाइट 59, पारफिट 57, बोलस 52) और 5 विकटों पर 136 और पारी समाप्ति की घोषणा (शार्प 80)। उत्तर क्षेत्र : 7 विकटो पर 207 और पारी समाप्ति की घोषणा (आकाशलाल 93, पटौदी 75) और 7 विकटो पर 214 (पटौदी 63)। मैच मे हार-जीत का फैसला नही हो सका।

---

* अपराजित

टैस्ट मैच

मद्रास में खेले गये प्रथम टैस्ट मैच में कुन्दरन 170 रन बना कर पहले दिन की खेल-समाप्ति तक अपराजित रहे, मांजरेकर ने शतक बनाया, सरदेसाई और जयसिम्ह ने भी भारत की कुल रन संख्या में अच्छा योगदान दिया और भारत ने 7 विकटों पर 457 रन बनाकर पारी समाप्ति की घोषणा कर दी। टिटमस ने पाँच विकटें 116 रन देकर प्राप्त की। अंग्रेज बल्लेबाज विशेषकर बोलस (88) और बैरिंगटन (80) ने जमकर खेलने का प्रयत्न किया क्योंकि उनके साथी स्टीवर्ड, टिटमस और पार्क्स खेल के तीसरे दिन बीमार हो गये थे। खेल के चौथे दिन भोजन के तुरन्त बाद ही इंग्लैंड 317 रनों पर आउट हो गया। बोर्डे ने 88 रन देकर 5 विकटें ली। नाडकर्णी की गेंदबाजी बहुत मितव्ययतापूर्ण रही। उन्होंने लगातार 21 ओवर बिना कोई रन दिये फैंके और 32 ओवर में केवल चार रन दिये।

दूसरी पारी में भारत ने फुर्ती से 9 विकटों पर 152 रन बनाकर पारी समाप्ति की घोषणा करदी। इंग्लैंड को अपनी जीत के लिये 263 मिनट में 293 रन बनाने थे। यह चुनौती इंग्लैंड ने स्वीकार नही की और मैच की पूर्ण खेल-समाप्ति पर इंग्लैंड ने पांच विकेट खोकर 241 रन बनाये।

द्वितीय टैस्ट मैच बम्बई में खेला गया और भारत ने अपनी प्रथम पारी में छह विकटें 99 रन पर खो दी। सातवीं विकेट की साझेदारी में बोर्डे (84) और दुर्रानी (90) ने 153 रन का योगदान दिया और भारत की बिगड़ी हुई स्थिति में सुधार हुआ और कुल रन संख्या 300 पर पहुँच गई। खिलाड़ियों के बीमार और घायल होने के कारण मेहमान अपनी श्रेष्ठ टीम मैदान में नहीं उतार सके, यहाँ तक कि क्षेत्र-रक्षण के लिये उन्हें भारतीय खिलाड़ियों की मदद लेनी पड़ी। टिटमस साहस के साथ खेले और 84 रन बनाकर अपराजित रहे। इंग्लैंड कुल 233 रन बना सका। नये खिलाड़ी चन्द्रशेखर ने 4 विकटें 67 रन पर ली। भारत ने दूसरी पारी में भी रन बनाने में फुर्ती की और आठ विकटों पर 249 रन बनाकर पारी समाप्ति की घोषणा कर दी। जयसिम्ह और सरदेसाई दोनों तेजी से खेले और दोनो ने 66-66 रन बनाये। इंग्लैंड को अपनी जीत के लिये 317 रनो की आवश्यकता थी और उसके पास 350 मिनट का समय था। लेकिन जीत के लिये प्रयत्न नही किया गया और खेल की पूर्ण समाप्ति पर इंग्लैंड के तीन विकटों पर 206 रन बने थे।

कलकत्ता मे खेले गये तृतीय टैस्ट मैच का भी वही भाग्य रहा जो प्रथम और द्वितीय टैस्ट मैचों का हुआ था। दूसरे दिन खेल के प्रारम्भ होते

और भारत अपनी पहली पारी में 241 रन बनाकर आउट हो गया। इंग्लैंड के खिलाड़ी बड़ी धीमी रफ्तार से खेले और दूसरे दिन की खेल समाप्ति तक कुल 142 रन बना सके और उनके तीन खिलाड़ी आउट हो गये। तीसरे दिन हल्की बरसात के कारण कुछ समय तक खेल नहीं हो सका और खेल के अन्त तक इंग्लैंड की रन संख्या 235 तक पहुँच गई और उसके सात खिलाड़ी अपनी पारी समाप्त कर चुके थे। खेल के चौथे दिन देसाई की गेंदबाजी ने कमाल दिखाया और 11 गेंदों में केवल 2 रन देकर उन्होंने 3 विकेट उखाड़ दी। इनमें बाउड्री की विकेट भी थी जिन्होंने 380 मिनट में 107 रन बनाये थे। इंग्लैंड की पारी 267 पर समाप्त हो गई।

भारत की दूसरी पारी में जयसिम्ह ने शानदार शतक बनाया, सात विकेटों पर 300 रन बने और पारी समाप्त घोषित कर दी गई। खेल के अन्तिम दिन इंग्लैंड ने 2 विकेटों पर 145 रन बनाये और मैच में कोई निर्णय नहीं हो सका।

अपने प्रथम टैस्ट में खेलते हुए हनुमन्तसिंह ने शानदार बल्लेबाजी की और दिल्ली में खेले गये चतुर्थ टैस्ट मैच में उन महान खिलाड़ियों में अपना नाम लिखा दिया जिन्होंने शतक से टैस्ट क्रिकेट प्रारम्भ किया है। भारत पहली पारी में 344 रन बना सका। टैस्ट मैच में बाउड्री ने लगातार दूसरा शतक लगाया। इंग्लैंड की कुल रन संख्या 451 पर पहुँची। भारत की द्वितीय पारी में कुन्दरन ने अपना दूसरा टैस्ट शतक बनाया, पटौदी 203 रन बनाकर भी अपराजित रहे। इंग्लैंड के विरुद्ध भारत की ओर से यह पहला दोहरा शतक था। केवल चार विकटों पर भारत की कुल रन संख्या 463 पर पहुंच गई परन्तु मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

पटौदी ने लगातार पांचवी बार इस टैस्ट श्रृंखला में टॉस जीता और इस प्रकार वह चौथा कप्तान हैं जिन्हें यह सौभाग्य मिला है। एफ० एस० जैकसन (इंग्लैंड), एच० एल० कौलिन्स (आस्ट्रेलिया) और जे० डी० गोडार्ड (वेस्टइंडीज) ने पहले यह सम्मान प्राप्त किया था। पटौदी ने मेहमानों को उत्तम विकेट पर प्रथम बल्लेबाजी देकर बड़ी जोखिम उठाई। इंग्लैंड ने इस टैस्ट श्रृंखला की सबसे अधिक रन संख्या 8 विकटों पर 559 रन बनाकर द्वितीय दिन के खेल समाप्ति होने के एक घंटे पहले पारी समाप्ति की घोषणा कर दी। भारत के पारी प्रारम्भ करने वाले विश्वसनीय बल्लेबाज जयसिम्ह और कुन्दरन आउट होकर लौट गये जब भारत की कुल रन संख्या केवल 16 थी। सरदेसाई और नाडकर्णी की पारी बहुत उपयोगी थी लेकिन भारत को फालो-ऑन से नहीं बचा सकी क्योंकि भारत केवल 266 रन बना सका था। यह दोनों बल्लेबाज दूसरी पारी में बहुत शानदार खेले और भारत को संकट से बचा सके। द्वितीय विकेट की

साझेदारी में नाडकर्णी ने कुन्दरन (55) के साथ 109 रन जोड़े और तृतीय विकेट की साझेदारी में उन्होंने सरदेसाई (87) के साथ 144 रन जोड़े। नाडकर्णी ने 418 मिनट बल्लेबाजी की और 122 रन बनाकर अपराजित रहे। दुर्रानी केवल 34 मिनट में आकर्षक 61 रन बनाकर अपराजित रहे और इसमें तीन छक्के और पांच चौके शामिल थे। पांचो टैस्ट मैचों में हार-जीत का फैसला नही हो सका क्योंकि दोनों टीमों में एक भी खतरनाक गेंदबाज नहीं था, जो विरोधी बल्लेबाजों को तत्काल उखाड़ देता।

खिलाड़ियों के बीमार और घायल होने के कारण इंग्लैंड की टीम की शक्ति कम हो गई थी। प्रथम तीनों टैस्ट मैचों में से कम से कम दो टैस्ट भारत जीत सकता था। इंग्लैंड की ओर से काउड्री और पारफिट ने जो द्वितीय टैस्ट मैच के बाद अपने दल में सम्मिलित हुए थे, बहुत रन बनाये। टिटमस लाभकारी खिलाडी सिद्ध हुए और उन्होंने सबसे अधिक विकेट प्राप्त किये। प्रथम टैस्ट के बाद बैरिंगटन का न खेल सकना मेहमानों के लिये बहुत हानिकारक रहा।

नाडकर्णी ने फिर सिद्ध कर दिया कि वह कितना उपयोगी खिलाडी है। भारत की ओर से केवल बल्लेबाजी में ही उनका औसत सबसे अधिक नही रहा वल्कि उन्होने रन उस समय बनाये जब उनकी सबसे अधिक आवश्यकता थी। कुन्दरन और जयसिम्हा का जोड़ा आक्रामक खेल खेलने वाला था। कुन्दरन ने 10 पारी खेलकर 525 रन बनाये। सरदेसाई हमेशा दृढता से खेले। हनुमन्तसिंह ने टैस्ट क्रिकेट में बहुत शान से प्रवेश किया।

भारतीय बल्लेबाजों ने तो अपना कार्य बड़े कौशल के साथ किया लेकिन गेंदबाज उतने सफल नही हो सके। दुर्रानी और बोर्डे की गेंदबाजी मे अब उतनी तीक्ष्णता नही थी जितनी कि कुछ वर्ष पहले डेक्सटर की टीम के विरुद्ध थी। अपने प्रथम टैस्ट मैच में चन्द्रशेखर ने बड़ी कुशलता से गेंदबाजी की लेकिन जब मेहमानों ने उनकी गेंदबाजी को परख लिया तो फिर उसमे कोई भय नही रहा। तेज गेंदबाज की कमी भारत को खटकती रही। पटौदी ने जोखिम उठाई लेकिन स्मिथ ने नहीं। परिणाम यह हुआ कि किसी भी टैस्ट मैच का परिणाम नही निकल सका और कुल दस मैचों मे से केवल एक में निर्णय हो सका।

रनों का सविस्तार विवरण इस प्रकार है :

प्रथम टैस्ट

मद्रास में जनवरी 10 11, 12, 14 और 15 को खेला गया, टॉस भारत ने जीता और मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

कप्तान : पटौदी के नवाब (भारत) और एम० जे० के० स्मिथ (इंगलैंड)।
विकेट-रक्षक : बी० के० कुन्दरन (भारत) और जे० एम० पार्क्स (इंगलैंड)।
निर्णायक : डा० आई० गोपालकृष्ण और एस० के० बनर्जी।

भारत

वी. मेहरा कै. पार्क्स बा. टिटमस	17	रन आउट	26
कुन्दरन बा. टिटमस	192	पगबाधा बा. टिटमस	38
सरदेसाई बा. टिटमस	65	स्ट. पार्क्स बा. मॉर्टीमोर	2
मांजरेकर कै. स्मिथ बा. नाइट	108	रन आउट	0
पटौदी पगबाधा बा. टिटमस	0	कै. बोलस बा. टिटमस	18
दुर्रानी पगबाधा बा. टिटमस	8	कै. पार्क्स बा. मॉर्टीमोर	3
जयसिम्हा पगबाधा बा. विलसन	51	बा. टिटमस	35
कृपालसिंह अपराजित	2	बा. विलसन	10
बोर्डे अपराजित	8	अपराजित	11
नाडकर्णी	बल्लेबाजी नहीं की	कै. पार्क्स बा. टिटमस	7
रंजने	बल्लेबाजी नहीं की	बल्लेबाजी नहीं की	
अतिरिक्त	6	अतिरिक्त	2
सात विकटों पर पारी समाप्ति की घोषणा	457	नौ विकटों पर पारी समाप्ति की घोषणा	152

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–85, 2–228, 3–323, 4–323, 5–343, 6–431, 7–447.

द्वितीय पारी : 1–59, 2–77, 3–82, 4–100, 5–104, 6–106, 7–125, 8–135, 9–152.

इंग्लैंड की गेंदबाजी

	ओ	मे. ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
लास्टर	19	2	62	0	11	3	33	0
नाइट	27	7	73	1	7	1	22	0
विलसन	24	6	67	1	4	2	2	1
टिटमस	50	14	116	5	19·5	4	46	4
मॉर्टीमोर	38	7	110	0	15	3	41	2
चैरिंगटन	4	0	23	0	2	0	6	0

इंग्लैंड

बोलस पगवाघा बा. दुर्रानी	88	स्ट. कुन्दरन बा. बोर्डे	22
स्मिथ कै. कुन्दरन बा. रंजने	3	कै. कुन्दरन बा. नाडकर्णी	57
शार्प पगवाघा बा. बोर्डे	27	अपराजित	31
विलसन कै. माँजरेकर बा. दुर्रानी	42		
बैरिंगटन कै. और बा. बोर्डे	80		
नाइट बा. दुर्रानी	6	कै. कुन्दरन बा. कृपालसिंह	7
पार्क्स बा. बोर्डे	27	कै. कुन्दरन बा. नाडकर्णी	30
टिटमस कै. पटौदी बा. कृपालसिंह	14	बा. कृपालसिंह	10
मॉर्टीमोर कै. और बा. बोर्डे	0	अपराजित	73
स्टीवर्ट स्ट. कुन्दरन बा. बोर्डे	15		
लारटर अपराजित	2		
अतिरिक्त	13	अतिरिक्त	11
	317	पांच विकटों पर	241

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–12, 2–49, 3–116, 4–235, 5–251, 6–263, 7–287, 8–287, 9–314, 10-317.
द्वितीय पारी : 1–67, 2–105, 3–120, 4–123, 5–155.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
रंजने	16	2	46	1	2	0	14	0
जयसिम्ह	7	3	16	0	4	2	8	0
बोर्डे	67·4	30	88	5	22	7	44	1
दुर्रानी	43	13	97	3	21	8	64	0
नाडकर्णी	32	27	5	0	6	4	6	2
कृपालसिंह	25	10	52	1	26	7	66	2
माँजरेकर	—	—	—	—	3	0	3	0
वी. मेहरा	—	—	—	—	1	0	2	0
पटौदी	—	—	—	—	1	0	9	0
सरदेसाई	—	—	—	—	1	0	14	0

द्वितीय टैस्ट

बम्बई में जनवरी 21, 22, 23, 25 और 26 को खेला गया, टॉस भारत ने जीता और मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।
कप्तान : पटौदी के नवाब (भारत) और एम० जे० के० स्मिथ (इंग्लैंड)।
विकेट-रक्षक : वी० के० कुन्दरन (भारत) और जे० जी० बिक्स (इंग्लैंड)।
निर्णायक : एच० ई० चौधुरी और ए० एम० मामसा।

भारत

मेहरा पगबाधा बा. नाइट	9	पगबाधा बा. टिटमस	35
कुन्दरन कै. विलसन बा. प्राइस	29	कै. टिटमस बा. प्राइस	16
सरदेसाई बा. प्राइस	12	रन आउट	66
मांजरेकर कै. बिक्स बा. टिटमस	0	अपराजित	43
पटौदी कै. टिटमस बा. नाइट	10	बा. प्राइस	0
जयसिम्हं कै. प्राइस बा. टिटमस	23	कै. लारटर बा. प्राइस	66
बोर्डे कै. बिक्स बा. विलसन	84	कै. स्मिथ बा. टिटमस	7
दुर्रानी कै. बिक्स बा. प्राइस	90	कै. नाइट बा. टिटमस	3
नाडकर्णी अपराजित	26	पगबाधा बा. नाइट	0
राजेन्द्रपाल पगबाधा बा. लारटर	3	अपराजित	3
चन्द्रशेखर बा. लारटर	0	बल्लेबाजी नही की	
अतिरिक्त	14	अतिरिक्त	10
	300	आठ विकटों पर पारी समाप्ति की घोषणा	249

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–20, 2–55, 3–56, 4–58, 5–75, 6–99, 7–252, 8–284, 9–300, 10–300.

द्वितीय पारी : 1–23, 2–104, 3–107, 4–140, 5–152, 6–180, 7–231, 8–231.

इंग्लैड की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
नाइट	20	3	53	2	13	2	28	2
लारटर	10·3	2	35	2	5	0	13	0
जोन्स	13	0	48	0	11	1	31	0
प्राइस	19	2	66	3	17	1	47	2
टिटमस	36	17	56	2	46	18	79	3
विलसन	15	5	28	1	23	10	41	0

इंग्लैंड

बोलस कै. चन्द्रशेखर बा. दुर्रानी	25	कै. पटौदी बा. दुर्रानी	57
स्मिथ कै. बोर्डे बा. चन्द्रशेखर	46	अपराजित	31
पार्क्स रन आउट	1	अपराजित	40
नाइट बा. चन्द्रशेखर	12		
टिटमस अपराजित	84		
विलसन कै. और बा. दुर्रानी	1	कै. पटौदी बा. चन्द्रशेखर	2
बिक्स बा. चन्द्रशेखर	10	कै. बोर्डे बा. जयसिम्हृ	55
प्राइस बा. चन्द्रशेखर	32		
लारटर कै. बोर्डे बा. दुर्रानी	0		
जोन्स रन आउट	5		
स्टीवर्ड बिमारी के कारण अनुपस्थित	—		
अतिरिक्त	17	अतिरिक्त	21
	233	तीन विकटों पर	206

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1—42, 2—48, 3—82, 4—91, 5—98, 6—116, 7—184, 8—185, 9—233, 10—233.

द्वितीय पारी . 1—125, 2—127, 3—134.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
राजेन्द्रपाल	11	4	19	0	2	0	3	0
जयसिम्हृ	3	1	9	0	22	9	36	1
दुर्रानी	39	15	59	3	29	12	23	1
बोर्डे	34	12	54	0	37	12	38	0
चन्द्रशेखर	40	16	67	4	22	5	40	1
नाडकर्णी	4	2	8	0	14	11	3	0
सरदेसाई	—	—	—	—	3	2	6	0
मेहरा	—	—	—	—	2	1	1	0
पटौदी	—	—	—	—	3	0	23	0

तृतीय टैस्ट

कलकत्ता में जनवरी 29, 30 फरवरी 1, 2 और 3 को खेला गया, टॉस भारत ने जीता और मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।
कप्तान : पटौदी के नवाब (भारत) और एम० जे० के० स्मिथ (इंग्लैंड)।
विकेट-रक्षक : बी० के० कुन्दरन (भारत) और जे० जी० बिन्क्स (इंग्लैंड)।
निर्णायक : एस० रॉय और बी० नागेन्द्र।

भारत

जयसिम्हा कै. बिक्स बा. प्राइस	33	कै. लारटर बा. टिटमस	129
कुन्दरन कै. बिक्स बा. प्राइस	23	पगबाधा बा. विलसन	27
सरदेसाई कै. बिक्स बा. लारटर	54	कै. और बा. पारफिट	36
मांजरेकर कै. और बा. प्राइस	25	बा. पारफिट	16
सूरती बा. प्राइस	0		
बोर्डे कै. काउड्री बा. विलसन	21	कै. पार्क्स बा. टिटमस	8
पटौदी कै. बिक्स बा. विलसन	2	कै. स्मिथ बा. लारटर	31
दुर्रानी कै. बिक्स बा. प्राइस	8	कै. काउड्री बा. लारटर	25
नाडकर्णी अपराजित	43	अपराजित	10
देसाई पगबाधा बा. टिटमस	11	अपराजित	2
चन्द्रशेखर कै. काउड्री बा. नाइट	16		
अतिरिक्त	5	अतिरिक्त	16
	241	सात विकटों पर	300

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1—47, 2—61, 3—103, 4—103, 5—150, 6—158, 7—169, 8—169, 9—190, 10—241.

द्वितीय पारी : 1—80, 2—161, 3—217, 4—218, 5—237, 6—272, 7—289.

इंग्लैंड की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
नाइट	13·2	5	39	1	4	0	33	0
प्राइस	24	3	73	5	7	0	31	0
लारटर	18	4	61	1	8	0	27	2
टिटमस	15	4	46	1	46	23	67	2
विलसन	16	10	17	2	21	7	55	1
पारफिट	—	—	—	—	32	8	71	2

इंग्लैंड

बोलस कै. और बा. दुर्रानी	39	कै. जयसिम्हे बा. बोर्डे	35
विक्स कै. देसाई बा. दुर्रानी	13	बा. दुर्रानी	13
स्मिथ कै. जयसिम्ह बा. बोर्डे	19	अपराजित	75
काउड्री कै. पटौदी बा. देसाई	107	अपराजित	13
पार्क्स पगबाधा बा. नाडकर्णी	30		
पारफिट कै. और बा. देसाई	4		
विलसन स्ट. कुन्दरन बा. चन्द्रशेखर	1		
नाइट कै. मांजरेकर बा. नाडकर्णी	13		
टिटमस बा. देसाई	26		
प्राइस अपराजित	1		
लारटर कै. मांजरेकर बा. देसाई	0		
अतिरिक्त	14	अतिरिक्त	9
	267	दो विकटों पर	145

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–40, 2–74, 3–77, 4–158, 5–175, 6–193, 7–214, 8–258, 9–267, 10–267.

द्वितीय पारी : 1–30, 2–87.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
देसाई	22·5	3	62	4	5	0	12	0
सूरती	6	2	8	0	—	—	—	—
जयसिम्ह	4	1	10	0	13	5	32	0
दुर्रानी	22	7	59	2	8	3	15	1
बोर्डे	31	14	40	1	15	5	39	1
चन्द्रशेखर	21	5	36	1	8	2	20	0
नाडकर्णी	42	24	38	2	—	—	—	—
सरदेसाई	—	—	—	—	3	0	10	0
पटौदी	—	—	—	—	3	1	8	0

चतुर्थ टेस्ट

दिल्ली में फरवरी 8, 9, 11, 12 और 13 को खेला गया, टॉस भारत ने जीता और मैच में हार-जीत का निर्णय नहीं हो सका।
कप्तान : पटौदी के नवाब (भारत) और एम० जे० के० स्मिथ (इंग्लैंड)।
विकेट-रक्षक : बी० के० कुन्दरन (भारत) और जे० एम० पार्क्स (इंग्लैंड)।
निर्णायक : एस० पान और सत्याजी राव।

भारत

जयसिम्हा बा. टिटमस	47	स्ट. पार्क्स बा. पारफिट	50
कुन्दरन बा. टिटमस	40	पगवाघा बा. प्राइस	100
सरदेसाई कै. पार्क्स बा. मॉर्टीमोर	44	बा. विलसन	4
पटौदी बा. टिटमस	13	अपराजित	203
हनुमन्तसिंह कै. और बा. मॉर्टीमोर	105	कै. मॉर्टीमोर बा. विलसन	23
बोर्डे बा. प्राइस	26	अपराजित	67
दुर्रानी कै. स्मिथ बा. विलसन	16		
कृपालसिंह बा. मॉर्टीमोर	0		
नाडकर्णी रन आउट	34		
देसाई अपराजित	14		
चन्द्रशेखर रन आउट	0		
अतिरिक्त	5	अतिरिक्त	16
	344	चार विकेटों पर	463

विकेटों का पतन :
प्रथम पारी : 1-81, 2-90, 3-116, 4-201, 5-267, 6-283, 7-283, 8-307, 9-344, 10-344.
द्वितीय पारी : 1-74, 2-101, 3-226, 4-273.

इंग्लैंड की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
प्राइस	23	3	71	1	9	1	36	1
नाइट	11	0	46	0	8	1	47	0
विलसन	22	9	41	1	41	16	74	2
टिटमस	49	15	100	3	43	12	105	0
मॉर्टीमोर	38	13	74	3	31	11	52	0
पारफिट	5	2	7	0	19	3	81	1
स्मिथ	—	—	—	—	13	0	52	0

इंग्लैंड

बोलस पगबाधा बा. कृपालसिंह	58
ऐडरिच कै. और बा. कृपालसिंह	41
स्मिथ कै. पटौदी बा. कृपालसिंह	37
विलसन कै. पटौदी बा. चन्द्रशेखर	6
पारफिट स्ट. कुन्दरन बा. दुर्रानी	67
काउड्री पगबाधा बा. नाडकर्णी	151
पार्क्स कै. एवजी बा. चन्द्रशेखर	32
नाइट कै. देसाई बा. नाडकर्णी	21
मॉर्टीमोर कै. हनुमन्तसिंह बा. नाडकर्णी	21
टिटमस अपराजित	4
प्राइस बा. चन्द्रशेखर	0
अतिरिक्त	13
	451

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1-101, 2-114, 3-134, 4-153, 5-268, 6-354, 7-397, 8-438, 9-451, 10-451.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
देसाई	9	2	23	0
जयसिम्हा	4	0	14	0
कृपालसिंह	36	13	90	3
चन्द्रशेखर	34.3	11	79	3
बोर्डे	12	2	42	0
दुर्रानी	33	4	93	1
नाडकर्णी	58	30	97	3

पंचम टैस्ट

कानपुर में फरवरी 15, 16, 18, 19 और 20 को खेला गया, टॉस भारत ने जीता और मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका। कप्तान : पटौदी के नवाब (भारत) और एम० जे० के० स्मिथ (इंगलैंड)। विकेट-रक्षक : बी० के० कुन्दरन (भारत) और जे० एम० पार्क्स (इंगलैंड)। निर्णायक : एस० भट्टाचार्य और एस० के० रघुनाथ राव।

इंग्लैंड

पोलर कॅ. हनुमन्तसिंह बा. नाडकर्णी	67
ऐड्रिच कॅ. पटौदी बा. बोर्डे	35
एम० जे० के० स्मिथ कॅ. बोर्डे बा. गुप्ते	38
नाइट कॅ. मांजरेकर बा. जयसिम्हा	127
पारफिट पगबाधा बा. जयसिम्हा	121
काउड्री पगबाधा बा. पटौदी	38
पार्क्स अपराजित	51
मॉर्टीमोर बा. चन्द्रशेखर	19
टिटमस कॅ. और बा. नाडकर्णी	5
विलसन अपराजित	18
अतिरिक्त	40
आठ विकटों पर पारी समाप्ति की घोषणा	559

विकटों का पतन :

1–63, 2–134, 3–174, 4–365, 5–458, 6–474, 7–520, 8–531.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
जयसिम्हा	19	4	54	2
दुर्रानी	25	8	49	0
चन्द्रशेखर	36	7	97	1
बी० पी० गुप्ते	40	9	115	1
बोर्डे	23	4	73	1
नाडकर्णी	57	22	121	2
पटौदी	3	1	10	1

भारत

जयसिम्ह कै. पार्क्स बा. टिटमस	5	कै. काउड्री बा. टिटमस	5
कुन्दरन बा. प्राइस	5	पगबाघा बा. पारफिट	55
सरदेसाई कै. मॉर्टीमोर बा. पारफिट	79	कै. ऐड़रिच बा. पार्क्स	87
मांजरेकर कै. और बा. टिटमस	33		
हनुमन्तसिंह कै. पार्क्स बा. टिटमस	24		
पटौदी बा. टिटमस	31		
बोर्डे बा. टिटमस	0		
दुर्रानी बा. मॉर्टीमोर	16	अपराजित	61
नाडकर्णी अपराजित	52	अपराजित	122
बी० पी० गुप्ते कै. और बा. टिटमस	8		
चन्द्रशेखर बा. प्राइस	3		
अतिरिक्त	10	अतिरिक्त	17
	266	तीन विकटों पर	347

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–9, 2–16, 3–96, 4–135, 5–182, 6–182, 7–188, 8–229, 9–245, 10–266.

द्वितीय पारी : 1-17, 2–126, 3–270.

इंग्लैंड की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
प्राइस	16·1	5	32	2	10	2	27	0
नाइट	1	0	4	0	2	0	12	0
टिटमस	60	37	73	6	34	12	59	1
मॉर्टीमोर	49	31	39	1	23	14	28	0
विलसन	27	9	47	0	19	10	26	0
पारफिट	30	12	61	1	24	7	68	1
ऐडरिच	—	—	—	—	4	1	17	0
बोलस	—	—	—	—	3	0	16	0
पार्क्स	—	—	—	—	6	0	43	1
काउड्री	—	—	—	—	5	0	34	0

आस्ट्रेलिया की टीम भारत में, 1964

इंग्लैंड से स्वदेश लौटते हुए आस्ट्रेलिया की टीम ने भारत में तीन आनन्ददायक और प्रोत्साहक टैस्ट मैच खेले। अतिथि प्रथम टैस्ट तो जीत गये परन्तु द्वितीय में उनकी हार हुई। कलकत्ता में तृतीय और अन्तिम टैस्ट मैच खेला गया जिसमें वर्षा के कारण हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

मद्रास में 2 अक्टूबर से खेले गये टैस्ट मैच में सिम्पसन ने टॉस जीता और मेहमानों ने सफलतापूर्वक बल्लेबाजी प्रारम्भ की। एक समय तो उनके 127 रन बन गये थे और केवल सिम्पसन आउट हुए थे। ऐसा प्रतीत होता था कि वे बहुत रन बना लेंगे लेकिन दुर्रानी, कृपालसिंह और नाडकर्णी की सुन्दर गेंदबाजी ने उनकी पारी 211 पर समाप्त कर दी। नाडकर्णी ने पांच विकटें केवल 31 रन देकर प्राप्त की।

भारत की बल्लेबाजी का श्रीगणेश ही दुर्भाग्यपूर्ण रहा। जब केवल 76 रन बने थे तो उसके आधे खिलाड़ी मंडप में वापस लौट आये थे। पटौदी और बोर्डे ने जमकर बल्लेबाजी की और बड़ी होशियारी से गेंदों को पीटना शुरू किया। आस्ट्रेलिया की कुल रन संख्या पार करली गई। दोनों बल्लेबाजों ने स्थिति को पूरी तरह अपने नियन्त्रण में रखा।

मैकेंजी ने 218 रन पर नई गेंद ली और पहली गेंद पर ही बोर्डे सिम्पसन द्वारा 'स्लिप' में लपक लिये गये। भारतीय दल में दस उत्तम बल्लेबाज थे लेकिन पटौदी को कोई अच्छा साथी नहीं मिला और भारत की पारी 276 रनों पर समाप्त हो गई। पटौदी 128 रन बनाकर अपराजित रहे। मैकेंजी की तेज गेंदबाजी ने कमाल दिखाया और उन्होंने केवल 58 रन देकर 6 बल्लेबाज परास्त किए।

पटौदी ने अपना विश्वास स्पिन करने वाले गेंदबाजों में रखा लेकिन वे अपनी गेंदबाजी प्रारम्भ करते उसके पहले ही आस्ट्रेलिया ने 65 रन बना लिये थे और सिम्पसन बड़े साहस और विश्वास के साथ बल्लेबाजी कर रहे थे। जब कुल रन संख्या 91 थी, नाडकर्णी ने लॉरी और ओनील को मंडप में वापस भेज दिया। लेकिन सिम्पसन और बर्ज की सफल बल्लेबाजी ने रन संख्या को आगे बढ़ाया। उनकी पारी के समाप्त होते ही आस्ट्रेलिया के 6 विकेट 237 रन पर गिर गये और भारत को जीत की आशा बंधने लगी।

बायें हाथ से बल्लेबाजी करने वाले वीवर्स और मार्टिन ने आक्रामक खेल खेला और खेल का पलड़ा मेहमानों की ओर झुक गया। पारी समाप्त होने

पर कुल रन संख्या 397 पर पहुँच गई थी। नाडकर्णी ने फिर कुशलतापूर्वक गेंदबाजी की और 91 रन देकर 6 विकेट लिये। दोनों पारियों में मिलाकर उन्होंने 11 विकेट, 122 रन देकर, प्राप्त किये जो एक सराहनीय कार्य था।

दूसरी पारी में भारत के 4 विकेट 24 रन पर गिर गये फिर भी हनुमन्तसिंह और मांजरेकर की सशक्त बल्लेबाजी ने दिखा दिया कि आस्ट्रेलिया की गेंदबाजी से डरने की कोई आवश्यकता नहीं थी। पटौदी, बोर्डे और दुर्रानी अभी खेलने बाकी थे और हनुमन्तसिंह जोरदार बल्लेबाजी कर रहे थे। ऐसा प्रतीत होता था कि भारत आस्ट्रेलिया के विरुद्ध जीत जायेगा। मैकेंजी ने पटौदी और बोर्डे दोनों को लगातार दो गेंदों में आउट कर दिया और भारत के खेल का पासा उलटा पड़ गया। हनुमन्तसिंह के 94 रन बनाने पर भी भारत की टीम 193 रनों पर आउट हो गई। मैकेंजी ने फिर जोरदार गेंदबाजी की और दोनों पारियों में मिलाकर 10 विकटें केवल 91 रन देकर लेलीं।

बम्बई में खेला गया द्वितीय टैस्ट मैच अत्यधिक उत्तेजनात्मक था। भाग्य बार-बार बदलता जा रहा था। भारत के 8 विकेट 224 रन पर गिर चुके थे और जीतने के लिये 30 रनों की आवश्यकता थी। गेंदबाज छाये हुए थे। क्षेत्र-रक्षकों के हाथ गेंद पकड़ने के लिये उत्सुक थे और जो गेंद हवा में जाती वही लपक ली जाती थी। ऐसे तनावपूर्ण वातावरण में बोर्डे ने अन्त में वीवर्स की गेंद को मिड-विकेट की ओर झटका और भारत ने टैस्ट मैच जीत लिया।

टॉस जीत कर आस्ट्रेलिया ने पहले बल्लेबाजी प्रारम्भ की और तीन विकेट 53 रनों पर खो दिये। बाद में बर्ज, जारमैन और वीवर्स ने बड़े आत्म विश्वास के साथ बल्लेबाजी की। बर्ज के प्रहारों में बड़ी शक्ति थी और उन्होंने गेंद को गोली की रफ्तार से कई बार मैदान के बाहर पीट दिया। जारमैन और वीवर्स ने छठे विकेट की साझेदारी में 151 रन जोड़े। बीमार होने के कारण ओनील बल्लेबाजी नहीं कर सके और आस्ट्रेलिया की पारी 320 रन पर समाप्त हो गई। चन्द्रशेखर ने गेंदबाजी में कमाल दिखाया और 50 रन देकर 4 विकटें लीं।

भारत ने पारी प्रारम्भ करते ही दो बल्लेबाजों को तुरन्त खो दिया लेकिन जयसिम्ह और मांजरेकर ने तीसरे विकेट की साझेदारी में 112 रन जोड़ कर स्थिति में सुधार किया। भारत ने 142 और 188 रनों के बीच चार विकटें खोई। फिर पटौदी ने सूरती और नाडकर्णी की साझेदारी में खेल का पलड़ा भारत की ओर कर दिया। इन्द्रजीतसिंह की बल्लेबाजी भी सुन्दर रही और जब भारत की प्रथम पारी समाप्त हुई तो उसकी कुल रन संख्या आस्ट्रेलिया से 21 अधिक थी।

अतिथियों ने दूसरी पारी प्रारम्भ करते ही 21 रनों की कमी को पूरा कर लिया और एक समय तो उनकी रन संख्या केवल 3 विकेट खोने पर 246 तक पहुँच गई थी। लॉरी (68), बूथ (74) और कौपर (81) ने अपनी शानदार बल्लेबाजी से दर्शकों को मोहित कर दिया। लेकिन इन बल्लेबाजों के आउट होते ही गेंदबाज फिर चढ़ बैठे और आस्ट्रेलिया की द्वितीय पारी को 274 रनों पर समाप्त कर दिया। ओनील बीमार होने के कारण नहीं खेल सके और इससे मेहमानों को बड़ा नुकसान रहा। चन्द्रशेखर ने फिर 4 विकेट लिये और बदले में 73 रन दिये, लेकिन नाडकर्णी ने 4 विकेट 33 रन पर लेकर आस्ट्रेलिया को सबसे अधिक हानि पहुँचाई।

जयसिम्हा शून्य पर आउट हो गये लेकिन उनके बाद सब बल्लेबाजों ने रन संख्या में अपना योग दिया। मांजरेकर और पटौदी ने कुल रन संख्या को 200 के पार लगा दिया। यह जोड़ा इतने आत्म-विश्वास और कुशलता से खेल रहा था कि इनके द्वारा भारत की जीत के आसार दिखाई दे रहे थे। लेकिन कहा है, "कानी के ब्याह में नौ सौ जोखिम।" जब रन संख्या 215 थी तो मांजरेकर 39 रन बना कर कोनोली की गेंद पर सिम्पसन द्वारा लपक लिये गये। नौ रनों के बाद पटौदी ने पूरी शक्ति से शॉट मारा लेकिन बर्ज ने 'गली' में गेंद को इस कमाल से लपक लिया जिसका अन्दाज नहीं लगाया जा सकता। अब भी जीतने के लिये 30 रनों की आवश्यकता थी और सिवाय बोर्डे के और कोई कुशल बल्लेबाज नहीं बचा था। मैच की बागडोर भारत के हाथ से निकल रही थी लेकिन शेरे-दिल बोर्डे ने इन्द्रजीतसिंह की साझेदारी में गेंदबाजी पर डट कर आक्रमण किया और अपने देश को विजयी बनाया।

कलकत्ता में खेले गये तृतीय टैस्ट मैच में पटौदी ने टॉस जीता लेकिन पहले बल्लेबाजी मेहमानों को दी जिन्होंने इस निर्णय का स्वागत किया। सिम्पसन और लॉरी भोजन के समय तक रन संख्या को 81 तक ले गये। भोजन के बाद दुर्रानी की गेंदबाजी ने कमाल दिखाया। 97 रन तक कोई भी विकेट नहीं गिरा था लेकिन जब कुल रन संख्या 167 पर पहुँची तो आस्ट्रेलिया की 6 विकटें गिर चुकी थी। दूसरे दिन मेहमान केवल 7 रन और जोड़ पाये और उनके बचे हुए चार बल्लेबाज भी आउट हो गये। दुर्रानी ने बिना रन दिये एक विकेट और लिया और सूरती ने 3 विकटें 38 रन देकर प्राप्त की।

भारत ने भी उत्तम तरीके से बल्लेबाजी प्रारम्भ की और एक समय उसके एक विकेट पर 97 रन थे। लेकिन दिन की खेल समाप्ति तक 5 विकेट गिर गये थे और रन संख्या केवल 130 तक पहुँच पाई थी। तीसरे दिन अकेले बोर्डे ने दृढ़तापूर्वक बल्लेबाजी की और उनके अपराजित 68 रनों ने

भारत की कुल रन संख्या को आस्ट्रेलिया की कुल रन संख्या से 61 रन आगे कर दिया।

सिम्पसन और लॉरी ने रन संख्या को आस्ट्रेलिया की दूसरी पारी में सौ से भी ऊपर पहुँचा दिया। फिर सूरती की गेंदबाजी पर हनुमन्तसिंह ने बड़े कमाल से सिम्पसन को लपक लिया। कौपर के साथ लॉरी रन संख्या को तीसरे दिन की खेल-समाप्ति तक 143 तक ले गये।

वर्षा के कारण चौथे और पांचवें दिन खेल नहीं हो सका और तृतीय टैस्ट मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

रनों का सविस्तार विवरण इस प्रकार है:—

प्रथम टैस्ट

मद्रास में अक्तूबर 2, 3, 4, 6 और 7 को खेला गया, टॉस आस्ट्रेलिया ने जीता और मैच भी 139 रनों से। कप्तान: पटौदी के नवाब (भारत) और आर० बी० सिम्पसन (आस्ट्रेलिया)। विकेट-रक्षक: इन्द्रजीतसिंह (भारत) और ए० डब्लू० टी० ग्राउट (आस्ट्रेलिया)। निर्णायक. एस० राय और एम० बी० नागेन्द्र।

आस्ट्रेलिया

लॉरी बा. नाडकर्णी	62	कै. एबजी बा. नाडकर्णी	41
सिम्पसन स्ट. इन्द्रजीत बा. दुर्रानी	30	रन आउट	77
ओनील बा. दुर्रानी	40	बा. नाडकर्णी	0
बर्जे बा. नाडकर्णी	20	पगबाधा बा. नाडकर्णी	60
बूथ पगबाधा बा. नाडकर्णी	8	कै. इन्द्रजीत बा दुर्रानी	29
मार्टिन कै. इन्द्रजीत बा. कृपालसिंह	20	कै. नाडकर्णी बा. रंजने	39
रैडपाथ कै. हनुमन्त बा. नाडकर्णी	10	कै. इन्द्रजीत बा. नाडकर्णी	0
वीवर्स बा. कृपालसिंह	0	कै. पटौदी बा. नाडकर्णी	74
मैकेंजी अपराजित	8	कै. सरदेसाई बा. रंजने	27
ग्राउट कै. जयसिम्ह बा. नाडकर्णी	0	कै. हनुमन्त बा. नाडकर्णी	12
हॉक बा. कृपालसिंह	0	अपराजित	1
अतिरिक्त	13	अतिरिक्त	37
	211		397

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–66, 2–127, 3–139, 4–161, 5–174,
6–203, 7–203, 8–203, 9–209, 10–211.

द्वितीय पारी : 1–91, 2–91, 3–175, 4–228, 5–232,
6–237, 7–301, 8–374, 9–392, 10–397.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
रंजने	7	0	30	0	12	1	53	2
जयसिम्ह	4	1	13	0	9	2	13	0
दुर्रानी	21	5	68	2	40	9	102	1
कृपालसिंह	18	5	43	3	38	13	91	0
नाडकर्णी	18	6	31	5	54·4	21	91	6
बोर्डे	4	2	13	0	5	2	10	0

भारत

जयसिम्ह पगबाधा बा. मैकेंजी	29	बा. मैकेंजी	0
इन्द्रजीतसिंह कै. ग्राउट बा हॉक	4	बा. हॉक	0
सरदेसाई बा. मैकेंजी	0	कै. रैंडपाथ बा. मार्टिन	14
मांजरेकर कै. ग्राउट बा. मार्टिन	33	कै. सिम्पसन बा. ओनील	40
हनुमन्तसिंह कै. ग्राउट बा. मार्टिन	*0*	*कै. ओनील बा. वीवर्स*	94
पटौदी अपराजित	128	बा. मैकेंजी	1
बोर्डे कै. सिम्पसन बा. मैकेंजी	49	बा. मैकेंजी	0
दुर्रानी कै. ग्राउट बा. मैकेंजी	5	कै. ओनील बा. वीवर्स	10
नाडकर्णी पगबाधा बा. हॉक	3	कै. सिम्पसन बा. हॉक	20
कृपालसिंह बा. मैकेंजी	0	बा. मैकेंजी	0
रंजने कै. रैंडपाथ बा. मैकेंजी	2	अपराजित	1
अतिरिक्त	23	अतिरिक्त	13
	276		193

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–12, 2–13, 3–55, 4–56, 5–76,
6–218, 7–232, 8–249, 9–255, 10–276.

द्वितीय पारी : 1–0, 2–4, 3–23, 4–24, 5–117,
6–130, 7–130, 8–168, 9–191, 10–193.

आस्ट्रेलिया की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
मैकेंजी	32·3	8	58	6	20	9	33	4
हॉक	33	13	55	2	17	7	26	2
रेंडपाथ	2	1	1	0	—	—	—	—
सिम्पसन	12	3	23	0	5	3	9	0
मार्टिन	26	11	63	2	16	4	43	1
बूथ	10	4	14	0	3	0	10	0
वीवर्स	10	0	20	0	10	4	18	2
ओनील	7	3	19	0	9	3	41	1

द्वितीय टैस्ट

बम्बई में अक्टूबर 10, 11, 12, 14 और 15 को खेला गया, टॉस आस्ट्रेलिया ने जीता और मैच भारत ने दो विकटों से। कप्तान : पटौदी के नवाब (भारत) और आर० बी० सिम्पसन (आस्ट्रेलिया)। विकेट-रक्षक : इन्द्रजीतसिंह (भारत) और बी० एन० जारमैन (आस्ट्रेलिया)। निर्णायक : एच० ई० चौधरी और एस० के० रघुनाथ राव।

आस्ट्रेलिया

लॉरी कै. इन्द्रजीत बा. दुर्रानी	16	पगबाधा बा. चन्द्रशेखर	68
सिम्पसन बा. चन्द्रशेखर	27	कै. हनुमन्त बा. सूरती	20
बूथ बा. चन्द्रशेखर	1	स्ट. इन्द्रजीत बा. नाडकर्णी	74
बर्ज कै. चन्द्रशेखर बा. बोर्डे	80	बा. चन्द्रशेखर	0
कोपर पगबाधा बा. नाडकर्णी	*20*	*कै. इन्द्रजीत बा. नाडकर्णी*	*81*
जारमैन कै. दुर्रानी बा. सूरती	78	बा. चन्द्रशेखर	0
वीवर्स कै. बोर्डे बा. चन्द्रशेखर	67	पगबाधा बा. चन्द्रशेखर	0
मार्टिन कै. नाडकर्णी बा. चन्द्रशेखर	0	कै. सूरती बा. नाडकर्णी	16
मैकेंजी बा. नाडकर्णी	17	कै. सूरती बा. नाडकर्णी	4
कोनोली अपराजित	0	अपराजित	0
ओनील बीमारी के कारण अनुपस्थित	—	बीमारी के कारण अनुपस्थित	—
अतिरिक्त	14	अतिरिक्त	11
	320		274

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–35, 2–36, 3–53, 4–112, 5–146, 6–297, 7–303, 8–304, 9–320.

द्वितीय पारी : 1–59, 2–121, 3–121, 4–246, 5–247, 6–247, 7–257, 8–265, 9–274.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
सूरती	18	1	70	1	21	5	77	1
जयसिम्हा	8	1	20	0	11	4	18	0
दुर्रानी	20	5	78	1	15	3	48	0
चन्द्रशेखर	26	10	50	4	30	11	73	4
नाडकर्णी	24·5	6	65	2	20·4	10	33	4
बोर्डे	7	0	23	1	2	0	14	0

भारत

जयसिम्हा बा· वीवर्स	66	कै. जारमैन बा. कोनोली	0
सरदेसाई कै· सिम्पसन बा. कोनोली	3	पगवाधा बा· मैकेंजी	56
दुर्रानी कै· जारमैन बा. सिम्पसन	12	कै· कोपर बा. सिम्पसन	31
मांजरेकर कै· कोपर बा. वीवर्स	59	कै. सिम्पसन बा. कोनोली	39
पटौदी कै· मैकेंजी बा· वीवर्स	86	कै. बर्ज बा· कोनोली	53
हनुमन्तसिंह बा. वीवर्स	14	बा. मैकेंजी	11
बोर्डे कै. सिम्पसन बा. मार्टिन	4	अपराजित	30
सूरती कै· जारमैन बा. कोनोली	21	कै. बूथ बा. वीवर्स	10
नाडकर्णी कै· जारमैन बा. मार्टिन	34	कै. सिम्पसन बा. वीवर्स	0
इन्द्रजीतसिंह कै. रैडपाथ बा. कोनोली	23	अपराजित	3
चन्द्रशेखर अपराजित	1		
अतिरिक्त	18	अतिरिक्त	23
	341	आठ विकटों पर	256

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–7, 2–30, 3–142, 4–149, 5–181, 6–188, 7–255, 8–293, 9–331, 10–341.

द्वितीय पारी : 1–4, 2–70, 3–71, 4–99, 5–113, 6–122, 7–215, 8–224.

आस्ट्रेलिया की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
मैकेंजी	22	2	49	0	21	6	43	2
कोनोली	22.3	5	66	3	18	8	24	3
मार्टिन	34	11	72	2	14	2	35	0
सिम्पसन	13	1	40	1	24	12	34	1
वीवर्स	48	20	68	4	43·4	12	82	2
कौपर	13	3	28	0	4	0	14	0
बूथ	—	—	—	—	4	3	1	0

तृतीय टैस्ट

कलकत्ता में अक्टूबर 17, 18, 20, 21 और 22 को खेला गया। टॉस भारत ने जीता और मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।
कप्तान : पटौदी के नवाब (भारत) और आर० बी० सिम्पसन (आस्ट्रेलिया)।
विकेट-रक्षक : इन्द्रजीतसिंह (भारत) और बी० एन० जारमैन (आस्ट्रेलिया)।
निर्णायक : एस० पान और बी० सत्याजी राव।

आस्ट्रेलिया

लॉरी बा. दुर्रानी	50	अपराजित	47
सिम्पसन पगबाधा बा. सूरती	67	कै. हनुमन्त बा. सूरती	71
कौपर कै. नाडकर्णी बा. दुर्रानी	4	अपराजित	14
बर्ज कै. हनुमन्त बा. दुर्रानी	4		
बूथ बा. दुर्रानी	0		
रैडपाथ अपराजित	32		
वीवर्स कै. पटौदी बा. दुर्रानी	2		
जारमैन बा. दुर्रानी	1		
मैकेंजी स्ट. इन्द्रजीत बा. सूरती	0		
सेलर्स बा. सूरती	0		
कोनोली कै. हनुमन्त बा. चन्द्रशेखर	0		
अतिरिक्त	14	अतिरिक्त	11
	174	एक विकट पर	143

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–97, 2–104, 3–109, 4–109, 5–145, 6–165, 7–167, 8–167, 9–169, 10–174.
द्वितीय पारी : 1–115

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
सूरती	27	7	38	3	10	2	37	1
जयसिम्हं	5	3	2	0	2	1	4	0
दुर्रानी	27	11	73	6	18	3	59	0
चन्द्रशेखर	28·5	15	39	1	8	3	27	0
नाडकर्णी	2	0	8	0	8	5	5	0

भारत

सरदेसाई कै. वीवर्स बा. बूथ	42
जयसिम्हं कै. बूथ बा. सिम्पसन	57
दुर्रानी कै. सिम्पसन बा. वीवर्स	12
मांजरेकर पगबाधा बा. वीवर्स	9
हनुमन्तसिंह कै. बर्ज बा. वीवर्स	5
पटौदी बा. सिम्पसन	2
नाडकर्णी बा. मैकेंजी	24
बोर्डे अपराजित	68
सूरती कै. सेलर्स बा. सिम्पसन	9
इन्द्रजीतसिंह स्ट. जारमैन बा. बूथ	2
चन्द्रशेखर बा. सिम्पसन	1
अतिरिक्त	4
	235

विकटों का पतन :

1–60, 2–97, 3–119, 4–127, 5–129, 6–133, 7–166, 8–187, 9–196, 10–235.

आस्ट्रेलिया की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
मैकेंजी	13	1	31	1
कोनोली	8	4	10	0
वीवर्स	52	18	81	3
सेलर्स	5	1	17	0
बूथ	18	10	33	2
कौपर	6	0	14	0
सिम्पसन	28	12	45	4

न्यूजीलैंड की टीम भारत में, 1965

इंग्लैंड जाते हुए न्यूजीलैंड की टीम ने भारत में चार टैस्ट मैच मद्रास, कलकत्ता, बम्बई और दिल्ली में खेले। भारत और न्यूजीलैंड के बीच में यह दूसरी टैस्ट श्रृंखला काफी रोचक और रोमांचकारी रही।

मद्रास में खेले गये प्रथम टैस्ट मैच मे सरदेसाई और जयसिम्हा ने भारतीय बल्लेबाजी की दृढ़ नींव रखी और बिना विकेट खोये भारत ने 50 रन बना लिये। पोलार्ड और मोट्ज की सुन्दर गेंदबाजी से स्थिति बदल गई और भारत ने पांच विकेट खो दिये जब कि कुल रन संख्या 114 थी। बोर्डे और इंजीनियर ने खेल का पासा फिर पलटा और आखिरी विकेट गिरने पर भारत की कुल रन संख्या 397 तक पहुँच गई।

अतिथियों की बल्लेबाजी की रफ्तार धीमी थी लेकिन उनकी बल्लेबाजी में आकर्षण था और उनकी रन संख्या 315 तक पहुँच गई। कप्तान रीड ने 42 रन 45 मिनट में बनाये। वेंकटराघवन ने अपने प्रथम टैस्ट मैच मे दो विकटें 10 रन देकर लीं।

भारत ने मैच के चौथे दिन भोजन से कुछ समय पहले अपनी दूसरी पारी प्रारम्भ की और दो विकटों पर 199 रन बना कर पारी समाप्ति की घोषणा कर दी। मांजरेकर ने शतक बनाया जो कि टैस्ट मैच में उनका सातवां शतक था।

एक घंटे की बल्लेबाजी में न्यूजीलैंड ने 62 रन बनाये और हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

कलकत्ता मे खेले गये द्वितीय टैस्ट मैच में कप्तान रीड ने टॉस जीता। रमाकान्त देसाई ने जल्दी से दो विकटें उखाड़ दी लेकिन रीड की अद्वितीय बल्लेबाजी ने उनके साथियों को प्रोत्साहित किया। मेहमानों ने 527 मिनट में नौ विकटों पर 462 रन बना कर पारी समाप्ति की घोषणा कर दी। रीड ने 140 मिनट में 82 रन बनाये जिनमें दस चौके और चार छक्के थे। इकतालीस वर्षीय सटक्लिफ ने 151 रन बनाये और अपराजित रहे। अपने प्रथम टैस्ट मैच में टेलर ने शतक बनाया। न्यूजीलैंड के खिलाड़ियों में जे० डब्लू० ई० मिल्स ही इसके पहले इस प्रकार का गौरव प्राप्त कर सके थे जब 1929-30 में इंग्लैंड के विरुद्ध उन्होंने 117 रन बनाये थे।

भारत 101 रन ही बना पाया और उसके चार खिलाड़ी आउट हो गये। बाद में पटौदी ने 262 मिनट में 153 रन बनाकर और बोर्डे ने

62 रन बनाकर भारत की स्थिति सुधार दी और भारत की कुल रन संख्या 380 हो गई। बोर्डे ने अपने टैस्ट क्रिकेट में 2000 रन पूरे कर लिये। टेलर ने पांच विकेट 86 रन पर लिये।

दूसरी पारी में अतिथियों की बल्लेबाजी निराशाजनक रही और उनके सात विकेट 103 रन पर उखड़ गये। लेकिन आठवें विकेट ने 81 रन जोड़ दिये और 191 रन नौ विकटों पर बनाकर पारी समाप्ति की घोषणा कर दी गई।

भारत को 55 मिनट की बल्लेबाजी मिली जिसमें 92 रन बने और दूसरे टैस्ट मैच में भी हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

बम्बई में खेले गये तीसरे टैस्ट मैच का खेल रोमांचकारी रहा। दूसरे दिन के खेल समाप्त होने पर न्यूजीलैंड की विजय के आसार प्रतीत होते थे परन्तु मैच के अन्तिम क्षणों में अतिथियों को हार से बचने के भरसक प्रयत्न करने पड़े।

डार्लिंग और मौरगन की दृढ़ बल्लेबाजी ने न्यूजीलैंड की पारी मे प्राण फूंक दिये और कुल रन संख्या 297 तक पहुँच गई। डार्लिंग ने 129 रन बनाये। रमाकान्त देसाई ने टैस्ट क्रिकेट मे अपना सर्वश्रेष्ठ खेल दिखाया और 56 रन देकर 6 विकटें ली।

अगले 150 मिनट में टेलर, कौंगडन और मौट्ज की गेंदबाजी ने भारत की बल्लेबाजी की शक्ति को क्षीण कर दिया और 33·3 ओवर में भारत की टीम 88 रन बना कर आउट हो गई। टेलर ने 5 विकटें 26 रन देकर ली।

जब भारत ने दूसरी पारी प्रारम्भ की तो टेलर ने इंजीनियर को विकेट पर नही टिकने दिया और केवल आठ रन पर ही भारत ने अपना पहला विकेट खो दिया। उस दिन खेल की समाप्ति तक कुल 18 रन ही बन पाए।

तीसरे दिन खेल प्रारम्भ ही हुआ था कि दुर्रानी भी आउट हो गये जब कि उस दिन एक भी रन नहीं बना था। जयसिम्ह ने सरदेसाई के साथ घातक गेंदबाजी का दृढ़तापूर्वक सामना किया। 47 रन बनाकर वह पोलार्ड की गेंद पर आउट हो गये उस समय कुल रन संख्या 107 थी। बोर्डे ने उनका स्थान लिया और आक्रामक बल्लेबाजी प्रारम्भ कर दी। स्थिति सुधरी लेकिन जब कुल रन संख्या 261 थी तो बोर्डे 109 रन बनाकर आउट हो गये। नौ रन ही और बन पाये थे कि मौट्ज ने पटौदी का विकेट उखाड़ फेंका। तीसरे दिन की खेल समाप्ति पर भारत के पाँच विकेट पर 281 रन बने थे। सरदेसाई (97) और हनुमन्तसिंह (3) खेल रहे थे।

मैच के चौथे और आखिरी दिन खेल प्रारम्भ होने के दस मिनट बाद सरदेसाई ने अपना पहला टैस्ट शतक 390 मिनट की बल्लेबाजी में पूरा किया। इसके बाद दोनों बल्लेबाजों ने जोरदार खेल का प्रदर्शन किया और अगले 157 मिनट में सरदेसाई ने अपना दूसरा शतक भी पूरा कर लिया। हनुमन्तसिंह ने 75 रन बनाये। छठे विकेट की इस साझेदारी ने 193 रन 197 मिनट में जोड़े। 463 रन बने और पारी समाप्ति की घोषणा कर दी गई।

खेल में 150 मिनट बाकी थे जब मेहमानों ने अपनी दूसरी पारी प्रारम्भ की। इस समय भारतीय गेंदबाजों ने जो कमाल दिखाया वह तो भारत के परम हितैषियों की कल्पना के बाहर था।

डार्लिंग और सिंक्लेयर बिना रन बनाये ही वापस भेज दिये गये। दो घंटे के खेल में सात विकेट गिर गये और कुल रन संख्या 46 तक ही पहुँच पाई। टेलर और मूल ने अपनी टीम को हार से बचाने का भरसक प्रयत्न किया और 25 कीमती मिनट तक भारतीय गेंदबाजों को कोई और विकेट न लेने दिया। जब सात मिनट बाकी थे तो वेंकटराघवन ने टेलर का डंडा उखाड़ फेंका। भारत की जीत की फिर आशा बंधी लेकिन वार्ड और मूल जमे रहे और अपनी टीम को हार से बचा गए। शानदार खेल का शानदार अन्त हुआ और इस मैच में जब कि भाग्य बार-बार बदल रहा था दोनों टीमों ने अपराजित रहने पर अपने भाग्य की सराहना ही की होगी।

दिल्ली में खेले गये चौथे और आखिरी टैस्ट में खेल की बागडोर पहली से आखिरी गेंद तक भारत के हाथ में रही और भारत आठ विकेटों से विजयी रहा। आखिरी 57 मिनटों में जब भारत को जीतने के लिये 70 रन बनाने थे, खेल में बड़ी उत्तेजना रही।

रीड ने टॉस जीता और किवीज ने सुन्दर विकेट पर बल्लेबाजी प्रारम्भ की। लेकिन कौंगडन के अलावा मेहमानों की बल्लेबाजी में कोई रस नहीं था और पहले दिन की खेल समाप्ति पर 7 विकेट 235 रनों पर गिर गये। मौरगन ने 68 रन बना लिये थे और वह खेल रहे थे।

दूसरे दिन वेंकटराघवन ने 44 गेंदों में बचे हुए तीन विकेट ले लिये और 262 रन पर पारी समाप्त हो गई। आठ विकेट 72 रनों पर 51·2 ओवर में लेकर उन्होंने शानदार गेंदबाजी का प्रदर्शन किया।

बम्बई में खेले गये पिछले टैस्ट मैच में 390 मिनट में शतक पूरा करने वाले सरदेसाई ने तेज बल्लेबाजी प्रारम्भ की और केवल 127 मिनट में 103 रन पूरे कर लिये। जब उनके 65 रन थे तो उन्होंने टैस्ट मैचों में अपने 1000 रन पूरे कर लिये। अपनी 106 रन की पारी में उन्होंने 18 चौके

लगाये। हनुमन्तसिंह के 82 रन भी इतने ही शानदार थे। इन दोनों की 123 रन की साझेदारी दूसरे विकेट पर न्यूजीलैंड के विरुद्ध सबसे उत्तम थी। बोर्डे और पटौदी ने भी आक्रामक बल्लेबाजी की और 90 मिनट में 100 रन जोड़े। दिन के खेल की समाप्ति पर भारत की रन संख्या 3 विकटों पर 340 थी।

ऐसी ही बल्लेबाजी अगले दिन भी रही। बोर्डे ने 87 रनों में 16 चौके लगाये। पटौदी ने इस शृंखला का दूसरा शतक बनाया जिसमें 15 चौके और दो छक्के सम्मिलित थे। सुब्रमण्यम् अपने प्रथम टैस्ट मैच में 40 मिनट में 9 रन बना सके। आठ विकेट गिरने पर जब कुल रन संख्या 465 थी तो पटौदी ने पारी समाप्ति की घोषणा कर दी।

अतिथियों की दूसरी पारी का प्रारम्भ दुर्भाग्यपूर्ण रहा। सुब्रमण्यम् ने डार्लिंग को शून्य पर आउट किया और देसाई ने मोरगन को जब कुल रन संख्या दस थी। वापस भेज दिया। जब रन संख्या 68 तक पहुँची तो किवीज ने दो बल्लेबाज और खो दिये जिनमें रीड भी थे जिनका डंडा वेंकटराघवन ने उखाड़ फेंका था। दिन के खेल की समाप्ति पर जारविस और सटक्लिफ खेल रहे थे और कुल रन संख्या 95 हो गई थी।

इस जोड़े ने भारतीय गेंदबाजों का अगले दिन भी डट कर सामना किया और पांचवें विकेट ने 104 रन जोड़े। कौलिज और केमेरन ने आखिरी मिडन्त की और नवें विकेट पर 51 रन जोड़े। वार्ड रन आउट हो गये और न्यूजीलैंड की दूसरी पारी 272 रन पर समाप्त हो गई। वेंकटाराघवन ने चार विकेट 40 रन पर लिये और दोनों पारियों में कुल मिलाकर 12 विकेट, 152 रन पर लेकर, उन्होंने शानदार गेंदबाजी का प्रदर्शन किया।

भारत को जीतने के लिये 57 मिनट में 70 रन बनाने थे। इंजीनियर और जयसिम्ह ने अपने विकेट शीघ्र ही खो दिये। सरदेसाई और पटौदी बुद्धिमानी से खेले और जब जीत के लिये चार रनों की आवश्यकता थी तो रीड ने पटौदी का डंडा उखाड़ दिया। हनुमन्तसिंह ने सटक्लिफ की गेंद को मैदान के बाहर पहुँचा दिया और भारत ने क्रिकेट क्लब ऑफ इंडिया द्वारा भेंट की हुई 'डी मैलो ट्राफी' जीत ली।

रनों का सविस्तार विवरण इस प्रकार है:

प्रथम टैस्ट

मद्रास में फरवरी 26, 27, 28 और मार्च 1 को खेला गया, टॉस भारत ने जीता और मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका। कप्तान : पटौदी के नवाब (भारत) और जे० आर० रीड (न्यूजीलैंड)। विकेट-रक्षक : एफ० एम० इंजीनियर (भारत) और जे० टी० वार्ड (न्यूजीलैंड)। निर्णायक : एस० के० रघुनाथराव और मोहम्मद यूनस।

भारत

सरदेसाई बा. पोलार्ड	22	घायल होकर निवृत्त	0
जयसिम्ह कै. मौरगन बा. मोट्ज	51	कै. कौलिज बा. यूल	49
मांजरेकर कै. डाउलिंग बा. पोलार्ड	19	अपराजित	102
पटौदी बा. मोट्ज	9		
हनुमन्तसिंह कै. वार्ड बा. पोलार्ड	0		
बोर्डे कै. रीड बा. मोट्ज	68	बा. पोलार्ड	20
दुर्रानी बा. रीड	34		
नाडकर्णी कै. कौलिज बा. यूल	75		
इंजीनियर कै. पोलार्ड बा. यूल	90		
सूरती अपराजित	9	अपराजित	17
वेंकटराघवन बा. कौलिज	4		
अतिरिक्त	16	अतिरिक्त	11
	397	दो विकटों पर पारी समाप्ति की घोषणा	199

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–51, 2–94, 3–94, 4–107, 5–114, 6–202, 7–232, 8–375, 9–378, 10–397.

द्वितीय पारी : 1–88, 2–130.

न्यूजीलैंड की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
कौलिज	22.5	5	55	1	9	2	29	0
मोट्ज	30	6	87	3	19	1	57	0
रीड	30	11	70	1	—	—	—	—
यूल	20	7	62	2	11	1	53	1
पोलार्ड	34	16	90	3	14	4	32	1
मौरगन	7	2	17	0	5	2	17	0

न्यूज़ीलैंड

डार्उलिग वा. वेंकटराघवन	29	अपराजित	21
जारविस वा. दुर्रानी	9	अपराजित	40
सिंकलेयर बा. वेंकटराघवन	30		
रीड पगबाधा बा. नाडकर्णी	42		
मोरगन पगबाधा वा. दुर्रानी	39		
सटक्लिफ वा. सूरती	56		
यूल कै. नाडकर्णी वा. दुर्रानी	0		
पोलार्ड कै. वेंकटराघवन वा. जयसिम्हा	3		
मोट्ज वा. नाडकर्णी	11		
वार्ड अपराजित	35		
कौलिज पगबाधा वा. बोर्डे	34		
अतिरिक्त	27	अतिरिक्त	1
	315	बिना विकेट गिरे	62

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1-38, 2-58, 3-119, 4-139, 5-200,
6-200, 7-227, 8-227, 9-254, 10-315.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
जयसिम्हा	12	4	30	1	4	2	8	0
सूरती	33	12	55	1	1	0	10	0
दुर्रानी	45	23	53	3	4	0	4	0
वेंकटराघवन	43	23	90	2	—	—	—	—
नाडकर्णी	36	21	42	2	—	—	—	—
बोर्डे	5	2	18	1	—	—	—	—
मांजरेकर	—	—	—	—	6	4	11	0
हनुमन्तसिंह	—	—	—	—	6	0	19	0
पटौदी	—	—	—	—	3	2	9	0

द्वितीय टैस्ट

कलकत्ता में मार्च 5, 6, 7 और 8 को खेला गया, टॉस न्यूजीलैंड ने जीता और हार-जीत का फैसला नहीं हो सका। कप्तान : पटौदी के नवाब (भारत) और जे० आर० रीड (न्यूजीलैंड)। विकेट-रक्षक : एफ० एम० इंजीनियर (भारत) और जे० टी० वार्ड (न्यूजीलैंड)। निर्णायक : एस० गांगुली और ए० आर० जोशी।

न्यूजीलैंड

डार्लिंग पगबाधा बा. वेंकटराघवन	27	कै. इंजीनियर बा. गुप्ते	23
काँगडन बा. देसाई	9	कै. वेंकटराघवन बा. देसाई	0
मौरगन कै. इंजीनियर बा. देसाई	20	बा. दुर्रानी	33
रीड कै. बोर्डे बा. वेंकटराघवन	82	पगबाधा बा. वेंकटराघवन	11
सटक्लिफ अपराजित	151	कै. हनुमन्त बा. वेंकटराघवन	6
यूल बा. गुप्ते	1	पगबाधा बा. वेंकटराघवन	21
पोलार्ड कै. जयसिम्ह बा. देसाई	31	बा. जयसिम्ह	43
टेलर कै. कुन्दरन बा. नाडकर्णी	105	अपराजित	0
वीविन बा. देसाई	1	कै. जयसिम्ह बा. नाडकर्णी	43
मोट्ज पगबाधा बा. वेंकटराघवन	21	कै. नाडकर्णी बा. दुर्रानी	0
वार्ड अपराजित	1		
अतिरिक्त	13	अतिरिक्त	11
नौ विकटों पर पारी समाप्ति की घोषणा	462	नौ विकटों पर पारी समाप्ति की घोषणा	191

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1-13, 2-37, 3-138, 4-139, 5-152, 6-233, 7-396, 8-407; 9-450.

द्वितीय पारी : 1-4, 2-37, 3-61, 4-83, 5-97, 6-103, 7-103, 8-184, 9-191.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
रमाकान्त देसाई	33	6	128	4	12	6	32	1
जयसिम्ह	20	0	73	0	15	2	21	1
दुर्रानी	10	0	49	0	18	10	34	2
नाडकर्णी	35	14	59	1	7	4	14	1
बी. पी. गुप्ते	16	3	54	1	22	7	64	1
वेंकटराघवन	41	18	86	3	17	11	15	3

भारत

जयसिम्ह् वा. मोट्ज	22	कै. मोरगन वा. कौंगडन	0
कुन्दरन वा. कौंगडन	36	अपराजित	12
इंजीनियर कै. पोलार्ड वा. टेलर	10	कै. पोलार्ड वा. डार्लिंग	45
बोर्डे कै. पोलार्ड वा. टेलर	62		
नाडकर्णी वा. टेलर	0		
पटौदी कै. वार्ड वा. टेलर	153		
हनुमन्तसिंह कै. जारविस वा. यूल	31		
दुर्रानी कै. पोलार्ड वा. यूल	20	वा. वीविन	23
देसाई कै. वार्ड वा. यूल	0		
वेंकटराघवन वा. टेलर	7	अपराजित	0
बी. पी. गुप्ते अपराजित	3		
अतिरिक्त	36	अतिरिक्त	12
	380	तीन विकटों पर	92

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–45, 2–61, 3–100, 4–101, 5–211,
6–307, 7–357, 8–357, 9–371, 10–380.

द्वितीय पारी : 1–3, 2–52, 3–92.

न्यूजीलैंड की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
मोट्ज	21	3	74	1	—	—	—	—
टेलर	23·5	2	86	5	—	—	—	—
कौंगडन	18	5	49	1	5	0	33	1
पोलार्ड	15	1	50	0	—	—	—	—
वीविन	12	3	37	0	3	0	14	1
रीड	2	1	5	0	—	—	—	—
यूल	14	3	43	3	—	—	—	—
डार्लिंग	—	—	—	—	6	2	19	1
सटक्लिफ	—	—	—	—	3	2	14	0

तृतीय टेस्ट

बम्बई में मार्च 12, 13, 14 और 15 को खेला गया, टॉस भारत ने जीता और हार-जीत का फैसला नहीं हो सका। कप्तान : पटौदी के नवाब (भारत) और जे० श्रार० रीड (न्यूजीलैंड)। विकेट-रक्षक : एफ० एम० इंजीनियर (भारत) और जे० टी० वार्ड (न्यूजीलैंड)। निर्णायक : एम० वी० नागेन्द्र श्रौर एस० रॉय।

न्यूजीलैंड

डार्लिग बा. देसाई	129	कॅ. इंजीनियर बा. जयसिम्ह	0
कोंगडन कॅ. इंजीनियर बा. देसाई	3	कॅ. हनुमन्त बा. दुर्रानी	14
सिकलेयर बा. देसाई	9	कॅ. वेंकटराघवन बा. दुर्रानी	0
मोरगन बा. चन्द्रशेखर	71	बा. चन्द्रशेखर	11
सटक्लिफ रन आउट	4	कॅ. दुर्रानी बा. चन्द्रशेखर	1
पोलार्ड कॅ. जयसिम्ह बा. देसाई	26	कॅ. बोर्डे बा. दुर्रानी	4
रीड पगवाघा बा. देसाई	22	कॅ. बोर्डे बा. चन्द्रशेखर	10
टेलर कॅ. हनुमन्त बा. देसाई	8	बा. वेंकटराघवन	21
यूल पगवाघा बा. दुर्रानी	2	अपराजित	8
मोट्ज अपराजित	5		
वार्ड बा. दुर्रानी	0	अपराजित	4
अतिरिक्त	18	अतिरिक्त	7
	297	आठ विकटों पर	80

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–13, 2–31, 3–165, 4–170, 5–227, 6–256, 7–276, 8–281, 9–297, 10–297.

द्वितीय पारी : 1–0, 2–0, 3–18, 4–34, 5–37, 6–45, 7–46, 8–76.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
रमाकान्त देसाई	25	9	56	6	9	5	18	1
जयसिम्ह	17	6	53	0	6	5	4	1
चन्द्रशेखर	23	6	76	1	14	7	25	3
दुर्रानी	20·2	10	26	2	7	2	16	2
वेंकटराघवन	32	13	46	0	7	3	10	1
नाडकर्णी	12	7	22	0	—	—	—	—

भारत

सरदेसाई कै. वार्ड बा. मोट्ज	4	अपराजित		200
जयसिम्ह कै. वार्ड बा. टेलर	4	कै. वार्ड बा. पोलार्ड		47
दुर्रानी कै. मौरगन बा. टेलर	4	कै. वार्ड बा. टेलर		6
बोर्डे कै. वार्ड बा. टेलर	25	कै. यूल बा. टेलर		109
हनुमन्तसिंह हिट विकेट बा. टेलर	0	अपराजित		75
पटौदी कै. वार्ड बा. कौंगडन	9	बा. मोट्ज		3
नाडकर्णी पगबाधा बा. कौंगडन	7			
इंजीनियर रन आउट	17	कै. रीड बा. टेलर		6
देसाई कै. रीड बा. मोट्ज	0			
वेंकटराघवन कै. कौंगडन बा. टेलर	7			
चन्द्रशेखर अपराजित	4			
अतिरिक्त	7		अतिरिक्त	17
	——			——
	88	पांच विकटों पर पारी		463
	——	समाप्ति की घोषणा		——

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–4, 2–8, 3–13, 4–23, 5–38, 6–48, 7–71, 8–76, 9–77, 10–88.

द्वितीय पारी : 1–8, 2–18, 3–107, 4–261, 5–270.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
मोट्ज	15	4	30	2	29·4	11	63	1
टेलर	7·3	2	26	5	29	5	76	3
कौंगडन	9	5	21	2	17	6	44	0
पोलार्ड	2	1	4	0	29	6	95	1
यूल	—	—	—	—	25	8	76	0
मौरगन	—	—	—	—	19	3	54	0
रीड	—	—	—	—	3	1	8	0
सटक्लिफ	—	—	—	—	4	0	30	0

चतुर्थ टैस्ट

दिल्ली में मार्च 19, 20, 21 और 22 को खेला गया, टॉस न्यूजीलैंड ने जीता लेकिन भारत सात विकटों से विजयी रहा। कप्तान : पटौदी के नवाब (भारत) और जे० आर० रीड (न्यूजीलैंड)। विकेट-रक्षक : एफ० एम० इंजीनियर (भारत) और जे० टी० वार्ड (न्यूजीलैंड)। निर्णायक : वी० सत्याजी राव और एस० पान।

न्यूजीलैंड

डार्उलिंग पगबाधा बा. वेंकटराघवन	7	पगबाधा बा. सुब्रमण्यम	0
जारविस बा. वेंकटराघवन	34	बा. वेंकटराघवन	77
मोरगन पगबाधा बा. वेंकटराघवन	82	कै. वेंकटराघवन बा. देसाई	4
कौंगडन कै. चन्द्रशेखर बा. वेंकटराघवन	48	बा. चन्द्रशेखर	7
रीड बा. चन्द्रशेखर	9	बा. वेंकटराघवन	22
सटक्लिफ बा. वेंकटराघवन	2	कै. इंजीनियर बा. चन्द्रशेखर	54
टेलर कै. बोर्डे बा. चन्द्रशेखर	21	बा. वेंकटराघवन	3
पोलार्ड बा. वेंकटराघवन	27	कै. इंजीनियर बा. सुब्रमण्यम	6
वार्ड पगबाधा बा. वेंकटराघवन	11	रन आउट	0
कौलिज अपराजित	4	कै. इंजीनियर बा. वेंकटराघवन	54
कैमेरन बा. वेंकटराघवन	0	अपराजित	27
अतिरिक्त	17	अतिरिक्त	18
	262		272

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–27, 2–54, 3–108, 4–117, 5–130, 6–157, 7–194, 8–256, 9–260, 10–262.

द्वितीय पारी : 1–1, 2–10, 3–22, 4–68, 5–172, 6–178, 7–179, 8–213, 9–264, 10–272.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
रमाकान्त देसाई	9	2	36	0	18	3	35	1
जयसिम्हा	5	2	12	0	1	0	2	0
सुब्रमण्यम	5	2	3	0	16	5	32	2
वेंकटराघवन	51·2	26	72	8	61·1	31	80	4
चन्द्रशेखर	37	14	96	2	34	14	95	2
नाडकर्णी	16	8	21	0	19	13	10	0
हनुमन्तसिंह	2	0	5	0	—	—	—	—

भारत

सरदेसाई कै. जारविस वा. मौरगन	106	अपराजित	27
जयसिम्ह् कै. डार्उलिग वा. रीड	10	रन आउट	1
हनुमन्तसिह् कै. कौंगडन बा. कौलिज	82	अपराजित	7
वोर्डे कै. जारविस वा. केमेरन	87		
पटौदी वा. कौलिज	113	वा. रीड	30
सुब्रमण्यम	9		
इंजीनियर वा. कौलिज	5	वा. टेलर	2
नाडकर्णी अपराजित	15		
रमाकान्त देसाई वा. कौलिज	7		
अतिरिक्त	31	अतिरिक्त	6
आठ विकटों पर पारी समाप्त घोषित	465	तीन विकटों पर	73

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–56, 2–179, 3–240, 4–378, 5–414, 6–421, 7–457, 8–465.

द्वितीय पारी : 1–9, 2–13, 3–66.

न्यूजीलैंड की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
टेलर	18	4	57	1	9	0	31	1
कौलिज	20·3	4	89	4	—	—	—	—
रीड	24	4	39	1	1	0	3	0
केमेरेन	26	5	86	1	4	0	29	0
मौरगन	15	1	68	1	—	—	—	—
पोलार्ड	10	1	44	0	—	—	—	—
सटक्लिफ	—	—	—	—	0·1	—	4	0

टैस्ट मैचों के कीर्तिमान

वल्लेबाज़ों के सभी टैस्ट मैचों के औसत

1932 — 65

वल्लेबाजी

(योग्यता : कम से कम 15 रनों का औसत)

	मैच	पारी	अपराजित	योग	उच्चतम	औसत
डी. एच. शोधन	3	4	1	181	110	60·33
सी. रामस्वामी	2	4	1	170	60	56·66
एम. एल. आपटे	7	13	2	542	163*	49·27
वी. एम. मर्चेंट	10	18	0	859	154	47·72
वी. एस. हजारे	30	52	6	2192	164*	47·65
आर. एम. मोदी	10	17	1	736	112	46·00
डी. एन. सरदेसाई	15	28	3	1062	200*	42·48
पटौदी के नवाब मनसूर अली	18	31	2	1231	203*	42·44
दिलावर हुसैन	4	6	0	254	59	42·33
पी. आर. उमरीगर	59	94	8	3631	223	42·22
हनुमन्तसिंह	9	14	2	471	105	39·25
वी. एल. मांजरेकर	55	92	10	3206	189*	39·09
सी. जी. बोर्डे	40	69	8	2285	177*	37 45
एम. एल. जयसिम्हा	27	49	2	1618	129	34·42
बी. के. कुन्दरन	14	26	4	751	192	34·15
पी. रॉय	43	79	4	2441	173	32·54
डी. जी. फडकर	31	45	7	1229	123	32·34
मुश्ताक अली	11	20	1	612	112	32·21
एन. जे. कांट्रेक्टर	31	52	1	1611	108	31·58

*अपराजित

	मैच	पारी	अपराजित	योग	उच्चतम	औसत
वीनू मांकड	44	72	5	2109	231	31·47
एच. आर. अधिकारी	21	36	8	872	114*	31·14
आर. जी. नाडकर्णी	33	54	11	1264	122*	29·39
कृपालसिंह	14	20	5	422	100*	28 13
आर. वी. केनी	5	10	1	245	62	27·22
जे. नाऊमल	3	5	1	108	43	27·00
ए. ए. बेग	8	14	0	376	112	26·85
वी. मेहरा	8	14	1	329	62	25·30
सी. के. नायडू	7	14	0	350	81	25·00
जी. एस. रामचन्द	33	53	5	1180	109	24·58
अमरनाथ	24	40	4	878	118	24·38
आर. एफ. सूरती	11	18	2	386	64	24·12
सलीम दुर्रानी	25	38	2	863	104	23·97
एफ. एम. इंजीनियर	11	19	1	428	90	23·77
अमरसिंह	7	14	1	292	51	22·46
लालसिंह	1	2	0	44	29	22·00
सी. डी. गोपीनाथ	8	12	1	242	50*	22 00
सी. वी. गडकरी	6	10	4	132	50*	22·00
के. सी. इब्राहिम	4	8	0	169	85	21·12
एम. एस. हार्डीकर	2	4	1	56	32*	18·66
एस. डब्लू. सोहनी	4	7	2	93	29*	18·60
डी. के. गायकवाड	11	20	1	350	52	18·42
एस. एच. एम. कोल्हा	2	4	0	69	31	17·25
वजीर अली	7	14	0	237	42	16·92
पी. पंजाबी	5	10	0	164	33	16·40
बाका जिलानी	1	2	1	16	12	16·00
ए. एच. कारदार	3	5	0	80	43	16·00
मिल्खासिंह	4	6	0	92	35	15·33
जे. एम. घोरपडे	8	15	0	229	41	15·26

* अपराजित

भारत की ओर से और भारत के विरुद्ध टैस्ट मैचों में बनाये गये शतक

136, वी. एच. वैलेंटाइन (इंग्लैंड), प्रथम टैस्ट, बम्बई, 1933-34
118, अमरनाथ वि० इंग्लैंड, प्रथम टैस्ट, बम्बई, 1933-34
102, सी. एफ. वालटर्स (इंग्लैंड), तृतीय टैस्ट, मद्रास, 1933-34
162, डब्लू. आर. हेमंड (इंग्लैंड), द्वितीय टैस्ट, मेनचेस्टर, 1936
112, मुश्ताक अली वि० इंग्लैंड, द्वितीय टैस्ट, मेनचेस्टर, 1936
114, वी. एम. मर्चेंट वि० इंग्लैंड, द्वितीय टैस्ट, मेनचेस्टर, 1936
217, डब्लू. आर. हेमंड (इग्लैंड), तृतीय टैस्ट, ग्रोवल, 1936
128, टी. एस. वर्दीगटन (इंगलैंड), तृतीय टैस्ट, ओवल, 1936
205*, जे. हार्ड स्टाफ (इंग्लैंड), प्रथम टैस्ट, लार्ड्स, 1946
128, वी. एम. मर्चेंट वि० इंग्लैंड, तृतीय टैस्ट, ओवल, 1946
185, डी. जी. ब्रेडमैन (ग्रास्ट्रेलिया), प्रथम टैस्ट, ब्रिसबेन, 1947-48
132, डी. जी. ब्रेडमैन (आस्ट्रेलिया), तृतीय टैस्ट, मेलबोर्न, 1947-48
116, वीनू मांकड वि० ग्रास्ट्रेलिया, तृतीय टैस्ट, मेलबोर्न, 1947-48
127*, डी. जी. ब्रेडमैन (आस्ट्रेलिया), तृतीय टैस्ट, मेलबोर्न, 1947-48
100*, ए. आर. मौरिस (ग्रास्ट्रेलिया), तृतीय टैस्ट, मेलबोर्न, 1947-48
112, एस. जी. बार्न्स (ग्रास्ट्रेलिया), चौथा टैस्ट, ऐडिलेड, 1947-48
201, डी. जी. ब्रेडमैन (ग्रास्ट्रेलिया), चौथा टैस्ट, ऐडिलेड, 1947-48
198, ए. एल. हैसेट (ग्रास्ट्रेलिया), चौथा टैस्ट, ऐडिलेड, 1947-48
116, वी. एस. हजारे वि० आस्ट्रेलिया, चौथा टैस्ट, ऐडिलेड, 1947-48
123, डी. जी. फडकर वि० आस्ट्रेलिया, चौथा टैस्ट, ऐडिलेड, 1947-48
145, वी. एस. हजारे वि० आस्ट्रेलिया, चौथा टैस्ट, ऐडिलेड, 1947-48
153, आर. एन. हार्वे (आस्ट्रेलिया), पांचवां टैस्ट, मेलबोर्न, 1947-48
111, वीनू मांकड वि० ग्रास्ट्रेलिया, पांचवां टैस्ट, मेलबोर्न, 1947-48
152, सी. एल. वालकॉट (वेस्ट इंडीज), प्रथम टैस्ट, दिल्ली, 1948-49
101, जी. ई. गोमेज (वेस्ट इंडीज), प्रथम टैस्ट, दिल्ली, 1948-49
128, ई. डी. वीक्स (वेस्ट इंडीज), प्रथम टैस्ट, दिल्ली, 1948-49
107, आर. जे. क्रिश्चियानी (वेस्ट इंडीज), प्रथम टैस्ट, दिल्ली, 1948-49
114*, एच. आर. अधिकारी वि० वेस्ट इंडीज, प्रथम टैस्ट, दिल्ली, 1948-49
104, ए. एफ. रे (वेस्ट इंडीज), द्वितीय टैस्ट, बम्बई, 1948-49
194, ई. डी. वीक्स (वेस्ट इंडीज), द्वितीय टैस्ट, बम्बई, 1948-49
112, आर. एस. मोदी वि० वेस्ट इंडीज, द्वितीय टैस्ट, बम्बई, 1948-49

---

* अपराजित ,†वि०=विरुद्ध

134*, वी. एस. हजारे वि० वेस्ट इंडीज, द्वितीय टैस्ट, बम्बई, 1948-49
162, ई. डी. वीक्स (वेस्ट इंडीज), तृतीय टैस्ट, कलकत्ता, 1948-49
108, सी. एल. वालकॉट (वेस्ट इंडीज), तृतीय टैस्ट, कलकत्ता, 1948-49
101, ई. डी. वीक्स (वेस्ट इंडीज), तृतीय टैस्ट, कलकत्ता, 1948-49
106, मुश्ताक अली वि० वेस्ट इंडीज, तृतीय टैस्ट, कलकत्ता, 1948-49
109, ए. एफ. रे (वेस्ट इंडीज), चौथा टैस्ट, मद्रास, 1948-49
160, जे. वी. स्टॉलमेयर (वेस्ट इंडीज), चौथा टैस्ट, मद्रास, 1948-49
122, वी. एस. हजारे वि० वेस्ट इंडीज, पांचवां टैस्ट, बम्बई, 1948-49
154, वी. एम. मर्चेंट वि० इंग्लैंड, प्रथम टैस्ट, दिल्ली, 1951-52
164*, वी. एस. हजारे वि० इंग्लैंड, प्रथम टैस्ट, दिल्ली, 1951-52
138*, ए. जे. वॉटकिन्स (इंग्लैंड), प्रथम टैस्ट, दिल्ली, 1951-52
140, पी. रॉय वि० इंग्लैंड, द्वितीय टैस्ट, बम्बई, 1951-52
155, वी. एस. हजारे वि० इंग्लैंड, द्वितीय टैस्ट, बम्बई, 1951-52
175, टी. डब्लू. ग्रेवन (इंग्लैंड), द्वितीय टैस्ट, बम्बई, 1951-52
115, डी. जी. फडकर वि० इंग्लैंड, तृतीय टैस्ट, कलकत्ता, 1951-52
111, पी. रॉय वि० इंग्लैंड, पांचवां टैस्ट, मद्रास, 1951-52
130*, पी. आर. उमरीगर वि० इंग्लैंड, पांचवां टैस्ट, मद्रास,1951-52
133, वी. एल. मांजरेकर वि० इंग्लैंड, प्रथम टैस्ट, लार्ड्स, 1952
150, एल. हट्टन (इंग्लैंड), द्वितीय टैस्ट, लार्ड्स, 1952
104, टी. जी. इवान्स (इंग्लैंड), द्वितीय टैस्ट, लार्ड्स, 1952
184, वीनू मांकड वि० इंग्लैंड, द्वितीय टैस्ट, लार्ड्स, 1952
104, एल. हट्टन (इंग्लैंड), तृतीय टैस्ट, मेनचेस्टर, 1952
119 डी. एस. शेफर्ड (इंग्लैंड), चौथा टैस्ट, ओवल, 1952
124*, नजर मोहम्मद (पाकिस्तान), द्वितीय टैस्ट, लखनऊ, 1952-53
146*, वी. एस. हजारे वि० पाकिस्तान, तृतीय टैस्ट, बम्बई, 1952-53
102, पी. आर. उमरीगर वि० पाकिस्तान, तृतीय टैस्ट, बम्बई, 1952-53
110, डी. एच. शोधन वि० पाकिस्तान, पांचवां टैस्ट, कलकत्ता, 1952-53
130, पी. आर. उमरीगर वि० वेस्ट इंडीज, प्रथम टैस्ट, पोर्ट ऑफ स्पेन, 1953
207, ई. डी. वीक्स (वेस्ट इंडीज), प्रथम टैस्ट, पोर्ट ऑफ स्पेन, 1953
115, वी. एच. पैरूडिये (वेस्ट इंडीज), प्रथम टैस्ट, पोर्ट ऑफ स्पेन, 1953
161, ई. डी. वीक्स (वेस्ट इंडीज), तृतीय टैस्ट, पोर्ट ऑफ स्पेन, 1953
163*, एम. एल. आपटे वि० वेस्ट इंडीज, तृतीय टैस्ट, पोर्ट आफ स्पेन, 1953
104*, जे. बी. स्टोलमेयर (वेस्ट इंडीज), तृतीय टैस्ट, पोर्ट ऑफ स्पेन, 1953

---

* अपराजित

125, सी. एल. वालकॉट (वेस्ट इंडीज), चौथा टैस्ट, जार्जटाउन, 1953
117, पी. आर. उमरीगर वि० वेस्ट इंडीज, पांचवां टैस्ट, किंग्सटन, 1953
237, एफ. एम. वॉरेल (वेस्ट इंडीज), पांचवां टैस्ट, किंग्सटन, 1953
109, ई. डी. वीक्स (वेस्ट इंडीज), पांचवां टैस्ट, किंग्सटन, 1953
118, सी. एल. वालकॉट (वेस्ट इंडीज), पांचवां टैस्ट, किंग्सटन, 1953
150, पी. रॉय वि० वेस्ट इंडीज, पांचवां टैस्ट, किंग्सटन, 1953
118, वी. एल. मांजरेकर वि० वेस्ट इंडीज, पांचवां टैस्ट, किंग्सटन, 1953
142, हनीफ मोहम्मद (पाकिस्तान), द्वितीय टैस्ट, बहावलपुर, 1954-55
108, पी. आर. उमरीगर वि० पाकिस्तान, चौथा टैस्ट, पेशावर, 1954-55
103*, अलीमुद्दीन (पाकिस्तान), पांचवां टैस्ट, कराची, 1954-55
223, पी. आर. उमरीगर वि० न्यूजीलैंड, प्रथम टैस्ट, हैदराबाद, 1955-56
118, वी. एल. मांजरेकर वि० न्यूजीलैंड, प्रथम टैस्ट, हैदराबाद, 1955-56
100*, कृपालसिंह वि० न्यूजीलैंड, प्रथम टैस्ट, हैदराबाद, 1955-56
102, जे. डब्लू. गाई (न्यूजीलैंड), प्रथम टैस्ट, हैदराबाद, 1955-56
137*, बी. सटक्लिफ (न्यूजीलैंड), प्रथम टैस्ट, हैदराबाद, 1955-56
223, वीनू मांकड वि० न्यूजीलैंड, द्वितीय टैस्ट, बम्बई, 1955-56
230*, बी. सटक्लिफ (न्यूजीलैंड), तृतीय टैस्ट, दिल्ली, 1955-56
119*, जे. आर. रीड (न्यूजीलैंड), तृतीय टैस्ट, दिल्ली, 1955-56
177, वी. एल. मांजरेकर वि० न्यूजीलैंड, तृतीय टैस्ट, दिल्ली, 1955-56
120, जे. आर. रीड (न्यूजीलैंड), चौथा टैस्ट, कलकत्ता, 1955-56
100, पी. रॉय वि० न्यूजीलैंड, चौथा टैस्ट, कलकत्ता, 1955-56
106*, जी. एस. रामचन्द वि० न्यूजीलैंड, चौथा टैस्ट, कलकत्ता, 1955-56
231, वीनू मांकड वि० न्यूजीलैंड, पांचवां टैस्ट, मद्रास, 1955-56
173, पी. रॉय वि० न्यूजीलैंड, पांचवां टैस्ट, मद्रास, 1955-56
109, जी. एस. रामचन्द वि० आस्ट्रेलिया, द्वितीय टैस्ट, बम्बई, 1956
161, जे. डब्लू. बर्की (आस्ट्रेलिया), द्वितीय टैस्ट, बम्बई, 1956
140, आर. एन. हार्वे (आस्ट्रेलिया), द्वितीय टैस्ट, बम्बई, 1956
142*, जी. सोबर्स (वेस्ट इंडीज), प्रथम टैस्ट, बम्बई, 1958-59
198, जी. सोबर्स (वेस्ट इंडीज), द्वितीय टैस्ट, कानपुर, 1958-59
256, आर. कन्हाई (वेस्ट इंडीज), तृतीय टैस्ट, कलकत्ता, 1958-59
103, बी. ब्यूचर (वेस्ट इंडीज), तृतीय टैस्ट, कलकत्ता, 1958-59
106*, जी. सोबर्स (वेस्ट इंडीज), तृतीय टैस्ट, कलकत्ता, 1958-59
142, बी. ब्यूचर (वेस्ट इंडीज), चौथा टैस्ट, मद्रास, 1958-59

---

* अपराजित

109, सी. जी. बोर्डे वि० वेस्ट इंडीज, पांचवां टैस्ट, दिल्ली, 1958-59
123, जे. के. होल्ट (वेस्ट इंडीज), पांचवां टैस्ट, दिल्ली, 1958-59
100, ओ. जी. स्मिथ (वेस्ट इंडीज), पांचवां टैस्ट, दिल्ली, 1958-59
100*, जे. सोलोमन (वेस्ट इंडीज), पांचवां टैस्ट, दिल्ली, 1958-59
106, पी. बी. एच. मे (इंग्लैंड), प्रथम टैस्ट, नौटिंघम, 1959
160, एम. सी. काउड्री (इंग्लैंड), तृतीय टैस्ट, लीड्स, 1959
131, जी. पुलर (इंग्लैंड), चौथा टैस्ट, मेनचेस्टर, 1959
100, एम. जे. के. स्मिथ (इंग्लैंड), चौथा टैस्ट, मेनचेस्टर, 1959
112, ए. ए. बेग वि० इंग्लैंड, चौथा टैस्ट, मेनचेस्टर, 1959
118, पी. आर. उमरीगर वि० इंग्लैंड, चौथा टैस्ट, मेनचेस्टर, 1959
114, एन. हार्वे (आस्ट्रेलिया), प्रथम टैस्ट, दिल्ली, 1959-60
108, एन. जे. कांट्रेक्टर वि० आस्ट्रेलिया, तृतीय टैस्ट, बम्बई, 1959-60
102, एन. हार्वे (आस्ट्रेलिया), तृतीय टैस्ट, बम्बई, 1959-60
163, एन. ओनील (आस्ट्रेलिया), तृतीय टैस्ट, बम्बई, 1959-60
101, एल. फेवेल (आस्ट्रेलिया), चौथा टैस्ट, मद्रास, 1959-60
113, एन. ओनील (आस्ट्रेलिया), पांचवां टैस्ट, कलकत्ता, 1959-60
160, हनीफ मोहम्मद (पाकिस्तान), प्रथम टैस्ट, बम्बई, 1960-61
121, सईद अहमद (पाकिस्तान), प्रथम टैस्ट, बम्बई, 1960-61
115, पी. आर. उमरीगर वि० पाकिस्तान, द्वितीय टैस्ट, कानपुर, 1960-61
135, इम्तियाज अहमद (पाकिस्तान), चौथा टैस्ट, मद्रास, 1960-61
103, सईद अहमद (पाकिस्तान), चौथा टैस्ट, मद्रास, 1960-61
117, पी. आर. उमरीगर वि० पाकिस्तान, चौथा टैस्ट, मद्रास, 1960-61
177*, सी. जी. बोर्डे वि० पाकिस्तान, चौथा टैस्ट, मद्रास, 1960-61
112, पी. आर. उमरीगर वि० पाकिस्तान, पांचवां टैस्ट, दिल्ली, 1960-61
101, मुश्ताक मोहम्मद (पाकिस्तान), पांचवां टैस्ट, दिल्ली, 1960-61
151*, के. एफ. बैरिंगटन (इंग्लैंड), प्रथम टैस्ट, बम्बई, 1961-62
147*, पी. आर. उमरीगर वि० इंग्लैंड, द्वितीय टैस्ट, कानपुर, 1961-62
119, जी. पुलर (इंग्लैंड), द्वितीय टैस्ट, कानपुर, 1961-62
172, के. एफ. बैरिंगटन (इंग्लैंड), द्वितीय टैस्ट, कानपुर, 1961-62
126*, ई. आर. डेक्सटर (इंग्लैंड), द्वितीय टैस्ट, कानपुर, 1961-62
127, एम. एल. जयसिम्हा वि० इंगलैंड, तृतीय टैस्ट, दिल्ली, 1961-62
189*, वी. एल. मांजरेकर वि० इंग्लैंड, तृतीय टैस्ट, दिल्ली, 1961-62
113*, के. एफ. बैरिंगटन (इंग्लैंड), तृतीय टैस्ट, दिल्ली, 1961-62

---

*अपराजित

103, पटौदी के नवाब वि० इंग्लैंड, पांचवां टैस्ट, मद्रास, 1961-62
125, ई. मैकमौरिस (वेस्ट इंडीज), द्वितीय टैस्ट, किंग्सटन, 1962
138, आर. कन्हाई (वेस्ट इंडीज), द्वितीय टैस्ट, किंग्सटन, 1962
153, जी. सोबर्स (वेस्ट इंडीज), द्वितीय टैस्ट, किंग्सटन, 1962
139, आर. कन्हाई (वेस्ट इंडीज), चौथा टैस्ट, पोर्ट ऑफ स्पेन, 1962
104, सलीम दुर्रानी वि० वेस्ट इंडीज, चौथा टैस्ट, पोर्ट ऑफ स्पेन, 1962
172*, पी. आर. उमरीगर वि० वेस्ट इंडीज, चौथा टैस्ट, पोर्ट ऑफ स्पेन, 1962
104, जी. सोबर्स (वेस्ट इंडीज), पांचवां टैस्ट, किंग्सटन, 1962
192, बी. के. कुन्दरन वि० इंग्लैंड, प्रथम टैस्ट, मद्रास, 1964
108, वी. एल. मांजरेकर वि० इंग्लैंड, प्रथम टैस्ट, मद्रास, 1964
107, एम. सी. काउड्री (इंग्लैंड), तृतीय टैस्ट, कलकत्ता, 1964
129, एम. एल. जयसिम्ह वि० इंग्लैंड, तृतीय टैस्ट, कलकत्ता, 1964
105, हनुमन्तसिंह वि० इंग्लैंड, चौथा टैस्ट, दिल्ली, 1964
151, एम. सी. काउड्री (इंग्लैंड), चौथा टैस्ट, दिल्ली, 1964
100, बी. के. कुन्दरन वि० इंग्लैंड, चौथा टैस्ट, दिल्ली, 1964
203*, पटौदी के नवाब वि० इंग्लैंड, चौथा टैस्ट, दिल्ली, 1964
127, बी. आर. नाइट (इंग्लैंड), पांचवां टैस्ट, कानपुर, 1964
121, पी. एच. पारफिट (इंग्लैंड), पांचवां टैस्ट, कानपुर, 1964
122*, आर. जी. नाडकर्णी वि० इंग्लैंड, पांचवां टैस्ट, कानपुर, 1964
128*, पटौदी के नवाब वि० आस्ट्रेलिया, प्रथम टैस्ट, मद्रास, 1964
102*, वी. एल. मांजरेकर वि० न्यूजीलैंड, प्रथम टैस्ट, मद्रास, 1965
151*, बी. सटक्लिफ (न्यूजीलैंड), द्वितीय टैस्ट, कलकत्ता, 1965
105, बी. आर. टेलर (न्यूजीलैंड), द्वितीय टैस्ट, कलकत्ता, 1965
153, पटौदी के नवाब वि० न्यूजीलैंड, द्वितीय टैस्ट, कलकत्ता, 1965
129, जी. टी. डाउलिंग (न्यूजीलैंड), तृतीय टैस्ट, बम्बई, 1965
200*, डी. एन. सरदेसाई वि० न्यूजीलैंड, तृतीय टैस्ट, बम्बई, 1965
109, सी. जी. बोर्डे वि० न्यूजीलैंड, तृतीय टैस्ट, बम्बई, 1965
108, डी. एन. सरदेसाई वि० न्यूजीलैंड, चौथा टैस्ट दिल्ली, 1965
113, पटौदी के नवाब वि० न्यूजीलैंड, चौथा टैस्ट, दिल्ली, 1965

अपने प्रथम टैस्ट मैच में शतक बनाने वाले

भारत की ओर से :

1. अमरनाथ .... 118 वि० इंग्लैंड, प्रथम टैस्ट, बम्बई, दिसम्बर 18, 1933.

* अपराजित

2. डी. एच. शोधन ... 110 वि० पाकिस्तान, पांचवाँ टैस्ट, कलकत्ता, दिसम्बर 14, 1952.
3. कृपालसिंह ... 100* वि० न्यूजीलैंड, प्रथम टैस्ट, हैदराबाद, नवम्बर 20, 1955.
4. ए. ए. बेग ... 112 वि० इंग्लैंड, चौथा टैस्ट, मेनचेस्टर, जुलाई 28, 1959.
5. हनुमन्तसिंह ... 105 वि० इंग्लैंड, चौथा टैस्ट, दिल्ली, फरवरी 9, 1964.

भारत के विरुद्ध :

1. बी. एच. वेलेंटाइन (इंग्लैंड), 136, प्रथम टैस्ट, बम्बई, दिसम्बर 17, 1933.
2. ए. जे. वॉटकिन्स (इंग्लैंड), 138, प्रथम टैस्ट, दिल्ली, नवम्बर 7, 1951.
3. टी. डब्लू. ग्रेवनी (इंग्लैंड), 175, द्वितीय टैस्ट, बम्बई, दिसम्बर 16, 1951.
4. बी. पैरूडिये (वेस्ट इंडीज), 115, प्रथम टैस्ट, ट्रिनीडाड, जनवरी 24, 1953.
5. एम. जे. के. स्मिथ (इंग्लैंड), 100, चौथा टैस्ट, मेनचेस्टर, जुलाई 24, 1959.
6. बी. आर. टेलर (न्यूजीलैंड), 105, द्वितीय टैस्ट, कलकत्ता, मार्च 5, 1965.

टैस्ट मैच की दोनों पारियों में शतक बनाने वाले

भारत की ओर से :

वी. एस. हजारे, 116 और 145, वि० आस्ट्रेलिया, चौथा टैस्ट, ऐडिलेड, जनवरी 23, 24, 26, 27 और 28, 1948.

भारत के विरुद्ध :

डी. जी. ब्रेडमैन (आस्ट्रेलिया) 132 और 127*, तृतीय टैस्ट, मेलबोर्न, जनवरी 1, 2, 3 और 5, 1948.

ई. डी. वीक्स (वेस्ट इंडीज) 162 और 101, तृतीय टैस्ट, कलकत्ता, दिसम्बर 31, जनवरी 1, 2, 3 और 4, 1949.

सबसे कम समय में टैस्ट मैच में शतक बनाने वाले

भारत की ओर से :

डी. एन. सरदेसाई, वि० न्यूजीलैंड, चौथा टैस्ट, दिल्ली, 1965, 127 मिनट में।

---

* अपराजित

भारत के विरुद्ध :

टी. जी. इवान्स (इंग्लैंड), द्वितीय टैस्ट, लार्ड्स, 1952, 126 मिनट में।

सबसे अधिक समय में टैस्ट मैच में शतक बनाने वाले

भारत की ओर से :

एम. एल. आपटे, वि० वेस्ट इंडीज, तृतीय टैस्ट, ट्रिनीडाड, 1953, 409 मिनट में।

भारत के विरुद्ध :

हनीफ मोहम्मद (पाकिस्तान), द्वितीय टैस्ट, बहावलपुर, 1955, 468 मिनट मे।

भारत में प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में तिहरा शतक बनाने वाले :

बी. बी. निम्बालकर .... 443*, महाराष्ट्र की ओर से, वि० काठियावाड़, रणजी ट्रॉफी, पूना, 1948-49

वी. एम. मर्चेंट .... 359*, बम्बई की ओर से, वि० महाराष्ट्र, रणजी ट्रॉफी, बम्बई, 1943-44

गुल मोहम्मद ... 319, बड़ौदा की ओर से, वि० होल्कर, रणजी ट्रॉफी, बड़ौदा, 1946-47

वी. एस. हजारे .... 316*, महाराष्ट्र की ओर से, वि० बड़ौदा, रणजी ट्रॉफी, पूना, 1939-40

वी. एस. हजारे .... 309, 'शेष' की ओर से, वि० हिन्दू, बम्बई पंचकोणीय प्रतियोगिता, 1943

विश्व में सबसे अधिक तिहरे शतक डी. जी. ब्रेडमैन (आस्ट्रेलिया) ने बनाये हैं :

340*, न्यूसाउथवेल्स वि० विक्टोरिया, सिडनी, 1928-29
452*, न्यूसाउथवेल्स वि० क्वीन्सलैंड, सिडनी, 1929-30
334, आस्ट्रेलिया वि० इंग्लैंड, लीड्स, 1930
304, आस्ट्रेलिया वि० इंग्लैंड, लीड्स, 1934
357, दक्षिण आस्ट्रेलिया वि० विक्टोरिया, मेलबोर्न, 1935-36
369, दक्षिण आस्ट्रेलिया वि० तसमानिया, ऐडिलेड, 1935-36

डब्लू. एच. पोन्सफोर्ड (आस्ट्रेलिया) ही ऐसे खिलाड़ी हुए हैं जिन्होंने, दो बार, एक ही पारी में 400 से अधिक रन बनाये हैं। विक्टोरिया की ओर से तसमानिया के विरुद्ध मेलबोर्न में 1922-23 में उन्होंने 429 रन 480

* अपराजित

मिनट में बनाये थे। मेलबोर्न में ही उन्होंने फिर 1927-28 में विक्टोरिया की ओर से क्वीन्सलैंड के विरुद्ध 620 मिनट में 437 रन बनाये जिनमें 42 चौके थे।

टैस्ट मैच में हर देश की ओर से उच्चतम रन संख्या :

वेस्ट इंडीज . 365*, जी. सोबर्स, वि० पाकिस्तान, तृतीय टैस्ट, किंगस्टन, 1958

इंग्लैंड : 364, एल. हट्टन, वि० आस्ट्रेलिया, पाँचवां टैस्ट, ओवल, 1938

पाकिस्तान : 337, हनीफ मोहम्मद, वि० वेस्ट इंडीज, प्रथम टैस्ट, ब्रिजटाउन, 1958

आस्ट्रेलिया : 334, डी. जी. ब्रेडमैन, वि० इंग्लैंड, तृतीय टैस्ट, लीड्स, 1930

दक्षिण अफ्रीका : 255*, डी. जे. मैक्ग्ल्यू, वि० न्यूजीलैंड, प्रथम टैस्ट, वेलिंगटन, 1953

भारत : 231, वीनू मांकड, वि० न्यूजीलैंड, पांचवां टैस्ट, मद्रास, 1955-56

न्यूजीलैंड : 230, बी सटक्लिफ, वि० भारत, तृतीय टैस्ट, दिल्ली, 1955-56

एक टैस्ट श्रृंखला में हर देश की ओर से अधिकतम रन

आस्ट्रेलिया : 974, डी. जी. ब्रेडमैन, वि० इंग्लैंड, इंग्लैंड में, 1930

इंग्लैंड : 905, डब्लू. आर. हेमंड, वि० आस्ट्रेलिया, आस्ट्रेलिया में, 1928-29

वेस्ट इंडीज : 827, सी. एल. वालकॉट, वि० आस्ट्रेलिया, वेस्ट इंडीज में, 1955

दक्षिण अफ्रीका : 732, जी. ए. फॉकनर, वि० आस्ट्रेलिया, आस्ट्रेलिया में, 1910-11

पाकिस्तान : 628, हनीफ मोहम्मद, वि० वेस्ट इंडीज, वेस्ट इंडीज में, 1958

न्यूजीलैंड : 611, बी सटक्लिफ, वि० भारत, भारत में, 1955-56

भारत : 586, वी. एल. मांजरेकर, वि० इंग्लैंड, भारत मे, 1961-62

टैस्ट मैचों की न्यूनतम रन संख्या

भारत की ओर से :

58, आस्ट्रेलिया के विरुद्ध, प्रथम टैस्ट मैच, ब्रिसबेन में, 1947-48 में

58, इंग्लैंड के विरुद्ध, तृतीय टैस्ट मैच, मेनचेस्टर में, 1952 में

भारत के विरुद्ध :

105, आस्ट्रेलिया द्वारा, द्वितीय टैस्ट मैच, कानपुर में, 1959 में

---

* अपराजित

प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में एक पारी में सबसे अधिक शतक :

होल्कर ने मैसूर के विरुद्ध रणजी ट्रॉफी के सेमी-फाइनल में अपनी पहली पारी में मार्च 2, 3, 4 और 5, 1946 को छह शतक लगाये :

के. वी. भंडारकर	....	142
सी. टी. सरवटे	....	101
एम. एम. जगदले	....	164
सी. के. नायुडू	....	101
बी. बी. निम्बालकर	...	172
आर. प्रतापसिंह	....	100

टैस्ट मैचों में एक पारी में सबसे अधिक शतक :

भारत की ओर से :

तीन : वि० न्यूज़ीलैंड, प्रथम टैस्ट, हैदराबाद, नवम्बर 19, 20, 22, 23 और 24, 1955 :

पी. आर. उमरीगर	...	223
वी. एल. मांजरेकर	....	118
कृपालसिंह	...	100*

भारत के विरुद्ध

चार : वेस्ट इंडीज की ओर से, प्रथम टैस्ट मैच, दिल्ली, नवम्बर 10, 11, 12, 13 और 14, 1948 :

सी. एल. वालकॉट	152
जी. ई. गोमेज़	101
ई. डी. वीक्स	128
आर. जे. क्रिश्चियानी	107

टैस्ट मैचों में एक पारी में सबसे अधिक शतक आस्ट्रेलिया ने वेस्ट इंडीज के विरुद्ध किंग्सटन में जून, 1955 में लगाये : 758 रन, आठ विकटों पर, बनाये गये जिनमें पांच बल्लेबाजों के शतक शामिल थे :

सी. सी. मैकडोनल्ड	127
आर. एन. हार्वे	204
के. आर. मिलर	109
आर. जी. आरचर	128
आर. बेनो	121

---

* अपराजित

टैस्ट मैचों में दोनों पारियों में मिलाकर उच्चतम रन :

भारत की ओर से

1. 38 और 118, अमरनाथ, वि० इंग्लैंड, प्रथम टैस्ट मैच, बम्बई, 1933–34
2. 59 और 57, दिलावर हुसैन, वि० इंग्लैंड, द्वितीय टैस्ट मैच, कलकत्ता, 1933–34
3. 72 और 184, वीनू मांकड, वि० इंग्लैंड, द्वितीय टैस्ट मैच, लार्ड्स, 1952
4. 130 और 69, पी. आर. उमरीगर, वि० वेस्ट इंडीज, प्रथम टैस्ट मैच, पोर्ट आफ स्पेन, 1953
5. 109 और 96, सी. जी. बोर्डे, वि० वेस्ट इंडीज, पांचवां टैस्ट मैच, दिल्ली, 1958–59
6. 54 और 49, पी. रॉय, वि० इंग्लैंड, प्रथम टैस्ट मैच, नौटिंघम, 1959
7. 68 और 61, सी. जी. बोर्डे, वि० इंग्लैंड, चतुर्थ टैस्ट मैच, कलकत्ता, 1961–62
8. 56 और 172, पी. आर. उमरीगर, वि० वेस्ट इंडीज, चतुर्थ टैस्ट मैच, पोर्ट ऑफ स्पेन, 1962
9. 192 और 38, बी. के. कुन्दरन, वि० इंग्लैंड, प्रथम टैस्ट मैच, मद्रास, 1964

भारत के विरुद्ध :

1. 77 और 56, जे. डी. रोबर्टसन (इंग्लैंड), पंचम टैस्ट मैच, मद्रास, 1951–52
2. 73 और 37, सी. मटक्लिफ (न्यूजीलैंड), द्वितीय टैस्ट मैच, बम्बई, 1955–56
3. 44 और 63, जे. आर. रीड (न्यूजीलैंड), पंचम टैस्ट मैच, मद्रास, 1955–56
4. 53 और 34, सी. सी. मैक्डोनल्ड (आस्ट्रेलिया), द्वितीय टैस्ट मैच, कानपुर, 1959–60
5. 151* और 52*, के. एफ. बैरिंगटन (इंग्लैंड), प्रथम टैस्ट मैच, बम्बई, 1961–62

---

* अपराजित

हर विकेट की सर्वोत्तम (रेकार्ड) साझेदारी

भारत की ओर से :

प्रथम विकेट : 413, वीनू मांकड और पी. रॉय, वि० न्यूजीलैंड, पंचम टैस्ट मैच, मद्रास, 1955–56 (विश्व रेकार्ड)

द्वितीय विकेट : 237, पी. रॉय और वी. एल. मांजरेकर, वि० वेस्ट इंडीज, पंचम टैस्ट मैच, जमैका, 1953

तृतीय विकेट : 238, पी. आर. उमरीगर और वी. एल. मांजरेकर, वि० न्यूजीलैंड, प्रथम टैस्ट मैच, हैदराबाद, 1955–56

चतुर्थ विकेट : 222, वी. एस. हजारे और वी. एल. मांजरेकर, वि० इंग्लैंड, प्रथम टैस्ट मैच, लार्ड्स, 1952

पंचम विकेट : 190, पटौदी के नवाब और सी. जी. बोर्डे, वि० इंग्लैंड, चतुर्थ टैस्ट मैच, दिल्ली, 1964

छठा विकेट : 193*, डी. एन. सरदेसाई और हनुमन्तसिंह, वि० न्यूजीलैंड, तृतीय टैस्ट मैच, बम्बई, 1965

सातवां विकेट : 153, एम. एल. आपटे और वीनू मांकड, वि० वेस्ट इंडीज, तृतीय टैस्ट मैच, ट्रिनीडाड, 1953

आठवां विकेट : 101, आर. डी. नाडकर्णी और एफ. एम. इंजीनियर, वि० इंग्लैंड, पांचवां टैस्ट मैच, मद्रास, 1961–62

नवां विकेट : 149, पी. जी. जोशी और रमाकान्त देसाई, वि० पाकिस्तान, प्रथम टैस्ट मैच, बम्बई, 1960–61

दसवां विकेट : 109, एच. आर. अधिकारी और गुलाम अहमद, वि० पाकिस्तान, प्रथम टैस्ट मैच, दिल्ली, 1952–53

भारत के विरुद्ध :

प्रथम विकेट : 239, जे. बी. स्टॉलमेयर और ए. एफ. रे, (वेस्ट इंडीज), चतुर्थ टैस्ट मैच, मद्रास 1948–49

द्वितीय विकेट : 255, मैकमोरिस और आर. कन्हाई, (वेस्ट इंडीज) द्वितीय टैस्ट मैच, जेमैका, 1962

तृतीय विकेट : 222*, बी. सटक्लिफ और जे. आर. रीड, (न्यूजीलैण्ड), तृतीय टैस्ट मैच, दिल्ली, 1955–56

चतुर्थ विकेट : 267, सी. एल. वालकोट और जी. ई. गोमेज, (वेस्ट इंडीज), प्रथम टैस्ट मैच, दिल्ली, 1948–49

पंचम विकेट : 223*, डी. जी. ब्रेडमैन और ए. आर. मौरिस, (आस्ट्रेलिया), तृतीय टैस्ट मैच, मेलबोर्न, 1947–48

---

* अपराजित

छठा विकेट : 163, जी. सोवर्स और जे. सोलोमन, (वेस्ट इंडीज), द्वितीय टैस्ट मैच, कानपुर, 1958–59
सातवां विकेट : 127, जी. सोबर्स और मेंडोनका, (वेस्ट इंडीज), द्वितीय टैस्ट मैच, जेमैका, 1962
आठवां विकेट : 138, आर. डब्लू. वी. रोबिन्स और एच. वैरीटी, (इंग्लैण्ड), द्वितीय टैस्ट मैच, मेनचेस्टर, 1936
नवां विकेट : 106, आर. जी. क्रिश्चियानी और डी. ऐटकिन्सन, (वेस्ट इंडीज), प्रथम टैस्ट मैच, दिल्ली, 1948–49
दसवां विकेट : 104, जुल्फिकार अहमद और अमीर इलाही, (पाकिस्तान), चतुर्थ टैस्ट मैच, मद्रास, 1952–53.

200 रन या अधिक की साझेदारी

भारत की ओर से :

413, प्रथम विकेट पर, वीनू मांकड और पी. रॉय, वि. न्यूजीलैंड, पंचम टैस्ट मैच, मद्रास, 1955–56.
238, तृतीय विकेट पर, पी. आर. उमरीगर और वी. एल. मांजरेकर, वि. न्यूजीलैंड, प्रथम टैस्ट मैच, हैदराबाद, 1955–56.
237, द्वितीय विकेट पर, पी. रॉय और वी. एल. मांजरेकर, वि. वेस्ट इंडीज पंचम टैस्ट मैच, जेमैका 1953.
222, चतुर्थ विकेट पर, वी. एस. हजारे और वी. एल. मांजरेकर, वि. इंग्लैण्ड, प्रथम टैस्ट मैच, लीड्स, 1952.
211, तृतीय विकेट पर, वी. एम. मर्चेन्ट और वी. एस. हजारे, वि. इंग्लैण्ड, द्वितीय टैस्ट मैच, लार्ड्स, 1952.
211, तृतीय विकेट पर, वीनू मांकड और वी एस. हजारे, वि. इंग्लैंड, द्वितीय टैस्ट मैच, लार्ड्स, 1952.
203, प्रथम विकेट पर, वी. एम. मर्चेन्ट और मुश्ताक अली, वि. इंग्लैंड, द्वितीय टैस्ट मैच, मेनचेस्टर, 1936.

भारत के विरुद्ध :

267, चतुर्थ विकेट पर, सी. एल. वालकॉट और जी. ई. गोमेज (वेस्ट इंडीज), प्रथम टैस्ट मैच, दिल्ली, 1948–49.
266, चतुर्थ विकेट पर, डब्लू आर. हेमंड और टी. एस. वर्दींगटन, (इंग्लैंड), तृतीय टैस्ट मैच, ओवल, 1936.
255, द्वितीय विकेट पर, मैकमोरिस और आर. कन्हाई, (वेस्ट इंडीज), द्वितीय टैस्ट मैच, जेमैका, 1962.

246, द्वितीय विकेट पर, हनीफ मोहम्मद और सईद अहमद, (पाकिस्तान), *प्रथम टैस्ट मैच, बम्बई, 1960–61.*

239, प्रथम विकेट पर, जे. बी. स्टॉलमेयर और ए. एफ. रे, (वेस्ट इंडीज) चतुर्थ टैस्ट मैच, मद्रास, 1948–49.

236, द्वितीय विकेट पर, डी. जी. ब्रेडमैन और बार्न्स, (आस्ट्रेलिया), चतुर्थ टैस्ट मैच, ऐडिलेड, 1947-48.

223, * पंचम विकेट पर, डी. जी. ब्रेडमैन और ए. आर. मौरिस, (आस्ट्रेलिया), तृतीय टैस्ट मैच, मेलबोर्न, 1947–48.

222*, तृतीय विकेट पर, बी. सटक्लिफ और जे. आर. रीड, (न्यूजीलैंड), तृतीय टैस्ट मैच, दिल्ली, 1956–57.

219, पंचम विकेट पर, ई. वीक्स और पैरुडिये (वेस्ट इंडीज), प्रथम टैस्ट मैच, ट्रिनीडाड, 1953.

217, चतुर्थ विकेट पर, आर. कन्हाई और बी. ब्यूचर, (वेस्ट इंडीज), तृतीय *टैस्ट मैच, कलकत्ता, 1958–59.*

213, चतुर्थ विकेट पर, एफ. एम. वॅरिल और सी. एल. वालकॉट, (वेस्ट इंडीज) पंचम टैस्ट मैच, जेमैका, 1953.

207, तृतीय विकेट पर, एन. हार्वे और ओनील (आस्ट्रेलिया), तृतीय टैस्ट मैच, बम्बई, 1959.

206, चतुर्थ विकेट पर, के. एफ. बैरिंगटन और ई. आर. डेक्सटर (इंग्लैण्ड), द्वितीय टैस्ट मैच, कानपुर, 1961–62.

204, द्वितीय विकेट पर, जे. डब्लू. बर्की और एन हार्वे (आस्ट्रेलिया), द्वितीय टैस्ट मैच, बम्बई, 1956.

पूरी पारी खेलते रहने का श्रेय

भारत के विरुद्ध :

नज़र मोहम्मद (पाकिस्तान): लखनऊ में 1952 में खेले गये द्वितीय टैस्ट मैच में पारी के प्रारम्भ से लेकर अन्त तक 142 रन बनाकर अपराजित रहे।

भारत की ओर से :

वी. एम. मर्चेंट लंकाशायर के विरुद्ध जुलाई 15, 16 और 17, 1936 को दोनों पारियों में प्रारम्भ से अन्त तक खेलते रहे और दोनों पारियों में क्रमशः 135 और 77 रन बनाकर अपराजित रहे।

---

* असमाप्त साझेदारी या अपराजित का द्योतक है।

टैस्ट मैचों में सबसे अधिक चौके

भारत की ओर से टैस्ट मैचों में सबसे अधिक चौके लगाने का श्रेय पी. आर. उमरीगर को है। न्यूजीलैंड के विरुद्ध प्रथम टैस्ट मैच में, जो हैदराबाद में 1955-56 में खेला गया था, उमरीगर ने अपनी 223 रन की पारी में, 27 चौके लगाये थे।

पटौदी के नवाब मन्सूर अली ने इंग्लैंड के विरुद्ध दिल्ली में 1964 में खेले गये टैस्ट मैच में अपनी अपराजित 203 रन की पारी में 23 चौके और 2 छक्के लगाये थे।

विश्व मे इंगलैंड के जोन एड्रिच को टैस्ट मैचो में सबसे अधिक चौके लगाने का श्रेय है। उन्होंने 1965 में न्यूजीलैंड के विरुद्ध अपनी 310 रन की अपराजित पारी में 5 छक्के और 52 चौके लगाये थे।

आस्ट्रेलिया के डी. जी. ब्रेडमैन ने इंग्लैंड के विरुद्ध अपनी 334 रनों की पारी मे, जो लीड्स के टैस्ट मैच में 1930 में खेली गई थी, 46 चौके लगाये थे। इसी मैदान में 1934 में खेले गये टैस्ट मैच में उन्होंने 304 रन बनाये जिनमे 43 चौके और 2 छक्के शामिल थे।

इंग्लैंड के डब्लू. आर. हैमंड ने 1933 में न्यूजीलैंड के विरुद्ध 336 रन बनाये जिनमें 33 चौके और 10 छक्के शामिल थे।

प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में सबसे अधिक छक्के

जे. आर. रीड (न्यूजीलैंड) ने अपनी 296 रन की पारी मे वेलिंगटन की ओर से नॉदर्न डिस्ट्रिक्ट के विरुद्ध वेलिंगटन में 15 छक्के लगाये।

सी. के. नायुडू (भारत) ने अपनी 153 रन की पारी में हिन्दू क्लब की ओर के एम. सी. सी. के विरुद्ध बम्बई में 1926 में 11 छक्के लगाये। इस पारी में उन्होंने 13 चौके भी लगाये थे।

सी. जे. बारनेट (इंग्लैंड) ने अपनी 194 रन की पारी में ग्लाउसेस्टर-शायर की ओर से सोमरसेट के विरुद्ध 1934 में 11 छक्के लगाये थे।

आर. बिनो (आस्ट्रेलिया) ने अपनी 135 रन की पारी में आस्ट्रेलिया की ओर से टी. एन. पीयर्स एकादश के विरुद्ध 1953 में 11 छक्के लगाये थे।

प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में खिलाड़ियों के सम्पूर्ण जीवन में सर्वोत्तम बल्लेबाजी का औसत :

डी. जी. ब्रेडमैन (आस्ट्रेलिया) 1927-1949, विश्व में सर्वश्रेष्ठ रहे। उन्होंने 338 पारियों मे, 43 में अपराजित रहकर, 95·14 रन प्रति पारी के औसत से रन बनाये थे।

वी. एम. मर्चेंट (भारत) 1931–1951, को द्वितीय स्थान प्राप्त है। उन्होंने 221 पारियों में, 44 में अपराजित रह कर, 72·75 रन प्रति पारी के औसत से रन बनाये थे।

के. एस रणजीतसिंह जी (इंग्लैण्ड) 1893–1920, तृतीय रहे हैं। उन्होने 500 पारियों मे, 62 मे अपराजित रहकर, 56·37 रन प्रति पारी के औसत से रन बनाये थे।

इंग्लैंड में जाकर बल्लेबाज़ी का श्रेष्ठ औसत रखने वाले भारतीय खिलाड़ी :

वर्ष	खिलाड़ी	पारी	अपराजित	कुल रन	उच्चतम रन संख्या	औसत
1900	के. एस. रणजीतसिंह जी (ससेक्स)	40	5	3065	275	87·57
1904	के. एस. रणजीतसिंह जी (ससेक्स)	34	6	2077	207*	74·17
1960	आर. सुब्बाराव (नॉर्थम्पटनशायर)	32	5	1503	147*	55·66

लीग क्रिकेट

अंग्रेजी लीग क्रिकेट मे निम्नलिखित औसत सर्वोत्तम रहा : भारत के वी. एल. मांजरेकर (कासलटन मूर); वर्ष: 1956, पारी: 21, अपराजित: 12, औसत: 161·77.

टैस्ट की उच्चतम रन संख्या

भारत की ओर से :

539, नौ विकेट पर पारी समाप्त घोषित, पाकिस्तान के विरुद्ध, 1960 में मद्रास के चतुर्थ टैस्ट मैच में।

भारत के विरुद्ध :

674, आस्ट्रेलिया द्वारा, 1947–48 में ऐडिलेड के चतुर्थ टैस्ट में बने।

टैस्ट की निम्नतम रन संख्या

भारत की ओर से :

58, आस्ट्रेलिया के विरुद्ध, 1947-48 में ब्रिसबेन के प्रथम टैस्ट मैच में बने।

58, इंग्लैंड के विरुद्ध, 1952 में मेनचेस्टर के तृतीय टैस्ट मैच में बने।

भारत के विरुद्ध :

105, आस्ट्रेलिया द्वारा, 1959 मे कानपुर के द्वितीय टैस्ट मैच में बने।

एक मैच में सबसे अधिक रन संख्या

भारत : 2376 रन, 34 विकटों पर, रणजी ट्रॉफी के सेमीफाइनल में, बम्बई और महाराष्ट्र के मध्य, पूना मे, 1948–49 में।

दक्षिण अफ्रीका : 1981 रन, 35 विकटों पर, दक्षिण अफ्रीका और इंग्लैड के मध्य, डरबन में, 1939 में।

आस्ट्रेलिया : 1929 रन, 39 विकटों पर, न्यू साउथ वेल्स और दक्षिण आस्ट्रेलिया के मध्य, सिडनी मे, 1925–26 मे।

न्यूजीलैंड : 1905 रन, 40 विकटों पर, ग्रोटागो ग्रौर वेलिंगटन के मध्य, ड्यूनेडिन में, 1923-24 में।

वेस्ट इंडीज : 1815 रन, 34 विकटों पर, वेस्ट इंडीज और इंग्लैण्ड के मध्य, किंग्सटन में, 1929-30 मे।

इंग्लैण्ड : 1723 रन, 31 विकटों पर, इंग्लैण्ड ग्रौर आस्ट्रेलिया के मध्य, लीड्स में, 1948 में।

•

गेंदबाजी

(योग्यता : कम से कम 10 विकेट)

	ओवर	मे०ओ०	रन	विकेट	औसत
एस. वेंकटराघवन	252·3	125	399	21	19·00
जे. एम. पटेल	287·3	94	636	29	21·93
आर.जी. नाडकर्णी	1231·4	556	1951	71	27·47
मोहम्मद निसार	201·5	34	707	25	28·28
एस. पी. गुप्ते	1880·4	599	4402	149	29·54
गुलाम अहमद	941·4	253	2052	68	30·17
बी.एस. चन्द्रशेखर	362·2	126	822	27	30·44
अमरसिंह	363·4	95	858	28	30·64
वीनू मांकड	2349·4	777	5235	162	32·31
आर. वी. दिवेचा	174	44	361	11	32·81
सलीम दुर्रानी	944·1	285	2303	70	32·90
अमरनाथ	644·5	188	1481	45	32·91
वी. वी. रंजने	211.1	33	649	19	34·15
आर. बी. देसाई	887·5	173	2623	72	36·43
डी. जी. फड़कर	976·1	267	2285	62	36·85
आर. सुरेन्द्रनाथ	433·4	145	1053	26	40·50
पी. आर. उमरीगर	789·4	259	1483	35	42·37
जी. एस. रामचन्द	829·2	255	1894	41	46·19
सी. जी. बोर्डे	658·3	151	1998	43	46·46
एस. जी. शिन्दे	252·3	60	717	12	59·75
वी. एस. हजारे	444.4	97	1220	20	61·60
आर. एफ. सूरती	266·4	53	808	11	73·45

टैस्ट मैच की एक पारी में सबसे अधिक विकेट लेने वाले :

भारत की ओर से :

एस. पी. गुप्ते ... 9 विकटें 102 रनों पर, वि० वेस्ट इंडीज, द्वितीय टैस्ट मैच, कानपुर, 1958-59

जे. एम. पटेल ... 9 विकटें 69 रनों पर, वि० आस्ट्रेलिया, द्वितीय टैस्ट मैच, कानपुर, 1959-60

भारत के विरुद्ध :

एफ. एस. ट्रूमैन ... 8 विकटें 31 रनों पर, इंग्लैण्ड की ओर से, तृतीय टैस्ट मैच, मेनचेस्टर, 1952

एल. गिब्स .... 8 विकटें 38 रनों पर, वेस्ट इंडीज की ओर से, तृतीय टैस्ट मैच, ब्रिजटाउन, 1962

विश्व में सर्वोत्तम :

जे. सी. लेकर .... 10 विकटें 53 रनों पर, इंग्लैण्ड की ओर से आस्ट्रेलिया के विरुद्ध, चतुर्थ टैस्ट मैच, मेनचेस्टर, 1956

एक टैस्ट मैच में सबसे अधिक विकटें

भारत की ओर से :

जे. एम. पटेल .... 14 विकटें 114 रनो पर, वि० आस्ट्रेलिया, द्वितीय टैस्ट मैच, कानपुर, 1959-60

भारत के विरुद्ध :

फजल महमूद (पाकिस्तान) .... 12 विकटें 94 रनों पर, द्वितीय टैस्ट मैच, लखनऊ, 1952

ए. के. डेविडसन (आस्ट्रेलिया) ... 12 विकटें 124 रनों पर, द्वितीय टैस्ट मैच, कानपुर, 1959-60

विश्व में सर्वोत्तम :

जे. सी. लेकर (इंग्लैण्ड) : 19 विकटें 90 रनों पर, वि० आस्ट्रेलिया, चतुर्थ टैस्ट मैच, मेनचेस्टर, 1956

एक टैस्ट श्रृंखला में सबसे अधिक विकटें

भारत की ओर से :

वीनू मांकड .... 34 विकटें, वि० इंग्लैड, भारत में, 1951-52

एस. पी. गुप्ते ... 34 विकटें, वि० न्यूजीलैण्ड, भारत में, 1955

भारत के विरुद्ध :

डब्लू. हॉल ... 30 विकटें, वेस्ट इंडीज की ओर से भारत में, 1958-59

विश्व में सर्वोत्तम :

एस. एफ. बार्न्स ... 49 विकटें, इंग्लैण्ड की ओर से, दक्षिण अफ्रीका के विरुद्ध, दक्षिण अफ्रीका में, 1913-14

अपने क्रिकेट-जीवन में सबसे अधिक विकटें

भारत की ओर से :

वीनू मांकड .... 162 विकटें 5235 रनों पर, 44 टैस्ट मैचों में।
एस. पी. गुप्ते .... 149 विकटें 4402 रनों पर, 36 टैस्ट मैचों में।

एक टैस्ट पारी में पांच या अधिक विकटें

भारत की ओर से :

5 विकटें 93 रनों पर, मोहम्मद निसार, वि० इंग्लैण्ड, प्रथम टैस्ट मैच, लार्ड्स, 1932

5 विकटें 90 रनों पर, मोहम्मद निसार, वि० इंग्लैंड, प्रथम टैस्ट मैच, बम्बई, 1933-34

7 विकटें 86 रनों पर, अमरसिंह, वि० इंग्लैण्ड, तृतीय टैस्ट मैच, मद्रास, 1933-34

6 विकटें 35 रनो पर, अमरसिंह, वि० इंग्लैण्ड, प्रथम टैस्ट मैच, लार्ड्स, 1946

5 विकटें 120 रनों पर, मोहम्मद निसार, वि० इंग्लैण्ड, तृतीय टैस्ट मैच, ओवल, 1936

5 विकटें 118 रनों पर, अमरनाथ, वि० इंग्लैण्ड, प्रथम टैस्ट मैच, लार्ड्स, 1946

5 विकटें 96 रनों पर, अमरनाथ, वि० इंग्लैण्ड, द्वितीय टैस्ट मैच, मैंचेस्टर, 1946

5 विकटें 107 रनों पर, सी. आर. रंगाचारी, वि० वेस्ट इंडीज, प्रथम टैस्ट मैच, दिल्ली, 1948-49

7 विकटें 159 रनों पर, डी. जी. फडकर वि० वेस्ट इंडीज, चतुर्थ टैस्ट मैच, मद्रास, 1948-49

6 विकटें 91 रनों पर, एस. जी. शिन्दे, वि० इंग्लैण्ड, प्रथम टैस्ट मैच, दिल्ली, 1951-52

5 विकटें 70 रनों पर, गुलाम अहमद, वि० इंग्लैण्ड, चतुर्थ टैस्ट मैच, कानपुर, 1951-52

8 विकटें 55 रनों पर, वीनू मांकड, वि० इंग्लैण्ड, पंचम टैस्ट मैच, मद्रास, 1951-52

5 विकटें 100 रनों पर, गुलाम अहमद, वि० इंग्लैण्ड, प्रथम टैस्ट मैच, लीड्स, 1952

5 विकटें 196 रनों पर, वीनू मांकड, वि० इंग्लैण्ड, द्वितीय टैस्ट मैच, लार्ड्स, 1952

8 विकटें 52 रनों पर और 5 विकटें 79 रनों पर — वीनू मांकड, वि० पाकिस्तान, प्रथम टैस्ट मैच, दिल्ली, 1952

5 विकटें 72 रनों पर, वीनू मांकड, वि० पाकिस्तान, तृतीय टैस्ट मैच, बम्बई, 1952

5 विकटें 72 रनों पर, डी. जी. फडकर, वि० पाकिस्तान, पंचम टैस्ट मैच, कलकत्ता, 1952

7 विकटें 162 रनों पर, एस. पी. गुप्ते, वि० वेस्ट इंडीज, प्रथम टैस्ट मैच, पोर्ट आफ स्पेन, 1953

5 विकटें 107 रनों पर, एस. पी. गुप्ते, वि० वेस्ट इंडीज, तृतीय टैस्ट मैच, पोर्ट आफ स्पेन, 1953

5 विकटें 180 रनों पर, एस. पी. गुप्ते, वि० वेस्ट इंडीज, पंचम टैस्ट मैच, किंग्स्टन, 1953

5 विकटें 228 रनों पर, वीनू मांकड, वि० वेस्ट इंडीज, पंचम टैस्ट मैच, किंग्स्टन, 1953

5 विकटें 109 रनो पर, गुलाम अहमद, वि० पाकिस्तान, प्रथम टैस्ट मैच, ढाका, 1954–55

5 विकटें 18 रनों पर, एस. पी. गुप्ते, वि० पाकिस्तान, प्रथम टैस्ट मैच, ढाका, 1954–55

6 विकटें 74 रनों पर, पी. आर. उमरीगर, वि० पाकिस्तान, द्वितीय टैस्ट मैच, बहावलपुर, 1954-55

5 विकटें 133 रनो पर, एस. पी. गुप्ते, वि० पाकिस्तान, तृतीय टैस्ट मैच, लाहौर, 1954-55

5 विकटें 63 रनों पर, एस. पी. गुप्ते, वि० पाकिस्तान, चतुर्थ टैस्ट मैच, पेशावर, 1954-55

5 विकटें 64 रनों पर, वीनू मांकड, वि० पाकिस्तान, चतुर्थ टैस्ट मैच, पेशावर, 1954-55

6 विकटें 49 रनों पर, जी. एस. रामचन्द, वि० पाकिस्तान, पंचम टैस्ट मैच, कराची, 1954-55

7 विकटें 128 रनों पर, एस. पी. गुप्ते, वि० न्यूजीलैंड, प्रथम टैस्ट मैच, हैदराबाद, 1955-56

5 विकटें 45 रनों पर, एस. पी. गुप्ते, वि० न्यूजीलैंड, द्वितीय टैस्ट मैच, बम्बई, 1955-56

6 विकटें 90 रनों पर, एस. पी. गुप्ते, वि० न्यूजीलैंड, चतुर्थ टैस्ट मैच, कलकत्ता, 1955-56

5 विकटें 72 रनों पर, एस. पी. गुप्ते, वि० न्यूजीलैंड, पंचम टैस्ट मैच, मद्रास, 1955-56.

7 विकटें 49 रनों पर, गुलाम अहमद, वि० आस्ट्रेलिया, तृतीय टैस्ट मैच, कलकत्ता, 1956.

9 विकटें 102 रनों पर, एस. पी. गुप्ते, वि० वेस्ट इंडीज, द्वितीय टैस्ट मैच, कानपुर, 1958-59.

5 विकटें 89 रनों पर, आर. बी. देसाई, वि० इंग्लैंड, द्वितीय टैस्ट मैच, लार्ड स, 1959.

5 विकटें 115 रनों पर, सुरेन्द्रनाथ, वि० इंग्लैंड, चतुर्थ टैस्ट मैच, मेनचेस्टर, 1959.

5 विकटें 75 रनों पर, सुरेन्द्रनाथ, वि० इंग्लैंड, पंचम टैस्ट मैच, ओवल, 1959.

9 विकटें 69 रनों पर
और
5 विकटें 55 रनों पर } जे. एम. पटेल, वि० आस्ट्रेलिया, द्वितीय टैस्ट मैच, कानपुर, 1959-60.

6 विकटें 105 रनों पर, आर. जी. नाडकर्णी, वि० आस्ट्रेलिया, तृतीय टैस्ट मैच, बम्बई, 1959-60.

5 विकटें 64 रनों पर, वी. बी. कुमार, वि० पाकिस्तान, पंचम टैस्ट मैच, दिल्ली, 1960-61.

5 विकटें 90 रनों पर, एस. पी. गुप्ते, वि० इंग्लैंड, द्वितीय टैस्ट मैच, कानपुर, 1961-62.

5 विकटें 47 रनों पर, सलीम दुर्रानी, वि० इंग्लैंड, चतुर्थ टैस्ट मैच, कलकत्ता, 1961-62.

6 विकटें 105 रनों पर, सलीम दुर्रानी, वि० इंग्लैंड, पंचम टैस्ट मैच, मद्रास, 1961-62.

5 विकटें 107 रनों पर, पी. आर. उमरीगर, वि० वेस्ट इंडीज, चतुर्थ टैस्ट मैच, पोर्ट ऑफ स्पेन, 1962.

5 विकटें 88 रनों पर, सी. जी. बोर्डे, वि० इंग्लैंड, प्रथम टैस्ट मैच, मद्रास, 1964.

5 विकटें 31 रनों पर
और
6 विकटें 91 रनों पर } आर. जी. नाडकर्णी, वि० आस्ट्रेलिया, प्रथम टैस्ट मैच, मद्रास, 1964.

6 विकटें 73 रनों पर, सलीम दुर्रानी, वि० आस्ट्रेलिया, तृतीय टैस्ट मैच, कलकत्ता, 1964.

6 विकटें 56 रनों पर, आर. बी. देसाई, वि० न्यूजीलैंड, तृतीय टैस्ट मैच, बम्बई, 1965.

8 विकटें 72 रनों पर, एस. वेंकटराघवन, वि० न्यूजीलैंड, चतुर्थ टैस्ट मैच, दिल्ली, 1965.

भारत के विरुद्ध :

5 विकटें 55 रनों पर, एम. एस. निकल्स (इंग्लैंड), प्रथम टैस्ट मैच, बम्बई, 1933–34.

7 विकटें 49 रनों पर, एच. वेरीटी (इंग्लैंड), तृतीय टैस्ट मैच, मद्रास, 1933–34.

5 विकटें 63 रनों पर, जेम्स लैंग्रिज (इंग्लैंड), तृतीय टैस्ट मैच, मद्रास, 1933–34.

5 विकटें 35 रनों पर और 5 विकटें 43 रनों पर — जी. ओ. ऐलन (इंग्लैंड), प्रथम टैस्ट मैच, लार्ड्स, 1936.

5 विकटें 73 रनों पर, जे. सिम्स (इंग्लैंड), तृतीय टैस्ट मैच, ओवल, 1936.

7 विकटें 80 रनों पर, जी. ओ. ऐलन (इंग्लैंड), तृतीय टैस्ट मैच, ओवल, 1936.

7 विकटें 49 रनों पर, ए. वी. वेडसर (इंग्लैंड), प्रथम टैस्ट मैच, लार्ड्स, 1946.

5 विकटें 24 रनों पर, आर. पोलार्ड (इंग्लैंड), द्वितीय टैस्ट मैच, मेनचेस्टर, 1946.

7 विकटें 52 रनों पर, ए. वी. वेडसर (इंग्लैंड), द्वितीय टैस्ट मैच, मेनचेस्टर, 1946.

5 विकटें 2 रनों पर और 6 विकटें 29 रनों पर — ई. आर. एच. टोशक (आस्ट्रेलिया), प्रथम टैस्ट मैच, ब्रिसबेन, 1947–48.

7 विकटें 38 रनों पर, आर. आर. लिंडवाल (आस्ट्रेलिया), चतुर्थ टैस्ट मैच, ऐडिलेड, 1947–48.

6 विकटें 48 रनों पर, आर. टैटरसाल (इंग्लैंड), चतुर्थ टैस्ट मैच, कानपुर, 1951–52.

5 विकटें 61 रनों पर, एम. जे. हिल्टन (इंग्लैंड), चतुर्थ टैस्ट मैच, कानपुर, 1951–52.

8 विकटें 31 रनों पर, एफ. एस ट्रूमैन (इंग्लैंड) तृतीय टैस्ट मैच, मेनचेस्टर, 1952.

5 विकटें 41 रनों पर, ए. वी. वेडसर (इंग्लैंड), चतुर्थ टैस्ट मैच, ओवल, 1952.

5 विकटें 48 रनों पर, एफ. एस. ट्रूमैन (इंग्लैंड), चतुर्थ टैस्ट मैच, ओवल, 1952.

5 विकटें 52 रनों पर
और
7 विकटें 42 रनों पर } फजल महमूद (पाकिस्तान), द्वितीय टैस्ट मैच, लखनऊ, 1952.

5 विकटें 26 रनों पर, एस. रामाधीन (वेस्ट इंडीज), द्वितीय टैस्ट मैच, ब्रिजटाउन, 1953.

5 विकटें 74 रनों पर, एफ. किंग (वेस्ट इंडीज), तृतीय टैस्ट मैच, पोर्ट ऑफ स्पेन, 1953.

5 विकटें 127 रनों पर, ए. एल. वैलेंटाइन (वेस्ट इंडीज), चतुर्थ टैस्ट मैच, जार्जटाउन, 1953.

5 विकटें 64 रनों पर, ए. एल. वैलेंटाइन (वेस्ट इंडीज), पंचम टैस्ट मैच, किंग्सटन 1953.

6 विकटें 67 रनों पर, महमूद हुसैन (पाकिस्तान), प्रथम टैस्ट मैच, ढाका, 1954–55.

5 विकटें 74 रनों पर, खान मोहम्मद (पाकिस्तान), द्वितीय टैस्ट मैच, बहावलपुर, 1954–55.

5 विकटें 72 रनों पर, खान मोहम्मद (पाकिस्तान), पंचम टैस्ट मैच, कराची, 1954–55.

7 विकटें 72 रनों पर, आर. बेनू (आस्ट्रेलिया), प्रथम टैस्ट मैच, मद्रास, 1956.

7 विकटें 43 रनों पर, आर. आर. लिंडवॉल (आस्ट्रेलिया), प्रथम टैस्ट मैच, मद्रास, 1956.

6 विकटें 52 रनों पर
और
5 विकटें 53 रनों पर } आर. बेनू (आस्ट्रेलिया), द्वितीय टैस्ट मैच, कलकत्ता, 1956.

6 विकटें 50 रनों पर
और
5 विकटें 76 रनों पर } डब्लू. हॉल (वेस्ट इंडीज), द्वितीय टैस्ट मैच, कानपुर, 1958–59.

6 विकटें 55 रनों पर, आर. गिलक्रिस्ट (वेस्ट इंडीज), तृतीय टैस्ट मैच, कलकत्ता, 1958–59.

5 विकटें 90 रनों पर, ओ. जी. स्मिथ (वेस्ट इंडीज), पंचम टैस्ट मैच, दिल्ली, 1958–59.

5 विकटें 31 रनों पर, जे. बी. स्टेथम (इंग्लैंड), प्रथम टैस्ट मैच, नौटिंघम, 1959.

5 विकटें 35 रनों पर, टी. ग्रीनहफ (इंग्लैंड), द्वितीय टैस्ट मैच, लार्ड्स, 1959.

5 विकटें 76 रनों पर, आर. बेनू (आस्ट्रेलिया), प्रथम टैस्ट मैच, दिल्ली, 1959-60.

5 विकटें 31 रनों पर और 7 विकटें 93 रनों पर } ए. के. डेविडसन (आस्ट्रेलिया), द्वितीय टैस्ट मैच, कानपुर, 1959-60.

5 विकटें 43 रनों पर, आर. बेनू (ग्रास्ट्रेलिया), चतुर्थ टैस्ट मैच, मद्रास, 1959-60.

5 विकटें 129 रनों पर, महमूद हुसैन (पाकिस्तान), प्रथम टैस्ट मैच, बम्बई, 1960-61.

5 विकटें 121 रनों पर, हसीब एहसान (पाकिस्तान), द्वितीय टैस्ट मैच, कानपुर, 1960-61.

5 विकटें 26 रनों पर, फजल महमूद (पाकिस्तान), तृतीय टैस्ट मैच, कलकत्ता, 1960-61.

6 विकटें 202 रनों पर, हसीब एहसान (पाकिस्तान), चतुर्थ टैस्ट मैच, मद्रास, 1960-61.

5 विकटें 67 रनों पर, डी. ए. ऐलन (इग्लैंड), चतुर्थ टैस्ट मैच, कलकत्ता, 1961-62.

6 विकटें 65 रनों पर, जी. ए. ग्रार. लॉक (इंग्लैंड), पंचम टैस्ट मैच, मद्रास, 1961-62.

6 विकटें 49 रनों पर, डब्लू. हॉल (वेस्ट इंडीज), द्वितीय टैस्ट मैच, किंग्स्टन, 1962.

8 विकटें 38 रनों पर, एल. गिब्स (वेस्ट इंडीज), तृतीय टैस्ट मैच, ब्रिजटाउन, 1962.

5 विकटें 20 रनों पर, डब्लू. हॉल (वेस्ट इंडीज), चतुर्थ टैस्ट मैच, पोर्ट ऑफ स्पेन, 1962.

5 विकटें 46 रनों पर, एल. किंग (वेस्ट इंडीज), पंचम टैस्ट मैच, किंग्स्टन, 1962.

5 विकटें 116 रनों पर, एफ. जे. टिटमस (इंग्लैंड), प्रथम टैस्ट मैच, मद्रास, 1964.

5 विकटें 73 रनों पर, जे. एस. ई. प्राइस (इंग्लैंड), तृतीय टैस्ट मैच, कलकत्ता, 1964.

6 विकटें 73 रनों पर, एफ. जे. टिटमस (इंग्लैंड), पंचम टैस्ट मैच, कानपुर, 1964.

6 विकटें 56 रनों पर, जी. मैकेंजी (आस्ट्रेलिया), प्रथम टैस्ट मैच, मद्रास, 1964.

5 विकटें 86 रनों पर, बी. आर. टेलर (न्यूजीलैण्ड), द्वितीय टैस्ट मैच, कलकत्ता, 1965.

5 विकटें 26 रनों पर, बी. आर. टेलर (न्यूलीलैण्ड), तृतीय टैस्ट मैच, बम्बई, 1965.

एक टैस्ट मैच में 100 रन देने पर भी विकेट न ले सकने वाले गेंदबाज

भारत की ओर से :

सी. टी. सरवटे, वि० आस्ट्रेलिया, चतुर्थ टैस्ट मैच, ऐडिलेड, 1947-48, ...ओवर 22, मे. ओ. 1, रन 121.

सी. आर. रंगाचारी, वि० वेस्ट इंडीज, द्वितीय टैस्ट मैच, बम्बई, 1948-49, ...ओवर 34, मे. ओ. 1, रन 148.

आर. जी. नाडकर्णी, वि० न्यूजीलैण्ड, तृतीय टैस्ट मैच, दिल्ली, 1955-56, ...ओवर 54, मे. ओ. 13, रन 132.

डी. जी. फडकर, वि० वेस्ट इंडीज, तृतीय टैस्ट मैच, कलकत्ता, 1958-59, ...ओवर 43, मे. ओ. 6, रन 173.

वीनू मांकड, वि० वेस्ट इंडीज, पंचम टैस्ट मैच, दिल्ली, 1958-59,...ओवर 55, मे. ओ. 12 रन 167.

एस. पी. गुप्ते, वि० वेस्ट इंडीज, पंचम टैस्ट मैच, दिल्ली, 1958-59, ...ओवर 60, मे. ओ. 16, रन 144.

भारत के विरुद्ध :

जे. डी. गोडार्ड (वेस्ट इंडीज), पंचम टैस्ट मैच, बम्बई, 1948-49, ...ओवर 27, मे. ओ. 1, रन 116.

एफ. रिगवे (इंग्लैंड), द्वितीय टैस्ट मैच, बम्बई, 1951-52, ...ओवर 32, मे. ओ. 5, रन 137.

फजल महमूद (पाकिस्तान), तृतीय टैस्ट मैच, बम्बई, 1952, ...ओवर 39, मे. ओ 10, रन 111.

डी. स्मिथ (इंग्लैण्ड), द्वितीय टैस्ट मैच, कानपुर, 1961-62, ...ओवर 44, मे. ओ. 11, रन 111.

जे. बी. मार्टीमोर (इंग्लैण्ड), प्रथम टैस्ट मैच, मद्रास, 1964, ...ओवर 38, मे. ओ. 7, रन 110.

एफ. जे. टिटमस (इंग्लैंड), चतुर्थ टैस्ट मैच, दिल्ली, 1964, ओवर 43, मे. ओ. 12, रन 105.

टैस्ट मैच की दोनों पारियों में 100 से अधिक रन देने वाले गेंदबाज

एस. पी. गुप्ते, भारत वि० वेस्ट इंडीज, द्वितीय टैस्ट मैच, कानपुर, 1958-59

ओवर	मे.ओ.	रन	विकेट
34·3	11	102	9
23	2	121	1

डब्लू. फरगुसन, वेस्ट इंडीज वि० भारत, द्वितीय टैस्ट मैच, बम्बई, 1948-49

ओवर	मे.ओ.	रन	विकेट
57	8	126	4
39	14	105	1

एफ. जे. टिटमस, इंग्लैंड वि० भारत, चतुर्थ टैस्ट मैच, दिल्ली, 1964.

ओवर	मे.ओ.	रन	विकेट
49	15	100	3
43	12	105	0

टैस्ट मैच की एक पारी में सबसे अधिक 'ओवर' (70 या अधिक)

भारत की ओर से :

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
वीनू मांकड, वि० वेस्ट इंडीज, पंचम टैस्ट, किंग्स्टन, 1953	82	17	228	5
एस. पी. गुप्ते, वि० न्यूजीलैंड, प्रथम टैस्ट, हैदराबाद, 1955-56.	76·4	35	128	7
वीनू मांकड, वि० इंग्लैंड, प्रथम टैस्ट, दिल्ली, 1951-52.	76	47	58	4
वीनू मांकड, वि० वेस्ट इंडीज, द्वितीय टैस्ट, बम्बई, 1948-49	75	16	202	3
एस. पी. गुप्ते, वि० पाकिस्तान, तृतीय टैस्ट, लाहौर, 1954-55.	73·5	32	133	5
एस. जी. शिन्दे, वि० इंग्लैंड, प्रथम टैस्ट, दिल्ली, 1951-52. ...	73	27	162	2
वीनू मांकड, वि० इंग्लैंड, द्वितीय टैस्ट, लार्ड्स, 1952. ...	73	24	196	5
सलीम दुर्रानी, वि० वेस्ट इंडीज, द्वितीय टैस्ट, किंग्स्टन, 1962. ...	70	14	173	2

भारत के विरुद्ध : (60 या अधिक)

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
हसीब एहसान (पाकिस्तान), चतुर्थ टैस्ट, मद्रास, 1960-61	84	19	202	6
ए. एल. वैलेंटाइन (वेस्ट इंडीज), पंचम टैस्ट, किंग्स्टन, 1953	67	22	149	4
फजल महमूद (पाकिस्तान), पंचम टैस्ट, कलकत्ता, 1952-53	64	19	141	4
फजल महमूद (पाकिस्तान), द्वितीय टैस्ट, बहावलपुर, 1954-55. ...	62.5	23	86	4
एफ. जे. टिटमस (इंग्लैंड), पंचम टैस्ट, कानपुर, 1964.	60	37	73	6

एक टैस्ट मैच में 100 'ओवर' से अधिक गेंदबाजी

भारत की ओर से :

	ओ.	मे.ओ.	रन.	विकेट
वीनू मांकड, वि० पाकिस्तान, चतुर्थ टैस्ट, पेशावर, 1954-55	115·1	60	135	6
वीनू मांकड, वि० इंग्लैंड, द्वितीय टैस्ट, लार्ड्स, 1952.	115	36	231	5
वेंकटराघवन, वि० न्यूजीलैंड, चतुर्थ टैस्ट, दिल्ली, 1965.	112·3	57	152	12
एस. पी. गुप्ते, वि० पाकिस्तान, तृतीय टैस्ट, लाहौर, 1954-55 ···	110·2	43	167	7
वीनू मांकड, वि० वेस्टइंडीज, पंचम टैस्ट, किंग्स्टन, 1953 ····	104	28	254	6

भारत के विरुद्ध किसी भी गेंदबाज ने एक टैस्ट मैच में 100 'ओवर' गेंदबाजी नहीं की

'मेडन ओवर'

भारत के गेंदबाजों में सबसे कम रन आर. जी. नाडकर्णी ने सन् 1964 में इंग्लैंड के विरुद्ध मद्रास में खेले गये प्रथम टैस्ट मैच में दिये। उनके आंकड़े इस प्रकार हैं :

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
प्रथम पारी	32	27	5	0
द्वितीय पारी	6	4	6	2

एक टैस्ट पारी में सबसे अधिक गेंदबाजों का प्रयोग

भारत की ओर से :

प्रथम टैस्ट मैच, वि० इंग्लैंड, 1964, द्वितीय पारी में :

1. वी. वी. रंजने
2. एम. एल. जयसिम्हा
3. सी. जी. बोर्डे
4. सलीम दुर्रानी
5. आर. जी. नाडकर्णी
6. कृपालसिंह
7. वी. एल. मांजरेकर
8. वी. मेहरा
9. पटौदी के नवाब
10. डी. एन. सरदेसाई

भारत के विरुद्ध :

पंचम टैस्ट मैच, इंग्लैंड की ओर से, कानपुर, 1964 द्वितीय पारी में

1. जे. एस. ई. प्राइस
2. वी. आर. नाइट
3. एफ. जे. टिटमस
4. जे. वी. मार्टीमोर
5. डी. विलसन
6. पी. एच. पारफिट
7. जे. एच. एडरिच
8. जे. वी. बोलस
9. जे. एम. पार्क्स
10. एम. सी. काउड्री

केवल एक ही उदाहरण है जबकि एक टीम के सभी खिलाड़ियों ने एक टैस्ट मैच में गेंदबाजी की। इंग्लैंड और आस्ट्रेलिया के बीच सन् 1884 में खेले गये तृतीय टैस्ट मैच में इंग्लैंड की ओर से निम्नलिखित खिलाड़ियों ने गेंदबाजी की :

1. डब्लू. जी. ग्रेस
2. डब्लू. एच. स्कोटन
3. डब्लू. बार्न्स
4. ए. श्रूसबरी
5. ए. जी. स्टील

6. जी. यूलिएट
7. आर. जी. बारलो
8. लार्ड हैरिस
9. ए. लिटिलटन
10. एम. डब्लू. रीड
11. ई. पीट

इस टीम के विकेट-रक्षक ए. लिटिलटन ने सबसे उत्तम गेंदबाजी की और 19 रन देकर 4 विकटें ली। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका। रन संख्या इस प्रकार रही : आस्ट्रेलिया 551, इंग्लैंड 346 और 2 विकटों पर 85 रन।

विकेट–रक्षण

विकेट-रक्षक		टैस्ट मैच खेले	कैच	स्टम्प	कुल शिकार
एन. एस. तम्हाने	....	21	35	16	51
पी. सेन	....	14	19	11	30
बी. के. कुन्दरन	....	13	18	8	26
पी. जी. जोशी	....	12	17	9	26
एफ, एम. इंजीनियर	....	11	15	1	16
डी. डी. हिंडलेकर	....	4	3	0	3
दिलावर हुसैन	....	3	6	1	7
एम. के. मंत्री	....	3	6	1	7
इन्द्रजीत सिंह	....	3	5	3	8
जे. जी. नवले	...	2	1	0	1
जे. के. ईरानी	....	2	1	1	2
ई. एस. माका	....	2	2	1	3
के. आर. मेहरोमजी	....	1	1	0	1
वी. एल. मांजरेकर	....	1	0	1	1
राजेन्द्रनाथ	....	1	1	3	4
सी. टी. पाटणकर	....	1	3	1	4

वेस्ट इंडीज के विरुद्ध बम्बई में 1948-49 में खेले गये पंचम टैस्ट मैच में अमरनाथ ने पी. सेन के स्थान पर विकेट-रक्षण किया और पांच बल्लेबाजों को लपक लिया।

वेस्ट इंडीज के विरुद्ध पोर्ट ऑफ स्पेन में 1953 में खेले गये तृतीय टैस्ट मैच में वी. एल. मांजरेकर ने ई. एस. माका के स्थान पर विकेट-रक्षण किया और दो बल्लेबाजों को लपक लिया और एक को स्टम्प आउट किया।

विकेट-रक्षक की एक टैस्ट मैच में सबसे अधिक सफलता :

एन. एस. तम्हाने : 5 कं. और 1 स्ट., वि० पाकिस्तान, पंचम टैस्ट मैच, कराची, 1954-55.

विकेट-रक्षक की एक टैस्ट शृंखला में सबसे अधिक सफलता :

एन. एस. तम्हाने : 12 कं. और 7 स्ट. वि० पाकिस्तान, पाकिस्तान में, 1954-55.

क्षेत्र-रक्षण

एक क्षेत्र-रक्षक द्वारा एक टैस्ट शृंखला में सबसे अधिक कैच :

8, पी. आर. उमरीगर द्वारा, वि० न्यूजीलैंड, 1955-56.

एक क्षेत्र-रक्षक द्वारा अपने क्रिकेट जीवन काल में सबसे अधिक कैच :

33, वीनू मांकड द्वारा ।

अनौपचारिक टैस्ट मैच

(परिणामों का सार)

महाराजा पटियाला की आस्ट्रेलियाई टीम

1935-36

खिलाड़ियों के नाम

1. जे. राइडर (कप्तान)
2. सी. जी. मैकार्टनी (उप-कप्तान)
3. एच. एच. अलेक्जेंडर
4. ए. एच. ऑलसॉप
5. ओ. डब्लू. बिल
6. एफ. जे. ब्रायंट
7. जे. एल. ऐलिस
8. एच. एल. हेंड्री
9. एच. आइरनमोंगर
10. टी. डब्लू. लेदर
11. एच. एस. लव
12. एफ. मेयर
13. आर. ओ. मौरिसबी
14. एल. ई. नेगल
15. आर. के. ओक्सनहम
16. एफ. टारेंट
17. एफ. वार्न

मैच खेले 4, जीते 2, हारे 2

प्रथम टैस्ट मैच : बम्बई में, दिसम्बर 5, 6 और 7, 1935 को।

भारत : 163 (पटियाला युवराज 40, मेयर ने 50 रन देकर 6 विकटें ली) और 163 (अमरनाथ 41, आइरनमोंगर ने 70 रन देकर 5 विकटें ली, ओक्सनहम ने 27 रन देकर 3 विकटें ली)। आस्ट्रेलिया की टीम: 268 (राइडर 104, मौरिसबी 67, निसार ने 72 रन देकर 6 विकटें ली) और एक विकेट पर 59 रन। आस्ट्रेलियाई टीम नौ विकटों से जीती।

द्वितीय टैस्ट मैच : कलकत्ता में, दिसम्बर 30, जनवरी 1, 2 और 3, 1936 को।

भारत : 48 (मैकार्टनी ने 17 रन देकर 5 विकटें ली, ओक्सनहम ने 17 रन देकर 5 विकटें ली) और 127 (लिदर ने 29 रन देकर 5 विकटें ली, मैकार्टनी ने 42 रन देकर 3 विकटें ली)। आस्ट्रेलियाई टीम : 99 (निसार ने 35 रन देकर 6 विकटें ली, बाका जिलानी ने 23 रन देकर 3 विकटें ली) और 2 विकटों पर 80 (डब्लू. बिल 45*)। आस्ट्रेलियाई टीम ने आठ विकटो से मैच जीता।

तृतीय टैस्ट मैच : लाहौर में, जनवरी 10, 11, 12 और 13, 1936 को।

भारत : 149 (वजीर अली 76, नेगल ने 72 रन देकर 4 विकटें ली, लेदर ने 38 रन देकर 3 विकटें ली) और 301 (वजीर अली 92, एस. एन. बनर्जी 70, लेदर ने 102 रन देकर 5 विकटें ली)। आस्ट्रेलियाई टीम : 166 (अमीर इलाही ने 15 रन देकर 3 विकटें ली, निसार ने 72 रन रन देकर 4 विकटें ली) और 216 (राइडर 70, बाका जिलानी ने 16 रन देकर 4 विकटें ली, निसार ने 80 रन देकर 4 विकटें ली)। भारत ने 68 रनों से मैच जीता।

चौथा टैस्ट मैच : मद्रास में, फरवरी 6, 7, 8 और 9, 1936 को।

भारत : 189 (अमरसिंह 45, मुश्ताक अली 43, मैकार्टनी ने 52 रन देकर 3 विकटें ली) और 113 (मैकार्टनी ने 41 रन देकर 6 विकटें ली, लेदर ने 32 रन देकर 3 विकटें ली)। आस्ट्रेलियाई टीम : 162 (मेयर 48, अमरसिंह ने 54 रन देकर 5 विकटें ली, निसार ने 61 रन देकर 5 विकटें ली) और 107 (राइडर 41, निसार ने 36 रन देकर 6 विकटें ली)। भारत ने 33 रनों से मैच जीता।

लार्ड टेनीसन की टीम, 1937-38

खिलाड़ियों के नाम :

1. लार्ड टेनीसन (कप्तान)
2. टी. ओ. जेमसन
3. डब्लू. ऐडरिच

4. जे. हार्डस्टाफ
5. पी. ए. गिब
6. जेम्स लैंग्रिज
7. टी. एस. वर्दींगटन
8. एच. पार्क्स
9. एन. डब्लू. डी. यार्डली
10. ए. डब्लू. वैलार्ड
11. आई. ए. आर. पीवल्स
12. जी. एच. पोप
13. पी. स्मिथ
14. ए. आर. गोवर
15. एन. मैक्कोरकेल

मैच खेले 5, जीते 3, हारे 2

प्रथम टैस्ट मैच : लाहौर में नवम्बर 13, 14, 15 और 16, 1937 को।

भारत : 121 (पटियाला के युवराज 41 गोवर ने 40 रन देकर 6 विकटें ली, वैलार्ड ने 39 रन देकर 3 विकटें ली) और 199 (अमरनाथ 44, गोवर ने 66 रन देकर 4 विकटें ली, स्मिथ ने 34 रन देकर 3 विकटें ली)। लार्ड टेनीसन एकादश: 207 (यार्डली 96, ऐडरिच 54, अमरसिंह ने 69 रन देकर 4 विकटें ली) और एक विकट पर 114 (ऐडरिच 50*)। लार्ड टेनीसन एकादश ने नौ विकटों से मैच जीता।

द्वितीय टैस्ट मैच : बम्बई में, दिसम्बर 11, 12, 13 और 14, 1937 को।

भारत : 153 (गोवर ने 46 रन देकर 5 विकटें ली, वैलार्ड ने 30 रन देकर 3 विकटें ली) और 208 (मांकड 88, गोवर ने 88 रन देकर 5 विकटें ली, वैलार्ड ने 61 रन देकर 4 विकटें ली)। लार्ड टेनीसन एकादश: 191 (पार्क्स 44, ऐडरिच 42, एस. एन. बनर्जी ने 47 रन देकर 3 विकटें ली) और 4 विकटों पर 171 (ऐडरिच 86*, वर्दींगटन 49*)। लार्ड टेनीसन एकादश ने छह विकटो से मैच जीता।

तृतीय टैस्ट मैच : कलकत्ता में, दिसम्बर 31, जनवरी 1, 2 और 3, 1938 को।

भारत : 350 (अमरनाथ 123, मुश्ताक अली 101, मांकड 55, पोप ने 70 रन देकर 5 विकटें ली, गोवर ने 93 रन देकर 4 विकटें ली) और 192 (हिंडलेकर 60, मुश्ताक अली 55, वैलार्ड ने 67 रन देकर 4 विकटें

---

* अपराजित

ली, लैंग्रिज ने 67 रन देकर 4 विकटें ली)। लार्ड टेनीसन एकादश : 257 (हार्डस्टाफ 59, पोप 41*, निसार ने 79 रन देकर 5 विकटें लीं, अमरसिंह ने 65 रन देकर 3 विकटें ली) और 192 (हार्डस्टाफ 49, मांकड ने 47 रन देकर 4 विकटें ली, अमरसिंह ने 76 रन देकर 4 विकटें ली)। भारत ने 93 रनों से मैच जीता।

चौथा टेस्ट मैच : मद्रास में, फरवरी 5, 6, और 7, 1938 को।

भारत : 263 (मांकड 113*, डी. आर. हावेवाला 44, पोप ने 51 रन देकर 5 विकटें ली)। लार्ड टेनीसन एकादश: 94 (अमरसिंह ने 56 रन देकर 5 विकटें ली, मांकड ने 18 रन देकर 3 विकटें ली) और 163 (वेलार्ड 40, अमरसिंह ने 58 रन देकर 6 विकटें ली, मांकड ने 55 रन देकर 3 विकटें ली)। भारत ने एक पारी और छह रनों से मैच जीता।

पांचवां टेस्ट मैच : बम्बई में, फरवरी 12, 13 और 14, 1938 को।

लार्ड टेनीसन एकादश: 130 (अमरसिंह ने 47 रन देकर 5 विकटें ली) और 288 (वर्दींगटन 68, ऐडरिच 56, पोप 49, अमरसिंह ने 95 रन देकर 4 विकटें ली, मांकड ने 49 रन देकर 3 विकटें लीं)। भारत : 131 (पोप ने 49 रन देकर 5 विकटें ली, वेलार्ड ने 59 रन देकर 4 विकटें ली) और 131 (मांकड 57, वेलार्ड ने 58 रन देकर 5 विकटें ली, पोप ने 28 रन देकर 3 विकटें ली। लार्ड टेनीसन एकादश ने 156 रनों से मैच जीता।

आस्ट्रेलिया की सेना की टीम, 1945

खिलाड़ियों के नाम :

1. ए. एल. हैसेट (कप्तान)
2. के. आर. मिलर
3. डी. के. कारमोडी
4. सी. जी. पैपर
5. जे. पैंटीफोर्ड
6. आर. एम. स्टेनफोर्ड
7. आर. एस. ह्विटिंगटन
8. डी. ब्रीमनर
9. ए. डब्लू. रोपर
10. जे. ए. वर्कमैन
11. आर. एस. ऐलिस
12. एस जी. सिसमैन
13. सी. एफ. प्राइस
14. डी. क्रिस्टोफेनी
15. ई. ए. विलियम्स

मैच खेले 3, हारे 1, दो मैचों में निर्णय नहीं हो सका।

---

* अपराजित

प्रथम टैस्ट मैच : बम्बई में, नवम्बर 10, 11, 12 और 13, 1945 को।

आस्ट्रेलियाई टीम : 531 (पैटीफोर्ड 124, कारमोडी 113, पैपर 95, वर्कमैन 76, हजारे ने 109 रन देकर 5 विकटें ली, सी. एस. नायडू ने 141 रन देकर 3 विकटें ली) और 1 विकेट पर 31 रन। भारत : 339 (हजारे 75, अमरनाथ 64) और 304 (मर्चेंट 69, अमरनाथ 50, गुल मोहम्मद 48, प्राइस ने 54 रन देकर 3 विकटें ली, पैपर ने 90 रन देकर 3 विकटें ली)। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

द्वितीय टैस्ट मैच : कलकत्ता में, नवम्बर 26, 27 और 28, 1945 को।

भारत : 388 (मांकड 78, मोदी 75, हजारे 65, पैपर ने 120 रन देकर 4 विकटें ली) और 4 विकटों पर 350 और पारी समाप्ति की घोषणा (मर्चेंट 155*, कारदार 86*, अमरनाथ 48, पैपर ने 94 रन देकर 3 विकटें ली)। आस्ट्रेलियाई टीम : 472 (व्हिटिंगटन 155, पैटीफोर्ड 101, मिलर 82, मांकड ने 147 रन देकर 4 विकटें ली) और 2 विकटों पर 49 रन। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

तृतीय टैस्ट मैच : मद्रास में, दिसम्बर 7, 8, 9 और 10, 1945 को।

आस्ट्रेलियाई टीम : 339 (हैसेट 143, पैपर 87, एस. एन. बनर्जी ने 86 रन देकर 4 विकटें ली, सरवटे ने 94 रन देकर 4 विकटें ली) और 275 (कारमोडी 92, व्हिटिंगटन 67, बनर्जी ने 82 रन देकर 4 विकटें ली, सरवटे ने 113 रन देकर 4 विकटें ली)। भारत : 525 (मोदी 203, अमरनाथ 113, सी. एस. नायडू 64, गुलमोहम्मद 55, पैपर ने 118 रन देकर 4 विकटें ली) और 4 विकटों पर 92 रन। भारत छह विकटों से विजयी।

भारत में प्रथम राष्ट्र मण्डल क्रिकेट टीम, 1949–50

खिलाड़ियों के नाम :

1. एल. लिविंगस्टन (आस्ट्रेलिया)..............कप्तान
2. एफ. डब्लू. फ़ियर (आस्ट्रेलिया)...............उपकप्तान
3. जी. डॉक्स (इंग्लैंड)
4. डब्लू. ऐले (आस्ट्रेलिया)
5. डी. फिट्ज़मौरिस (आस्ट्रेलिया)
6. जे. के. होल्ट (वेस्ट इंडीज)
7. एच. लैंमबर्ट (आस्ट्रेलिया)
8. एफ. एम. वॉरेल (वेस्ट इंडीज)

---

* अपराजित

9. डब्लू. लैंगडन (आस्ट्रेलिया)
10. एन. ओल्डफील्ड (इंग्लैंड)
11. जे. पैटीफोर्ड (आस्ट्रेलिया)
12. सी. जी. पैपर (आस्ट्रेलिया)
13. डब्लू. प्लेस (इंग्लैंड)
14. जी. एच. पोप (इंग्लैंड)
15. आर. स्मिथ (इंग्लैंड)
16. जी. ट्राइब (आस्ट्रेलिया)
जी. डकवर्थ (इंग्लैंड) प्रबन्धक

टैस्ट मैच खेले : 5, जीता 1, हारे 2, दो मैचों में हार-जीत का निर्णय नही हो सका ।

प्रथम टैस्ट मैच : दिल्ली में, नवम्बर 11, 12, 13, 14 और 15, 1949 को ।

राष्ट्रमण्डल टीम : 8 विकटों पर 608 और पारी समाप्ति की घोषणा (ओल्डफील्ड 151, लिविंग्स्टन 123, पैटीफोर्ड 65*, वॉरेल 58, फ्रियर 51) और 1 विकेट पर 12 रन । भारत : 291 (फडकर 110, अधिकारी 74, पैपर ने 57 रन देकर 4 विकटें ली) और 327 (हज़ारे 140, उमरीगर 55, मंत्री 54, अधिकारी 44*, ट्राइब ने 65 रन देकर 4 विकटें ली) । राष्ट्रमण्डल टीम नौ विकटों से विजयी हुई ।

द्वितीय टैस्ट मैच : बम्बई में, दिसम्बर 16, 17, 18, 19 और 20, 1949 को ।

राष्ट्रमण्डल टीम : 448 (फ्रियर 132, ओल्डफील्ड 110, वॉरेल 78, पैटीफोर्ड 72, मोदी ने 50 रन देकर 3 विकटें ली) और 3 विकटों पर 110 (ऐले 51*) । भारत : 289 (फडकर 78*, मर्चेन्ट 78, मोदी 58, लैमबर्ट ने 76 रन देकर 4 विकटें ली, फ्रियर ने 89 रन देकर 4 विकटें ली) और 8 विकटों पर 430 और पारी समाप्ति की घोषणा (मर्चेन्ट 94, अधिकारी 93, उमरीगर 67, हज़ारे 64, मोदी 51) । मैच में हार-जीत का फैसला नही हो सका ।

तृतीय टैस्ट मैच : कलकत्ता में, दिसम्बर 30, 31 और जनवरी 1, 2 और 3, 1950 को ।

भारत : 422 (हज़ारे 175*, मांकड 91, ट्राइब ने 144 रन देकर 5 विकटें ली) और तीन विकटों पर 117 (मुश्ताक अली 45) । राष्ट्रमण्डल टीम : 190 (चौधुरी ने 56 रन देकर 4 विकटें ली, फडकर ने 50 रन

* अपराजित

देकर 3 विकटें ली) और 348 (ओल्डफील्ड 158, लिविंग्स्टन 59, सी. एस. नायडू ने 59 रन देकर 5 विकटें ली) । भारत सात विकटों से विजयी ।

चतुर्थ टैस्ट मैच : कानपुर में, जनवरी 14, 15, 16, 17 और 18, 1950 को ।

राष्ट्रमण्डल टीम : 448 (वॉरेल 223*, लिविंग्स्टन 80, ट्राइब 61, हजारे ने 59 रन देकर 3 विकटें ली) और तीन विकटों पर 237 और पारी समाप्ति की घोषणा (वॉरेल 83*, लिविंग्स्टन 81) । भारत : 386 (मुश्ताक अली 129, फडकर 61, अधिकारी 61, ट्राइब ने 122 रन देकर 5 विकटें ली, वॉरेल ने 42 रन देकर 3 विकटें ली) और 4 विकटों पर 84 रन (हजारे 41*) । मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका ।

पाँचवां टैस्ट मैच : मद्रास में, फरवरी 17, 18, 19, 20 और 21, 1950 को ।

राष्ट्रमण्डल टीम : 324 (वॉरेल 161, फडकर ने 89 रन देकर 4 विकटें ली) और 247 (होल्ट 84*, फडकर ने 28 रन देकर 3 विकटें ली, चौधुरी ने 70 रन देकर 3 विकटें ली) । भारत : 313 (हजारे 77, किशनचन्द 72, फिट्जमॉरिस ने 40 रन देकर 3 विकटें ली, ट्राइब ने 90 रन देकर 4 विकटें ली) और सात विकटों पर 261 (हजारे 84, उमरीगर 59, मुश्ताक अली 42*) । भारत तीन विकटों से विजयी हुआ ।

भारत में द्वितीय राष्ट्रमण्डल क्रिकेट टीम 1950-51.

खिलाड़ियों के नाम :

1. एल. ई. जी. ऐम्स (इंगलैंड) कप्तान
2. एफ. एम. वॉरेल (वैस्ट इंडीज) उप कप्तान
3. ए. टी. बारलो (इंगलैंड)
4. बी. डूलैण्ड (आस्ट्रेलिया)
5. आर. आर. डोवे (इंगलैंड)
6. जी. एम. एमेट (इंगलैंड)
7. एल. बी. फिशलॉक (इंगलैंड)
8. एच. गिम्बलेट (इंगलैंड)
9. के. ग्रीव्ज (आस्ट्रेलिया)
10. जे. टी. आइकिन (इंगलैंड)
11. एल. जैकसन (इंगलैंड)
12. जे. सी. लेकर (इंगलैंड)

---

* अपराजित

13. के. टी. रामादीन (वेस्ट इंडीज)
14. एफ. रिगवे (इंगलैंड)
15. डी. शेकल्टन (इंगलैंड)
16. एच. स्टीफेनसन (इंगलैंड)
17. आर. टी. स्पूनर (इंगलैंड)
18. डब्लू. एच. एच. सटक्लिफ (इंगलैंड)
19. जी. ट्राइब (ग्रास्ट्रेलिया)
जी. डकवर्थ (इंगलैंड) प्रबन्धक

टैस्ट मैच खेले : 5, जीते 2, तीन में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

प्रथम टैस्ट मैच : दिल्ली में, नवम्बर 4, 5, 6, 7 और 8, 1950 को।

भारत : 169 (फडकर 41, रामादीन ने 44 रन देकर 4 विकटें ली, ट्राइब ने 47 रन देकर 3 विकटें ली) और 6 विकटों पर 429 और पारी समाप्ति की घोषणा (हजारे 144*, मुश्ताक अली 61, अधिकारी 56, उमरीगर 56, मर्चेंट 48)। राष्ट्रमण्डल टीम : 272 (बी. डूलैण्ड 108, एमेट 55, मांकड ने 66 रन देकर 4 विकटें ली, चौधुरी ने 82 रन देकर 3 विकटें ली) और एक विकेट पर 214 (फिशलॉक 102*, ग्रिम्बलेट 63, एमेट 43*.)। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

द्वितीय टैस्ट मैच : बम्बई में, दिसम्बर 1, 2, 3, 4 और 5, 1950 को।

भारत : 82 (रिगवे ने 16 रन देकर 4 विकटें ली, लेकर ने 32 रन देकर 3 विकटें ली) और 393 (उमरीगर 130, हजारे 115, मर्चेंट 62, लेकर ने 88 रन देकर 5 विकटें ली)। राष्ट्रमण्डल टीम : 427 (ग्रीव्ज 89, आइकिन 77, स्पूनर 62*, वॉरेल 55, वी. सी. अल्वा ने 70 रन देकर 3 विकटें ली, सी. एस. नायुडू ने 83 रन देकर 3 विकटें ली) और बिना विकेट खोये 49 रन। राष्ट्रमण्डल टीम दस विकटों से विजयी।

तृतीय टैस्ट मैच : कलकत्ता में, दिसम्बर 30, 31 और जनवरी 1, 2 और 3, 1951 को।

राष्ट्रमण्डल टीम : 227 (आइकिन 96*, वॉरेल 61, फडकर ने 60 रन देकर 4 विकटें ली, चौधुरी ने 37 रन देकर 3 विकटें ली) और 457 (आइकिन 111, डूलैण्ड 106, स्टीफेनसन 60*, वॉरेल 58, मांकड़ ने 102 रन देकर 4 विकटें ली)।

---

* अपराजित

भारत : सात विकटों पर 467 और पारी समाप्ति की घोषणा (हजारे 134, उमरीगर 93, सी. एस. नायुडू 54, रिगे 48, रिगवे ने 132 रन देकर 4 विकटें ली) और 1 विकेट पर 39 रन। मैच में हार–जीत का फैसला नही हो सका।

चतुर्थ टैस्ट मैच : मद्रास में, जनवरी 20, 21, 22, 23 और 24, 1951 को।

भारत : 361 (उमरीगर 110, हजारे 80, मांकड 52, वॉरेल ने 50 रन देकर 3 विकटें ली, शैकल्टन ने 79 रन देकर 3 विकटें ली) और पांच विकटों पर 302 और पारी समाप्ति की घोषणा (हजारे 75, मर्चेंट 72, फडकर 61, शैकल्टन ने 153 रन देकर 4 विकटें ली)।

राष्ट्रमण्डल टीम : 393 (आइकिन 110, एमेट 96, वॉरेल 71, फडकर ने 99 रन देकर 5 विकटें ली, मांकड ने 90 रन देकर 4 विकटें ली) और 6 विकटों पर 225 (आइकिन 86, एमेट 53, मांकड ने 75 रन देकर 3 विकटें ली)। मैच में हार–जीत का फैसला नही हो सका।

पांचवां टैस्ट मैच : कानपुर में, फरवरी 8, 9, 10, 11 और 12, 1951 को।

राष्ट्रमण्डल टीम : 413 (वॉरेल 116, ग्रोव्ज 99, हजारे ने 32 रन देकर 3 विकटें ली) और 6 विकटों पर 266 और पारी समाप्ति की घोषणा (वॉरेल 71*, आइकिन 63, एच. एल. गायकवाड ने 83 रन देकर 3 विकटें ली)।

भारत : 240 (उमरीगर 57, इलैण्ड ने 70 रन देकर 4 विकटें ली, रामादीन ने 90 रन देकर 4 विकटें ली) और 362 (मर्चेंट 107, मुश्ताक अली 80, गोपीनाथ, 66*, उमरीगर 63, रामादीन ने 102 रन देकर 5 विकटें ली) राष्ट्रमण्डल टीम 77 रनों से विजयी।

रजत जयन्ती विदेश क्रिकेट टीम, 1953–54

(सिलवर जुबली ओवरसीज क्रिकेट टीम)

खिलाड़ियों के नाम :

1. बेन बारनेट (कप्तान)
2. एफ. एम. वॉरेल
3. आर. टी. सिम्पसन
4. जी. ए. एडरिच
5. जे. ई. मैकून

---

* अपराजित

6. डब्लू. डी. वैरिक
7. जी. एम. एमेट
8. के. म्यूलमैन
9. श्रार. ई. मारशैल
10. पी. ए. गिब
11. एम. जे. लॉगटन
12. श्रार. बेरी
13. जे. एफ. क्रैप
14. डी. जी. डब्लू. फ्लेचर
15. पी. जे. लोडर
16. एम. रामादीन
17. ए. जे. वॉटकिन्स
18. श्रार. सुब्बाराव
19. जे. आइवरसन
20. सी. बारनेट

टैस्ट मैच खेले : 5, जीता 1, हारे 2, 2 में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

प्रथम टैस्ट मैच : दिल्ली में, नवम्बर 19, 20, 21, 22 और 23, 1953 को ।

भारत : 387 (रामचन्द 119, मांजरेकर 86, बेरी ने 90 रन देकर 5 विकटें ली, वॉरेल ने 62 रन देकर 4 विकटें ली) । रजत जयन्ती टीम : 198 (सिम्पसन 57, एस. पी. गुप्ते ने 91 रन देकर 8 विकटें ली) श्रौर 174 (सिम्पसन 59, वॉरेल 54, गुलाम ग्रहमद ने 52 रन देकर 6 विकटें ली, एस. पी. गुप्ते ने 82 रन देकर 4 विकटें ली) । भारत एक पारी श्रौर 15 रनों से विजयी ।

द्वितीय टैस्ट मैच : बम्बई में, दिसम्बर 3, 4, 5, 6 और 7, 1953 को ।

रजत जयन्ती टीम : 6 विकटों पर 504 और पारी समाप्ति की घोषणा (सिम्पसन 121, वैरिक 102*, मारशैल 90, लॉक्सटन 55, म्यूलमैन 50, मांकड ने 110 रन देकर 3 विकटें ली) । भारत : 152 (उमरीगर 83, लोडर ने 53 रन देकर 4 विकटें ली, वॉरेल ने 32 रन देकर 3 विकटें ली, लॉक्सटन ने 42 रन देकर 3 विकटें ली) और 5 विकटों पर 447 (मांकड 154, गडकरी 102*, गोपीनाथ 67*, हजारे 61, लोडर ने 43 रन देकर 3 विकटें ली) । मैच में हार-जीत का फैसला नही हो सका।

* अपराजित

तृतीय टैस्ट मैच : कलकत्ता में, दिसम्बर 31, जनवरी 1, 2 और 3, 1954 को।

भारत : 238 (उमरीगर 112*, वेरी ने 61 रन देकर 4 विकटें लीं, भाइवरसन ने 78 रन देकर 4 विकटें लीं) और 190 (रामचन्द 111, आईवरसन ने 47 रन देकर 6 विकटें लीं, लोडर ने 44 रन देकर 3 विकटें लीं)। रजत जयन्ती टीम : 245 (म्यूलमैन 75, एस. पी. गुप्ते ने 95 रन देकर 6 विकटें लीं, गुलाम अहमद ने 63 रन देकर 3 विकटें लीं) और 4 विकटों पर 187 रन (मारशॅल 88*, वाटकिन्स 55*)। रजत जयन्ती टीम 6 विकटों से विजयी।

चतुर्थ टैस्ट मैच : मद्रास में, जनवरी 13, 14, 15, 16 और 17, 1954 को।

भारत : नौ विकटों पर 440 और पारी समाप्ति की घोषणा (पी. रॉय 141, रामचन्द 96, केनी 65)। रजत जयन्ती टीम : 222 (म्यूलमैन 124, गुलाम अहमद ने 51 रन देकर 5 विकटें लीं, एस. पी. गुप्ते ने 96 रन देकर 4 विकटें लीं) और 168 (वॉटकिन्स 44, गुलाम अहमद ने 42 रन देकर 7 विकटें लीं, एस. पी. गुप्ते ने 92 रन देकर 3 विकटें लीं)। भारत एक पारी और 50 रनों से विजयी।

पांचवां टैस्ट : लखनऊ में, जनवरी 31, फरवरी 1, 2, 3 और 4, 1954 को।

भारत : 416 (पंजाबी 107, उमरीगर 87, फड़कर 63, मुश्ताक अली 58, आइवरसन ने 96 रन देकर 4 विकटें लीं) और 2 विकटों पर 163 और पारी समाप्ति की घोषणा (मुश्ताक अली 70*, पी. रॉय 58)। रजत जयन्ती टीम : 345 (म्यूलमैन 131, फड़कर ने 8 रन देकर 3 विकटें लीं, प्रकाश भंडारी ने 90 रन देकर 3 विकटें लीं) और तीन विकटों पर 64 रन। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

भारत में श्रीलंका की टीम, 1964-65

खिलाड़ियों के नाम

1. मिचिल टिसेरा
2. डॉ० एच. आई. के. फरनैंडो
3. अबु फाई
4. टी. सी. टी. एडवर्ड
5. सी. ई. एम. पौनैया
6. डारेल लिवर्ज
7. अनुरुद्ध पोलोनोविटा

* अपराजित

8. धनासिरी वीरसिंघे
9. मुतैया देवराजा
10. नोर्टन फ्रेडरिक
11. सिलवेस्टर डिया
12. डी. प्रेमचन्द्रा डी सिलवा
13. रनजीत फरनैंडो
14. लरीफ इदरूस
15. एल. रोडरिगो
16. नील चनमुगम
17. निसल टी. एफ. सेनारत्ने
18. स्टेनले जयसिंघे

प्रथम टैस्ट मैच : बंगलौर में, दिसम्बर 11, 12 और 13, 1964 को।

भारत : 4 विकटों पर 508 और पारी समाप्ति की घोषणा (हनुमन्तसिंह 149*, दिलीप सरदेसाई 126, अब्बास अली बेग 96, जयसिम्हं 72, पटौदी 52)। श्रीलंका: 205 (एडवर्ड 38, चन्द्रशेखर ने 56 रन देकर 5 विकटें ली) और 257 (जयसिंघे 72, चन्द्रशेखर ने 81 रन देकर 5 विकटें ली)। भारत एक पारी और 46 रनों से विजयी।

द्वितीय टैस्ट मैच : हैदराबाद में, दिसम्बर 18, 19, 20 और 21, 1964 को।

भारत : 6 विकटों पर 505 और पारी समाप्ति की घोषणा (बोर्डे 138, जयसिम्हं 131, हनुमन्तसिंह 98) और 3 विकटों पर 154 (इंजीनियर 102*)। श्री लंका : 208 (जयसिंघे 78, सूरती ने 113 रन देकर 5 विकटें ली) और 387 (टिसेरा 135, जयसिंघे 122)। भारत सात विकटों से विजयी।

तृतीय टैस्ट मैच : अहमदाबाद में, जनवरी 2, 3, 4 और 5, 1965 को।

भारत : 189 (रमेश सक्सेना 63*, जयसिंघे ने 38 रन देकर 6 विकटें ली, फ्रेडरिक ने 85 रन देकर 4 विकटें ली) और 66 (पोलोनोविटा ने 7 रन देकर 3 विकटें ली, जयसिंघे ने 14 रन देकर 3 विकटें ली, फ्रेडरिक ने 24 रन देकर 3 विकटें ली)। श्री लंका : 7 विकटों पर 141 और पारी समाप्ति की घोषणा (पोलोनोविटा 53, कुलकर्णी ने 43 रन देकर 4 विकटें ली) और 6 विकटों पर 115 (फार्ड 40, आर. गोयल ने 33 रन देकर 4 विकटें ली)। श्रीलंका चार विकटों से विजयी।

---

* अपराजित

हिज हाईनेस जाम साहिब श्री रणजीत सिंह जी विभाजी, नवानगर (1872-1933)

विश्व के महानतम और अत्यन्त लोकप्रिय क्रिकेट खिलाड़ी 'रणजी' का नाम उनके जीवन काल में ही क्रिकेट जगत की कथाओं मे प्रचलित हो गया था। उनकी बल्लेबाजी का प्रत्येक प्रहार कुशलतापूर्ण होता था। उनकी दृष्टि की तीव्रता असाधारण थी और वह तेज से तेज गेंद को भी पीट सकते थे। गेंद पीटने की फिराक में उनकी नजरें दाएँ-बाएँ घूमती रहती थी। उनकी रेशमी कमीज की बाँहों की बटने कलाइयों पर कसकर बंद रहती थी। उनका यह व्यक्तित्व क्रिकेट के इतिहास में सुविख्यात और सर्वाधिक लोकप्रिय रहा है।

उन्होने अपने क्रिकेट जीवन का प्रारंभ काठियावाड के राजकुमार कॉलेज मे किया। उनकी प्रतिभा केम्ब्रिज मे प्रकट हुई जबकि उन्होने 1893 में इंग्लैंड के प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में प्रवेश किया। वे इग्लैंड मे 1904 तक निरन्तर खेलते रहे जबकि उन्हें नवानगर के राजा के रूप में अपने पिता के उत्तराधिकार को प्राप्त करने के लिये भारत लौटना पड़ा। केम्ब्रिज 'ब्ल्यू' प्राप्त करने और केम्ब्रिजशायर की ओर से खेलने के बाद रणजी ने 1895 की मई में लार्ड्स मे ससेक्स की ओर से एम. सी. सी. के विरुद्ध अपने पहले प्रथम श्रेणी के मैच मे 77 और 150 रन बनाये।

जुलाई 1896 में जब वे पहली बार टैस्ट मे प्रविष्ट हुए तो आस्ट्रेलिया के विरुद्ध मेनचेस्टर में शानदार 154 रन बनाने के बाद भी अपराजित रहे। तीन बार उन्होने इंग्लैंड की औसत बल्लेबाजी मे प्रथम स्थान प्राप्त किया। 1896 मे प्रति पारी 57·91 रन का औसत प्राप्त किया तथा ब्राइटन मे ससेक्स की ओर से यॉर्कशायर के विरुद्ध प्रथम पारी में अपराजित 125 रन बनाकर तथा 180 रन दूसरी पारी में बनाकर एक ही दिन में एक ही मैच में दो शतक बनाने का यश प्राप्त किया। उन्होने सन् 1900 की 40 पारियों मे, 5 बार अपराजित रहकर, 3065 रन एकत्र किये, उनकी सर्वोच्च रन संख्या 275 और प्रति पारी औसत रन संख्या 87·57 रही। 1904 की 34 पारियों में 6 बार अपराजित रहकर 74·17 रन के औसत से 2077 रन बनाए। उस वर्ष उनकी सर्वोच्च रन संख्या 207 रही थी। 1899 में उनकी कुल रन संख्या 3159 रही।

रणजी 1893 से 1920 तक के सभी प्रथम श्रेणी के मैचों में 500 पारियां खेले जिनमे 62 बार अपराजित रहे, 24690 रन एकत्र किये तथा उनका प्रति पारी औसत 56·37 रन रहा। उनकी सर्वोच्च पारी सोमरसेट के विरुद्ध ससेक्स की ओर से 285 रनों की थी जो 1901 के अगस्त में टांटन में खेली गई थी। इस अपराजित पारी की एक विशेषता यह थी कि उन्होंने पूरी पिछली रात मछली पकड़ने में बिताई थी।

उन्होंने चौदह पारियों मे 200 या इससे भी अधिक रन बनाये थे और एक खेल वर्ष मे 2000 रन की संख्या को पांच बार पूरा किया। उन्होंने प्रथम श्रेणी के क्रिकेट मे 72 शतक बनाये थे। उन दिनों मे जब कि विकेट बल्लेबाजी के लिये अनुकूल नही होते थे जैसे कि आजकल होते हैं, उनकी रन संख्याएं अत्यधिक प्रभावशाली रही हैं और उनके कारण रणजी का स्थान विश्व के महानतम बल्लेबाजों में बना रहेगा।

रणजी की बल्लेबाजी की प्रशंसा करते हुए नेविल कार्डस महोदय कहते हैं, "उन्नीसवी शताब्दी मे क्रिकेट का खेल पूर्णत: इंगलिश था या यों कहिए कि विक्टोरियन था।....................यह सरल प्राथमिक सिद्धान्तों का युग था जबकि पूरी लंबी फेंकी गई गेंद को सीधे बल्ले से तेजी के साथ खेलने वाले बल्लेबाज को समादर मिल जाता था। क्रिकेट जगत में सब जगह अंग्रेजों का बोलबाला था। परन्तु एकाएक एक महान जादूगर का आविर्भाव हुआ; एक ऐसे व्यक्ति को इंग्लैंड में ऐसा क्रिकेट खेलते देखा गया जैसा शायद ही इंग्लैंड में किसी ने खेला था। सामान्य दूरी की सीधी-सादी गेंद उसके सीधे बल्ले से नही टकराती थी अपितु कलाई को जरा-सा घुमा दिया जाता था और गेंद सीधे लेग बाउंड्री पर ही दिखाई देती थी। कोई ठीक से न तो देख पाता था और न ही समझ सकता था कि यह सब कैसे हुआ। गेंदबाज बुत की तरह खड़े रहते थे या आश्चर्य चकित होकर ईश्वर की दुहाई देते थे। कार्डस आगे लिखते है—"वह (रणजी) गेंद को किसी अन्य बल्लेबाज के मुकाबले अधिक शीघ्रता से देख लेते थे और गेंद से बल्ले को काफी देर से टकराते थे, इतनी देरी से कि लॉकवुड को प्रतीत होता था कि गेंद लेगस्टम्प से टकरा जायेगी। उधर रणजी निश्चल खड़े रहते थे। पर आखिरी पल में रणजी अगले पैर पर झुकते, उनका बल्ला धूप में बिजली की तरह चमकता और गेंद विचार की गति से लेग बाउंड्री पर पहुँच जाती। लॉकवुड आश्चर्य से अपने हाथ आकाश की ओर उठा देते।

ए. एफ. नाइट ने "दि कम्पलीट क्रिकेटियर" मे रणजी के बारे में टिप्पणी करते लिखा है कि कितने भी क्षेत्र-रक्षक लेग मे खड़े कर दिये जायें रणजी के आनन्ददायक 'लेग-ग्लान्सेज' को नही रोका जा सकता था। कितने

भी क्षेत्र-रक्षक 'स्लिप्स' में खड़े हों किन्तु उनकी 'लेट-कटिंग' के कुशल और सहज प्रवाह को नहीं रोका जा सकता है। उनका 'ड्राइव' बहुत खूबसूरत होता था और अपनी ओर से तीव्रता लाने के लिए वे अक्सर अपने पांवों का उपयोग करते थे। उनमें इतनी स्वाभाविक फुर्ती थी कि दुविधा में पड़ने के बाद भी वे जो स्ट्रोक लगाते थे वह पूर्ण निर्दोष होता था। वे उस गेंद को इस तरह खेलते थे मानों वह एक सीधी सपाट गेंद हो।

दूसरे महान् बल्लेबाज भी रणजी के साथ विकेट पर साधारण दिखाई देते थे। वह सर्वोच्चता से आगे थे। अपने आप में कानून का एक संग्रह, अत्यधिक आत्मविश्वासी और कभी भी गेंदबाज की दया पर निर्भर नहीं रखते थे। वास्तव में वे एक छोटी-सी रियासत के राजा थे परन्तु महान् खेल-जगत के सम्राट थे।

अप्रैल 2, 1933 की प्रातः को महाराजाधिराज श्री रणजीतसिंहजी का निधन हुआ। क्रिकेट के इस जादूगर का जो नश्वर तत्व था वह आग की भीषण लपटों में विलीन हो गया, परन्तु रणजी की आत्मा, जिसे सारे विश्व के खिलाड़ी और प्रशंसक प्यार करते थे, वह तो सदा अमर रहेगी।

राष्ट्रीय क्रिकेट प्रतियोगिता,जो रणजी ट्रॉफी के लिये होती है, वह सदा हमें इस महान् क्रिकेट खिलाड़ी की स्मृति को संजोये रखने में सहायक होगी।

•

रणजी ट्रॉफी का संक्षिप्त इतिहास

भारत में इंग्लैण्ड की पहली औपचारिक टीम 1933–34 में आई। उससे क्रिकेट के खेल को अत्यन्त प्रोत्साहन मिला। इस भ्रमण के दौरान यह विचार प्रकट किया गया कि इंग्लैण्ड और आस्ट्रेलिया की भांति भारत में भी क्रिकेट की राष्ट्रीय प्रतियोगिता प्रारम्भ हो। पंजाब के तत्कालीन कार्यवाहक राज्यपाल सर सिकन्दर हैयात खाँ उस समय अखिल भारतीय क्रिकेट नियंत्रण बोर्ड के अध्यक्ष थे। उनकी अध्यक्षता मे क्रिकेट बोर्ड की बैठक 1934 की गर्मियो में शिमला मे आयोजित की गई। इस बैठक में कुछ विशिष्ट व्यक्ति भी आमंत्रित किए गए जिनमे सबसे प्रतिभाशाली थे पटियाला के महाराजा श्री भूपेन्द्रसिंह जी, जो दक्षिण पंजाब क्रिकेट संघ के प्रतिनिधि के रूप में पधारे थे।

श्री ए. एस. डी-मैलो ने रणजी ट्रॉफी के लिये अपना प्रस्ताव रखा और साथ में एक कलाकार के द्वारा बनाया हुआ ट्रॉफी का नकशा भी पेश किया। श्री डी-मैलो अपनी बात पूरी कह भी न पाये थे कि पटियाला के महाराजा ने उत्साहपूर्वक पाँच सौ पौंड की लागत की सोने की ट्रॉफी, जो बाद मे रणजी ट्रॉफी के नाम से प्रसिद्ध हुई, देना घोषित किया और हर वर्ष जीतने वाली टीम को सदा के लिए एक दूसरे आकार की ट्रॉफी प्रदान करने का भी वचन दिया। महाराजा की घोषणा का कृतज्ञतापूर्वक स्वागत किया गया और निर्णय लिया गया कि राज्य क्रिकेट संघ रणजी ट्राफी के लिये हर वर्ष प्रतियोगिता में भाग लें।

रणजी ट्रॉफी के लिये राष्ट्रीय क्रिकेट प्रतियोगिता का पहला मैच मद्रास और मैसूर के बीच नवम्बर 4, 1934 को प्रारम्भ हुआ। सन् 1934-35 से 1956–57 तक यह प्रतियोगिता 'हार-बाहर' (नोक आउट) पद्धति पर आयोजित की जाती रही। सन् 1957–58 से क्षेत्रीय स्तर तक लीग पद्धति पर और अन्तर-क्षेत्रीय स्तर पर 'हार-बाहर' पद्धति पर आयोजित की जाती है। लीग प्रतियोगिता में निम्नलिखित दल भाग लेते हैं:—

उत्तर क्षेत्र : 1. दिल्ली और जिला क्रिकेट संघ
2. दक्षिण पंजाब क्रिकेट संघ
3. सेना खेल-कूद नियंत्रण बोर्ड
4. उत्तर पंजाब क्रिकेट संघ
5. रेलवे खेल-कूद नियंत्रण बोर्ड
6. जम्मू व कश्मीर क्रिकेट संघ

दक्षिण क्षेत्र : 1. मद्रास क्रिकेट संघ
2. मैसूर राज्य क्रिकेट संघ
3. हैदराबाद क्रिकेट संघ
4. केरल क्रिकेट संघ
5. आन्ध्र क्रिकेट संघ

पूर्व क्षेत्र : 1. बंगाल क्रिकेट संघ
2. बिहार क्रिकेट संघ
3. असम क्रिकेट संघ
4. उड़ीसा क्रिकेट संघ

पश्चिम क्षेत्र : 1. बम्बई क्रिकेट संघ
2. महाराष्ट्र क्रिकेट संघ
3. बड़ौदा क्रिकेट संघ
4. गुजरात क्रिकेट संघ
5. सौराष्ट्र क्रिकेट संघ

मध्य क्षेत्र : 1. उत्तर प्रदेश क्रिकेट संघ
2. मध्य प्रदेश क्रिकेट संघ
3. राजस्थान क्रिकेट संघ
4. विदर्भ क्रिकेट संघ

इस प्रतियोगिता ने खिलाड़ियों को अपनी प्रतिभा दिखाने के बहुत अवसर प्रदान किये हैं और इससे प्रतिभाशाली खिलाड़ी ढूंढने में बड़ी सहायता मिली है।

रणजी ट्रॉफी प्रतियोगिता के फाइनल मैचों में निम्नलिखित टीमों को खेलने का अवसर मिला है :—

वर्ष	विजेता	उप-विजेता
1934–35	बम्बई	उत्तर भारत
1935–36	बम्बई	मद्रास
1936–37	नवानगर	बंगाल
1937–38	हैदराबाद	नवानगर
1938–39	बंगाल	दक्षिण पंजाब
1939–40	महाराष्ट्र	उत्तर प्रदेश
1940–41	महाराष्ट्र	मद्रास
1941–42	बम्बई	मैसूर
1942–43	बड़ौदा	हैदराबाद
1943–44	पश्चिम भारत	बंगाल

1944–45	बम्बई	होल्कर
1945–46	होल्कर	बड़ौदा
1946–47	बड़ौदा	होल्कर
1947–48	होल्कर	बम्बई
1948–49	बम्बई	बड़ौदा
1949–50	बड़ौदा	होल्कर
1950–51	होल्कर	गुजरात
1951–52	बम्बई	होल्कर
1952–53	होल्कर	बंगाल
1953–54	बम्बई	होल्कर
1954–55	मद्रास	होल्कर
1955–56	बम्बई	बंगाल
1956–57	बम्बई	सेना
1957–58	बड़ौदा	सेना
1958–59	बम्बई	बंगाल
1959–60	बम्बई	मैसूर
1960–61	बम्बई	राजस्थान
1961–62	बम्बई	राजस्थान
1962–63	बम्बई	राजस्थान
1963–64	बम्बई	राजस्थान
1964–65	बम्बई	हैदराबाद
1965–66	बम्बई	राजस्थान
1966–67	बम्बई	राजस्थान

रणजी ट्रॉफी के क्षेत्रीय विजेता

1957–58	मध्य क्षेत्र :	राजस्थान
	उत्तर क्षेत्र :	सेना
	दक्षिण क्षेत्र :	हैदराबाद
	पूर्व क्षेत्र :	बंगाल
	पश्चिम क्षेत्र :	बड़ौदा
1958–59	मध्य क्षेत्र :	राजस्थान
	उत्तर क्षेत्र :	सेना
	दक्षिण क्षेत्र :	मद्रास
	पूर्व क्षेत्र :	बंगाल
	पश्चिम क्षेत्र :	बम्बई

1959–60	मध्य क्षेत्र :	राजस्थान
	उत्तर क्षेत्र :	सेना
	दक्षिण क्षेत्र :	मैसूर
	पूर्व क्षेत्र :	बंगाल
	पश्चिम क्षेत्र :	बम्बई
1960–61	मध्य क्षेत्र :	राजस्थान
	उत्तर क्षेत्र :	दिल्ली
	दक्षिण क्षेत्र :	मद्रास
	पूर्व क्षेत्र :	बंगाल
	पश्चिम क्षेत्र :	बम्बई
1961–62	मध्य क्षेत्र :	राजस्थान
	उत्तर क्षेत्र :	दिल्ली
	दक्षिण क्षेत्र :	मद्रास
	पूर्व क्षेत्र :	बंगाल
	पश्चिम क्षेत्र :	बम्बई
1962–63	मध्य क्षेत्र :	राजस्थान
	उत्तर क्षेत्र :	दिल्ली
	दक्षिण क्षेत्र :	हैदराबाद
	पूर्व क्षेत्र :	बंगाल
	पश्चिम क्षेत्र :	बम्बई
1963–64	मध्य क्षेत्र :	राजस्थान
	उत्तर क्षेत्र :	दिल्ली
	दक्षिण क्षेत्र :	मैसूर
	पूर्व क्षेत्र :	बंगाल
	पश्चिम क्षेत्र :	बम्बई
1964–65	मध्य क्षेत्र :	उत्तर प्रदेश
	उत्तर क्षेत्र :	सेना
	दक्षिण क्षेत्र :	हैदराबाद
	पूर्व क्षेत्र :	बंगाल
	पश्चिम क्षेत्र :	बम्बई

बल्लेबाजी : 200 और अधिक रन

443*	बी. बी. निम्बालकर, महाराष्ट्र वि० काठियावाड़	1948
359*	वी. एम. मर्चेंट, बम्बई वि० महाराष्ट्र	1943
319	गुलमोहम्मद, बड़ौदा वि० होल्कर	1946
316*	वी. एस. हजारे, महाराष्ट्र वि० बड़ौदा	1939
288	वी. एस. हजारे, बड़ौदा वि० होल्कर	1946
283*	आर. जी. नाडकर्णी, बम्बई वि० दिल्ली	1960
278	वी. एम. मर्चेंट, बम्बई वि० होल्कर	1944
262*	बालन पंडित, केरल वि० आन्ध्र	1959
261	डी. एच. शोधन, बड़ौदा वि० महाराष्ट्र	1957
259	एम. एल. जयसिम्हा, हैदराबाद वि० बंगाल	1964
249*	डी. सी. एस. कौम्पटन, होल्कर वि० बम्बई	1944
249*	डी. के. गायकवाड, बड़ौदा वि० महाराष्ट्र	1959
246*	आर. एफ. सूरती, राजस्थान वि० उत्तर प्रदेश	1959
246	डी. बी. देवधर, महाराष्ट्र वि० बम्बई	1940
246	सी. टी. सरवटे, होल्कर वि० बंगाल	1950
245*	आर. एस. मोदी, बम्बई वि० बड़ौदा	1944
245	पी. आर. उमरीगर, बम्बई वि० सौराष्ट्र	1957
235	सी. टी. सरवटे, होल्कर वि० दिल्ली	1949
235	ए. एल. वाडेकर, बम्बई वि० राजस्थान	1961
234	सी. टी. सरवटे, होल्कर वि० गुजरात	1950
234*	वी. एम. मर्चेंट, बम्बई वि० सिंध	1945
234	सी. डी. गोपीनाथ, मद्रास वि० मैसूर	1958
233	मुश्ताक अली, होल्कर वि० उत्तर प्रदेश	1947
230*	के. सी. इब्राहिम, बम्बई वि० पश्चिम भारत	1941
230*	जी. एस. रामचन्द, बम्बई वि० महाराष्ट्र	1950
230*	एच. आर. अधिकारी, सेना वि० राजपूताना	1951
229	एस. के. गिरधारी, असम वि० उड़ीसा	1957
227	प्रकाश भंडारी, दिल्ली वि० पटियाला	1957
224*	पी. पंजाबी, गुजरात वि० सौराष्ट्र	1959
222*	वजीर अली, दक्षिण पंजाब वि० बंगाल	1938
221	विनू मांकड, राजस्थान वि० विदर्भ	1957

---

*अपराजित, वि० = विरुद्ध

221*	एस. दास, बिहार वि० असम	1957
219	के. सी. इब्राहिम, बम्बई वि० बड़ौदा	1948
219	बी. बी. निम्बालकर, होल्कर वि० बंगाल	1952
219	आर. जी. नाडकर्णी, बम्बई वि० राजस्थान	1962
218*	एस. डब्लू. सोहनी, महाराष्ट्र वि० पश्चिम भारत	1940
218	ए. के. खन्ना, सेना वि० दिल्ली	1952
218	आर. बी. केनी, बम्बई वि० मद्रास	1956
218	डी. के. गायकवाड, बड़ौदा वि० बम्बई	1957
217	वी. एम. मर्चेंट, बम्बई वि० पश्चिम भारत	1944
217	यू. एम. मर्चेंट, बम्बई वि० हैदराबाद	1947
217	डी. जी. फड़कर, बम्बई वि० महाराष्ट्र	1940
217	के. एम. रांगणेकर, होल्कर वि० हैदराबाद	1950
216	पी. ई. पालिया, उत्तर प्रदेश वि० महाराष्ट्र	1939
213	पी. आर. उमरीगर, बम्बई वि० गुजरात	1957
211	एस. एस. ग्रेवल, सेना वि० दक्षिण पंजाब	1950
211	वाई. एम. चौधरी, दिल्ली वि० पटियाला	1955
210	जी. ई. बी. अबेल, उत्तर भारत वि० सेना	1934
210	आर. एस. मोदी, बम्बई वि० पश्चिम भारत	1944
209	राम प्रकाश मेहरा, उत्तर भारत वि० महाराष्ट्र	1940
209*	आकाशलाल, दिल्ली वि० जम्मू व कश्मीर	1964
208*	पी. रॉय, बंगाल वि० उड़ीसा	1963
208	कृपालसिंह, मद्रास वि० ट्रावनकोर-कोचीन	1954
207*	एम. एस. हार्डीकर, बम्बई वि० सेना	1964
205	के. वी. भंडारकर, महाराष्ट्र वि० काठियावाड़	1948
205	बी. के. कुन्दरन, रेलवे वि० जम्मू व कश्मीर	1959
205	महेन्द्र कुमार, हैदराबाद वि० उत्तर प्रदेश	1964
204*	वी. एस. हजारे, बड़ौदा वि० गुजरात	1954
204	एम. एस. हार्डीकर, बम्बई वि० गुजरात	1956
203*	जे. नाऊमल, सिंध वि० नवानगर	1938
203	वी. एस. हजारे, बड़ौदा वि० सेना	1957
202	के. एम. रांगणेकर, बम्बई वि० महाराष्ट्र	1940
202*	पी. रॉय, बंगाल वि० उड़ीसा	1963
201*	आर. जी. नाडकर्णी, महाराष्ट्र वि० सौराष्ट्र	1957

* अपराजित

201*	डी. के. गायकवाड, बड़ौदा वि० गुजरात	1961
200	सी. के. नायुडू, होल्कर वि० बड़ौदा	1945
200	के. एम. मंत्री, बम्बई वि० महाराष्ट्र	1948
200*	हनुमन्तसिंह, राजस्थान वि० उत्तर प्रदेश	1961

एक ही मैच की दोनों पारियों में शतक

105 और 114,	एस. एम. कादरी, बम्बई वि० पश्चिमी भारत	1935
127 और 162*,	वी. एस. हजारे, बड़ौदा वि० महाराष्ट्र	1944
105 और 141,	डी. बी. देवधर, महाराष्ट्र वि० नवानगर	1944
109 और 130,	मुश्ताक अली, होल्कर वि० बम्बई	1944
129 और 151*,	एच. आर. अधिकारी, बड़ौदा वि० नवानगर	1945
143 और 156,	यू. एम. मर्चेंट, बम्बई वि० महाराष्ट्र	1948
133 और 100,	एम. आर. रिगे, महाराष्ट्र वि० बम्बई	1948
131 और 160,	डी. जी. फडकर, बम्बई वि० महाराष्ट्र	1948
130 और 101,	वी. एस. हजारे, बड़ौदा वि० होल्कर	1949
128 और 101*,	डी. के. गायकवाड, बड़ौदा वि० गुजरात	1949
152 और 102*,	एन. जे. कांट्रैक्टर, गुजरात वि० बड़ौदा	1952
170 और 143,	पी. रॉय, बंगाल वि० उड़ीसा	1953
112 और 118,	पी. रॉय, बंगाल वि० हैदराबाद	1962
130 और 100,	नवाब पटौदी, दिल्ली वि० सेना	1964

रणजी ट्रॉफी में पांच या अधिक शतक बनाने वाले 1934–65

वी. एस. हजारे	22	सी. जी. बोर्डे	9
पी. रॉय	19	एच. डी. दानी	9
मुश्ताक अली	17	के. एम. रांगणेकर	8
यू. एम. मर्चेंट	16	आर. बी. केनी	8
पी. आर. उमरीगर	14	के. सी. इब्राहिम	7
डी. के. गायकवाड	14	एस. डब्लू. सोहनी	7
एच. आर. अधिकारी	13	कृपालसिंह	7
सी. टी. सरवटे	12	गोपीनाथ	7
बी. बी. निम्बालकर	11	वी. मेहरा	7
आर. जी. नाडकर्णी	11	अमरनाथ	6
एम. एल. जयसिम्हा	11	पृथ्वीराज	6
आर. एस. मोदी	10	एम. के. मंत्री	6
जी. एस. रामचन्द	10	सी. के. नायुडू	5
एन. जे. कांट्रैक्टर	10	यू. एम. मर्चेंट	5
वी. एल. मांजरेकर	10	डी. बी. देवधर	5
जी. किशनचन्द	10	वाई. एम. चौधरी	5
वीनू मांकड	9	हनुमन्त सिंह	5
ई. बी. आईबेरा	9	प्रेम भाटिया	5

*अपराजित

प्रथम प्रवेश में शतक

210	जी. ई. बी. श्रवेल, उत्तर भारत वि० सेना	1934
181*	बी. डब्लू. मालकाम, बंगाल वि० मद्रास	1938
179	जे. एन. सेठ, दिल्ली वि० दक्षिण पंजाब	1949
163	एम. टी. चन्द्रमान, गुजरात वि० बम्बई	1957
162	ए. एस. भाटिया, उत्तर प्रदेश वि० मध्य प्रदेश	1958
152 102*	} एन. जे. कांट्रैक्टर, गुजरात वि० बड़ौदा	1952
151	एच. एस. कनीतकर, महाराष्ट्र वि० सौराष्ट्र	1963
150*	एम. एम. दालवी, बम्बई वि० सिंध	1947
144	एम. मकसूद, दक्षिण पंजाब वि० उत्तर पंजाब	1944
144	लाहेजी, सौराष्ट्र वि० महाराष्ट्र	1954
141	पी. सी. पोद्दार, बंगाल वि० असम	1960
136	जे. मित्तर, बंगाल वि० बिहार	1950
133*	ए. के. साशा, सेना वि० राजस्थान	1951
132*	एस. एम. हादी हैदराबाद वि० मद्रास	1934
132	मोहिन्द्र सिंह, उत्तर प्रदेश वि० राजस्थान	1955
131*	बी. आर. पटेल, बम्बई वि० पश्चिम भारत	1935
125	एस. ख्वाजा, उत्तर प्रदेश वि० मध्य प्रदेश	1939
122	पी. जे. डिकेनसन, बम्बई वि० महाराष्ट्र	1947
113	बी. चंदा, बंगाल वि० मध्य प्रदेश	1955
113	रमेश सक्सेना, दिल्ली वि० दक्षिण पंजाब	1960
112*	पी. रॉय, बंगाल वि० उत्तर प्रदेश	1946
108	ए. जबर, बंगाल वि० बिहार	1938
108	एम. एल. आपटे, बम्बई वि० सौराष्ट्र	1951
108	सलीम दुर्रानी, सौराष्ट्र वि० गुजरात	1953
108	एम. कृष्णा, मैसूर वि० केरल	1961
104	ब्रजराज चौहान, राजपुताना वि० दक्षिण पंजाब	1950
104	बी. दास गुप्ता, बंगाल वि० बिहार	1952
103	एल. आई. परीजा, उड़ीसा वि० असम	1952
102	के. एम. रांगणेकर, महाराष्ट्र वि० पश्चिम भारत	1939
102	पी. एन. भण्डारी, बिहार वि० असम	1959

---

* अपराजित

102 एन. रॉय, बंगाल वि० असम 1960
101 आगा रजा, उत्तर भारत वि० सेना 1934
101 एस. मुस्तफी, बंगाल वि० उत्तर प्रदेश 1941
101 वी. आर. अमलादी, बम्बई वि० सिंध 1947
101* वाई. बी. पटेल, मैसूर वि० हैदराबाद 1961

एक खेल-वर्ष में सबसे अधिक शतक

पांच:—सन् 1944 में आर. एस. मोदी द्वारा बम्बई की ओर से : 160 वि० सिंध, 210 वि० पश्चिम भारत, 245 वि० बड़ौदा, 113 वि० उत्तर भारत और 151 वि० होल्कर ।

चार:—सन् 1940 में एस. डब्लू. सोहनी द्वारा महाराष्ट्र की ओर से : 120 वि० बम्बई, 134 वि० गुजरात, 218* वि० पश्चिम भारत और 104 वि० मद्रास ।

सन् 1950 में मुश्ताक अली द्वारा होल्कर की ओर से : 125 वि० उत्तर प्रदेश, 100* वि० बंगाल, 100 वि० हैदराबाद और 187 वि० गुजरात ।

सन् 1957 में एन. जे. कांट्रेक्टर द्वारा गुजरात की ओर से : 102 वि० बम्बई, 135 वि० सौराष्ट्र, 167 वि० बड़ौदा और 110 वि० महाराष्ट्र ।

सन् 1964 में एम. एल. जयसिम्हा द्वारा हैदराबाद की ओर से : 109 वि० मद्रास, 154 वि० केरल, 259 वि० बंगाल और 153 वि० उत्तर प्रदेश ।

एक पारी में सबसे अधिक शतक

छह:— सन् 1945 में होल्कर की ओर से मैसूर के विरुद्ध : एम. एम. जगदले 164, बी. बी. निम्बालकर 172, के. वी. भंडारकर 142, सी. के. नायुडू 101, सी. टी. सरवटे 101, और आर. प्रतापसिंह 100 रन । (विश्व रेकार्ड)

चार:—सन् 1945 में बम्बई की ओर से बड़ौदा के विरुद्ध : के. सी. इब्राहिम 132, वी. एम. मर्चेंट 171, के. एम. रांगणेकर 113 और यू. एम. मर्चेंट 136 रन ।

---

* अपराजित

एक मैच में सबसे अधिक शतक

नौः—बम्बई (5) वि० महाराष्ट्र (4), 1948
सातः—होल्कर (6) वि० मैसूर (1), 1945
छहः—बम्बई (3) वि० होल्कर (3), 1944
बम्बई (4) वि० बड़ौदा (2), 1945

एक खेल-वर्ष में हजार रन

आर. एस. मोदी ने बम्बई की ओर से 1944 मे 1008 रन बनाये।

पारी प्रारम्भ करने पर भी अपराजित रहने वाले बल्लेबाज

डी. के. गाईं ने बड़ौदा की ओर से नवानगर के विरुद्ध सन् 1937-38 में 85 में से 27 रन बनाये।

आर. एल. होल्डवर्थ ने पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्त की ओर से दक्षिण पंजाब के विरुद्ध 1938-39 में 227 मे से 100 रन बनाये।

एम. के. मंत्री ने बम्बई की ओर से गुजरात के विरुद्ध 1950-51 में 229 में से 64 रन बनाये।

ए. गुहा रॉय ने असम की ओर से बंगाल के विरुद्ध 1951-52 मे 180 में से 84 रन बनाये।

बी. एल. मेहरा ने पूर्व पंजाब की ओर से दिल्ली के विरुद्ध 1957-58 मे 206 में से 87 रन बनाये।

पी. रघुनाथ ने केरल की ओर से मैसूर के विरुद्ध 1958-59 में 169 में से 68 रन बनाये।

मालुभा जाडेजा ने सौराष्ट्र की ओर से बड़ौदा के विरुद्ध 1958-59 में 160 में से 75 रन बनाये।

डी. वी. पिचमूथु ने बिहार की ओर से उड़ीसा के विरुद्ध 1959-60 में 208 में से 93 रन बनाये।

बी. जेना ने उड़ीसा की ओर से बिहार के विरुद्ध 1961-62 मे 83 में से 38 रन बनाये।

सबसे कम समय में 1000 रन

आर. एस. मोदी (बम्बई) .... 1066 रन, 8 पारी मे।
कृपालसिंह (मद्रास) .... 1017 रन, 15 पारी में।
पी. रॉय (बंगाल) .... 1003 रन, 16 पारी में।

102	एन. रॉय, बंगाल वि० असम	1960
101	आगा रजा, उत्तर भारत वि० सेना	1934
101	एस. मुस्तफी, बंगाल वि० उत्तर प्रदेश	1941
101	वी. आर. अमलादी, बम्बई वि० सिंध	1947
101*	वाई. वी. पटेल, मैसूर वि० हैदराबाद	1961

एक खेल-वर्ष में सबसे अधिक शतक

पांच:—सन् 1944 में आर. एस. मोदी द्वारा बम्बई की ओर से : 160 वि० सिंध, 210 वि० पश्चिम भारत, 245 वि० बड़ौदा, 113 वि० उत्तर भारत और 151 वि० होल्कर ।

चार:—सन् 1940 में एस. डब्लू. सोहनी द्वारा महाराष्ट्र की ओर से : 120 वि० बम्बई, 134 वि० गुजरात, 218* वि० पश्चिम भारत और 104 वि० मद्रास ।

सन् 1950 में मुश्ताक अली द्वारा होल्कर की ओर से : 125 वि० उत्तर प्रदेश, 100* वि० बंगाल, 100 वि० हैदराबाद और 187 वि० गुजरात ।

सन् 1957 में एन. जे. कांट्रेक्टर द्वारा गुजरात की ओर से : 102 वि० बम्बई, 135 वि० सौराष्ट्र, 167 वि० बड़ौदा और 110 वि० महाराष्ट्र ।

सन् 1964 में एम. एल. जयसिम्हा द्वारा हैदराबाद की ओर से : 109 वि० मद्रास, 154 वि० केरल, 259 वि० बंगाल और 153 वि० उत्तर प्रदेश ।

एक पारी में सबसे अधिक शतक

छह:—सन् 1945 में होल्कर की ओर से मैसूर के विरुद्ध : एम. एम. जगदले 164, बी. बी. निम्बालकर 172, के. वी. भंडारकर 14[illegible] सी. के. नायुडू 101, सी. टी. सरवटे 101, और आर. प्रतापसिंह 100 रन । (विश्व रेकार्ड)

चार:—सन् 1945 में बम्बई की ओर से बड़ौदा के विरुद्ध : के. सी. इ[illegible] 132, वी. एम. मर्चेंट 171, के. एम. रांगणेकर 113 और [illegible] मर्चेंट 136 रन ।

---

* अपराजित

मद्रास	.... 234, सी. डी. गोपीनाथ वि० मैसूर 1958.
महाराष्ट्र	.... 443*, बी. बी. निम्बालकर वि० काठियावाड़ 1948.
मैसूर	.... 183, एल. टी. आदिशेष वि० हैदराबाद 1951.
नवानगर	.... 185, वीनू मांकड वि० बंगाल 1936.
उत्तर भारत	....210, जी. ई. बी. अबेल वि० सेना 1934.
उत्तर पंजाब	.... 141, चमनलाल वि० रैल्वे 1965.
पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्त	.... 177, आर. एल. होल्ड्सवर्थ वि० दिल्ली 1938.
उड़ीसा	.... 152, एल. आई. परीजा वि० बंगाल 1952.
	.... 152, एम. एस. ए राव वि० बिहार 1956.
पटियाला	.... 110, हरचरणसिंह वि० दक्षिण पंजाब 1957.
रैल्वे	.... 205, बी. के. कुन्दरन वि० जम्मू व कश्मीर 1959.
राजस्थान	.... 246*, आर. एफ. सूरती वि० उत्तर प्रदेश 1959.
सौराष्ट्र	.... 185*, एस. एच. एम. कोल्हा वि० गुजरात 1935.
सेना	.... 230, एच. आर. अधिकारी वि० राजपुताना 1951.
सिंध	....203*, जे. नाऊमल वि० नवानगर 1938.
दक्षिण पंजाब	.... 222*, वजीर अली वि० बंगाल 1938.
उत्तर प्रदेश	.... 216, पी. ई. पालिया वि० महाराष्ट्र 1939.
विदर्भ	.... 117, एम. एम. दालवी वि० उत्तर प्रदेश 1961.

---

* अपराजित

सबसे कम समय में 2000 या अधिक रन

आर. एस. मोदी (बम्बई)	.... 2008 रन, 29 पारी मे।
वी. एम. मर्चेंट (बम्बई)	.... 3003 रन, 40 पारी में।
वी. एस. हजारे (बड़ौदा)	.... 4026 रन, 67 पारी मे।
वी. एस. हजारे (बड़ौदा)	.... 5063 रन, 78 पारी में।
वी. एस. हजारे (बड़ौदा)	.... 6032 रन, 94 पारी मे।

हर संघ के लिये सबसे अधिक रन

आन्ध्र	.... 149, ए. आर. श्रीधर वि० ट्रावनकोर कोचीन 1955.
सेना	.... 86, मौरिस वि० उत्तर भारत 1934.
असम	.... 229*, एस. के. गिरधारी वि० उड़ीसा 1957.
बड़ौदा	... 319, गुलमोहम्मद वि० होल्कर 1946.
बंगाल	.... 208*, पी. रॉय वि० उड़ीसा 1963.
बिहार	.... 221*, एस. दास वि० असम 1957.
बम्बई	.... 359*, वी. एम. मर्चेंट वि० महाराष्ट्र 1943.
मध्य भारत	.... 103, वी. एस. हजारे वि० राजपुताना 1935.
दिल्ली	.... 227, प्रकाश भंडारी वि० पटियाला 1957.
पूर्वी पंजाब	.... 139, पृथ्वीराज वि० सेना 1953.
ग्वालियर	.... 30, आर. डी. माथुर वि० दिल्ली 1943.
गुजरात	.... 224*, पी. एन. पंजाबी वि० सौराष्ट्र 1959.
हैदराबाद	.... 259, एम. एल. जयसिम्हा वि० बंगाल 1965.
होल्कर	.... 249 डी. सी. एस. कौम्पटन वि० बम्बई 1944.
जम्मू व कश्मीर	.... 95, रऊफ वि० सेना 1964.
केरल	.... 262*, बालन पंडित वि० आन्ध्र 1959.
मध्य प्रदेश	.... 142, के.पी. केसरी वि० होल्कर 1948.

* अपराजित

मद्रास	.... 234, सी. डी. गोपीनाथ वि० मैसूर 1958.
महाराष्ट्र	.... 443*, बी. बी. निम्बालकर वि० काठियावाड़ 1948.
मैसूर	.... 183, एल. टी. आदिशेष वि० हैदराबाद 1951.
नवानगर	.... 185, वीनू मांकड वि० बंगाल 1936.
उत्तर भारत	....210, जी. ई. बी. अबेल वि० सेना 1934.
उत्तर पंजाब	.... 141, चमनलाल वि० रेल्वे 1965.
पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्त	.... 177, आर. एल. होल्ड्सवर्थ वि० दिल्ली 1938.
उड़ीसा	.... 152, एल. आई. परीजा वि० बंगाल 1952.
	.... 152, एम. एस. ए राव वि० बिहार 1956.
पटियाला	.... 110, हरचरणसिंह वि० दक्षिण पंजाब 1957.
रेल्वे	.... 205, बी. के. कुन्दरन वि० जम्मू व कश्मीर 1959.
राजस्थान	.... 246*, आर. एफ. सूरती वि० उत्तर प्रदेश 1959.
सौराष्ट्र	.... 185*, एस. एच. एम. कोल्हा वि० गुजरात 1935.
सेना	.... 230, एच. आर. अधिकारी वि० राजपुताना 1951.
सिंघ	....203*, जे. नाऊमल वि० नवानगर 1938.
दक्षिण पंजाब	.... 222*, वजीर अली वि० बंगाल 1938.
उत्तर प्रदेश	.... 216, पी. ई. पालिया वि० महाराष्ट्र 1939.
विदर्भ	.... 117, एम. एम. दालवी वि० उत्तर प्रदेश 1961.

---

* अपराजित

हर विकेट की अधिकतम साझेदारी

पहला विकेट :

273, जगदीश लाल और नजर मोहम्मद,
उत्तर भारत वि० पश्चिमोत्तर प्रांत.... 1941.
269, एफ. एम. इंजीनियर और एस. जी. अधिकारी,
बम्बई वि० बंगाल.... 1962.
251, पी. रॉय और एस. बोस, बंगाल वि० असम .... 1951.

दूसरा विकेट :

455, के. बी. भंडारकर और बी. बी. निम्बालकर,
महाराष्ट्र वि० काठियावाड .... 1948.
304, जी. ई. वी. अबेल और अगा रजा, उत्तर भारत वि० सेना .... 1934.
283, बी. के. कुन्दरन और वी. मेहरा,
रेल्वे वि० जम्मू व कश्मीर ... 1959.
277, एस. जी. अधिकारी और एच. डी. अमरोलीवाला,
बम्बई वि० महाराष्ट्र .... 1960.
267, वी. मांकड और आर. एफ. सूरती,
राजस्थान वि० उत्तर प्रदेश .... 1959.

तीसरा विकेट :

373, वी. एम. मर्चेंट और आर. एस. मोदी,
बम्बई वि० पश्चिम भारत .... 1944.
335, डी. के. गायकवाड और सी. जी. बोर्डे,
बड़ौदा वि० महाराष्ट्र .... 1959.
315, के. एम. तिवारी और वी. एल. मांजरेकर,
उत्तर प्रदेश वि० मध्य प्रदेश .... 1957.
313, उमरखान और पृथ्वीराज, पश्चिम भारत वि० बम्बई .... 1943.
301*, आत्मासिंह और एच. टी. दानी, सेना वि० बंगाल .... 1957.
254, पी. रॉय और बी. चौधुरी, बंगाल वि० बिहार .... 1962.
250, एम. के. मन्त्री और यू. एम. मर्चेंट, बम्बई वि० महाराष्ट्र .... 1948.

चौथा विकेट :

577, वी० एस. हजारे और गुल मोहम्मद,
बड़ौदा वि० होलकर (विश्व रेकार्ड) .... 1946.
411, बालन पंडित और जी. अब्राहम, केरल वि० आन्ध्र .... 1959.

342*, एस. डब्लू सोहनी और वी. एस. हजारे,
महाराष्ट्र वि० पश्चिम भारत .... 1940.
322, वी. एस. हजारे और डी. के. गायकवाड,
बड़ौदा वि० बम्बई .... 1957.
303*, वी. एस. हजारे और एच. आर. अधिकारी,
बड़ौदा वि० महाराष्ट्र .... 1944.
302, यू. एम. मर्चेंट और डी. जी. फडकर,
बम्बई वि० महाराष्ट्र ... 1948.
293, पी. आर. उमरीगर और जी. किशनचन्द,
गुजरात वि० महाराष्ट्र .... 1951.
258, एम. आर. रीगे और एम. सी. दातार,
महाराष्ट्र वि० बम्बई .... 1948.
256, एच. आर. अधिकारी और एच. टी. दानी,
सेना वि० दक्षिण पंजाब .... 1959.

पांचवां विकेट :

360, यू. एम. मर्चेंट और एम. एन. रायजी,
बम्बई वि० हैदराबाद .... 1947.
332, एम. एल. जयसिम्ह और महेन्द्र कुमार,
हैदराबाद वि० बंगाल .... 1965.
325, वी. एम. मर्चेंट और के. एम. रांगणेकर,
बम्बई वि० सिंध .... 1945.
290, एम. एम. सूद और रमेश सक्सेना,
दिल्ली वि० दक्षिण पंजाब .... 1960.
276, कृपालसिंह और आर. बी. अलगेनन,
मद्रास वि० ट्रावनकोर कोचीन .... 1954.
263, ए. एल. वाडेकर और जी. एस. रामचन्द,
बम्बई वि० राजस्थान .... 1961.

छठा विकेट :

371, वी. एम. मर्चेंट और आर. एस. मोदी,
बम्बई वि० महाराष्ट्र .... 1943.
316, एच. आर. अधिकारी और ए. के. खन्ना,
सेना वि० राजस्थान .... 1951.

सातवां विकेट :

252, एस. के. गिरधारी और ए. गुहा रॉय, असम वि० उड़ीसा .... 1957.

आठवां विकेट :

236, सी. टी. सरवटे और आर. पी. सिंह, होल्कर वि० दिल्ली .... 1949.

नवां विकेट :

245, वी. एस. हजारे और एन. डी. नागरवाला,
महाराष्ट्र वि० बड़ौदा .... 1939.

दसवां विकेट :

139, यादवेन्द्र सिंहजी और मुबारक अली,
नवानगर वि० बंगाल .... 1936.

एक ही जोड़े द्वारा दोनों पारियों में शतकीय साझेदारी

102 चौथे विकेट पर और 126 पांचवें विकेट पर, वी. एस. हजारे और एच. आर. अधिकारी द्वारा, बड़ौदा की ओर से, वि० गुजरात, 1941 में।

104 तीसरे विकेट पर और 111 भी तीसरे विकेट पर, वी. एस. हजारे और एच. आर. अधिकारी द्वारा, बड़ौदा की ओर से, वि० हैदराबाद, 1942 में।

एक ही मैच में सबसे अधिक शतकीय साझेदारी

सन् 1945 में होल्कर और मैसूर के बीच खेले गये मैच में दस शतकीय साझेदारियां थी; होल्कर की ओर से सात और मैसूर की ओर से तीन। होल्कर ने 912 रन आठ विकटों पर बनाये और पारी समाप्ति की घोषणा की। दूसरे विकेट को छोड़कर हर विकेट की साझेदारी एक सौ से ऊपर रनों की थी।

बड़ी रन संख्याएँ

912 आठ विकटों पर,	...	होल्कर वि० मैसूर, इन्दौर में,	1945
826 चार विकटों पर,	...	महाराष्ट्र वि० काठियावाड़, पूना में,	1948
798	...	महाराष्ट्र वि० उत्तर भारत, पूना में,	1940
784	...	बड़ौदा वि० होल्कर, बड़ौदा में,	1946
764	...	बम्बई वि० होल्कर, बम्बई में,	1944
760	...	बंगाल वि० असम, कलकत्ता में,	1951
757	...	होल्कर वि० हैदराबाद, इन्दौर में,	1950

735 ... बम्बई वि० महाराष्ट्र, बम्बई में, 1943
725 आठ विकटों पर, ... बम्बई वि० महाराष्ट्र, बम्बई में, 1950
714 आठ विकटों पर, ... बम्बई वि० महाराष्ट्र, पूना में, 1948
675 ... महाराष्ट्र वि० बम्बई, पूना में, 1940
658 आठ विकटों पर, ... दक्षिण पंजाब वि० उत्तर पंजाब, पटियाला में, 1945
657 नौ विकटों पर, ... बम्बई वि० महाराष्ट्र, बम्बई में, 1956
651 ... बम्बई वि० महाराष्ट्र, पूना में, 1948
650 नौ विकटों पर, ... महाराष्ट्र वि० बड़ौदा, पूना में, 1939
650 ... बम्बई वि० महाराष्ट्र, पूना मे, 1940
645 ... बम्बई वि० बड़ौदा, बम्बई में, 1945
638 आठ विकटों पर, ... बम्बई वि० सिंध, बम्बई मे, 1947
635 छह विकटो पर, ... हैदराबाद वि० बंगाल, हैदराबाद में, 1965
634 नौ विकटों पर, ... बम्बई वि० मद्रास, बम्बई मे, 1956
632 सात विकटों पर, ... बम्बई वि० महाराष्ट्र, बम्बई में, 1947
629 ... गुजरात वि० महाराष्ट्र, कोल्हापुर में, 1951
620 ... बम्बई वि० उत्तर भारत, बम्बई में, 1944
620 ... बम्बई वि० बड़ौदा, बम्बई मे, 1948
618 ... होल्कर वि० बंगाल, इन्दौर मे, 1942
615 .... होल्कर वि० दिल्ली, नई दिल्ली में, 1949
615 .... राजस्थान वि० विदर्भ, उदयपुर में, 1957
615 .... हैदराबाद वि०उत्तर प्रदेश, हैदराबाद में 1964
613 सात विकटों पर, ... उत्तर भारत वि० पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्त, लाहौर में, 1941
604 .... महाराष्ट्र वि० बम्बई, पूना में, 1948

छोटी रन संख्याएँ

22 .... दक्षिण पंजाब वि० उत्तर भारत, अमृतसर में, ... 1934
23 .... सिंध वि० दक्षिण पंजाब, पटियाला मे, ... 1938
23 .... जम्मू व कश्मीर वि० दिल्ली, श्रीनगर में, ... 1960
25 .... सौराष्ट्र वि० बम्बई, बम्बई में, ... 1951
27 .... केरल वि० मैसूर, बंगलोर में, ... 1963
28 .... मैसूर वि० बम्बई, बंगलोर में, ... 1951
28 .... जम्मू व कश्मीर वि० दिल्ली, श्रीनगर मे 1960
36 .... केरल वि० मद्रास, सेलम मे, ... 1961

37 .... दिल्ली वि० उत्तर प्रदेश, आगरा में, ... 1934
37 .... बड़ौदा वि० नवानगर, जामनगर में, ... 1937
38 .... मैसूर वि० मद्रास, मद्रास में, ... 1936
38 .... जम्मू व कश्मीर वि० दिल्ली, दिल्ली में, ... 1963
39 .... महाराष्ट्र वि० नवानगर, जामनगर में, ... 1941
40 .... दिल्ली वि० पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्त, पेशावर में, ... 1938
40 .... रेलवे वि० दिल्ली, दिल्ली में, ... 1961

अधिकतम रनों का कुल जोड़

2376, 38 विकटों पर, बम्बई वि० महाराष्ट्र, पूना में, (विश्व रेकार्ड) 1948
2078, 40 विकटो पर, बम्बई वि० होल्कर, बम्बई में, ... 1944
1611, 24 विकटों पर, होल्कर वि० मैसूर, इन्दौर मे, ... 1945
1558, 37 विकटों पर, होल्कर वि० दिल्ली, दिल्ली में, ... 1949
1545, 35 विकटों पर, बम्बई वि० होल्कर, बम्बई में, ... 1951

हर संघ की अधिकतम और न्यूनतम रन संख्याएँ

आन्ध्र	: 462 वि० ट्रावनकोर-कोचीन, त्रिवेन्द्रम में, ...	1955
	53 वि० मद्रास, गुंटूर में, ...	1960
सेना	: 204 वि० उत्तर भारत, लाहौर में, ...	1934
	203 वि० उत्तर भारत, लाहौर में, ...	1934
असम	: 411 सात विकटों पर, वि० उड़ीसा, कटक में, ...	1957
	50 वि० होल्कर, जोरहाट में, ...	1949
बड़ौदा	: 784 वि० होल्कर, बड़ौदा में, ...	1946
	37 वि० नवानगर, जामनगर मे, ...	1937
बंगाल	: 760 वि० असम, कलकत्ता में, ...	1951
	64 वि० होल्कर, इन्दौर में, ...	1944
विहार	: 443 वि० उड़ीसा, कटक मे, ...	1950
	60 वि० बंगाल, कलकत्ता में, ...	1955
बम्बई	: 764 वि० होल्कर, बम्बई में, ...	1944
	45 वि० नवानगर, जामनगर में, ...	1937
मध्य भारत	: 356 छह विकटों पर, वि० राजपुताना, इन्दौर में, ...	1935
	64 वि० उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद में, ...	1939
दिल्ली और जिला	: 544 वि० दक्षिण पंजाब, नई दिल्ली में, ...	1949
	37 वि० उत्तर प्रदेश, आगरा में, ...	1934

पूर्व पंजाब :	380 वि० दिल्ली और जिला, दिल्ली में, ...	1951
	127 वि० होल्कर, इन्दौर में, ...	1953
गुजरात :	629 वि० महाराष्ट्र, कोल्हापुर में, ...	1951
	63 वि० बम्बई, अहमदाबाद में, ...	1959
ग्वालियर :	92 वि० दिल्ली, ग्वालियर में, ...	1943
	61 वि० दिल्ली, ग्वालियर में, ...	1943
हैदराबाद :	635 छह विकटों पर, वि० बंगाल, हैदराबाद में,	1964
	69 वि० मैसूर, हैदराबाद में, ...	1959
जम्मू व कश्मीर :	270 वि० दक्षिण पंजाब, श्रीनगर में, ...	1964
	23 वि० दिल्ली, श्रीनगर में, ...	1960
केरल :	555 पांच विकटों पर, वि० आन्ध्र, पालघाट में,	1959
	27 वि० मैसूर, बंगलौर में, ...	1963
मध्य प्रदेश :	331 वि० राजस्थान, इन्दौर में,	1964
	71 वि० हैदराबाद, हैदराबाद में,	1947
मद्रास :	507 वि० आन्ध्र, मद्रास में,	1955
	69 वि० बड़ौदा, मद्रास में,	1949
मध्य भारत(होल्कर):	912 आठ विकटों पर, वि० मैसूर, इन्दौर मे,	1945
	94 वि० बंगाल, इन्दौर में,	1949
महाराष्ट्र :	826 चार विकटों पर, वि० काठियावाड़ पूना में,	1948
	39 वि० नवानगर, जामनगर मे,	1941
मैसूर :	509 छह विकटों पर, वि० होल्कर, इन्दौर में,	1945
	28 वि० बम्बई, बंगलोर में,	1951
नवानगर :	424 वि० बंगाल, बम्बई में,	1936
	69 वि० बम्बई, बम्बई में,	1946
उत्तर भारत :	613 सात विकटों पर, वि० पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्त, लाहौर में,	1941
	106 वि० दक्षिण पंजाब, अमृतसर में,	1934
पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्त :	418 आठ विकटों पर, वि० दिल्ली, पेशावर में,	1938
	85 वि० दक्षिण पंजाब, पटियाला में,	1937
उत्तर-पंजाब :	426 छह विकटों पर, वि० जम्मू व कश्मीर, जालन्धर मे,	1963

	89 वि० रेलवे, दिल्ली में,	1961.
उड़ीसा :	333 वि० असम, गोहाटी में,	1955.
	43 वि० बिहार, जमशेदपुर में,	1949.
पटियाला :	380 नौ विकटों पर, वि० पूर्वी पंजाब, जालन्धर में,	1957.
	91 वि० दिल्ली, पटियाला में,	1957.
रेलवे :	367 वि० सेना, दिल्ली में,	1961.
	33 वि० सेना, दिल्ली में,	1958.
राजस्थान :	615 वि० विदर्भ, उदयपुर में,	1957.
	54 वि० बड़ौदा, बड़ौदा में,	1945.
सौराष्ट्र :	459 वि० महाराष्ट्र, राजकोट में,	1940.
	25 वि० बम्बई, बम्बई में,	1951.
सेना :	536 वि० दक्षिण पंजाब, पटियाला में,	1950.
	62 वि० दक्षिण पंजाब, पटियाला में,	1949.
सिंध :	416 वि० महाराष्ट्र, करांची में,	1945.
	23 वि० दक्षिण पंजाब, पटियाला में,	1938.
दक्षिण-पंजाब :	658 आठ विकटों पर, वि० उत्तर भारत, पटियाला में,	1945.
	22 वि० उत्तर भारत, अमृतसर में,	1934.
उत्तर प्रदेश :	451 पांच विकटों पर, वि० असम, देहरादून में,	1950.
	49 वि० मध्य भारत, इन्दौर में,	1938.
विदर्भ :	364 वि० मध्य प्रदेश, नागपुर में,	1961.
	48 वि० उत्तर प्रदेश, नागपुर में,	1963.

प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में सबसे अधिक रन संख्या वाली पारी

होल्कर वि० मैसूर (रणजी ट्रॉफी का सेमी-फाइनल मैच)
मार्च 2, 3, 4, और 5, 1946 को इन्दौर में खेला गया।

होल्कर (पहली पारी)

के. वी. भंडारकर कै. श्यामसुन्दर बा. शाह	142
सी. टी. सरवटे कै. फ्रैंक बा. गरुड़चर	101
मुश्ताक अली कै. और बा. गरुड़चर	2
एम. एम. जगदाले कै. शाह बा. दयानन्द	164
सी. के. नायुडु कै. दयानन्द बा. गरुड़चर	101
बी. बी. निम्बालकर कै. राजशेखर बा. फ्रैंक	172
सी. एस. नायुडु कै. गोविन्दराज बा. गरुड़चर	73

आर. प्रतापसिंह बा. उभयाकर	100
जे. एन. माया अपराजित	34
एच. गायकवाड़ } बल्लेबाजी नहीं की ओ. पी. रावल }	[illegible]
अतिरिक्त	23
आठ विकटों पर पारी समाप्त घोषित	912

विकटों का पतन : 1–184, 2–188, 3–299, 4–471, 5–581, 6–706, 7–812, 8–912.

मैसूर की गेंदबाजी

	ओ.	मे ओ.	रन	विकेट
उभयाकर	48.5	7	205	1
गरुडचर	69	7	301	4
अब्बास शाह	26	3	109	1
दयानन्द	18	1	95	1
फ्रैंक	42	4	110	1
रामस्वामी	3	0	23	0
राजशेखर	6	0	33	0
मूर्ति	2	0	13	0

प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में न्यूनतम रन संख्या वाली पारी

रणजी ट्रॉफी मैच

दक्षिण पंजाब वि० उत्तर भारत

फरवरी 5, 6 और 7, 1935 को अमृतसर में खेला गया।

दक्षिण पंजाब (दूसरी पारी)

जोगेन्द्रसिंह कै. अमीर हुसैन बा. बाका जिलानी	0
शेख हुसैन बा. पुरी	2
अमरनाथ पगबाधा बा. पुरी	0
नजीर अली बा. बाका जिलानी	5
पटियाला के युवराज पगबाधा बा. बाका जिलानी	0
मोहम्मद सईद बा. अमीर इलाही	0
लालसिंह पगबाधा बा. बाका जिलानी	1
रोशनलाल अपराजित	5
मुरव्वत हुसैन बा. पुरी	0
मोहम्मद निसार कै. राम प्रकाश बा. अमीर इलाही	6
मोहम्मद अली बा. बाका जिलानी	1
अतिरिक्त	2
	22

उत्तर भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
डी. आर. पुरी	4	1	3	3
अहमद खां	3	1	3	0
बाका जिलानी	4.1	1	7	5
अमीर इलाही	4	0	7	2
मुबारक अली	1	1	0	0

शानदार गेंदबाजी

4 विकटें 0 रन पर .... अमरनाथ, रेल्वे वि० पटियाला, 1958.

4 विकटें 2 रन पर .... अमरनाथ, दक्षिण पंजाब वि० सिंध, 1938.

5 विकटें 5 रन पर .... फिरासत हुसैन, उत्तर प्रदेश वि० दिल्ली, 1934.

6 विकटें 7 रन पर .... राजेन्द्र गोयल, दक्षिण पंजाब वि० उत्तर पंजाब, 1962.

7 विकटें 9 रन पर .... आनन्द शुक्ल, उत्तर प्रदेश वि० विदर्भ, 1959.

5 विकटें 6 रन पर .... जयन्ती लाल, रेल्वे वि० जम्मू व कश्मीर, 1962.

5 विकटें 7 रन पर .... जे. एन. वीर्लें, सेना वि० जम्मू व कश्मीर, 1959.

5 विकटें 7 रन पर .... बाका जिलानी, उत्तर पंजाब वि० दक्षिण पंजाब, 1934.

5 विकटें 7 रन पर .... फिरासत हुसैन, उत्तर प्रदेश वि० दिल्ली, 1936.

5 विकटें 8 रन पर .... एस. जी. दीनन, मद्रास वि० मैसूर, 1937.

5 विकटें 8 रन पर .... निक्का राम, दक्षिण पंजाब वि० सेना, 1949.

5 विकटें 8 रन पर .... ए. के. सरकार, सेना वि० जम्मू व कश्मीर, 1959.

4 विकटें 9 रन पर .... एम. मेहरा, रैल्वे वि० दक्षिण पंजाब, 1959.

एक ही पारी में दस विकटें

पी. एम. चैटर्जी, बंगाल वि० असम, 1956–57.

ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
19	11	20	10

एक ही पारी में नौ विकटें

	ओ०	मे०ओ०	रन	वि०
टी. ज्ञानेश्वर, दिल्ली वि० जम्मू व कश्मीर	9	2	34	9, 1961–62
वी. बी. रंजने, महाराष्ट्र वि० सौराष्ट्र	20	9	35	9, 1956–57
आर. आर. वाडेकर, बम्बई वि० पश्चिम भारत	23·3	8	38	9, 1937–38
के. एस. कानन, मद्रास वि० हैदराबाद	36	17	50	9, 1947–48
गुलाम अहमद, हैदराबाद वि० मद्रास	22·2	4	53	9, 1947–48
सी. टी. सरवटे, होल्कर वि० मैसूर	21·5	1	61	9, 1945–46

एक ही पारी में आठ विकटें

	ओ०	मे०ओ०	रन	वि०
टाटा राव, हैदराबाद वि० मद्रास	21·4	3	73	8, 1934–35
एच. जे. वजीफदार, बम्बई वि० उत्तर भारत	20·1	6	40	8, 1934–35
अमरसिंह, नवानगर वि० बम्बई	28·2	10	62	8, 1936–37
फिरासत हुसैन, उत्तर प्रदेश वि० दक्षिण पंजाब	10.2	1	15	8, 1936–37
अमीर इलाही, उत्तर भारत वि० दक्षिण पंजाब	26	4	94	8, 1937–38
के. के. तारापोर, बम्बई वि० नवानगर	45·2	9	91	8, 1939–40
सी. एस. नायुडु, बड़ौदा वि० नवानगर	22	1	93	8, 1939–40
एस. एन. बनर्जी, नवानगर वि० महाराष्ट्र	9·2	3	25	8, 1941–42
वी. के. गरुडचर, मैसूर वि० मद्रास	31·3	2	99	8, 1941–42
वशीर, उत्तर प्रदेश वि० बंगाल	19	3	42	8, 1945–46
वी. एस. हजारे, बड़ौदा वि० महाराष्ट्र	45·5	10	90	8, 1946–47

एस. के. गिरधारी,
काठियावाड़ वि० गुजरात 19·4 1 55 8, 1947–48

वी. एम. मुद्दैया,
सेना वि० दक्षिण पंजाव 14·5 0 54 8, 1949–50

एन. डी. अर्घन,
उड़ीसा वि० विहार 22·4 8 50 8, 1949–50

जे. एम. पटेल,
गुजरात वि० सेना 17·5 6 53 8, 1950–51

इब्राहिम खाँ,
हैदरावाद वि० मद्रास 44·4 10 107 8, 1950–51

एस. जी. शिन्दे,
वम्बई वि० गुजरात 55·5 13 162 8, 1950–51

पी. चटर्जी, वंगाल वि० मध्यप्रदेश 28 5 59 8, 1955–56

एम. एस. हार्डीकर,
वम्बई वि० बंगाल 39·1 27 39 8, 1955–56

बी. वोस, विहार वि० असम 33 17 43 8, 1957–58

सीताराम, दिल्ली वि० दक्षिण पंजाव 26 14 29 8, 1958–59

जी. एस. रामचन्द,
वम्बई वि० सौराष्ट्र 9·4 3 12 8, 1959–60

एस. सत्पथी,
उड़ीसा वि० असम 45 18 78 8, 1959–60

डी. एस. मुकर्जी,
वंगाल वि० असम 17·2 3 46 8, 1959–60

राजेन्द्रपाल,
रेल्वे वि० दिल्ली 23·2 8 54 8, 1959–60

एस. कुंडू,
वंगाल वि० दिल्ली 37 10 104 8, 1960–61

हवीब खाँ, हैदरावाद वि० केरल 16·4 2 55 8, 1960–61

जे. एम. पटेल,
गुजरात वि० सौराष्ट्र 19 9 21 8, 1960–61

सलीम दुर्रानी,
राजस्थान वि० बम्बई 31·5 5 99 8, 1960–61

एस. एस. देशमुख,
रेल्वे वि. दक्षिण पंजाब 26·5 6 75 8, 1961–62

महेन्द्र कुमार,
हैदरावाद वि० आन्ध्र 9 0 45 8, 1961–62

जी. टोडलवाजी,
महाराष्ट्र वि० गुजरात 34·3 9 93 8, 1961–62
वी. पी. गुप्ते,
बम्बई वि० दिल्ली 45·1 8 111 8, 1961–62
डी. एस. मुकर्जी,
रेल्वे वि० दक्षिण पंजाब 26·5 6 75 8, 1961–62
एस. पी. गुप्ते,
राजस्थान वि० विदर्भ 14·5 3 45 8, 1962–63
हबीब खाँ,
हैदराबाद वि० केरल 11 2 51 8, 1963–64
रमेश,
जम्मू व कश्मीर वि० द० पंजाब 11·3 1 49 8, 1963–64
वी. सोंधी,
दिल्ली वि० जम्मू व कश्मीर 7·4 3 14 8, 1963–64
गोकुल इन्द्रदेव,
सेना वि० जम्मू व कश्मीर 21 7 71 8, 1964–65

एक ही मैच में 14 या अधिक विकटें

15 विकटें 104 रनों पर, एस. पी. गुप्ते, राजस्थान
वि० विदर्भ, नागपुर, 1962–63
15 विकटें 109 रनों पर, पी. एम. चटर्जी, बंगाल
वि० विदर्भ, कलकत्ता, 1955–56
14 विकटें 81 रनो पर, गुलाम अहमद, हैदराबाद
वि० मद्रास, सिकन्दराबाद, 1947–48
14 विकटें 104 रनों पर, इकबाल करण, सेना
वि० पूर्व पंजाब, अमृतसर, 1950–51
14 विकटें 107 रनों पर, एस. कुंडू, बंगाल
वि० असम, गोहाटी, 1960–61
14 विकटें 128 रनों पर, गोकुल इन्द्रदेव, सेना
वि० जम्मू व कश्मीर, श्रीनगर, 1964–65
14 विकटें 154 रनों पर, सी. एस. नायुडू, उत्तर प्रदेश
वि० विदर्भ, नागपुर, 1957–58
14 विकटें 155 रनों पर, बी. के. गरुड़चर, मैसूर
वि० मद्रास, बंगलौर, 1941–42
14 विकटें 194 रनो पर, ए. जी. रामसिंह, मद्रास
वि० बंगाल, कलकत्ता, 1943–44

तिकड़ी (हैट ट्रिक) :

याक़ा जिलानी, उत्तर भारत वि० दक्षिण पंजाब, 1934-35
* मुबारक अली, नवानगर वि० पश्चिम भारत, 1936-37
टी. सी. लांगफील्ड, बंगाल वि० बिहार, 1937-38
जे. बी. खोट, बम्बई वि० बड़ौदा, 1943-44
एस. नरोत्तम, काठियावाड़ वि० बड़ौदा, 1947-48
एस. एन. बनर्जी, बिहार वि० दिल्ली, 1948-49
सी. टी. सरवटे, होल्कर वि० बिहार, 1948-49
पी. सेन, बंगाल वि० उड़ीसा, 1954-55
वी. एम. मुद्दैया, सेना वि० पूर्व पंजाब, 1955-56
वी. बी. रंजने, महाराष्ट्र वि० सौराष्ट्र, 1956-57
* एस. न्यालचन्द, सौराष्ट्र वि० बड़ौदा, 1961-62
वी. एस. कुलकर्णी, बम्बई वि० गुजरात, 1963-64
जे. एस. राव, सेना वि० जम्मू व कश्मीर, 1963-64
** जे. एस. राव, सेना वि० उत्तर पंजाब, (2 तिकड़ी) 1963-64
एस. भांजी, उत्तर प्रदेश वि० विदर्भ, 1963-64

* मुबारक अली और न्यालचन्द ने पहली पारी में दोनों अन्तिम विकटें और दूसरी पारी में पहली गेंद से पहली विकेट ली थी।

**जे. एस. राव ने एक ही मैच में दो तिकड़ियां करके एक अनुपम कार्य कर दिखाया था।

एक खेल-वर्ष में तीस या अधिक विकटें लेने वाले गेंदबाज

		ओवर	मे०ओ०	रन	विकेट	औसत
डी. जी. फडकर (बम्बई)	1951-52	132·2	34	302	32	9·43
आर.जी. नाडकर्णी (बम्बई)	1963-64	281	163	305	31	9·83
सीता राम (दिल्ली)	1958-59	199·1	76	344	33	10·42
सीता राम (दिल्ली)	1959-60	265 5	130	378	35	10 80
सलीम दुर्रानी (राजस्थान)	1960-61	154·2	33	383	35	10·94
आर. बी. देसाई (बम्बई)	1958-59	228·2	70	555	50	11·10
आर. बी. देसाई (बम्बई)	1960-61	145·3	34	402	34	11·80

बी. पी. गुप्ते (बम्बई)	1961-62	191·4	49	374	31	12·06
बी. एस. चन्द्रशेखर (मैसूर)	1963-64	162	50	397	31	12·80
सी. एस. नायुडू (बड़ोदा)	1942-43	206·5	42	514	40	12·85
पी. चटर्जी (बंगाल)	1958-59	169·4	50	399	31	12·87
महेन्द्र कुमार (हैदराबाद)	1962-63	90·3	3	401	30	13·34
बी. वाई. श्रलवा (मैसूर)	1959-60	228·2	52	483	36	13·41
सीताराम (दिल्ली)	1961-62	277·4	76	539	40	13·47
वी. वी. कुमार (मद्रास)	1960-61	199.5	61	432	31	13·93
बी. डी. सोंधी (दिल्ली)	1963-64	206	52	453	32	14·15
बी. बोस (बिहार)	1959-60	230·3	97	486	34	14·29
पी. आर. उमरीगर (बम्बई)	1956-57	288·5	117	502	35	14·34
एस. कुंडु (बंगाल)	1960-61	182·5	46	470	32	14·68
वी. वी. कुमार (मद्रास)	1959-60	185·5	39	489	33	14·81
इकबाल करण (सेना)	1950-51	176	31	491	33	14·87
जी. एम. गार्ड (बम्बई)	1959-60	181·3	40	465	31	15·00
एस. डब्लू. सोहनी (बड़ोदा)	1948-49	228·4	50	499	33	15·12
वी. वी. कुमार (मद्रास)	1958-59	199·4	47	493	30	16.43
वी. एस. हजारे (बड़ोदा)	1946-47	288	81	639	38	16·81
बी. के. गरूडचर (मैसूर)	1941-42	187·5	20	573	34	16·85

सी. टी. सरवटे (होलकर)	1944-45	234·5	53	576	30	19·20
वी॰ पी. गुप्ते (बम्बई)	1962-63	221·3	41	744	38	19·31
सी. एस. नायुडू (होलकर)	1944-45	280·1	46	790	33	23·93
अमीर इलाही (बड़ौदा)	1945-46	284·3	59	718	30	23.93

विकेट-रक्षण :

अपने खेल-जीवन में पचास या अधिक को परास्त करने वाले विकेट-रक्षक

90 (67 कै., 23 स्ट.) एन. एस. तम्हाने (बम्बई)
76 (55 कै., 21 स्ट.) एम. के॰ मंत्री (बम्बई)
71 (49 कै., 22 स्ट.) पी. जी॰ जोशी (महाराष्ट्र)
64 (42 कै., 22 स्ट.) एम. जे. लिमये (बड़ौदा)
55 (26 कै., 29 स्ट.) ए. के. खन्ना (दिल्ली)
52 (49 कै., 9 स्ट.) एम. के॰ सूर्यवीरसिंह (राजस्थान)

एक खेल-वर्ष में बीस या अधिक को परास्त करने वाले विकेट-रक्षक

23 (10 कै., 13 स्ट.) ए॰ के॰ खन्ना (दिल्ली) 1961-62
22 (13 कै., 9 स्ट.) आर. के. इन्द्रजीतसिंह (दिल्ली) 1960-61
21 (11 कै., 10 स्ट.) आर. वी. निम्बालकर (बड़ौदा) 1945-46
20 (14 कै., 6 स्ट.) एम. जे. लिमये (बड़ौदा) 1957-58
20 (18 कै., 2 स्ट) एम. के. सूर्यवीरसिंह (राजस्थान) 1961-62

एक मैच में सात या अधिक को परास्त करने वाले विकेट-रक्षक

9 (4 कै. 5 स्ट.) एम॰ के॰ मंत्री, बम्बई वि॰ उत्तर भारत, 1941-42
8 (5 कै. 3 स्ट.) एम. के. सूर्यवीरसिंह, राजस्थान वि॰ विदर्भ, 1959-60
7 (4 कै. 3 स्ट.) पी. मैकोश, मैसूर वि॰ मद्रास, 1936-37
7 (5 कै. 2 स्ट) एम॰ ओ॰ श्रीनिवासन, मद्रास वि॰ मैसूर, 1941-42
7 (6 कै. 1 स्ट.) एम॰ के॰ मंत्री, बम्बई वि॰ मद्रास, 1949-50
7 (6 कै. 1 स्ट.) एन. एस. तम्हाने, बम्बई वि॰ बड़ौदा, 1953-54
7 (7 कै.) एम. जे. लिमये, बड़ौदा वि॰ महाराष्ट्र, 1958-59

7 (3 कै. 4 स्ट.) पी. के. बेलिअप्पा, मद्रास वि० केरल, 1959-60
7 (4 कै. 3 स्ट.) ए. के. खन्ना, दिल्ली वि० उत्तर पंजाब, 1961-62
7 (7 कै.) एम. के. सूर्यवीरसिंह, राजस्थान वि० विदर्भ, 1961-62
7 (5 कै. 2 स्ट.) बी. के. कुन्दरन, रेलवे वि० सेना, 1961-62

एक पारी में पांच को परास्त करने वाले विकेट-रक्षक

के. आर. मेहरोमजी, पश्चिम भारत वि० सिंध	1934-35
ईसा खाँ, हैदराबाद वि० मद्रास	1934-35
जी. ई. बी. अबेल, उत्तर भारत वि० सेना	1934-35
पी. मैकोश, मैसूर वि० मद्रास	1936-37
एम. आर. जैवन्त, सी. पी. और बरार वि० हैदराबाद	1936-37
एम. के. मंत्री, बम्बई वि० उत्तर भारत	1941-42
आर. बी. निम्बालकर, बड़ौदा वि० पंजाब	1945-46
आर. बी. निम्बालकर, बड़ौदा वि० होल्कर	1946-47
आर. बी. निम्बालकर, बड़ौदा वि० बम्बई	1948-49
एन. एस. तम्हाने, बम्बई वि० महाराष्ट्र	1953-54
डी. एल. चक्रवर्ती, मद्रास वि० हैदराबाद	1954-55
आत्मासिंह, सेना वि० दिल्ली	1954-55
एम. के. सूर्यवीरसिंह, राजस्थान वि० सेना	1959-60

क्षेत्र-रक्षण :

पचास या अधिक कैच, अपने खेल-जीवन में

63 मुश्ताक अली
62 पी. आर. उमरीगर
59 सी. एस. नायुडू
56 वी. एस. हजारे
55 एच. आर. अधिकारी
52 एम. एम. जगदाले

एक खेल-वर्ष में सबसे अधिक कैच

12 एस. मुस्तफी (बंगाल) 1943-44

एक मैच में सबसे अधिक कैच

6 यू. एम. मर्चेंट, बम्बई वि० होल्कर, 1944-45

एक पारी में सबसे अधिक कैच

4·······सी. रामस्वामी (मद्रास)

वी. के. कालापेसी (बम्बई)
शान्तिलाल गांधी (पश्चिम भारत)
सी. पी. जोनस्टोन (मद्रास)
एम. मुस्तफी (बंगाल)
एम. जे. गोपालन (मद्रास)
यू. एम. मर्चेंट (बम्बई)
एस. रामा राव (मैसूर)
पी. आर. उमरीगर (दो बार बम्बई की ओर से और एक बार गुजरात की ओर से)
मुश्ताक अली (होल्कर)
आर. जी. नाडकर्णी (महाराष्ट्र)
पी. रॉय (बंगाल)
जी. एस. रामचन्द (बम्बई)
वी. डी. गोसावी (विदर्भ)
सी. बी. रमेश (सेना)
पी. सी. पोद्दार (राजस्थान)
सी. जी. जोशी (राजस्थान)

ओवर :

एक पारी में 70 या अधिक ओवर

	वर्ष	ओवर	मे.ओ.	रन	विकेट
गुलाम अहमद, हैदराबाद वि० होल्कर,	1950-51	92·3	21	245	4
सी. एस. नायुडू, होल्कर वि० बम्बई,	1944-45	88	15	275	5
गुलाम अहमद, हैदराबाद वि० बम्बई,	1947-48	85	11	209	3
एस. जी. शिन्दे, बड़ौदा वि० बम्बई,	1948-49	85	16	224	1
सी. के. नायुडू, होल्कर वि० बड़ौदा,	1946-47	80	12	178	4
एस. जी. शिन्दे, महाराष्ट्र वि० बम्बई,	1943-44	75·5	10	186	5
सी. एस. नायुडू, बड़ौदा वि० बम्बई,	1943-44	75	16	166	7
सी. टी. सरवटे, होल्कर वि० बम्बई,	1944-45	73	13	205	2
सी. टी. सरवटे, महाराष्ट्र वि० बम्बई,	1940-41	73	13	154	2
ग्यालचन्द, काठियावाड़ वि० बड़ौदा,	1949-50	73	24	123	5

एस. के. गिरधारी, असम वि० बंगाल,	1956-57	73	16	157	7
सी. टी. सरवटे, होल्कर वि० बड़ोदा,	1954-55	72	32	103	6
एच. जी. गायकवाड, होल्कर वि० बंगाल,	1949-50	71·4	34	84	6
वी. मांकड, बंगाल वि० बम्बई,	1948-49	71	21	133	3

सी. एस. नायुडू ने होल्कर की ओर से बम्बई के विरुद्ध 1944-45 में पहली पारी में 64·5 ओवर और दूसरी पारी में 88 ओवर गेंदबाजी की। इस प्रकार मैच में कुल 152·5 ओवर गेंदबाजी की जो प्रथम श्रेणी के मैचों में विश्व-रेकार्ड है।

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–1, 2–2, 3–6, 4–193, 5–237, 6–237, 7–237, 8–278, 9–310, 10–344.

द्वितीय पारी : 1–29, 2–137, 3–160, 4–172, 5–178.

शेष भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
अमरनाथ	11	4	27	1	—	—	—	—
सोहनी	20	3	68	2	10	2	39	1
जे. एम. पटेल	23	3	98	3	8	2	24	0
सूरती	11	3	56	0	17	2	63	4
दानी	13.2	3	55	2	7	4	14	0
जयसिम्ह	1	0	19	0	6	0	44	0
मिल्खासिंह	2	0	11	0	—	—	—	—
कांट्रेक्टर	—	—	—	—	6	1	18	0

शेष भारत

कांट्रेक्टर कै. और बा. अमरोलीवाला	108	अपराजित	3
कुन्दरन बा. गार्ड	2	बा. अमरोलीवाला	10
जयसिम्ह बा. अमरोलीवाला	105	कै. रामचन्द बा. केनी	8
सूरती कै. और बा. अमरोलीवाला	0	पगबाधा बा. पाई	8
मिल्खासिंह बा. दिवाडकर	0		
दानी बा. अमरोलीवाला	38	कै. और बा. अमरोलीवाला	17
मोदी कै. अमरोलीवाला बा. गार्ड	12		
रांगणेकर कै. तम्हाने बा. गार्ड	0	पगबाधा बा. दिवाडकर	1
प्रेम भाटिया पगबाधा बा. अमरोलीवाला	22	कै. पाई बा. आपटे	50
सोहनी पगबाधा बा. अमरोलीवाला	0	पगबाधा बा. गार्ड	12
पटेल अपराजित	3		
अतिरिक्त	8	अतिरिक्त	2
	298	सात विकटों पर	111

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–5, 2–201, 3–205, 4–206, 5–230, 6–243, 7–243, 8–279, 9–279, 10–298.

द्वितीय पारी : 1–18, 2–30, 3–55, 4–74, 5–81, 6–96, 7–101.

जेड. आर. ईरानी ट्रॉफी

सर्वश्री स्पेन्सर्स कम्पनी ने क्रिकेट को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से 2000 रुपये मूल्य की एक ट्रॉफी अखिल भारतीय क्रिकेट नियन्त्रण बोर्ड को प्रदान की। श्री जेड. आर. ईरानी जो क्रिकेट नियन्त्रण बोर्ड के कोषाध्यक्ष और उपाध्यक्ष रहे हैं तथा अब अध्यक्ष हैं उनके नाम से यह ट्रॉफी प्रारम्भ की गई। इसके लिये रणजी ट्रॉफी की विजेता टीम और शेष भारत की मिली जुली टीम के बीच संघर्ष होता है।

इस प्रतियोगिता का पहला मैच दिल्ली में मार्च 18, 19 और 20, 1961 को खेला गया। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका लेकिन प्रथम पारी में अधिक रन बनाने के कारण राष्ट्रीय विजेता बम्बई को यह ट्रॉफी प्रदान की गई। तबसे बम्बई की टीम रणजी ट्रॉफी और ईरानी ट्रॉफी में भी लगातार जीत रही है, हालांकि 1965 मे दोनों टीमें ट्रॉफी की हकदार रहीं।

खेले गये मैचों की रन गणना इस प्रकार है :

दिल्ली में : मार्च 18, 19 और 20, 1961 को।

कप्तान	: पी. आर. उमरीगर (बम्बई) और अमरनाथ (शेष भारत)
विकेट-रक्षक	: तम्हाने (बम्बई) और कुन्दरन (शेष भारत)
निर्णायक	: के. बी. सक्सेना और एस. भट्टाचार्य
परिणाम	: मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका, लेकिन ट्रॉफी बम्बई को प्रदान की गई क्योंकि पहली पारी में उसके रनों की संख्या अधिक थी।

राष्ट्रीय विजेता (बम्बई)

ए. एल. आपटे कै. कुन्दरन बा. पटेल	18	बा. सोहनी	70
एस. जी. अधिकारी पगबाधा बा. अमरनाथ	0	कै. भाटिया बा. सूरती	23
लेले कै. रांगणेकर बा. सोहनी	1		
केनी कै. कुन्दरन बा. सोहनी	4		
उमरीगर कै. जयसिम्ह बा. पटेल	102	कै. मोदी बा. सूरती	10
रामचंद कै. कांट्रेक्टर बा. पटेल	82	कै. दानी बा. सूरती	4
अमरोलीवाला कै. सूरती बा. पटेल	0	अपराजित	76
दिवाडकर पगबाधा बा. पटेल	0		
तम्हाने पगबाधा बा. दानी	15	कै. कांट्रेक्टर बा. सूरती	6
नारायण पाई अपराजित	7	अपराजित	13
गार्ड कै. जयसिम्ह बा. दानी	26		
अतिरिक्त	9	अतिरिक्त	8
	344	पांच विकटों पर पारी समाप्ति की घोषणा	210

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–1, 2–2, 3–6, 4–193, 5–237, 6–237, 7–237, 8–278, 9–310, 10–344.

द्वितीय पारी : 1–29, 2–137, 3–160, 4–172, 5–178.

शेष भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
अमरनाथ	11	4	27	1	—	—	—	—
सोहनी	20	3	68	2	10	2	39	1
जे. एम. पटेल	23	3	98	3	8	2	24	0
सूरती	11	3	56	0	17	2	63	4
दानी	13.2	3	55	2	7	4	14	0
जयसिम्ह	1	0	19	0	6	0	44	0
मिल्खासिंह	2	0	11	0	—	—	—	—
कांट्रैक्टर	—	—	—	—	6	1	18	0

शेष भारत

कांट्रैक्टर कै. और बा. अमरोलीवाला	108	अपराजित	3
कुन्दरन बा. गार्ड	2	बा. अमरोलीवाला	10
जयसिम्ह बा. अमरोलीवाला	105	कै. रामचन्द बा. केनी	8
सूरती कै. और बा. अमरोलीवाला	0	पगबाधा बा. पाई	8
मिल्खासिंह बा. दिवाडकर	0		
दानी बा. अमरोलीवाला	38	कै. और बा. अमरोलीवाला	17
मोदी कै. अमरोलीवाला बा. गार्ड	12		
रांगणेकर कै. तम्हाने बा. गार्ड	0	पगबाधा बा. दिवाडकर	1
प्रेम भाटिया पगबाधा बा. अमरोलीवाला	22	कै. पाई बा. आपटे	50
सोहनी पगबाधा बा. अमरोलीवाला	0	पगबाधा बा. गार्ड	12
पटेल अपराजित	3		
अतिरिक्त	8	अतिरिक्त	2
	298	सात विकटों पर	111

विकटों का पतन :

प्रथम पारी : 1–5, 2–201, 3–205, 4–206, 5–230, 6–243, 7–243, 8–279, 9–279, 10–298.

द्वितीय पारी : 1–18, 2–30, 3–55, 4–74, 5–81, 6–96, 7–101.

बम्बई की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
गार्ड	20	5	69	3	6	0	18	1
नारायण पाई	17	3	45	0	7	0	22	1
दिवाडकर	25	6	80	1	3	0	26	1
लेले	5	0	41	0	—	—	—	—
रामचन्द	3	0	11	0	—	—	—	—
अमरोलीवाला	9·1	1	44	6	7	0	33	2
एम. एल. आपटे	—	—	—	—	2	0	8	1
केनी	—	—	—	—	2	0	2	1

बम्बई में : अप्रैल 5, 6 और 7, 1963 को :

कप्तान : पी. आर. उमरीगर (बम्बई) और पी. रॉय (शेष भारत)
विकेट रक्षक : इंजीनियर (बम्बई) और कुन्दरन (शेष भारत)
निर्णायक : एच. ई. चौधरी और जे. रयूबेन्स
परिणाम : मैच में हार-जीत का फैसला नही हो सका लेकिन ट्रॉफी बम्बई को प्रदान की गई क्योकि पहली पारी मे उसके रनों की संख्या अधिक थी।

शेष भारत

जयसिम्ह पगबाधा बा. नाडकर्णी	50	कै. अधिकारी बा. देसाई	14
वी. मेहरा बा. देसाई	8	बा. दिवाडकर	46
ए. ए. बेग बा. गुप्ते	22	कै. अमरोलीवाला बा. दिवाडकर	47
मांजरेकर बा. गुप्ते	12	स्ट. अमरोलीवाला बा. दिवाडकर	16
रॉय पगबाधा बा. गुप्ते	132		
हनुमन्तसिंह कै. इंजीनियर बा. गुप्ते	28	कै. अमरोलीवाला बा. दिवाडकर	16
एम. एस. गुप्ते पगबाधा बा. नाडकर्णी	93	अपराजित	34
कुन्दरन पगबाधा बा. नाडकर्णी	25	कै. नाडकर्णी बा. गुप्ते	20
एस. एस. गुप्ते रन आउट	18	अपराजित	5
के. रामचन्द्रन पगबाधा बा. नाडकर्णी	2		
भास्कर राव अपराजित	2		
अतिरिक्त	5	अतिरिक्त	16
	397	छह विकटों पर	219

बम्बई की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
रमाकान्त देसाई	13	2	43	1	7	0	37	1
उमरीगर	40	12	107	0	—	—	—	—
रामचन्द	1	0	7	0	—	—	—	—
बी. पी. गुप्ते	56	6	170	4	18	3	54	1
नाडकर्णी	43.2	28	37	4	—	—	—	—
दिवाडकर	13	3	28	0	22	8	50	3
परांजपे	—	—	—	—	4	0	19	1
अधिकारी	—	—	—	—	2	1	9	0
वाडेकर	—	—	—	—	9	0	34	0

राष्ट्रीय विजेता (बम्बई)

इंजीनियर रन आउट	72
एस. जी. अधिकारी कै. जयसिम्ह बा. मांजरेकर	173
परांजपे बा. गुप्ते	66
नाडकर्णी कै. कुन्दरन बा. गुप्ते	91
उमरीगर अपराजित	124
वाडेकर कै. मांजरेकर बा. रामचन्द्रन	0
रामचन्द अपराजित	13
अतिरिक्त	27
पांच विकटों पर पारी [illegible]	566

शेष भारत की [illegible]

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
भास्कर राव	21	2	[illegible]	0
जयसिम्ह	36	3	[illegible]	0
एस. एस. गुप्ते	21	2	73	2
रामचन्द्रन	39	9	119	1
हनुमन्त सिंह	7	1	45	0
मांजरेकर	15	2	43	1
बेग	1	1	7	0

अनन्तपुर में, मार्च [illegible], [illegible] और 29, 1964 को [illegible]
कप्तान : आर. बी. [illegible] ([illegible]) और [illegible]
बम्बई ने मैच 109 [illegible]

राष्ट्रीय विजेता (बम्बई)

अधिकारी कै. गायकवाड बा. हबीब	1	बा. चन्द्रशेखर	18
पाटणकर रन आउट	34	बा. चन्द्रशेखर	23
सरदेसाई बा. चन्द्रशेखर	41	कै. भोसले बा. सुब्रमण्यम	15
नाडकर्णी रन आउट	60	पगबाधा बा. चन्द्रशेखर	14
वाडेकर कै. बोर्डे बा. चन्द्रशेखर	30	बा. चन्द्रशेखर	3
परांजपे कै. और बा. बोर्डे	0	कै. हबीब बा. चन्द्रशेखर	6
दिवाडकर रन आउट	0	बा. चन्द्रशेखर	0
ए. वी. मांकड बा. चन्द्रशेखर	6	बा. चन्द्रशेखर	29
रमाकांत देसाई पगबाधा बा. बोर्डे	0	बा. सुब्रमण्यम	4
वरदे अपराजित	4	कै. जयसिम्ह बा. चन्द्रशेखर	0
बी. पी. गुप्ते कै. हबीब बा. बोर्डे	0	अपराजित	14
अतिरिक्त	28	अतिरिक्त	19
	204		145

शेष भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
हबीब खाँ	9	1	35	1	6	3	3	0
जयसिम्ह	4	2	6	0	2	0	13	0
चन्द्रशेखर	22	7	56	3	19·1	4	41	7
सूरती	15	4	52	0	6	3	11	0
बोर्डे	17	4	27	3	7	1	29	0
सुब्रमण्यम	—	—	—	—	11	2	29	3

शेष भारत

कुन्दरन पगबाधा बा. वरदे	2	पगबाधा बा. गुप्ते	11
एस. पी. गायकवाड बा. दिवाडकर	21	पगबाधा बा. गुप्ते	0
पोद्दार पगबाधा बा. गुप्ते	13	बा. गुप्ते	52
हनुमन्तसिंह पगबाधा बा. नाडकर्णी	4	पगबाधा बा. गुप्ते	6
जयसिम्ह बा. नाडकर्णी	0	कै. वाडेकर बा. गुप्ते	4
भोंसले कै. नाडकर्णी बा. गुप्ते	4	बा. दिवाडकर	59
सुब्रमण्यम बा. गुप्ते	5	स्ट. पाटणकर बा. गुप्ते	4
बोर्डे बा. नाडकर्णी	1	बा. गुप्ते	0
सूरती बा. नाडकर्णी	14	रन आउट	3
चन्द्रशेखर अपराजित	8	स्ट. पाटणकर बा. गुप्ते	2
हबीब खाँ बा. नाडकर्णी	0	अपराजित	1
अतिरिक्त	11	अतिरिक्त	15
	83		157

बम्बई की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
रमाकान्त देसाई	3	1	6	0	3	2	1	0
वरदे	4	0	19	1	—	—	—	—
वी. पी. गुप्ते	13	7	26	3	23·5	8	48	8
नाडकर्णी	14·1	8	11	5	36	18	49	0
दिवाडकर	3	0	10	1	12	2	37	1
ए. वी. मांकड	—	—	—	—	4	0	7	0

मद्रास में सितम्बर 18, 19, 20 और 21, 1965 को :

कप्तान : आर० जी० नाडकर्णी (बम्बई) और सी० जी० बोर्डे (शेष भारत)। वर्षा के कारण पहले दिन बिलकुल खेल नही हो सका और बाकी के दिनों में भी बार बार खेल बन्द करना पड़ा। दोनों टीमों को छह-छह महीनों के लिए ट्राफी प्रदान की गई।

शेष भारत

कुन्दरन कॅ. गुप्ते बा. शिवालकर	38
बेलिअप्पा रन आउट	16
पोद्दार बा. कुलकर्णी	0
मोसले कॅ. कुलकर्णी बा. नाडकर्णी	21
बोर्डे कॅ. इंजीनियर बा. नरवेकर	8
जयसिम्हा स्ट· इंजीनियर बा. शिवालकर	9
सूरती पगवाधा बा. नाडकर्णी	53
सुब्रमण्यम बा. शिवालकर	5
रमेश सक्सेना कॅ. और बा. नाडकर्णी	14
सलीम दुर्रानी अपराजित	49
वेंकटराघवन पगबाधा बा. नाडकर्णी	20
अतिरिक्त	10
	243

विकटों का पतन :

1–22, 2–30, 3–69, 4–82, 5–90,
6–97, 7–118, 8–168, 9–187, 10–243.

बम्बई की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
कुलकर्णी	12	4	23	1
नरवेकर	26	6	74	1
शिवालकर	36	13	65	3
नाडकर्णी	29·5	10	40	4
दिवाडकर	11	1	31	0

बम्बई

सरदेसाई कै. भोसले बा. जयसिम्ह	10
इंजीनियर कै. वेलिअप्पा बा. सुब्रमण्यम	12
परांजपे कै. दुर्रानी बा. सूरती	33
नाडकर्णी पगबाधा बा. वेंकटराघवन	5
वाडेकर बा. सुब्रमण्यम	64
ए. वी. मांकड कै. सुब्रमण्यम बा. वेंकटराघवन	8
दिवाडकर बा. सूरती	15
कुलकर्णी पगबाधा बा. सुब्रमण्यम	1
गुप्ते कै. बोर्डे बा. वेंकटराघवन	2
शिवालकर अपराजित	0
नरवेकर अपराजित	0
अतिरिक्त	24
नौ विकटो पर	174

विकटों का पतन :

1–16, 2–22, 3–29, 4–93, 5–105, 6–161, 7–169, 8–170, 9–172.

शेष भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
जयसिम्ह	10	2	13	1
सुब्रमण्यम	9	5	18	3
वेंकटराघवन	43	19	52	3
सूरती	21	5	44	2
दुर्रानी	15	7	23	0

कुमार श्री दिलीपसिंहजी

दिलीपसिंहजी को क्रिकेट के क्षेत्र में विश्व-विश्रुत प्रशंसा प्राप्त हुई थी। जब वे सत्ताइस वर्ष की अवस्था में अपने खेल की चोटी पर थे तभी रोग ने उनके क्रिकेट के जीवन काल को समाप्त कर दिया और उन्हें इस खेल से विदा लेने को बाध्य होना पड़ा। उनके अल्प परन्तु शानदार क्रिकेट जीवन ने उन्हें बहुत लोकप्रिय बना दिया था और लोगों को इस विचार से ही दुःख होता था कि वे अब भविष्य में अपने प्रिय कलाकार का खेल नहीं देख सकेंगे, न ही वे उनके 'स्लिप्स' में आश्चर्यजनक लपकों को देख सकेंगे, और न ही यह कुलीन क्रिकेट का खिलाड़ी अब हरे मैदान में देखा जायेगा।

मैंने प्रथम बार दिलीपसिंहजी को 1946 में देखा था। एक वर्ष बाद उन्होंने मेरी एक पुस्तक का 'प्राक्कथन' लिखा। सितम्बर और अक्टूबर 1959 में वे राजस्थान के क्रिकेट खिलाड़ियों को खेल के अच्छे दाव सिखाने उदयपुर पधारे। राजस्थान क्रिकेट संघ के अवैतनिक सचिव के रूप में मुझे ही सारे प्रबन्धों का निरीक्षण करना पड़ता था और यह मेरे लिये वास्तव में एक दुर्लभ गौरव की बात थी कि मुझे इस प्रभावशाली राजकुमार के साथ बहुत नजदीक से खेल के मैदान में और बाहर काम करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। दो अक्टूबर को मेरा आतिथ्य स्वीकार कर उन्होने मुझे परम सम्मान प्रदान किया। संयोगवश 1947 में इसी दिन उन्होने मेरी पुस्तक "इण्डियन क्रिकेटियर्स इन आस्ट्रेलिया" का प्राक्कथन लिखा था।

तीन दिन पश्चात् जब मैंने उन्हें बिदा दी तो यह आशा थी कि मुझे उनके साथ मिलने के और अधिक अवसर प्राप्त होंगे। यह सोचने का लेशमात्र भी कारण नही था कि यही उनके साथ अंतिम भेंट सिद्ध होगी। 15 दिसम्बर को आकाशवाणी द्वारा इस महान् व्यक्ति के निद्रा में ही चिरनिद्रा मे सो जाने की घोषणा की गई। इस दुःखद समाचार ने हमें और समस्त संसार के उन हजारों लोगों को स्तंभित कर दिया जिन्होने दिलीपसिंह जी की सफलताओं को देखा या सुना था।

उनकी लोकप्रियता का रहस्य क्या था ? क्यों लोग उन्हें इतना प्यार और सम्मान देते थे। उन्होने कभी क्रिकेट नियंत्रण बोर्ड का कोई पद ग्रहण नही किया था फिर भी बोर्ड ने सर्वसम्मति से उनकी स्मृति में दिलीप ट्रॉफी के लिये अखिल भारतीय क्षेत्रीय प्रतियोगिता चलाने का निश्चय किया।

इसका कारण यह है कि वे न केवल अपने समय के महानतम क्रिकेट खिलाड़ी ही थे अपितु वे क्रिकेट के गौरव और सम्मान के प्रतीक थे। उनका व्यक्तित्व प्रभावशाली था, वे मिलनसार, दयालु और गर्वरहित व्यक्ति थे। उनके कार्य सदैव लाभप्रद होते थे जिन पर कुलीनता की छाप लगी होती थी। उनका दिमाग बहुत तेज था और वे किसी बात को बहुत जल्दी से समझ कर निर्णय ले लेते थे। अपने प्रेमपूर्ण व्यवहार और गंभीर विचारों से उन लोगों को बहुत अच्छी तरह मंत्रणा देते थे जो उनके पास परामर्श के लिये आते थे। अपनी शराफत और जिन्दादिली के कारण लोग उन्हे प्यार करते थे। वे एक उच्चकोटि के प्रशासक और बहुत ही निपुण लोक सेवक होने के साथ-साथ वास्तविक अर्थ मे एक भले आदमी थे जिन्होने अपने सामान्य जीवन में दिया अधिक और लिया कम।

दिलीपसिंह जी का जन्म 13 जून, 1905 को नवानगर राज्य के सरोदर नामक गाँव मे हुआ था। उनके पिता जीवनसिंह जी जादेजी, रणजी के छोटे भाई थे। आठ से बारह वर्ष की आयु के बीच उन्हे अपने विख्यात चाचा से प्रशिक्षण मिला था। जब वह केवल 13 वर्ष के थे तभी उन्होंने राजकुमार महाविद्यालय मे एक गृह मैच में शतक बनाया था। अप्रैल 1919 में उन्होने इंग्लैंड के एक पब्लिक स्कूल में प्रवेश किया और वहाँ से एक होनहार बल्लेबाज के रूप मे सिद्ध हुए। 1923 में शेल्टनहम कॉलिज का नेतृत्व करने वाले वह पहले भारतीय थे। 1925 मे उन्होंने केम्ब्रिज में प्रवेश किया तथा सोमरसेट और सेना के विरुद्ध शतक बनाये। इसके एक वर्ष पहले उन्होने इंग्लैंड मे अपना पहला शतक लार्ड्स के मैदान में एम० सी० सी० और केम्ब्रिज विश्वविद्यालय के मैच में दर्ज किया था।

1926 मे ससेक्स की सहायता के लिये उन्होंने अपने को योग्य सिद्ध किया। उन्होंने इग्लैंड में सात वर्ष खेल खेला; उसमें ससेक्स के लिये 33 शतक बनाये जो उनके क्रिकेट के अल्प जीवन के 49 शतकों में से थे। उन्होने तीन बार दोनों पारियो में शतक बनाये : 1929 में ससेक्स की ओर से कॅंट के विरुद्ध 115 और 246 रन; 1930 मे ससेक्स की ओर से मिडलसेक्स के विरुद्ध 116 और बिना आउट हुए 102 रन तथा अगले मैच में जो लार्ड्स मे खेला गया था 'जॅंटलमेन' की ओर से 'प्लेयर्स' के विरुद्ध 125 और बिना आउट हुए 103 रन बनाये थे। 1930 में उन्होंने 48 पारियों मे तीन बार अपराजित रहकर 2562 रन बनाये थे। इसी वर्ष ससेक्स की ओर से नार्थम्पटनशायर के विरुद्ध 333 रन बनाये जो उनके जीवन की सबसे ऊंची पारी थी।

1930 में लार्ड्स में आस्ट्रेलिया के विरुद्ध दूसरे टैस्ट मैच में ऐन मौके पर हरबर्ट सटक्लिफ के घायल हो जाने से उन्हें टीम में लिया गया, परन्तु उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि वह विश्व की किसी भी टीम में सम्मिलित होने के लिये बहुत योग्य थे। इंग्लैंड के खेल का श्रीगणेश बहुत निराशाजनक था परन्तु दिलीपसिंह जी ने अपनी टीम को कठिनाई से उबार लिया। उन्होंने आस्ट्रेलिया के विरुद्ध अपने पहले ही टैस्ट में शतक बनाकर क्रिकेट के क्षेत्र में अपना नाम अमर कर लिया। 'पूर्व का जादूगर' 'लार्ड्स में दिलीप का जादू' जैसी शीर्ष-पंक्तियों से समाचार-पत्र भर गए। उन्होंने इस टैस्ट श्रृंखला में 416 रन एकत्र किये और इंग्लैंड के खिलाड़ियों में उनका 59·42 रन प्रति पारी का औसत द्वितीय स्थान पर था।

1931 में प्रथम श्रेणी के क्रिकेट मे 51 पारियों मे उन्होंने 2684 रन एकत्र किए थे जिसमें 12 शतक और दो अपराजित पारियां थी। इसमे ओवल मे न्यूजीलैंड के विरुद्ध दूसरे टैस्ट मैच में खेली गई 109 रन की पारी भी सम्मिलित थी।

1932 में भी उनका प्रदर्शन उतना ही शानदार रहा। अपनी 33 पारियों में उन्होने 1633 रन एकत्र किए थे तथा दो बार अपराजित रहे थे। वे गंभीर रूप से अस्वस्थ थे फिर भी उन्होंने अपनी 90 रन की आखरी पारी, चिकित्सा-परामर्श के विरुद्ध, ससेक्स की ओर से सोमरसेट के विरुद्ध खेली जो कि इस जाज्वल्यमान नक्षत्र की अंतिम चमक थी। यद्यपि इंग्लैंड की ओर से आस्ट्रेलिया की यात्रा करने के लिये दिलीपसिंह जी चुन लिए गए थे परन्तु वे नहीं जा सके। इस प्रकार इस सर्वोत्कृष्ट बल्लेबाज के खेल जीवन का, समय से पूर्व ही, अन्त हो गया जो उतना ही शानदार क्षेत्र-रक्षक भी था, विशेषकर 'स्लिप्स' में और जिसने अपने संक्षिप्त जीवन में 331 पारियों में 23 बार अपराजित रहकर और प्रति पारी 49·69 रन के औसत से 15306 रन बनाये थे। 1929 और 1931 के बीच इंग्लैंड में उन्होंने प्रथम श्रेणी के खेल में 7791 रन बनाए जबकि इसी अवधि मे विख्यात खिलाड़ी एच० सटक्लिफ 7507 रन; पी० ई० वूले 7128 रन; ए० सैंडम 7069 रन; जे० बी० हॉब्स 6784 रन; ई० हेंडरेन 6681 रन; आर० ई० एस० वायट 6312 रन और डब्लू० आर० हेमंड 6269 रन से अधिक नही बना सके थे।

इसके बाद दिलीपसिंह जी ने एक प्रशिक्षक, चयनकर्त्ता, रेडियो-टीकाकार और पत्रकार के रूप में भारतीय क्रिकेट की सफल सेवा की। भारत के हाई कमिश्नर के रूप में आस्ट्रेलिया में उन्होंने अपने आपको एक

निपुण कूटनीतिज्ञ सिद्ध किया। 1954 में उन्हें सौराष्ट्र लोक सेवा आयोग का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। उन्हें अखिल भारतीय खेलकूद परिषद् के सदस्य के रूप में नामजद किया गया। बाद में उन्होंने बड़ी दक्षता के साथ इस परिषद् की अध्यक्षता का भार भी वहन किया। खेद है कि उनके महान् और सुन्दर जीवन का खेल अचानक समाप्त हो गया। 4 दिसम्बर, 1959 को सोकर वे अगले दिन सुबह को नहीं उठ सके और चिरनिद्रा में सो गए। उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने कहा था, "दिलीपसिंहजी के निधन के समाचार से मैं बहुत दुःखी हुआ हूँ। वे न केवल एक महान् खिलाड़ी ही थे बल्कि एक अच्छे मानव और मित्र भी थे, मैं उनकी मृत्यु पर शोक प्रकट करता हूँ।"

——

दिलीपसिंहजी ट्रॉफी के लिये अखिल भारतीय क्षेत्रीय प्रतियोगिता

क्रिकेट नियन्त्रण बोर्ड की 33 वीं वार्षिक सामान्य बैठक में, जो सितम्बर 30, 1961 को मद्रास में हुई, यह निर्णय लिया गया कि विश्व विख्यात क्रिकेट खिलाड़ी कुमार श्री दिलीपसिंह जी की स्मृति में एक प्रतियोगिता का आयोजन किया जाय। क्रिकेट नियन्त्रण बोर्ड ने इसके लिये 5000 रुपये की लागत की एक ट्रॉफी प्रदान की और 1961-62 से दिलीपसिंहजी ट्रॉफी के लिये अखिल भारतीय क्षेत्रीय प्रतियोगिता आरम्भ हुई। इसका प्रथम मैच मद्रास में 30 सितम्बर, 1961 को दक्षिण क्षेत्र और उत्तर क्षेत्र के बीच खेला गया। तब से समस्त क्षेत्रीय दल नियमपूर्वक इस प्रतियोगिता में भाग ले रहे हैं।

अब तक खेले गये मैचों के परिणाम इस प्रकार हैं:—

1961–62 :

मद्रास में : सितम्बर 30, अक्टूबर 1 और 2, 1961 को।

दक्षिण क्षेत्र : 302 (मिल्खासिंह 151)।

उत्तर क्षेत्र : 48 और 166 (प्रेम भाटिया 52)।

दक्षिण क्षेत्र एक पारी और 88 रनों से विजयी।

बम्बई में : अक्टूबर 8, 9 और 10, 1961 को।

मध्य क्षेत्र : 5 विकटों पर 287 और पारी समाप्ति की घोषणा (सूर्यवीरसिंह 94, सलीम दुर्रानी 78)।

पूर्व क्षेत्र : 7 विकटों पर 174 रन। वर्षा के कारण दोनों दलों की एक-एक पारी भी समाप्त नहीं हो सकी। सिक्का उछाल कर मध्य क्षेत्र विजयी घोषित कर दिया गया।

बड़ोदा में : अक्टूबर 13, 14 और 15, 1961 को।

मध्य क्षेत्र : 330 (सलीम दुर्रानी 110, वी. एल. मांजरेकर 102, आर. बी. देसाई ने 70 रन देकर 5 विकटें लीं) और 148 (सलीम दुर्रानी 56)।

पश्चिम क्षेत्र : 360 (सी. जी. बोर्डे 116, इन्द्रजीतसिंहजी 67) और 2 विकटों पर 121 रन।

पश्चिम क्षेत्र : 8 विकटों से विजयी।

अंतिम मैच :

बम्बई में : अक्टूबर 20, 21, 22 और 23, 1961 को ।
दक्षिण क्षेत्र : 175 (कृपालसिंह 73, उमरीगर ने 52 रन देकर 6 विकटें लीं) और 139 रन ।
पश्चिम क्षेत्र : 9 विकटों पर 234 और पारी समाप्ति की घोषणा (बोर्डे 82*) और बिना विकेट खोये 82 रन ।
पश्चिम क्षेत्र : 10 विकटों से विजयी ।

1962-63 :

कलकत्ता में : दिसम्बर 31, 1962 और जनवरी 1 और 2, 1963 को ।
पूर्व क्षेत्र : 160 (एस. दास 60) और 139 रन ।
उत्तर क्षेत्र : 266 (प्रेम भाटिया 107, एस. कुंडू ने 59 रन देकर 6 विकटें लीं) और बिना विकेट खोए 37 रन ।
उत्तर क्षेत्र : 10 विकटों से विजयी ।

बंगलौर में : जनवरी 12, 13 और 14, 1963 को ।
मध्य क्षेत्र : 363 (हनुमन्तसिंह 118, वी. एल. मांजरेकर 88, के. एम. रूंगटा 52) ।
दक्षिण क्षेत्र : 6 विकटों पर 237 (कृपालसिंह 72, जयसिम्हा 60) । सिक्का उछाल कर दक्षिण क्षेत्र विजयी घोषित किया गया ।

दिल्ली में : जनवरी 12, 13 और 14, 1963 को ।
उत्तर क्षेत्र : 316 (आकाशलाल 136, बी. पी. गुप्ते ने 85 रन देकर 5 विकटें लीं) और 4 विकटों पर 181 (आकाशलाल 58, वी. मेहरा 55) ।
पश्चिम क्षेत्र : 434 (उमरीगर 120, एस. जी. अधिकारी 111, इंजीनियर 61) ।
पश्चिम क्षेत्र : *पहली पारी से विजयी ।*

अंतिम मैच

कलकत्ता में : जनवरी 24, 25, 26 और 27, 1963 को ।
दक्षिण क्षेत्र : 132 (बी. पी. गुप्ते ने 55 रन देकर 9 विकटें लीं) और 263 (प्रेम 78, जयसिम्हा 61) ।
पश्चिम क्षेत्र : 415 (एस. जी. अधिकारी 103, उमरीगर 103, वाडेकर 93, जयसिम्हा ने 76 रन देकर 5 विकटें लीं) ।
पश्चिम क्षेत्र एक पारी और 20 रनों से विजयी ।

---

* अपराजित

1963-64 :

कलकत्ता में : दिसम्बर 7, 8 और 9, 1963 को।

पूर्व क्षेत्र : 430 (पी. सी. पोद्दार 104, एस. एस. मित्रा 77, ए. रॉय 62) और 5 विकटों पर 167 (एस. एस. मित्रा 64)।

मध्य क्षेत्र : 321 (हनुमन्त सिंह 83, डी. डी. देशपाण्डे 68, सूर्यवीर सिंह 51, ए. भट्टाचार्य ने 105 रन देकर 5 विकटें ली)।

पूर्व क्षेत्र प्रथम पारी के आधार पर विजयी।

बम्बई में : दिसम्बर 14, 15 और 16, 1963 को।

पूर्व क्षेत्र : 119 और 189 रन।

पश्चिम क्षेत्र : 4 विकटों पर 331 और पारी समाप्ति की घोषणा (एन. जे. कांट्रैक्टर 144, एस. पी. गायकवाड 138)।

पश्चिम क्षेत्र एक पारी और 23 रनों से विजयी।

दिल्ली में : दिसम्बर 23, 24 और 25, 1963 को।

उत्तर क्षेत्र : 285 (पटौदी के नवाब 141, बी. एस. चन्द्रशेखर ने 78 रन देकर 5 विकटें ली) और 207 (पटौदी के नवाब 61)।

दक्षिण क्षेत्र : 297 (सुब्रमण्यम 120)।

दक्षिण क्षेत्र पहली पारी के आधार पर विजयी।

अंतिम मैच

दिल्ली में : दिसम्बर 27, 28, 29 और 30, 1963 को।

दक्षिण क्षेत्र : 331 (मिल्खासिंह 95, पी. के. बेलिअप्पा 72, आर. बी. देसाई ने 63 रन देकर 5 विकटें ली)।

पश्चिम क्षेत्र : बिना विकेट खोये 47 रन। वर्षा के कारण दोनों दलों की प्रथम पारी भी समाप्त नही हो सकी। इसलिए ट्रॉफी में दोनों दलों का हिस्सा रहा।

1964-65 :

दिल्ली में : अक्टूबर 24, 25 और 26, 1964 को।

उत्तर क्षेत्र : 246 (वाई. एम. चौधरी 63*, सी. जी. जोशी [illegible] रन देकर 5 विकटें ली) और 3 विकटों पर 156 रन [illegible] समाप्ति की घोषणा (वी. मेहरा 56*, पटौदी के नवाब 52)।

मध्य क्षेत्र : 249 (मांजरेकर 113) और 2 विकटों [illegible] रन (मूर्ति 50*)।

मध्य क्षेत्र : प्रथम पारी के आधार पर विजयी।

हैदराबाद में : नवम्बर 14, 15 और 16, 1964 को।

मध्य क्षेत्र : 413 (हनुमन्तसिंह 210, आनन्द शुक्ला 61) और 1 विकेट पर 156 और पारी समाप्ति की घोषणा (हनुमन्तसिंह 73*, सूर्यवीरसिंह 59)।

दक्षिण क्षेत्र : 265 (सुब्रमण्यम 82, मनी 62) और 7 विकटों पर 184 (वेग 77)।

मध्य क्षेत्र : पहली पारी के आधार पर विजयी।

कलकत्ता में : फरवरी 4, 5 और 6, 1965 को।

पश्चिम क्षेत्र : 6 विकटों पर 493 और पारी समाप्ति की घोषणा (वाडेकर 229, मोंसले 110, सूरती 65)।

पूर्व क्षेत्र : 182 (बी. पी. गुप्ते ने 74 रन देकर 6 विकटें ली) और 6 विकटों पर 311 (पी. रॉय 75, ए. रॉय 73, एस. मित्रा 62)।

पश्चिम क्षेत्र : पहली पारी के आधार पर विजयी।

अंतिम मैच :

बम्बई में : फरवरी 13, 14 और 15, 1965।

पश्चिम क्षेत्र : 555 (इंजीनियर 142, मोंसले 100, बोर्डे 91, नाडकर्णी 69)।

मध्य क्षेत्र : 135 (नाडकर्णी ने 16 रन देकर 5 विकटें लीं) और 331 (सलीम दुर्रानी 119, पोद्दार 62, बी. पी. गुप्ते ने 67 रन देकर 5 विकटें ली)।

पश्चिम क्षेत्र : एक पारी और 89 रनों से विजयी।

---

* अपराजित

बम्बई में क्रिकेट समारोह

प्रेसीडेन्सी मैच 1895-1906

पारसी लोग भारतीय क्रिकेट में अग्रणी थे। भारत में आए हुए अंग्रेजों का क्रिकेट के प्रति स्नेह बना रहा और वे और पारसी हर वर्ष अपनी शक्ति की परीक्षा के लिये बम्बई और पूना में मैच खेला करते थे। मैचों में जोरदार मुकाबला होता था। इनसे देश में खेल के प्रति आकर्षण और उत्साह बढ़ा। इन मैचों के परिणाम इस प्रकार रहे :

वर्ष	बम्बई के विजेता	पूना के विजेता
1895	अंग्रेज	पारसी
1896	अंग्रेज	अंग्रेज
1897	मैच अनिर्णीत	पारसी
1898	अंग्रेज	अंग्रेज
1899	मैच अनिर्णीत	मैच नही खेला गया
1900	पारसी	मैच अनिर्णीत
1901	पारसी	अंग्रेज
1902	पारमी	अंग्रेज
1903	पारसी	पारसी
1904	पारसी	बरसात के कारण मैच बन्द करना पड़ा
1905	मैच नही खेला गया	पारसी
1906	मैच नही खेला गया	अंग्रेज

शतक लगाने वाले खिलाड़ी

233	एच. डी. कांगा,	पारसी	 1905
184	जे. जी. ग्रेग,	अंग्रेज	 1899
144	चेपलिन,	अंग्रेज	 1906
113	डी. सी. दारूवाला,	पारसी	 1903
100*	आर. एम. पूरे,	अंग्रेज	 1895

एक मैच में दस या उससे अधिक विकेट

13 विकेट 49 रनो पर, बी. एम. विलिमोरिया, पारसी ... 1895

13 विकेट 52 रनों पर, एम. डी. बुलसारा, पारसी ... 1900

---

* अपराजित

13 विकेट 58 रनों पर, जे. जी. ग्रेग, अंग्रेज ... 1898
13 विकेट 72 रनों पर, के. एम. मिस्त्री, पारसी ... 1902
12 विकेट 123 रनों पर, के. एम. मिस्त्री, पारसी ... 1906
11 विकेट 68 रनों पर, के. एम. मिस्त्री, पारसी ... 1903
11 विकेट 77 रनों पर, आर. एल. सिकलेयर, अंग्रेज ... 1895
11 विकेट 83 रनों पर, कूम्ब्स, अंग्रेज ... 1904
11 विकेट 93 रनो पर, एच. चेथम, अंग्रेज ... 1897
11 विकेट 172 रनो पर, एन. सी. वापासोला, पारसी ... 1901
10 विकेट 69 रनों पर, जे. जी. ग्रेग, अंग्रेज ... 1902

त्रिकोणीय (ट्राइएंगुलर) प्रतियोगिता 1907–1911

हिन्दुओं ने इन खेलों में सन् 1907 से भाग लेना शुरू किया और अब यह (प्रेसीडेन्सी प्रतियोगिता) त्रिकोणीय प्रतियोगिता हो गई और पाँच वर्ष तक बम्बई में इसके मैच खेले गये ।

इनके परिणाम इस प्रकार रहे :

वर्ष	विजेता	उप-विजेता
1907	पारसी	अंग्रेज
1908	अंग्रेज	पारसी
1909	पारसियों और अंग्रेजो के बीच हार-जीत का फैसला नही हो सका ।	
1910	हिन्दुओं और अंग्रेजो के बीच हार-जीत का फैसला नही हो सका ।	
1911	पारसी	अंग्रेज

शतक लगाने वाले खिलाड़ी

115 जे. जी. ग्रेग, अंग्रेज, पारसियों के विरुद्ध ... 1908
100 आर. पी. मेहरोमजी, पारसी, अंग्रेजों के विरुद्ध ... 1907

एक मैच में दस या उससे अधिक विकेट

12 विकेट 96 रनों पर, जे. एस. वार्डन, पारसी, अंग्रेजो के विरुद्ध ... 1911
10 विकेट 42 रनो पर, के. एम. मिस्त्री, पारसी, अंग्रेजो के विरुद्ध ... 1907
10 विकेट 50 रनों पर, एम. डी. बुलसारा, पारसी, अंग्रेजो के विरुद्ध ... 1907
10 विकेट 70 रनों पर, पी. बालू, हिन्दू, पारसियों के विरुद्ध ... 1910
10 विकेट 108 रनो पर, पी. बालू, हिन्दू, अंग्रेजों के विरुद्ध ... 1910

चतुष्कोणीय (क्वाड्रैंगुलर) प्रतियोगिता 1912–1963.

मुसलमानों ने इस प्रतियोगिता में सन् 1912 से भाग लेना शुरू किया। प्रतियोगिता का नाम अब चतुष्कोणीय हो गया। इंग्लैंड के कुछ विश्वविख्यात खिलाड़ी जैसे रोड्स, हर्स्ट, फ्राइ और लारवुड अंग्रेजों की ओर से खेलते थे। खेल के लिये देश में बड़ा उत्साह पैदा हुआ और खिलाड़ियों को सीखने और अपनी प्रतिभा दिखाने का महान् अवसर प्राप्त होने लगा।

इस प्रतियोगिता के परिणाम इस प्रकार रहे :

वर्ष	विजेता	उप-विजेता
1912	पारसी	मुसलमान
1913	हिन्दुओं और मुसलमानो के बीच हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।	
1914	हिन्दुओं और पारसियों के बीच बरसात के कारण मैच बन्द करना पड़ा।	
1915	अंग्रेज	हिन्दू
1916	पारसियों और अंग्रेजों के बीच हार-जीत का फैसला नही हो सका।	
1917	हिन्दुओं और पारसियों के बीच हार-जीत का फैसला नही हो सका।	
1918	अंग्रेज	पारसी
1919	हिन्दू	मुसलमान
1920	हिन्दुओं और पारसियों के बीच हार-जीत का फैसला नही हो सका।	
1921	अंग्रेज	पारसी
1922	पारसी	हिन्दू
1923	हिन्दू	अंग्रेज
1924	मुसलमान	हिन्दू
1925	हिन्दू	अंग्रेज
1926	हिन्दू	अंग्रेज
1927	अंग्रेज	मुसलमान
1928	पारसी	अंग्रेज
1929	हिन्दू	पारसी
1930 से 1933 तक प्रतियोगिता नहीं हुई		
1434	मुसलमान	हिन्दू
1935	मुसलमान	हिन्दू
1936	हिन्दू	अंग्रेज

शतक लगाने वाले खिलाड़ी

200, ए. एल. होजी, अंग्रेज, हिन्दुओं के विरुद्ध 1924
197, वजीर अली, मुसलमान, हिन्दुओं के विरुद्ध 1924
197, नजीर अली, मुसलमान, पारसियों के विरुद्ध 1934

183, डब्लू रोड्स, अंग्रेज, पारसियों के विरुद्ध 1921
156, एल. पी. जय, हिन्दू, मुसलमानों के विरुद्ध 1924
156, डब्लू. रोड्स, अंग्रेज, हिन्दुओं के विरुद्ध 1921
155, सी. के. नायुड, हिन्दू, मुसलमानों के विरुद्ध 1929
150, एच. डी. कांगा, पारसी, मुसलमानों के विरुद्ध 1912
148*, वजीर अली, मुसलमान, अंग्रेजों के विरुद्ध 1935
135, सी. के. नायुडू, हिन्दू, अंग्रेजों के विरुद्ध 1924
135, डी. बी. देवधर, हिन्दू, पारसियों के विरुद्ध 1925
135, जे. डब्लू. ए. स्टीफेन्सन, अंग्रेज, पारसियो के विरुद्ध 1928
135, डी. डी. हिंडलेकर, हिन्दू, मुसलमानों के विरुद्ध 1936
130, वी. एम. मर्चेंट हिन्दू, अंग्रेजों के विरुद्ध 1936
129, सी. के. नायुडू, हिन्दू, पारसियों के विरुद्ध 1935
125*, डी. के. कापडिया, पारसी. हिन्दुओं के विरुद्ध 1917
121*, एफ. जी. ट्रेवर्स, अंग्रेज, मुसलमानों के विरुद्ध 1925
121, सी. के. नायुडू, हिन्दू, पारसियों के विरुद्ध 1920
120, डब्लू. जे. क्यूलन, अंग्रेज, मुसलमानों के विरुद्ध 1927
119, एच. जे. वजीफदार, पारसी, हिन्दुओं के विरुद्ध 1920
115*, जे. एस. वार्डन, पारसी, हिन्दुओं के विरुद्ध 1912
113, एस. एन. गाधी, पारसी, अंग्रेजो के विरुद्ध 1928
111, ए. सलाम, मुसलमान, अंग्रेजों के विरुद्ध 1927
109, आर. सी. समरहेज, अंग्रेज, पारसियो के विरुद्ध 1936
108, पी. विट्ठल, हिन्दू, मुसलमानो के विरुद्ध 1919
108, वजीर अली, मुसलमान, हिन्दुओं के विरुद्ध 1935
107, जे. एच. पारसन, अंग्रेज, हिन्दुओं के विरुद्ध 1921
107, एफ. जी. ट्रेवर्स, अंग्रेज, हिन्दुओं के विरुद्ध 1923
107*, लालसिंह, हिन्दू, पारसियों के विरुद्ध 1935
107*, वी. एम. मर्चेंट, हिन्दू, अंग्रेजो के विरुद्ध 1936
105, वजीर अली, मुसलमान, पारसियों के विरुद्ध 1927
104, एल. पी. जय, हिन्दू, पारसियों के विरुद्ध 1925
104, ए. एल. होजी, अंग्रेज, पारसियों के विरुद्ध 1929
101, पी. विट्ठल, हिन्दू, अंग्रेजों के विरुद्ध 1923
101, सी. के. नायुडू, हिन्दू, मुसलमानों के विरुद्ध 1935
100*, नजीर अली, मुसलमान, हिन्दुओं के विरुद्ध 1935

---

* अपराजित

इस प्रतियोगिता की अधिकतम कुल रन संख्या : 8 विकटों पर 482 रन, अंग्रेजों ने पारसियों के विरुद्ध सन् 1921 में बनाये।

इस प्रतियोगिता की सबसे कम कुल रन संख्या : 21 रन पर पारसियों ने मुसलमानों को सन् 1915 में आउट कर दिया।

सर्वश्रेष्ठ साझेदारी

प्रथम विकेट पर : 157 रन, ए. एल. होजी और सी. बी. रूबी,
अंग्रेजों की ओर से हिन्दुओं के विरुद्ध, ... 1923

द्वितीय विकेट पर : 160 रन, एस. एच. एम. कोल्हा और एस. एन. गांधी,
पारसियों की ओर से अंग्रेजों के विरुद्ध, ... 1928

तृतीय विकेट पर : 209 रन, एच. डी. कांगा और जे. एस. वार्डन,
पारसियों की ओर से मुसलमानों के विरुद्ध, ... 1912

चौथे विकेट पर : 189 रन, सी. के. नायुडू और जे. जी. नवले,
हिन्दुओं की ओर से पारसियों के विरुद्ध, ... 1920

पांचवें विकेट पर : 197 रन, डी. बी. देवधर और सी. के. नायुडू,
हिन्दुओं की ओर से अंग्रेजों के विरुद्ध, ... 1924

छठे विकेट पर : 125 रन, एस. एम. हुसैन और ए. बापोरिया,
मुसलमानो की ओर से हिन्दुओं के विरुद्ध, ... 1935

सातवें विकेट पर : 187 रन, ए. सलाम और एम. एच. विशराम,
मुसलमानों की ओर से अंग्रेजो के विरुद्ध, ... 1927

आठवें विकेट पर : 132* रन, वी. एम. मर्चेंट और लालसिंह,
हिन्दुओं की ओर से पारसियों के विरुद्ध, ... 1935

नवें विकेट पर : 83 रन, हसनशाह और एस. अन्सारी,
मुसलमानों की ओर से अंग्रेजों के विरुद्ध, ... 1925

दसवें विकेट पर : 101 रन, हाउलेट और एफ. जी. ट्रेवर्स,
अंग्रेजों की ओर से मुसलमानों के विरुद्ध, ... 1925

एक मैच में दस या इससे अधिक विकेट

16 विकेट 188 रनों पर, आर. जे. ओ. मेयर्स, अंग्रेजों की ओर से मुसलमानों के विरुद्ध, ... 1927

13 विकेट 76 रनों पर, एम. डी. पारख, पारसियों की ओर से मुसलमानों के विरुद्ध, ... 1912

13 विकेट 133 रनों पर, एल. रामजी, हिन्दुओं की ओर से अंग्रेजों के विरुद्ध, ... 1927

---

* अपराजित

13 विकेट 170 रनों पर, एच. हैलेट, अंग्रेजों की ओर से
मुसलमानों के विरुद्ध, ... 1925
12 विकेट 59 रनों पर, डब्लू. रोड्स, अंग्रेजों की ओर से
पारसियो के विरुद्ध, ... 1921
12 विकेट 90 रनों पर, जे. एस. वार्डन, पारसियों की ओर से
मुसलमानों के विरुद्ध, ... 1916
12 विकेट 110 रनों पर, जे. एस. वार्डन, पारसियों की ओर से
मुसलमानों के विरुद्ध, ... 1921
12 विकेट 138 रनो पर, आर. जे. ओ. मेयर्स, अंग्रेजों की ओर से
हिन्दुओ के विरुद्ध, ... 1927
11 विकेट 82 रनों पर, एस. ए. अजीज, मुसलमानों की ओर से
पारसियों के विरुद्ध, ... 1913
11 विकेट 105 रनों पर, एम. एच. राना, हिन्दुओं की ओर से
मुसलमानों के विरुद्ध, ... 1918
11 विकेट 122 रनों पर, आर. जे. जमशेदजी, पारसियों की ओर से
हिन्दुओं के विरुद्ध, ... 1922
11 विकेट 134 रनो पर, एम. एम. जोशी, हिन्दुओं की ओर से
पारसियों के विरुद्ध, ... 1922
11 विकेट 149 रनों पर, एफ. ए. हारेंट, अंग्रेजो की ओर से
मुसलमानो के विरुद्ध, ... 1916
11 विकेट 151 रनों पर, एस. एम. जोशी, हिन्दुओं की ओर से
अंग्रेजों के विरुद्ध, ... 1923
10 विकेट 15 रनों पर, एफ. ए. टारेंट, अंग्रेजों की ओर से
मुसलमानों के विरुद्ध, ... 1915
10 विकेट 69 रनों पर, बी. एच. मिर्जा, पारसियो की ओर से
मुसलमानों के विरुद्ध, ... 1914
10 विकेट 74 रनों पर, एस. आर. गोडाम्बे, हिन्दुओं की ओर से
पारसियों के विरुद्ध, ... 1929
10 विकेट 78 रनों पर, सैयद इब्राहिम, मुसलमानों की ओर से
अंग्रेजों के विरुद्ध, ... 1919
10 विकेट 81 रनों पर, एल. रामजी, हिन्दुओं की ओर से
मुसलमानों के विरुद्ध, ... 1929
10 विकेट 83 रनों पर, ए. यू. बोटवाला, मुसलमानों की ओर से
पारसियों के विरुद्ध, ... 1924

10 विकेट 90 रनों पर, सी. ए. मुराद, मुसलमानों की ओर से हिन्दुओं के विरुद्ध, ... 1922
10 विकेट 92 रनों पर, अमरसिंह, हिन्दुओं की ओर से अंग्रेजों के विरुद्ध, ... 1933
10 विकेट 98 रनों पर, एम. बी. बाचा, पारसियों की ओर से मुसलमानों के विरुद्ध, ... 1918
10 विकेट 104 रनों पर, आर. जमशेदजी, पारसियों की ओर से अंग्रेजों के विरुद्ध, ... 1928
10 विकेट 117 रनों पर, पी. एच. दारुवाला, पारसियों की ओर से अंग्रेजों के विरुद्ध, ... 1917
10 विकेट 125 रनों पर, एम. निसार, मुसलमानों की ओर से हिन्दुओं के विरुद्ध, ... 1934
10 विकेट 131 रनों पर, एफ. ए. टारेंट, अंग्रेजों की ओर से मुसलमानों के विरुद्ध, ... 1919
10 विकेट 153 रनों पर, तम्बूवाला, मुसलमानों की ओर से पारसियों के विरुद्ध, ... 1918

पंचकोणीय (पेंटेंगुलर) प्रतियोगिता, 1937-1944

इस प्रतियोगिता में 'शेष' दल ने सन् 1937 में प्रवेश किया और उसका रूप पंचकोणीय हो गया। इसमें मर्चेंट और हजारे आदि की बल्लेबाजी विशेष उल्लेखनीय रही। परिणाम इस प्रकार रहे :

वर्ष	विजेता	उप-विजेता
1937	मुसलमान	अंग्रेज
1938	मुसलमान	हिन्दू
1939	हिन्दू	मुसलमान
1940	मुसलमान	'शेष' (हिन्दुओं ने भाग नहीं लिया)
1941	हिन्दू	पारसी
1942	प्रतियोगिता नहीं हुई	
1943	हिन्दू	'शेष'
1944	मुसलमान	हिन्दू

शतक लगाने वाले खिलाड़ी

309, वी. एस. हजारे, 'शेष' की ओर से हिन्दुओं के विरुद्ध, 1943
250*, वी. एम. मर्चेंट, हिन्दुओं की ओर से 'शेष' के विरुद्ध, 1943

---

* अपराजित

248, वी. एस. हजारे, 'शेप' की ओर से मुसलमानों के विरुद्ध 1943
243*, वी. एम. मर्चेंट, हिन्दुओं की ओर से मुसलमानों के विरुद्ध, 1941
241, अमरनाथ, हिन्दुओं की ओर से मुसलमानों के विरुद्ध, 1938
221, वी. एम. मर्चेंट, हिन्दुओं की ओर से पारसियों के विरुद्ध, 1941
221*, वी. एम. मर्चेंट, हिन्दुओं की ओर से पारसियों के विरुद्ध, 1944
215, रूसी मोदी, पारसियों की ओर से अंग्रेजों के विरुद्ध, 1944
192, वी. एम. मर्चेंट, हिन्दुओं की ओर से अंग्रेजों के विरुद्ध, 1939
186, एच. आर. अधिकारी, हिन्दुओं की ओर से 'शेप' के विरुद्ध, 1943
182, वी. एस. हजारे, 'शेप' की ओर से अंग्रेजों के विरुद्ध, 1940
157, मुश्ताक अली, मुसलमानों की ओर से अंग्रेजों के विरुद्ध, 1938
154, नजर मोहम्मद, मुसलमानो की ओर से 'शेप के विरुद्ध, 1943
152, एम. एफ. मिस्त्री, पारसियों की ओर से अंग्रेजों के विरुद्ध, 1941
150, जे. हार्डस्टाफ, अंग्रेजों की ओर से पारसियों के विरुद्ध, 1944
144, रूसी मोदी, पारसियो की ओर से अंग्रेजों के विरुद्ध, 1941
143, फिलपोट ब्रूक्स, अंग्रेजों की ओर पारसियों के विरुद्ध, 1938
137*, के. सी. इब्राहिम, मुसलमानो की ओर से हिन्दुओं के विरुद्ध, 1944
134, मुश्ताक अली, मुसलमानों की ओर से अंग्रेजों के विरुद्ध, 1937
133, वीनू मांकड, हिन्दुओं की ओर से अंग्रेजों के विरुद्ध, 1939
128, वीनू मांकड, हिन्दुओं की ओर से पारसियों के विरुद्ध, 1944
126, सी. एस. नायुडू, हिन्दुओं की ओर से पारसियों के विरुद्ध, 1939
122, एफ. सरम, 'शेप' की ओर से मुसलमानों के विरुद्ध, 1937
120, डो. रिमर, अंग्रेजों की ओर से 'शेप' के विरुद्ध, 1940
118, जी. किशनचन्द, हिन्दुओ की ओर से मुसलमानों के विरुद्ध, 1944
117, के. एम. रांगणेकर, हिन्दुओं की ओर से पारसियो के विरुद्ध, 1941
116*, राम प्रकाश, हिन्दुओं की ओर से अंग्रेजों के विरुद्ध, 1943
112, वजीर अली, मुसलमानों की ओर से अंग्रेजों के विरुद्ध, 1938
111, जी. किशनचन्द, हिन्दुओ की ओर से अंग्रेजों के विरुद्ध, 1943
110, मुश्ताक अली, मुसलमानो की ओर से 'शेप' के विरुद्ध, 1940
109, जे. बी. खोट, पारसियों की ओर से अंग्रेजों के विरुद्ध, 1941
108*, एम. इ. एच. गजाली, मुसलमानों की ओर से 'शेप' के विरुद्ध, 1944
107, फैज अहमद, मुसलमानों की ओर से 'शेप' के विरुद्ध, 1937
106, गुलमोहम्मद, मुसलमानों की ओर से 'शेप' के विरुद्ध, 1944
103, एल. पी. जय, हिन्दुओं की ओर से 'शेप' के विरुद्ध, 1938
101*, वी. एस. हजारे, 'शेप' की ओर से मुसलमानो के विरुद्ध, 1941

* अपराजित

101, गुलमोहम्मद, मुसलमानों की ओर से हिन्दुओं के विरुद्ध, 1941
101, एम. सदाशिवम 'शेष' की ओर से मुसलमानों के विरुद्ध, 1944
100, जे. हैरिस, 'शेष' की ओर से हिन्दुओं के विरुद्ध, 1938

इस प्रतियोगिता की अधिकतम कुल रन संख्या : 560 रन 7 विकटो पर, हिन्दुओं ने 'शेष' के विरुद्ध सन् 1938 मे बनाए।

इस प्रतियोगिता की सबसे कम कुल रन संख्या : 64 रन, अंग्रेजो ने मुसलमानों के विरुद्ध सन् 1937 में बनाए।

सर्वश्रेष्ठ साझेदारी :

प्रथम विकेट पर : 155 रन, मुश्ताक अली और एस. कादरी, मुसलमानो की ओर से अंग्रेजो के विरुद्ध, 1938

तीसरे विकेट पर : 345 रन, वी. एम. मर्चेंट और एच. आर. अधिकारी, हिन्दुओं की ओर से 'शेष' के विरुद्ध 1943

चौथे विकेट पर : 231 रन, रूसी मोदी और एम. एफ. मिस्त्री, पारसियो की ओर से अंग्रेजों के विरुद्ध, 1941

पांचवें विकेट पर : 197 रन, वी. एम. मर्चेंट और अमरनाथ, हिन्दुओं की ओर से 'शेष' के विरुद्ध, 1938

छठे विकेट पर : 300 रन, वी. एस. हजारे और वी. के. हजारे, 'शेष' की ओर से हिन्दुओं के विरुद्ध, 1943

सातवें विकेट पर : 156 रन, सईद अहमद और अमीर इलाही, मुसलमानों की ओर से हिन्दुओं के विरुद्ध, 1938

आठवें विकेट पर : 115 रन, जे. हैरिस और ई. शॉ, 'शेष' की ओर से हिन्दुओं के विरुद्ध, 1938

एक मैच में दस या उससे अधिक विकेट

14 विकेट, 192 रनों पर, अमीर इलाही, मुसलमानों की ओर से 'शेष' के विरुद्ध, 1940

12 विकेट, 64 रनों पर, सी. एस. नायडू, हिन्दुओं की ओर से अंग्रेजों के विरुद्ध, 1939

11 विकेट, 142 रनों पर, सी. एस. नायडू, हिन्दुओ की ओर से मुसलमानो के विरुद्ध, 1939

10 विकेट, 186 रनों पर, अमीर इलाही, मुसलमानो की ओर से पारसियों के विरुद्ध, 1940

रोहिंटन बारिया ट्रॉफी के लिए अंतर-विश्वविद्यालय क्रिकेट प्रतियोगिता

इस प्रतियोगिता के लिये सर्वश्री बारिया ब्रदर्स ने करीब 3500 रुपये के मूल्य की एक ट्रॉफी अखिल भारतीय क्रिकेट नियंत्रण बोर्ड को भेंट की। सन् 1945-46 से भारत और श्रीलंका का अन्तर विश्वविद्यालय बोर्ड इस प्रतियोगिता को आयोजित कर रहा है। प्रतियोगिता का श्रीगणेश 1935 में हुआ। यह प्रतियोगिता दो चरणों में आयोजित की जाती है; पहले क्षेत्रीय आधार पर और बाद में अन्तरक्षेत्रीय आधार पर।

निम्नलिखित विश्वविद्यालय इस प्रतियोगिता के विजेता और उप-विजेता रहे :

वर्ष	विजेता	उप-विजेता
1935	पंजाब	बम्बई
1936	पंजाब	नागपुर
1937	पंजाब	अलीगढ़
1938	बम्बई	पंजाब
1939	बम्बई	पंजाब
1940	बम्बई	मैसूर
1941	बम्बई	बनारस
1942	बम्बई	अलीगढ़
1943	पंजाब	मद्रास
1944	बम्बई	पंजाब
1945	बम्बई	पंजाब
1946	बम्बई	अलीगढ़
1947	बम्बई	आगरा
1948	बम्बई	कलकत्ता
1949	बम्बई	कलकत्ता
1950	मैसूर	दिल्ली
1951	मैसूर	इलाहाबाद
1952	बम्बई	दिल्ली
1953	दिल्ली	मैसूर

1954	बम्बई	पंजाब
1955	बम्बई	दिल्ली
1956	बम्बई	दिल्ली
1957	बम्बई	पंजाब
1958	बम्बई	दिल्ली
1959	दिल्ली	बम्बई
1960	बम्बई	इलाहाबाद
1961	मैसूर	बम्बई
1962	पूना	मद्रास
1963	बम्बई	मद्रास
1964	बम्बई	कलकत्ता
1965	बम्बई	बंगलौर

बड़ी कुल रन-संख्यायें (600 से ऊपर)

817, कलकत्ता, बिहार के विरुद्ध,	1958
791 नौ विकटों पर, मैसूर, उत्कल के विरुद्ध,	1958
767 आठ विकटों पर, दिल्ली, पटना के विरुद्ध,	1955
727, बम्बई, उस्मानिया के विरुद्ध,	1941
648, कलकत्ता, भागलपुर के विरुद्ध,	1962
647, मद्रास, बम्बई के विरुद्ध,	1950
635, आठ विकटों पर, बम्बई, पूना के विरुद्ध,	1959
628, नौ विकटों पर, बम्बई, गुजरात के विरुद्ध,	1961
627, पंजाब, लखनऊ के विरुद्ध,	1941
625, बम्बई, दिल्ली के विरुद्ध,	1956
617, बम्बई, बड़ौदा के विरुद्ध,	1951
611, दिल्ली, बम्बई के विरुद्ध,	1956
604, बम्बई, नागपुर के विरुद्ध,	1940
602, चार विकटों पर, कलकत्ता, मगध के विरुद्ध,	1963
601, नौ विकटो पर, मैसूर, नागपुर के विरुद्ध,	1954

छोटी कुल रन-संख्यायें (30 से कम)

18, जबलपुर, दिल्ली के विरुद्ध,	1961
21, बनारस, पंजाब के विरुद्ध,	1938
25, पटना, इलाहाबाद के विरुद्ध,	1950
25, रुड़की, दिल्ली के विरुद्ध,	1963
26, जम्मू व कश्मीर, इलाहाबाद के विरुद्ध,	1960
27, अन्नामलै, मद्रास के विरुद्ध,	1936

200 से ऊपर की पारी :

324, ए. एल. वाडेकर, बम्बई, दिल्ली के विरुद्ध, 1958
285, एम. टी. चन्द्रमान, बम्बई, बड़ौदा के विरुद्ध, 1957
281, डी. एन. सरदेसाई, बम्बई, गुजरात के विरुद्ध, 1961
268, ए. एस. कृष्णस्वामी, मैसूर, मद्रास के विरुद्ध, 1953
263, ए. एल. वाडेकर, बम्बई, दिल्ली के विरुद्ध, 1961
255, एल. टी. आदिशेष, मैसूर, ट्रावनकोर के विरुद्ध, 1950
255, आर. एस. कपूर, बम्बई, उसमानिया के विरुद्ध, 1941
254, एस. जी. अधिकारी, बम्बई, उसमानिया के विरुद्ध, 1959
253, एम. एस. हार्डीकर, बम्बई, एन. डी. ए. के विरुद्ध, 1955
253, रूसी मोदी, बम्बई, उसमानिया के विरुद्ध, 1941
251, प्रकाश भंडारी, दिल्ली, पटना के विरुद्ध, 1955
241, एम. एस. हार्डीकर, बम्बई, दिल्ली के विरुद्ध, 1956
229*, पी. सी. पोद्दार, कलकत्ता, पटना के विरुद्ध, 1959
228, एस. शंकरन, बनारस, बिहार के विरुद्ध, 1963
222*, पी. विग, पंजाब, जबलपुर के विरुद्ध, 1959
222, एच. आर. अधिकारी, बम्बई, पंजाब के विरुद्ध, 1941
219, ए. एल. वाडेकर, बम्बई, बड़ौदा के विरुद्ध, 1961
210, जे. डब्लू. घोरपडे, बड़ौदा, मैसूर के विरुद्ध, 1957
208, जे. डब्लू. घोरपडे, बड़ौदा, पूना के विरुद्ध, 1961
206, बी. मेहरा, पंजाब, बिहार के विरुद्ध, 1957
205*, टी. हरिहर शास्त्री, मद्रास, श्रीलंका के विरुद्ध, 1953
202, डी. के. गायकवाड, बड़ौदा, बम्बई के विरुद्ध, 1951
202, डी. एन. सरदेसाई, बम्बई, मद्रास के विरुद्ध, 1960
201*, क्रिलेन्दरसिंह, इलाहाबाद, पटना के विरुद्ध, 1958
201, सी. आर. देशमुख, पूना, बल्लभ विद्यापीठ के विरुद्ध, 1958

एक पारी में नौ या उससे अधिक विकेट :

10 विकेट 43 रन पर, एस. वी. नाडकर्णी, बम्बई, पूना के विरुद्ध, 1954
9 विकेट 33 रन पर, आनन्द शुक्ला, इलाहाबाद, विक्रम के विरुद्ध, 1962
9 विकेट 45 रन पर, राजेन्द्रपाल, दिल्ली, पंजाब के विरुद्ध, 1954
9 विकेट 52 रन पर, आर. भाटिया, विक्रम, जबलपुर के विरुद्ध, 1963

तिकड़ी (हेट-ट्रिक) :

प्रकाश भंडारी, दिल्ली, बिहार के विरुद्ध, 1955
एस. खन्ना, दिल्ली, अलीगढ़ के विरुद्ध, 1960

* अपराजित

अखिल भारतीय स्कूल क्रिकेट प्रतियोगिता

भारतीय क्रिकेट नियन्त्रण बोर्ड 'कूच-बिहार-ट्रॉफी' के लिये अखिल भारतीय स्कूल क्रिकेट प्रतियोगिता का आयोजन करता है। सन् 1950 में करीब 500 रुपये की लागत की यह ट्रॉफी कूच-बिहार के महाराजा ने भेंट की। मूल ट्रॉफी तो अब पाकिस्तान में है परन्तु अब नई ट्रॉफी प्राप्त हो गई है।

यह प्रतियोगिता पहले क्षेत्रीय स्तर पर नॉक आउट पद्धति से खेली जाती है। ये क्षेत्र और संघ हैं:

उत्तर क्षेत्र : 1. दिल्ली
2. दक्षिण पंजाब
3. उत्तर पंजाब
4. जम्मू व कश्मीर

पूर्व क्षेत्र : 1. बंगाल
2. बिहार
3. असम
4. उड़ीसा

पश्चिम क्षेत्र : 1. बम्बई
2. महाराष्ट्र
3. बड़ौदा
4. गुजरात
5. सौराष्ट्र

दक्षिण क्षेत्र : 1. मद्रास
2. मैसूर
3. हैदराबाद
4. केरल
5. आन्ध्र

मध्य क्षेत्र : 1. उत्तर प्रदेश
2. मध्य प्रदेश
3. राजस्थान
4. विदर्भ

क्षेत्रीय स्तर पर प्रतियोगिता हो जाने के बाद हर एक क्षेत्र की टीम बनती है और अंतर-क्षेत्रीय प्रतियोगिता आयोजित की जाती है। केवल वही स्कूल के छात्र इसमें भाग ले सकते हैं जो अठारह साल से कम उम्र के हों। खेलने वाले दलों को भारतीय क्रिकेट नियंत्रण बोर्ड से कुछ आर्थिक सहायता प्राप्त होती है।

भारत-श्रीलंका स्कूल क्रिकेट दलों का भ्रमण :

अखिल भारतीय स्कूल छात्रों का दल सन् 1958 में श्रीलंका के भ्रमण पर गया। वहाँ छह मैच खेले गए जिनमें केवल एक में ही सफलता प्राप्त हुई, लेकिन भ्रमण लाभदायक रहा। इस भ्रमण में आस्ट्रेलिया के स्कूल छात्र दल से भी मैच खेला गया।

खेले गये मैचों का परिणाम संक्षेप में इस प्रकार है :

1. जनवरी 24 और 25 को : मोराटूवा सम्मिलित स्कूल : 303; भारतीय स्कूल : 135 और 146 रन। मोराटूवा सम्मिलित स्कूल की एक पारी और 22 रनों से विजय।
2. जनवरी 27 और 28 को : आस्ट्रेलियाई स्कूल : 200; भारतीय स्कूल : 100 और तीन विकटों पर 107, मैच अनिर्णीत रहा।
3. जनवरी 30 को : नेगोम्बो सम्मिलित स्कूल टीम ने भारतीय स्कूल टीम को दो विकटों से हरा दिया।
4. फरवरी 2 और 3 को : श्रीलंका विश्वविद्यालय : 179 और पाँच विकेट पर 95 और पारी समाप्ति की घोषणा; भारतीय स्कूल : 164 और तीन विकेट पर 41 रन। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।
5. फरवरी 4 और 5 को : अखिल श्रीलंका स्कूल टीम : 284; भारतीय स्कूल 92 और 113 रन। अखिल श्रीलंका स्कूल टीम एक पारी और 79 रनों से विजयी।
6. फरवरी 7 और 8 को : भारतीय स्कूल : 207; अखिल जैना : 89 और 85 रन। भारतीय स्कूल टीम एक पारी और 33 रनों से विजयी।

सन् 1961 में श्रीलंका का स्कूल छात्रों का दल भारत भ्रमण पर आया और उसने सात मैचों में से दो जीते और बाकी में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका। खेले गये मैचों का विवरण संक्षेप में इस प्रकार है :

मद्रास में : मद्रास राज्य स्कूल एकादश : 80 और 138 रन। श्रीलंका स्कूल : छह विकटों पर 329 और पारी समाप्ति की घोषणा। श्रीलंका स्कूल टीम एक पारी और 111 रनों से विजयी।

मद्रास में : दक्षिण क्षेत्र स्कूल एकादश : 68 और 168 रन । श्रीलंका स्कूल : सात विकटों पर 358 और पारी समाप्ति की घोषणा । श्रीलंका स्कूल टीम एक पारी और 122 रनों से विजयी ।

बंगलौर में : मैसूर स्कूल एकादश : 187 और चार विकटों पर 124 और पारी समाप्ति की घोषणा । श्रीलंका स्कूल : 179 और दो विकटों पर 60 रन । मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका ।

हैदराबाद में : श्रीलंका स्कूल 241 और छह विकटों पर 136 रन और पारी समाप्ति की घोषणा । हैदराबाद स्कूल एकादश : 178 और 2 विकटों पर 66 रन । मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका ।

अहमदाबाद में : श्रीलंका स्कूल : पाच विकटो पर 352 रन और पारी समाप्ति की घोषणा । गुजरात स्कूल एकादश : 200 रन । मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका ।

बम्बई में : बम्बई स्कूल एकादश : 133 और 5 विकटों पर 145 रन और पारी समाप्ति की घोषणा । श्रीलंका स्कूल: 181 और बिना विकेट गिरे 35 रन । मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका ।

बम्बई में : श्रीलंका स्कूल : सात विकटों पर 350 और पारी समाप्ति की घोषणा ।

पश्चिम क्षेत्र : 172 और 115 रन । श्रीलंका स्कूल : एक पारी और 63 रनों से विजयी ।

अखिल भारतीय स्कूल दल ने दूसरी बार सन् 1964 में श्रीलंका का भ्रमण किया । खेले गये मैचों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :

कोलम्बो में : अप्रैल 13 और 14 को । भारतीय स्कूल एकादश : 168 रन । राष्ट्रीय स्कूल क्रिकेट संघ एकादश : 56 और 91 रन । भारतीय स्कूल एकादश एक पारी और 21 रनो से विजयी ।

मोराटूवा में : अप्रैल 16 को । भारतीय स्कूल : आठ विकटों पर 198 रन और पारी समाप्ति की घोषणा । मोराटूवा स्कूल : 130 रन । भारतीय स्कूल 68 रनों से विजयी ।

गेले में : अप्रैल 18 और 19 को । गेले स्कूल : 122 और 145 रन । भारतीय स्कूल : छह विकटों पर 232 और पारी समाप्ति की घोषणा और एक विकेट पर 37 रन । भारतीय स्कूल नौ विकटों से विजयी ।

कोलम्बो में : अप्रैल 20 और 21 को । भारतीय स्कूल : 108 और 95 रन । कोलम्बो स्कूल : 146 और दं. विकटों पर 59 रन । कोलम्बो स्कूल आठ विकटों से विजयी ।

कोलम्बो में : अप्रैल 24 और 25 को। श्रीलंका स्कूल : 76 और 169 रन। भारतीय स्कूल : 86 और 145 रन। श्रीलंका 14 रनों से विजयी।

कैंडी में : अप्रैल 27 और 28 को। कैंडी स्कूल : 163 और सात विकटों पर 122 रन और पारी समाप्ति की घोषणा। भारतीय स्कूल : चार विकटों पर 228 और पारी समाप्ति की घोषणा। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

जफना में : अप्रैल 30 और मई 1 को। भारतीय स्कूल : 3 विकटों पर 281 और पारी समाप्ति की घोषणा और 5 विकटों पर 72 रन। जफना स्कूल : 162 और आठ विकटों पर 214 रन और पारी समाप्ति की घोषणा। मैच में हार-जीत का फैसला नहीं हो सका।

निर्णायक (अम्पायर) .

भारतीय क्रिकेट नियन्त्रण बोर्ड ने समय-समय पर भिन्न-भिन्न स्थानों में निर्णायकों की परीक्षा का आयोजन करके निर्णायकों की नाम-सूची तैयार की है और सम्बन्धित संघों को भी अपने-अपने राज्य के निर्णायकों की नाम-सूची बनाने में सहायता दी है। मद्रास और कलकत्ता में अखिल भारतीय निर्णायक सम्मेलन आयोजित किये गये जिनमें बहुत से निर्णायकों ने भाग लिया और उपयोगी विषयों पर विचार-विमर्श हुआ।

अखिल भारतीय निर्णायक सूची मे निम्नलिखित व्यक्तियों के नाम हैं:-
एच. बनर्जी, एस. के. बनर्जी, एस. के. भट्टाचार्य, एम. वी. चिटनीस, एच. ई. चौधरी, डॉ. आई. गोपालकृष्णन, एस. वी. कुमारस्वामी, मोहम्मद यूनस, एस. एम. मखीजा, ए. एम. मामसा, पी. सी. मुकर्जी, एम. वी. नागेन्द्र, एस. पान, एस. पी. पंडित, रघुनाथ राव, वी. राजगोपाल, रथिन बोस, जे. रूबन, एस. रॉय, एन. डी. साने, वी. सत्याजी राव, के. बी. सक्सेना, एच. पी. शर्मा और एम. एस. शिवशंकरैया।
निम्नलिखित निर्णायक केवल रणजी ट्रॉफी के मैचों के लिये हैं :
एम. आर. भीकाजी, एस. आर. बोस, पी. ए. चार, एन. के. चटर्जी, ए. एन. देसाई, डी. डी. देसाई, के. एम. देवराजम, जे. डी. घोष, एस. एन. हनुमन्तराव, हरगोपालसिंह, एम. पी. सीरसागर, एम. डी. एस. मूर्ति, पी. सी. मुस्तफी, ए. एस. नागराजन, बी. एन. नागराज राव, ए. डी पार्थसारथी, जे. आर. पटेल, एन. एस. ऋषि, एन. सम्बन्दम, के. सम्पतकुमारन, जे. जे. सीगनपारिया, जी. आर. श्रीरामुल, एम. जी. सुब्रमण्यम, तुलजाराम, वी. विक्रमराजू।

निम्नलिखित निर्णायकों ने अखिल भारतीय नाम-सूची (पैनल) से अवकाश प्राप्त कर लिया :

एम. अनन्तस्वामी राव, एम. के. बनर्जी, एम. जी. भावे, एस. डी. बिलिमोरिया, बी. चक्रवर्ती, डी. डी. देसाई, दत्ता रॉय, एस. के. गांगुली, ए. आर. जोशी, एन. डी. करमारकर, बी. जे. मोहनी, एम. एम. नायुडू, डी. के. नायक, एन. डी. नागरवाला, वी. एस. नटराजन, जे. आर. पटेल, वी. वी. रामकृष्णप्पा, पी. के. सिन्हा, जे. सुब्बूस्वामी, एम. जी. विजयसारथी, टी. ए. रामचन्द्रन, एम. जी. अब्दुला, जी. ऐलिंग, जे. बर्टविशल और एल. ओकालगन ।

क्रिकेट में आयु :

प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में सबसे वृद्ध खिलाड़ी : राजा महाराजसिंह ने बम्बई राज्यपाल एकादश का नेतृत्व द्वितीय राष्ट्र मण्डल क्रिकेट दल के विरुद्ध, बम्बई में नवम्बर 25, 26 और 27, 1950 को किया । उस समय उनकी आयु 72 वर्ष की थी ।

62 वर्ष की आयु में सी. के. नायुडू ने अपना आखिरी प्रथम श्रेणी का मैच सन् 1958 में खेला जबकि उन्होंने रणजी ट्रॉफी में उत्तर प्रदेश का नेतृत्व किया था ।

इंग्लैंड में लार्ड हैरिस की आयु 79 वर्ष की थी जब वह एस. सी. सी. की ओर से भारतीय जीमखाना के विरुद्ध लार्ड्स में अगस्त 1929 में खेले थे ।

एस. एफ. बार्न्स की आयु 62 वर्ष की थी जब सन् 1938 मे वे आखिरी बार स्टेफोर्डशायर की ओर से खेले ।

टैस्ट मैचों में सबसे वृद्ध खिलाड़ी :

सी. के. नायुडू की आयु 40 वर्ष 9 महीने और 18 दिन की थी जब उन्होंने अपना आखिरी टैस्ट मैच इंग्लैंड के विरुद्ध ओवल पर अगस्त 15, 17 और 18, 1936 को खेला था ।

सी. रामस्वामी की आयु 40 वर्ष की थी जब वे इंग्लैंड के विरुद्ध अपना पहला टैस्ट मैच मैनचेस्टर और आखिरी टैस्ट मैच ओवल में सन् 1936 में खेले थे ।

इंग्लैंड के डब्लू. जी. ग्रेस ने अपनी इक्कावनवीं वर्ष गांठ पर अपने देश का नेतृत्व आस्ट्रेलिया के विरुद्ध नौटिंघम टैस्ट में जून सन् 1899 में किया था ।

सबसे अधिक उम्र में टैस्ट क्रिकेट खेलने का कीर्तिमान डब्लू. रोड्स का है । उन्होंने 52 वर्ष की आयु मे इंग्लैंड की ओर से वेस्ट इंडीज के विरुद्ध चार टैस्ट मैच खेले थे । उसी टैस्ट शृंखला में जी. गन ने 50 वर्ष की आयु में चार टैस्ट खेले थे ।

परिवार : दो भाइयों का एक ही टैस्ट मैच में साथ-साथ खेलना :

वजीर अली और नजीर अली भारत की ओर से इंग्लैंड के विरुद्ध सन् 1932 में लार्ड्स में और 1933-34 में मद्रास में खेले।

रामजी और अमरसिंह भारत की ओर से इंग्लैंड के विरुद्ध 1933-34 में बम्बई में खेले।

सी. के. नायुडू और सी. एस. नायुडू भारत की ओर से इंग्लैंड के विरुद्ध कलकत्ता और मद्रास में 1933-34 में और मैंनचेस्टर और ओवल में 1936 में खेले।

कृपालसिंह और मिल्खासिंह भारत की ओर से इंग्लैंड के विरुद्ध बम्बई में 1961-62 में खेले।

दो भाइयों का भारत की ओर से खेलना लेकिन एक ही टैस्ट मैच में नहीं:

एम. एल. आपटे और ए. एल. आपटे।

एस. पी. गुप्ते और बी. पी. गुप्ते।

पिता और पुत्र :

स्वर्गीय इफ्तिकार अली, पटौदी के नवाब ने भारत का नेतृत्व इंग्लैंड के विरुद्ध 1946 में खेले गए तीनों टैस्ट मैचों में किया।

उनके पुत्र नवाब मनसूर अली ने भारत का नेतृत्व वेस्ट इंडीज के विरुद्ध 1962 में; इंग्लैंड के विरुद्ध 1964 और 1967; आस्ट्रेलिया के विरुद्ध 1964 और 1967-68 और न्यूजीलैंड के विरुद्ध 1965 और 1968 मे किया।

क्रिकेट में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दावली

अस्थियाँ (ऐशेज) :

ओवल पर खेले गये एक टैस्ट मैच में इंग्लैंड को जीतने के लिये 85 रनों की आवश्यकता थी और उसकी दूसरी पारी बाकी थी। कार्य सरल प्रतीत होता था लेकिन आस्ट्रेलिया ने 77 रनों में ही उनकी पारी समाप्त कर दी। निम्नलिखित काल्पनिक मृत्यु समाचार "स्पोर्टिंग टाइम्स" में प्रकाशित हुआ :

"इंग्लैंड के क्रिकेट की स्नेहमयी स्मृति में जिसकी मृत्यु ओवल पर 29 अगस्त 1882 को हो गई, संतप्त मित्रों और परिचितों ने शोक प्रकट किया। आर. आई. पी.।"

विशेष टिप्पणी : "दाह-क्रिया के बाद अस्थियाँ आस्ट्रेलिया ले जाई जाएँगी।"

1882 के शीतकाल में इंग्लैंड की टीम आस्ट्रेलिया गई और इस भ्रमण के दौरान वास्तव मे ऐशेज इंग्लैंड की टीम के कप्तान को भेंट की गई। तीसरे टैस्ट मैच मे एक स्टम्प जलाया गया और उसकी राख एक कलश में रखकर इंग्लैंड के कप्तान को सौंप दी गई। मखमली थैले में रखा हुआ यह कलश अब लार्ड्स के इम्पीरियल क्रिकेट मेमोरियल म्यूजियम मे है, जो लार्ड डार्नले के वसीयतनामे के अनुसार 1927 मे उनकी मृत्यु के बाद एम. सी. सी. को प्राप्त हुआ।

गेंद (बॉल) :

यह लिखित प्रमाण मिला है कि पेनहर्ट, केंट का ड्यूक परिवार क्रिकेट की गेंदे 1561 में भी बनाता था। पहिले ये गेंदें सफेद होती थी लेकिन 1843 के बाद मे इन्हें लाल रंगा जाने लगा। इनके नाप और तोल में विशेष परिवर्तन नहीं हुआ। एक गेंद का वजन $5\frac{1}{2}$ औंस से कम और $5\frac{3}{4}$ औंस से अधिक नही होना चाहिए। इनकी परिधि $8\frac{13}{16}$ इंच से कम और 9 इंच से अधिक नही हो सकती।

चौकस खेल (बार्न-डोर-गेम) :

इस शब्द का प्रयोग ठोस रक्षात्मक बल्लेबाजी के लिए किया जाता है।

बल्ला (बैट) :

जब क्रिकेट का खेल सर्वप्रथम लोकप्रिय हुआ तो बल्ले नीची भुजा से फेंकी जाने वाली गेंदों को खेलने लायक बनाए गए। बल्ले का वजन नीचे की

ओर होता था जो हॉकी स्टिक की तरह से मुड़ा हुआ था। रेगेट का टॉमस "शुक" लाइट 23 सितम्बर, 1771 को हैम्बल्डन में एक मैच में खेलने गया और उसके बल्ले की चौड़ाई विकेट की चौड़ाई से भी अधिक थी। तब यह निर्णय लिया गया कि बल्ले के नाप के बारे में नियम बन जाने चाहिए। दो ही दिन बाद हैम्बल्डन क्लब ने बल्ले की चौड़ाई की सीमा 4¼ इंच निर्धारित कर दी और आज तक यही नियम चला आ रहा है। लम्बाई 38 इंच से अधिक नहीं होनी चाहिए।

गेंदबाजी (बौलिंग) :

क्रिकेट के प्रारम्भिक दिनों में गेंद भुजा को नीचे रखकर फेंकी जाती थी। 1828 में हाथ कुहनी तक उठाने की अनुमति हो गई और 1835 में कंधे से ऊपर उठाने का नियम बन गया।

शरीर तोड़ गेंदबाजी (बोडी-लाइन बौलिंग) :

1932-33 में इंग्लैंड की टीम आस्ट्रेलिया के दौरे पर गई और दोनों देशों के मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बिगड़ गए क्योंकि इंग्लैंड के तेज गेंदबाज लारवुड ने सीधे बल्लेबाजों पर गेंद फटकारी। अंग्रेज इस तरीके को बाईं ओर से तेज गेंदबाजी (फास्ट लेग थ्योरी) कहते थे और आस्ट्रेलिया के निवासी इसे शरीर तोड़ गेंदबाजी कहते थे। कुछ आस्ट्रेलिया के बल्लेबाजों के भयानक चोटें आईं और कुछ चोट के भय से अपना स्थान छोड़कर हट गए।

अन्त में नवम्बर 1934 में एम. सी. सी. ने एक घोषणा द्वारा इस सीधे हमले की गेंदबाजी की निन्दा की, जिसे इस प्रकार परिभाषित किया गया : "इस प्रकार की गेंदबाजी जो बल्लेबाज पर सीधा हमला समझी जाती है, अनुचित है और यह वह गेंदबाजी है जिसमें व्यवस्थित ढंग से तेज गेंदें लगातार बल्लेबाज के बहुत पास फेंकी जाती हैं जो कि अपने विकेट से अलग खड़ा हुआ है।"

किल्ली उड़ना (बोल्ड ऑल ओवर दी विकेट) :

बल्लेबाज के साफ या पूरी तरह से डंडे उखड़ जाने पर इस शब्द का प्रयोग किया जाता है।

गेंदबाजी यन्त्र :

इस यन्त्र का आविष्कार 1837 में एक अध्यापक, निकोलस फेलिक्स ने किया जो केंट, सरे और इंग्लैंड की ओर से खेलता था।

फटती गेंद (ब्रेक) :

ऐसी गेंद जो टिप्पा पड़ने के बाद अपनी दिशा बदल देती है।

उत्ताल गेंद (बंपर या बाउन्सर) :

ऐसी गेंद जो टिप्पा पड़ने पर तेजी से कमर से ऊपर की ऊंचाई पर उठ जाती है।

उप रन और आंगिक उप रन (बाई और लेग बाई) :

जो गेंद विस्तृत (वाइड) या शून्य गेंद (नो बॉल) की श्रेणी में न आती हो और बल्ले या बल्लेबाज को बिना स्पर्श किए निकल जाए, उस पर प्राप्त रन उपरन (बाई) कहलाएंगे। अगर गेंद, बल्लेबाज की पोशाक या हाथ को छोड़कर उसके किसी अंग को छूकर निकलती है तो उस पर प्राप्त रन आंगिक उपरन (लेग बाई) कहलाएंगे।

चीनिया गेंद (चाइनामैन) :

बाएं हाथ से घुमाकर फेंकी हुई गेंद जो बाहर की ओर टिप्पा खाकर भीतर की ओर मुड़ जाती है।

रेखा (क्रीज) :

झपट रेखा (पोपिंग क्रीज) शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम सत्रहवी शताब्दी के आखिरी और अठारहवीं शताब्दी के शुरू के दिनों में किया गया जब कि विकटों के सामने रेखा के स्थान पर एक सूराख किया जाता था। दौड़ पूरी करने के लिए बल्लेबाज के लिए आवश्यक था कि वह अपने बल्ले से इस सूराख को स्पर्श कर ले। 1702 में इस प्रथा को समाप्त कर दिया गया और इसके स्थान पर एक रेखा खींची जाने लगी। 1774 से झपट रेखा (पोपिंग क्रीज) की लम्बाई विकटों से तीन फुट दस इंच रखी गई और यह दूरी 1819 में बढ़ाकर चार फुट कर दी गई।

प्रारम्भ मे गेंदबाजी रेखा (बौलिंग क्रीज) की लम्बाई नियत नही थी। इसकी पहली सीमा 1774 में नियत की गई और इसे विकटों के दोनो ओर तीन-तीन फुट रखा गया। इसकी कुल लम्बाई बढ़ाकर 1821 मे छः फुट सात इंच और 1826 मे छः फुट आठ इंच कर दी गई। 1902 में इसे आठ फुट आठ इंच कर दिया गया जो कि इसकी वर्तमान लम्बाई है।

गोलगप्पा (डौली कैच) :

इसका अभिप्राय बहुत सरल लपक (कैच) से है।

युगल (डबल) :

एक ही खेल-ऋतु मे 1000 रन बना लेना और 100 विकेट लेना।

अतिरिक्त रन (एक्स्ट्राज) :

वे रन जो बल्लेबाज के खाते में नहीं जोड़े जाते जैसे शून्य गेंदों और विस्तृत गेंदों के बने रन तथा उप रन और आंगिक उप रन।

तत्काल दूसरी पारी खेलना (फॉलो-ओन) :

क्रिकेट के नियमों में इसका प्रयोग सर्वप्रथम 1835 में किया गया। पहली पारी समाप्त होने पर और 100 रन पीछे रहने पर दल को दुबारा बल्लेबाजी करना आवश्यक था। 1854 में एक दिन के मैच में 60 रन और अधिक दिनों के मैचों में 80 रन का अन्तर निर्धारित किया गया। 1894 मे तीन दिन के मैचों के लिये 120 रन का अन्तर निर्धारित किया गया। 1900 मे इसे ऐच्छिक कर दिया गया और रनों का अन्तर इस प्रकार निर्धारित कर दिया गया : तीन-दिवसीय मैच के लिये 150 रन, दो-दिवसीय मैच के लिये 100 रन और एक-दिवसीय मैच के लिये 75 रन।

पूर्णोत्क्षिप्त/बल्लापर्यन्त (फुलटॉस) :

यह गेंद जो बल्लेबाज तक पहुँचने के पहले भूमि पर नहीं गिरती।

दस्ताने (ग्लॉब्ज) :

ऐसी मान्यता है कि सबसे पहले एन. वेनोस्ट्रोच (फेलिक्स) ने बल्लेबाजी के दस्ताने 1835 मे पहने। इनके ऊपर रबर चिपका हुआ था। ड्यूक ऐण्ड सन ने विकेट रक्षकों के दस्ताने 1848 मे प्रचलित किए।

गुगली गेंदबाजी :

यह उस भीतर फटती गेंद का नाम है जो बाहर फटती गेंद (लेग-ब्रेक) के तरीके से फेंकी जाती है।

ऐसी मान्यता है कि मिडलसेक्स और इंग्लैण्ड के खिलाड़ी बोसनक्वेट इस प्रकार के प्रथम सफल गेंदबाज थे और 1900 मे लीस्टरशायर के खिलाड़ी एस. कब को उन्होने लार्ड्स के मैदान मे इस प्रकार की गेंदबाजी से पराजित किया।

तिकड़ी (हैट-ट्रिक) :

इंग्लैंड की कुछ संस्थाओ में 1856 के करीब से यह प्रथा थी कि जो गेंदबाज तीन लगातार गेंदों में तीन बल्लेबाजों को पराजित कर देता था उसे नया टोप भेंट किया जाता था। तभी से गेंदबाज के ऐसे कार्य को यह नाम दिया जाता है।

अन्तर्राष्ट्रीय क्रिकेट सम्मेलन (इंटरनेशनल क्रिकेट कॉन्फ्रेंस) :

इस सम्मेलन का पहला नाम इम्पीरियल क्रिकेट कॉन्फ्रेंस था। 15 जून 1909 को इसकी पहली सभा लॉर्ड्स में हुई जिसमें एम. सी. सी., आस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। भारत, न्यूजीलैंड और वेस्ट इंडीज के प्रतिनिधियों ने प्रथम बार इसकी बैठक में 31 मई 1926 को भाग लिया। पाकिस्तान का प्रतिनिधि प्रथम बार 21 जून 1953 को शामिल हुआ। मई 1961 से दक्षिण अफ्रिका इसका सदस्य नही रहा। एम. सी. सी. के

अध्यक्ष और सचिव इसके भी अध्यक्ष और सचिव हैं · और अन्तर्राष्ट्रीय क्रिकेट पर इसका नियन्त्रण है। भारत के प्रस्ताव पर इसके नाम में इम्पीरियल से अन्तर्राष्ट्रीय परिवर्तन हुआ है।

क्रिकेट के नियम :

ऐसी मान्यता है कि सर्वप्रथम ये नियम 1744 में बनाए गए थे। 1755 में यह नियम प्रथम बार श्री रीड द्वारा छापे गए। इन नियमों में 1771, 1774, 1788, 1798, 1810, 1811, 1819, 1823-24, 1828, 1835, 1836, 1839, 1840, 1845, 1849, 1854, 1864, 1884, 1889, 1894, 1899, 1900, 1902, 1929, 1930, 1937, 1947, 1957 और 1962 में परिवर्तन हुए।

पगबाधा (एल. बी. डब्ल्यू.) :

क्रिकेट के नियमों में इसका वर्णन सर्वप्रथम 1774 मे किया गया। एक खेलने वाले बल्लेबाज द्वारा विकटों में जाने वाली गेंद को पांव से रोके जाने पर पगबाधा माना जाता है और उसे पराजित घोषित किया जाता है। (देखिये, क्रिकेट नियम–39)।

बाहर फटती गेंद या प्रतिपाद गेंद (लेग-ब्रेक) :

यह वह गेंद है जो टिप्पा पड़ने पर बल्लेबाज के पांव की ओर से बाहर की तरफ मुड़ जाती है।

आंगिक उप रन (लेग बाई) :

इंग्लैंड और एडिनबर्ग के दलों में 6 मई 1850 के एक खेल में इनकी गणना सर्वप्रथम की गई। कुछ का कहना है कि वर्षों पहले से ही आंगिक उप रनों की गणना की जा रही थी।

मेरलेबोन क्रिकेट क्लब (एम.सी.सी.) :

विनचेलसी के आठवें अर्ल और चार्ल्स लिनोक्स के नेतृत्व में ओल्ड व्हाइट कंड्यूट क्लब ने 1787-88 की सदियों मे क्रिकेट शासी निकाय की नीव रखी। एम. सी. सी. ने जून, 1788 मे अपना पहला मैच व्हाइट कंड्यूट क्लब के विरुद्ध खेलकर 83 रनों से विजय प्राप्त की। एम. सी. सी. ने लार्ड्स का क्रिकेट का मैदान 1886 में 18000 पौंड में खरीदा। इसके बाद इसकी शक्ति-सामर्थ्य बहुत बढ गई है और क्रिकेट के मामलों मे यह सर्वोपरि न्यायालय के रूप में कार्य करने लगी।

जाल (नेट) :

ऐसी धारणा है कि इंग्लैंड के निकोलस फेलिक्स ने 1845 में क्रिकेट के अभ्यास के लिये जाल प्रचलित किये थे।

शून्य गेंद (नो बॉल) :

हाथ का झटका देकर गेंदबाजी करना अनुचित है। इस प्रकार फेंकी गई गेंद को कोई भी निर्णायक तत्काल शून्य गेंद घोषित कर सकता है। गेंदबाज के विकटो के पास खड़ा निर्णायक शून्य गेंद का संकेत देगा अगर गेंद फेंकते समय गेंदबाज के दोनों पाँव झपट रेखा (पोपिंग क्रीज) के अन्दर नहीं थे। यह सूचना नहीं देने पर कि किस हाथ से और विकेट के किस तरफ से गेंदबाजी की जाएगी, शून्य गेंद घोषित की जा सकती है। अगर बल्लेबाज को रन आउट करने के लिये गेंदबाज गेंदबाजी के पहले उसके विकेट पर गेंद फेंकता है तो यह शून्य गेंद होगी।

शून्य गेंद की गिनती ओवर में नहीं होती और इसका दंड एक रन होता है अगर इस गेंद पर कोई और रन न बनाए गए हों।

भीतर फटती गेंद या अभिपाद गेंद (ऑफ-ब्रेक) :

टिप्पा पड़ने पर यह गेंद बाहर की ओर से बल्लेबाज के पांव की ओर आती है।

ओवर :

क्रिकेट के 1744 के नियमों के अनुसार चार गेंदों का एक ओवर होता था। 1838 तक एक नया गेंदबाज अभ्यास के लिये ओवर आरम्भ करने के पूर्व दो गेंदें फेंक सकता था। 1900 में छः गेंदों का ओवर होने लगा। कुछ देशों ने आठ गेंदों का भी ओवर रखा।

पैड :

यह माना जाता है कि सरे (इंग्लैंड) के राबर्ट रोबिन्सन ने पाँवों के बचाव के लिये पुट्ठों के टुकड़ों का प्रयोग अट्ठारहवी शताब्दी के अन्त और उन्नीसवी शताब्दी के आरम्भ में किया था। 1841 में नॉटिंघमशायर (इंग्लैंड) के टामस निक्सन ने कार्क के पैडों का सर्वप्रथम प्रयोग किया।

दो अंडे (पेयर ऑफ स्पेक्टेकल्स) :

जब बल्लेबाज अपनी दोनों पारियों मे एक भी रन न बना सके तो यह कहा जाता है कि उसने दो अंडे बनाये हैं।

आत्मघात (प्लेड ऑन) :

जब बल्लेबाज गेंद को अपने आप अपने विकेट पर मार लेता है तो उसे आत्मघात कहा जाता है।

मुर्गियाँ (रैबिट्स) :

कमजोर बल्लेबाज जिनकी बारी बल्लेबाजो में बहुत बाद मे आती है।

गणना-पट्ट (स्कोर बोर्ड) :

लार्ड्स में 1846 में और ओवल मे 1848 में पहली बार गणना-पट्ट का प्रयोग किया गया था। मेलबोर्न में 1848 में विशाल यांत्रिक गणना-पट्ट स्थापित किया गया। गणना-पट्ट लगाने की प्रथा शुरू होने से पहले जब दोनों दलों की रन संख्या बराबर हो जाती थी तो दोनों गणक (स्कोरर) जनता और खिलाड़ियों को सूचित करने के लिये खड़े हो जाते थे।

गणना-पत्रक (स्कोर कार्ड) :

जहाँ तक जानकारी मिली है, सेवेनोक वाइन क्लब, इंग्लैंड के गणक, प्रैट ने 1776 में पहली बार गणना-पत्रक छापे थे।

गणक (स्कोरर) :

खेल के प्रारम्भिक दिनों में लकड़ी पर निशान काटकर गणक रनों की गणना करते थे। बीस रनों के बाद में बड़ा निशान काटा जाता था।

सरसराती गेंद (शूटर) :

वह तेज गेंद जो टिप्पा पड़ने पर उछलती नहीं है लेकिन जमीन पर रगड़ खाती जाती है।

स्टिकी डॉग :

चिपचिपा विकेट।

टुक-टुकिया (स्टोन-वॉलर) :

वह बल्लेबाज जो रन बनाने की चेष्टा कम करे और ठोस रक्षात्मक बल्लेबाजी करे।

हवाई चकरी (स्वर्व) :

ऐसी गेंद जो गेंदबाज द्वारा फेंकी जाने के बाद हवा में मोड़ खा जाए।

सिक्का उछालना (टॉस) :

1774 के पहले सिक्का-उछाल जीतने वाला केवल अपनी इच्छानुसार पहले बल्लेबाजी ही नही कर सकता था बल्कि उसे पिच चुनने का भी अधिकार था। 1774 के बाद निष्पक्ष मैदानों पर खेले गए मैचों में सिक्का उछाल नहो की जाती थी। पहले बल्लेबाजी कौन करे, इसके निर्णय के लिये उन्नीसवी शताब्दी के आरम्भ के वर्षों से फिर सिक्का उछालने की पद्धति चल पड़ी।

छीलती गेंद (ट्रिमर) :

वह तेज गेंद जो विकेट मे डंडों को छुए बिना गुल्लियों को हटा दे।

अस्थिर विकेट (टर्निंग विकेट) :

खेल का वह मैदान जो भंवरी (स्पिन) गेंदबाजी के लिए सहायक हो।

विकेट :

क्रिकेट के प्रारम्भिक दिनों में संभवतः बल्लेबाज किसी वृक्ष के तने को स्टंप मान कर खेलता था। बाद में दो खड़ी लकड़ियों के ऊपर एक आड़ी लकड़ी रखी जाने लगी। यह विकेट भेड़ों के बाड़े के छोटे फाटक के समान होता था जिस पर आड़ी लगी हुई डंडी को गिल्ली (बेल) कहते थे। इसलिये क्रिकेट में इन्ही नामो यानी 'स्टम्प', 'विकेट' और 'बेल' शब्दों का प्रयोग होने लगा। 1744 के नियमों के अनुसार विकेट की ऊँचाई 22 इंच और चौड़ाई 6 इंच थी। 1775 या 1776 में तीसरा डंडा भी लगाया जाने लगा। अन्त में 1931 में एम. सी. सी. ने विकेट की ऊंचाई 28 इंच और चौड़ाई 9 इंच निर्धारित कर दी।

विस्तृत गेंद (वाइड बॉल) :

गेंदबाज द्वारा फेंकी गई ऐसी गेंद जो बहुत ही ऊँची हो या विकेट से बहुत दूर हो और निर्णायक के अनुसार बल्लेबाज की पहुँच के बाहर हो। ऐसी गेंद ज्योंही बल्लेबाज के पार निकले त्योंही निर्णायक को उसे विस्तृत गेंद (वाइड बॉल) घोषित कर देना चाहिए। ऐसी गेंद फेंकने का दंड एक रन है।

निर्णायक (अंपायर) :

अनुमान है कि खेल के प्रारम्भिक दिनों में एक ही निर्णायक होता था लेकिन इस बात का कोई प्रमाण नहीं मिलता कि दो निर्णायकों की नियुक्ति कब से होने लगी। अठारहवीं शताब्दी के पहले वर्षों मे निर्णायक डंडों के बहुत नजदीक खडा होता था क्योकि बल्लेबाज को रन बनाने के लिये निर्णायक को, जिसके हाथ में छड़ी या बल्ला होता था, छूना पड़ता था।

निर्णायकों के संकेत :

चौका (बाउंड्री) : एक हाथ को पृथ्वी के समानान्तर फैला कर हिलाना।

छक्का (ओवर बाउंड्री या सिक्सर) : दोनो हाथों को सिर के ऊपर उठा कर दिखाना।

उप रन (बाई) :

एक हाथ को खोलकर सिर के ऊपर उठाकर दूसरे हाथ को हिलाना।

आंगिक उप रन (लेग बाई) :

टाँग उठा कर और एक हाथ से घुटने को छूना।

शून्य गेंद (नो बॉल) :

एक भुजा को पृथ्वी के समानान्तर सीधा फैलाना।

पराजित (आउट) :

एक हाथ की तर्जनी उंगली को ऊपर

अपूर्ण रन (शोर्ट रन) :

कोहनी को ऊपर उठाते हुए उसी हाथ की उंगलियों को पास वाले कंधे पर छुआना।

विस्तृत गेंद (वाइड बॉल) :

दोनों हाथों को बाहर की ओर पृथ्वी के समानान्तर फैलाना।

रोंग' न : गुगली गेंद का दूसरा नाम है।

यॉरकर :

पूरी लम्बाई पर फेंकी गई गेंद जिसका बल्लेबाज ने गलत अन्दाज किया हो।

क्रिकेट के नियम

(क) खिलाड़ी, निर्णायक और गणक

दल :

1. मैच दो दलों के बीच खेला जाता है। प्रत्येक दल में नियमानुसार ग्यारह खिलाड़ी होंगे परन्तु यह संख्या दोनों कप्तानों की सहमति से घटाई-बढ़ाई भी जा सकती है। प्रत्येक दल का एक कप्तान होगा जो सिक्का उछालने के पहले अपने खिलाड़ियों के नामों की सूची विपक्षी कप्तान को देगा। यदि बाद में इन खिलाड़ियों में परिवर्तन करना हो तो उसके लिये विपक्षी कप्तान की सहमति आवश्यक होगी।

टिप्पणी :

(1) यदि किसी समय कप्तान उपस्थित न हो तो उसके स्थान पर उप-कप्तान कार्य करेगा और उसे कप्तान के सब कर्त्तव्य नियमानुसार निभाने पड़ेंगे।

(2) जिस मैच में ग्यारह से अधिक खिलाड़ी एक दल में खेलें, वह प्रथम श्रेणी का मैच नहीं माना जा सकता। किसी भी परिस्थिति में ग्यारह से अधिक खिलाड़ी क्षेत्र-रक्षण नहीं कर सकते।

एवजी :

2. किसी खिलाड़ी के बदले एवजी को क्षेत्र-रक्षण करने या विकटों के बीच तभी दौड़ने दिया जायगा जबकि उस खिलाड़ी के उसी मैच में चोट लगने या बीमार हो जाने के कारण वह अशक्त हो गया हो। दूसरे कारणों से, जब तक कि विपक्षी कप्तान आज्ञा नहीं दे देता, एवजी नहीं लिया जा सकता। एवजी बल्लेबाजी या गेंदबाजी नहीं कर सकता। जो खिलाड़ी एवजी बने, उसके लिये भी विपक्षी कप्तान की अनुमति लेना आवश्यक है। विपक्षी कप्तान एवजी को कुछ स्थानों पर क्षेत्र-रक्षण करने से रोक सकता है।

टिप्पणी :

(1) यदि किसी खिलाड़ी के बदले एवजी ने कार्य कर लिया हो तो भी, वह बल्लेबाजी, गेंदबाजी या क्षेत्र-रक्षण कर सकता है।

(2) यदि कोई एवजी "धावक" (रनर) का कार्य करते हुए नियम 36, 40 या 41 की अवहेलना करता है तो वह बल्लेबाज जिसके बदले वह एवजी "धावक" का कार्य कर रहा है, पराजित (आउट)

माना जायेगा। यदि घायल बल्लेबाज गेंद को पीट कर अपने क्षेत्र के बाहर आ जाय और यदि विकेट-रक्षक गेंद लेकर गुल्ली उड़ा दे तो बल्लेबाज आउट माना जायेगा चाहे उसका एवजी और दूसरा बल्लेबाज अपने क्षेत्र में ही क्यों न हो। जब घायल बल्लेबाज को गेंद नही खेलनी है तब उसे ऐसे स्थान पर खड़ा होना चाहिये जहाँ से वह क्षेत्र-रक्षकों को या निर्णायकों को बाधा न पहुँचाए।

निर्णायकों की नियुक्ति :

3. सिक्का उछालने के पहले दो निर्णायकों को नियुक्त किया जायेगा। वे दोनों ओर के खेल को नियमानुसार निष्पक्षता से नियन्त्रित रखेंगे। दोनों कप्तानों की सहमति के बिना निर्णायको को खेल के दौरान बदला नही जा सकता।

टिप्पणी :

(1) दोनों निर्णायकों को हर दिन खेल प्रारम्भ होने के 30 मिनट पूर्व मैदान के अधिकारी के समक्ष उपस्थित हो जाना चाहिये।

गणक :

4. जितने भी रन बनाये जायेंगे, वे इस प्रयोजन के लिये नियुक्त गणकों द्वारा गणनापुस्तिका में लिखे जायेंगे। गणकों को निर्णायकों द्वारा दिये गये सब अनुदेश और संकेत मानने होंगे और उनकी प्राप्ति की सूचना देनी होगी।

टिप्पणी :

(1) जब तक गणक निर्णायकों द्वारा दिये गये संकेतों का उत्तर नही दे देता, निर्णायकों को खेल आगे नहीं बढाना चाहिये। गणकों और निर्णायकों को शंका समाधान के लिये किसी भी समय आपस में परामर्श करने की अनुमति है।

(ख) खेल के उपकरण और मैदान

गेंद :

5. गेंद का वजन किसी भी हालत मे $5\frac{1}{2}$ औंस से कम और $5\frac{3}{4}$ औंस से अधिक नहीं होगा। गेंद की परिधि $8\frac{13}{16}$ इंच से कम और 9 इंच से अधिक नहीं होगी। हर पारी के प्रारम्भ होने पर कप्तान नई गेंद माँग सकता है। यदि गेंद खो जाय या खेलने लायक न रहे तो निर्णायक उसकी जगह, दूसरी गेंद जो कि हालत में उसी गेंद जैसी ही होगी, काम मे लेने देंगे। जब भी गेंद बदली जायगी, बल्लेबाज को इसकी सूचना दी जायगी।

टिप्पणी :

(1) प्रथम श्रेणी के हर मैच में प्रयुक्त गेंद खेल प्रारम्भ होने के पूर्व कप्तानों और निर्णायकों द्वारा अनुमोदित होनी चाहिये।

(2) इंग्लैंड के अतिरिक्त, या यदि स्थानीय विनियमों में अन्यथा व्यवस्था हो, एक गेंद से 200 रन बनने के बाद, क्षेत्र-रक्षण दल का कप्तान नई गेंद ले सकता है और अगर मैच "मैटिंग विकेट" पर खेला जा रहा हो तो 150 रन के बाद नई गेंद ली जा सकती है। इंग्लैंड में एक गेंद से 65 'ओवर' (6 गेंदों के) और भारत में 75 'ओवर' (6 गेंदों के) ("मैटिंग विकेट" पर 50 'ओवर') फेंकने के बाद नई गेंद माँगी जा सकती है।

(3) यदि गेंद खो जाय या खेलने लायक न रहे तो उसके स्थान पर जो गेंद ली जायेगी उसकी हालत भी पहले वाली गेंद जैसी ही होगी।

बल्ला :

6. बल्ले की चौड़ाई $4\frac{1}{4}$ इंच और लम्बाई 38 इंच से अधिक नहीं होगी।

पिच :

7. दोनों ओर की गेंदबाजी की रेखाओं (बौलिंग क्रीज) के बीच के क्षेत्र को पिच कहते हैं। विकेट के मध्य से यह दोनों ओर चौड़ाई में 5 फुट होगी। सिक्का उछालने के पहले तक तो मैदान के अधिकारी पिच के चुनाव और उसकी तैयारी के लिये जिम्मेदार होंगे परन्तु सिक्का उछालने के बाद दोनों निर्णायक उसकी देख-रेख करेंगे। मैच में पिच नहीं बदली जा सकती परन्तु यदि वह खेलने लायक न रहे तो दोनों कप्तानों की सहमति होने पर इसे बदला जा सकता है।

विकेट :

8. विकेट एक दूसरे के आमने-सामने 22 गज की दूरी पर समानान्तर लगाये जायेंगे। प्रत्येक विकेट चौड़ाई में 9 इंच का होगा और इसमें तीन डंडे होंगे जिन पर दो गुल्लियाँ लगी होंगी। सब डंडे बराबर होंगे और इस प्रकार से लगाये जायेंगे कि उनके बीच से गेंद न निकल सके। विकेट की ऊँचाई जमीन से 28 इंच होगी। गुल्लियों की लम्बाई $4\frac{3}{8}$ इंच होगी और विकेटों पर लगाने पर $\frac{1}{2}$ इंच से अधिक ऊपर नहीं निकली रहेंगी।

टिप्पणी :

(1) गुल्ली की बाड़ी के अलावा डंडों का [illegible] भाग गुम्बदनुमा होगा।

(2) यदि हवा वेग से चल रही हो तो कप्तानों और निर्णायकों की सहमति से गुल्लियों को हटाया जा सकता है ।

गेंदबाजी रेखा और झपट रेखा :

9. गेंदबाजी की रेखा (बौलिंग क्रीज) विकेट के डंडों की सीध में होगी । इसकी लम्बाई 8 फुट और 8 इंच होगी । इसके बीचों बीच डंडे लगे होंगे । इसके बाहरी दोनों छोरों पर विकेट के पीछे दो रेखायें समकोण बनाती हैं । इन्हें प्रत्यावर्तित रेखायें (रिटर्न क्रीज) कहते हैं । झपट रेखा (पोपिंग क्रीज) गेंदबाजी की रेखा से 4 फुट आगे उसके समानान्तर होगी । प्रत्यावर्तित रेखा और झपट रेखा की लम्बाई निश्चित नहीं होती ।

टिप्पणी :

(1) विकेट से झपट रेखा की दूरी बीच वाले डंडे से झपट रेखा के भीतरी भाग तक नापी जाती है ।

(ग) पिच का प्रबन्ध और देख-भाल

बेलन चलाना, घास काटना और पानी देना :

10. जब तक कि विशेष विनियमों के अन्तर्गत अनुमति न हो, मैच के दौरान केवल पारी प्रारम्भ करने से पूर्व या प्रति दिन के खेल प्रारम्भ करने से पूर्व, बल्लेबाजी करने वाले दल के कप्तान की इच्छा से, अधिक से अधिक 7 मिनट तक के लिये, पिच पर झाड़ू लगाकर, बेलन चलाया जायगा । मैच के दौरान पिच पर से घास नही काटी जायगी जब तक कि इसके लिये कोई विशेष नियम न हो । किसी भी परिस्थिति में मैच के दौरान पिच पर पानी नही छिड़का जायगा ।

टिप्पणी :

(1) इन नियमों के अन्तर्गत 'विशेष विनियम' वे हैं जो एम. सी. सी. ने काउण्टी क्रिकेट के लिये या अन्य देशों के क्रिकेट नियन्त्रण मंडलो ने अपने-अपने देश के क्रिकेट के लिये बनाये हैं । इस प्रकार के विनियम पर्यटक टीमों द्वारा खेले गये मैचों मे तभी लागू होते हैं जब कि पर्यटन के पूर्व इस सम्बन्ध मे समझौता हो जाय अथवा उन्हें अधिकृत नियमों की टिप्पणियों अथवा निर्वचनों में शामिल कर लिया जाय ।

(2) निर्णायकों का यह उत्तरदायित्व है कि इस नियम के अनुसार बल्लेबाजी करने वाले दल के कप्तान की प्रार्थना पर पिच पर बेलन चलाया जाय और यह कार्य इस प्रकार सम्पन्न हो जाय कि खेल नियत समय पर प्रारम्भ किया जा सके ।

पिच पर सामान्यतः बेलन प्रतिदिन खेल प्रारम्भ होने से आधा घण्टे से अधिक पहले न चलाया जाय । लेकिन बल्लेबाजी करने वाले दल के कप्तान की प्रार्थना पर इसे खेल प्रारम्भ होने के समय से दस मिनट पूर्व तक रोका जा सकता है ।

(3) पिच पर बेलन चलाने का समय खेल के सामान्य समय में से लिया जायेगा, अगर कप्तान पारी समाप्ति की घोषणा (क) खेल प्रारम्भ होने के पूर्व इतनी देरी से करता है कि दूसरा कप्तान नियमानुसार विकेट पर बेलन नहीं चलवा सकता या (ख) भोजन-मध्यान्तर प्रारम्भ होने के 15 मिनिट पश्चात् करता है ।

(4) केवल इंग्लैंड में, अगर वर्षा के कारण पिच बिगड़ जाय तो जिस दिन पिच बिगडा है उस दिन के खेल की समाप्ति के बाद और दूसरे दिन के खेल प्रारम्भ होने के पूर्व किसी भी समय लगातार अधिक से अधिक दस मिनट तक पिच पर झाड़ू लगाकर बेलन चलाया जा सकता है, परन्तु यह तभी होगा जबकि :

(i) निर्णायक इस बात को स्वीकार करें कि वर्षा के कारण पिच को जो हानि हुई है उसके कारण यह आवश्यक हो गया है कि पिच पर, नियम 10 के अन्तर्गत की गई व्यवस्था के अतिरिक्त झाड़ू और बेलन चलाया जाए ।

(ii) ऐसी स्थिति में बेलन चलाने का कार्य निर्णायकों की निजी देख-रेख में किया जायेगा । यह काम ऐसे समय में और ऐसे बेलन से किया जायेगा जिसे मैदान अध्यक्ष पिच को ठीक करने के लिये सर्वोत्तम समझे ।

(iii) वर्षा के कारण एक दिन मे एक से अधिक बार इस प्रकार के अतिरिक्त बेलन का प्रयोग नहीं किया जायेगा ।

(iv) नियम 10 के अनुसार पिच पर जो बेलन चलाया जाता है वह उस दिन नही चलाया जायेगा जिस दिन कि खेल प्रारम्भ होने के नियत समय के दो घंटे के भीतर इस विशेष व्यवस्था के अन्तर्गत पिच पर बेलन चला लिया गया हो ।

(5) निर्णायकों की देख-रेख मे क्रम से एक दिन छोड़कर दूसरे दिन पिच की घास काटी जायेगी । लेकिन किसी दिन खेल न होने के कारण ऐसा नहीं किया गया तो अगले दिन जब खेल हो तो ऐसा किया जायेगा और तत्पश्चात् क्रम से एक दिन छोड़कर दूसरे दिन घास काटी जायेगी । (इन नियम के प्रयोजन से आराम का दिन भी एक दिन माना जायेगा) ।

पिच को ढकना :

11. मैच के दौरान पूरा पिच कभी नहीं ढका जाएगा जब तक विशेष विनियमों के अंतर्गत ऐसी व्यवस्था न कर दी गई हो। गेंदबाज के दौड़-पथ की रक्षा के लिए झपट रेखा (पोपिंग क्रीज) के सामने 3½ फुट तक के स्थान को ही ढका जा सकेगा।

टिप्पणी :

(1) इस नियम के अन्तर्गत सामान्यतः गेंदबाज के दौड़-पथ की रक्षा रात में और आवश्यकता होने पर दिन में भी की जाती है। मौसम अच्छा होने पर, हर प्रातःकाल आवरण हटा दिया जाना चाहिए।

पिच की देख-भाल :

12. नियम 46 का उल्लंघन किए बिना, बल्लेबाज अपने बल्ले से पिच को ठोक सकता है और दूसरे खिलाड़ी अपने पैर जमाने के लिए लकड़ी के बुरादे का प्रयोग कर सकते हैं। किन्तु यदि मौसम नम हो तो निर्णायकों को यह ध्यान रखना होगा कि गेंदबाजों और बल्लेबाजों द्वारा बनाए गए इस प्रकार के गड्ढे भर दिए जाएँ और सुखा दिए जाएँ, यदि खेल ठीक तरह से चलाने के लिए ऐसा करना आवश्यक हो।

(घ) खेल-संचालन

पारी :

13. नियम 14 में बताई गई स्थिति को छोड़कर दल को एकान्तर से दो पारी खेलने का अधिकार है। मैदान में सिक्का उछालकर निर्णय लिया जाता है कि पहले कौनसा दल बल्लेबाजी करेगा।

टिप्पणी :

(1) दोनों दलों के कप्तान खेल प्रारम्भ होने के कम से कम 15 मिनट पहले सिक्का उछालेंगे और इसमें जीतने वाला कप्तान अपना पहले बल्लेबाजी करने का या क्षेत्र-रक्षण करने का निर्णय दूसरे कप्तान को बतला देगा। तत्पश्चात् इस निर्णय में कोई परिवर्तन नहीं किया जा सकेगा।

(2) यह नियम एक दिवसीय मैच में भी लागू होता है जिसमें दोनों दलों की प्रथम पारी समाप्त होने पर भी खेल चालू रहता है। (नियम 22 भी देखिए।)

तत्काल दूसरी पारी खेलना :

14. जो दल सर्वप्रथम बल्लेबाजी करता है और दूसरे दल से तीन दिन के मैच में 150 रन, दो दिन के मैच में 100 रन और एक दिन के

मैच में 75 रन आगे रहता है तो उसे अधिकार है कि वह दूसरे दल को तत्काल दूसरी पारी खेलने पर विवश कर दे।

पारी समाप्ति की घोषणा :

15. बल्लेबाजी करने वाले दल के कप्तान को अधिकार है कि वह किसी भी समय अपनी पारी समाप्ति की घोषणा कर सकता है चाहे खेल का समय कुछ भी निर्धारित हो।

16. मौसम की खराबी के कारण अगर खेल देर से प्रारम्भ किया जाए तो खेल शुरू होने के बाद जितने दिन खेल होना है उनको ध्यान मे रखते हुए नियम 14 का पालन किया जाएगा।

खेल का प्रारम्भ, समाप्ति और मध्यावकाश :

17. हर नई पारी को प्रारम्भ करने के लिये 10 मिनट और हर नए बल्लेबाज को मैदान में आने के लिए अधिक से अधिक 2 मिनट मिलेंगे। हर नई पारी प्रारम्भ होने पर, प्रति दिन का खेल प्रारम्भ होने पर और हर अवकाश के पश्चात् खेल प्रारम्भ होने पर गेंदबाज का सिरे वाला निर्णायक पुकारेगा "खेलो"। तत्पश्चात् जो दल खेल के लिए इन्कार करेगा वह मैच हार जाएगा। "खेलो" शब्द के उच्चारण के पश्चात् किसी भी खिलाडी को परख-गेंद (ट्रायल बाल) नहीं मिलेगी। एक बल्लेबाज के पराजित हो जाने पर जब तक दूसरा बल्लेबाज नही आ जाए, पिच पर कोई बल्लेबाजी नहीं कर सकेगा।

टिप्पणी :

(1) इस नियम के अन्तर्गत, निर्णायक, मैच में हार-जीत का निर्णय तभी घोषित करेंगे जबकि :

(i) "खेलो" शब्द का उच्चारण इस प्रकार से किया गया हो कि दोनों दलों को स्पष्ट जानकरी हो जाए कि खेल प्रारम्भ होने को है;

(ii) अपील की गई हो और

(iii) यह विश्वास हो जाए कि एक दल नहीं खेलेगा या नही खेल सकता।

(2) कप्तानों को इस बात का ध्यान रखना होगा कि पराजित होकर लौटने वाले बल्लेबाज के मैदान के बाहर निकलने से पहले ही खेलने के लिए आने वाला बल्लेबाज मैदान के भीतर आ जाए। यह इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि निर्णायक को यह निर्णय लेना है कि बल्लेबाज की इस प्रकार की देरी यह संकेत तो नही करती कि बल्लेबाजी करने वाला दल खेलने से इन्कार करता है।

(3) जब तक कि अन्यथा समझौता न हो गया हो, भोजन के लिए केवल 45 मिनट का अवकाश मिलेगा। यदि किसी दल का अंतिम विकेट भोजन या चाय के अवकाश से केवल दो मिनट पहले गिरे तो दूसरे दल की पारी अवकाश के तुरन्त बाद प्रारम्भ की जाएगी। पारी प्रारम्भ करने के लिए 10 मिनट अलग नहीं दिए जाएँगे।

(4) पिच पर किसी को भी गेंदबाजी का अभ्यास करने की आज्ञा नहीं दी जाएगी।

18. किसी भी निश्चित मध्यावकाश के पहले और प्रति दिन का खेल समाप्त होने पर तथा मैच समाप्त होने पर, निर्णायक "समय" शब्द पुकारेंगे और साथ ही विकेट पर से गुल्लियाँ उठा लेंगे। यदि थोड़ा भी समय बाकी हो तो नया ओवर प्रारम्भ होगा और उसे पूरा करना पड़ेगा परन्तु यदि खेल समाप्ति के दो मिनट पहले कोई बल्लेबाज आउट या निवृत्त हो जाए तो उसी समय खेल समाप्त हो जाएगा। परन्तु यदि अंतिम दिन खेल समाप्त होने के अंतिम ओवर में कोई विकेट गिरे तो दोनों में से किसी भी कप्तान की प्रार्थना पर वह ओवर पूरा किया जाएगा चाहे समय समाप्त ही क्यों न हो गया हो।

टिप्पणी :

(1) यदि किसी भी मध्यावकाश के पहले या खेल समाप्ति के पहले अंतिम ओवर के समाप्त होने पर खिलाड़ियों को बाहर जाने का मौका मिले और वे मैदान के बारह जाने के लिये रवाना हो जाएँ तो निर्णायक "समय" शब्द का उच्चारण करेगा और खेल समाप्त हो जाएगा। यदि ऐसा मैच के अंतिम ओवर में हो तो मैच समाप्त हो जाएगा।

(2) किसी मध्यावकाश या खेल समाप्ति के पहले का अंतिम ओवर तभी प्रारम्भ किया जायगा जबकि बल्लेबाज के पीछे की ओर खड़ा निर्णायक अपनी साधारण चाल से गेंदबाज की ओर के विकेट के पास आकर अपना स्थान समय समाप्त होने के पहले ले लेगा।

रनों की गणना :

19. गणना रनो में की जायेगी। रन बनाने के लिये बल्लेबाजों को गेंद पीटने के पश्चात् या जब तक गेंद खेल में चलती रहे विकटों के एक सिरे से दूसरे सिरे तक दौड़ना होगा। लेकिन अगर कोई बल्लेबाज अपने दौड़-पथ का फासला पूरा नहीं करे तो निर्णायक सूचित करते हुए, पुकारेगा 'एक अपूर्ण रन' और उस रन की

पार हो जाने पर निर्णायक सीमा पार का संकेत देगा। गेंद द्वारा सीमा छूने तक जितने रन बने हैं उनकी गणना तभी होगी जब कि उनकी संख्या सीमा पार करने के रनों से अधिक हो। लेकिन अगर क्षेत्र-रक्षक द्वारा अधिक दूर फेंके जाने से या किए गए किसी कार्य से गेंद सीमा पार कर जाए तो इस क्रिया के पहले जितने रन बने हैं उनकी भी गणना की जाएगी और सीमा पार गेंद जाने के लिये निर्धारित रन संख्या (चौका) भी उसमें जोड़ी जाएगी।

टिप्पणी :

(1) अगर सीमा अंकित करने के लिए झंडियाँ या डंडों का प्रयोग किया जाता है तो इनके बीच की वास्तविक या काल्पनिक रेखा को सीमा माना जाएगा। ऐसी रेखा को संभव हो तो सफेद चूने से प्रदर्शित किया जाना चाहिए।

(2) निर्णायक मैदान की परम्परा को ध्यान में रखते हुए सीमा पार जाने वाली गेंदों के लिए रन निर्धारित करेंगे।

(3) अगर गेंद सीमा को छू जाती है अथवा गेंद को हाथ में रखे हुए क्षेत्र-रक्षक का कोई अंग सीमा को छू जाता है तो गेंद सीमा पार मानी जाएगी। क्षेत्र-रक्षक मैदान में खड़ा रहकर सीमा पार झुककर गेंद को रोक सकता है।

(4) अगर गेंद किसी रुकावट से या किसी मनुष्य द्वारा मैदान में रुक जाए तो गेंद सीमा पार नहीं मानी जाएगी जब तक कि निर्णायकों द्वारा ऐसा निश्चय पहले से नहीं कर दिया गया हो। यदि गेंद निर्णायकों से छू जाए तो उसे सीमा पार नहीं माना जाएगा किन्तु यदि मैदान में सफेद परदे (साइट स्क्रीन्स) लगे हों तो उन्हें सीमा माना जाएगा।

(5) साधारणतया गेंद सीमा पर या पार जाने के चार रन दिये जाते हैं लेकिन भूमि छुए बिना, गेंद सीमा पार कर जाए तो उसके छः रन दिये जाते हैं चाहे किसी क्षेत्र-रक्षक ने गेंद को पहले छू ही क्यों न लिया हो। अगर सफेद परदे सीमा की रेखा पर या मैदान के भीतर हों और गेंद भूमि छुए बिना सीधी उनसे टकराए, तो आम तौर पर उसके छः रन नहीं दिये जाते।

(6) यदि क्षेत्र-रक्षक द्वारा अधिक दूर गेंद फेंके जाने पर या उसके [illegible] जानबूझकर किये गए किसी कार्य से गेंद सीमा पार कर जाए [illegible] पार के चार रन के अतिरिक्त बल्लेबाज द्वारा दौड़ कर लिये भी [illegible] जायेंगे।

गणना नहीं की जाएगी। बल्लेबाज के लपक लिए जाने पर रन की गणना नहीं होगी। जिस रन को लेते हुए बल्लेबाज रन आउट होगा उस रन की भी गणना नहीं की जायगी।

नियम 21, 27, 29 और 44 के अन्तर्गत दंड के लिए और नियम 20 के अन्तर्गत गेंद के सीमा पार करने पर रनों की गणना होगी।

टिप्पणी :

(1) अगर गेंद खेल में है और बल्लेबाज दौड़ लगाकर दूसरे विकटों पर पहुँच गए हैं तो वे केवल नियम 30 की टिप्पणी (1) और नियम 46 की टिप्पणी (4) (vii) के अन्तर्गत या गेंद के सीमा पार करने पर ही वापस अपने पहले विकटों पर लौटेंगे। यह नियम उस स्थिति में भी लागू होगा जबकि अपूर्ण रन घोषित किया गया हो अथवा लपके जाने की स्थिति मे कोई भी रन न गिना गया हो।

(2) रन अपूर्ण माना जायेगा जबकि एक या दोनों बल्लेबाज पूरी दूरी को अगला रन लेने के पहले पूरा नहीं करते।

यद्यपि ऐसे अपूर्ण रन से अगले रन की दूरी कम हो जाती है लेकिन पूरा करने पर अगले रनों की गिनती होती है। इसी प्रकार बल्लेबाज झपट रेखा के आगे खड़ा रहने पर भी बिना किसी प्रकार के दंड के, वहां से रन के लिए दौड़ लगा सकता है।

(3) (i) अगर दोनों बल्लेबाजों ने एक ही रन में अपूर्ण दौड़ लगाई है तो केवल एक ही रन की कटौती होगी।

(ii) केवल जब तीन या अधिक रन लिए गए हो तो एक से अधिक रन अपूर्ण हो सकते हैं और नियम (i) का पालन करते हुए इस प्रकार के रनों की कटौती होगी।

(iii) अगर दोनों बल्लेबाज जानबूझकर अपूर्ण रन लें और क्षेत्र-रक्षक दल को उन्हे आउट करने का अवसर न मिले तो निर्णायक निश्चल गेंद (डेड बॉल) घोषित कर सकता है और तब उनमे से कोई भी रन नहीं माना जाएगा।

(4) गेंद के निश्चल (डेड) हो जाने पर, निर्णायक अपने बाजू को मोड़कर कन्धे को अंगुलियो के पेरुओं से छू कर अपूर्ण रन का संकेत देता है। अगर एक से अधिक अपूर्ण रन हों तो निर्णायक उनकी संख्या भी गणकों को सूचित करेगा।

सीमा और रन-निर्धारण (चौके-छक्के) :

20. सिक्का उछालने के पहले निर्णायक दोनों दलों के साथ मैदान की सीमा और उस पर या उसके पार गेंद आने पर गिने जाने वाले रनों की संख्या निर्धारित करेंगे। गेंद द्वारा सीमा छू जाने पर या

पार हो जाने पर निर्णायक सीमा पार का संकेत देगा। गेंद द्वारा सीमा छूने तक जितने रन बने हैं उनकी गणना तभी होगी जब कि उनकी संख्या सीमा पार करने के रनों से अधिक हो। लेकिन अगर क्षेत्र-रक्षक द्वारा अधिक दूर फेंके जाने से या किए गए किसी कार्य से गेंद सीमा पार कर जाए तो इस क्रिया के पहले जितने रन बने हैं उनकी भी गणना की जाएगी और सीमा पार गेंद जाने के लिये निर्धारित रन संख्या (चौका) भी उसमें जोड़ी जाएगी।

टिप्पणी :

(1) अगर सीमा अंकित करने के लिए झंडियों या डंडों का प्रयोग किया जाता है तो इनके बीच की वास्तविक या काल्पनिक रेखा को सीमा माना जाएगा। ऐसी रेखा को संभव हो तो सफेद चूने से प्रदर्शित किया जाना चाहिए।

(2) निर्णायक मैदान की परम्परा को ध्यान में रखते हुए सीमा पार जाने वाली गेंदों के लिए रन निर्धारित करेंगे।

(3) अगर गेंद सीमा को छू जाती है अथवा गेंद को हाथ में रखे हुए क्षेत्र-रक्षक का कोई अंग सीमा को छू जाता है तो गेंद सीमा पार मानी जाएगी। क्षेत्र-रक्षक मैदान में खड़ा रहकर सीमा पार झुककर गेंद को रोक सकता है।

(4) अगर गेंद किसी रुकावट से या किसी मनुष्य द्वारा मैदान में रुक जाए तो गेंद सीमा पार नहीं मानी जाएगी जब तक कि निर्णायकों द्वारा ऐसा निश्चय पहले से नहीं कर दिया गया हो। यदि गेंद निर्णायकों से छू जाए तो उसे सीमा पार नहीं माना जाएगा किन्तु यदि मैदान मे सफेद परदे (साइट स्क्रीन्स) लगे हो तो उन्हें सीमा माना जाएगा।

(5) साधारणतया गेंद सीमा पर या पार जाने के चार रन दिये जाते हैं लेकिन भूमि छुए बिना, गेंद सीमा पार कर जाए तो उसके छः रन दिये जाते हैं चाहे किसी क्षेत्र-रक्षक ने गेंद को पहले छू ही क्यों न लिया हो। अगर सफेद परदे सीमा की रेखा पर या मैदान के भीतर हों और गेंद भूमि छुए बिना सीधी उनसे टकराए तो आम तौर पर उसके छः रन नहीं दिये जाते।

(6) यदि क्षेत्र-रक्षक द्वारा अधिक दूर गेंद फेंके जाने पर या उसके द्वारा जानबूझकर किये गए किसी कार्य से गेंद सीमा पार कर जाए तो सीमा पार के चार रन के अतिरिक्त बल्लेबाज द्वारा दौड़ कर लिये गए रन भी उसको दिए जायेंगे।

(7) निर्णायक द्वारा चौके का संकेत भुजा को दोनों ओर हिला कर और छक्के का संकेत दोनों भुजायें सिर के ऊपर उठा कर दिया जाता है।

लुप्त गेंद :

21. अगर खेल के दौरान गेंद खोजने पर भी न मिले तो किसी भी क्षेत्र-रक्षक द्वारा 'लुप्त गेंद' पुकारने पर रन संख्या में 6 रन जोड़ दिये जायेंगे। लेकिन इसके पहले यदि बल्लेबाज ने दौड़ कर 6 रन से अधिक बना लिये हों तो केवल दौड़ कर बनाये गये रन ही बल्लेबाज को दिये जायेंगे।

परिणाम :

22. पूर्ण रूप से खेली गई दो पारियों में जिस दल की रन संख्या का योग अधिक होगा वही विजयी माना जाएगा। यदि खेल एक दिवसीय हो तो पहली पारी की रन संख्या के आधार पर परिणाम घोषित किया जायेगा। किसी मैच में हार-जीत का निर्णय इस आधार पर भी किया जा सकता है कि किसी एक दल ने मैच में हार मान ली है या नियम 17 के अंतर्गत खेलने से इन्कार कर दिया है। यदि खेल का परिणाम उपर्युक्त किसी भी आधार पर निर्धारित नहीं किया जा सके तो उसे 'अनिर्णीत' माना जायेगा।

टिप्पणी :

(1) यह कप्तानों का उत्तरदायित्व होगा कि रनों की गणना की शुद्धता की जांच खेल की समाप्ति के पश्चात् वे स्वयं करलें।

(2) मैच समाप्त होने पर किसी भी दल को खेलने के लिये विवश नहीं किया जा सकता। एक दिन के मैच में प्रथम पारियों के समाप्त होने पर परिणाम घोषित नहीं किया जा सकता यदि निर्णायक की राय में खेल को किसी परिणाम तक पहुँचने के लिए पर्याप्त समय शेष हो।

(3) पूर्ण हुए मैच में जीत का परिणाम रनों में घोषित किया जाता है। जीतने वाला दल यदि अन्तिम पारी में बल्लेबाजी करे तो जितने विकटों का पतन नहीं हुआ है उसी आधार पर परिणाम घोषित किया जाता है किन्तु एक दिन के मैच में जिसमें द्वितीय पारी समाप्त नहीं हो सकी हो, मैच का परिणाम प्रथम पारी के आधार पर घोषित किया जायेगा।

(4) अनिर्णीत खेल को 'बराबर' (टाई) कहा जायेगा यदि खेल समाप्ति पर दोनों दलों की कुल रन संख्या बराबर हो। एक दिन के

मैच में दोनों दलों की प्रथम पारी में कुल रन संख्या बराबर हो तो मैच 'बराबर' माना जायेगा परन्तु यह तभी होगा जबकि मैच पूरा न खेला जा सका हो और उसमें हार-जीत का फैसला न हुआ हो।

ओवर :

23. खेल के लिये स्वीकृत शर्तों के अनुसार पिच के प्रत्येक सिरे से बारी-बारी 8 या 6 गेंदों के ओवर में गेंदबाजी की जायेगी। जब स्वीकृत संख्या में गेंदें फेंकी जा चुकी हों और गेंदबाज के विकेट के पास खड़े निर्णायक को यह स्पष्ट हो जाए कि गेंद के सम्बन्ध में दोनों दलों की ओर से कोई गतिविधि की सम्भावना नहीं है तो निर्णायक विकेट छोड़ने के पहले स्पष्टतया "ओवर" घोषित करेगा। "शून्य गेंद" (नो बॉल) और विस्तृत गेंद (वाइड बॉल) की गिनती ओवर में नहीं की जायेगी।

टिप्पणी :

(1) इंग्लैण्ड और भारत में 6 गेंदों का ओवर माना जाता है, जब तक कि इसके विपरीत कोई समझौता न हुआ हो।

24. एक गेंदबाज अपने चालू ओवर को अवश्य पूरा करेगा यदि वह शारीरिक रूप से अयोग्य न हो गया हो या नियम विरुद्ध खेल के कारण निलंबित न कर दिया गया हो। उसे बार-बार अपनी इच्छानुसार सिरा बदलने दिया जायेगा परन्तु वह एक ही पारी में दो ओवर लगातार नहीं फेंक सकेगा। जिस सिरे से गेंदबाज गेंद फेंक रहा हो उस सिरे पर खड़े बल्लेबाज को गेंदबाज विकेट के किसी भी ओर खड़े होने के लिए कह सकता है।

निश्चल गेंद (डेड बॉल) :

25. गेंद को निश्चल (डेड) माना जायेगा जबकि वह निर्णायक की दृष्टि में विकेट रक्षक या गेंदबाज के हाथ में अंततः समा गई हो या खेल के मैदान की सीमा पर या सीमा के पार पहुँच गई हो या किसी खिलाड़ी या निर्णायक की पोशाक में ठहर गई हो या निर्णायक ने ओवर या समय समाप्ति की घोषणा कर दी हो या बल्लेबाज किसी कारण आउट हो गया हो या नियम 21 और 44 के अन्तर्गत किसी प्रकार के दंड की घोषणा कर दी गई हो। निर्णायक 'निश्चल गेंद' की घोषणा उस समय भी कर सकता है जबकि नियम 46 के अन्तर्गत अनुचित खेल के कारण वह हस्तक्षेप करने की सोच रहा हो या किसी खिलाड़ी के सख्त चोट आ गई हो या खेलने वाले बल्लेबाज के गेंद खेलने के पहले ही वह खेल बन्द करना चाहता हो। जैसे ही गेंदबाज गेंद फेंकने के लिये अपनी दौड़ प्रारम्भ कर देगा या गेंद फेंकने की क्रिया करेगा, गेंद 'निश्चल' नहीं रहेगी।

टिप्पणी :

(1) स्वयं निर्णायक को ही यह निश्चित करने का अधिकार है कि गेंद अंततः मना गई है या नहीं ।

(2) बल्लेबाज गेंद को खेले इसके पूर्व निर्णायक को खेल रोक देने का अधिकार निम्नलिखित दशाओं में होगा :

(i) यदि निर्णायक संतुष्ट हो जाय कि बल्लेबाज उचित कारण से गेंद खेलने के लिये तैयार नहीं है और वह गेंद खेलने के लिये कोई प्रयत्न नहीं कर रहा है ।

(ii) यदि गेंदबाज गेंद फेंकने के पहले अकस्मात गेंद को गिरा दे या किसी कारणवश गेंद उसके हाथ से न निकल सकें ।

(iii) यदि खेलनेवाले बल्लेबाज के विकेट की एक या दोनों गुल्लियाँ उसके गेंद खेलने के पहले ही गिर जायें ।

इन सब परिस्थितियों में उस समय से गेंद को 'निश्चल' माना जायेगा जबकि उसे अंतिम बार खेला गया हो ।

(3) गेंद 'निश्चल' नहीं होती, जब वह निर्णायक से टकरा जाय (जब तक कि वह निर्णायक की पोशाक में न ठहर जाय), जब विकेट टूट जाय या गिर जाये (जब तक कि बल्लेबाज उस क्रिया से आउट न हुआ हो) या जब असफल अपील की जाए ।

(4) इस नियम और अन्य नियमों के अन्तर्गत 'पोशाक' का अर्थ है कपड़े और खेल-कूद का साज-सामान जो वह सामान्यतया धारण करता है ।

शून्य गेंद (नो बॉल, :

26. उचित गेंद वह कहलायेगी जो किसी भी प्रकार के झटके के साथ या पत्थर की तरह न फेंकी गई हो । यदि दोनों में से कोई भी निर्णायक फेंकी हुई गेंद के पूर्ण औचित्य पर पूरी तरह सन्तुष्ट न हो तो वह तत्काल संकेत सहित 'शून्य गेंद' पुकारेगा । गेंदबाज के सिरे की ओर वाला निर्णायक 'शून्य गेंद' पुकारेगा और उसके लिये संकेत करेगा अगर वह इस बात से सन्तुष्ट न हो कि गेंद फेंकते समय गेंद-बाज के दोनों पाँव झपट और प्रत्यवर्तित रेखाओं के अन्दर थे और दोनों में से किसी भी रेखा को नहीं छू रहे थे ।

टिप्पणी :

(1) इस नियम के अधीन रहते हुए, गेंदबाज को गेंदबाजी-रेखा के पीछे दोनों पैर रखकर गेंद फेंकने की मनाही नहीं है ।

(2) खेलने वाले बल्लेबाज को यह जानने का अधिकार है कि गेंद-बाज गेंद को विकेट के दाहिनी ओर से फेंकेगा या बाईं ओर से; ऊँची भुजा से फेंकेगा या नीची भुजा से या दाहिने हाथ से फेंकेगा या बायें हाथ से। अगर गेंदवाज इस प्रकार की सूचना नहीं देता तो परिवर्तित ढंग से फेंकी हुई गेंद को अनुचित माना जा सकता है और इस प्रकार इसे 'शून्य गेंद' घोषित किया जा सकता है।

(3) अगर गेंदबाज भली भांति गेंद फेंकने के पहले खेलने वाले बल्लेबाज स्ट्राइकर के छोर के विकेट पर बल्लेबाज को रन आउट करने के उद्देश्य से गेंद फेंक मारता है तो वह गेंद 'शून्य' मानी जायेगी। (नियम 46 टिप्पणी (4) (vii) देखिये।)

(4) यदि गेंद फेंकते समय उसी छोर का विकेट गेंदबाज के शरीर के किसी अंग से अस्त-व्यस्त हो जाए, तो उस परिस्थिति मे फेंकी हुई गेंद 'शून्य' नहीं मानी जाएगी।

(5) निर्णायक अपनी एक भुजा को सीधा जमीन के समानान्तर फैलाकर 'शून्य गेंद' का संकेत देता है।

(6) यदि किसी कारणवश गेंद गेंदबाज के हाथों से न निकले तो निर्णायक को 'शून्य गेंद' की घोषणा वापस ले लेनी चाहिए।

27. किसी गेंद को 'शून्य गेंद' घोषित करने पर वह 'निश्चल गेंद' नहीं हो जाती। खेलने वाला बल्लेबाज शून्य गेंद को पीट सकता है और उससे जितने रन बनते है वे उसके खाते में जोड़े जाते हैं। इस तरीके के अलावा जो अतिरिक्त रन लिये जाते हैं वे 'शून्य गेंदों' के खाते में लिखे जाते हैं, और यदि कोई भी रन नहीं बनाया जाता तो एक रन 'शून्य गेंदों' के खाते में लिखा जाता है। खेलने वाला बल्ले-बाज यदि नियम 37 का उल्लंघन करे तो आउट हो जाता है और दोनों बल्लेबाजों में से कोई भी रन आउट हो सकता है और जो भी नियम 36 या 40 का उल्लंघन करता है वह आउट घोषित किया जा सकता है।

टिप्पणी :

(1) 'शून्य गेंद' के दण्ड-स्वरूप एक रन तभी गिना जाता है जबकि उस गेंद पर किसी और प्रकार से कोई रन न बनाया गया हो।

(2) नियम 46, टिप्पणी (4) (vii) के अन्तर्गत गेंद फेंकने के पहले ही दौड़ पड़ना शामिल है; परन्तु जब गेंद न खेलने वाला बल्लेबाज अनुचित रूप से अपना स्थान बहुत जल्दी छोड़ दे तो क्षेत्र-रक्षक दल गेंदबाज के छोर पर बल्लेबाज को किसी भी मान्य रीति से रन आउट कर सकता है। अगर गेंदबाज अपने निकट के विकेट पर गेंद फेंके तो

निर्णायक 'शून्य गेंद' घोषित नहीं करेगा परन्तु उससे जो भी रन बनेंगे उनको गिना जाएगा। इस प्रकार फेंकी हुई गेंद को ओवर में सम्मिलित नही किया जाता।

विस्तृत गेंद (वाइड बॉल) :

28. अगर कोई गेंदबाज, निर्णायक के विचार में किसी गेंद को इतनी अधिक ऊँची या विकेट से इतनी दूर फेंके कि वह खेलने वाले बल्लेबाज की पहुँच के बाहर हो तो निर्णायक ऐसी गेंद को जैसे ही वह गेंद खेलने वाले बल्लेबाज को पार कर जाएगी संकेत सहित 'विस्तृत गेंद' घोषित कर देगा।

टिप्पणी :

(1) अगर कोई गेंद, निर्णायक के विचार में, फेंकी जाने के बाद बल्लेबाज के सामने आकर रुक जाए तो ऐसी गेंद को 'वाइड बॉल' घोषित नहीं किया जाएगा और उसके कारण कोई भी रन नहीं गिना जाएगा जब तक कि खेलने वाला बल्लेबाज उसको नही पीटता जिसका कि उसको अधिकार है और इसमें क्षेत्र-रक्षक दल को हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं है। अगर क्षेत्र-रक्षक दल उस गेंद पर कोई हस्तक्षेप करता है तो निर्णायक को यह अधिकार होगा कि वह उस गेंद को उसी स्थान पर रख दे जहाँ पर वह रुकी थी और क्षेत्र-रक्षकों को उसी स्थान पर खड़े होने का आदेश दे जहाँ पर वे गेंद फेंकने के पहले खड़े थे।

(2) निर्णायक अपनी दोनों भुजाओं को सीधे जमीन के समानान्तर फैलाकर 'विस्तृत गेंद' का संकेत देता है।

(3) अगर कोई बल्लेबाज 'विस्तृत गेंद' को पीट दे तो निर्णायक को 'विस्तृत गेंद' की घोषणा वापस ले लेनी चाहिए।

29. किसी गेंद को 'विस्तृत गेंद' घोषित करने पर वह 'निश्चल गेंद' नहीं हो जाती। 'विस्तृत गेंद' से जो भी रन लिए जाएँ उन्हें 'विस्तृत गेंद' के खाते में लिखा जाएगा और अगर कोई भी रन नही बनाया जाता तो एक रन 'विस्तृत गेंद' के खाते में लिखा जाएगा। खेलने वाला बल्लेबाज 'विस्तृत गेंद' पर आउट हो सकता है अगर वह नियम 38 या 42 का उल्लंघन करे और दोनों मे से कोई भी बल्लेबाज रन आउट हो सकता है या आउट घोषित किया जा सकता है अगर वह नियम 36 या 40 का उल्लंघन करे।

उप रन और आंगिक उप रन ('बाई' और 'लेग बाई') :

30. अगर कोई गेंद जिसको 'विस्तृत गेंद' या 'शून्य गेंद' घोषित नहीं

किया गया है, खेलने वाले बल्लेबाज के बल्ले या उसके शरीर को छुए बिना उससे पार चली जाए तो उससे जो रन प्राप्त होंगे उन्हें निर्णायक संकेत द्वारा उप रन (बाई) घोषित करेगा। लेकिन अगर गेंद खेलने वाले बल्लेबाज के शरीर के किसी भी अंग को (केवल हाथों के उस हिस्से को छोड़ कर जिससे बल्ला पकड़ा गया है) स्पर्श कर बल्लेबाज से पार चली जाए तथा उस पर रन लिए जाएँ तो निर्णायक संकेत द्वारा आंगिक उप रन (लेग बाई) घोषित करेगा। ऐसे रन यथा-स्थिति 'उपरन' और 'आंगिक उप रन' के अन्तर्गत लिखे जायेंगे।

टिप्पणी :

(1) यदि खेलने वाला बल्लेबाज, बल्ला पकड़ने वाले हाथ के अलावा, अपने किसी अंग से किसी गेंद को छूकर मोड़ देगा तो निर्णायक उसके इस कार्य को अनुचित समझेगा और ज्यों ही वह इस बात से आश्वस्त हो जाएगा कि क्षेत्र-रक्षक दल द्वारा किसी भी बल्लेबाज को आउट किए जाने की संभावना नहीं है तो वह तत्काल गेंद को 'निश्चल' घोषित कर देगा। गेंद जानबूझकर मोड़ी गई है या नहीं इसका निर्णय इस आधार पर किया जाएगा कि क्या बल्लेबाज ने अपने बल्ले से गेंद खेलने की कोशिश की थी या नहीं।

(2) निर्णायक उप रन (बाई) का संकेत अपने खुले हाथ को सिर के ऊपर उठाकर तथा आंगिक उप रन (लेग बाई) का संकेत पाँव उठा-कर घुटने को स्पर्श करते हुए देगा।

विकेट का पतन :

31. यदि गेंद से या खेलने वाले बल्लेबाज के बल्ले से या शरीर से एक या दोनों गुल्लियाँ विकेट पर से गिर जाएँ या विकेट का डंडा जमीन से उखड़ जाए तो विकेट का पतन माना जाता है। कोई भी क्षेत्र-रक्षक अपने हाथ या भुजा से विकेट गिरा सकता है अथवा यदि गुल्लियाँ पहले से ही गिरी हुई हों तो डंडा उखाड़ सकता है बशर्ते कि विकेट गिराने वाले हाथ या हाथों में गेंद हो।

टिप्पणी :

(1) केवल गुल्ली के अस्त-व्यस्त होने से ही विकेट का पतन नहीं होता लेकिन विकेट का पतन उस समय भी माना जाएगा जबकि गुल्ली गिरते समय दो विकटों के बीच में ठहर जाए।

(2) अगर एक गुल्ली उड़ी हुई हो तो इस नियम के अन्तर्गत यह काफी होगा कि दूसरी गुल्ली को उपर्युक्त तरीकों से उड़ा दिया जाए या तीनों विकटों में से किसी को भी जमीन से उखाड़ दिया जाए।

(3) अगर वायु बहुत तेज चल रही हो और दोनों कप्तान गुल्लियाँ हटाने के लिये सहमत हो जाएँ (देखो नियम 8, टिप्पणी (2)), तो विकेट का पतन हुआ है या नहीं, इसका निर्णय केवल निर्णायक ही प्रस्तुत तथ्यों के आधार पर कर सकते हैं। ऐसी परिस्थितियों में विकेट का पतन माना जाएगा चाहे विकेट के डंडे को मैदान से न भी उखाड़ा गया हो।

(4) अगर खेलते समय विकेट को तोड़ दिया गया हो तो यह निर्णायक का कर्त्तव्य नहीं है कि वह विकेट को फिर से ठीक तरह लगा दे, जब तक कि गेंद 'निश्चल' न हो जाए। ऐसी परिस्थिति में एक क्षेत्र-रक्षक विकेट को फिर से लगा सकता है।

(5) इस नियम और दूसरे नियमों के प्रयोजन से 'शरीर' शब्द के अर्थ में खिलाड़ी की पोशाक, जो कि नियम 25, टिप्पणी (4) के अन्तर्गत परिमापित है, भी सम्मिलित है।

क्षेत्र से बाहर होना :

32. एक बल्लेबाज उस समय तक अपने क्षेत्र से बाहर माना जाएगा जब तक कि उसके बल्ले का कोई भाग या उसके शरीर का कोई अंग 'झपट रेखा' के पीछे न हो।

बल्लेबाज का निवृत्त होना :

33. एक बल्लेबाज किसी भी समय निवृत्त हो सकता है परन्तु वह अपनी बल्लेबाजी को विपक्षी कप्तान की अनुमति से और वह भी किसी विकेट के पतन पर ही, फिर से चालू कर सकता है।

टिप्पणी :

(1) जब कोई बल्लेबाज बीमारी या चोट लग जाने के कारण या किसी अपरिहार्य कारण से निवृत्त होता है, तो उसकी पारी के विवरण में "निवृत्त, अपराजित" लिखा जाएगा लेकिन अगर वह उक्त कारणों से निवृत्त न हुआ हो तो पारी समाप्त मानी जाती है और वह 'निवृत्त, पराजित' लिखा जाएगा।

गेंद आउट (बोल्ड-आउट) :

34. खेलने वाला बल्लेबाज गेंद आउट (बोल्ड-आउट) होता है जबकि विकेट गेंद लगने से जमीन पर गिर जाता है चाहे गेंद पहले बल्ले या शरीर को छूकर आई हो।

टिप्पणी :

(1) अगर गेंद खेलते हुए बल्लेबाज गेंद को पाँव से या बल्ले से

विकेट पर मार देता है तो वह बल्लेबाज बोल्ड-आउट होगा यदि यह घटना गेंद को पीटने की क्रिया के दौरान हुई हो।

(2) खेलने वाला बल्लेबाज इस नियम के अन्तर्गत बोल्ड-आउट होता है जब गेंद उसके शरीर को स्पर्श करती हुई विकटों में जा लगी हो चाहे पगबाधा नियम 39 के अन्तर्गत भी वह आउट घोषित किया जा सकता हो।

कैच-आउट :

35. खेलने वाला बल्लेबाज कैच-आउट होता है अगर गेंद बल्ले से या बल्ले पकड़ने वाले हाथ से (जिसमें कलाई सम्मिलित नहीं है) लग कर जमीन पर गिरे बिना क्षेत्र-रक्षक द्वारा लपक ली जाए चाहे गेंद लपकने वाले के शरीर से चिपक जाए या अकस्मात् उसके वस्त्रों में अटक जाए। गेंद लपकते समय क्षेत्र-रक्षक के दोनो पाँव पूरी तरह से खेल के मैदान में होने चाहिए।

टिप्पणी :

(1) गेंद का मैदान से स्पर्श नहीं होना चाहिए, चाहे गेंद लपक लेने वाला हाथ मैदान को स्पर्श करले।

(2) गेंद मैदान से छू गई है या वह सीमा पार ले जाई गई है, इस तथ्य की निर्णायक उपेक्षा कर सकता है यदि वह यह अनुभव करे कि इस तरह की घटना के पहले लपकने की क्रिया पूर्ण की जा चुकी थी।

(3) यह तथ्य कि गेंद बल्ले से लगने के पहले या बाद मे बल्लेबाज के शरीर से छू गई थी, लपक (कैच) को अमान्य नहीं कर सकता।

(4) खेलने वाला बल्लेबाज उस स्थिति में भी लपका हुआ माना जाता है जबकि क्षेत्र-रक्षक ने गेंद को अपने हाथों छुआ भी नहीं हो, जैसे कोई गेंद विकेट-रक्षक के पैंड मे अटक जाए।

(5) एक क्षेत्र-रक्षक खेल के मैदान में खड़े-खड़े मैदान की सीमा से सटकर भी गेंद को लपक सकता है चाहे गेंद सीमा के पार गुजर चुकी हो।

(6) यदि खेलने वाला बल्लेबाज विधिवत् गेंद को दुबारा खेले, तो वह इस नियम के अन्तर्गत आउट होगा यदि गेंद पहली बार पिटने के समय से ही मैदान से न छुई हो।

(7) खेलने वाला बल्लेबाज खेल के मैदान में स्थित किसी बाधा को छूकर लौटती हुई गेंद को लपक लिए जाने से कैच-आउट हो सकता है अगर उस बाधा को पहले से ही सीमा न मान लिया गया हो।

हाथ से छूने के कारण आउट :

36. कोई भी बल्लेबाज आउट होगा अगर वह खेल के दौरान गेंद को हाथ से छू ले या पकड़ले। परन्तु यदि वह विरोधी दल की प्रार्थना पर गेंद छूएगा या पकड़ेगा तो आउट नहीं माना जाएगा।

टिप्पणी :

(1) बल्ला पकड़ने वाला हाथ नियम 36, 37 और 39 के प्रयोजन से बल्ले का ही भाग माना जाएगा।

(2) जब कोई बल्लेबाज इस प्रकार आउट होता है तो गणना-पुस्तिका में 'गेंद हाथ से छूने के कारण आउट' अंकित किया जाता है। गेंदबाज को इसका श्रेय नहीं मिलता।

गेंद पर दुबारा प्रहार करना :

37. यदि गेंद खेलने वाले बल्लेबाज के शरीर के किसी अंग से गेंद रुक जाए और वह फिर जान-बूझकर उस पर दुबारा प्रहार करे तो वह आउट माना जाएगा। केवल अपने विकेट की रक्षा करने हेतु वह अपने बल्ले या हाथ के अतिरिक्त शरीर के किसी भाग से गेंद पर प्रहार करे तब वह आउट नहीं होगा। गेंद पर विधिवत् दुबारा प्रहार करने की दशा में, केवल क्षेत्र-रक्षक के विकेट पार गेंद फेंकने पर ही, रन बनाए जा सकते हैं।

टिप्पणी :

(1) निर्णायक ही यह निर्णय देगा कि गेंद को दुबारा पीटा जाना उचित था या नहीं। निर्णायक अपना निर्णय देते समय इस तथ्य को ध्यान में रख सकता है कि दुबारा प्रहार का लाभ उठाने के अभिप्राय से बल्लेबाजों ने रन बनाने की कोशिश की थी, परन्तु यह तथ्य भी निश्चायक आधार नहीं हो सकता।

(2) एक बल्लेबाज गेंद पर दुबारा प्रहार उस समय नहीं करेगा जबकि उसके विकेट-रक्षक या क्षेत्र-रक्षक के गेंद लपकने में बाधा पड़ती हो।

(3) इस नियम का उलंघन उस समय भी होगा जबकि बल्लेबाज गेंद खेलने के बाद विरोधी दल की प्रार्थना के बिना बल्ले के द्वारा किसी क्षेत्र-रक्षक के पास गेंद को लौटाता है।

(4) गणना-पुस्तिका में इसको सही रूप में "गेंद पर दुबारा प्रहार" अंकित किया जायगा। गेंदबाज को ऐसे विकेट के पतन का श्रेय नहीं मिलता।

हिट विकेट :

38. बल्लेबाज 'हिट विकेट' पराजित होगा यदि वह गेंद पर प्रहार करते समय विकटों को बल्ले से या शरीर के किसी भाग से गिरा देगा।

टिप्पणी :

(1) इस नियम के अन्तर्गत खेलने वाला बल्लेबाज पराजित होगा यदि :

(i) वह गेंद को विकटों से टकराने से रोकने के लिए बल्ले से दुबारा गेंद पर प्रहार करे।

(ii) गेंद पर प्रहार करते समय; अन्यथा नहीं, विकेट उसकी टोपी या टोप के गिरने से या बल्ले के किसी भाग के छू जाने से गिर जाते हैं।

(2) बल्लेबाज बल्ले या शरीर से विकेट को गिरा देने पर पराजित नहीं माना जाएगा यदि वह दौड़ कर रन लेते समय ऐसा करे।

पगबाधा :

39. खेलने वाला बल्लेबाज 'पगबाधा' पराजित होगा, यदि हाथ के अतिरिक्त उसके शरीर के किसी ऐसे अंग से, जो दोनों विकटों के बीच सीधी रेखा पर हो, गेंद स्पर्श कर जाए, चाहे गेंद का स्पर्श गुल्लियों के तल से ऊपर की ऊँचाई पर हुआ हो; यह गेंद ऐसी होनी चाहिए कि जो खेलने वाले बल्लेबाज के बल्ले या हाथ को पहले न छुई हो और जो निर्णायक की राय मे, गेंदबाज के विकेट से खेलने वाले बल्लेबाज के विकेट तक की सीधी रेखा पर टिप्पा खा चुकी हो या खाती या जो खेलने वाले बल्लेबाज के विकेट के दाहिनी ओर टिप्पा खाती और हर दशा मे गेंद विकेट से टकराती।

टिप्पणी :

(1) 'हाथ' शब्द का अर्थ इस नियम के अन्तर्गत भुजा के उस भाग से है जो बल्ला पकड़ने के काम में लाया जाता है।

(2) इस नियम के अन्तर्गत बल्लेबाज उसी अवस्था में पराजित होगा जब कि निम्नलिखित चारो प्रश्नों के उत्तर स्वीकारात्मक रूप में हों :

(i) क्या गेंद विकटों से टकराती ?।

(ii) क्या गेंद ने दोनों ओर के विकेटों की सीधी रेखा पर या बल्लेबाज के विकटों के दाहिनी ओर टिप्पा खाया है ?

(iii) क्या गेंद बल्लेबाज के हाथ के अतिरिक्त उसके शरीर के किसी भाग से पहले टकराई है ?

(iv) क्या बल्लेबाज का शरीर दोनों ओर के विकटों के बीच सीधी रेखा पर था जब गेंद ने शरीर के किसी भाग को स्पर्श किया था, चाहे स्पर्श कितनी भी ऊँचाई पर हुआ हो ?

क्षेत्र-रक्षण में बाधा :

40. दोनों में से कोई भी बल्लेबाज पराजित होगा, यदि वह जानबूझकर विपक्ष के क्षेत्र-रक्षण में बाधा डाले। यदि दोनों बल्लेबाजों में से किसी भी बल्लेबाज द्वारा डाली गई ऐसी बाधा के कारण कोई क्षेत्र-रक्षक गेंद न लपक सके तो खेलने वाला बल्लेबाज ही पराजित माना जायेगा।

टिप्पणी :

(1) यह निर्णायक को निश्चय करना होगा कि बल्लेबाज ने जानबूझकर बाधा डाली है या अनजाने में। यदि दौड़ते हुए बल्लेबाज द्वारा अनजान में ही गेंद फेंकने मे बाधा पहुँचे तो इसे नियम का उल्लंघन नहीं माना जाएगा।

(2) इस नियम के अन्तर्गत पराजित होने वाले खिलाडी के लिए गणना-पुस्तिका मे "क्षेत्र-रक्षण बाधा" पराजित लिखा जाएगा और इसका श्रेय गेंदबाज को नही मिलेगा।

दौड़ते हुए पराजित (रन आउट) :

41. दोनो बल्लेबाजो मे से कोई भी बल्लेबाज दौड़ते हुए पराजित (रन आउट) होगा यदि विकटो के बीच दौड़ लगाते समय या अन्य किसी भी समय जब गेंद खेल में हो और वह अपने क्षेत्र के बाहर हो, कोई भी विपक्षी खिलाड़ी विकटों को गेंद द्वारा गिरा दे। यदि दोनों बल्लेबाज दौड़ लगाने के दौरान एक दूसरे को पार कर जाएँ तो जो खिलाड़ी गिराए गए विकेट की ओर दौड़ रहा होगा वह पराजित माना जाएगा; यदि दोनों दौड़ के दौरान एक दूसरे को पार न कर चुके हो तो गिराए गए विकेट को जिस बल्लेबाज ने छोड़ा था वही पराजित समझा जाएगा। किन्तु जब तक गेंद पर प्रहार करने वाला बल्लेबाज स्वयं दौड़ने का प्रयास नही करता, वह नियम 42 के अन्तर्गत चाहे गेंद को शून्य गेंद (नो बॉल) घोषित कर दिया गया हो, 'रन आउट' नही माना जाएगा।

टिप्पणी :

(1) यदि गेंद पर प्रहार करने पर दूसरी ओर का विकेट गेंद से गिर जाए तो दोनो ही बल्लेबाजों में से किसी को भी 'रन आउट' घोषित नही किया जाएगा जब तक कि विकेट से टकराने के पहले गेंद क्षेत्र-रक्षक द्वारा न छू ली गई हो।

"स्टम्प पराजित" :

42. खेलने वाला बल्लेबाज 'स्टम्प पराजित' होगा, यदि गेंदबाज द्वारा फेंकी गई गेंद (जो शून्य गेंद नहीं है) को खेलते समय बल्लेबाज अपने क्षेत्र से बाहर हो किन्तु वह दौड़ लगाने का प्रयास नहीं कर रहा हो और विकेट-रक्षक द्वारा, किसी क्षेत्र-रक्षक की सहायता के बिना, विकेट गिरा दिया जाए। केवल जब गेंद बल्ले को या बल्लेबाज के शरीर को स्पर्श कर जाए तभी विकेट-रक्षक गेंद को इस प्रयोजन से विकेट के सामने से ले सकता है।

टिप्पणी :

(1) यदि विकेट-रक्षक के शरीर से टकरा कर लौटती हुई गेंद विकेट गिरा दे तो भी खेलने वाला बल्लेबाज स्टम्प पराजित माना जा सकता है।

विकेट-रक्षक

43. विकेट-रक्षक पूरी तरह से विकटों के पीछे खड़ा रहेगा जब तक कि गेंदबाज द्वारा फेंकी गई गेंद खेलने वाले बल्लेबाज के बल्ले या शरीर को स्पर्श न कर ले या विकेट को पार न कर जाय या जब तक बल्लेबाज दौड़ लगाने का प्रयास न करे। यदि विकेट-रक्षक इस नियम का उल्लघंन करे तो बल्लेबाज केवल नियम 36, 37, 40 और 41 के अन्तर्गत ही और वह भी नियम 46 को ध्यान में रखते हुए ही पराजित हो सकेगा।

टिप्पणी :

(1) बल्लेबाज को गेंद खेलने और अपने विकेट के बचाने का अधिकार है। उसके इस अधिकार में विकेट-रक्षक हस्तक्षेप न करे इस हेतु यह नियम बनाया गया है। केवल नियम 37, टिप्पणी (2) के अलावा, बल्लेबाज दंडित नहीं होगा यदि वह अपने विकेट को बचाने के प्रयास में विकेट-रक्षक को विघ्न पहुँचाये।

क्षेत्र-रक्षक

44. क्षेत्र-रक्षक अपने किसी भी अंग से गेंद रोक सकता है। लेकिन अगर दूसरे तरीकों से वह जान-बूझ कर गेंद रोकता है तो जितने रन बने हैं उनमें पाँच रन और जोड दिये जायेंगे। अगर कोई रन नहीं बना है तो कुल पाँच रन गिने जायेंगे। ये रन गेंद खेलने वाले बल्लेबाज को मिलेंगे अगर उसने गेंद को अपने बल्ले से खेला था, नहीं तो रनो की गणना यथास्थिति उप रन, आंगिक उप रन, शून्य गेंद या विस्तृत गेंद के अन्तर्गत होगी।

टिप्पणी :

(1) क्षेत्र रक्षक अपनी टोपी आदि से गेंद को रोक या लपक नहीं सकता ।

(2) उपर्युक्त ढंग से गेंद रोकने का दंड पाँच रन होगा और बल्लेबाज अपने छोर नहीं बदलेंगे ।

(ङ) निर्णायकों के कर्त्तव्य

45. पारी के लिये सिक्का उछालने के पूर्व, निर्णायक स्वयं विशेष विनियमों की जानकारी ले लेंगे और मैच के सम्बन्ध में दोनों कप्तानों द्वारा प्रस्तावित समझौते और शर्तों से भी सहमति प्रकट करेंगे । वे अपने आप को इस बात से संतुष्ट कर लेंगे कि विकेट ठीक तरह से लगाये गये हैं और दोनो आपस में इस बात पर भी सहमत होंगे कि खेल के दौरान कौनसी घड़ी से समय देखा जायगा ।

टिप्पणी :

(1) विशेष विनियमों के अतिरिक्त (देखिये, नियम 10, टिप्पणी (1)), इन नियमों के अन्तर्गत खेल के लिये अन्य बहुत-सी बातें भी आवश्यक होती हैं, जैसे खेल की अवधि, मध्यावकाश आदि ।

(2) दोनों कप्तान निर्णायक से यह पूछ सकते हैं कि कौनसी घड़ी के अनुसार खेल चलेगा ।

46. खेल शुरू होने से पहले और खेल के दौरान निर्णायक इस बात का ध्यान रखेंगे कि खेल का संचालन और खेल के उपकरण पूर्ण रूप से नियमों के अनुसार हैं; वे ही एक मात्र उचित और अनुचित खेल का अंतिम निर्णय देने वाले है और यदि मैदान और मौसम की उपयुक्तता तथा खेल के लिये प्रकाश की पर्याप्तता का विषय उन पर छोड़ दिया जाय तो उनका निर्णय ही अंतिम होगा । सभी प्रकार के विवादों का निपटारा वे ही करेंगे और यदि वे असहमत हों तो वास्तविक स्थिति जारी रहेगी । दोनों निर्णायक प्रत्येक दल की एक पारी समाप्त होने के पश्चात् आपस में अपने छोर बदल लेंगे ।

टिप्पणी :

(1) निर्णायक को खेल के समय ऐसे स्थान पर खड़ा होना चाहिये जहाँ से वह सभी प्रकार की गतिविधियाँ ठीक तरह से देख सके जिनमें उसको निर्णय देने की आवश्यकता हो सकती है । उपर्युक्त बात को ध्यान में रखते हुए, गेंदबाज के छोर की ओर खड़े होने वाले निर्णायक को ऐसे स्थान पर ही खड़ा होना चाहिये जहाँ से गेंदबाज के दौड़ने में और बल्लेबाज के देखने में किसी प्रकार की बाधा न पहुँचे । यदि

दूसरा निर्णायक बाईं ओर की बजाय दाईं ओर खड़ा होना चाहता है तो उसे इसकी अनुमति क्षेत्र-रक्षक दल के कप्तान से लेनी होगी, और इसकी सूचना बल्लेबाज को भी देनी होगी।

(2) निर्णायकों को निर्णय लेने में दर्शकों अथवा खिलाड़ियों से प्रभावित नही होना चाहिये।

(3) विभिन्न संगत नियमों की टिप्पणियों में निर्धारित संकेतों का उल्लेख किया गया है किन्तु निर्णायक को आवश्यकतानुसार संकेत देने के साथ-साथ अपना निर्णय बोल कर भी घोषित करना चाहिये ताकि उसकी सूचना खिलाड़ियों और गणकों को भी मिल जाए।

(4) उचित और अनुचित खेल :

(i) निर्णायकों को यह अधिकार है कि अनुचित खेल होने पर, अपील के बिना भी वे उसमें हस्तक्षेप कर सकते हैं किन्तु जब तक नियमो के अन्तर्गत आवश्यक न हो उन्हें खेल की प्रगति में किसी प्रकार की बाधा नही डालनी चाहिए।

(ii) यदि कोई खिलाड़ी निर्णायक के द्वारा दिए गये अनुदेशों का पालन न करे या उसके निर्णय की आलोचना करे तो निर्णायकों को पहले कप्तान से उस खिलाड़ी के विरुद्ध कार्यवाही करने के लिये कहना चाहिए और यदि उनके कहने का कोई प्रभाव न हो तो इस घटना की सूचना खेलने वाले दलों के नियन्त्रकों को तत्काल देनी चाहिए।

(iii) किसी खिलाड़ी द्वारा गेंद को और अच्छी तरह से पकड़ने के लिये उसकी सिलाई को उखाड़ना नियमों के विरुद्ध है। ऐसी स्थिति में, निर्णायक दूसरी गेंद दे देगा जो पहली गेंद जैसी ही घिसी-पिटी होगी और कप्तान को इस प्रकार के अनुचित कार्य के लिए चेतावनी दे देगा। गेंदबाज द्वारा मोम, राल आदि का प्रयोग भी अनुचित है किन्तु यदि गेंद भीग जाए तो वह उसको तोलिये या लकड़ी के बुरादे से सुखा सकता है।

(iv) इस नियम के अन्तर्गत निर्णायक हस्तक्षेप कर सकता है यदि कोई क्षेत्र-रक्षक शोर या हरकत द्वारा बल्लेबाज को गेंद खेलते समय बाधा पहुँचाए।

(v) यह निर्णायकों का कर्तव्य होगा कि वे खिलाड़ियो को पिच मे ऐसी खराबी पैदा करने से रोकें जो कि गेंदबाजों को सहायता दे सकती है।

(vi) बल्लेबाज से दूर टिप्पा खाने वाली गेंदें (शोर्ट पिच्ड) लगातार फेंकना अनुचित है, यदि गेंदबाज के छोर पर खड़े निर्णायक की राय में यह कार्य व्यवस्थित रूप से बल्लेबाज को भयभीत करने के लिये किया जा रहा हो। ऐसी स्थिति मे उसको निम्नलिखित कार्य-विधि अपनानी चाहिए :

(क) जब वह यह निश्चित करले कि इस प्रकार की गेंदबाजी लगातार होती जा रही है तो उसे तुरन्त गेंदबाज को "चेतावनी" दे देनी चाहिए।

(ख) यदि इस "चेतावनी" का कोई असर न हो तो इस घटना की सूचना रक्षक-दल के कप्तान को और दूसरे निर्णायक को दे देनी चाहिए।

(ग) यदि उपर्युक्त कार्यवाही का भी कोई असर न हो तो गेंदबाज के छोर के निर्णायक को चाहिए कि :

(i) इस प्रकार की गेंद को पुनः फेंकने पर उसे निश्चल गेंद (डेड बॉल) घोषित कर दे; और ऐसी स्थिति में ओवर समाप्त माना जाएगा।

(ii) क्षेत्र-रक्षक दल के कप्तान को आदेश दे दे कि उस गेंदबाज को गेंदबाजी से हटा ले। कप्तान को इस आदेश का पालन करना होगा।

(iii) जब मध्यावकाश हो तो वह तुरन्त इसकी सूचना बल्लेबाजी करने वाले दल के कप्तान को दे।

उपर्युक्त कारण से जिस गेंदबाज को गेंदबाजी से हटाया जाएगा वह उस पारी मे फिर गेंदबाजी नहीं करेगा।

(vii) गेंदबाज द्वारा गेंद फेंकने के लिये दौड़ लगाने के समय बल्लेबाज द्वारा रन मार लेना अनुचित होगा। गेंदबाज द्वारा किसी छोर के विकेट पर गेंद फेंके जाने से पहले ही (देखिए, नियम 26, टिप्पणी (2) और (3) और नियम 27) यदि दोनों बल्लेबाज रन लेने के लिए एक दूसरे को पार कर जाएँ तो निर्णायक को तुरन्त 'निश्चल गेंद' घोषित कर देना चाहिए। इसके बाद दोनों बल्लेबाज अपने अपने मूल विकेट पर लौट आएँगे।

(viii) कोई भी खिलाडी खेल चलते समय मालिश करवाने या नहाने के लिये मैदान नही छोड़ेगा।

(5) मैदान, मौसम और प्रकाश :

(i) जब तक दोनों कप्तानों के बीच खेल प्रारम्भ होने से पूर्व कोई विपरीत समझौता न हो गया हो, वे ही मैदान, मौसम और प्रकाश

की उपयुक्तता के बारे में निर्णय लेंगे। उनमें आपस में मतभेद होने पर दोनों निर्णायक निर्णय लेंगे। (खेलते समय बल्लेबाज अपने कप्तान का प्रतिनिधित्व कर सकता है।)

(ii) खेल उसी दशा में रोका जाएगा जब परिस्थितियां इतनी अधिक खराब होंगी कि खेल जारी रखना अनुचित और खतरनाक हो। मैदान उस स्थिति में खेलने के अयोग्य होगा जब उसकी सतह पानी से ढकी हो या वह इतना अधिक गीला या फिसलाने वाला हो गया हो कि उसमें गेंदबाज या बल्लेबाज मजबूती से खड़े नहीं रह सकते हों या क्षेत्र-रक्षक स्वतन्त्रतापूर्वक भाग-दौड़ नहीं कर सकते हों। खेल केवल इस बात पर ही नहीं रोका जाना चाहिए कि घास गीली है या गेंद फिसलनी हो गई है।

(iii) जब कभी भी खेल रोका जाए तो उसके बाद दोनों कप्तान, या यदि निर्णायकों को अधिकार दे दिए गए हों तो दोनों निर्णायक, बिना किसी खिलाड़ी को साथ लिए, परिस्थितियों में सुधार होते ही, मैदान का निरीक्षण करेंगे और यह कार्य समय-समय पर करते रहेंगे। जब जिम्मेदार व्यक्ति यह निर्णय ले लें कि खेल प्रारम्भ हो सकता है, तो उन्हें तुरन्त इसकी सूचना खिलाड़ियों को दे देनी चाहिए कि वे खेलना प्रारम्भ कर दें।

अपील:

47. निर्णायक बल्लेबाज को पराजित घोषित नहीं कर सकते जब तक कि विपक्षी दल द्वारा उसके लिये अपील नहीं की जाती। विपक्षी दल द्वारा यह अपील अगली गेंद फेंकने से पहिले और नियम 18 के अंतर्गत 'समय' पुकारने के पहले की जानी चाहिए। गेंद फेंकने के छोर वाला निर्णायक, दूसरे निर्णायक से पहले, क्षेत्र-रक्षकों की अपीलों का उत्तर देगा, परन्तु नियम 38 या 42 और रन आउट के लिये नियम 41 के अंतर्गत अपीलों का उत्तर खेलने वाले बल्लेबाज के विकेट की ओर का निर्णायक देगा। यदि किसी परिस्थिति मे निर्णायक कोई निर्णय न ले सके तो वह दूसरे निर्णायक से निवेदन करेगा और उसके द्वारा दिया गया निर्णय अंतिम और मान्य होगा।

टिप्पणी:

(1) "यह कैसे" (हाऊ'ज-देट) अपील मे (निर्णायक के अधिकार-क्षेत्र में आने वाली) सभी प्रकार से पराजित होने की स्थितियाँ सम्मिलित है जब तक कि विशिष्ट प्रकार से पराजित होने का उल्लेख अपील करने वाले व्यक्ति द्वारा न किया जाए। जब कोई निर्णायक किसी

बल्लेबाज को 'अपराजित' घोषित करदे तो दूसरा निर्णायक किसी भी प्रकार की अपील (जो उसके अधिकार-क्षेत्र में हैं) का उत्तर दे सकता है यदि अपील समय पर की गई हो।

(2) बल्लेबाज को 'पराजित' घोषित करने के लिये निर्णायक तर्जनी अंगुली को सिर से ऊपर सीधे उठाकर संकेत देता है। यदि बल्लेबाज अपराजित है तो निर्णायक "पराजित नहीं" पुकारेगा।

(3) निर्णायक अपने निर्णय को बदल सकता है बशर्ते कि ऐसा परिवर्तन तत्काल कर दिया जाए।

(4) एक निर्णायक द्वारा किसी प्रकार का निर्णय लेने के पहले दूसरे निर्णायक से सलाह करना नियम के विरुद्ध नहीं है यदि दूसरा निर्णायक यथार्थता को जानने के लिए अपेक्षाकृत अच्छी स्थिति में हो। एक निर्णायक को निर्णय देने के लिए दूसरे निर्णायक को केवल इसलिए निवेदन नहीं कर देना चाहिए कि वह स्वयं वैसा निर्णय नहीं लेना चाहता जबकि वह स्वयं निर्णय ले सकता हो। यदि विचार-विमर्श करने के पश्चात् भी उसे कोई संदेह हो तो नियम 46 लागू होगा और निर्णय बल्लेबाज के पक्ष में होगा।

(5) जब कोई बल्लेबाज पराजित घोषित न किए जाने पर भी, मैदान छोड़कर चला जाए तो उस स्थिति में निर्णायक को हस्तक्षेप करना चाहिए यदि वह इस बात से संतुष्ट हो जाए कि बल्लेबाज ने गलतफहमी मे ही मैदान छोड़ दिया है।

(6) नियम 25 के अन्तर्गत 'ओवर' पुकारने पर गेंद निश्चल हो जाती है किन्तु इससे वह अपील अमान्य नहीं हो जाती जो अगले ओवर की पहली गेंद फेंकने से पहले ही करदी गई है, यदि समय समाप्ति की घोषणा के बाद दोनों निर्णायकों द्वारा विकटों पर से गुल्लियाँ नहीं हटा ली गई हों।

•

हिन्दी-अंग्रेजी शब्द-सूची

अखिल भारतीय अंतर-राज्य स्कूल क्रिकेट कूच-बिहार ट्रॉफी प्रतियोगिता	All India Inter-State Schools Cricket Tournament for Cooch-Behar Trophy
अतिरिक्त (रन)	Extras
अंतर क्षेत्रीय दलीप ट्रॉफी क्रिकेट प्रतियोगिता	Inter-Zone Tournament for Duleep Trophy
अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट सम्मेलन	International Cricket Conference
अन्तर-विश्वविद्यालय क्रिकेट रोहिंटन बारिया ट्रॉफी प्रतियोगिता	Inter-University Cricket Championship for Rohinton Baria Trophy
अपील	Appeal
"अस्थियाँ"	"Ashes"
आउट, पराजित	Out
आउट, बॉल्ड	Bowled out
आउट, स्टम्प	Stumped out
'आत्मघात'	'Played on'
आराम का दिन	Rest day
उप-कप्तान	Vice-Captain
उप-रन	Byes
उप-रन, आंगिक	Leg-byes
उप-विजेता	Runners-up
एवजी	Substitute
ओवर	Over
ओवर, रनहीन/मेडन	Maiden over
कप्तान	Captain
किल्ली उड़ गई	Bowled all over the wicket
कीर्तिमान	Record
कैच आउट	Caught (out)
क्षेत्र-बाधा	Obstructing the field
क्षेत्र-रक्षक	Fieldsman, fielder
क्षेत्र-रक्षण	Fielding
क्षेत्र से बाहर	Out of his ground

खिलाड़ी	Player
खिलाड़ी, व्यावसायिक	Professional player
खिलाड़ी, सर्वोन्मुख	All-rounder
खेल	Play
खेल, अनुचित	Unfair play
खेल, अंतरंग	Indoor game
खेल, उचित	Fair play
खेल, चौकस	Barn-door-game
खेल, बहिरंग	Out-door-game
गणक	Scorer
गणनापट्ट	Score-board
गणना-पत्रक	Score-Card
गुल्लियाँ	Bails
गेंद	Ball
गेंद, उत्ताल	Bumper, bouncer
गेंद, गुगली	Googly
गेंद, चीनिया	Chinaman
गेंद, छीलती	Trimmer
गेंद, निश्चल	Dead ball
गेंद, परख	Trial ball
गेंद, बल्ला-पर्यन्त	Full toss ball
गेंद, बाहर फटती (प्रतिपाद)	Leg-break ball
गेंद, भीतर फटती (अभिपाद	Off-break ball
गेंद, यारकर	Yorker
गेंद, रोंगन	Wrong'un
गेंद, लुप्त	Lost ball
गेंद, विस्तृत	Wide ball
गेंद, शून्य	No ball
गेंद, सरसराती	Shooter
गेंद, हवाई चकरी	Swerve
गेंदबाज	Bowler
गेंदबाज, असमर्थ	Incapacitated bowler
गेंदबाज, तेज	Fast bowler
गेंदबाज, धीमा	Slow bowler
गेंदबाज, निलंबित	Suspended bowler

गेंदबाज का दौड़ पथ	*Bowler's run-up*
गेंदबाजी	Bowling
गेंदबाजी, शरीरतोड़	Body-line bowling
गेंदबाजी यंत्र	Bowling Machine
गोलगप्पा (कैच)	*Dolly catch*
घासकटाई	Mowing
चौका	Boundary, fourer
छक्का	Over-boundary, sixer
जाल	Net
तिकड़ी	Hat-trick
दण्ड	Penalty
दल	Side, team
'दो अंडे'	Pair of spectacles
दौड़ पथ	Run-up
धावक	Runner
निर्णायक	Umpire
निर्णायक के संकेत	Umpire's signals
निवृत्ति	Retirement
पगबाधा	Leg-before-wicket (L. B. W.)
पिच	Pitch
पैड	Pad
फालोआन/तत्काल दूसरी पारी खेलना	Follow-on
बम्बई चतुष्कोणीय प्रतियोगिता	Bombay quadrangular
बम्बई पंचकोणीय प्रतियोगिता	Bombay pentangular
बल्ला	Bat
बल्लेबाज	Batsman
बल्लेबाज, गेंद खेलने वाला	Striker
बल्लेबाज, गेंद न खेलने वाला	Non-striker
बल्लेबाज, टुकटुकिया	Stonewaller
बल्लेबाज, नया	*Fresh batsman*
बेलन फेरना	Rolling
भारतीय क्रिकेट नियंत्रण बोर्ड	Board of Control for Cricket in India
मध्यावकाश	Interval
'मुर्गियां'	'Rabbits'

मैच	Match
मैच, अनिर्णीत	Drawn match
मैच, अनौपचारिक टैस्ट	Unofficial Test Match
मैच, एकदिवसीय	One day match
मैच, औपचारिक टैस्ट	Official Test match
मैच, टैस्ट	Test match
मैच, परित्यक्त (बीच में छोड़ा हुआ)	Given up match
मैच, बराबर	Tie
मैदान अधिकारी	Executive of the ground
मैदान संचालक	Groundsman
"यह कैसे"	"How's that"
"युगल"	"Double"
रन	Run
रन, अपूर्ण	Short run
रन आउट	Run out
राज्य क्रिकेट संघ	State Cricket Association
राष्ट्रीय क्रिकेट रणजी ट्रॉफी प्रतियोगिता	National Cricket Championship of India for the Ranji Trophy
रेखा	Crease
रेखा, गेंदबाजी	Bowling Crease
रेखा, झपट	Popping Crease
रेखा, प्रत्यावर्तित	Return Crease
रेल्वे खेल-कूद नियन्त्रण बोर्ड	Railway Sports Control Board
विकेट	Wicket
विकेट, अस्थिर	Turning wicket
विकेट, चिपचिपा	Sticky dog
विकेट रक्षक	Wicket–keeper
विकेट रक्षण	Wicket–keeping
विजेता	Winners
विशेष विनियम	Special regulation
विश्व कीर्तिमान	World record
वैजयन्ती	Shield, trophy
संकेत	Signal
संघ	Association
सफेद पर्दे	Sight Screens
सिक्का उछाल	Toss
सीमा	Boundary
सेना खेल-कूद नियन्त्रण बोर्ड	Services Sports Control Board
स्टम्प/डंडे	Stumps

प्रथम प्रूडेन्शियल विश्व कप, 1975

प्रथम विश्व कप जो प्रूडेन्शियल कप के नाम से विख्यात है इंग्लैण्ड में 7 जून से 21 जून, 1975 के दौरान खेला गया जिसमें आठ देशों ने भाग लिया। टिकटों से आमद दो लाख पाउण्ड से अधिक हुई जिसमें से विजेता टीम वेस्ट इण्डीज को चार हजार पाउण्ड मिले, उपविजेता आस्ट्रेलिया को दो हजार पाउण्ड मिले। इंग्लैण्ड व न्यूजीलैण्ड को एक-एक हजार पाउण्ड मिले क्योंकि यह दोनों टीमें सेमी-फाइनल तक खेली थी। भाग लेने वाली सभी टीमों को मुनाफे में से हिस्सा मिला। हर मैच एक पारी का था जो कि साठ ओवर की थी।

भारत के द्वारा खेले गये मैचों की रन संख्या निम्न प्रकार है :

लार्ड्स के मैदान पर 7 जून, 1975.

इंग्लैण्ड ने भारत को 202 रनों से पराजित किया।

इंग्लैण्ड

जे. ए. जेमसन कै. वैंकटराघवन बा. अमरनाथ	21
डी. एल. अमिस बा. मदनलाल	137
के. फ्लेचर पगबाधा बा. आबिद अली	68
ए. डब्ल्यू. ग्रेग पगबाधा बा आबिद अली	4
एम. एच. डिनेस अपराजित	37
सी. एम. ओल्ड अपराजित	51
अतिरिक्त	16
कुल रन संख्या (चार विकेटों पर 60 ओवर में)	334

विकटों का पतन : 1-54, 2-230, 3-237, 4-245

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
मदनलाल	12	1	64	1
घावरी	11	1	83	0
मोहिन्दर अमरनाथ	12	2	60	1
वैंकटराघवन	12	0	41	0

आबिद अली	12	0	58	1
एकनाथ सोलकर	1	0	12	0

भारत

सुनील गावस्कर अपराजित	36
ई. डी. सोलकर कै. लिवर बा. अरनोल्ड	8
ए. डी. गायकवाड कै. नॉट बा. लिवर	22
जी. आर. विश्वनाथ कै. फ्लेचर बा. ओल्ड	37
बी. पी. पटेल अपराजित	16
अतिरिक्त	13
कुल रन संख्या (तीन विकेटों पर 60 ओवर में)	132

विकेटों का पतन : 1-25, 2-50, 3-108.

इंग्लैण्ड की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
स्नो	12	2	24	0
अरनोल्ड	10	2	20	1
ओल्ड	12	4	26	1
लिवर	10	0	16	1
ग्रेग	9	1	26	0
वुड	5	2	4	0
जेमसन	2	1	3	0

हेडिंग्ले लीड्स के मैदान पर, 11 जून, 1975.

भारत ने पूर्वी अफ्रीका को दस विकेटों से पराजित किया।

पूर्वी अफ्रीका

फरासत अली बा. आबिद अली	12
एस. वालूसिम्बो पगवाधा बा. आबिद अली	16
प्रफुल मेहता रन आउट	12
वाई. बादत बा. बेदी	1
जवाहिर शाह बा. अमरनाथ	37
हरिलाल कै. इंजीनियर बा. अमरनाथ	0
आर. सेठी कै. गायकवाड बा. मदनलाल	23
महमूद कुरेशी रन आउट	6

जुल्फिकार अली अपराजित	2
पी. जी. नाना पगवाधा बा. मदनलाल	0
डी. प्रिन्जल बा. मदनलाल	2
अतिरिक्त	9
कुल रन संख्या (55.3 ओवर में)	120

विकटों का पतन : 1-27, 2-36, 3-37, 4-56, 5-56, 6-98 7-116, 8-116, 9-116, 10-120.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
आबिद अली	12	5	22	2
मदनलाल	9.3	2	15	3
बेदी	12	8	6	1
वेंकटराघवन	12	4	29	0
मोहिन्दर अमरनाथ	10	0	39	2

भारत

सुनील गावस्कर अपराजित	65
एफ. एम. इंजीनियर अपराजित	54
अतिरिक्त	4
कुल रन संख्या (बिना विकेट खोये 29.5 ओवर में)	123

पूर्वी अफ्रीका की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
फरासत अली	6	1	17	0
प्रिन्जल	3	0	14	0
जुल्फिकार अली	11	3	32	0
नाना	4.5	0	36	0
सेठी	5	0	20	0

ओल्ड ट्रैफर्ड के मैदान पर, 14 जून, 1975.
न्यूजीलैंड ने भारत को चार विकेटों से पराजित किया।

भारत

सुनील गावस्कर कै. आर. हैडली बा. डी. हैडली	12
इंजीनियर पगबाधा बा. आर. हैडली	24
ए. डी. गायकवाड कै. हेस्टिंग्ज़ बा. आर. हैडली	37
जी. आर. विश्वनाथ पगबाधा बा. मैकनिक	2
बी. पी. पटेल कै. वड्सवर्थ बा. एच. होवर्थ	9
इ. डी. सोलकर कै. वड्सवर्थ बा. एच. होवर्थ	13
आबिद अली कै. जी. होवर्थ बा. मैकनिक	70
मदनलाल कै. और बा. मैकनिक	20
मोहिन्दर अमरनाथ कै. मौरिसन बा. डी. हैडली	1
वैंकटराघवन अपराजित	26
वेदी रन आउट	6
अतिरिक्त	10
कुल रन संख्या (60 ओवर में)	230

विकटों का पतन : 1-17, 2-48, 3-59, 4-81, 5-94, 6-101, 7-156, 8-157, 9-217, 10-230.

न्यूजीलैंड की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
कौलिन्ज	12	2	43	0
डी. हैडली	12	3	36	2
आर. हैडली	12	2	48	2
मैकनिक	12	1	43	3
एच. होवर्थ	12	0	48	2

न्यूजीलैंड

जी. एम. टर्नर अपराजित	114
जे. एफ. एम. मोरिसन कै. इंजीनियर बा. वेदी	17
जी. पी. होवर्थ रन आउट	9
जे. एम. पारकर पगबाधा बा. आबिद अली	1

बी. एफ. हेस्टिंग्ज कै. सोलकर बा. अमरनाथ	34
के. जे. वड्सवर्थ पगबाधा बा. मदनलाल	22
आर. जे. हैडली बा. आबिद अली	15
डी. आर. हैडली अपराजित	8
अतिरिक्त	13
कुल रन संख्या (6 विकेटों पर 58.5 ओवर में)	233

विकटों का पतन : 1-45, 2-62, 3-70, 4-135, 5-185, 6-224.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
मदनलाल	11.5	1	62	1
मोहिन्दर अमरनाथ	8	1	40	1
बेदी	12	6	28	2
आबिद अली	12	2	35	2
वेंकटराघवन	12	0	39	0
सोलकर	3	0	16	0

द्वितीय प्रूडेन्शियल विश्व कप, 1979

द्वितीय प्रूडेन्शियल विश्व कप जो जून, 1979 में खेला गया प्रथम विश्व कप से अधिक सफल रहा क्योंकि विश्व के सभी क्रिकेट खेलने वाले देशों ने इसमें भाग लिया। भारत सेमी-फाइनल तक भी नहीं पहुंच सका और दुर्भाग्य तो यह रहा कि श्रीलंका ने भी भारत को 47 रनों से हरा दिया।

भारत के द्वारा खेले गये मैचों की रन संख्या निम्न प्रकार रही :

बर्मिंघम में जून 9, 1979 वेस्टइंडीज ने भारत को 8 विकेटों से हराया।

भारत

सुनील गावस्कर कै. होल्डिंग बा. रावर्टस	8
ए. डी. गायकवाड़ कै. किंग बा. होल्डिंग	11
डी. बी. वेंगसरकर कै. कालीचरन बा. होल्डिंग	7
जी. आर. विश्वनाथ बा. होल्डिंग	78
बी. पी. पटेल रन आउट	18

	8
मोहिन्दर अमरनाथ कै. मरे बा. क्लार्क	12
कपिलदेव बा. किंग	0
एस. खन्ना कै. हेयन्स बा. होल्डिंग	12
के. डी. घावरी कै. मरे बा. गारनर	13
वेंकटराघवन अपराजित	13
बेदी कै. लॉयड बा. रॉबर्ट्स	16
अतिरिक्त	
कुल रन संख्या (53.1 ओवर में)	190

विकटों का पतन : 1-10, 2-24, 3-29, 4-56, 5-77, 6-113, 7-119, 8-155, 9-163, 10-190.

वेस्टइंडीज की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
रॉबर्ट्स	9.1	0	32	2
होल्डिंग	12	2	33	4
गारनर	12	1	42	1
क्रोफ्ट	10	1	31	1
किंग	10	1	36	1

वेस्टइंडीज

	106
सी. जी. ग्रीनिज अपराजित	47
हेन्स पगबाधा बा. कपिलदेव	28
रिचर्ड्स अपराजित	13
अतिरिक्त	
कुल रन संख्या (एक विकेट पर 51·3 ओवर में)	194

विकटों का पतन : 1-138.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
कपिलदेव	10	1	46	1
घावरी	10	2	25	0
वेंकटराघवन	12	3	30	0
बेदी	12	0	45	0
मोहिन्दर अमरनाथ	7.3	0	35	0

लीड्स के मैदान पर, जून 13, 1979 न्यूजीलैंड ने भारत को आठ विकेटों में पराजित किया।

भारत

सुनील गावस्कर कै. लीज बा. हैडली	55
ए. डी. गायकवाड बा. हैडली	10
डी. बी. वेंगसरकर कै. लीज् बा. मैकनिक	1
विश्वनाथ कै. टर्नर बा. केर्न्स	9
बी. पी. पटेल बा. ट्रूप	38
मोहिन्दर अमरनाथ बा. ट्रूप	1
कपिलदेव बा. केर्न्स	25
घावरी कै. कोनी बा. मैकनिक	20
एस. खन्ना कै. मोरिसन बा. मैकनिक	7
वेंकटराघवन कै. लीज् बा. केर्न्स	1
बेदी अपराजित	1
अतिरिक्त	14
कुल रन संख्या (55.5 ओवर में)	182

विकेटों का पतन : 1-27, 2-38, 3-53, 4-104, 5-107, 6-147 7-153, 8-180, 9-180, 10-182.

न्यूजीलैंड की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
हैडली	10	2	20	2
ट्रूप	10	2	36	2
केर्न्स	11.5	0	36	3
मैकनिक	12	1	24	3
कोने	7	0	33	0
मोरिसन	5	0	19	0

न्यूजीलैंड

जी. राइट कै. और बा. मोहिन्दर अमरनाथ	48
बी. ऐडगर अपराजित	84
टेर्नर रन आउट	2

जी. एम. टर्नर अपराजित	43
अतिरिक्त	5
कुल रन संख्या (दो विकटों पर 57 ओवर में)	185

विकटों का पतन। 1—100, 2—103

भारत की गेन्दबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
कपिलदेव	11	3	38	0
घावरी	10	1	34	0
मोहिन्दर अमरनाथ	12	1	39	1
बेदी	12	1	32	0
वेंकटराघवन	12	0	34	0

मैनचेस्टर मे, जून 16, 1979. श्रीलंका ने भारत को 47 रनो से पराजित किया।

श्रीलंका

बी. वर्नपुरा कै. गायकवाड बा. अमरनाथ	18
एम. डी. विटिमनी कै. वेंगसरकर बा. कपिलदेव	67
आर. डिआस कै. और बा. अमरनाथ	50
आर. डी. मैनडिस रन आउट	64
आर. एस. मडुगुती कै. खन्ना बा. अमरनाथ	4
एस. पी. पेसकिल अपराजित	23
डी. एस. डीसिलवा अपराजित	1
अतिरिक्त	11
कुल रन संख्या (पाच विकटों पर 60 ओवर मे)	238

विकटों का पतन: 1—31, 2—127, 3—147, 4—175, 5—229

भारत की गेन्दबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
कपिलदेव	12	2	53	1
घावरी	12	0	53	0
मोहिन्दर अमरनाथ	12	3	40	3
बेदी	12	2	37	0
वेंकटराघवन	12	0	44	0

भारत

सुनील गावस्कर कै. डिआस बा. वर्नपुरा	26
ए. डी. गायकवाड़ कै. और बा. स्टेनली डी. सिल्वा	33
डी. बी. वेंगसरकर कै. स्टेनली बा. सोमोचन्द्रा	36
विश्वनाथ रन आउट	22
बी. पी. पटेल बा. सोमोचन्द्रा	10
कपिलदेव कै. वर्नपुरा बा. स्टेनली	16
मोहिन्दर अमरनाथ बा. सोमोचन्द्रा	7
घावरी कै. वर्नपुरा बा. ओपाथा	8
एस. खन्ना कै. डिआस बा. ओपाथा	10
वेंकटराघवन अपराजित	9
वेदी के. जयसिंघे बा. ओपाथा	5
अतिरिक्त	14
कुल रन संख्या (54.1 ओवर मे)	191

विकिटों का पतन: 1—60, 2—76, 3—119, 4—132, 5—147, 6—160, 7—162, 8—170, 9—185, 10—191

श्रीलंका की गेन्दबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
ओपाथा	10.1	0	31	3
गोनातिलक	9	1	34	0
वर्नपुरा	12	0	47	1
स्टेनली डी सिल्वा	12	0	36	2
सोमोचन्द्रा	11	1	29	3

तृतीय प्रूडेन्शियल विश्व कप, 1983

क्रिकेट जगत में भारत मे साख बहुत गिर चुकी थी क्योंकि पाकिस्तान ने 1982-83 में अपने ही देश में भारत को छः टेस्ट मैचों की शृंखला में तीन शून्य से पराजित किया और फिर 1983 मे वेस्ट इंडीज में भी भारत को हार का ही मुँह देखना पड़ा। पांच टेस्ट मैचों में से दो में उसकी पराजय हुई और तीन टेस्ट मैचों में हार जीत का फैसला नहीं हो सका। वेस्ट इंडीज के दौरे के कुछ समय बाद ही विश्व कप के लिये भारत

की टीम इंग्लैंड पहुँची और क्रिकेट पंडितों के अनुसार भारत का प्रूडेन्शियल कप पर अधिकार करना केवल एक मिथ्यावासना थी।

आठ देशों ने इस विश्व विख्यात कप को जीतने के लिये जी जान से से प्रयत्न किया। टीमों को 'ए' और 'बी' ग्रुप में विभाजित किया गया और हर टीम ने अपने ग्रुप की हर टीम से दो बार मुकाबला किया। 'ए' ग्रुप में इंग्लैंड, पाकिस्तान, न्यूजीलैंड व श्रीलंका थे और 'बी' ग्रुप में आस्ट्रेलिया वेस्टइंडीज,भारत और जिम्बाबवे थे। हर ग्रुप मे से दो टीमें सेमी फाइनल में पहुँची, एक ग्रुप के विजेता ने दूसरे ग्रुप के उपविजेता से मुकाबला किया और फिर सेमीफाइनल के विजेताओं का कड़ा संघर्ष फाइनल मैंच में हुआ। दोनों ग्रुप के मैंच विभिन्न मैदानों में साथ-साथ खेले गये।

अपने पहले ही मैंच में भारत ने जून 10 और 11, 1983 को विश्व विजेता वेस्टइंडीज को 34 रनो से मैनचेस्टर में पराजित किया। प्रथम बल्लेबाजी करते हुए भारत ने निर्धारित 60 ओवरों में आठ विकेट खोकर 262 रन बनाये और तत्पश्चात् वेस्टइंडीज को 54 ओवर और एक गेंद में 228 रनों पर समेट लिया। यशपाल शर्मा ने 89 रन बनाकर "मैन ऑफ दी मैंच" का पुरस्कार जीता। रवि शास्त्री ने 3 विकिटें 26 रनों पर और बिन्नी ने 3 विकिटें 48 रनों पर उखाड़ी।

दूसरे मैंच में भारत ने जिम्बाबवे को पांच विकिटों से हराया। इक्यावन ओवर और चार गेंदो पर जिम्बाबवे की पूरी टीम 155 रनो पर सिमट गई। भारत ने पांच विकेट खोकर 37 ओवरों और तीन गेंदों पर 157 रन बना लिये। मदनलाल जिसने 3 विकिटें 27 रनो पर गिराई "मैन ऑफ दी मैंच" घोषित किये गये।

अपने तीसरे और चौथे मैंचों में भारत की पराजय रही। आस्ट्रेलिया ने साठ ओवरों में 9 विकेट खोकर 320 रन बनाये जिसके उत्तर में भारत 37 ओवर और पांच गेंदों में 158 रनों पर ही उखड़ गया। वेस्टइंडीज ने नौ विकिट खोकर 282 रन बनाये। भारत की पारी 53 ओवर और एक गेंद में 216 रनों पर ही समाप्त हो गई।

अपनी दूसरी भिड़न्त में जिम्बाबवे ने भारत के दांत खट्टे कर दिये। बिना कोई रन बनाये भारत के प्रारम्भिक बल्लेबाज गावस्कर और श्रीकान्त शून्य पर आउट हो गये; चार विकिटें 9 रनों पर, पांच विकिटें 17 रनों पर, छः विकटें 77 रनो पर और सात विकिटें 78 रनों पर उखड़ गईं। जीत के कोई आसार नही थे। ऐसी खराब स्थिति में कप्तान कपिलदेव ने अपने

जीवन की सबसे बहुमूल्य, शानदार और मजबूत पारी खेली। छः छक्के और सोलह चौके लगाते हुए वह 175 रनों पर अपराजित रहा। आठवें विकेट की साझेदारी में मदनलाल (17) के साथ उसने 102 रन जोड़े और किरमानी (24) के साथ नवें विकेट की असमाप्त साझेदारी मे 86 रन जोड़े गये। भारत ने आठ विकेट खोकर 60 ओवरो में 266 रन बनाये। जिम्बाबवे की टीम 57 ओवरों में 235 रन बना सकी।

अपने ग्रुप के आखिरी मैच में भारत का प्रदर्शन और भी अधिक सुन्दर रहा। पहले बल्लेबाजी करते हुए भारत की टीम 55 ओवर और पांच गेंदों में 247 रन बना सकी लेकिन आस्ट्रेलिया को 38 ओवरो और दो गेंदो में 129 रनों पर उखाड़ दिया। बिन्नी ने चार विकिटें 29 रनों पर प्राप्त की और "मैन ऑफ दी मैच" घोषित किये गये।

सेमी-फाइनल मैच में भारत का मुकावला इंग्लैंड से ओल्ड ट्रैफर्ड मैदान पर 22 जून, 1983 को हुआ। पूरे 60 ओवरों में इंग्लैंड 213 रन बना सका। भारत ने 54 ओवर और पांच गेंदों पर 217 रन बना लिये। मोहिन्दर अमरनाथ जिन्होंने दो कीमती विकिटें 27 रनो पर ली और बहुमूल्य 46 रन बनाये "मैन ऑफ दी मैच" का पारितोषिक जीतने मे सफल हुए।

वेस्ट इंडीज ने पाकिस्तान को आठ विकिटों से हरा कर फाइनल मैच मे प्रवेश किया।

लार्डस में 25 जून, 1983 को खचाखच दर्शकों से भरे मैदान में फाइनल मैच खेला गया। जब भारत की पारी 54 ओवर और चार गेंदों में केवल 183 रनो पर ही समाप्त हो गई तो उसके साथ जीत की आशाओं पर भी पानी फिर गया क्योंकि वेस्टइंडीज की टीम शक्तिशाली बल्लेबाजों से सजी हुई थी जिसके लिये तीन रन प्रति ओवर के औसत पर भारत से अधिक रन बनाना एक आसान कार्य था। भारत की ओर से केवल श्रीकान्त (38) ने वेस्टइंडीज के तेज गेंदबाजों का डटकर मुकाबला किया और दूसरे विकेट की साझेदारी मे मोहिन्दर अमरनाथ (26) के साथ 57 रन जोड़े। अपने पहले ही ओवर मे सन्धू ने ग्रिनेज का डंडा उखाड़ दिया जब वेस्टइंडीज की कुल रन सख्या 5 थी। हेन्स (13) और रिचर्डस (33) ने पारी को बांधने की कोशिश की और रन संख्या 50 तक पहुँचा दी। तत्पश्चात् केवल डूजॉन (25) और मार्शल (18) विकिटो पर कुछ देर तक टिक सके और 52 ओवर मे सभी बल्लेबाज 140 की कुल रन संख्या पर पवेलियन मे लौट गये। मोहिन्दर अमरनाथ ने अपने 26 बहुमूल्य रनों के साथ

सात ओवर में केवल 12 रन देकर तीन विकिटें ली और इस प्रतियोगिता में दूसरी बार लगातार "मैन ऑफ दी मैच" का पुरस्कार पाने में सफल हुए।

भारत की जीत ने क्रिकेट जगत को आश्चर्यचकित कर दिया। अद्भुत क्षेत्र-रक्षण, उत्तम गेंदबाजी, साहसिक बल्लेबाजी, खिलाड़ियों में असामान्य साहस व सहयोग और लक्ष्य को प्राप्त करने की अटूट कामना ने भारत को विश्व विजेता का सम्मान दिलाया।

भारत के द्वारा खेले गये मैचों की रन संख्या निम्न प्रकार रही :

मैनचेस्टर में, जून 10 और 11, 1983

भारत ने वेस्टइंडीज को 34 रनों से पराजित किया।

भारत

सुनील गावस्कर कै. डूजॉन बा. मार्शल	19
के. श्रीकान्त कै. डूजॉन बा. होल्डिंग	14
मोहिन्दर अमरनाथ कै. डूजॉन बा. गारनर	21
संदीप पाटिल बा. गोम्स	36
यशपाल शर्मा बा. होल्डिंग	89
कपिलदेव कै. रिचर्डस बा. गोम्स	6
रोजर बिन्नी पगबाधा बा. मार्शल	27
मदनलाल अपराजित	21
किरमानी रन आउट	1
रवि शास्त्री अपराजित	5
अतिरिक्त	23
कुल रन संख्या (आठ विकेटों पर 60 ओवर में)	262

विकेटों का पतन : 1-21, 2-46, 3-76, 4-125, 5-141, 6-214, 7-243, 8-246.

वेस्टइंडीज की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
होल्डिंग	12	2	32	2
रॉबर्टस	12	1	51	0
मार्शल	12	1	48	2
गारनर	12	1	49	1
रिचर्डस	2	0	13	0
गोम्स	10	0	46	2

वेस्टइंडीज

सी. जी. ग्रिनीज बा. सन्धू	24
डी. एल. हेन्स रन आउट	24
आई. वी. ए. रिचर्डस कै. किरमानी बा. बिन्नी	17
एस. एफ. ए. बेकस बा. मदनलाल	14
सी. एच. लॉयड बा. बिन्नी	25
पी. जी डूजॉन कै. सन्धू बा. बिन्नी	7
एच. ए. गोम्स रन आउट	8
एम. डी. मार्शल स्ट. किरमानी बा. शास्त्री	2
ए. एम. ई. रॉबर्टस अपराजित	37
एम. ए. होल्डिंग बा. शास्त्री	8
जे. गारनर स्ट. किरमानी बा. शास्त्री	37
अतिरिक्त	25
कुल रन संख्या (54.1 ओवर में)	228

विकेटों का पतन : 1-49, 2-56, 3-76, 4-96, 5-107, 6-124, 7-126, 8-130, 9-157, 10-228.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
कपिलदेव	10	0	34	0
सन्धू	12	1	36	1
मदनलाल	12	1	34	1
बिन्नी	12	1	48	3
शास्त्री	5.1	0	26	3
संदीप पाटिल	3	0	25	0

लिस्टर में, 11 जून, 1983

भारत ने जिम्बाबवे को पांच विकेटों से पराजित किया ।

जिम्बाबवे

ए. एच. शाह कै. किरमानी बा. सन्धू	8
जी. ए. पैटरसन पगबाधा बा. मदनलाल	22
जे. जी. हिरन कै. किरमानी बा. मदनलाल	18
ए. जे. पाईक्राफ्ट कै. शास्त्री बा. बिन्नी	14

डी. एल. ह्याउटन कै. किरमानी बा. मदनलाल	21
डी. ए. जी. फ्लेचर बा. कपिलदेव	13
के. एम. क्यूरन रन आउट	8
आई. पी. बूचर्ट अपराजित	22
आर. डी. ब्राउन कै. किरमानी बा. शास्त्री	6
पी. डब्लू. ई. रॉसन कै. किरमानी बा. बिन्नी	3
ए. जे. ट्राइकॉस रन आउट	2
अतिरिक्त	18
कुल रन संख्या (51.4 ओवर में)	155

विकेटों का पतन : 1-13, 2-55, 3-56, 4-71, 5-106, 6-114, 7-115, 8-139, 9-148, 10-155.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
कपिल देव	9	3	18	1
सन्धू	9	1	29	0
मदनलाल	10.4	0	27	3
बिन्नी	11	2	25	2
शास्त्री	12	1	38	1

भारत

श्रीकान्त कै. बूचर्ट बा. रॉसन	20
गावस्कर कै. हिरन बा. रॉसन	4
मोहिन्दर अमरनाथ कै. ऐवजी बा. ट्राइकॉस	44
संदीप पाटिल बा. फ्लेचर	50
रवि शास्त्री के. ब्राउन बा. शाह	17
यशपाल शर्मा अपराजित	18
कपिलदेव अपराजित	2
अतिरिक्त	2
कुल रन संख्या (37.3 ओवर में, पांच विकेटों पर)	157

विकेटों का पतन : 1-13, 2-32, 3-101, 4-128, 5-148.

जिम्बाब्वे की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
रॉसन	5.1	1	11	2
क्यूरन	6	1	33	0
बूचर्ट	5	1	21	0
ट्राइकॉस	11	1	41	1
फ्लेचर	6	1	32	1
शाह	3.3	0	17	1

नोटिंघम में 13 जून, 1983

आस्ट्रेलिया ने भारत को 162 रनों से पराजित किया।

आस्ट्रेलिया

के. वेसल्स बा. कपिल देव	5
टी. एम. चैपल कै. श्रीकान्त बा. अमरनाथ	110
के. जे. ह्यूज बा. मदनलाल	52
डी. डब्ल्यू. हुक्स कै. कपिल देव बा. मदनलाल	1
जी. एन. येलप अपराजित	66
ए. आर. बोर्डर कै. यशपाल शर्मा बा. बिन्नी	26
आर. डब्ल्यू. मार्श कै. सन्धू बा. कपिल देव	12
के. एच. मैकली कै. और बा. कपिलदेव	4
टी. जी. होगन बा. कपिल देव	11
जी. एफ. लॉसन कै. श्रीकान्त बा. कपिल देव	6
आर. एम. हॉग अपराजित	2
अतिरिक्त	25
कुल रन संख्या (नौ विकेटों पर 60 ओवर में)	320

विकेटों का पतन : 1-11, 2-155, 3-159, 4-206, 5-254, 6-277, 7-289, 8-301, 9-307.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
कपिल देव	12	2	43	5
सन्धू	12	1	52	0
बिन्नी	12	0	52	1
शास्त्री	2	0	16	0

मदनलाल	12	0	69	2
संदीप पाटिल	6	0	36	0
मोहिन्दर अमरनाथ	4	0	27	1

भारत

रवि शास्त्री पगबाधा बा. लॉसन	11
श्रीकान्त कै. बोर्डर बा. होगन	39
मोहिन्दर अमरनाथ रन आउट	2
डी. बी. वेंगसरकर पगबाधा बा. मैकली	5
संदीप पाटिल बा. मैकली	0
यशपाल शर्मा कै. और बा. मैकली	3
कपिलदेव बा. होगन	40
मदनलाल कै. होगन बा. मैकली	27
आर. बिन्नी पगबाधा बा. मैकली	0
किरमानी बा. मैकली	12
सन्धू अपराजित	9
अतिरिक्त	10
कुल रन संख्या (37·5 ओवर में)	158

विकेटों का पतन : 1-38, 2-43, 3-57, 4-57, 5-64, 6-66, 7-124, 8-126, 9-136, 10-158.

आस्ट्रेलिया की गेंदबाजी

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
लॉसन	5	1	25	1
हॉग	7	2	23	0
होगन	12	1	48	2
मैकली	11·5	3	39	6
बोर्डर	2	0	13	0

ओवल के मैदान पर जून 15, 1983

बेस्टइंडीज ने भारत को 66 रनों से पराजित किया।

वेस्टइंडीज

सी. जी. ग्रिनिज कै. वेंगसरकर बा. कपिल देव	9
डी. एल. हेन्स बा. अमरनाथ	38

आई. वी. ए. रिचर्डस कै. किरमानी बा. सन्धू	119
सी. एच. लॉयड रन आउट	41
एस. एफ. ए. बेकस बा. बिन्नी	8
पी. जे. डूजॉन कै. शास्त्री बा. बिन्नी	9
एच. ए. गोम्स अपराजित	27
ए. एम. ई. रॉबर्ट्स कै. पाटिल बा. बिन्नी	7
एम. डी. मार्शल रन आउट	4
एम. ए. होल्डिंग कै. ऐवजी बा. मदनलाल	2
एम. डब्लू. डेविस अपराजित	0
अतिरिक्त	18
कुल रन संख्या (नौ विकिटों पर 60 ओवर में)	282

विकेटों का पतन : 1-17, 2-118, 3-198, 4-213, 5-239, 6-240, 7-257, 8-270, 9-280.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
कपिल देव	12	0	48	1
सन्धू	12	2	42	1
बिन्नी	12	0	71	3
अमरनाथ	12	0	58	1
मदनलाल	12	0	47	1

भारत

श्रीकान्त कै. डूजॉन बा. रॉबर्टस	2
रवि शास्त्री कै. डूजॉन बा. रॉबर्टस	6
मोहिन्दर अमरनाथ कै. लॉयड बा. होल्डिंग	80
डी. बी. वेंगसरकार चोट के कारण निवृति	32
संदीप पाटील कै. और बा. गोम्स	21
यशपाल शर्मा रन आउट	9
कपिलदेव कै. हैन्स बा. होल्डिंग	36
बिन्नी पगबाधा बा. होल्डिंग	1
मदनलाल अपराजित	8

किरमानी बा. मार्शल	0
सन्धू रन आउट	0
अतिरिक्त	21
कुल रन संख्या (53.1 ओवर में)	216

विकेटों का पतन : 1-2, 2-21, 3-130, 4-143, 5-193, 6-195, 7-212, 8-214, 9-216, 10-216.

वेस्टइंडीज की गेंदबाजी

	ओ	मे. ओ.	रन	विकेट
रॉबर्ट्स	9	1	29	2
होल्डिंग	9.1	0	40	3
मार्शल	11	3	20	1
डेविस	12	2	51	0
गोम्स	12	1	55	1

मैन ऑफ दी मैच—आई. वी ए. रिचर्डस

टर्नब्रिज वेल्स में, जून 18, 1983

भारत ने जिम्बाबवे को 31 रनों से पराजित किया।

भारत

गावस्कर पगबाधा बा. रॉसन	0
श्रीकान्त कै. बूचर्ट बा. क्यूरन	0
मोहिन्दर अमरनाथ कै. हाउटन बा. रॉसन	5
संदीप पाटिल कै. हाउटन बा. क्यूरन	1
यशपाल शर्मा कै. हाउटन बा. रॉसन	9
कपिलदेव अपराजित	175
बिन्नी पगबाधा बा. ट्राइकॉस	22
रवि शास्त्री कै. पाइक्राफ्ट बा. फ्लेचर	1
मदनलाल कै. हाउटन बा. क्यूरन	17
किरमानी अपराजित	24
अतिरिक्त	12
कुल रनों की संख्या (आठ विकेटों पर 60 ओवर में)	266

विकेटों का पतन : 1-0, 2-6, 3-6, 4-9, 5-17, 6-77, 7-78, 8-180.

जिम्बाबवे की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
रॉसन	12	4	47	3
क्यूरन	12	1	65	3
ब्यूचर्ट	12	2	38	0
फ्लेचर	12	2	59	1
ट्राइकॉस	12	0	45	1

जिम्बाबवे

आर. डी. ब्राउन रन आउट	35
जी. ए. पैटरसन पगबाधा बा. बिन्नी	23
आई. जी. हिरन रन आउट	3
ए. जे. पाईक्राफ्ट कै. किरमानी बा. सन्धू	6
डी. एल. हाउटन पगबाधा बा. मदनलाल	17
डी. ए. जी. फ्लेचर कै. कपिलदेव बा. मदनलाल	13
के. एम. क्यूरन कै. शास्त्री बा. मदनलाल	73
आई. पी. ब्यूचर्ट बा. बिन्नी	18
जी. ई. पैकओवर कै. यशपाल शर्मा बा. मदनलाल	14
पी. डब्लू. ई. रॉसन अपराजित	2
ए. जे. ट्राइकॉस कै. और बा. कपिल देव	3
अतिरिक्त	28
कुल रन संख्या (57 ओवर में)	235

विकेटों का पतन : 1-44, 2-48, 3-61, 4-86, 5-103, 6-113, 7-168, 8-189, 9-230, 10-235.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
कपिल देव	11	1	32	[illegible]
सन्धू	11	[illegible]	44	1
बिन्नी	11	2	45	2
मदनलाल	11	2	42	3
मोहिन्दर अमरनाथ	12	[illegible]	37	1

रवि शास्त्री	1	0	7	0

मैन ऑफ दी मैच : के. एम. वयूरन

चेम्सफोर्ड में, जून 20, 1983

भारत ने आस्ट्रेलिया को 118 रनों से पराजित किया।

भारत

गावस्कर कै. चैपल बा. हॉग	9
श्रीकान्त कै. बॉर्डर बा. थोमसन	24
मोहिन्दर अमरनाथ कै. मार्श बा थोमसन	13
यशपाल शर्मा कै. हॉग बा. होगन	40
संदीप पाटिल कै. होगन बा. मैकली	30
कपिलदेव कै. हुक्स बा. हॉग	28
कीर्ति आजाद कै. बॉर्डर बा. लॉसन	15
रोजर बिन्नी रन आउट	21
मदनलाल अपराजित	12
किरमानी पगबाधा बा. हॉग	10
बी. एस. सन्धू बा. थोमसन	8
अतिरिक्त	37
कुल रन संख्या (55.5 ओवर में)	247

विकेटों का पतन : 1-27, 2-54, 3-65, 4-118, 5-157, 6-174 7-207, 8-215, 9-232, 10-247.

आस्ट्रेलिया की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
लॉसन	10	1	40	1
हॉग	12	2	40	3
होगन	11	1	31	1
थोमसन	10.5	0	51	3
मैकली	12	2	48	1

आस्ट्रेलिया

टी. एम. चैपल कै. मदनलाल बा. सन्धू	2
जी. एम. वुड कै. किरमानी बा. बिन्नी	21
जी. एन. येलप कै. और बा. बिन्नी	18

बी. डब्लू. हुक्स बा. बिन्नी	1
ए. आर. बॉर्डर बा. मदनलाल	36
आर. डब्लू. मार्श पगबाधा बा. मदनलाल	0
के. एच. मैकली कै. गावस्कर बा. मदनलाल	5
टी. जी. होगन कै. श्रीकान्त बा. बिन्नी	8
जी. एफ. लॉसन बा. सन्धू	16
आर. एम. हॉग अपराजित	8
जे. आर. थोमसन बा. मदनलाल	0
अतिरिक्त	14
कुल रन संख्या (38.2 ओवर में)	129

विकेटों का पतन , 1-3, 2-46, 3-48, 4-52, 5-52, 6-69, 7-78, 8-115, 9-129, 10-129.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
कपिल देव	8	2	16	0
सन्धू	10	1	26	2
मदनलाल	8.2	3	20	4
बिन्नी	8	2	29	4
मोहिन्दर अमरनाथ	2	0	17	0
कीर्ति आजाद	2	0	7	0

मैन ऑफ दी मैच : रोजर बिन्नी

सेमी फाइनल मैचो के पूर्व विभिन्न देशों की स्थिति इस प्रकार रही :

	मैच खेले गये	जीत	हार	अंक प्राप्त
ग्रुप 'ए'				
इंग्लैंड	6	5	1	20
पाकिस्तान	6	3	3	12
न्यूजीलैंड	6	3	3	12
श्रीलंका	6	1	5	4
ग्रुप 'बी'				
वेस्टइंडीज	6	5	1	20
भारत	6	4	2	16

आस्ट्रेलिया	6	2	4	8
ज़िम्बाबवे	6	1	5	4

सेमीफाइनल मैच

ओल्ड ट्रेफर्ड में जून 22, 1983
भारत ने इंग्लैंड को छ: विकेटों से पराजित किया

इंग्लैंड

जी. फाउलर बा. बिन्नी	33
सी. जे. तवारे कै. किरमानी बा. बिन्नी	32
डी. आर. गावर कै. किरमानी बा. अमरनाथ	17
ए. जे. लेम्ब रन आउट	29
एम. डब्लू. गैटिंग बा. अमरनाथ	18
आई. टी. बॉथम बा. आजाद	6
आई. जे. गाउल्ड रन आउट	13
वी. जे. मार्क्स बा. कपिलदेव	8
जी. आर. डिल्ली अपराजित	20
पी. जे. डब्लू. ऐलीट कै. पाटिल बा. कपिलदेव	8
आर. जी. डी. विलस बा. कपिलदेव	0
अतिरिक्त	29
कुल रन संख्या (60 ओवर में)	213

विकेटों का पतन : 1-69, 2-84, 3-107, 4-141; 5-150, 6-160, 7-175, 8-177, 9-202, 10-213.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
कपिल देव	11	1	35	3
सन्धू	8	1	36	0
बिन्नी	12	1	43	2
कीर्ति आजाद	12	1	28	1
मदनलाल	5	0	15	0
मोहिन्दर अमरनाथ	12	1	27	2

भारत

गावस्कर कै. गाउल्ड बा. ऐल्लोट	25
श्रीकान्त कै. विलिस बा. बॉथम	19
मोहिन्दर अमरनाथ रन आउट	46
यशपाल शर्मा के. ऐल्लोट बा. विलिस	61
संदीप पाटिल अपराजित	51
कपिल देव अपराजित	1
अतिरिक्त	14
कुल रन संख्या (चार विकेटों पर 54·5 ओवर में)	217

विकेटों का पतन : 1-46, 2-50, 3-142, 4-205

इंग्लैंड की गेंदबाजी

	ओ.	मे ओ.	रन	विकेट
विलिस	10·4	2	42	1
डिल्ली	11	0	43	0
ऐल्लोट	10	3	40	1
बॉथम	11	4	40	1
मार्क्स	12	1	38	0

मैन ऑफ दी मैच : मोहिन्दर अमरनाथ

दूसरे सेमी-फाइनल मैच में वेस्टइंडीज ने पाकिस्तान को आठ विकेटों से हराया :

पाकिस्तान 60 ओवर में आठ विकेटों पर 184 रन; वेस्टइंडीज 48·4 ओवर में दो विकेटों पर 188 रन।

फाइनल मैच, लार्ड्स के मैदान पर, जून 25, 1983

भारत ने वेस्टइण्डीज को 43 रनों से पराजित किया।

भारत

गावस्कर कै. डूजॉन बा. रॉबर्टस	2
श्रीकान्त पगबाधा बा. मार्शल	38
मोहिन्दर अमरनाथ बा. होल्डिंग	26
यशपाल शर्मा कै. ऐवजी बा. गोम्स	11
संदीप पाटिल कै. गोम्स बा. गारनर	27
कपिलदेव कै. होल्डिंग बा. गोम्स	15
कीर्ति आजाद कै. गारनर बा. रॉबर्ट्स	0
बिन्नी कै. गारनर बा. रॉबर्ट्स	2
मदनलाल बा. मार्शल	17

किरमानी बा. होल्डिंग	14
सन्धू अपराजित	11
अतिरिक्त	20
कुल रन संख्या (54.4 ओवर में)	183

विकेटों का पतन : 1-2, 2-59, 3-90, 4-92, 5-110, 6-111, 7-130, 8-153, 9-161, 10-183.

वेस्ट इंडीज की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
रॉबर्ट्स	10	2	32	3
गारनर	12	4	24	1
मार्शल	11	1	24	2
होल्डिंग	9.4	2	26	2
गोम्स	11	1	49	2
रिचर्डस	1	0	8	0

वेस्ट इंडीज

सी. जी. ग्रिनिज बा. सन्धू	1
डी. एल. हेन्स कै. विन्नी बा. मदनलाल	13
आई. वी. ए. रिचर्डस कै. कपिल देव बा. मदनलाल	33
सी. एच. लॉयड कै. कपिल देव बा. विन्नी	8
एच. ए. गोम्स कै. गावस्कर बा. मदनलाल	5
एस. एफ. ए. बेकस कै. किरमानी बा. सन्धू	8
पी. जे. डूजॉन बा. अमरनाथ	25
एम. डी. मार्शल कै. गावस्कर बा. अमरनाथ	18
ए. एम. ई. रॉबर्ट्स पगबाधा बा. कपिल देव	4
जे. गारनर अपराजित	5
एम. ए. होल्डिंग पगबाधा बा. अमरनाथ	6
अतिरिक्त	14
कुल रन संख्या (52 ओवर में)	140

विकेटों का पतन : 1-5, 2-50, 3-57, 4-66, 5-66, 6-76, 7-119, 8-124, 9-140, 10-140.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
कपिल देव	11	4	21	1
सन्धू	9	1	32	2
मदनलाल	12	2	31	3
बिन्नी	10	1	23	1
मोहिन्दर अमरनाथ	7	0	12	3
कीर्ति आजाद	3	0	7	0

मैन ऑफ दी मैच : मोहिन्दर अमरनाथ

प्रथम एशिया कप, 1984

वेस्टइंडीज के विरुद्ध 1983-84 में भारत का कमजोर प्रदर्शन और सर्वश्रेष्ठ हरफन मौला खिलाड़ी कपिलदेव का घुटने की चोट के कारण टीम से बाहर रहना भारत के लिये शरजांह में खेले गये प्रथम एशिया कप प्रतियोगिता में घातक सिद्ध हो सकते थे। लेकिन सुनील गावस्कर की कप्तानी में भारतीय खिलाड़ियों ने अपने सुन्दर और साहसिक प्रदर्शन से एशिया कप पर भी अपना अधिकार कर लिया और 50,000 डालर का नकद पुरस्कार भी जीता।

इस श्रृंखला के प्रथम मैच में श्रीलंका ने पाकिस्तान को हराकर भारत का काम कुछ सरल कर दिया। पाकिस्तान 46 ओवर में नौ विकेटों पर 187 रन बना सका, जिसके जवाब में श्रीलंका ने 43 ओवर और 3 गेंदों में 190 रन बना लिये। भारत ने तो श्रीलंका को बुरी तरह से रौंध डाला। विपक्षी टीम 41 ओवर में केवल 96 रनो पर ही सिमट गई और भारत की प्रारम्भिक जोड़ी, एस. खन्ना और जी. परकार ने केवल 21 ओवर और 4 गेंदों में जीत के लिये आवश्यक रन बना लिये।

पाकिस्तान ने भारत को 46 ओवर मे चर विकेटों पर केवल 188 रन ही बना लेने दिये लेकिन भारतीय गेंदबाजो ने पाकिस्तान की पारी को 39 ओवर और 4 गेंदों में केवल 134 रनों पर ही समाप्त कर दिया। एस. खन्ना भारत द्वारा खेले गये दोनों मैचों में "मैन ऑफ दी मैच" घोषित किये गये।

इन मैचों की रन संख्या निम्न प्रकार है :

शरजांह में अप्रैल 8, 1984 को भारत दस विकेटों से विजयी :

श्रीलंका

एस. वेटीमुनी कै. मदनलाल बा. मनोज प्रभाकर	12
वी. कुरूप कै. खन्ना बा. चेतन शर्मा	0
आर. एल. डिआस कै. वेंगसरकर बा. मनोज प्रभाकर	5
डी. मेन्डिस कै. पाटिल बा. चेतन शर्मा	1
आर. एस. मधुगले बा. मदनलाल	38
ए. रानातुंगे रन आउट	9
ए. डी. सिल्वा पगबाधा बा. मदनलाल	11
पू. एस. एच. करनेन पगबाधा बा. मदनलाल	0
जे. आर. रतनायके बा. रविशास्त्री	2
डी. एस. डी सिल्वा अपराजित	8
वी. बी. जॉन कै. गावस्कर बा. चेतन शर्मा	2
अतिरिक्त	8
कुल रन संख्या (41 ओवर मे)	96

विकेटों का पतन : 1-1, 2-17, 3-20, 4-26, 5-53, 6-79, 7-81, 8-82, 9-86, 10-96.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन.	विकेट
चेतन शर्मा	8	1	22	3
मनोज प्रभाकर	10	3	16	2
रोजर बिन्नी	7	0	25	0
मदनलाल	8	2	11	3
रवि शास्त्री	7	1	13	1
कीर्ति आजाद	1	0	1	0

भारत

एस. खन्ना अपराजित	51
श्री. परकार अपराजित	32
अतिरिक्त	14
कुल रन संख्या (बिना विकेट खोये, 21.4 ओवर में)	97

श्रीलंका की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
वी. बी. जॉन	9	1	30	0
जे. आर. रतनायके	4	0	27	0
यू. एस. एच करनेन	2	0	4	0
डी. एस. एडी. सिल्वा	6	0	21	0
आर. एस. मधुगले	0.4	0	1	0

शरजाह में अप्रेल 13, 1984 को, भारत 54 रनों से विजयी :

भारत

एस. खन्ना. कै. दलपत बा. मुद्दसर नजर	56
जी. परकार रन आउट	22
डी. बी. वेंगसरकर बा. शाहिद मोहम्मद	14
संदीप पाटिल कै. सलीम मलिक बा. सरफराज नवाज	43
सुनील गावस्कर अपराजित	36
अतिरिक्त	17
कुल रन संख्या (46 ओवर में, चार विकटों पर)	188

विकेटो का पतन : 1-54, 2-88, 3-110, 4-188.

पाकिस्तान की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
अजीम हफीज	7	0	41	0
सरफराज नवाज	10	1	37	1
शाहिद मोहम्मद	10	1	23	1
अब्दुल कादिर	10	0	36	0
मुद्दसर नजर	9	0	34	1

पाकिस्तान

मोहसिन खां कै. परकार बा. शास्त्री	35
सादत अली रन आउट	13
मुद्दसर नजर स्ट. खन्ना बा. शास्त्री	18
जहीर अब्बास कै. मदनलाल बा. बिन्नी	27
सलीम मलिक रन आउट	15

कासिम उमर कै. प्रभाकर बा. बिन्नी	16
शाहिद मोहम्मद रन आउट	0
अब्दुल कादिर रन आउट	0
सरफराज नवाज कै. पटिल बा. बिन्नी	4
ए. दलपत स्ट. खन्ना बा. शास्त्री	1
अजीम हफीज अपराजित	0
अतिरिक्त	5
कुल रन संख्या (39.4 ओवर में)	134

विकेटों का पतन : 1-23, 2-69, 3-70, 4-91, 5-125, 6-125, 7-125, 8-128, 9-132, 10-134.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन.	विकेट
चेतन शर्मा	7	0	18	0
मनोज प्रभाकर	7	0	17	0
रोजर बिन्नी	9.4	0	33	3
मदनलाल	6	1	21	0
रविशास्त्री	10	0	40	3

द्वितीय एशिया कप, 1985

रोथमैन्स कप के लिये शरजाह में आयोजित दूसरी एशिया-कप श्रृंखला अधिक रोचक, रोमांचकारी, संघर्षपूर्ण और आनन्दायक रही। अपने पहले मैच में भारत 40 ओवर और चार गेंदों में केवल 125 रन पर आउट हो गया। केवल अजहरुद्दीन (47) और कप्तान कपिलदेव (30) ही विकेटों पर टिक सके। पाकिस्तान का लक्ष्य बहुत आसान था। केवल 2.5 रन प्रति ओवर की औसत से एक मामूली सी रन संख्या को पार करना था। केवल दो विकेट खोकर उसने 40 रन बना लिये थे। लेकिन भारत के सर्वश्रेष्ठ क्षेत्र रक्षण और उत्तम गेंदबाजी के विरुद्ध पाकिस्तान के बल्लेबाज नहीं टिक सके और केवल 32 ओवर और पांच गेंदों में पूरी टीम 87 रन पर ही सिमट गई।

इंग्लैंड के विरुद्ध अपने निर्धारित ओवरों की आखिरी गेंद पर जीत के लिये आस्ट्रेलिया को एक रन बनाना था और इंग्लैंड को अपनी जीत के लिये आखिरी गेंद पर एक भी रन नहीं देना था। कितनी संघर्षपूर्ण स्थिति ? एक रन की कीमत 30,000 डालर क्योंकि विजयी टीम के लिये 45,000 डालर और हारी हुई टीम को केवल 15,000 डालर। आस्ट्रेलिया ने आखिरी गेंद पर एक रन बना ही डाला।

फाइनल मैच में भारत ने आस्ट्रेलिया को तीन विकेटों से पराजित कर लगातार दूसरे वर्ष भी रोथमैन्स कप जीत लिया।

भारत द्वारा खेले गये मैचों की रन संख्या निम्न प्रकार है :

शरजाह में, 22 मार्च, 1985

भारत ने पाकिस्तान को 38 रनों से पराजित किया।

भारत

रवि शास्त्री पगबाधा बा. इमरान खां	0
श्रीकान्त कै. मलिक बा. इमरान खां	6
अजहरुद्दीन बा. तासिफ अहमद	47
वेंगसरकर कै. अशरफ अली बा. इमरान खां	1
गावस्कर कै. अशरफ अली बा. इमरान खां	2
मोहिन्दर अमरनाथ बा. इमरान खां	5
कपिल देव बा. तासिफ अहमद	30
रोजर बिन्नी कै. मियांदाद बा. मुद्दसर नजर	8
मदनलाल कै. अशरफ अली बा. इमरान खां	11
एस. विश्वनाथ अपराजित	3
एल. शिवरामकृष्णन कै. मलिक बा. वसीम अकम	1
अतिरिक्त	11
कुल रन संख्या (42.4 ओवर में)	125

विकेटों का पतन : 1-0, 2-12, 3-20, 4-28, 5-34, 6-80, 7-95, 8-111, 9-121, 10-125.

पाकिस्तान की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
इमरान खाँ	10	2	14	6
वसीम अकरम	7·4	0	27	1
ताहिर नक्काश	5	0	12	0
मुद्दसर नजर	10	1	36	1
तौसिफ अहमद	10	0	27	2

पाकिस्तान

मुद्दसर नजर कै. गावस्कर बा. बिन्नी	18
मोहसिन खाँ रन आउट	10
रमीज राजा कै. गावस्कर बा. कपिल देव	29
मियादाद कै. गावस्कर बा. शास्त्री	0
अशरफ अली कै. वेंगसरकर बा. शिवरामकृष्णन	0
इमरान खाँ स्ट. विश्वनाथ बा. शिवरामकृष्णन	0
सलीम मलिक कै. गावस्कर बा. शास्त्री	17
मन्जूर इलाही कै. और बा. मदनलाल	9
ताहिर नक्काश कै. विश्वनाथ बा. कपिल देव	1
तौसिफ अहमद बा. कपिल देव	0
वसीम अकरम	0
अतिरिक्त	3
कुल रन संख्या (32.5 ओवर में)	87

विकेटों का पतन : 1-13, 2-35, 3-40, 4-41, 5-41, 6-74 7-85, 8-87, 9-87, 10-87.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
कपिलदेव	6·5	1	17	3
रोजर बिन्नी	3	0	24	1
शिवरामकृष्णन	7	2	16	2
रवि शास्त्री	10	5	17	2
मदन लाल	6	2	12	1

इमरान खाँ ......मैन ऑफ द मैच

फाइनल मैच : शरजाह में, मार्च 29, 1985 को भारत ने आस्ट्रेलिया को तीन विकेट से हराया।

आस्ट्रेलिया

जी. एम. वुड. रन आउट	27
के. सी. वेसेल्स कै. गावस्कर बा. मदन लाल	30
डी. एम. जोन्स कै. विश्वनाथ बा. मदन लाल	8
ए. आर. बोर्डर कै. और बा अमरनाथ	27
के. जे. ह्यूज कै. और बा. अमरनाथ	11
जी. आर जे. मैथ्यूज पगबाधा बा. कपिलदेव	11
एस. ओडोनील रन आउट	3
एस. जे. रिक्सन रन आउट	4
एम. जे. बेनेट पगबाधा बा. शास्त्री	0
आर. जे. मेकर्डी अपराजित	0
सी. मैकडर मॉट कै. वेंगसरकर बा. शास्त्री	0
अतिरिक्त	18
कुल रन संख्या (42.3 ओवर में)	139

विकेटों का पतन : 1-60, 2-71, 3-78, 4-114, 5-115, 6-131, 7-138, 8-139, 9-139, 10-139.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
कपिल देव	6	3	9	1
रोजर बिन्नी	5	0	25	0
मदन लाल	7	0	37	2
शिवरामकृष्णन	8	1	29	0
रवि शास्त्री	9.3	1	14	2
मोहिन्दर अमरनाथ	7	1	19	2

भारत

रवि शास्त्री कै. रिक्सन बा. ओडोनील	9
श्रीकान्त पगबाधा बा. मैकडरमॉट	0

अजहरूद्दीन कै. जोन्स बा. मैकडरमॉट	22
वेंगसरकर बा. मैकडरमॉट	35
गावस्कर रन आउट	20
मोहिन्दर अमरनाथ अपराजित	24
कपिल देव बा. मैथ्यूज	1
रोजर बिन्नी बा. मैथ्यूज	2
मदनलाल अपराजित	7
अतिरिक्त	20
कुल रन संख्या (सात विकेटों पर 39.2 ओवर में)	140

विकटों का पतन : 1-2, 2-37, 3-41, 4-98, 5-103, 6-117, 7-120.

आस्ट्रेलिया की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
मैकडरमॉट	10	0	36	2
मेकर्डी	4	1	10	0
ओडोनील	4	1	11	1
बेनेट	10	0	35	0
मैथ्यूज	10	1	33	2
बोर्डर	1.2	0	6	0

मैन ऑफ द मैच—मोहिन्दर अमरनाथ

मैन ऑफ द सिरीज—सुनील गावस्कर

तृतीय एशिया कप

लगातार दो वर्ष तक रोथमैन्स कप जीत कर भारतीय खिलाड़ियों ने शरजांह में अपने शानदार खेल की छाप लगा दी थी। लेकिन तीसरे एशिया कप में भारत का प्रदर्शन निराशाजनक रहा और अपने दोनों मैचों में हार का मुंह देखना पड़ा। पाकिस्तान ने भारत को 49 रनों से हराया और वेस्ट इंडीज ने आठ विकेटों से।

भारत द्वारा खेले गये मैचों की रन संख्या निम्न प्रकार है :—

शरजांह में, 17 नवम्बर, 1985 को

पाकिस्तान ने भारत को 49 रनों से हराया।

पाकिस्तान

मुद्दसर नजर कै. वेंगसरकर बा शिवरामकृष्णन	67
मोहसिन खां रन आउट	2
रमीज राजा कै. गावस्कर बा. बिन्नी	66
जावेद मियांदाद अपराजित	40
इमरान खां रन आउट	9
सलीम मलिक अपराजित	9
अतिरिक्त	10
कुल रन संख्या (4 विकेटों पर 45 ओवर में)	203

विकेटों का पतन : 1-18, 2-118, 3-169, 4-185.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
कपिल देव	7	1	26	0
रोजर बिन्नी	9	1	36	1
चेतन शर्मा	7	1	40	0
रवि शास्त्री	9	1	26	0
शिवराम कृष्णन	9	0	40	1
मोहिन्दर अमरनाथ	4	0	27	0

भारत

गावस्कर स्ट. युसूफ बा. तौसिफ	63
श्रीकान्त कै. युसूफ बा. मोहसिन कमाल	4
अजहरुद्दीन पगबाधा बा. अक्रम	3
वेंगसरकर कै. सलीम मलिक बा. तौसिफ	27
रवि शास्त्री रन आउट	12
कपिलदेव पगबाधा बा. तौसिफ	0
मोहिन्दर अमरनाथ बा. मुद्दसर नजर	11
रोजर बिन्नी कै. तौसिफ बा. मोहसिन कमाल	11
चेतन शर्मा बा. मुद्दसर नजर	1
किरमानी अपराजित	5

शिवराम कृष्णन रन आउट	1
अतिरिक्त	16
कुल रन संख्या (40.4 ओवर में)	154

विकेटो का पतन : 1-9, 2-28, 3-64, 4-115, 5-118, 6-129, 7-133, 8-139, 9-151, 10-154.

पाकिस्तान की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
वसीम अकरम	74	2	15	1
मोहसिन कमाल	7	0	27	2
मुद्दसर नजर	9	0	43	2
इमरान खाँ	1.1	0	3	0
अब्दुल कादिर	6.5	0	26	0
तौसिफ अहमद	9	2	30	3

शरजाह में, नवम्बर 22, 1985 को वेस्टइंडीज ने भारत को आठ विकेट से हराया।

भारत

गावस्कर अपराजित	76
श्रीकान्त वा. गारनर	6
मोहिन्दर अमरनाथ कै. रिचर्डस् वा. गारनर	0
वेंगसरकर कै. गारनर वा. होल्डिंग	6
अजहरूद्दीन रन आउट	35
कपिल देव अपराजित	28
अतिरिक्त	29
कुल रन संख्या (4 विकेटों पर 45 ओवर में)	180

विकेटों का पतन : 1-10, 2-11, 3-26, 4-126.

वेस्टइंडीज की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
मैलकॉम मार्शल	9	2	35	0
जे. गारनर	9	4	11	2

सी. वॉल्श	9	2	31	0
माईकल होल्डिग	9	3	29	1
रोजर हार्पर	9	0	52	0

वेस्ट इंडीज

डेसमण्ड हेन्स अपराजित		72
रिचीरिचर्डसन बा. राजेन्द्र सिंह घई		72
लेरी गोम्स बा. कपिलदेव		10
रिचर्डस् अपराजित		24
	अतिरिक्त	8
कुल रन संख्या (41.3 ओवर मे दो विकेटों पर)		186

विकेटों का पतन : 1-114, 2-147.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
कपिल देव	8	1	29	1
रोजर-बिन्नी	7	0	36	0
राजेन्द्र सिंह घई	8.3	0	54	1
रविशास्त्री	9	1	27	0
शिवराम कृष्णन	9	0	32	0

बेन्सन और हेजेज कप विश्व क्रिकेट प्रतियोगिता, आस्ट्रेलिया, 1984

विदेशी टीमों के विरुद्ध 1983-84 में भारत का प्रदर्शन बहुत ही असन्तोषजनक रहा। अपनी ही भूमि पर सितम्बर और अक्टूबर, 1983 में आस्ट्रेलिया के विरुद्ध पांच एक दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय मैचों की शृंखला में भारत की तीन में हार हुई और दो मैच वर्षा और अन्य कारणों से अधूरे ही छोड़ दिये गये।

अक्टूबर माह में भारतीय टीम पाकिस्तान पहुची लेकिन वहां भी उसका प्रदर्शन घटिया स्तर का ही रहा। क्वेटा में खेले गये पहले एक दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय मैच हारने के बाद प्रथम टेस्ट मैच मे भी भारत की हालत बहुत

ही कमजोर थी। पाकिस्तान ने नौ विकेटों पर 428 रन बनाकर पारी समाप्ति की घोषणा की और फिर भारत को केवल 156 रनो पर समेट लिया। अभी मैच के दो दिन बाकी थे और हार से बचने की आशायें कम थी। लेकिन मोहिन्दर अमरनाथ ने सात घंटे से अधिक संभलकर ठोस बल्लेबाजी की और भारत को हार से बचा लिया। दूसरे टेस्ट मैच में भारत ने फैसलाबाद में विशाल रन संख्या खड़ी की और जब उसका आखिरी विकेट गिरा तो 500 रन बन चुके थे। लेकिन पाकिस्तान ने केवल छह विकेटों पर 674 रन बना लिये। दूसरा एक दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय मैच चल ही रहा था कि भारत की राजधानी दिल्ली में भारत की प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या हो गई और भारत की टीम स्वदेश लौट आई।

इसके पश्चात् इंग्लैंड के विरुद्ध बम्बई मे तो भारत ने पहला टेस्ट मैच जीत लिया लेकिन दिल्ली और मद्रास मे उसकी पराजय हुई। दो टेस्ट मैचो मे हार-जीत का फैसला नही हो सका। एक दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय मैचो में भारत चार में हारा और केवल एक में ही उसकी जीत हुई।

ऐसे प्रदर्शन के बाद भी जब भारत की टीम बेन्सन और हेजेज कप विश्व क्रिकेट प्रतियोगिता के लिये आस्ट्रेलिया पहुंची तो किसी प्रकार के चमत्कार की आशा उससे करना एक सपना ही था। लेकिन सपना साकार हो गया क्योंकि एक बार फिर भारतीय खिलाड़ियों ने अपने अद्भुत प्रदर्शन से असम्भव को सम्भव कर दिखाया।

प्रतियोगिता का आयोजन टीमों को दो वर्गों मे विभाजित करके किया गया। प्रथम वर्ग में इंग्लैंड, आस्ट्रेलिया, पाकिस्तान और भारत रहे और दूसरे वर्ग में वेस्ट इंडिज, न्यूजीलैंड और श्रीलंका थे। भारत ने कुल पांच मैच खेले और पांचो में उसने शानदार विजय प्राप्त की।

भारत द्वारा खेले गये मैचों की रन संख्या निम्न प्रकार है :

मेलबोर्न मे 20 फरवरी, 1985 को

भारत ने पाकिस्तान को छह विकेट से हराया।

पाकिस्तान

मोहसिन खां कै. सदानन्द विश्वनाथ बा. बिन्नी	3
कासिम उमर कै. और बा. शिवारामाकृष्णन	57
जहिर अब्बास कै. और बा. शिवारामाकृष्णन	25
जावेद मियादाद कै. शिवारामाकृष्णन बा. बिन्नी	17
रमीज राजा कै. शास्त्री बा. कपिलदेव	29

इमरान खां कै. मदनलाल बा. कपिल देव	14
मुद्दसर नजर रन आउट	6
ताहिर नकाश कै. अमरनाथ बा. मदनलाल	0
रशीद खाँ कै. शास्त्री बा. बिन्नी	17
अनिल दलपत कै. कपिल देव बा. बिन्नी	9
वसीम अक्रम अपराजित	0
अतिरिक्त	6
कुल रन संख्या (49.2 ओवर मे)	183

विकेटों का पतन : 1-8, 2-73, 3-98, 4-119, 5-144, 6-151, 7-156, 8-156, 9-183, 10-183.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
कपिल देव	9	1	31	2
रोजर बिन्नी	8.2	3	35	4
मदनलाल	9	2	27	1
मोहिन्दर अमरनाथ	3	0	11	0
एल. शिवारामाकृष्णन	10	0	49	2
रवि शास्त्री	10	1	27	0

भारत

रवि शास्त्री कै. मियांदाद बा. इमरान खाँ	2
श्रीकान्त कै. मोहसिन बा. इमरान खां	12
अजहरूद्दीन अपराजित	93
वेंगसरकर कै. मुद्दसर बा. इमरान खां	0
सुनील गावस्कर पगबाधा बा. मुद्दसर	54
मोहिन्दर अमरनाथ अपराजित	11
अतिरिक्त	12
कुल रन संख्या (46.5 ओवर में, चार विकेटों पर)	184

विकेटों का पतन : 1-2, 2-27, 3-27, 4-159.

पाकिस्तान की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
इमरान खां	10	1	27	3
वसीम अकरम	9.5	0	38	0
रशीद खां	7	0	38	0
ताहिर नकाश	10	0	34	0
मुद्सर नजर	10	0	38	1

सिडनी में, फरवरी 26, 1985 को, भारत ने इंग्लैंड को 86 रनों से हराया।

भारत

रवि शास्त्री कै. फाउलर बा. ऐलिसन	13
श्रीकान्त रन आउट	57
अजहरुद्दीन कै. और बा. कान्स	45
वैंगसरकर रन आउट	43
कपिल देव कै. डाउटन बा. कान्स	29
गावस्कर अपराजित	30
मोहिन्दर अमरनाथ कै. लैम्ब बा. कान्स	6
बिन्नी कै. मार्क्स बा. फॉस्टर	2
मदनलाल कै. डाउटन बा. फॉस्टर	0
सदानन्द विश्वनाथ रन आउट	8
अतिरिक्त	2
कुल रन संख्या (नौ विकेटों पर, 50 ओवर में)	235

विकेटों का पतन : 1-67, 2-74, 3-147, 4-183, 5-197, 6-216, 7-220, 8-220, 9-235.

इंग्लैंड की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
एन. जी. बी. कान्स	10	0	59	3
आर. एम. ऐलिसन	10	1	46	1
एन. ए. फॉस्टर	10	0	33	2
पी. एच. ऐडमन्स	10	1	38	0
वी. जे. मार्क्स	10	0	57	0

इंग्लैंड

जी. फाउलर कै. सदानन्द विश्वनाथ बा. बिन्नी	26
एम. डी. मोक्सन कै. और बा. शिवारामाकृष्णन	48
डी. आई. गावर कै. वेंगसरकर बा. शिवारामाकृष्णन	25
ए. जी. लैम्ब बा. शिवारामाकृष्णन	13
एम. डब्लू. गैटिंग कै. सदानन्द विश्वनाथ बा. शास्त्री	7
पी. आर. डाउटन कै. शास्त्री बा. कपिलदेव	9
वी. जे. मार्क्स स्ट. सदानन्द विश्वनाथ बा. शास्त्री	2
पी. एच. एडमन्स स्ट. सदानन्द विश्वनाथ बा. शास्त्री	5
आर. एम. ऐलिसन कै. विश्वनाथ बा. मदनलाल	1
एन. ए. फोस्टर कै. श्रीकान्त बा. मदनलाल	1
एन. जी. बी. कान्स अपराजित	3
अतिरिक्त	9
कुल रन संख्या (41.4 ओवर में)	149

विकेटों का पतन : 1-41, 2-94, 3-113, 4-126, 5-126, 6-130, 7-142, 8-144, 9-144, 10-149.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	में. ओ.	रन	विकेट
कपिल देव	7	0	21	1
रोजर बिन्नी	8	0	33	1
मदनलाल	6·4	0	19	2
एल. शिवारामाकृष्णन	10	0	39	3
रवि शास्त्री	10	0	30	3

मेलबोर्न में, मार्च 3, 1985 भारत ने आस्ट्रेलिया को आठ विकेटों से हराया।

आस्ट्रेलिया

जी. एम. वुड बा. बिन्नी	1
आर. बी. कर बा. कपिलदेव	4
के. सी. वेस्लस कै. मदनलाल बा. कपिलदेव	6
ए. आर. बॉर्डर बा. बिन्नी	4
डी. जोन्स कै. विश्वनाथ बा. अमरनाथ	12

डब्लू. बी. फिलिप्स कै. अमरनाथ बा. शिवारामाकृष्णन	60
एस. ओडोनील कै. अमरनाथ बा. शास्त्री	17
जी एफ. लॉसन कै. और बा. शिवारामाकृष्णन	0
आर. एम. हॉग रन आउट	22
आर. मैकर्डी अपराजित	13
टी. ऐल्डरमैन बा. बिन्नी	6
अतिरिक्त	18
कुल रन संख्या (49.3 ओवर में)	163

विकेटों का पतन : 1-5, 2-5, 3-17, 4-17, 5-37, 6-85, 7-85, 8-134, 9-147, 10-163.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
कपिलदेव	10	2	25	2
बिन्नी	7.3	0	27	3
मदनलाल	5	0	18	0
मोहिन्दर अमरनाथ	7	1	16	1
एल. शिवारामाकृष्णन	10	0	32	2
रवि शास्त्री	10	1	34	1

भारत

रवि शास्त्री कै. फिलिप्स बा. ओडोनील	51
श्रीकान्त अपराजित	93
अजहरूद्दीन पगबाधा बा. ऐल्डरमैन	0
वेंगसरकर अपराजित	11
अतिरिक्त	10
कुल रन संख्या (दो विकेटों पर 36.1 ओवर में)	165

विकेटों का पतन : 1-124, 2-125.

आस्ट्रेलिया की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
लॉसन	8	1	35	0

हॉग	6	2	16	0
मैकर्डी	7.1	0	30	0
ऐल्डरमैन	8	0	38	1
ओडोनील	7	0	45	1

अंक तालिका

'ए' वर्ग

	मैच	जीते	हारे	अंक प्राप्त
भारत	3	3	—	6
पाकिस्तान	3	2	1	4
आस्ट्रेलिया	3	1	2	2
इंग्लैंड	3	—	3	—

'ब' वर्ग

वेस्ट इंडीज	2	1	—	3
न्यूजीलैंड	2	1	—	3
श्रीलंका	2	—	2	—

सेमी-फाइनल मैच : सिडनी में, मार्च 5, 1985 को, भारत ने न्यूजीलैंड को सात विकेटों से पराजित किया।

न्यूजीलैंड

जे. जी. राइट कै. सदानन्द विश्वनाथ बा. कपिलदेव	0
पी. ई. मैकएवन कै. सदानन्द विश्वनाथ बा. बिन्नी	9
जे. एफ. रीड कै. कपिलदेव बा. शास्त्री	55
एम. डी. क्रौव कै. अजहरूद्दीन बा. मदनलाल	9
जी. पी. हॉवर्थ रन आउट	7
जे. वी. कोनी बा. शास्त्री	33
आई. डी. एस. स्मिथ कै. अमरनाथ बा. मदनलाल	19
आर. जे. हेडली कै. मदनलाल बा. शास्त्री	3
बी. एल. कान्स कै. श्रीकान्त बा. मदनलाल	39
एम. सी. स्नेडन कै. अजहरूद्दीन बा. मदनलाल	7
ई. जे. चेटफिल्ड अपराजित	0
अतिरिक्त	25
कुल रन संख्या (50 ओवर मे)	206

फाइनल मैच, मेलबोर्न में, 10 मार्च, 1985 को
भारत ने पाकिस्तान को 8 विकेटों से पराजित किया।

पाकिस्तान

मुद्दसर नजर कै. विश्वनाथ बा. कपिलदेव	14
मोहसिन खां कै. अजहरुद्दीन बा. कपिलदेव	5
रमीज राजा कै. श्रीकान्त बा. चेतन शर्मा	4
कासिम उमर बा. कपिलदेव	0
जावेद मियांदाद स्ट. सदानन्द विश्वनाथ बा. शिवारामाकृष्णन	48
इमरान खां रन आउट	35
सलीम मलिक कै. चेतन शर्मा बा. शिवारामाकृष्णन	14
वसीम राजा अपराजित	21
ताहिर नक्काश कै. सदानन्द विश्वनाथ बा. शास्त्री	10
अनिल दलपत कै. शास्त्री बा. शिवारामाकृष्णन	0
अजीम हफीज अपराजित	7
अतिरिक्त	18
कुल रन संख्या (नौ विकेटों पर 50 ओवर में)	176

विकेटों का पतन : 1-17, 2-29, 3-29, 4-33, 5-101, 6-131, 7-131, 8-142, 9-145.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
कपिलदेव	9	1	23	3
चेतन शर्मा	7	1	17	1
मदनलाल	6	1	15	0
मोहिन्दर अमरनाथ	9	0	27	0
रवि शास्त्री	10	0	44	1
एल. शिवारामाकृष्णन	9	0	35	3

भारत

रवि शास्त्री अपराजित	63
श्रीकान्त कै. वसीम राजा बा. इमरान खां	67
अजहरुद्दीन बा. ताहिर नक्काश	25

विकेटों का पतन : 1-0, 2-14, 3-52, 4-69, 5-119, 6-145; 7-151, 8-188, 9-206, 10-206.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
कपिलदेव	10	1	34	1
बिन्नी	6	0	28	1
मदनलाल	8	1	37	4
मोहिन्दर अमरनाथ	7	0	24	0
शिवारामाकृष्णन	9	0	31	0
रवि शास्त्री	10	1	31	3

भारत

रवि शास्त्री कै. मैकएवन बा. हेडली	53
श्रीकान्त कै. रीड बा. चेटफिल्ड	9
अजहरूद्दीन कै. कोनी बा. कान्स	24
वेंगसरकर अपराजित	63
कपिलदेव अपराजित	54
अतिरिक्त	4
कुल रन संख्या (तीन विकेटो पर, 43.3 ओवर में)	207

विकेटों का पतन । 1-28, 2-73, 3-102.

न्यूजीलैंड की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
कान्स	9	0	35	1
हेडली	8.3	3	50	1
चेटफिल्ड	10	0	38	1
स्नेडन	8	1	37	0
कोनी	8	0	44	0

दूसरे सेमी-फाइनल मैच में पाकिस्तान ने वेस्टइंडीज को सात विकेटों से हराया ।

वेस्ट इंडीज 159 रन 44.3 ओवर मे पाकिस्तान 160 रन तीन विकेटों पर 46 ओवर में ।

फाइनल मैच, मेलबोर्न में, 10 मार्च, 1985 को
भारत ने पाकिस्तान को 8 विकेटों से पराजित किया।

पाकिस्तान

मुद्दसर नजर कै. विश्वनाथ बा. कपिलदेव	14
मोहसिन खां कै. अजहरूद्दीन बा. कपिलदेव	5
रमीज राजा कै. श्रीकान्त बा. चेतन शर्मा	4
कासिम उमर बा. कपिलदेव	0
जावेद मियांदाद स्ट. सदानन्द विश्वनाथ बा. शिवारामाकृष्णन	48
इमरान खां रन आउट	35
सलीम मलिक कै. चेतन शर्मा बा. शिवारामाकृष्णन	14
वसीम राजा अपराजित	21
ताहिर नक्काश कै. सदानन्द विश्वनाथ बा. शास्त्री	10
अनिल दलपत कै. शास्त्री बा. शिवारामाकृष्णन	0
अजीम हफीज अपराजित	7
अतिरिक्त	18
कुल रन संख्या (नौ विकेटों पर 50 ओवर में)	176

विकेटों का पतन : 1-17, 2-29, 3-29, 4-33, 5-101, 6-131, 7-131, 8-142, 9-145.

भारत की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
कपिलदेव	9	1	23	3
चेतन शर्मा	7	1	17	1
मदनलाल	6	1	15	0
मोहिन्दर अमरनाथ	9	0	27	0
रवि शास्त्री	10	0	44	1
एल. शिवारामाकृष्णन	9	0	35	3

भारत

रवि शास्त्री अपराजित	63
श्रीकान्त कै. वसीम राजा बा. इमरान खां	67
हरूद्दीन बा. ताहिर नक्काश	25

वेंगसरकर अपराजित	18
अतिरिक्त	4
कुल रन संख्या (दो विकेटों पर 47·1 ओवर में)	177

विकेटों का पतन : 1-103, 2-142.

पाकिस्तान की गेंदबाजी

	ओ.	मे. ओ.	रन	विकेट
इमरान खां	10	3	28	1
अजीम हफिज	10	1	29	0
ताहिर नक्काश	10	2	35	1
वसीम राजा	7.1	0	42	0
मुद्दसर नजर	8	0	26	0
सलीम मलिक	2	0	15	0

अपने शानदार प्रदर्शन से इस प्रतियोगिता में रवि शास्त्री ने 'चेम्पियन ऑफ चेम्पियन्स' का ईनाम जीता। इनाम स्वरूप उन्हें ओडी कार भेंटस्वरूप प्रदान की गई।

भारतीय क्रिकेट में कौन क्या है ?

अमरनाथ, मोहिन्दर

जन्म पटियाला, 24 सितम्बर, 1950; दायें हाथ के बल्लेबाज; दायें हाथ के मध्यम गति के तेज गेंदबाज; प्रथम श्रेणी के क्रिकेट मे 1966-67 में प्रवेश; पंजाब, दिल्ली और बड़ौदा की ओर से रणजी ट्राफी प्रतियोगिता में खेले : 88 पारी, 15 बार अपराजित, कुल रन संख्या 3227, औसत प्रति पारी 44·45; 7 शतक, उच्चतम 191 बम्बई के विरुद्ध 1979-80 में। दिलीप ट्राफी : 1290 रन, 40·31 प्रति पारी के औसत पर, उच्चतम 207 उत्तर क्षेत्र वि. पश्चिम क्षेत्र, 1982-83; ईरानी ट्राफी : उच्चतम 127, दिल्ली वि. शेष भारत 1982-83। कुल 54 टेस्ट मैच खेले : 91 पारी, नौ बार अपराजित, कुल रन संख्या 3680 जिसमें 10 शतक और 20 अर्ध शतक, औसत प्रति पारी 44·87, उच्चतम 138 आस्ट्रेलिया के विरुद्ध 1985-86। गेंदबाजी : टेस्ट : 30 विकेट 1677 रन पर, सर्वश्रेष्ठ 4 विकेट 63 रन पर वि. न्यूजीलैंड 1975-76; रणजी ट्राफी : 121 विकेट 25·12 रन के औसत पर, सर्वश्रेष्ठ पर 7 विकेट 27 रन पर (12 विकेट 34 रन पर मैच मे, दिल्ली वि. जम्मू व कश्मीर 1969-70; दिलीप ट्राफी

44 विकेट 28·00 रन के औसत पर सर्वश्रेष्ठ 6 विकेट 34 रन पर, उत्तर वि. दक्षिण, 1977-78। 1984 में अर्जुन अवार्ड और विजडन से सम्मानित। अभी ये एयर इंडिया में कार्यरत हैं और लाला अमरनाथ के पुत्र हैं।

अमरनाथ, सुरेन्द्र

जन्म पटियाला, 30 दिसम्बर, 1948; लाला अमरनाथ के सबसे बड़े पुत्र; बायें हाथ के बल्लेबाज, दायें हाथ के गेंदबाज; प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में 1963-64 मे प्रवेश; पंजाब, दिल्ली और गुजरात की ओर से रणजी ट्राफी प्रतियोगिता मे खेले : 105 पारी, 14 बार अपराजित, कुल रन संख्या 3903, औसत प्रति पारी 42·89; 7 शतक, उच्चतम 202 पंजाब वि. दिल्ली 1972-73; दिलीप ट्राफी मे उत्तर क्षेत्र की ओर से दो शतक. 122 वि. दक्षिण क्षेत्र 1975-76 और 107 वि. दक्षिण क्षेत्र 1977-78; कुल रन संख्या 1264, औसत प्रति पारी 37.37. ईरानी कप मैच मे कीर्तिमान : 235 दिल्ली वि. शेष भारत। टैस्ट मैच मे और अनौपचारिक टैस्ट मैच में शुरुआत शतक से की : 124 वि. न्यूजीलैंड, ऑकलैंड मे, 1975-76 और 118 श्रीलंका के विरुद्ध अहमदाबाद में 1975-76; कुल 10 टेस्ट मैच खेले, 18 पारी में 30.55 के औसत पर 550 रन बनाये। *ये विमा फेब्रिक्स, दिल्ली में कार्यरत हैं।*

अरुणलाल

जन्म दिल्ली, 1 अगस्त, 1955; दांयें हाथ के बल्लेबाज; प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में 1975-76 में दिल्ली की ओर से प्रवेश और अपनी पहली ही पारी में सेना के विरुद्ध शतक; 1981-82 मे बंगाल की ओर से खेल रहे हैं : रणजी ट्राफी में 57 पारियों में चार बार अपराजित रहकर 2191 रन बना लिये हैं जिसमें 7 शतक है, उच्चतम 157 बिहार के विरुद्ध 1984-85 में; दिलीप ट्राफी मे एक शतक : *109 पूर्व वि. पश्चिम क्षेत्र 1981-82*। कुल 4 टैस्ट मैच खेले, 7 पारी मे 164 रन, 2 अर्धशतक के साथ। ये टी. एम. एण्ड एम. सी. लिमिटेड, कलकत्ता में अफसर हैं।

अजहरुद्दीन, मोहम्मद

जन्म हैदराबाद, 8 फरवरी, 1963, दायें हाथ के बल्लेबाज; प्रथम श्रेणी के क्रिकेट मे 1981-82 मे हैदराबाद की ओर से प्रवेश; दो वर्ष बाद रणजी मे पहला शतक आन्ध्र के विरुद्ध और फिर अगले वर्ष आन्ध्र के रुद्ध दोनों पारियों मे शतक; दिलीप ट्राफी मे अपने पहले ही मैच मे पूर्व

क्षेत्र के विरुद्ध 226 रन 1983-84 में बनाये। इंग्लैंड के विरुद्ध 1984-85 में अपने पहले तीन टेस्ट मैचों में शतक लगाकर विश्व कीर्तिमान स्थापित किया। अभी तक कुल 9 टेस्ट मैच खेले हैं : 14 पारियों में दो बार अपराजित रहकर 55.33 रन प्रति पारी के औसत पर 644 रन बना लिये हैं जिसमें दो अर्धशतक भी शामिल हैं। रणजी ट्राफी में 720 रन, 48 रन प्रति पारी के औसत पर बनाये हैं और दिलीप ट्राफी में 99.33 के औसत पर 298 रन बना लिये हैं। ये स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, हैदराबाद में कार्यरत हैं।

आबिद अली, सैयद

जन्म हैदराबाद, 9 सितम्बर, 1941; दायें हाथ के बल्लेबाज, दायें हाथ के मध्यम गति के तेज गेंदबाज। प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में 1959-60 में प्रवेश। हैदराबाद की ओर से रणजी ट्राफी प्रतियोगिता में खेले : 120 पारी, आठ बार अपराजित, कुल रन संख्या 3687, 32.91 प्रति पारी के औसत पर जिसमें 7 शतक शामिल हैं; 4123 रन देकर 189 विकेट प्राप्त किये हैं। दिलीप ट्राफी में एक शतक : 120 दक्षिण क्षेत्र वि. पूर्व क्षेत्र, 1970-71। 29 टेस्ट मैचों से 53 पारियाँ, तीन बार अपराजित, कुल रन संख्या 1018, 20.36 रन प्रति पारी के औसत पर, उच्चतम 81 वि. आस्ट्रेलिया, सिडनी में 1967-68, 47 टेस्ट विकेट 1980 रन देकर प्राप्त किये। अपने पहले ही टेस्ट मैच में आस्ट्रेलिया के विरुद्ध ऐडिलेड में 6 विकेट 55 रन पर लिये। ये स्टेट बैंक ऑफ इंडिया हैदराबाद में कार्यरत हैं।

आजाद, कीर्ति

जन्म पूर्णिया (बिहार), 2 जनवरी, 1959; दायें हाथ के बल्लेबाज, दायें हाथ के गेंदबाज। प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में संयुक्त विश्वविद्यालय टीम की ओर से एम. सी. सी. के विरुद्ध 1976-77 में प्रवेश। प्रथम रणजी ट्राफी मैच 1977-78 : इस प्रतियोगिता में कुल रन संख्या 1889, औसत 37.78, 5 शतक, उच्चतम 186 दिल्ली वि. तमिलनाडु 1982-83; दिलीप ट्राफी 1 शतक : 186 उत्तर क्षेत्र वि. पूर्व क्षेत्र, 1982-83। 7 टेस्ट मैचों में 12 पारी में कुल 135 रन बनाये हैं। सर्वश्रेष्ठ गेंदबाजी : 7 विकेट 63 रन पर वि. वेस्टइंडीज (दिल्ली) 1983-84; रणजी ट्राफी 5 विकेट, दिल्ली वि. सेना 1982-83. मोकारो स्टील, नई दिल्ली में ये कार्यरत हैं।

कपिलदेव, रामलाल निकन्ज

जन्म चंडीगढ़, जनवरी 6, 1959, महान हरफन मौला खिलाड़ी, दायें हाथ के आक्रामक बल्लेबाज, दायें हाथ के तेज गेंदबाज; प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में 1975-76 में प्रवेश; रणजी ट्राफी : कुल रन संख्या 828, औसत प्रति पारी 23.00, उच्चतम 193 हरियाणा वि. पंजाब, 1979-80; 92 विकेट, 17.41 के औसत पर, सर्वश्रेष्ठ गेंदबाजी 8 विकेट 38 रन पर (11 विकेट 71 रन पर मैचों में) हरियाणा वि. सेना, 1977-78। दिलीप ट्राफी : 7 विकेट 65 रन पर (तिकड़ी सहित) उत्तर क्षेत्र वि. पश्चिम क्षेत्र, 1978-79। टेस्ट क्रिकेट : प्रवेश 1978, सबसे कम आयु में (21 वर्ष, 27 दिन) में टेस्ट युगल। विश्व के तीन खिलाड़ियों में से एक जिन्होंने टेस्ट क्रिकेट में 3000 से अधिक रन और 200 से अधिक विकेट लिये हैं। अभी तक कुल 74 टेस्ट मैच खेले हैं : 109 पारी, आठ में अपराजित, कुल रन संख्या 3049 जिसमे तीन शतक, औसत प्रति पारी 30.18, उच्चतम रन संख्या 126 दिल्ली में 1978-79 मे वेस्ट इंडीज के विरुद्ध। टेस्ट विकेट 281, 8077 रन पर, औसत 28.74 रन प्रति विकेट, एक पारी में 19 बार पांच या अधिक विकेट लिये और एक टेस्ट मैच मे दो बार दस या अधिक विकेट लिये; सर्वश्रेष्ठ गेंदबाजी : वेस्टइंडीज के विरुद्ध 1983-84 में अहमदाबाद मे 9 विकेट 83 रन पर। भारत का सफल नेतृत्व तीसरे प्रूडेन्शियल विश्व कप 1983 मे किया और जिम्बाबवे के विरुद्ध 175 रन की पारी खेलकर एक दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय क्रिकेट मे कीर्तिमान स्थापित किया। अर्जुन अवार्ड 1980, पद्मश्री से अलंकृत 1981 और विजडेन द्वारा सम्मानित 1983 में। ये इंडियन एयर लाइन्स, चंडीगढ में कार्यरत हैं।

कनितकर, हेमन्त

जन्म अमरावती (विदर्भ), 8 दिसम्बर, 1942, दायें हाथ के प्रारम्भिक बल्लेबाज; प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में 1963-64 मे महाराष्ट्र की ओर से रणजी ट्राफी में सौराष्ट्र के विरुद्ध 151 रन बनाकर प्रवेश। रणजी ट्राफी में कुल 93 पारियां, नौ बार अपराजित, कुल रन संख्या 3597, औसत 42.82 प्रति पारी जिसमे 12 शतक, उच्चतम 250 महाराष्ट्र वि. राजस्थान, 1970-71। वेस्टइंडीज के विरुद्ध 1974-75 दो टेस्ट मैच : चार पारी मे 111, उच्चतम 65 बैंगलोर मे।

फिरमानी, सैयद मुजितबा हुसैन

जन्म मद्रास, 29 दिसम्बर, 1949. दायें हाथ के बल्लेबाज और विकेट रक्षक। प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में 1967-68 में प्रवेश। रणजी ट्राफी : पारी 87, अपराजित 13, कुल रन संख्या 2047, दो शतक के साथ, औसत 27 66; उच्चतम 116 कर्नाटक वि. दिल्ली 1981-82; कैच 79, स्टम्प आउट 22; तीन बार एक मैच में 5 शिकार : राजस्थान के विरुद्ध 1973-74; बड़ौदा और दिल्ली के विरुद्ध 1978-79। दिलीप ट्राफी : 366 रन, 21.52 रन प्रति पारी। ईरानी कप मैच 287 रन, 41.00 रन प्रति पारी के औसत पर। टेस्ट मैच में प्रवेश : न्यूजीलैंड के विरुद्ध, आकलैंड मे 1976। कुल टेस्ट मैच : 88, 124 पारी, 22 में अपराजित, कुल रन संख्या 2759, औसत प्रति पारी 27.04, 2 शतक : 101 वि. आस्ट्रेलिया, बम्बई में 1979-80; 102 वि. इंग्लैंड: बम्बई में 1984-85। विकेटों के पीछे 159 कैच और 38 को स्टम्प आउट किया; सबसे उत्तम विकेट रक्षण : 5 कैच, प्रथम पारी, न्यूजीलैंड के विरुद्ध 1975-76; तीन बार एक ही टेस्ट मैच मे छः बल्लेबाजों को स्टम्प या कैच आउट किया। अर्जुन अवार्ड और पद्मश्री से 1982 में सम्मानित। ये स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, बैंगलोर में कार्यरत हैं।

कुलकर्णी, यू एन.

जन्म 7 मार्च, 1942, बांये हाथ के मध्यम गति के तेज गेंदबाज, दाये हाथ के बल्लेबाज। आस्ट्रेलिया के विरुद्ध 1967 में तीन टेस्ट मैच व न्यूजीलैंड के विरुद्ध 1968 में एक टेस्ट मैच खेला। 8 पारी, पांच में अपराजित, कुल रन 13, औसत 4 33; 5 विकेट 238 रन पर, औसत 47.60 रन प्रति विकेट। रणजी ट्राफी मे बम्बई की ओर से खेले।

कृष्णामूर्ति, पी.

जन्म 12 जुलाई, 1947 हैदराबाद में, दांये हाथ के बल्लेबाज और विकेट रक्षक। प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में 1966-67 मे प्रवेश। रणजी ट्राफी 765 रन, 16.63 रन प्रति पारी के औसत पर, विकेटों के पीछे 73 को कैच आउट किया और 38 को स्टम्प आउट। वेस्टइंडीज के विरुद्ध 1970-71 में पांच टेस्ट मैच खेले, 6 पारी में 33 रन बनाये और आठ को विकेटों के पीछे, 7 को कैच द्वारा और एक को स्टम्प आउट किया।

गण्डोतरा अशोक

दक्षिण अमेरिका के रायडीजेनिरो में 24 नवम्बर, 1984 को जन्म। दायें हाथ के बल्लेबाज और दायें हाथ के गेंदबाज, प्रथम श्रेणी के क्रिकेट मे दिल्ली की ओर से 1964-65 में प्रवेश; 1971-72 से बंगाल की ओर से खेले। रणजी ट्राफी में कुल रन संख्या 1555, औसत प्रति पारी 34.55; दो शतक, गुजरात के विरुद्ध 1974-75 में 169 रन, सर्वोत्तम गेंदबाजी प्रदर्शन 5 विकेट 17 रन पर वि. उड़ीसा, 1973-74। 1969 में दो टेस्ट मैच खेले, एक आस्ट्रेलिया के विरुद्ध और एक न्यूजीलैंड के और 4 पारी में कुल 54 रन बनाये।

गावस्कर, सुनील मनोहर

जन्म 10 जुलाई, 1949 को बम्बई में। विश्व रिकार्डधारी प्रारम्भिक दायें हाथ के बल्लेबाज; प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में भारतीय खिलाड़ियों में सबसे अधिक रन बनाने वाला। प्रथम श्रेणी के क्रिकेट मे 1966-67 में प्रवेश; रणजी ट्राफी : पारी 92, अपराजित 17, कुल रन संख्या 5321, उच्चतम 340 वि. बंगाल, बम्बई में, 1961-62, औसत प्रति पारी 70·91, शतक 20। दिलीप ट्राफी : मैच 20, पारी 29, अपराजित तीन बार, कुल रन संख्या 1525, शतक 5, उच्चतम 228 पश्चिम क्षेत्र वि. दक्षिण क्षेत्र 1976-77, औसत प्रति पारी 58.65। ईरानी कप मैच : मैच 12, पारी 22, अपराजित चार बार, कुल रन संख्या 733, औसत प्रति पारी 40·27, शतक 3, अकेला बल्लेबाज जिसने इस प्रतियोगिता में पारी प्रारम्भ कर पारी की समाप्ति तक अपराजित रहा; 156 शेष भारत वि. कर्नाटक, 1974-75। टेस्ट क्रिकेट में प्रवेश : वेस्ट इंडीज के विरुद्ध 1970-71, शृंखला में चार शतक, 774 रन, औसत प्रति पारी 154.80 रन। टेस्ट मैच 112, पारी 195, अपराजित सोलह बार, कुल रन संख्या 9191, औसत प्रति पारी 51·34। 40 टेस्ट में भारत का नेतृत्व किया। टेस्ट क्रिकेट में सबसे अधिक कीर्तिमान; (1) सर्वाधिक शतक 32; (2) सबसे अधिक रन संख्या 9191; (3) सबसे अधिक शतक की साझेदारियों में भागीदार 49, (4) विकेट-रक्षक के अलावा सबसे अधिक कैच 96; (5) अकेला बल्लेबाज जिसने तीन बार टेस्ट मैच में दोनों पारियों में शतक लगाया : 120 और 220 वेस्ट इंडीज के विरुद्ध, पाँचवां टेस्ट, 1970-71, 182* और 107 वेस्ट इंडीज के विरुद्ध, तीसरा टेस्ट, 1978-79; 111 और 137 पाकिस्तान के विरुद्ध, तीसरा टेस्ट, 1978, (6) अकेला बल्लेबाज

जो तीन बार टेस्ट में पारी प्रारम्भ कर पारी की समाप्ति पर भी अपराजित लौटा : 127 वि. पाकिस्तान, तीसरा टेस्ट, फैसलाबाद में, 1982-83; 147 वि. वेस्ट इंडीज, तीसरा टेस्ट जॉर्ज टाउन में, 1982-83; 166 वि. आस्ट्रेलिया, पहला टेस्ट, मेलबोर्न में 1985-86; (7) एक कलेण्डर वर्ष में सबसे अधिक बार टेस्ट क्रिकेट में 1000 रन बनाने वाला; 1024 रन 1976 में, 1044 रन 1978 में, 1555 रन 1979 में और 1510 रन 1983 में।

लेखक : 'सनी डेज', 'आइडल्स'। संपादक : 'इंडियन क्रिकेटर'। अर्जुन अवार्ड 1977, पद्म भूषण से 1980 में अलंकृत, 1980 में ही विजडेन में सम्मानित। ये निर्लोन सिन्थेटिक फाइबर्स और केमिकल्स लिमिटेड, बम्बई में कार्यरत हैं।

घावरी, करसन देवीजी भाई

जन्म राजकोट, फरवरी 28, 1951। बायें हाथ के मध्यम गति के तेज गेंदबाज, बायें हाथ के बल्लेबाज। प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में सौराष्ट्र की ओर से 1969-70 में प्रवेश, 1972-73 से बम्बई की ओर से रणजी ट्राफी में खेले, 34·26 के औसत पर 1767 रन बनाये हैं और 184 विकेट 23.54 रन प्रति विकेट के औसत पर लिये हैं, एक शतक 102 वि. उत्तर प्रदेश, 1978-79। टेस्ट क्रिकेट की शुरुआत 1974 में वेस्ट इंडीज के विरुद्ध, कुल 39 टेस्ट खेले : 57 पारी, 14 में अपराजित, 913 रन, औसत प्रति पारी 21·23, सर्वोत्तम 86 रन वि. आस्ट्रेलिया 1979; 109 विकेट 3656 रन देकर प्राप्त किये, चार बार एक पारी मे पाच या अधिक विकेट लिये। सर्वश्रेष्ठ गेंदबाजी : टेस्ट 5 विकेट 55 रन पर, वि. इंग्लैंड, पांचवां टेस्ट, 1976-77, रणजी ट्राफी 7 विकेट 34 रन पर (10 विकेट 78 रन पर मैच में) बम्बई वि. हरियाणा, 1976-77; दिलीप ट्राफी 5 विकेट 68 रन पर, पश्चिम क्षेत्र वि. दक्षिण क्षेत्र 1976-77; ईरानी कप मैच 5 वि. 63 रन पर, बम्बई वि. शेष भारत, 1975-76। ये निर्लोन सिन्थेटिक फाइबर्स और केमिकल्स लिमिटेड बम्बई के कार्यरत हैं।

गायकवाड़ अन्शुमन दत्ताजीराव

जन्म बम्बई मे 23 सितम्बर, 1952; दायें हाथ के प्रारम्भिक बल्लेबाज, दायें हाथ के धीमी गति के गेंदबाज। प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में, 1969-70 मे बड़ौदा की ओर से प्रवेश : 100 पारी, बारह बार अपराजित, कुल रन संख्या 4382, औसत 49·79, 12 शतक, सर्वाधिक पारी 225, बडोदा,

वि. गुजरात, 1982-83; दिलीप ट्राफी 1387 रन, 40.03 रन प्रति पारी के औसत पर, 6 शतक, सर्वाधिक पारी 147 पश्चिम क्षेत्र वि. पूर्व क्षेत्र 1980-81, देवधर ट्राफी 106 पश्चिम क्षेत्र वि. पूर्व क्षेत्र 1984-85। कुल 40 टेस्ट मैच खेले हैं : 70 पारी, चार में अपराजित, कुल रन संख्या 1985, औसत प्रति पारी 30·07, 2 शतक, 8 अर्ध शतक, उच्चतम 201 वि. पाकिस्तान, 1983-84, जालन्धर। ये बड़ौदा रेयन्स लिमिटेड, बड़ौदा में कार्यरत हैं।

गुहा, सुब्रतो

जन्म 31 जनवरी, 1946, दायें हाथ के बल्लेबाज; दायें हाथ के मध्यम गति के तेज गेंदबाज; प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में 1965-66 में प्रवेश: रणजी ट्राफी: 195 विकेट 2957 रन पर, औसत 15·16 रन प्रति विकेट, सर्वोत्तम प्रदर्शन 7 विकेट 18 रन पर, बंगाल वि. असम 1972-73, 12 विकेट 54 रन पर, बंगाल वि. उड़ीसा, 1971-72 (मैच में)। दिलीप ट्राफी 4 विकेट 68 रन पर, पूर्व क्षेत्र वि. मध्य क्षेत्र। सर्वोत्तम पारी 75 रन, बंगाल वि. मैसूर, 1968-69। चार टेस्ट मैच, 7 पारी, दो में अपराजित, कुल 17 रन; 3 विकेट 311 रन पर। ये स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, कलकत्ता में कार्यरत है।

जयन्तीलाल

जन्म दिसम्बर 29, 1949; दायें हाथ के बल्लेबाज, दायें हाथ के मध्यम गति के तेज गेंद बाज; शतक के साथ प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में प्रवेश: 153 हैदराबाद वि. आन्ध्र, 1968-69; रणजी ट्राफी: 72 पारी, तेरह पारी मे अपराजित, 2377 रन, औसत प्रति पारी 40.27 रन। दिलीप ट्राफी: एक शतक, 134 दक्षिण क्षेत्र वि. पश्चिम क्षेत्र, 1970-71। एक टेस्ट मैच, वेस्टइंडीज के विरुद्ध, 1971, एक पारी, 5 रन। ये मफतलाल मिल्स में कार्यरत है।

नरसिम्हा राव

जन्म अगस्त 11, 1954, सिकन्दराबाद में, दायें हाथ के बल्लेबाज, दायें हाथ के धीमी गति के गेंदबाज; प्रथम श्रेणी के क्रिकेट मे हैदराबाद की ओर से 1971-72 में प्रवेश: रणजी ट्राफी 81 पारी, 14 बार अपराजित, 3202 रन, औसत प्रति पारी 47·79, 7 शतक उच्चतम 159 वि. केरल 1979-80; कुल 4 टेस्ट मैच खेले: 6 पारी, एक बार अपराजित कुल 48 रन; 3 विकेट 227 रन पर। सर्वोत्तम गेंदबाजी: 7 विकेट 21 रन पर,

हैदराबाद वि. तमिलनाडु 1980-81; दिलीप ट्राफी 5 विकेट 56 रन पर, दक्षिण क्षेत्र वि. मध्य क्षेत्र 1978-79, टेस्ट 2 विकेट 46 रन पर वि. आस्ट्रेलिया, दिल्ली, 1979-80। ये आन्ध्र बैंक, हैदराबाद में कार्यरत हैं।

नवज्योत सिद्धू

जन्म 20 अक्टूबर, 1963 पटियाला में, दायें हाथ के बल्लेबाज; प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में पंजाब की ओर से सेना के विरुद्ध 1981-82 में प्रवेश; रणजी ट्राफी मे 25 55 के औसत पर कुल 460 रन बनाये हैं; उच्चतम 124 वि. हरियाणा 1984-85; उत्तर क्षेत्र की ओर से 1983-84 में वेस्टइंडीज के विरुद्ध 122 रन की पारी खेली; दो टेस्ट मैच, 3 पारी, 39 रन। चडीगढ़ में विद्यार्थी।

नायक, सुधीर

जन्म 2 फरवरी, 1945 बम्बई में, दायें हाथ के प्रारम्भिक बल्लेबाज; प्रथम श्रेणी के क्रिकेट मे बम्बई की ओर से 1966-67 मे प्रवेश। रणजी ट्राफी : 76 पारी, दस में अपराजित, 2672 रन, 4 शतक, औसत 40·48 रन प्रति पारी, उच्चतम 200 वि. बड़ौदा, 1973-74। तीन टेस्ट मैच खेले : 6 पारी, कुल रन सख्या 141, उच्चतम 77 वि. इग्लैंड 1974। ये टाटा ऑइल मिल्स, बम्बई मे कार्यरत हैं।

चौहान, चेतन प्रतापसिंह

जन्म 21 जुलाई, 1947, बरेली में, दायें हाथ के प्रारम्भिक बल्लेबाज; प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में महाराष्ट्र की ओर से 1967-68 में प्रवेश; 1974-75 से रन दिल्ली की ओर से रणजी ट्राफी प्रतियोगिता में खेल रहे है, 131 पारी, नौ बार अपराजित, कुल रन 5423, 13 शतक, औसत प्रति पारी 44·45, दो दोहरे शतक, दोनों में 207 रन, दोनों पूना मे, दोनों 1972-73 मे, एक विदर्भ के विरुद्ध और एक गुजरात के विरुद्ध। दायें हाथ के धीमी गति के गेंदबाज, सर्वोत्तम गेंदबाजी 6 विकेट 26 रन पर, महाराष्ट्र वि. गुजरात 1971-72 दिलीप ट्राफी : पश्चिम व उत्तर क्षेत्र की ओर से: 18 मैच, 29 पारी, पाच में अपराजित, कुल रन 1299, पांच शतक, औसत 54·12 रन प्रति पारी। 40 टेस्ट मैच मे 68 पारी, दो में अपराजित, कुल रन सख्या 2084, 16 अर्ध शतक, औसत 32·57 रन प्रति पारी। ये बैंक ऑफ महाराष्ट्र, दिल्ली मे कार्यरत हैं।

दोषी, दिलीप

जन्म 22 दिसम्बर, 1947, राजकोट मे; बायें हाथ के धीमी गति के गेंदबाज, बायें हाथ के बल्लेबाज; बंगाल की ओर से 1969-70 में प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में प्रवेश; रणजी ट्राफी : 295 विकेट, 5150 रन पर, औसत प्रति विकेट 17 46 रन; सर्वोतम 7 विकेट 29 रन पर (11 विकेट 59 रन पर मैच में) बंगाल वि. असम, 1970-71; दिलीप ट्राफी 67 विकेट, 27·23 रन प्रति विकेट; सर्वोत्तम 6 विकेट 88 रन पर, पूर्व क्षेत्र वि. दक्षिण क्षेत्र, 1981-82; कुल 33 टेस्ट मैच खेले: 38 पारी, दस बार अपराजित, कुल 129 रन, उच्चतम 20 वि. पाकिस्तान, कानपुर, 1979-80; 114 विकेट 3503 रन पर, औसत प्रति विकेट 30.72 रन; छह बार एक पारी मे पाच या अधिक विकेट लिये, सर्वोत्तम 6 विकेट 102 रन पर वि. इग्लैण्ड, मैनचेस्टर में, 1982। उच्चतम पारी 44 रन की है : बंगाल वि. दिल्ली, 1979-80। पेशा—व्यापार।

परकार, गुलाम अहमद हसन

जन्म 25 अक्टूबर, 1955, कालुस्टी, रत्नागिरी जिले में। दायें हाथ के प्रारम्भिक बल्लेबाज; बम्बई की ओर से 1978-79 मे रणजी ट्राफी में प्रवेश : 64 पारी, छह बार अपराजित, कुल रन संख्या 2821, 9 शतक, औसत प्रति पारी 48·64 रन, उच्चतम 170 बम्बई वि. बडोदा, 1984-85। एक टेस्ट मैच खेले, इंग्लैड के विरुद्ध 1982 मे, पहली पारी मे 6 और दूसरी मे 1 रन बनाया। बंगाल के विरुद्ध 1981-82 में गावस्कर के साथ प्रथम विकेट की 421 रन की साझेदारी मे भागीदार। यह मफतलाल, बम्बई मे कार्यरत हैं।

परकार, रामनाथ

जन्म 31 अक्टूबर, 1946। दायें हाथ के प्रारम्भिक बल्लेबाज; बम्बई की ओर से रणजी ट्राफी में 1964-65 में प्रवेश : 74 पारी, चार बार अपराजित, कुल रन संख्या 2722, औसत प्रति पारी 38·88 रन, छह शतक, उच्चतम 197 बम्बई वि. हैदराबाद 1974-75, दिलीप ट्राफी : 131 पश्चिम क्षेत्र वि. पूर्व क्षेत्र 1971-72; इरानी कप मैच 195 बम्बई वि शेष भारत, 1972-73। इग्लैंड के विरुद्ध 1972-73 में दो टेस्ट मैच खेले, चार पारी, 80 रन, उच्चतम 35 प्रथम टेस्ट, दिल्ली। ये टाटा सन्स लिमिटेड, बम्बई में कार्यरत है।

पटेल, बृजेश

जन्म 24 नवम्बर, 1952 बड़ौदा में। दायें हाथ के बल्लेबाज, दायें हाथ के गेंदबाज; रणजी ट्राफी में 1969-70 में प्रवेश : 122 पारी, 17 मे अपराजित, कुल रन संख्या 5748, औसत प्रति पारी 54·74 रन, 21 शतक, उच्चतम 216 कर्नाटक वि. बड़ौदा 1978-79। दिलीप ट्राफी : 14 मैच, 22 पारी, एक में अपराजित, 1190 रन, औसत प्रति पारी 56·67 रन, छः शतक उच्चतम 163 दक्षिण क्षेत्र वि पूर्व क्षेत्र, 1979-80; कुल टेस्ट मैच 21, पारी 38, पांच बार अपराजित, 972 रन, औसत प्रति पारी 29·45 रन, एक शतक 5 अर्धशतक, उच्चतम 115 वि. वेस्ट इंडीज, पोर्ट ऑफ स्पेन, 1975-76। इनके बेंगलोर में विविध व्यापार हैं।

प्रसन्ना, धीरज

जन्म 2 दिसम्बर, 1947 राजकोट में। बायें हाथ के बल्लेबाज; बायें हाथ के मध्यम गति के तेज गेंदवाज। सौराष्ट्र की ओर से रणजी ट्राफी में 1965-66 में प्रवेश; रेलवे व गुजरात की ओर से भी रणजी ट्राफी प्रतियोगिता में खेले : दो शतक के साथ 29 58 रन प्रति पारी के औसत पर कुल 2278 रन बनाये; 4073 रन पर 194 विकेट लिये। दिलीप ट्राफी में पश्चिम क्षेत्र की ओर से 68 विकेट 1299 रन पर लिये। टेस्ट मैच 2, पारी 2, रन 1; 1 विकेट 50 रन पर। ये न्यू शोरच मित, अहमदाबाद में कार्यरत हैं।

पाई, अजीत मनोहर

जन्म 28 अप्रैल, 1945 बम्बई में; दायें हाथ के मध्यम गति के तेज गेंदवाज, बायें हाथ के बल्लेबाज; रणजी ट्राफी में 1968-69 में प्रवेश : कुल रन संख्या 627, औसत प्रति पारी 33·00, उच्चतम 91 बम्बई वि. सौराष्ट्र 1970-71; 55 विकेट, 24 43 रन प्रति विकेट के औसत पर, सर्वोत्तम 6 विकेट 30 रन पर (मैच में 11 विकेट 52 रन पर) वि. सौराष्ट्र 1970-71; दिलीप ट्राफी 7 विकेट 42 रन पर, पश्चिम क्षेत्र वि. मध्य क्षेत्र, 1969-70; न्यूजीलैंड के विरुद्ध 1969-70 एक टेस्ट मैच खेले, दो पारी में 10 रन, 2 विकेट 31 रन पर।

प्रभाकर, मनोज

जन्म 15 अप्रैल, 1963, गाजियाबाद में; दायें हाथ के प्रारम्भिक बल्लेबाज और दायें हाथ के मध्यम गति के तेज गेंदबाज; रणजी ट्राफी में 1982-83 में दिल्ली की ओर से हरियाणा के विरुद्ध प्रवेश, 5 विकेट 88 रन

पर; 1983-84 में बम्बई के विरुद्ध रणजी फाइनल मैच में 122 रन बनाये; दिलीप ट्राफी 5 विकेट 28 रन पर, उत्तर क्षेत्र वि. मध्य क्षेत्र, 1984-85; इंग्लैंड के विरुद्ध 1984-85 दो टेस्ट मैच खेले : 4 पारी, एक में अपराजित, कुल 86 रन; 1 विकेट 102 रन पर; दिल्ली में विद्यार्थी।

पाटिल, संदीप

बम्बई में 8 अगस्त, 1956 मे जन्म; दायें हाथ के आक्रामक बल्लेबाज, दायें हाथ के गेंदबाज; प्रथम श्रेणी के क्रिकेट मे 1975-76 में प्रवेश, रणजी ट्राफी : कुल रन संख्या 2470, औसत 49.40 रन प्रति पारी, 7 शतक, उच्चतम 210 बम्बई वि. सौराष्ट्र 1979-80; दिलीप ट्राफी 108 पश्चिम क्षेत्र वि. दक्षिण क्षेत्र 1983-84; ईरानी कप मैच : 125 बम्बई वि. शेष भारत, *1981-82*। *टेस्ट मैच 29*, पारी 47, चार मे अपराजित, 1588 रन, औसत 36·93, चार शतक और आठ अर्धशतक, उच्चतम 174 वि. आस्ट्रेलिया, एडिलेड में 1980-81, मैनचेस्टर टेस्ट, 1982 में आर. जी. डी. विलिस की छः गेंदों पर छ चौके, विश्व कीर्तिमान; 9 विकेट 240 रन पर। सम्पादक : "शतकार"। ये निरलॉन सिन्थेटिक फाइबर्स व केमिकल्स, बम्बई में कार्यरत है।

बिन्नी, रोजर मिचल

जन्म बंगलौर, 7 जुलाई, 1955; दायें हाथ के प्रारम्भिक बल्लेबाज, दायें हाथ के मध्यम गति के तेज गेंदवाज; कर्नाटक की ओर से 1975-76 में प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में प्रवेश; रणजी ट्राफी 77 पारी, दस में अपराजित, *कुल रन संख्या 1121, औसत प्रति पारी 46.58 रन, आठ शतक*, उच्चतम 211, कर्नाटक वि. केरल 1977-78, इस पारी मे एस. देसाई के साथ प्रथम विकेट की असमाप्त साझेदारी में 451 रन जोड़े गये; 93 विकेट 28.92 रन प्रति विकेट के औसत पर, सर्वोत्तम प्रदर्शन 8 विकेट 22 रन पर वि. हरियाणा, 1982-83; दिलीप ट्राफी 15 विकेट 31.06 रन के औसत पर; टेस्ट मैच 21, पारी 33, तीन मे अपराजित, कुल रन संख्या 675, औसत-प्रति पारी 22.50, चार अर्द्धशतक, उच्चतम 83*; 27 विकेट 1157 रन पर, औसत प्रति विकेट 42·85 रन। ये स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, बैंगलौर में कार्यरत है।

बेदी, बिशन सिंह

जन्म अमृतसर, 25 सितम्बर, 1946; बायें हाथ के स्पिन गेंदबाज, दायें हाथ के बल्लेबाज, उत्तर पंजाब की ओर से 1961-62 मे प्रथम श्रेणी

के क्रिकेट मे प्रवेश; 1964-65 से दक्षिण पंजाब की ओर से और 1965-66 से लगातार दिल्ली की ओर से रणजी ट्राफी प्रतियोगिता में खेले : 5926 रन पर 402 विकेट 14 74 रन प्रति विकेट लिए, सर्वोत्तम प्रदर्शन 5 विकेट 6 रन पर और 5 विकेट 9 रन पर, दिल्ली वि. सेना, 1974-75; 7 विकेट 5 रन पर दिल्ली वि. जम्मू व कश्मीर 1974-75; दिलीप ट्राफी 1381 रन पर 52 विकेट; टेस्ट मैच : 67, पारी 101, 28 में अपराजित, कुल रन संख्या 656, 8·98 रन औसत प्रति पारी, उच्चतम 50* न्यूजीलैंड के विरुद्ध, 1976 मे कानपुर में, गेंदबाजी 266 विकेट 7637 रन पर, औसत प्रति विकेट 28·71; तेरह बार एक पारी में पांच या अधिक विकेट लिए, एक बार मैच मे 10 विकेट 194 रन पर आस्ट्रेलिया के विरुद्ध पर्थ में 1977 मे लिये; सर्वोत्तम गेंदवाजी : 7 विकेट 98 रन पर आस्ट्रेलिया के विरुद्ध 1969-70, कलकत्ता मे। प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में 108 बार एक पारी में पांच या अधिक विकेट लिये और 18 बार एक मैच में दस या अधिक विकेट लिये। 1970 मे अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित और इसी वर्ष पद्मश्री से अलंकृत। ये स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, दिल्ली में कार्यरत हैं।

भट्ट, रघुराम

जन्म मंगलोर, 16 अप्रैल, 1958, बायें-हाथ के बल्लेबाज, बायें हाथ के धीमी गति के गेंदबाज; प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में 1979-80 में प्रवेश; रणजी ट्राफी : 3159 रन पर 156 विकेट, औसत 20·25 रन प्रति विकेट; कर्नाटक की ओर से बम्बई के विरुद्ध 1981-82 मे तिकड़ी और इसी पारी मे 123 रन पर 8 विकेट लिये। दो टेस्ट मैच, 3 पारी, एक में अपराजित कुल 6 रन; 4 विकेट 151 रन पर।

मदनलाल, उधोराम शर्मा

जन्म अमृतसर, 23 मार्च, 1951; हरफन मौला खिलाड़ी, दायें हाथ के बल्लेबाज, दायें हाथ के मध्यम गति के तेज गेंदबाज; पंजाब की ओर से 1968-69 में प्रथम श्रेणी के क्रिकेट मे प्रवेश; 1971-72 तक पंजाब की ओर से और तत्पश्चात दिल्ली की ओर से रणजी ट्राफी प्रतियोगिता मे खेल रहे हैं : 113 पारी मे 26 बार अपराजित रहकर 51·70 प्रति पारी के औसत से 4498 रन, 15 शतक के साथ बनाये हैं; उच्चतम 223 दिल्ली वि. राजस्थान, 1977-78; 276 विकेट 4756 रन पर, औसत प्रति विकेट 17·23 रन, सर्वश्रेष्ठ गेंदबाजी 31 रन पर 9 विकेट दिल्ली वि. हरियाणा, 1979-80।

दिलीप ट्राफी 104*उत्तर क्षेत्र वि. पश्चिम क्षेत्र, 1975-76; 143* उत्तर क्षेत्र वि.पश्चिम क्षेत्र 1979-80; 74 विकेट 24·42 रन प्रति विकेट के औसत पर; इरानी कप मैच 110 दिल्ली वि. शेष भारत, 1980-81; देवधर ट्राफी : 12 पारी, दो बार अपराजित, कुल 302 रन; टेस्ट मैच 38, पारी 60, सोलह बार अपराजित, 1000 रन, औसत 22·72 रन प्रति पारी; 68 विकेट 2798 रन पर, औसत प्रति विकेट 41·14 रन, चार बार एक पारी में पांच या अधिक विकेट लिये। ये मोहन मिकिन्स ब्रेवरिज,गाजियाबाद मे कार्यरत हैं।

मल्होत्रा, अशोक ओमप्रकाश

जन्म अमृतसर, 26 जनवरी, 1957; दायें हाथ के बल्लेबाज, दायें हाथ के गेंदबाज; प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में हरियाणा की ओर से 1973-74 में प्रवेश : 84 पारी, नौ में अपराजित, कुल रन संख्या 3607 रन, औसत प्रति पारी 48·09 रन, नौ शतक, उच्चतम 228* हरियाणा वि. सेना, 1982-83; दिलीप ट्राफी : दो शतक पूर्व क्षेत्र के विरुद्ध, 106, 1978-79 में और 139, 1982-83 में; ईरानी कप मैच 116* शेष भारत वि. दिल्ली, 1982-83; टेस्ट मैच 7, पारी 10, एक मे अपराजित, कुल रन संख्या 266, औसत प्रति पारी 25·11 रन। ये स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, चंडीगढ़ मे कार्यरत हैं।

मनिन्दर सिंह

जन्म पुणे, 12 जून, 1965, बायें हाथ के धीमी गति के स्पिन गेंदबाज, दायें हाथ के बल्लेबाज; प्रथम श्रेणी के क्रिकेट मे 1980-81 में प्रवेश; रणजी ट्राफी 94 विकेट 19·97 रन प्रति विकेट के औसत पर, सर्वश्रेष्ठ गेंदबाजी 48 रन पर 8 विकेट : (मैच मे 14 विकेट 122 रन पर) दिल्ली वि.पंजाब,1981-82,दिलीप ट्राफी : 5 विकेट 53 रन पर, उत्तर क्षेत्र वि. पश्चिम क्षेत्र, 1982-83; इरानी कप मैच 6 विकेट 60 रन पर, दिल्ली वि. शेष भारत 1982-83; 15 टेस्ट, 18 पारी, 6 में अपराजित, कुल रन संख्या 61, 22 विकेट 1272 रन पर, औसत प्रति विकेट 57·81 रन, कॉलेज विद्यार्थी।

मांकड़, अशोक वीनू

जन्म बम्बई, 12 अक्टूबर, 1946; दायें हाथ के बल्लेबाज और दायें हाथ के धीमी गति के गेंदबाज; रणजी ट्राफी मे बम्बई की ओर से मैसूर के विरुद्ध 1963-64 में प्रवेश : 122 पारी, 35 में अपराजित, 6619 रन, औसत प्रति पारी, 76·08 रन, 22 शतक, उच्चतम 265 बम्बई वि.

दिल्ली, 1980-81; सर्वश्रेष्ठ गेंदबाजी 3 विकेट 53 रन, बम्बई वि. उत्तर प्रदेश, 1978-79; दिलीप ट्राफी : 25 मैच, 35 पारी, छह में अपराजित 1014 रन जिसमें चार शतक शामिल हैं, औसत प्रति पारी 34.96 रन; ईरानी कप मैच 113 बम्बई वि. शेष भारत, 1970-71, टेस्ट मैच 22, पारी 42, तीन बार अपराजित, 991 रन, औसत 25.41 रन प्रति पारी, छः अर्धशतक, उच्चतम 97 वि आस्ट्रेलिया, तीसरा टेस्ट, नई दिल्ली 1969। ये नवीन फ्लोराइन इंडस्ट्रीज (मफतलाल), बम्बई में कार्यरत हैं।

यार्जुवेन्द्रसिंह, जसवन्तसिंह

जन्म राजकोट, अगस्त 1, 1952; दायें हाथ के बल्लेबाज, दायें हाथ के मध्यम गति के तेज गेंदबाज। अपने प्रथम टेस्ट मैच मे जो इंग्लैंड के विरुद्ध बंगलौर मे 1977-78 में खेला गया। यार्जुवेन्द्रसिंह ने कैच पकड़ने के ग्रेग चेपल के विश्व कीर्तिमान, सात कैच की बराबरी करली थी, उन्हें एक कैच पकड़ने का मौका और मिला लेकिन वह उनके हाथ से जाता रहा। टेस्ट 4,पारी 7,एक मे अपराजित, कुल रन संख्या109, औसत प्रति पारी 18.16 रन। रणजी ट्राफी : महाराष्ट्र की ओर से 1971-72 में प्रवेश, 1978-79 से सौराष्ट्र की ओर से खेल रहे हैं; 66 पारी, दस में अपराजित, 2657 रन, औसत प्रति पारी 47.44 रन, उच्चतम 214 सौराष्ट्र वि. महाराष्ट्र 1979-80; गेंदबाजी : 7 विकेट 20 रन पर (10 विकेट 87 रन पर मैच में), महाराष्ट्र वि. सौराष्ट्र, 1977-78। ये महेन्द्रा एण्ड महेन्द्रा, बम्बई में कार्यरत हैं।

यादव, शिवलाल नन्दलाल

जन्म हैदराबाद, 26 जनवरी, 1957; दायें हाथ के बल्लेबाज, दायें हाथ के धीमी गति के गेंदबाज; हैदराबाद की ओर से प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में 1977-78 मे प्रवेश; रणजी ट्राफी 78 विकेट, 22.92 रन प्रति विकेट के औसत पर; सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 6 विकेट 49 रन पर, हैदराबाद वि. केरल, 1982-83, उच्चतम पारी 50 रन वि. केरल, 1983-84; 26 टेस्ट मैच, 32 पारी, दस मे अपराजित, कुल रन संख्या 355, औसत प्रति पारी 16.14 रन; 75 विकेट 2679 रन पर, औसत प्रति विकेट 35.72 रन। सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन : आस्ट्रेलिया के विरुद्ध तीसरे टेस्ट, 1985-86, में पांच विकेट 99 रन पर। ये सिण्डिकेट बैंक, हैदराबाद मे कार्यरत है।

योगराज

जन्म चंडीगढ़, 25 मार्च, 1958; दायें हाथ के मध्यम गति के तेज गेंदबाज, दायें हाथ के बल्लेबाज; हरियाणा की ओर से 1976-77 मे प्रवेश; रणजी ट्राफी में 45 विकेट 23.29 रन प्रति विकेट के औसत पर; सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन : 7 विकेट वि. जम्मू व कश्मीर 1979-80; न्यूजीलैंड के विरुद्ध 1980-81 में एक टेस्ट खेले, एक विकेट 63 रन पर और दो पारी मे 10 रन बनाये। ये जालंधर में मफतलाल ग्रुप में कार्यरत हैं।

रॉय, प्रनोब

जन्म कलकत्ता, 10 फरवरी, 1957; अपने पिता पंकज रॉय की तरह दायें हाथ के प्रारम्भिक बल्लेबाज और अपने पिता की तरह रणजी ट्राफी प्रतियोगिता में शुरुआत शतक से की; 105 बंगाल वि. असम, 1978-79; सात शतक के साथ रणजी ट्राफी में कुल रन संख्या 1446, औसत प्रति पारी 43.81, उच्चतम 206* वि. असम, 1983-84; दिलीप ट्राफी 96* पूर्व क्षेत्र वि. दक्षिण क्षेत्र, 1981-82; टेस्ट 2, पारी 3, एक में अपराजित, कुल रन संख्या 71, औसत प्रति पारी 35.50 रन। ये स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, कलकत्ता मे कार्यरत हैं।

रेड्डी, भारत

जन्म मद्रास, 12 नवम्बर, 1954; दायें हाथ के बल्लेबाज और विकेट रक्षक; 1973-74 मे तमिलनाडु की ओर से रणजी ट्राफी में प्रवेश; रणजी ट्राफी में कुल 1124 रन, 22.48 रन प्रति पारी के औसत पर, उच्चतम 88 वि. केरल 1981-82; 79 कैच और 22 स्टम्प आउट किये; टेस्ट मैच 4, पारी 5, एक मे अपराजित, कुल रन 38; 9 कैच और 2 स्टम्प आउट किये। मद्रास मे केमिकल्स व प्लास्टिक्स में कार्यरत हैं।

विश्वनाथ, गुण्डप्पा रंगनाथ

जन्म भद्रावती, फरवरी 12, 1949; दायें हाथ के बल्लेबाज; विश्व के दो खिलाड़ियों में प्रथम जिन्होंने अपना प्रथम श्रेणी का क्रिकेट और टेस्ट क्रिकेट शतक से प्रारम्भ किया। रणजी ट्राफी प्रतियोगिता में कर्नाटक की ओर से आंध्र के विरुद्ध 1967-68 में 230 रन बनाये। आस्ट्रेलिया के विरुद्ध कानपुर में 1969-70 दूसरे टेस्ट मैच में 137 रन की पारी खेली। रणजी ट्राफी : 114 पारी, नौ में अपराजित, कुल रन संख्या 4907, औसत प्रति पारी 46.73 रन, 14 शतक, उच्चतम 247 कर्नाटक वि. उत्तर प्रदेश, 1977-78। दिलीप ट्राफी : कुल रन संख्या 761, औसत प्रति पारी

26.24 रन; ईरानी कप मैच; 15 पारी, दो में अपराजित, चार शतक, उच्चतम 200* कर्नाटक वि. शेष भारत, औसत 77.00 रन प्रति पारी। टेस्ट 91, पारी 155, दस बार अपराजित, 14 शतक, 35 अर्धशतक, औसत 41 24 रन प्रति पारी, उच्चतम 222 वि. इंग्लैंड, पांचवां टेस्ट मद्रास, 1981-82। भारत सरकार द्वारा 1971 में पद्मश्री से अलंकृत और 1978 में अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित। ये स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, बैंगलौर में कार्यरत हैं।

वेंकटराघवन, श्रीनिवास राघवन

जन्म मद्रास, 21 अप्रेल, 1945; दायें हाथ के स्पिन गेंदबाज, दायें हाथ के बल्लेबाज; रणजी ट्राफी में तामिलनाडू की ओर से 1963-64 में प्रवेश : 120 पारी, बीस में अपराजित, कुल रन संख्या 2118, औसत प्रति पारी 21·18 रन, उच्चतम 137 तामिलनाडू वि. केरल, 1970-71; 530 विकेट 9655 रन पर, औसत प्रति विकेट 18·22 रन, 44 बार एक पारी में पांच या अधिक विकेट, 11 बार मैच में दस या अधिक विकेट, सर्वश्रेष्ठ गेंदबाजी, 7 विकेट 42 रन पर, वि. आन्ध्र 1973-74, 12 विकेट 52 रन पर; (मैच में) वि. आन्ध्र 1964-65 दिलीप ट्राफी; 95 विकेट, 23·66 रन प्रति विकेट के औसत पर, पाच बार एक पारी मे पांच या अधिक विकेट लिये; इरानी कप मैच में 1969-70 शेष भारत की ओर से बम्बई के 11 विकेट 75 रन पर गिराये। टेस्ट मैच 57, पारी 76, बारह बार अपराजित, कुल रन संख्या 748, दो अर्धशतक, उच्चतम 64 वि. न्यूजीलैंड, मद्रास, 1976-77; 5634 रन पर 156 विकेट, औसत प्रति विकेट 36·11 रन, तीन बार एक पारी में पांच या अधिक विकेट, एक बार मैच मे दस या अधिक विकेट, सर्वोतम गेंदबाजी 72 रन पर 8 विकेट वि. न्यूजीलैंड, दिल्ली, 1964-65। 1971 में अर्जुन अवार्ड से सम्मानित। ये इंडियन पिस्टन्स लिमिटेड मे कार्यरत है।

वेंगसरकर, दिलीप बलवन्त

जन्म राजापुर (रत्नागिरी), 6 अप्रेल, 1956; दायें हाथ के बल्लेबाज; बम्बई की ओर से रणजी ट्राफी प्रतियोगिता में 1975-76 मे प्रवेश; 38 पारी, तीन बार नाबाध, कुल रन संख्या 2314, 8 शतक, औसत 66·11 रन प्रति पारी, उच्चतम 210, बम्बई वि. बड़ौदा, 1979-80; दिलीप ट्राफी : 779 रन, 59·92 प्रति पारी के औसत पर, तीन शतक: 175 वि. मध्य क्षेत्र, 1977-78, 137 वि. उत्तर क्षेत्र, 1977-78, 108 वि. पूर्व क्षेत्र, 1981-82, इरानी कप मैच 576 रन, औसत प्रति पारी 57·60 रन, तीन शतक, उच्चतम 151, शेष भारत वि. कर्नाटक, 1978-79; टेस्ट

82, पारी 134, नाबाद 14, कुल रन संख्या 4635, शतक 9, अर्धशतक 26, औसत प्रति पारी 38·62 रन, उच्चतम 159* वि. वेस्टइंडीज, दिल्ली, 1983-84; गावस्कर के साथ दूसरे विकेट का असमाप्त साझेदारी में वेस्ट-इंडीज के विरुद्ध 1978-79 कलकत्ता में तीसरे टेस्ट में 344 रन जोड़े। ये टाटा सन्स, बम्बई में कार्यरत है।

सन्धू, बलविन्दरसिंह

जन्म बम्बई, 3 अगस्त, 1956; दायें हाथ के बल्लेबाज; दायें हाथ के मध्यम गति के तेज गेंदबाज; रणजी ट्राफी प्रतियोगिता में बम्बई की ओर से गुजरात के विरुद्ध 1980-81 मे प्रवेश और अपने पहले ही मैच मे 5 विकेट 39 रन पर और 4 विकेट 35 रन पर लिये; रणजी ट्राफी में 92 विकेट 23·26 रन प्रति विकेट के औसत पर, सर्वश्रेष्ठ गेंदबाजी 6 विकेट 64 रन पर वि. सौराष्ट्र 1983-84, उच्चतम पारी 98 रन वि. तामिलनाडू, 1984-85; दिलीप ट्राफी 6 विकेट 86 रन पर, पश्चिम क्षेत्र वि. दक्षिण क्षेत्र, 1982-83, ईरानी कप मैच 5 विकेट 110 रन पर, शेष भारत वि. दिल्ली 1982-83; टेस्ट मैच 8, पारी 11, चार में नाबाद, 214 रन, 2 अर्ध शतक, औसत 30·57 रन प्रति पारी, उच्चतम 71 वि. पाकिस्तान 1982-83; 10 विकेट 557 रन, औसत प्रति विकेट 55·70 रन; ये राष्ट्रीय केमिकल्स व फर्टिलाइजर्स, बम्बई में कार्यरत हैं।

शर्मा, चेतन जगतराम

जन्म लुधियाना, 3 जनवरी, 1966; दायें हाथ के बल्लेबाज, दायें हाथ के मध्यम गति के तेज गेंदबाज; रणजी ट्राफी प्रतियोगिता में हरियाणा की ओर से 1982-83 में प्रवेश : 51 विकेट, 27·13 रन प्रति विकेट के औसत पर, सर्वोतम प्रदर्शन 6 विकेट 64 रन पर, हरियाणा वि. सेना 1983-84; उच्चतम पारी 61 वि. हैदराबाद, 1983-84; दिलीप ट्राफी : 7 विकेट 83 रन पर, उत्तर क्षेत्र वि. पश्चिम क्षेत्र, 1983-84; टेस्ट 10, पारी 12, नाबाद 6, उच्चतम 54 वि. आस्ट्रेलिया 1985-86, औसत प्रति पारी 29·16 रन; 22 विकेट 944 रन पर. औसत प्रति विकेट 42·90 रन; चंडीगढ़ में विद्यार्थी।

शर्मा, गोपाल

जन्म कानपुर, 3 अगस्त, 1960; दायें हाथ के बल्लेबाज, दायें हाथ के धीमी गति के स्पिन गेंदबाज, उत्तर प्रदेश की ओर से रणजी ट्राफी में 1978-79 में प्रवेश, सात बार पांच या अधिक विकेट लिये, सर्वोतम गेंद-

बाजी 6 विकेट 26 रन पर (मैच में 11 विकेट 86 रन पर); उत्तर प्रदेश वि. सौराष्ट्र, 1984-85; दिलीप ट्राफी 3 विकेट 83 रन पर, मध्य क्षेत्र वि. उत्तर क्षेत्र, 1984-85, मध्य क्षेत्र की ओर से 1983-84 वेस्टइंडीज के विरुद्ध जयपुर में 8 विकेट 155 रन पर; रणजी ट्राफी में एक शतक, 101* वि. राजस्थान 1978-79; टेस्ट मैच 2, पारी 2, नाबाद; कुल रन संख्या 12; 3 विकेट 167 रन पर।

शर्मा, पार्थसारथी

जन्म अलवर, 5 जनवरी 1948; दायें हाथ के बल्लेबाज, दायें हाथ के धीमी गति के स्पिन गेंदबाज, रणजी ट्राफी प्रतियोगिता में विकेट-रक्षण भी किया। राजस्थान की ओर से रणजी ट्राफी में 1964-65 में प्रवेश : 117 पारी, 5 में नाबाद, 4316 कुल रन संख्या, 11 शतक, उच्चतम 161, औसत प्रति पारी 38·53 रन; 124 विकेट, 23·41 रन प्रति विकेट के औसत पर, दिलीप ट्राफी : 1379 रन, 38·31 रन प्रति पारी, 3 शतक, उच्चतम 111 मध्य क्षेत्र वि. दक्षिण क्षेत्र, 1980-81; इरानी कप मैच 206 शेष भारत वि. बम्बई, 1977-78; देवधर ट्राफी 101 नाबाद वि. दक्षिण क्षेत्र 1976-77, 100 वि. दक्षिण क्षेत्र, 1978-79; टेस्ट 5, पारी 10, उच्चतम 54 वि. वेस्टइंडीज; दिल्ली, 1974-75, औसत प्रति पारी 18·70 रन।

शर्मा, यशपाल

जन्म लुधियाना, 11 अगस्त, 1954; दायें हाथ के बल्लेबाज, दायें हाथ के धीमी गति के गेंदबाज, पंजाब की ओर से रणजी ट्राफी में 1973-74 में प्रवेश; रणजी ट्राफी : 61 पारी, नाबाद 10, कुल रन संख्या 2156, 4 शतक, उच्चतम 157 वि. उत्तर प्रदेश, 1977-78, औसत प्रति पारी 42·27 रन; दिलीप ट्राफी 787 रन, 56·21 रन प्रति पारी के औसत पर, चार शतक के साथ, उच्चतम 173 उत्तर क्षेत्र वि. दक्षिण क्षेत्र, 1977-78; 37 टेस्ट मैच, 59 पारी, 11 नाबाद, कुल रन संख्या 1606, 2 शतक, 9 अर्ध शतक, औसत प्रति पारी 33·45 रन, उच्चतम 140 वि. इंग्लैंड, मद्रास, 1981-82, इस पारी में गुण्डप्पा विश्वनाथ के साथ तीसरे विकेट की साझेदारी में 316 रन जोड़े। ये स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, लुधियाना में कार्यरत हैं।

शास्त्री, रविशंकर

जन्म बम्बई, 27 मई, 1962; दायें हाथ के बल्लेबाज, बायें हाथ के धीमी गति के स्पिन गेंदबाज; प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में 1979-80 में प्रवेश;

अपने पहले ही टेस्ट मैच में, न्यूजीलैंड के विरुद्ध, 1980-81 में वैलिंगटन में 4 गेंदों पर 3 विकेट लिये; कुल 40 टेस्ट मैच, 61 पारी, आठ में नाबाद; 1924 रन, 5 शतक, 8 अर्द्धशतक, औसत प्रति पारी 36·30 रन; उच्चतम 142 वि. इंग्लैंड, बम्बई 1984-85, 94 विकेट 3600 रन पर, औसत प्रति विकेट 39·36 रन, सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 5 विकेट 75 रन पर, वि. पाकिस्तान, नागपुर मे 1983-84; रणजी ट्राफी : कुल रन 942, दो शतक, उच्चतम 200 नाबाद, बम्बई वि. बड़ौदा, 1984-85, औसत प्रति पारी 54·71 रन बड़ौदा के विरुद्ध, 1984-85, तिलकराज के एक ओवर की छह गेंदों पर छह छक्के, विश्व कीर्तिमान; 24.12 रन प्रति विकेट के औसत पर 66 विकेट, सर्वोत्तम प्रदर्शन 91 रन पर 8 विकेट वि. दिल्ली, 1984-85; दिलीप ट्राफी 20·84 रन प्रति विकेट के औसत पर 25 विकेट, सर्वोत्तम प्रदर्शन 7 विकेट 105 रन पर, पश्चिम क्षेत्र वि. उत्तर क्षेत्र, 1982-83; एक शतक, 134 पश्चिम क्षेत्र वि. पूर्व क्षेत्र, 1981-82; इरानी कप मैच 9 विकेट 101 रन पर (मैच में 11 विकेट 146 रन पर)।

बेन्सन व हेजेज कप के लिये आस्ट्रेलिया में 1984 मे आयोजित विश्व प्रतियोगिता में चैम्पियन ऑफ चैम्पियन्स बनने का गौरव प्राप्त। अर्जुन अवार्ड से सम्मानित, 1985; ये बम्बई मे टाटा के एक अखबार में सह-सम्पादक हैं।

शिवराम कृष्णन, लक्ष्मण

जन्म मद्रास, 31 दिसम्बर, 1965; दायें हाथ के बल्लेबाज, दायें हाथ के धीमी गति के स्पिन गेंदबाज। तमिलनाडु की ओर से दिल्ली के विरुद्ध 1981-82 मे रणजी ट्राफी में प्रवेश जिसमे 2 विकेट 77 रन पर और 7 विकेट 28 रन पर गिराये जो इनका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है। रणजी ट्राफी में 26 विकेट 18·17 रन प्रति विकेट के औसत से प्राप्त किये है। टेस्ट मैच 9, पारी 9, एक में नाबाद, 130 रन, औसत प्रति पारी 16·28 रन; 26 विकेट 1145 रन पर, औसत प्रति विकेट 44.03 रन, सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन, 6 विकेट 64 रन पर (12 विकेट 181 रन पर) वि. इंग्लैंड, प्रथम टैस्ट, बम्बई, 1984-85। ये केमिकल्स व प्लास्टिक, मद्रास में कार्यरत हैं।

शुक्ला, राकेश

जन्म कानपुर, 4 फरवरी 1948; दायें हाथ के बल्लेबाज, दायें हाथ के धीमी गति के स्पिन गेंदबाज; प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में 1969-70 में

प्रवेश; 1974-75 तक बिहार की ओर से और तत्पश्चात् दिल्ली की ओर से रणजी ट्राफी प्रतियोगिता में खेल रहे हैं : पारी 98, नाबाद 23, कुल रन संख्या 2859, 6 शतक, उच्चतम 163 अपराजित पारी वि. हरियाणा, 1982-83, औसत प्रति पारी 35.29 रन, 237 विकेट, 21.00 रन प्रति विकेट के औसत पर, सर्वश्रेष्ठ गेंदबाजी 7 विकेट 83 रन पर, वि. राजस्थान, 1977-78, दिलीप ट्राफी: उच्चतम रन संख्या 77 उत्तर क्षेत्र वि. पूर्व क्षेत्र, 1982-83; 4 विकेट 31 रन पर, उत्तर क्षेत्र वि. पूर्व क्षेत्र, 1982-83, एक टेस्ट, वि. श्रीलंका 1982-83, बल्लेबाजी का अवसर नही मिला, 2 विकेट 152 रन पर; ये मोहन मेकिन्स ब्रेवरिज लिमिटेड, कलकत्ता में कार्यरत हैं।

शेखर, तिरुमलाई

जन्म 28 मार्च, 1956; दायें हाथ के बल्लेबाज, दायें हाथ के मध्यम गति के तेज गेंदबाज; तमिलनाडू की ओर से 1980-81 में रणजी ट्राफी में प्रवेश, सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 9 विकेट 54 रन पर (मैच में 12 विकेट 95 रन पर) वि. केरल 1982-83; उच्चतम पारी 30 वि. उत्तर प्रदेश, 1981-82; दिलीप ट्राफी 5 विकेट 66 रन पर, दक्षिण वि. पश्चिम क्षेत्र, 1982-83; 2 टेस्ट, 1 पारी, रन नही बना सके; 129 रन देकर कोई विकेट नहीं ले सके। ये दूरा मेटेलिक कम्पनी, मद्रास में कार्यरत हैं।

श्रीकान्त, कृष्णम्मा चारी

जन्म मद्रास, 12 दिसम्बर, 1959; दायें हाथ के आक्रामक प्रारम्भिक बल्लेबाज; तमिलनाडू की ओर से 1978-79 में प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में प्रवेश; रणजी ट्राफी: कुल रन 1231, 2 शतक, उच्चतम 172 वि. कर्नाटक, 1980-81 औसत प्रति पारी 38.46 रन, दिलीप ट्राफी: 101 दक्षिण क्षेत्र वि पश्चिम क्षेत्र, 1984-85; इरानी कप मैच: 110 शेष भारत वि. दिल्ली, 1982-83; देवधर ट्राफी: 59.71 रन प्रति पारी के औसत पर कुल 418 रन; टेस्ट मैच 14, पारी 23, एक मे नाबाद, एक शतक; 116 वि. आस्ट्रेलिया तीसरा टेस्ट, सिडनी, 1985-86, 4 अर्धशतक, औसत प्रति पारी 34.82 रन। ये सुन्दरम इंडस्ट्रीज, मद्रास मे इंजिनियर हैं।

श्रीनिवासन, तिरुमलाई

जन्म मद्रास, 26 अक्टूबर, 1950; दायें हाथ के बल्लेबाज, दायें हाथ के गेंदबाज; तमिलनाडू की ओर से रणजी ट्राफी प्रतियोगिता में 1970-

प्रूडेन्शियल विश्व कप विजेता भारतीय टीम, 1983
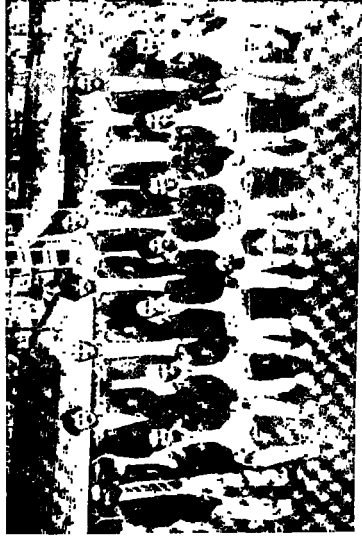
पहली पंक्ति मे (वाये से दाये) यशपाल शर्मा, एस.एम.एच किरमानी, मोहिन्दर अमरनाथ, कपिल देव (कप्तान) एस. एम. गावस्कर
डी. वेंगसरकार और मदनलाल

दूसरी पंक्ति मे (बांये से दांये) पी. आर. मानसिंह (मैनेजर), रोजर बिन्नी, बी. एम. सन्धु, संदीप पाटिल, रवि शास्त्री, सुनील वाल्सन,
के. श्रीकान्त और कीर्ति आजाद ।

प्रवेश; 1974-75 तक बिहार की ओर से और तत्पश्च
से रणजी ट्राफी प्रतियोगिता में खेल रहे हैं : पारी 9ɛ
रन संख्या 2859, 6 शतक, उच्चतम 163 अपराजित
1982-83, औसत प्रति पारी 35.29 रन, 237 वि
विकेट के औसत पर, सर्वश्रेष्ठ गेंदबाजी 7 विकेट '
स्थान, 1977-78, दिलीप ट्राफी: उच्चतम रन सं
पूर्व क्षेत्र, 1982-83; 4 विकेट 31 रन पर,
1982-83, एक टेस्ट, वि. श्रीलंका 1982-8
नहीं मिला, 2 विकेट 152 रन पर; ये मोहन
कलकत्ता मे कार्यरत हैं।

शेखर, तिरूमलाई

जन्म 28 मार्च, 1956; दायें हाथ के ब
गति के तेज गेंदबाज; तमिलनाडू की ओर
में प्रवेश, सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 9 विकेट 54 रन
रन पर) वि. केरल 1982-83; उच्चतः
1981-82; दिलीप ट्राफी 5 विकेट 66 र
1982-83; 2 टेस्ट, 1 पारी, रन नही
विकेट नहीं ले सके। ये दूरा मेटेलिक कम्पनी

श्रीकान्त, कृष्णम

जन्म मद्रास, 12 दिसम्बर, 1959;
बल्लेबाज; तमिलनाडू की ओर से 1978
प्रवेश; रणजी ट्राफी: कुल रन 1231, 2
कर्नाटक, 1980-81 औसत प्रति पारी 38.
दक्षिण क्षेत्र वि पश्चिम क्षेत्र, 1984-85; इरान
वि. दिल्ली, 1982-83; देवधर ट्राफी: 59·71
पर कुल 418 रन; टेस्ट मैच 14, पारी 23, एक
116 वि. आस्ट्रेलिया तीसरा टेस्ट, सिडनी, 198
औसत प्रति पारी 34·82 रन। ये सुन्दरम इंडस्ट्रीज,
नियर हैं।

श्रीनिवासन, तिरूमलाई

जन्म मद्रास, 26 अक्टूबर, 1950; दायें हाथ के बल्ले
के गेंदबाज; तमिलनाडू की ओर से रणजी ट्राफी प्रतियो
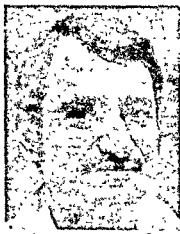
अजित वाडेकर

ई. ए. एस. प्रसन्ना

बिशनसिंह बेदी
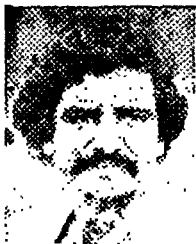
गुडप्पा विश्वनाथ

मोहिन्दर अमरनाथ

एस. एम. एच. किरमानी

कप्तान कपिल देव,
प्रूडेन्शियल कप सहित

कप्तान सुनील गावस्कर
बेन्सन और हेजेज़ कप सहित

के. श्रीकान्त

एल. शिवरामकृष्णन

अजित वाडेकर

ई. ए. एस. प्रसन्ना

बिशनसिंह बेदी
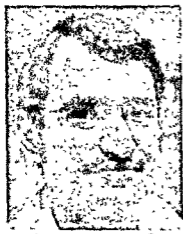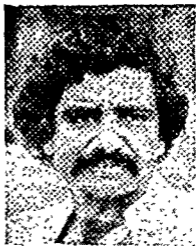
गुडप्पा विश्वनाथ

मोहिन्दर अमरनाथ

एस. एम. एच. किरमानी

संदीप पाटिल

रवि शास्त्री

डी. बी. वैंगसरकार

एम अजहरूद्दीन

71 में प्रवेश: 32·24 रन प्रति पारी के औसत पर कुल रन 1838, उच्चतम 130 अपराजित पारी वि. कर्नाटक, 1976-77; दिलीप ट्राफी 2 शतक, 112 दक्षिण क्षेत्र वि. उत्तर क्षेत्र, 1977-78; 149 दक्षिण क्षेत्र वि. पूर्व क्षेत्र, 1979-80; ईरानी कप में एक पारी: 94 रन। टेस्ट 1, पारी 2, कुल रन 48 वि. न्यूजीलैंड (ऑकलैंड) 1980-81, इंडियन पिस्टन्स, मद्रास में ये कार्यरत हैं।

टैस्ट मैच

भारत ने अपने प्रथम 94 टेस्ट मैचों में 10 में विजय प्राप्त की, 35 टेस्ट मैचों में हारा और 49 टेस्ट मैचों में हारजीत का फैसला नहीं हो सका। इन टेस्ट मैचों का वर्णन पुस्तक के अन्य अध्यायों में दिया गया है।

क्रमानुसार : 1966-67 वेस्टइंडीज के विरुद्ध

95. प्रथम टेस्ट, बम्बई में, दिसम्बर 13, 14, 16, 17 और 18। वेस्टइंडीज की छः विकिटों से विजय। भारत 296 (बोर्डे 121) और 316, वेस्टइंडीज 421 (हंट 101, चन्द्रशेखर 7 विकेट 157 रन पर) और चार विकिटों पर 192 रन (चन्द्रशेखर 4 विकेट 78 रन पर) कप्तान मंसूर अली खाँ पटौदी (भारत); जी. एस. सोबर्स (वेस्टइंडीज)

जीते 10, हारे 36, अनिर्णीत समाप्त 49।

96. द्वितीय टेस्ट, कलकत्ता में, दिसम्बर 31, जनवरी 3, 4 और 5। वेस्टइंडीज की एक पारी और 45 रनों से विजय। वेस्टइंडीज 390, भारत 167 (गिब्स 5 विकेट 51 रन पर) और 178. कप्तान : मंसूर अली खाँ पटौदी (भारत), जी. एस. सोबर्स (वेस्टइंडीज)।

जीते 10, हारे 37, अनिर्णीत समाप्त 49।

97. तीसरा टेस्ट, मद्रास में, जनवरी 13, 14, 15, 17 और 18। अनिर्णीत समाप्त। भारत 404 (इंजीनियर 109, बोर्डे 125) और 323; वेस्टइंडीज 406 और सात विकिटों पर 270, कप्तान : मंसूर अली खाँ पटौदी (भारत), जी. एस सोबर्स (वेस्टइंडीज)।

जीते 10, हारे 37, अनिर्णीत समाप्त 50।

शृंखला की कुल रन संख्या : भारत 60 विकिटों पर 1684 रन, औसत प्रति विकेट 28.06; वेस्टइंडीज 41 विकिटों पर 1679 रन, औसत प्रति विकेट 40.95। वेस्टइंडीज ने शृंखला 2—0 से जीती।

1967 इंग्लैंड के विरुद्ध :

98. प्रथम टेस्ट, लीड्स में, जून 8, 9, 10, 12 और 13 इंग्लैंड की छः विकिटों से विजय। इंग्लैंड चार विकिटों पर 550 रन और पारी समाप्ति की घोषणा (बाईकॉट 246, बी. डी. ओलिविरा 109) और चार विकिटों पर 126 रन। भारत 164 और 510 (पटौदी 148) कप्तान : टी. बी. क्लोज (इंग्लैंड), मंसूर अली खाँ पटौदी (भारत)।

जीते 10, हारे 38, अनिर्णीत समाप्त 50।

99. द्वितीय टेस्ट, लार्ड्स में, जून 22, 23, 24 और 26। इंग्लैंड की एक पारी और 124 रन से विजय। भारत 152 और 110 (इलिंग्वर्थ 6 विकेट 29 रन पर) इंग्लैंड 386 (ग्रेवनी 151, चन्द्रशेखर 5 विकेट 127 रन पर) कप्तान : टी. बी. क्लोज (इंग्लैंड), मंसूर अली खाँ पटौदी (भारत)।

जीते 10, हारे 39, अनिर्णीत समाप्त 50।

100. तीसरा टेस्ट, बरमिंघम में, जुलाई 13, 14 और 15। इंग्लैंड की 132 रनों से विजय। इंग्लैंड 298 और 203, भारत 92 और 277। कप्तान डी. बी. क्लोज (इंग्लैंड), मंसूर अली खाँ पटौदी (भारत) जीते 10, हारे 40, अनिर्णीत समाप्त 50। शृंखला की कुल रन संख्या: इंग्लैंड 38 विकेट पर 1563, औसत 41·13; भारत 60 विकेट पर 1305 रन; औसत 21·75। इंग्लैंड ने 3-0 से शृंखला जीती।

1967-68 आस्ट्रेलिया के विरुद्ध

101. प्रथम टेस्ट, एडीलेड मे, दिसम्बर 23, 24, 26, 27 और 28। आस्ट्रेलिया की 146 रन से विजय। आस्ट्रेलिया 355 (आबिद अली 6 विकेट 55 रन पर) और 369 (सिम्पसन 103, कूपर 108, सुर्ती 5 विकेट 74 रन पर); भारत 307 और 251 (रेनीबर्ग 5 विकेट 39 रन पर) कप्तान : आर बी. सिम्पसन (आस्ट्रेलिया), सी. जी. बोर्डे (भारत)

जीते 10, हारे 41, अनिर्णीत समाप्त 50।

102. द्वितीय टेस्ट, मेलबोर्न मे, दिसम्बर 30, जनवरी 1, 2 और 3 आस्ट्रेलिया की एक पारी और 4 रन से विजय। भारत 173 (मैकेन्जी 7 विकेट 66 रन पर) और 352 (मैकेन्जी 3 विकेट 85 रन पर) आस्ट्रेलिया 529 (सिम्पसन 109, लॉरी 100, आई एम. चैपल 151, प्रसन्ना 6 विकेट 141 रन पर) कप्तान : आर. बी. सिम्पसन (आस्ट्रेलिया) मंसूर अली खां पटौदी (भारत)

जीते 10, हारे 42, अनिर्णीत समाप्त 50।

103. तीसरी टेस्ट, ब्रिसबेन मे, जनवरी 19, 20, 22, 23 और

24। आस्ट्रेलिया की 39 रनों से विजय। आस्ट्रेलिया 379 और 294 (प्रसन्ना 4 विकेट 104 रन पर); भारत 279 और 355 (जयसिम्हा 101) कप्तान : डब्ल्यू. एम. लॉरी (आस्ट्रेलिया), मंसूर अली खां पटौदी (भारत)।

जीते 10, हारे 43, अनिर्णीत समाप्त 50।

104. चौथा टेस्ट, सिडनी में, जनवरी 26, 27, 29, 30 और 31। आस्ट्रेलिया की 144 रनों से विजय। आस्ट्रेलिया 317 और 292 (कूपर 165), भारत 268 और 197 (सिम्पसन 5 विकेट 59 रन पर) कप्तान : एम. डब्ल्यू. लॉरी (आस्ट्रेलिया) मंसूर अली खां पटौदी (भारत)।

जीते 10, हारे 44, अनिर्णीत समाप्त 50।

शृंखला की कुल रन संख्या : आस्ट्रेलिया 70 विकिटों पर 2515 रन; औसत प्रति विकेट 35.92; भारत 80 विकेट पर 2182 रन; औसत प्रति विकेट 27.27 रन। आस्ट्रेलिया ने 4--0 से शृंखला जीती।

1967-68 न्यूजीलैंड के विरुद्ध

105. प्रथम टेस्ट, डुटनेडिन मे, फरवरी 15, 16, 17, 19 और 20 को। भारत की पांच विकिटों से विजय। न्यूजीलैंड 350 (डाउलिंग 143) और 208 (प्रसन्ना 6 विकेट 94 रन पर); भारत 359 (मोट्ज 5 विकेट 86 रन पर) और पांच विकेट पर 200। कप्तान : बी. डब्ल्यू. सिंकलेयर (न्यूजीलैंड), मसूर अली खा पटौदी (भारत)।

जीते 11, हारे 44, अनिर्णीत समाप्त 50।

106 द्वितीय टेस्ट, क्राइस्टचर्च मे, फरवरी 22, 23, 24, 26 और 27 को। न्यूजीलैंड की छह विकेटों से विजय। न्यूजीलैंड 502 (डाउलिंग 239, बेदी 6 विकेट 127 रन पर) और चार विकेट पर 88 रन, भारत 288 (मोट्ज 6 विकेट 63 रन पर) और 301 (बर्टलेट 6 विकेट 38 रन पर) कप्तान : जी. टी. डाउलिंग (न्यूजीलैंड) मसूर अली खा पटौदी (भारत)।

जीते 11, हारे 45, अनिर्णीत समाप्त 50।

107. तीसरा टेस्ट, विलिंग्टन मे, फरवरी 29, मार्च 1,2 और 4 को। भारत की आठ विकिटों से जीत। न्यूजीलैंड 186 (प्रसन्ना 5 विकेट 32 रन पर) और 199 (नादकर्णी 6 विकेट 43 रन पर); भारत 327 (वाडेकर 143) और दो विकेट पर 61 रन। कप्तान : जी. टी. डाउलिंग (न्यूजीलैंड), मंसूर अली खां पटौदी (भारत)।

जीते 12, हारे 45, अनिर्णीत समाप्त 50।

108. चौथा टेस्ट : ऑकलैंड में, मार्च 7, 8, 9, 11 और 12 को। भारत की 272 रन से विजय। भारत 252 और पांच विकेट पर 261 रन और पारी समाप्ति की घोषणा। न्यूजीलैंड 140 और 101 रन। कप्तान : जी. टी. डाउलिंग (न्यूजीलैंड), मंसूर अली खां पटौदी (भारत)।

जीते 13, हारे 45, अनिर्णीत समाप्त 50।

शृंखला में कुल रन संख्या : न्यूजीलैंड 74 विकेट पर 1774, औसत प्रति विकेट 23·97 रन, भारत 6- विकेट पर 2049, औसत प्रति विकेट 33.04 रन। भारत ने 3-1 से शृंखला जीती।

1969-70 न्यूजीलैंड के विरुद्ध

109. प्रथम टेस्ट : बम्बई मे, सितम्बर 25, 26, 27, 28 और 30। भारत की 60 रन से विजय। भारत 156 और 260; न्यूजीलैंड 229 और 127 (बेदी 6 विकेट 42 रन पर) कप्तान : मंसूर अली खां पटौदी (भारत), जी. टी. डाउलिंग (न्यूजीलैंड)।

जीते 14, हारे 45, अनिर्णीत समाप्त 50।

110. द्वितीय टेस्ट: नागपुर मे, अक्टूबर 3, 4, 5, 7 और 8। न्यूजीलैंड की 167 रन से विजय। न्यूजीलैंड 319 और 214 (वेंकटराघवन 6 विकेट 74 रन पर); भारत 257 और 109 (एच. जे. हॉवर्थ 5 विकेट 34 रन पर) कप्तान : मंसूर अली खाँ पटौदी (भारत), जी. टी. डाउलिंग (न्यूजीलैंड)।

जीते 14, हारे 46, अनिर्णीत समाप्त 50।

111. तीसरा टेस्ट : हैदराबाद में, अक्टूबर 15, 16, 18, 19 और 20। अनिर्णीत समाप्त। न्यूजीलैंड 181 (प्रसन्ना 5 विकेट 51 रन पर) और आठ विकेट पर 175 और पारी समाप्ति की घोषणा। भारत 89 और 7 विकेट पर 76 रन। कप्तान : मंसूर अली खां पटौदी (भारत) जी. टी. डाउलिंग (न्यूजीलैंड)।

जीते 14, हारे 46, अनिर्णीत समाप्त 51।

शृंखला में कुल रन संख्या : भारत 57 विकेट पर 947, औसत प्रति विकेट 16·61 रन; न्यूजीलैंड 58 प्रति विकेट पर 1245, औसत प्रति विकेट 21·46 रन। एक-एक मैच जीत कर शृंखला मे दोनों टीमें बराबर रहीं।

1969-70 आस्ट्रेलिया के विरुद्ध

112. प्रथम टेस्ट : बम्बई मे, नवम्बर 4, 5, 6, 8 और 9। आस्ट्रेलिया की आठ विकेट से जीत। भारत 271 (मैकेंजी 5 विकेट 69 रन पर) और

137; आस्ट्रेलिया 345 (स्टेकपोल 103, प्रसन्ना 5 विकेट 121 रन पर) और दो विकेट पर 67 रन। कप्तान : मंसूर अली खां पटौदी (भारत), डब्ल्यू. एम. लॉरी (आस्ट्रेलिया)।

जीते 14, हारे 47, अनिर्णीत समाप्त 51।

113. द्वितीय टेस्ट : कानपुर में, नवम्बर 15, 16, 18, 19 और 20। अनिर्णीत समाप्त। भारत 320 और 7 विकेट पर 312 और पारी समाप्ति की घोषणा। (विश्वनाथ 137); आस्ट्रेलिया 348 (शिहेन 114) और बिना विकेट खोये 95 रन। कप्तान : मंसूर अली खां पटौदी (भारत) डब्ल्यू. एम. लॉरी (आस्ट्रेलिया)।

जीते 14, हारे 47, अनिर्णीत समाप्त 52।

114. तीसरा टेस्ट : नई दिल्ली में, नवम्बर 28,29, 30 और दिसम्बर 2; भारत की सात विकेट से विजय। आस्ट्रेलिया 296 (आई. एम. चेपल 138) और 107 (बेदी 5 विकेट 37 रन पर, प्रसन्ना 5 विकेट 42 रन पर); भारत 223 (मेलट 6 विकेट 64 रन पर) और तीन विकेट पर 181। कप्तान : मंसूर अली खां पटौदी (भारत), डब्ल्यू. एम. लॉरी (आस्ट्रेलिया)

जीते 15, हारे 47, अनिर्णीत समाप्त 52।

115. चौथा टेस्ट : कलकत्ता में, दिसम्बर 12, 13, 14 और 16। आस्ट्रेलिया की दस विकेट से विजय। भारत 212 (मैकेन्जी 6 विकेट 67 रन पर) और 161; आस्ट्रेलिया 335 (बेदी 7 विकेट 98 रन पर) और बिना विकेट खोये 42 रन। कप्तान : मंसूर अली खां पटौदी (भारत), डब्ल्यू. एम. लॉरी (आस्ट्रेलिया)।

जीते 15, हारे 48, अनिर्णीत समाप्त 52।

116. पांचवा टेस्ट : मद्रास, दिसम्बर 24,25,27 और 28। आस्ट्रेलिया की 77 रन से विजय। आस्ट्रेलिया 258 (वाल्टर्स 102, प्रसन्ना 4 विकेट 100 रन पर) और 153 (प्रसन्ना 6 विकेट 74 रन पर); भारत 163 (मेलट 5 विकेट 91 रन पर) और 171 (मेलट 5 विकेट 53 रन पर) कप्तान : मंसूर अली खां पटौदी (भारत), डब्ल्यू. एम. लॉरी (आस्ट्रेलिया)।

जीते 15, हारे 49, अनिर्णीत समाप्त 52।

शृंखला मे कुल रन संख्या : भारत 90 विकेट पर 2151, औसत प्रति विकेट 23 90 रन; आस्ट्रेलिया 72 विकेट पर 2046, औसत प्रति विकेट 28.41 रन। आस्ट्रेलिया ने शृंखला को 3—1 से जीता।

1970 वेस्ट इंडीज के विरुद्ध

117. प्रथम टेस्ट : किंग्स्टन में, फरवरी 18, 19, 20, 22 और 23 को। अनिर्णीत समाप्त। भारत 387 (दिलीप सरदेसाई 212); वेस्ट इंडीज 217 और पांच विकिटों पर 385 (कन्हाई 158) कप्तान : जी. एस. सोबर्स (वेस्ट इंडीज), ए. एल. वाडेकर (भारत)।

जीते 15, हारे 49, अनिर्णीत समाप्त 53।

118. द्वितीय टेस्ट, पोर्ट ऑफ स्पेन मे, मार्च 6, 7, 9, 10 और 11, भारत की 7 विकेट से विजय। वेस्ट इंडीज 214 और 261 (वेंकटराघवन 5 विकेट 95 रन पर); भारत 352 (दिलीप सरदेसाई 112, नोरिगा 9 विकेट 95 रन पर) और 3 विकेट पर 125। कप्तान : जी. एस. सोबर्स (वेस्ट इंडिज), ए. एल. वाडेकर (भारत)।

जीते 16, हारे 49, अनिर्णीत समाप्त 53।

119. तीसरा टेस्ट : जार्ज टाउन में, मार्च 19, 20, 21, 23 और 24। अनिर्णीत समाप्त। वेस्ट इंडिज 363 और 3 विकेट पर 307 रन और पारी समाप्ति की घोषणा (सी. ए डेविस 125, सोबर्स 108) भारत 376 (गावस्कर 116) और बिना विकेट खोये 123 रन। कप्तान : जी. जी. एस. सोबर्स (वेस्ट इंडीज) ए. एल. वाडेकर (भारत)।

जीते 16, हारे 49 अनिर्णीत समाप्त 54।

120. चौथा टेस्ट : ब्रिज टाउन में, अप्रैल 1, 2, 3, 4 और 6। अनिर्णीत समाप्त। वेस्ट इंडिज 5 विकिटों पर 501 रन और पारी समाप्ति की घोषणा (सोबर्स 178) और 6 विकिटों पर 180 रन और पारी समाप्ति की घोषणा; भारत 347 (दिलीप सरदेसाई 150) और 5 विकेट पर 221 (गावस्कर 117) कप्तान : जी. एस. सोबर्स (वेस्ट इंडिज), ए. एल. वाडेकर (भारत)।

जीते 16, हारे 49, अनिर्णीत समाप्त 55।

121. पांचवां टेस्ट : पोर्ट ऑफ स्पेन में, अप्रेल *13, 14, 15, 17, 18* और 19। अनिर्णीत समाप्त। भारत 360 (गावस्कर 124) और 427 (गावस्कर 220, नोरिगा 5 विकेट *129* रन पर); वेस्ट इंडीज 526 (सी.ए. डेविस *105*, सोबर्स *132*) और *8* विकेट पर *165* रन। कप्तान : जी. एस. सोबर्स (वेस्ट इंडीज), ए. एल. वाडेकर (भारत)।

जीते 16, हारे 49, अनिर्णीत समाप्त 56।

शृंखला में कुल रन संख्या : वेस्टइंडीज 77 विकेट पर 3119, औसत 40·50 रन प्रति विकेट; भारत 68 विकेट पर2718, औसत 39·97 रन प्रति विकेट । भारत ने 1-0 से शृंखला जीती ।

1971 इंग्लंड के विरुद्ध

122. प्रथम टेस्ट : लार्ड्स में, जुलाई 22, 23, 24, 26 और 27 । अनिर्णीत समाप्त । इंग्लैंड 304 और 191, भारत 313 और 8 विकेट पर 145 रन । कप्तान : आर. इलिंगवर्थ (इंग्लैंड), ए. एल. वाडेकर (भारत) ।

जीते 16, हारे 49, अनिर्णीत समाप्त 57 ।

123. द्वितीय टेस्ट : मैनचेस्टर में, अगस्त 5, 6, 7, 9 और 10 अनिर्णीत समाप्त । इंग्लैंड 386 (इलिंगवर्थ 107) और 3 विकेट पर 245 (लकहर्स्ट 101); भारत 212 (लिवर 5 विकेट 70 रन पर) और 3 विकेट पर 65 रन । कप्तान : आ. इलिंगवर्थ (इंग्लैंड), ए. एल. वाडेकर (भारत) ।

जीते 16, हारे 49, अनिर्णीत समाप्त 58 ।

124. तीसरा टेस्ट : ओवल में, अगस्त 19, 20, 21, 23 और 24 । *भारत की 4 विकेट से विजय । इंग्लैंड 355 और 101* (चन्द्रशेखर *6* विकेट 38 रन पर); भारत 284 (इलिंगवर्थ *5* विकेट 70 रन पर) और 6 विकेट पर 174 । कप्तान : आर. इलिंगवर्थ (इंग्लैंड), ए. एल. वाडेकर (भारत) ।

जीते 17, हारे 49, अनिर्णीत समाप्त 58 ।

शृंखला में कुल रन संख्या : इंग्लैंड 53 विकेट पर 1582, औसत प्रति विकेट 29·84 रन, भारत 47 विकेट पर 1193, औसत प्रति विकेट 25·38 रन । भारत ने 1-0 से शृंखला जीती ।

1972-73 इंग्लैंड के विरुद्ध

125 प्रथम टेस्ट : नई दिल्ली मे, दिसम्बर 20, 21, 23, 24 और 25 इंग्लैंड की 6 विकेट से विजय । भारत 173 (अर्नोल्ड 6 विकेट 45 रन पर) और 233; इंग्लैंड 200 (चन्द्रशेखर 8 विकेट 79 रन पर) और 4 विकेट पर 208 । कप्तान : ए. एल. वाडेकर (भारत), ए. आर. लुइस (इंग्लैंड) ।

जीते 17, हारे 50, अनिर्णीत समाप्त 58

126 द्वितीय टेस्ट : कलकत्ता में, दिसम्बर 30, 31, जनवरी 1, 3 और 4 *भारत की 28 रन से विजय । भारत 210 और 155 (ग्रेग 5*

विकेट 24 रन पर); इंग्लैंड 174 (चन्द्रशेखर 5 विकेट 65 रन पर) और 163 (बेदी 5 विकेट 63 रन पर) कप्तान : ए. एल. वाडेकर (भारत), ए. आर. लुइस (इंग्लैंड)।

जीते 18, हारे 50, अनिर्णीत समाप्त 58।

127 तीसरा टेस्ट : मद्रास में, जनवरी 12, 13, 14, 15 और 16 भारत की 4 विकेट से विजय। इंग्लैंड 242 (चन्द्रशेखर 6 विकेट 90 रन पर) और 159; भारत 316 और 6 विकेट पर 86 रन। कप्तान : ए. एल. वाडेकर (भारत), ए आर. लुइस (इंग्लैंड)

जीते 19, हारे 50, अनिर्णीत समाप्त 58।

128. चौथा टेस्ट : कानपुर में, जनवरी 25, 27, 28, 29 और 30 अनिर्णीत समाप्त। भारत 357 और 6 विकेट पर 186 रन; इंग्लैंड 397 (लुइस 125), कप्तान : ए एल वाडेकर (भारत); ए. आर. लुइस (इंग्लैंड)।

जीते 19, हारे 50, अनिर्णीत समाप्त 59।

129. पांचवा टेस्ट : बम्बई मे, फरवरी 6, 7, 8, 10 और 11, अनिर्णीत समाप्त। भारत 448 (इंजीनियर 121, विश्वनाथ 113) और 5 विकेट पर 244 और पारी समाप्ति की घोषणा; इंग्लैंड 480 (फ्लेचर 113, ग्रेग 148, चन्द्रशेखर 5 विकेट 135 रन पर) और 2 विकेट पर 67 रन। कप्तान : ए. एल. वाडेकर (भारत), ए. आर. लुइस (इंग्लैंड) जीते 19, हारे 50, अनिर्णीत समाप्त 60 श्रृंखला मे कुल रन संख्या: भारत 87 विकेट पर 2408 औसत प्रति विकेट 27·67 रन; इंग्लैंड 76 विकेट पर 2090, औसत प्रति विकेट 27·50, भारत ने 2-1 से श्रृंखला जीती।

1974 इंग्लैंड के विरुद्ध

130. प्रथम टेस्ट : मैनचेस्टर में, जून 6, 7, 8, 10 और 11 इंग्लैंड की 113 रन से विजय। इंग्लैंड 9 विकेट पर 328 और पारी समाप्ति की घोषणा (फ्लेचर 123) और 3 विकेट पर 213 और पारी समाप्ति की घोषणा (एडरिच 100); भारत 246 (गावस्कर 101) और 182, कप्तान : एम. एच. डिनेस (इंग्लैंड) ए. एल. वाडेकर (भारत)।

जीते 19, हारे 51, अनिर्णीत समाप्त 60।

131. द्वितीय टेस्ट : लॉर्ड्स में, जून 20, 21, 22 और 24 इंग्लैंड की एक पारी और 285 रन से विजय। इंग्लैंड 629 (एमिस 188, डिनेस

118, ग्रेग 106, बेदी 6 विकेट 226 रन पर); भारत 302 और (सी. एम. ओल्ड 5 विकेट 21 रन पर) कप्तान एम. एच. डिनेस (इंग्लैंड), ए. एल. वाडेकर (भारत)।

जीते 19, हारे 52, अनिर्णीत समाप्त 60।

132. तीसरा टेस्ट : बरमिंघम में, जुलाई 4, 5, 6 और 8 इंग्लैंड की एक पारी और 78 रन से विजय। भारत 165 और 216; इंग्लैंड 2 विकेट पर 459 और पारी समाप्ति की घोषणा (डी. लायड 214*; डिनेस 100) कप्तान : एम. एच. डिनेस (इंग्लैंड), ए.एल. वाडेकर (भारत)।

जीते 19, हारे 53, अनिर्णीत समाप्त 60।

श्रृंखला मे कुल रन संख्या : इंग्लैंड 24 विकेट पर पर 1629, औसत प्रति विकेट 67·87 रन; भारत 60 विकेट पर 1153, औसत प्रति विकेट 19·21 रन। इंग्लैंड ने 3-0 से श्रृंखला जीती।

1974-75 वेस्ट इंडीज के विरुद्ध

133. प्रथम टेस्ट : बेंगलोर में, नवम्बर 22, 23, 24,26 और 27। वेस्ट इंडीज की 267 रन से विजय। वेस्ट इंडीज 289 (कालीचरण 124) और 6 विकेट पर 356 और पारी समाप्ति की घोषणा (ग्रिनीज 107, लॉयड 163), भारत 260 और 118। कप्तान : मंसूर अली खां पटौदी (भारत), सी. एच. लॉयड (वेस्ट इंडीज)।

जीते 19, हारे 54, अनिर्णीत समाप्त 60।

134. द्वितीय टेस्ट : दिल्ली में, दिसम्बर 11, 12, 14 और 15। वेस्ट इंडीज की एक पारी और 17 रन से विजय। भारत 220 और 256 (गिब्स 6 विकेट 76 रन पर); वेस्ट इंडीज 493 (रिचर्ड्स 192*) कप्तान : एस. वैन्कट राघवन (भारत), सी. एच. लॉयड (वेस्ट इंडीज)।

जीते 19, हारे 55, अनिर्णीत समाप्त 60।

135. तीसरा टेस्ट : कलकत्ता में, दिसम्बर 27, 28, 29, 31 और जनवरी 1। भारत की 85 रन से विजय। भारत 233 (रॉबर्ट्स 5 विकेट 50 रन पर) और 316 (विश्वनाथ 139); वेस्ट इंडीज 240 (फ्रेडरिक्स 100) और 224। कप्तान : मंसूर अली खां पटौदी (भारत), सी. एच. लॉयड (वेस्ट इंडीज)।

जीते 20, हारे 55, अनिर्णीत समाप्त 60।

136. चौथा टेस्ट : मद्रास में, जनवरी 11, 12, 14 और 15। भारत की 100 रन से विजय। भारत 190 (रॉबर्ट्स 7 विकेट 64 रन पर) और

256 (रॉबर्टस् 5 विकेट 57 रन पर); वेस्ट इंडीज 192 (प्रसन्ना 5 विकेट 70 रन पर) और 154 कप्तान : मंसूर अली खां पटौदी (भारत), सी. एच. लॉयड (वेस्ट इंडीज)।

जीते 21, हारे 55, अनिर्णीत समाप्त 60।

137. पांचवां टेस्ट : बम्बई में, जनवरी 23, 24, 25, 27, और 29। वेस्ट इंडीज की 201 रन से विजय। वेस्ट इंडीज 6 विकेट पर 604 और पारी समाप्ति की घोषणा (फ्रेडरिक्स 104, लॉयड 242*) और 3 विकेट पर 205; भारत 406 (सोलकर 102, गिब्स 7 विकेट 98 रन पर) और 202 (होल्डर 6 विकेट 39 रन पर) कप्तान : मंसूर अली खां पटौदी (भारत), सी. एच. लॉयड (वेस्ट इंडीज)।

जीते 21, हारे 56, अनिर्णीत समाप्त 60।

शृंखला में कुल रन संख्या : भारत 100 विकेट पर 2457, औसत प्रति विकेट 24·57 रन, वेस्ट इंडीज 75 विकेट पर 2757, औसत प्रति विकेट 36·76। वेस्ट इंडीज ने 3-2 से शृंखला जीती।

1975-76 न्यूजीलैंड के विरुद्ध

138. प्रथम टेस्ट : ऑकलैंड में, जनवरी 24, 25, 26 और 28। भारत की 8 विकेट से विजय। न्यूजीलैंड 266 (चन्द्रशेखर 6 विकेट 94 रन पर, प्रसन्ना 3 विकेट 64 रन पर) और 215 (प्रसन्ना 8 विकेट 76 रन पर); भारत 414 (गावस्कर 116, सुरेन्द्र अमरनाथ 124, कॉन्गडन 5 विकेट 65 रन पर) और 2 विकेट पर 71; कप्तान : जी. एम. टर्नर (न्यूजीलैंड), सुनील गावस्कर (भारत)।

जीते 22, हारे 56, अनिर्णीत समाप्त 60।

139. द्वितीय टेस्ट : क्राइस्टचर्च में, फरवरी 5, 6, 8, 9 और 10। अनिर्णीत समाप्त। भारत 270 (कॉलिंज 6 विकेट 63 रन पर) और 6 विकेट पर 255; न्यूजीलैंड 403 (टर्नर 117, मदनलाल 5 विकेट 134 रन पर) कप्तान : जी. एम. टर्नर (न्यूजीलैंड), बी एस. बेदी (भारत)।

जीते 22, हारे 56, अनिर्णीत समाप्त 61।

140. तीसरा टेस्ट : विलिंगटन में, फरवरी 13, 14, 15 और 17। न्यूजीलैंड की एक पारी और 33 रन से विजय। भारत 220 (आर. जे. हेडली 4 विकेट 35 रन पर), और 81 (आर. जे. हेडली 7 विकेट 23 रन पर), न्यूजीलैंड 334। कप्तान : जी. एम. टर्नर (न्यूजीलैंड), बी. एस. बेदी (भारत)।

जीते 22, हारे 57, अनिर्णीत समाप्त 61 ।

श्रृंखला में कुल रन संख्या : न्यूजीलैंड 40 विकेट पर 1218, औसत प्रति विकेट 30.45 रन; भारत 48 विकेट पर 1311, औसत प्रति विकेट 27·31 रन । एक-एक मैच जीत कर दोनों टीमें श्रृंखला में बराबर रहीं।

1975-76 वेस्ट इंडीज के विरुद्ध

141. प्रथम टेस्ट : ब्रिजटाउन में, मार्च 10, 11 और 13 । वेस्ट इंडीज की एक पारी और 97 रन से विजय । भारत 177 (हॉलफोर्ड 5 विकेट 23 रन पर) और 214, वेस्ट इंडीज 9 विकेट पर 488 और पारी समाप्ति की घोषणा (रिचर्ड्स 142, लॉयड 102), कप्तान : सी. एच. लॉयड (वेस्ट इंडीज), बी. एस. बेदी (भारत) ।

जीते 22, हारे 58, अनिर्णीत समाप्त 61 ।

142. द्वितीय टेस्ट : पोर्ट ऑफ स्पेन में, मार्च 24, 25, 27, 28 और 29 । अनिर्णीत समाप्त । वेस्ट इंडीज 241 (रिचर्ड्स 130, बेदी 5 विकेट 82 रन पर) और 8 विकेट पर 215, भारत 5 विकेट पर 402 और पारी समाप्ति की घोषणा (गावस्कर 156, ब्रजेश पटेल 115*) कप्तान : सी. एच. लॉयड (वेस्ट इंडीज), बी. एस. बेदी (भारत) ।

जीते 22, हारे 58, अनिर्णीत समाप्त 62 ।

143. तीसरा टेस्ट : पोर्ट ऑफ स्पेन में, अप्रैल 7, 8, 10, 11 और 12 । भारत की 6 विकेट से विजय । वेस्ट इंडीज 359 (रिचर्ड्स 177, चन्द्रशेखर 6 विकेट 120 रन पर) और 6 विकेट पर 271 और पारी समाप्ति की घोषणा; भारत 228 (होल्डिंग 6 विकेट 65 रन पर) और 4 विकेट पर 406 (गावस्कर 103, विश्वनाथ 112) कप्तान : सी. एच. लॉयड (वेस्ट इंडीज), बी. एस. बेदी (भारत) ।

जीते 23, हारे 58, अनिर्णीत समाप्त 62 ।

144. चौथा टेस्ट : किंग्स्टन में, अप्रैल 21, 22, 24, और 25 । वेस्ट इंडीज की दस विकेट से विजय । भारत 6 विकेट पर 306 और पारी समाप्ति की घोषणा; वेस्ट इंडीज 391 (चन्द्रशेखर 5 विकेट 153 रन पर) और बिना विकेट खोये 13 रन । कप्तान : सी. एच. लॉयड (वेस्ट इंडीज), बी. एस. बेदी (भारत) ।

जीते 23, हारे 59, अनिर्णीत समाप्त 62 ।

श्रृंखला में कुल रन संख्या : वेस्ट इंडीज 53 विकेट पर 1978, औसत प्रति विकेट 37·32 रन; भारत 50 विकेट पर 1830, औसत प्रति विकेट 36·60 रन । वेस्ट इंडीज ने श्रृंखला को 2-1 से जीता ।

1976-77 न्यूजीलैंड के विरुद्ध

145. प्रथम टेस्ट : बम्बई में, नवम्बर 10, 11, 13, 14 और 15। भारत की 162 रन से विजय। भारत 399 (गावस्कर 119) और 4 विकेट पर 202 रन और पारी समाप्ति की घोषणा; न्यूजीलैंड 298 (पारकर 104) और 141 (बेदी 5 विकेट 27 रन पर) कप्तान : बी. एस. बेदी (भारत), जी. एम. टर्नर (न्यूजीलैंड)।

जीते 24, हारे 59, अनिर्णीत समाप्त 62।

146. द्वितीय टेस्ट : कानपुर में, नवम्बर 18, 19, 20, 21, और 23 अनिर्णीत समाप्त। भारत 9 विकेट पर 524 और पारी समाप्ति की घोषणा और 2 विकेट पर 208 और पारी समाप्ति की घोषणा (विश्वनाथ 103*); न्यूजीलैंड 350 (टर्नर 113) और 7 विकेट पर 193, कप्तान : बी. एस. बेदी (भारत) जी. एम. टर्नर (न्यूजीलैंड)।

जीते 24, हारे 59, अनिर्णीत समाप्त 63।

147. तीसरा टेस्ट : मद्रास में, नवम्बर 26, 27, 28, 30, दिसम्बर 1 और 2, भारत की 216 रन से विजय। भारत 298 (कान्स 5 विकेट 55 रन पर) और 5 विकेट पर 201 और पारी समाप्ति की घोषणा; न्यूजीलैंड 140 (बेदी 5 विकेट 48 रन पर) और 143 कप्तान बी. एस. बेदी (भारत) जी. एम. टर्नर (न्यूजीलैंड)।

जीते 25, हारे 59, अनिर्णीत समाप्त 63।

शृंखला में कुल रन संख्या भारत 40 विकेट पर 1832, औसत प्रति विकेट 45·65 रन, न्यूजीलैंड 57 विकेट पर 1265 औसत प्रति विकेट 22·19। भारत ने 2-0 से शृंखला जीती।

1976-77 इंग्लैंड के विरुद्ध

148. प्रथम टेस्ट : नई दिल्ली में, दिसम्बर 17, 18, 19, 21, और 22। इंग्लैंड की एक पारी और 25 रन से विजय। इंग्लैंड 381 (ऐमिस 179); भारत 122 (लिवर 7 विकेट 46 रन पर) और 234 (लिवर 3 विकेट 24 रन पर) कप्तान : बी. एस. बेदी (भारत), ए. डब्लू. ग्रेग (इंग्लैंड)।

जीते 25, हारे 60 अनिर्णीत समाप्त 63।

149. द्वितीय टेस्ट : कलकत्ता में, जनवरी 1, 2, 3, 5, और 6। इंग्लैंड की दस विकेट से विजय। भारत 155 (विलिस 5 विकेट 27 रन पर) और 181; इंग्लैंड 321 (ग्रेग 103, बेदी 5 विकेट 110 रन पर) और बिना

विकेट खोये 16 रन। कप्तान : बी. एस. बेदी (भारत), ए. डब्लू. ग्रेग (इंग्लैंड)।

जीते 25, हारे 61, अनिर्णीत समाप्त 63।

150. तीसरा टेस्ट : मद्रास में, जनवरी 14, 15, 16, 18, और 19, इंग्लैंड की 200 रन से विजय। इंग्लैंड 262 और 9 विकेट पर 185 और पारी समाप्ति की घोषणा (चन्द्रशेखर 5 विकेट 50 रन पर); भारत 164 (लिवर 5 विकेट 59 रन पर) और 83, कप्तान : बी. एस. बेदी (भारत), ए. डब्लू. ग्रेग (इंग्लैंड)।

जीते 25, हारे 62, अनिर्णीत समाप्त 63।

151. चौथा टेस्ट : बेंगलोर में, जनवरी 28, 29, 30, फरवरी 1 और 2। भारत की 140 रन से विजय। भारत 253 (विलस 6 विकेट 53 रन पर) और 9 विकेट पर 259 और पारी समाप्ति की घोषणा; इंग्लैंड 195 (चन्द्रशेखर 6 विकेट 76 रन पर) और 177 (बेदी 6 विकेट 71 रन पर) कप्तान : बी. एस. बेदी (भारत), ए. डब्लू ग्रेग (इंग्लैंड)।

जीते 26, हारे 62, अनिर्णीत समाप्त 63।

152. पांचवा टेस्ट : बम्बई में, फरवरी 11, 12, 14, 15, और 16, अनिर्णीत समाप्त। भारत 338 (गावस्कर 108) और 192 (अन्डरवुड 5 विकेट 84 रन पर), इंग्लैंड 317 और 7 विकेट पर 152 (गावरी 5 विकेट 33 रन पर) कप्तान : बी. एस. बेदी (भारत), ए. डब्लू. ग्रेग (इंग्लैंड)।

जीते 26, हारे 62, अनिर्णीत समाप्त 64।

शृंखला में कुल रन संख्या : भारत 99 विकेट पर 1981, औसत प्रति विकेट 20·01 रन; इंग्लैंड 76 विकेट पर 2006, औसत प्रति विकेट 26·39 रन।

इंग्लैंड ने 3-1 से शृंखला जीती।

1977-78 आस्ट्रेलिया के विरुद्ध

153. प्रथम टेस्ट : ब्रिसबेन में, दिसम्बर 2, 3, 4, और 6, आस्ट्रेलिया की 16 रन से विजय। आस्ट्रेलिया 166 (बेदी 5 विकेट 55 रन पर) और 327 (मदनलाल 5 विकेट 72 रन पर); भारत 153 और 324 (गावस्कर 113) कप्तान : आर. बी. सिम्पसन (आस्ट्रेलिया), बी. एस. बेदी (भारत)।

जीते 26, हारे 63, अनिर्णीत समाप्त 64।

154. द्वितीय टेस्ट : पर्थ में, दिसम्बर 16, 17, 18, 20 और 21, आस्ट्रेलिया की 2 विकेट से विजय। भारत 402 और 9 विकेट पर 330 और पारी समाप्ति की घोषणा (गावस्कर 127, मोहिन्दर अमरनाथ 100); आस्ट्रेलिया 394 (सिम्पसन 176, बेदी 5 विकेट 89 रन पर) और 8 विकेट पर 342 (ए. एल. मान 105, बेदी 5 विकेट 105 रन पर) कप्तान : आर. बी. सिम्पसन (आस्ट्रेलिया), बी. एस. बेदी (भारत)।

जीते 26, हारे 64, अनिर्णीत समाप्त 64।

155. तीसरा टेस्ट : मेलबोर्न में, दिसम्बर 30, 31, जनवरी 2, 3 और 4। भारत की 222 रन से विजय। भारत 256 और 343 (गावस्कर 118); आस्ट्रेलिया 213 (चन्द्रशेखर 6 विकेट 52 रन पर) और 164 (चन्द्रशेखर 6 विकेट 52 रन पर) कप्तान : आर. बी. सिम्पसन (आस्ट्रेलिया), ए. एस. बेदी (भारत)।

जीते 27, हारे 64, अनिर्णीत समाप्त 64।

156. चौथा टेस्ट : सिडनी में, जनवरी 7, 8, 9, 11 और 12। भारत की एक पारी और 2 विकेट से विजय। आस्ट्रेलिया 131 और 263, भारत 8 विकेट पर 396 और पारी समाप्ति की घोषणा। कप्तान : आर.बी. सिम्पसन (आस्ट्रेलिया), बी एस. बेदी (भारत)।

जीते 28, हारे 64, अनिर्णीत समाप्त 64।

157 पांचवां टेस्ट : ऐडिलेड में, जनवरी 28, 29, 30 फरवरी 1, 2 और 3। आस्ट्रेलिया की 47 रन से विजय। आस्ट्रेलिया 505 (येलेप 121, सिम्पसन 100, चन्द्रशेखर 5 विकेट 136 रन पर) और 256; भारत 269 और 445; कप्तान : आर.बी. सिम्पसन (आस्ट्रेलिया), बी. एस. बेदी (भारत)।

जीते 28, हारे 65, अनिर्णीत समाप्त 64।

शृंखला में कुल रन संख्या : आस्ट्रेलिया 98 विकेट पर 2761, औसत प्रति विकेट 28·17 रन; भारत 87 विकेट पर 2918, औसत प्रति विकेट 33·54 रन।

आस्ट्रेलिया ने 3-2 से शृंखला जीती।

1978-79 पाकिस्तान के विरुद्ध

158. प्रथम टेस्ट : फैसलाबाद में, अक्टूबर 16, 17, 18, 20 और 21; अनिर्णीत समाप्त पाकिस्तान 8 विकेट पर 503 और पारी समाप्ति की घोषणा (जहीर अब्बास 176, जावेद मियांदाद 154) और 4 विकेट पर 264 और पारी समाप्ति की घोषणा (आसिफ इकबाल 104); भारत 9

विकेट पर 462 और पारी समाप्ति की घोषणा (विश्वनाथ 145)और बिना विकेट खोये 43। कप्तान : मुश्ताक मोहम्मद (पाकिस्तान); बी. एस. बेदी (भारत)।

जीते 28, हारे 65, अनिर्णीत समाप्त 65।

159. द्वितीय टेस्ट : लाहोर में, अक्टूबर 27, 28, 29, 31 और नवम्बर 1। पाकिस्तान की 8 विकेट से विजय। भारत 199 और 465; पाकिस्तान 6 विकेट पर 539 और पारी समाप्ति की घोषणा (जहीर अब्बास 235) और 2 विकेट पर 128। कप्तान : मुश्ताक मोहम्मद (पाकिस्तान), बी. एस. बेदी (भारत)।

जीते 28, हारे 66, अनिर्णीत समाप्त 65।

160. तीसरा टेस्ट : करांची में, नवम्बर 14, 15, 17, 18 और 19 पाकिस्तान की 8 विकेट से विजय। भारत 344 (गावस्कर 111) और 300 (गावस्कर 137, सरफराज नवाज 5 विकेट 70 रन पर); पाकिस्तान 9 विकेट पर 481 और पारी समाप्ति की घोषणा (मियांदाद 100) और 2 विकेट पर 164। कप्तान : मुश्ताक मोहम्मद (पाकिस्तान), बी. एस. बेदी (भारत)।

जीते 28, हारे 67, अनिर्णित समाप्त 65।

श्रृंखला मे कुल रन सख्या : पाकिस्तान 31 विकेट पर 2079, औसत प्रति विकेट 67.06 रन; भारत 49 विकेट पर 1813, औसत प्रति विकेट 37.00 रन। पाकिस्तान ने 2—0 से श्रृंखला जीती।

1978-79 वेस्टइंडीज के विरुद्ध

161. प्रथम टेस्ट : बम्बई में, दिसम्बर 1, 2, 3, 5 और 6; अनिर्णीत समाप्त; भारत 424 (गावस्कर 205) और 2 विकेट पर 224, वेस्टइंडीज 493 (कालीचरण 187, चन्द्रशेखर 5 विकेट 116 रन पर) कप्तान : सुनील गावस्कर (भारत), ए. आई. कालीचरण (वेस्टइंडीज)।

जीते 28, हारे 67, अनिर्णीत समाप्त 66।

162. द्वितीय टेस्ट : बैंगलोर में, दिसम्बर 15, 16, 17,19 और 20; अनिर्णीत समाप्त। वेस्ट इंडीज 437 और 8 विकेट पर 200 (गावरी 5 विकेट 51 रन पर); भारत 371 (एस. टी. क्लार्क 5 विकेट 126 रन पर) कप्तान : सुनील गावस्कर (भारत), ए. आई. कालीचरण (वेस्टइंडीज)।

जीते 28, हारे 67, अनिर्णीत समाप्त 67।

163. तीसरा टेस्ट : कलकत्ता में, दिसम्बर 29, 30, 31 जनवरी 2 और 3 अनिर्णीत समाप्त। भारत 300 (गावस्कर 107) और 1 विकेट पर 361 और पारी समाप्ति की घोषणा(गावस्कर 182 वेंगसरकर 157); वेस्टइंडीज 327 (विलियम्स 111) और 9 विकेट पर 187। कप्तान : सुनील गावस्कर (भारत) ए. आई. कालीचरण (वेस्ट इंडीज)।

जीते 28, हारे 67, अनिर्णीत समाप्त 68।

164. चौथा टेस्ट : मद्रास में, जनवरी 12, 13, 14 और 16। भारत की3 विकेट से विजय। वेस्ट इंडीज 228 और 151; भारत 255(विश्वनाथ 124) और 7 विकेट पर 125। कप्तान : सुनील गावस्कर (भारत), ए. आई. कालीचरण (वेस्ट इंडीज)।

जीते 29, हारे 67, अनिर्णीत समाप्त 68।

165. पांचवा टेस्ट : नई दिल्ली में, जनवरी 24, 25, 27, 28 और 29। अनिर्णीत समाप्त। भारत 8 विकेट पर 566 और पारी समाप्ति की घोषणा (गावस्कर 120, वेंगसरकर 109, कपिलदेव 126*); वेस्ट इंडीज 172 और 3 विकेट पर 179। कप्तान : सुनील गावस्कर (भारत), ए. आई. कालीचरण (वेस्ट इंडीज)।

जीते 29, हारे 67, अनिर्णीत समाप्त 69।

166. छठा टेस्ट : कानपुर में, फरवरी 2, 3, 4, 6, 7 और 8। अनिर्णीत समाप्त। भारत 7 विकेट पर 644 और पारी समाप्ति की घोषणा। (विश्वनाथ 179, ए. डी. गायकवाड 102, मोहिन्दर अमरनाथ 101*)। कप्तान : सुनील गावस्कर (भारत), ए. आई. कालीचरण (वेस्ट इंडीज)।

जीते 29, हारे 67, अनिर्णीत समाप्त 70।

श्रृंखला में कुल रन संख्या : भारत 65 विकेट पर 3270, औसत प्रति विकेट 50.30 रन; वेस्ट इंडीज 88 विकेट पर 2836, औसत प्रति विकेट 32.22 भारत ने 1-0 से श्रृंखला जीती।

1979 इंग्लैंड के विरुद्ध

167. प्रथम टेस्ट : ऐजबेस्टन में, जुलाई 12, 13, 14 और 16। इंग्लैंड की एक पारी और 83 रन से विजय। इंग्लैंड 5 विकेट पर 633 और पारी समाप्ति की घोषणा (बायकॉट 155,गावरी 200*, कपिलदेव 5 विकेट 146 रन पर); भारत 297 और 253 (बोथम 5 विकेट 70 रन पर)। कप्तान : जे. एम. ब्रियेरली (इंग्लैंड), एस. वेंकटराघवन (भारत)।

जीते 29, हारे 68, अनिर्णीत समाप्त 70।

168. द्वितीय टेस्ट : लार्ड्स में, अगस्त 2, 3, 4, 6 और 7। अनिर्णीत समाप्त। भारत 96 (बोथम 5 विकेट 35 रन पर) और 4 विकेट पर 318 (विश्वनाथ 113, वेंगसरकर 103); इंग्लैंड 9 विकेट पर 419 पारी समाप्ति की घोषणा। कप्तान : जे. एम. ब्रियेरली (इंग्लैंड), एस. वेंकटराघवन (भारत)।

जीते 29, हारे 68, अनिर्णीत समाप्त 71।

169. तीसरा टेस्ट : लीड्स मे, अगस्त 16, 17, 18, 20 और 21। अनिर्णीत समाप्त। इंग्लैंड 270 (बोथम 137); भारत 6 विकेट पर 223 कप्तान : जे. एम. ब्रियेरली (इंग्लैंड), एस. वेंकटराघवन (भारत)।

जीते 29, हारे 68, अनिर्णीत समाप्त 72।

170. चौथा टेस्ट : ओवल मे, अगस्त 30, 31, सितम्बर 1, 3 और 4। अनिर्णीत समाप्त। इंग्लैंड 305 और 8 विकेट पर 434 पारी समाप्ति की घोषणा (बायकॉट 125); भारत 202 और 8 विकेट पर 429 (गावस्कर 221)। कप्तान : जे. एम ब्रियेरली (इंग्लैंड) एस वेंकटराघवन (भारत)।

जीते 29, हारे 68, अनिर्णीत समाप्त 73।

शृंखला मे कुल रन संख्या : इंग्लैंड 42 विकेट पर 1961, औसत प्रति विकेट·46·69 रन; भारत 58 विकेट पर 1818, औसत प्रति विकेट 31.34। इंग्लैंड ने 1-0 से शृंखला जीती।

1979 आस्ट्रेलिया के विरुद्ध

171. प्रथम टेस्ट: मद्रास में, सितम्बर 11, 12, 15 और 16: अनिर्णीत समाप्त। आस्ट्रेलिया 390 (बोर्डर 162, ह्यूज 100 दोशी 6 विकेट 103 रन पर) और 7 विकेट पर 212; भारत 425 (हिरवानी 7 विकेट 143 रन पर) कप्तान : सुनील गावस्कर (भारत), के. जी. ह्यूज (आस्ट्रेलिया)।

जीते 29, हारे 68, अनिर्णीत समाप्त 74।

172. द्वितीय टेस्ट : बंगलौर मे, सितम्बर 19, 20, 22, 23 और 24; अनिर्णीत समाप्त। आस्ट्रेलिया 333 और 3 विकेट पर 77; भारत 5 विकेट पर 457 पारी समाप्ति की घोषणा (वेंगसरकर 112, विश्वनाथ 161*) कप्तान : सुनील गावस्कर (भारत), के. जी. ह्यूज (आस्ट्रेलिया)।

जीते 59, हारे. 68, अनिर्णीत समाप्त 75।

173. तीसरा टेस्ट : कानपुर मे, अक्टूबर 2, 3, 4, 6 और

7; भारत की 153 रन से विजय। भारत 271 (डिमोक् 5 विकेट 99 रन पर) और 311 (डिमोक् 7 विकेट 67 रन पर); आस्ट्रेलिया 304 और 125, कप्तान : सुनील गावस्कर (भारत), के. जी. ह्यूज (आस्ट्रेलिया)।

जीते 30, हारे 68 अनिर्णीत समाप्त 75।

174. चौथा टेस्ट : दिल्ली में, अक्टूबर 13, 14, 16, 17 और 18 अनिर्णीत समाप्त। भारत 7 विकेट पर 510 और पारी समाप्ति की घोषणा (गावस्कर 115, विश्वनाथ 131, यशपाल शर्मा 100*) आस्ट्रेलिया 295 (कपिलदेव 5 विकेट 82 रन पर) और 413 कप्तान : सुनील गावस्कर (भारत) के. जी. ह्यूज (आस्ट्रेलिया)।

जीते 30, हारे 68, अनिर्णीत समाप्त 76।

175. पाचवां टेस्ट : कलकत्ता मे, अक्टूबर 26, 27, 28, 30 और 31; अनिर्णीत समाप्त। आस्ट्रेलिया 442 (येलेप 167, कपिल देव 5 विकेट 74 रन पर) और 6 विकेट पर 151 पारी समाप्ति की घोषणा; भारत 347 और 4 विकेट पर 200। कप्तान : सुनील गावस्कर (भारत), के. जी. ह्यूज (आस्ट्रेलिया)।

जीते 30, हारे 68, अनिर्णीत समाप्त 77।

176. छठा टेस्ट : बम्बई में, नवम्बर 3, 4, 6 और 7। भारत की एक पारी और 100 रन से विजय। भारत 8 विकेट पर 458 पारी समाप्ति की घोषणा (गावस्कर 123, किरमानी 101*) आस्ट्रेलिया 160 (दोशी 5 विकेट 43 रन पर) और 198। कप्तान : सुनील गावस्कर (भारत), के. जी. ह्यूज (आस्ट्रेलिया)।

जीते 31, हारे 68, अनिर्णीत समाप्त 77।

शृंखला मे कुल रन संख्या : भारत 64 विकेट पर 2979, औसत प्रति विकेट 46·54 रन; आस्ट्रेलिया 106 विकेट पर 3103, औसत प्रति विकेट 29 27 रन; भारत ने 2-0 से शृंखला जीती।

1979-80 पाकिस्तान के विरुद्ध

177. प्रथम टेस्ट : बेंगलोर मे, नवम्बर 21, 22, 24, 25 और 26, अनिर्णीत समाप्त। पाकिस्तान 9 विकेट पर 431 रन पारी समाप्ति की घोषणा (मुद्दसर नजर 126) और 2 विकेट पर 108। भारत 416। कप्तान : सुनील गावस्कर (भारत) आसिफ इकबाल (पाकिस्तान)।

जीते 31, हारे 68, अनिर्णीत समाप्त 78।

178. द्वितीय टेस्ट : नई दिल्ली में, दिसम्बर 4, 5, 6, 8 और 9। अनिर्णीत समाप्त। पाकिस्तान 273 (कपिलदेव 5 विकेट 58 रन पर) और 242; भारत 126 (सिकन्दर बख्त 8 विकेट 69 रन पर) और 6 विकेट पर 364 (वेंगसरकर 146, सिकन्दर बख्त 3 विकेट 121 रन पर)। कप्तान सुनील गावस्कर (भारत), आसिफ इकबाल (पाकिस्तान)।

जीते 31, हारे 68, अनिर्णीत समाप्त 79।

179. तीसरा टेस्ट : बम्बई में, दिसम्बर 16, 17, 18 और 20। भारत की 131 रन से विजय। भारत 334 (सिकन्दर बख्त 5 विकेट 55 रन पर, इकबाल कासिम 4 विकेट 135 रन पर) और 160 (इकबाल कासिम 6 विकेट 40 रन पर); पाकिस्तान 173 और 190। कप्तान : सुनील गावस्कर (भारत), आसिफ इकबाल (पाकिस्तान)।

जीते 32, हारे 68, अनिर्णीत समाप्त 79।

180. चौथा टेस्ट : कानपुर में, दिसम्बर 25, 26, 27, 29 और 30 अनिर्णीत समाप्त। भारत 162 (सिकन्दर बख्त 5 विकेट 56 रन पर, ऐहतशमुद्दीन 5 विकेट 47 रन पर) और 2 विकेट पर 193; पाकिस्तान 249 (कपिल देव 6 विकेट 63 रन पर)। कप्तान : सुनील गावस्कर (भारत), आसिफ इकबाल (पाकिस्तान)।

जीते 32, हारे 68, अनिर्णीत समाप्त 80।

181. पांचवां टेस्ट : मद्रास में, जनवरी 15, 16, 17, 19 और 20। भारत की 10 विकेट से विजय। पाकिस्तान 272 (कपिलदेव 4 विकेट 90 रन पर) और 233 (कपिल देव 7 विकेट 56 रन पर); भारत 430 (गावस्कर 166, इमरान खाँ 5 विकेट 114 रन पर) और बिना विकेट खोये 78। कप्तान : सुनील गावस्कर (भारत), आसिफ इकबाल (पाकिस्तान)।

जीते 33, हारे 68, अनिर्णीत समाप्त 80.

182. छठा टेस्ट : कलकत्ता में, जनवरी 29, 30, 31 फरवरी 2 और 3। अनिर्णीत समाप्त। भारत 331 और 205 (इमरान खाँ 5 विकेट 63 रन पर); पाकिस्तान 4 विकेट पर 272 पारी समाप्ति की घोषणा और छः विकेट पर 179। कप्तान : जी. आर. विश्वनाथ (भारत), आसिफ इकबाल (पाकिस्तान)।

जीते 33, हारे 68, अनिर्णीत समाप्त 81।

शृंखला में कुल रन संख्या : भारत 88 विकेट पर 2779, औसत प्रति विकेट 31·80 रन; पाकिस्तान 91 विकेट पर 2622, औसत प्रति विकेट 28·81 रन। भारत ने 2-0 से शृंखला जीती।

1980 स्वर्ण जयन्ति टेस्ट मैच, इंग्लैंड के विरुद्ध

183. बम्बई में, फरवरी में 15, 17, 18 और 19। इंग्लैंड की 10 विकेट से विजय। भारत 242 (बोथम 6 विकेट 58 रन पर) और 149 (बोथम 7 विकेट 48 रन पर); इंग्लैंड 296 (बोथम 114, घावरी 5 विकेट 52 रन पर) और बिना विकेट खोये 98। कप्तान : जी. आर. विश्वनाथ (भारत), जे. एम. ब्रियरली (इंग्लैंड)।

मैच में कुल रन संख्या : भारत 20 विकेट पर 391, औसत प्रति विकेट 19·55 रन, इंग्लैंड 10 विकेट पर 394, औसत प्रति विकेट 39·40 रन।

जीते 33, हारे 69, अनिर्णीत समाप्त 81।

1980-81 आस्ट्रेलिया के विरुद्ध

184. प्रथम टेस्ट : सिडनी में, जनवरी 2, 3, 4, 5 और 6। आस्ट्रेलिया की एक पारी और 4 रन से विजय। भारत 201 और 201; आस्ट्रेलिया 406 (जी. एस. चैपल 204, कपिल देव 5 विकेट 97 रन पर, घावरी 5 विकेट 107 रन पर)। कप्तान : जी. एस. चैपल (आस्ट्रेलिया), सुनील गावस्कर (भारत)।

जीते 33, हारे 70, अनिर्णीत समाप्त 81।

185. द्वितीय टेस्ट : एडिलेड में, जनवरी 23, 24, 25, 26 और 27 अनिर्णीत समाप्त। आस्ट्रेलिया 528 (वुड 125, ह्यूज 213) और 7 विकेट पर 221 पारी समाप्ति की घोषणा; भारत 419 (संदीप पाटिल 174) और 8 विकेट पर 135। कप्तान : जी. एस. चैपल (आस्ट्रेलिया), सुनील गावस्कर (भारत)।

जीते 33, हारे 70, अनिर्णीत समाप्त 82।

186. तीसरा टेस्ट : मेलबोर्न में, फरवरी 7, 8, 9, 10 और 11। भारत की 59 रन से विजय। भारत 237 (विश्वनाथ 114) और 324; आस्ट्रेलिया 419 (बोर्डर 124) और 83 (कपिल देव 5 विकेट 28 रन पर)। कप्तान : जी. एस. चैपल (आस्ट्रेलिया), सुनील गावस्कर (भारत)।

जीते 34, हारे 70 अनिर्णीत समाप्त 82।

शृंखला में कुल रन संख्या : आस्ट्रेलिया 47 विकेट पर 1657, औसत प्रति विकेट 35·25 रन; भारत 58 विकेट पर 1517, औसत प्रति विकेट 26·15 रन। दोनों टीमें एक-एक मैच जीत कर शृंखला में बराबर रहीं।

1981 न्यूजीलैंड के विरुद्ध

187. प्रथम टेस्ट : वैलिंगटन में, फरवरी 21, 22, 23, और 25। न्यूजीलैंड की 62 रन से विजय। न्यूजीलैंड 375 (जी. पी. हॉवर्थ 137) और 100; भारत 223 (कांस 5 विकेट 33 रन पर) और 190। कप्तान जी. पी. हॉवर्थ (न्यूजीलैंड), सुनील गावस्कर (भारत)।

जीते 34, हारे, 71, अनिर्णीत समाप्त।

188. द्वितीय टेस्ट: क्राइस्टचर्च मे, मार्च 6, 7, 9, 10 और 11। अनिर्णीत समाप्त। भारत 255 (हेडली 5 विकेट 47 रन पर); न्यूजीलैंड 5 विकेट पर 285 (जे. एफ. रीड 123)। कप्तान : जी. पी. हॉवर्थ (न्यूजीलैंड), सुनील गावस्कर (भारत)।

जीते 34, हारे 71, अनिर्णीत समाप्त 83।

189. तीसरा टेस्ट, ऑकलैंड में, मार्च 13, 14, 15, 17 और 18। अनिर्णीत समाप्त। भारत 238 और 284 (ब्रेसवेल 5 विकेट 75 रन पर); न्यूजीलैंड 366 (जे. जी. राइट 110, रवि शास्त्री 5 विकेट 125 रन पर) और 5 विकेट पर 95। कप्तान जी. पी. हॉवर्थ (न्यूजीलैंड), सुनील गावस्कर (भारत)।

जीते 34, हारे 71, अनिर्णीत समाप्त 84।

शृंखला में कुल रन संख्या : न्यूजीलैंड 40 विकेट पर 1222, औसत प्रति विकेट 30·55 रन; भारत 50 विकेट पर 1190 औसत प्रति विकेट 23·80। न्यूजीलैंड ने 1-0 से शृंखला जीती।

1981-82 इंग्लैंड के विरुद्ध

190. प्रथम टेस्ट : बम्बई में, नवम्बर 27, 28, 29 और दिसम्बर 1। भारत की 138 रन से विजय। भारत 179 और 227 (बोथम 5 विकेट 61 रन पर); इंग्लैंड 166 (दोशी 5 विकेट 39 रन पर) और 102 (कपिल देव 5 विकेट 70 रन पर, मदनलाल 5 विकेट 23 रन पर)। कप्तान : सुनील गावस्कर (भारत), के. डब्ल्यू. आर. फ्लेचर (इंग्लैंड)।

जीते 35, हारे 71, अनिर्णीत समाप्त 84।

191. द्वितीय टेस्ट : बैंगलौर मे, दिसम्बर 9, 10, 12, 13 और 14; अनिर्णीत समाप्त। इंग्लैंड 400 और 3 विकेट पर 174; भारत 428 (गावस्कर 172, लिवर 5 विकेट 100 रन पर)। कप्तान : सुनील गावस्कर (भारत), के. डब्ल्यू. आर. फ्लेचर (इंग्लैंड)।

जीते 35, हारे 71, अनिर्णीत समाप्त 85।

192. तीसरा टेस्ट : नई दिल्ली में, दिसम्बर 23, 24, 26, 27 और 28। अनिर्णीत समाप्त। इंग्लैड 9 विकेट पर 476 पारी समाप्ति की घोषणा (बॉयकॉट 105, तवारे 149, मदनलाल 5 विकेट 85 रन पर) और बिना विकेट खोये 68; भारत 487 (विश्वनाथ 107)। कप्तान : सुनील गावस्कर (भारत), के. डब्ल्यू आर. फ्लेचर (इंग्लैंड)।

जीते 35, हारे 71, अनिर्णीत समाप्त 86।

193 चौथा टेस्ट : कलकत्ता में, जनवरी 1, 2, 3, 5 और 6। अनिर्णीत समाप्त। इंग्लैंड 248 (कपिलदेव 6 विकेट 91 रन पर) 5 विकेट पर 265 पारी समाप्ति की घोषणा; भारत 208 और 3 विकेट पर 170। कप्तान : सुनील गावस्कर (भारत), के. डब्ल्यू. आर फ्लेचर (इंग्लैंड)।

जीते 35, हारे 71, अनिर्णीत समाप्त 87।

194. पांचवां टेस्ट : मद्रास में, जनवरी 13, 14, 15, 17 और 18। अनिर्णीत समाप्त। भारत 4 विकेट पर 481 पारी समाप्ति की घोषणा (विश्वनाथ 222, यशपाल शर्मा 140) और 3 विकेट पर 160, इंग्लैंड 328 (गूच 127)। कप्तान : सुनील गावस्कर (भारत), के. डब्ल्यू आर. फ्लेचर (इंग्लैंड)।

जीते 35, हारे 71, अनिर्णीत समाप्त 88।

195 छठा टेस्ट : कानपुर में, जनवरी 30, 31 फरवरी 1, 3 और 4। अनिर्णीत समाप्त। इंग्लैड 9 विकेट पर 378 और पारी समाप्ति की घोषणा (बोथम 142); भारत 7 विकेट पर 377 (कपिलदेव 116)। कप्तान : सुनील गावस्कर (भारत), के. डब्लू. आर. फ्लेचर (इंग्लैंड)।

जीते 35, हारे 71, अनिर्णीत समाप्त 89।

शृंखला में कुल रन संख्या : भारत 67 विकेट पर 2717, औसत प्रति विकेट 40.55 रन; इंग्लैंड 76 विकेट पर 2605, औसत प्रति विकेट 34.27 रन। भारत ने शृंखला 1—0 से जीती।

1982 इंग्लैंड के विरुद्ध

196. प्रथम टेस्ट : लार्ड्स में, जून 10, 11, 12, 14 और 15। इंग्लैंड की 7 विकेट से विजय। इंग्लैंड 433 (रैनडॉल 126, कपिलदेव 5 विकेट 125 रन पर) और 3 विकेट पर 67। भारत 128 (बॉथम 5 विकेट 46 रन पर) और 369 (वेंगसरकर 157, विलिस 6 विकेट 101 रन पर) कप्तान : बॉब विलिस (इंग्लैंड), सुनील गावस्कर (भारत)।

जीते 35, हारे 72, अनिर्णीत समाप्त 89।

197. द्वितीय टेस्ट : मेनचेस्टर में, जून 24, 25, 26, 28 और 29। अनिर्णीत समाप्त। इंग्लैंड 425 (बॉथम 128, दोशी 6 विकेट 102 रन पर); भारत 8 विकेट पर 379 (संदीप पाटिल 129)। कप्तान : बॉब विलिस (इंग्लैंड), सुनील गावस्कर (भारत)।

जीते 35, हारे 72, अनिर्णीत समाप्त 90।

198. तीसरा टेस्ट : ओवल में, जुलाई 8, 9, 10, 12 और 13। अनिर्णीत समाप्त। इंग्लैंड 594 (बोथम 208, लेम्ब 107), और 3 विकेट पर 191 पारी समाप्ति की घोषणा; भारत 410 और 3 विकेट पर 111।

जीते 35, हारे 72, अनिर्णीत समाप्त 91।

शृंखला में कुल रन संख्या : इंग्लैंड 36 विकेट पर 1710, औसत प्रति विकेट 47·50 रन; भारत 41 विकेट पर 1397, औसत प्रति विकेट 34·07 इंग्लैंड ने 1-0 से शृंखला जीती।

1982 श्रीलंका के विरुद्ध

199. एक ही टेस्ट : मद्रास मे, सितम्बर 17, 18, 19, 21 और 22 अनिर्णीत समाप्त। श्रीलंका 346 (डी. मेन्डिस 105, दोशी 5 विकेट 85 रन पर) और 394 (डी. मेनडिस 105, कपिल देव 5 विकेट 110 रन पर), भारत 6 विकेट पर 566 और पारी समाप्ति की घोषणा (गावस्कर 155, संदीप पाटिल 114) और 7 विकेट पर 135 (डिमेल 5 विकेट 68 रन पर) कप्तान : सुनील गावस्कर (भारत), बी. वर्णापुरा (श्रीलंका)।

जीते 35, हारे 72, अनिर्णीत समाप्त 92।

मैच में कुल रन संख्या : भारत 13 विकेट पर 701, औसत प्रति विकेट 53·92 रन; श्रीलंका 20 विकेट पर 720, औसत प्रति विकेट 37·00।

1982-83 पाकिस्तान के विरुद्ध

200. प्रथम टेस्ट : लाहौर में, दिसम्बर 10, 11, 12, 14 और 15। अनिर्णीत समाप्त। पाकिस्तान 485 (जहीर अब्बास 215, दोशी 5 विकेट 91 रन पर) और 1 विकेट पर 135 (मोहसिन खाँ 101), भारत 379 (मोहिन्दर अमरनाथ 109) कप्तान : इमरान खाँ (पाकिस्तान), सुनील गावस्कर (भारत)।

जीते 35, हारे 72, अनिर्णीत समाप्त 93।

201. द्वितीय टेस्ट : कराची में, दिसम्बर 23, 24, 25, 26 और 27। पाकिस्तान की एक पारी और 86 रन से विजय। भारत 169 (इमरान खाँ 3 विकेट 19 रन पर) और 197 (इमरान खां 8 विकेट 60 रन पर); पाकिस्तान 452 (जहीर अब्बास 186, मुद्दसर नजर 119, कपिल देव 5 विकेट 102 रन पर)। कप्तान : इमरान खां (पाकिस्तान), सुनील गावस्कर (भारत)।

जीते 35, हारे 73, अनिर्णीत समाप्त 93।

202. तीसरा टेस्ट : फैसलाबाद में, जनवरी 3, 4, 5, 7 और 8। पाकिस्तान की दस विकेट से विजय। भारत 372 (इमरान खाँ 6 विकेट 98 रन पर) 285 (गावस्कर 127, इमरान खाँ 5 विकेट 82 रन पर); पाकिस्तान 652 (जावेद मियांदाद 126, जहीर अब्बास 168, सलीम मलिक 107, इमरान खां 117, कपिल देव 7 विकेट 220 रन पर) और बिना विकेट खोये 10। कप्तान : इमरान खाँ (पाकिस्तान), सुनील गावस्कर (भारत)।

जीते 35, हारे 74, अनिर्णीत समाप्त 93।

203. चौथा टेस्ट : हैदराबाद में, जनवरी 15,16,17,19 और 20। पाकिस्तान की एक पारी और 119 रन से विजय। पाकिस्तान 3 विकेट पर 581 और पारी समाप्ति की घोषणा (मुद्दसर नजर 231, जावेद मियांदाद 280); भारत 189 (इमरान खाँ 6 विकेट 35 रन पर) और 273। कप्तान : इमरान खाँ (पाकिस्तान) सुनील गावस्कर (भारत)।

जीते 35, हारे 75, अनिर्णीत समाप्त 93।

204. पाचवां टेस्ट : लाहौर में, जनवरी 23, 24, 25, 27 और 28। अनिर्णीत समाप्त। पाकिस्तान 323 (मुद्दसर नजर 152, कपिलदेव 8 विकेट 85 रन पर); भारत 3 विकेट पर 235 (मोहिन्दर अमरनाथ 102)। कप्तान : इमरान खाँ (पाकिस्तान), सुनील गावस्कर (भारत)।

जीते 35, हारे 75, अनिर्णीत समाप्त 94।

205 छठा टेस्ट : कराची में, जनवरी 30, 31 फरवरी 1, 2 और 4। अनिर्णीत समाप्त। भारत 8 विकेट पर 393 और पारी समाप्ति की घोषणा (रवि शास्त्री 128) और 2 विकेट पर 224 (मोहिन्दर अमरनाथ 103); पाकिस्तान 6 विकेट पर 420 पारी समाप्ति की घोषणा (मुद्दसर नजर 152)। कप्तान : इमरान खाँ (पाकिस्तान), सुनील गावस्कर (भारत)।

जीते 35, हारे 75, अनिर्णीत समाप्त 95।

— श्रृंखला में कुल रन संख्या : पाकिस्तान 50 विकेट पर 3058, औसत प्रति विकेट 61.16 रन; भारत 83 विकेट पर 2717, औसत प्रति विकेट 32.73 रन। पाकिस्तान ने 3—0 से श्रृंखला जीती।

1983 वेस्ट इंडीज के विरुद्ध

206. प्रथम टेस्ट : किंग्स्टन में, फरवरी 23, 24, 25 27 और 28। वेस्ट इंडीज की चार विकेट से विजय। भारत 251 और 174 (रावटस् 5 विकेट 39 रन पर); वेस्टइंडीज 254 और 6 विकेट पर 173। कप्तान : सी. एच. लॉयड (वेस्टइंडीज), कपिलदेव (भारत)।

जीते 35, हारे 76, अनिर्णीत समाप्त 95।

207. द्वितीय टेस्ट : पोर्ट ऑफ स्पेन में, मार्च 11, 12, 13, 15 और 16। अनिर्णीत समाप्त। भारत 175 (मार्शल 5 विकेट 37 रन पर) और 7 विकेट पर 469 (मोहिन्दर अमरनाथ 117, कपिलदेव 100); वेस्टइंडीज 394 (गोम्स 123, लॉयड 143)। कप्तान : सी.एच. लॉयड (वेस्टइंडीज), कपिलदेव (भारत)।

जीते 35, हारे 76, अनिर्णीत समाप्त 96।

208. तीसरा टेस्ट : जॉर्ज टाउन में, मार्च 31 अप्रेल 2, 3, 4 और 5। अनिर्णीत समाप्त। वेस्ट इंडीज 470 (रिचर्डस् 109); भारत 3 विकेट पर 284 (गावस्कर 147)। कप्तान : सी. एच. लॉयड (वेस्ट इंडीज), कपिलदेव (भारत)।

जीते 35, हारे 76, अनिर्णीत समाप्त 97।

209. चौथा टेस्ट : ब्रिज टाउन में, अप्रेल 15, 16, 17, 19 और 20। वेस्टइंडीज की 10 विकेट से विजय। भारत 209 और 277; वेस्ट इंडीज 486 (लोगी 130) और बिना विकेट खोये 1 रन। कप्तान : सी. एच. लॉयड (वेस्टइंडीज), कपिलदेव (भारत)।

जीते 35, हारे 77 अनिर्णीत समाप्त 97।

210. पांचवां टेस्ट : ऐन्टिग्यू में, अप्रेल 28, 29, 30 मई 2 और 3। अनिर्णीत समाप्त। भारत 457 (रवि शास्त्री 102) और 5 विकेट पर 247 (मोहिन्दर अमरनाथ 116); वेस्ट इंडीज 9 विकेट पर 550 पारी समाप्ति की घोषणा (ग्रिनिज 154, हेन्स 136, डूजॉन 110, लॉयड 106)। कप्तान : सी. एच. लॉयड (वेस्ट इंडीज), कपिलदेव (भारत)।

जीते 35, हारे 77, अनिर्णीत समाप्त 98।

श्रृंखला में कुल रन संख्या : वेस्ट इंडीज 55 विकेट पर 2328, औसत प्रति विकेट 42 32 रन; भारत 75 विकेट पर 2543, औसत प्रति विकेट 33.90 रन। वेस्ट इंडीज ने 2—0 से श्रृंखला जीती।

1983-84 पाकिस्तान के विरुद्ध

211. प्रथम टेस्ट : बेंगलोर में, सितम्बर 14, 15, 17, 18 और 19। अनिर्णीत समाप्त। भारत 275 (ताहिर नक्काश 5 विकेट 77 रन पर) और बिना विकेट खोये 176 (गावस्कर 103), पाकिस्तान 288 (कपिलदेव 5 विकेट 68 रन पर)। कप्तान : कपिलदेव (भारत), जहीर अब्बास (पाकिस्तान)।

जीते 35, हारे 77, अनिर्णीत समाप्त 99।

212. द्वितीय टेस्ट : जालन्धर में, सितम्बर 24, 25, 26, 27 और 29। अनिर्णीत समाप्त। पाकिस्तान 337 और बिना विकेट खोये 16; भारत 374 (ए. डी. गायकवाड़ 201)। कप्तान : कपिलदेव (भारत), जहीर अब्बास (पाकिस्तान)।

जीते 35, हारे 77, अनिर्णीत समाप्त 100।

213. तीसरा टेस्ट : नागपुर में, अक्टूबर 5, 6, 8, 9, और 10। अनिर्णीत समाप्त। भारत 245 और 8 विकेट पर 262 पारी समाप्ति की घोषणा (मोहम्मद नजीर 5 विकेट 72 रन पर) पाकिस्तान 322 (रवि शास्त्री 5 विकेट 75 रन पर) और 1 विकेट पर 42। कप्तान : कपिलदेव (भारत), जहीर अब्बास (पाकिस्तान)

जीते 35, हारे 77, अनिर्णीत समाप्त 101।

श्रृंखला में कुल रन संख्या : भारत 38 विकेट पर 1332, औसत प्रति विकेट 35 05 रन; पाकिस्तान 31 विकेट पर 1005, औसत प्रति विकेट 32·41 श्रृंखला अनिर्णीत समाप्त हुई।

1983-84 वेस्ट इंडीज के विरुद्ध

214. प्रथम टेस्ट : कानपुर में, अक्टूबर 21, 22, 23, और 25। वेस्ट इंडीज की एक पारी और 83 रन से विजय। वेस्ट इंडीज 454 (ग्रीनिज 194) भारत 207 और 164। कप्तान : कपिलदेव (भारत), सी. एच. लायड (वेस्टइंडीज)

जीते 35, हारे 78, अनिर्णीत समाप्त 101।

215. द्वितीय टेस्ट : नई दिल्ली में, अक्टूबर 29, 30, नवम्बर 1, 2 और 3। अनिर्णीत समाप्त।

भारत 464 (गावस्कर 121, वेंगसरकर 159) और 233 वेस्ट इंडीज 384 (लायड 103, कपिल देव 6 विकेट 77 रन पर) और 2 विकेट पर 120। कप्तान : कपिल देव (भारत), सी. एच. लायड (वेस्ट इंडीज)

जीते 35, हारे 78, अनिर्णीत समाप्त 102।

216. तीसरा टेस्ट : अहमदाबाद में, नवम्बर 12, 13, 14, और 16; वेस्ट इंडीज की 138 रन से विजय। वेस्ट इंडीज 281 (कपिलदेव 1 विकेट 52 रन पर) और 201 (कपिल देव 9 विकेट 83 रन पर) भारत 241 (डेनियल 5 विकेट 39 रन पर); और 103। कप्तान : कपिल देव (भारत), सी. एच लायड (वेस्ट इंडीज)

जीते 35, हारे 79 अनिर्णीत समाप्त 102।

217. चौथा टेस्ट : बम्बई में, नवम्बर 24, 26, 27, 28: और 29। अनिर्णीत समाप्त। भारत 463 (वेंगसरकर 100, होल्डिंग 5 विकेट 102 रन पर) और 5 विकेट पर 173 पारी समाप्ति की घोषणा। वेस्ट इंडीज 393 (रिचर्ड्स 120, शिव लाल यादव 5 विकेट 131 रन पर) और 4 विकेट पर 104। कप्तान : कपिल देव (भारत) सी. एच लायड (वेस्ट इंडीज)।

जीते 35, हारे 79 अनिर्णीत समाप्त 103।

218. पांचवां टेस्ट : कलकत्ता में, दिसम्बर 10, 11, 12 और 14 वेस्ट इंडीज की एक पारी और 46 रन से विजय। भारत 241 और 90 (मार्शल 6 विकेट 37 रन पर); वेस्ट इंडीज 377 (लायड 161 अपराजित पारी) कप्तान : कपिल देव (भारत), सी. एच. लायड (वेस्ट इंडीज)।

जीते 35, हारे 80 अनिर्णीत समाप्त 103।

219. छठा टेस्ट : मद्रास में दिसम्बर 24, 26, 27, 28 और 29। अनिर्णीत समाप्त। वेस्ट इंडीज 313 और 1 विकेट पर 64; भारत 8 विकेट पर 451 पारी समाप्ति की घोषणा (गावस्कर 236, अपराजित पारी मार्शल 5 विकेट 72 रन पर) कप्तान : कपिल देव (भारत), सी. एच. लायड (वेस्ट इंडीज)

जीते 35, हारे 80, अनिर्णीत समाप्त 104।

शृंखला में कुल रन संख्या : भारत 103 विकेट पर 2830, औसत प्रति विकेट 27·47 रन, वेस्ट इंडीज 77 विकेट पर 2691, औसत प्रति विकेट 34 94 रन। वेस्ट इंडीज ने 3-0 से शृंखला जीती।

1984 पाकिस्तान के विरुद्ध

220. प्रथम टेस्ट : लाहौर में, अक्टूबर 17, 18, 19, 20 और 21। अनिर्णीत समाप्त । पाकिस्तान 9 विकेट पर 428 पारी समाप्ति की घोषणा (जहीर अब्बास 168) भारत 156 (अजीम हफीज 6 विकेट 46 रन पर) और 6 विकेट पर 371 (मोहिन्दर अमरनाथ 101)

जीते 35, हारे 80, अनिर्णीत समाप्त 105 ।

221. द्वितीय टेस्ट : फैसलाबाद, अक्टूबर 24, 25, 26, 28 और 29 । अनिर्णीत समाप्त । भारत 500 (रवि शास्त्री 139, संदीप पाटिल 127) पाकिस्तान 6 विकेट पर 674 (कासिम उमर 210, मुद्दसर नजर 199, सलीम मलिक 102)

जीते 35, हारे 80 अनिर्णीत समाप्त 106 ।

शृंखला मे कुल रन संख्या : पाकिस्तान 15 विकेट पर 1102, औसत प्रति विकेट 73·46 रन भारत 26 विकेट पर 1027, औसत प्रति विकेट 39 50 रन । शृंखला अनिर्णीत समाप्त हुई ।

1984-85 इंग्लैंड के विरुद्ध

222. प्रथम टेस्ट : बम्बई में, नवम्बर 28, 29 दिसम्बर 1, 2 और 3 भारत की 8 विकेट से विजय । इंग्लैंड 195 (एल. शिवरामकृष्णन 6 विकेट 64 रन पर) और 317 (एम. डब्लू गेटिंग 136, शिवराम कृष्णन 6 विकेट 117 पर) भारत 8 विकेट पर 465 पारी समाप्ति की घोषणा) रविशास्त्री 142, किरमानी 102) और 2 विकेट पर 52 ।

जीते 36, हारे 80, अनिर्णीत समाप्त 106 ।

223. द्वितीय टेस्ट : नई दिल्ली में, दिसम्बर 12, 13, 15, 16, और 17 इंग्लैंड की 8 विकेट से विजय । भारत 307 और 235 । इंग्लैंड 418 (आर. टी. रोबिन्सन 160, शिवराम कृष्णन 6 विकेट 99 रन पर) और 2 विकेट पर 127 ।

जीते 36, हारे 81, अनिर्णीत समाप्त 106 ।

224. तीसरा टेस्ट : कलकत्ता में, दिसम्बर 31, जनवरी 1, 3, 4, और 5 । अनिर्णीत समाप्त । भारत 7 विकेट पर 437 पारी समाप्ति की घोषणा (रवि शास्त्री 111, अजहरुद्दीन 110) और 1 विकेट पर 29. इंग्लैंड 276 ।

जीते 36, हारे 81, अनिर्णीत समाप्त 107 ।

225 चौथा टेस्ट : मद्रास में, जनवरी 13, 14, 15, 17 और 18, इंग्लैंड की 9 विकेट से विजय। भारत 272 (एन. ए. फोस्टर 6 विकेट 104 रन पर) और 412 (अजहरुद्दीन 105, एन. ए. फोस्टर 5 विकेट 59 रन पर) इंग्लैंड 7 विकेट पर 652 और पारी समाप्ति की घोषणा (एम. डब्लू. गेटिंग 207, जी. ए. फाउलर 201) और 1 विकेट पर 35।

जीते 36, हारे 82, अनिर्णीत समाप्त 107।

226. पांचवा टेस्ट : कानपुर में, जनवरी 31, फरवरी 1, 3, 4 और 5; अनिर्णीत समाप्त। भारत 553 (अजहरुद्दीन 122, वेंगसरकर 137) और 1 विकेट पर 97 और पारी समाप्ति की घोषणा। इंग्लैंड 417 और बिना विकेट खोये 91।

जीते 36, हारे 82, अनिर्णीत समाप्त 108।

शृंखला मे कुल रन संख्या : भारत 69 विकेट पर 2859, औसत प्रति विकेट 41·43 रन; इंग्लैंड 60 विकेट पर 2528, औसत प्रति विकेट 42·13 इंग्लैंड ने 2-1 से शृंखला जीती।

1985 श्री लंका के विरुद्ध

227. प्रथम टेस्ट, कोलम्बो में, अगस्त 30, 31 सितम्बर 1, 3 और 4; अनिर्णीत समाप्त। भारत 218 (डिमेल 5 विकेट 64 रन पर) और 251 (रत्नायके 6 विकेट 85 रन पर) श्री लंका 347 (अर्जुन रनटूंगे 111, आर. मधुगले 103) और 4 विकेट पर 61।

जीते 36, हारे 82, अनिर्णीत समाप्त 109।

228. द्वितीय टेस्ट : कोलम्बों में, सितम्बर 6, 7, 8, 10 और 11; 1985। श्री लंका की 149 रन से विजय। श्री लंका 385 (अमल सिल्वा *111, चेतन शर्मा 5 विकेट 118 रन पर)* और 3 विकेट पर 206 और पारी समाप्ति की घोषणा। भारत 244 और 198 (रमेश रतनायके 5 विकेट 49 रन पर)।

जीते 36, हारे 83, अनिर्णीत समाप्त 109।

229. तीसरा टेस्ट : केन्डी में, सितम्बर 14, 15, 16, 18 और 19, 1985। अनिर्णीत समाप्त। भारत 249 (हुगामा 5 विकेट 52 रन पर) और 5 विकेट पर 325 और पारी समाप्ति की घोषणा (मोहिन्दर अमरनाथ 116) श्री लका 198 और 7 विकेट पर 307 (दिलीप मेन्डिस 124, रॉय डायस 106)।

जीते 36, हारे 83, अनिर्णीत समाप्त 110।

शृंखला में कुल रन संख्या : श्री लंका 44 विकेट पर 1504, औसत प्रति विकेट 34·18 रन; भारत 55 विकेट पर 1485, औसत प्रति विकेट 27.00 रन। श्री लंका ने 1-0 से शृंखला जीती।

1985-86 आस्ट्रेलिया के विरुद्ध

230. प्रथम टेस्ट : एडिलेड में, दिसम्बर 13, 14, 15, 16 और 17, 1985। अनिर्णीत समाप्त। आस्ट्रेलिया 381 (डी. बून 123, जी. रिची 128, कपिलदेव 8 विकेट 106 रन पर) और बिना विकेट खोये 17 रन। भारत 520 (गावस्कर 166)।

जीते 36, हारे 83, अनिर्णीत समाप्त 111।

231. द्वितीय टेस्ट : मेलबोर्न मे, दिसम्बर 26, 27, 28, 29 और 30। अनिर्णीत समाप्त। आस्ट्रेलिया 262 (जी. मेथ्यूज 100 अपराजित पारी) और 308 (बोर्डर 163); भारत 445 और 2 विकेट पर 59।

जीते 36, हारे 83, अनिर्णीत समाप्त 112।

232. तीसरा टेस्ट : सिडनी में, जनवरी 2,3,4, 5 और 6, 1986। अनिर्णीत समाप्त। भारत 4 विकेट पर 600 और पारी समाप्ति की घोषणा (गावस्कर 172, श्रीकान्त 116, मोहिन्दर अमरनाथ 138); आस्ट्रेलिया 396 (डी. बून 131, शिवलाल यादव 5 विकेट 99 रन पर) और 6 विकेट पर 119।

जीते 36, हारे 83, अनिर्णीत समाप्त 113।

शृंखला मे कुल रन संख्या : आस्ट्रेलिया 46 विकेट पर 1483, औसत प्रति विकेट 32.23 रन। भारत 26 विकेट पर 1624, औसत प्रति विकेट 62.46 रन।

भारत वि. इंग्लैंड

खेले गये टेस्ट मैच	72
भारत ने जीते	9
इंग्लैंड ने जीते	30
अनिर्णीत समाप्त	3६

भारत द्वारा बनाये गये कुल रन 32846;
1175 विकिटों पर; औसत प्रति विकेट 27.954045।
इंग्लैंड द्वारा बनाये गये कुल रन 33992;
907 विकिटों पर; औसत प्रति विकेट 37.477398।

भारत वि. आस्ट्रेलिया

खेले गये टेस्ट मैच	42
भारत ने जीते	8
आस्ट्रेलिया ने जीते	20
अनिर्णीत समाप्त	14

भारत द्वारा बनाये गये कुल रन 19755;
700 विकिटों पर; औसत प्रति विकेट 28.221428
आस्ट्रेलिया द्वारा बनाये गये कुल रन 20686;
639 विकिटों पर; औसत प्रति विकेट 35.372456।

भारत वि. पाकिस्तान

खेले गये टेस्ट मैच	35
भारत ने जीते	4
पाकिस्तान ने जीते	6
अनिर्णीत समाप्त	25

भारत द्वारा बनाये गये कुल रन 15104;
449 विकिटों पर; औसत प्रति विकेट 33.639198।
पाकिस्तान द्वारा बनाये गये कुल रन 16209;
442 विकिटों पर; औसत प्रति विकेट 36.671945।

भारत वि. वेस्ट इंडीज

खेले गये टेस्ट मैच	54
भारत ने जीते	5
वेस्ट इंडीज ने जीते	22
अनिर्णीत समाप्त	27

भारत द्वारा बनाये गये कुल रन 27753;
888 विकेटों पर, औसत प्रति विकेट 31·253378 रन।
वेस्ट इंडीज द्वारा बनाये गये कुल रन 28835;
716 विकटों पर, औसत प्रति विकेट 40·272346. रन।

भारत वि. न्यूजीलैंड

खेले गये टेस्ट मैच	25
भारत ने जीते	10
न्यूजीलैंड ने जीते	4
अनिर्णीत समाप्त	11

भारत द्वारा बनाये गये कुल रन 12043;
347 विकेटों पर, औसत प्रति विकेट 34·706C51 रन।
न्यूजीलैंड द्वारा बनाये कुल रन 10998;
406 विकटों पर, औसत प्रति विकेट 27·088669 रन।

भारत वि. श्री लंका

खेले गये टेस्ट मैच	4
भारत ने जीते	शून्य
श्री लंका ने जीते	1
अनिर्णीत समाप्त	3

भारत द्वारा बनाये गये कुल रन 2186;
68 विकेटों पर, औसत प्रति विकेट 32·147058 रन।
श्री लंका द्वारा बनाये गये कुल रन 2244; 64 विकेटों पर
औसत प्रति विकेट 35·0625
भारत द्वारा खेले गये कुल टेस्ट मैच 232
जीते 36, हारे 83, अनिर्णीत समाप्त 113
भारत द्वारा बनाये गये कुल रन 109687; 3627 विकेटों पर;
औसत प्रति विकेट 30·241797 रन
भारत के विरुद्ध बनाये गये कुल रन 112961; 3174 विकटों पर;
औसत प्रति विकेट 35·590455 रन।

औसत बल्लेबाजी

नाम	टेस्ट	पारी	अपराजित	उच्चतम स्कोर	कुल रन संख्या	शतक	अर्द्ध शतक	औसत	कैच	स्टम्प
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
शोधन, डी. एच.	3	4	1	110	181	1	—	60.33	1	—
रामास्वामी, सी.	2	4	1	60	170	—	1	56.66	—	—
अजहरूद्दीन	9	14	2	122	644	3	2	55.33	8	—
गावस्कर, सुनील	112	195	16	236*	9191	32	39	51.34	96	—
आप्टे, एम. एल.	7	13	2	163*	542	1	3	49.27	2	—
मर्चेंट, विजय	10	18	0	154	859	3	3	47.72	7	—
हजारे, विजय	30	52	6	164*	2192	7	9	47.65	11	—
मोदी, आर. एस.	10	17	1	112	736	1	6	46.00	3	—
अमरनाथ, मोहिन्दर	54	91	9	138	3680	10	20	44.87	39	—
दिलावर हुसैन	3	6	0	59	254	—	3	42.33	6	1
उमरीगर, पी. आर.	59	94	8	223	3631	12	13	42.22	33	—

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
यादवेन्द्रसिंह, पटियाला	1	2	0	60	84	—	1	42.00	2	—
विश्वनाथ, जी. आर.	91	155	10	222	6080	14	35	41,24	62	—
सरदेसाई, डी. एन.	30	55	4	212	2001	5	10	39,23	4	—
माञ्जरेकर, वी. एल.	55	92	10	189*	3208	7	11	39,12	19	2
वेंगसरकर, डी. बी.	82	134	14	159*	4635	9	26	38.62	57	—
पाटिल, संदीप	29	47	4	174	1588	4	7	36,93	11	—
शास्त्री, रवि	40	61	8	142	1924	5	8	36.30	17	—
बोर्डे, सी. जी.	55	97	11	177*	3061	5	15	35.59	37	—
राय, प्रनव	2	3	1	60*	71	—	1	35.50	1	—
पटौदी, मंसूर अली	46	83	3	203*	2793	6	16	34.91	27	—
श्रीकान्त, के.	14	23	1	116	766	1	4	34.82	8	—
शर्मा, यशपाल	37	59	11	140	1606	2	9	33.45	15	—
कुन्दरन, बी. के.	18	34	4	192	981	2	3	32.70	23	7
राय, पंकज	43	79	4	173	2442	5	9	32.56	16	—
फडकर, डी. जी.	31	45	7	123	1229	2	8	32.34	21	—
मुश्ताक अली	11	20	1	112	612	2	3	32.21	7	—
कॉन्ट्रैक्टर, एन. जे.	31	52	1	108	1611	1	11	31.58	18	—

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
चौहान, चेतन	40	68	2	97	2084	—	16	31.57	38	—
मांकड, वी. एम.	44	72	5	231	2109	5	6	31.47	33	—
हनुमन्तसिंह	14	24	2	105	686	1	5	31.18	11	—
अधिकारी, हेमू	21	36	8	114*	872	1	4	31.14	8	—
इंजिनियर, एफ. एम.	46	87	3	121	2611	2	16	31.08	66	16
वाडेकर, ए. एल.	37	71	3	143	2113	1	14	31.07	46	—
जयसिम्हा, एम. एल.	39	71	4	129	2056	3	11	30.68	17	—
सन्धू, बी. एस.	8	11	4	71	214	—	2	30.57	2	—
अमरनाथ, सुरेन्द्र	10	18	0	124	550	1	3	30.55	4	—
कपिल देव	74	109	8	126*	3049	3	17	30.18	31	—
गायकवाड, ऐ. डी.	40	70	4	201	1985	2	8	30.07	15	—
पटेल, बी. पी.	21	38	5	115*	972	1	5	29.45	17	—
शर्मा, चेतन	10	12	6	54	175	—	1	29.16	1	—
मूर्ती, आर. एफ.	26	48	4	99	1263	—	9	28.70	26	—
मनोज प्रभाकर	2	4	1	35*	86	—	—	28.66	—	—
किरपाल सिंह	14	20	5	100*	422	1	2	28.15	4	—
गुप्ते, बी. पी.	3	3	2	17*	28	—	—	28.00	—	—

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
कनितकर, एच. एस.	2	4	0	65	111	—	1	27.75	—	—
कैनी, आर. बी.	5	10	1	62	245	—	3	27.22	1	—
किरमानी, सैयद	88	124	22	102	2759	2	12	27.04	159	38
नाडमल, जे.	3	5	1	43	108	—	—	27.00	—	—
राजपूत, लालचन्द.	2	4	—	61	105	—	1	26.25	1	—
नादकर्णी, आर. जी.	41	67	12	122	1414	1	7	25.70	22	—
सोलकर, ई. डी.	27	48	6	102	1068	1	6	25.42	53	—
मांकड़, अशोक	22	42	3	97	991	—	6	25.41	12	—
मेहरा, विजय	8	14	1	62	329	—	2	25.30	1	—
मल्होत्रा, अशोक	7	10	1	72*	266	—	1	25.11	2	—
सलीम दुर्रानी	29	50	2	104	1202	1	7	25.04	14	—
नायडू, सी. के.	7	14	0	81	350	—	2	25.00	4	—
रामचन्द, जी. एस.	33	53	5	109	1180	2	5	24.58	20	—
अमरनाथ, एल.	24	40	4	118	878	1	3	24.38	13	—
श्री निवासन, टी. ई.	1	2	—	29	48	—	—	24.00	—	—
बेग, ए. ए.	10	18	—	112	428	1	2	23.77	6	—
नायक, सुधीर	3	6	—	77	141	—	1	23.50	—	—

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
अरुण लाल	4	7	—	63	164	—	2	23.42	5	—
मदन लाल	38	60	16	74	1000	—	5	22.72	15	—
विन्नी, रोजर	21	33	3	83*	675	—	4	22.50	8	—
अमर सिंह	7	14	1	51	292	—	1	22.46	3	—
लाल सिंह	1	2	—	29	44	—	—	22.00	1	—
गोपी नाथ	8	12	1	50*	242	—	1	22.00	2	—
गड़करी	6	10	4	50*	129	—	1	21.50	6	—
गावरी	39	57	14	86	913	—	2	21.23	16	—
इब्राहिम	4	8	—	85	169	—	1	21.12	—	—
आबिद अली	29	53	3	81	1018	—	6	20.36	32	—
परकार, आर. डी.	2	4	—	35	80	—	—	20.00	—	—
भण्डारी, प्रकाश	3	4	—	39	77	—	—	19.25	1	—
सुब्रमणियम	9	15	1	75	263	—	2	18.78	9	—
शर्मा, पार्थसारथी	5	10	—	54	187	—	1	18.70	1	—
हर्डीकर	2	4	1	32*	56	—	—	18.66	3	—
गायकवाड, डी. के.	11	20	1	52	350	—	1	18.42	5	—
यजुर्वेन्द्र सिंह	4	7	1	43*	109	—	—	18.16	11	—

1	2	3	14	5	6	7	8	9	10	11
गोपालन	1	2	1	11*	18	—	—	18.00	3	—
कोल्हा	2	4	—	31	69	—	—	17.25	2	—
वजीर अली	7	14	—	42	237	—	—	16.92	1	—
सोहनी	4	7	2	29*	83	—	—	16.60	2	—
पंजाबी	5	10	—	33	164	—	—	16.40	5	—
शिवराम कृष्णन एल.	9	9	1	25	130	—	—	16.28	8	—
शिवलाल यादव	26	32	10	43	355	—	—	16.14	9	—
वाका जिलानी	1	2	1	12	16	—	—	16.00	—	—
कारदार, ए. एच.	3	5	—	43	80	—	—	16.00	1	—
मिलखा सिंह	4	6	—	35	92	—	—	15.33	2	—
घोरपडे, जे. एम.	8	15	—	41	229	—	—	15.26	4	—
हिन्डलेकर	4	7	2	26	71	—	—	14.20	3	—
शिंदे	7	11	5	14	85	—	—	14.16	—	—
पाटनकर	1	2	1	13	14	—	—	14.00	3	1
गडोतरा	2	4	—	18	54	—	—	13.50	1	—
देसाई आर. बी.	28	44	13	85	418	—	1	13.48	9	—
सरवटे	9	17	1	37	201	—	—	13.00	—	—

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
रायसिंह	1	2	—	24	26	—	—	13.00	—	—
नवजोत सिंधु	2	3	—	20	39	—	—	13.00	1	—
रमेश सक्सेना	1	2	—	16	25	—	—	12.50	—	—
डिवेचा, आर. वी.	5	5	—	26	60	—	—	12.00	5	—
शर्मा, गोपाल	2	2	1	10*	12	—	—	12.00	1	—
पी. सेन	14	18	4	25	165	—	—	11.78	20	11
वेन्कटराघवन	57	76	12	64	748	—	2	11.68	44	—
प्रसन्ना, ई. ए. एस.	49	84	20	37	735	—	—	11.48	18	—
आजाद, कीर्ति	7	12	—	24	135	—	—	11.25	3	—
गुल मोहम्मद	8	15	—	34	166	—	—	11.06	3	—
पटौदी, इफ्तिकार अली	3	5	—	22	55	—	—	11.00	—	—
गायकवाड़, एच. जी.	1	2	—	14	22	—	—	11.00	—	—
जोशी, पी. जी.	12	20	1	52*	207	—	1	10.89	18	—
नवले, जे. जी.	2	4	—	13	42	—	—	10.50	1	—
सुरेन्द्र नाथ	11	20	7	27	136	—	—	10.46	4	—
तम्हाने	21	27	5	54*	225	—	1	10.22	35	16
पालिया	2	4	1	16	29	—	—	9.66	—	—

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
मंत्री, एम. के.	4	8	1	39	67	—	—	9.57	8	1
जय, एल. पी.	1	2	—	19	19	—	—	9.50	—	—
नायक, एस. वी.	2	3	1	11	19	—	—	9.50	1	—
रेड्डी, बी.	4	5	1	21	38	—	—	9.50	9	2
नरसिम्हा राव	4	6	1	20*	46	—	—	9.20	8	—
नायडू, सी. एस.	11	19	3	36	147	—	—	9.18	3	—
वेदी, बी. एस.	67	101	28	50*	656	—	1	8.98	26	—
किशन चन्द	5	10	—	44	89	—	—	8.90	1	—
गुलाम अहमद	22	31	9	50	192	—	1	8.72	11	—
अमीर इलाही	1	2	—	13	17	—	—	8.50	—	—
इन्दरजीत सिंह जी	4	7	1	23	51	—	—	8.50	6	3
विजय नगरम् एम. के.	3	6	2	19*	33	—	—	8.25	1	—
नजीर अली	2	4	—	13	30	—	—	7.50	—	—
आप्टे, ए. एल.	1	2	—	8	15	—	—	7.50	—	—
रिगे, एम. आर.	1	2	—	15	15	—	—	7.50	1	—
न्यालचन्द	1	2	1	6*	7	—	—	7.00	—	—
मोहम्मद निसार	6	11	3	14	55	—	—	6.87	2	—

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
रंजने	7	9	3	16	40	—	—	6.66	1	—
बनर्जी, एस. एन.	1	2	0	8	13	—	—	6.50	—	—
गुप्ते, सुभाष	36	42	13	21	183	—	—	6.31	14	—
विश्वनाथ, एस	3	5	—	20	31	—	—	6.20	11	—
राजेन्द्र पाल	1	2	1	3*	6	—	—	6.00	—	—
जहांगीर खाँ	4	7	—	13	39	—	—	5.57	4	—
रांगणेकर	3	6	—	18	33	—	—	5.50	1	—
गार्ड, गुलाम	2	2	—	7	11	—	—	5.50	2	—
कृष्णा मूर्ति	5	6	—	20	33	—	—	5.50	7	1
मुदैया, वी. एम.	2	3	1	11	11	—	—	5.50	—	—
नरिन्दर सिंह	15	18	6	15	61	—	—	5.08	4	—
[illegible], ए. एम.	1	2	—	9	10	—	—	5.00	—	—
[illegible]	1	1	—	5	5	—	—	5.00	—	—
[illegible]	1	2	—	6	10	—	—	5.00	—	—
[illegible]	33	38	10	20	129	—	—	4.60	10	—
[illegible]	1	2	—	8	9	—	—	4.50	—	—
[illegible]	4	8	5	7	13	—	—	4.33	—	—

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
फड़णीस	58	80	39	22	167	—	—	4.07	25	—
गरदार, गुलाम	1	2	—	6	7	—	—	3.50	1	—
गुहा, एस.	4	7	2	6	17	—	—	3.40	2	—
ईरानी, जे. के.	2	3	2	2*	3	—	—	3.00	2	1
चौधरी, एन. आर.	2	2	1	3*	3	—	—	3.00	—	—
कुमार, वी. वी.	2	2	—	6	6	—	—	3.00	2	—
भट्ट, रघुराम	2	3	1	6	6	—	—	3.00	—	—
पटेल, जे. एम.	7	10	1	12	25	—	—	2.77	2	—
रंगाचारी	4	6	3	8*	8	—	—	2.66	—	—
तारापोर, के. के.	1	1	—	2	2	—	—	2.00	—	—
पूर, एम. एस.	1	2	—	3	3	—	—	1.50	—	—
रामजी, एस.	1	2	—	1	1	—	—	0.50	1	—
प्रमथा, डी. डी.	2	2	—	1	1	—	—	0.50	—	—
बनर्जी, एस. ए.	1	1	—	0	0	—	—	—	3	—
जेम्मर, टी. ए.	2	1	—	0	0	—	—	—	—	—
बाका, इ. एस.	2	1	1	2*	.2	—	—	—	-2	-1

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
सुन्दरम	2	1	1	3*	3	—	—	—	—	—
मेहरोमजी	1	1	1	0*	0	—	—	—	1	—
जमशेदजी	1	2	2	4*	5	—	—	—	2	—
पाटिल, एस. आर.	1	1	1	14*	14	—	—	—	1	—
दानी एच. टी.	1		बल्लेबाजी नहीं की			—	—	—	1	—
शुक्ल, आर.	1		बल्लेबाजी नहीं की			—	—	—	—	—
राजेन्द्रनाथ	1		बल्लेबाजी नहीं की			—	—	—	—	4
स्वामी, वी. एन.	1		बल्लेबाजी नहीं की			—	—	—	—	—

औसत गेंदबाजी

नाम	गेंदें	रन	विकेट	औसत	एक पारी में 5 विकेट	एक मैच में 10 विकेट
1	2	3	4	5	6	7
पटेल, जे. एम.	1725	637	29	21.96	2	1
मोहम्मद निसार	1211	707	25	28.28	3	—
वेदी, बी. एस.	21367	7637	266	28.71	13	1
कपिल देव	16071	8077	281	28.74	19	2
नादकर्णी, आर. जी.	9165	2559	88	29.07	4	1
गुप्ते, सुभाष	11284	4403	149	29.55	12	1
चन्द्रशेखर, बी. एस.	15963	7199	242	29.74	16	1
गुलाम अहमद	*5650	2052	68	30.17	4	1
प्रसन्ना, इ. ए. एस.	14353	5742	189	30.38	11	2
अमर सिंह	2182	858	28	30.64	2	—
दोशी, दिलीप	9322	3503	114	30.72	6	—
मॉकड, वी. एम.	14686	5236	162	32.32	8	2
दिवेचा, आर. वी.	1044	361	11	32.81	—	—
अमरनाथ, लाला	4241	1481	45	32.91	2	—
गावरी, डी.	7042	[illegible]	[illegible]	33.54	4	—
सलीम दुर्रानी	6446	2657	75	35.42	3	1
शिवलाल यादव	6194	2679	75	35.72	1	—
वेंकटराघवन, एस.	14877	5634	156	36.11	3	1
फड़कर, डी. जी.	5994	2285	62	36.85	3	—
देसाई, रमाकान्त	5597	2761	74	37.31	2	—
शास्त्री, रवि	9649	3600	94	39.36	1	—
सुरेन्द्र नाथ	2602	1053	26	40.50	1	—
मदनलाल	5872	2798	68	41.14	4	—
उमरीगर, पी. आर.	4725	1473	35	42.08	2	—
आबिद अली	4164	1980	47	42.12	1	—
बिन्नी, रोजर	2051	1157	27	42.85	—	—
चेतन शर्मा	1713	944	22	42.90	1	—
शिवराम कृष्णन, एल.	2367	1145	26	44.03	3	1
रामचन्द, जी. एस.	4976	1899	41	46.31	1	—
बोर्डे, सी. जी.	5695	2417	52	46.48	4	—

1	2	3	4	5	6	7
सूरती, आर. एफ.	3870	1962	42	46.71	2	—
सन्धू, बी. एस.	1020	557	10	55.70	—	—
मोहिन्दर अमरनाथ	3221	1677	30	55.90	—	—
मनिन्दर सिंह	3087	1272	22	57.81	—	—
कृपाल सिंह	1518	584	10	58 40	—	—
सोलकर, इ. डी.	2265	1070	18	59 44	—	—
शिन्दे, एस. जी.	1515	717	12	59.75	—	1
हजारे, वी. एस.	2840	1220	20	61.00	—	—

निम्नलिखित गेंदबाज दस से कम विकेट ले सके

1	2	3	4	5	6	7
नायडू, सी. के.	858	386	9	42.88	—	—
रंगाचारी, सी. आर.	846	493	9	54.77	1	—
जय सिम्हा, एम. एल.	2097	829	9	92.11	—	—
संदीप पाटिल	645	240	9	26.66	—	—
कुमार, वी. वी.	605	202	7	20.85	—	—
बनर्जी, एस. एन.	273	127	5	25.40	—	—
बनर्जी, एस. ए.	306	181	5	36.20	—	—
कुलकर्णी, यू. एन.	448	238	5	47.60	—	—
नजीर अली	138	83	4	20.75	—	—
जहाँगीर खाँ	606	255	4	63.75	—	—
भट्ट, आर.	438	151	4	37.75	—	—
जमशेद जी	210	137	3	45 66	—	—
मुश्ताक अली	378	202	3	67.33	—	—
सरवटे, सी. टी.	658	374	3	124.66	—	—
अधिकारी, हेमू	170	82	3	27.33	—	—
आजाद, कीर्ति	600	393	3	131.00	—	—
गार्ड, गुलाम	396	182	3	60.66	—	—
गुहा, एस.	674	311	3	103.66	—	—
गुप्ते, बी. पी.	678	349	3	116.33	—	—
मुद्दैया, वी. एम.	318	134	3	44.66	—	—
नरसिम्हा राव	463	227	3	75.66	—	—
न्यालचन्द, एस.	384	97	3	32.33	—	—
सुब्रमणियम, वी.	444	201	3	67.00	—	—
सुन्दरम, जी. आर.	396	166	3	55.33	—	—
गोपाल शर्मा	516	167	3	55.60	—	—
चौहान, सी. पी. एस.	174	106	2	53.00	—	—
गुल मोहम्मद	77	24	2	12.00	—	—

1	1	2	3	4	5	6
नाकमल, जे.	108	68	2	34 00	—	—
नायडू, सी. एस.	522	359	2	179 50	—	—
पाई, ए. एम.	114	31	2	15.50	—	—
पाटिल, एस. आर.	138	51	2	25.50	—	—
शुक्ल, राकेश	294	152	2	76.00	—	—
सोहनी, एस. डब्ल्यू.	532	202	2	101 00	—	—
सुरेन्द्र अमरनाथ	11	5	1	5.00	—	—
चौधरी, एल. आर.	516	205	1	205 00	—	—
कान्ट्रैक्टर, एन. जे.	186	80	1	80 00	—	—
दानी, एच. टी.	60	19	1	19.00	—	—
गावस्कर, सुनील	350	187	1	187.00	—	—
गोपालन, एम. जे.	114	39	1	39 50	—	—
गोपीनाथ, सी. डी.	48	11	1	11 00	—	—
हर्डीकर, एम. एस.	108	55	1	55.00	—	—
किरमानी, सैयद	19	14	1	14 00	—	—
मान्जरेकर, वी. एल.	204	44	1	44 00	—	—
नायक, एस. वी.	231	132	1	132 00	—	—
प्रसन्ना, डी. डी.	120	50	1	50 00	—	—
मंसूर अली पटौदी	132	88	1	88 00	—	—
पंकज रॉय	104	66	1	66.00	—	—
यशपाल शर्मा	24	7	1	7.00	—	—
विश्वनाथ, जी. आर.	70	46	1	46 00	—	—
योगराजसिंह	90	63	1	63.00	—	—
मनोज प्रभाकर	174	102	1	102.00	—	—
आप्टे, एम. एल.	6	3	0	—	—	—
अरूणलाल	7	6	0	—	—	—
अब्बास अली बेग	18	15	0	—	—	—
बाका-जिलानी	90	55	0	—	—	—
प्रकाश भंडारी	78	39	0	—	—	—
गडकरी, चन्दू वी.	102	45	0	—	—	—
गायकवाड, ए. डी.	160	107	0	—	—	—
गायकवाड, डी. के.	12	12	0	—	—	—
हीरालाल गायकवाड	222	47	0	—	—	—
गन्डोतरा, ए.	6	5	0	—	—	—
घोरपडे, जे. एम.	150	131	0	—	—	—
हनुमन्तसिंह	66	51	0	—	—	—
कुन्दरन, बी. के.	24	13	0	—	—	—
अशोक मल्होत्रा	6	0	0	—	—	—
अशोक मांकड़	41	43	0	—	—	—

1	2	3	4	5	6	7
विजय मेहरा	36	6	0	—	—	—
विजय मर्चेंट	54	40	0	—	—	—
मिलखा सिंह	6	2	0	—	—	—
रूसी मोदी	30	14	0	—	—	—
नवजोत सिद्ध	6	9	0	—	—	—
पालिया पी. ई.	42	13	0	—	—	—
राजेन्द्र पाल	78	22	0	—	—	—
रामजी, एल.	138	64	0	—	—	—
दिलीप सरदेसाई	59	45	0	—	—	—
रमेश सक्सेना	12	11	0	—	—	—
पार्थसारथी, शर्मा	24	8	0	—	—	—
शोधन, डी. एच.	60	26	0	—	—	—
शेखर, टी. ए.	216	129	0	—	—	—
श्रीकान्त, के.	36	10	0	—	—	—
स्वामी, वी. एन.	108	45	0	—	—	—
तारापोर, के. के.	114	72	0	—	—	—
वेंगसरकर, डी. वी.	35	21	0	—	—	—
वाडेकर, अजीत	61	55	0	—	—	—
वजीर अली	30	25	0	—	—	—
यजुवेन्द्र सिंह	120	50	0	—	—	—

रणजी ट्रॉफी के लिये राष्ट्रीय क्रिकेट प्रतियोगिता

1934-35... 1984-85

वर्ष	विजेता	कप्तान	उप-विजेता	कप्तान	स्थान
1934-35	बम्बई	एल. पी. जय	उत्तरी भारत	जी. ए. पी. अर्नेट	बम्बई
1935-36	बम्बई	एच. जे. वजिफदार	मद्रास	एम. बलिहा	दिल्ली
1936-37	नवानगर	ए. एफ. वेन्स्ली	बंगाल	मेजर ब्रुक	बम्बई
1937-38	हैदराबाद	एम. एम. हुसैन	नवानगर	ए. एफ. वेन्स्ली	बम्बई
1938-39	बंगाल	लौंगफिल्ड	दक्षिण पंजाब	वजीर अली	कलकत्ता
1939-40	महाराष्ट्र	डी. बी. देवधर	संयुक्तप्रदेश	पी. ई. पालिया	पूना
1940-41	महाराष्ट्र	डी. बी. देवधर	मद्रास	सी. पी. जॉन्सटन	मद्रास
1941-42	बम्बई	वी. एम. मर्चेन्ट	मैसूर	एम. नारायणाह	बम्बई
1942-43	बड़ौदा	डब्ल्यू. एन. घोरपडे	हैदराबाद	एम. एम. हुसैन	सिकन्दराबाद
1943-44	पश्चिम भारत	एच. डब्ल्यू. बैरिट	बंगाल	महाराजा कूच बिहार	बम्बई
1944-45	बम्बई	वी. एम. मर्चेन्ट	होल्कर	सी. के. नायडू	बम्बई
1945-46	होल्कर	सी. के. नायडू	बड़ौदा	आर. बी. निम्बालकर	इन्दौर
1946-47	बड़ौदा	आर. बी. निम्बालकर	होल्कर	सी. के. नायडू	बड़ौदा
1947-48	होल्कर	सी. के. नायडू	बम्बई	के. सी. इब्राहिम	इन्दौर
1948-49	बम्बई	के. सी. इब्राहिम	बड़ौदा	आर. बी. निम्बालकर	बम्बई

1949-50	बड़ौदा	आर. बी. निम्बालकर	होलकर	सी. के. नायडू	बड़ौदा
1950-51	होलकर	सी. के. नायडू	गुजरात	पी. डब्लू. कमभाटा	इन्दौर
1951-52	बम्बई	एम. के. मन्त्री	होलकर	सी. के. नायडू	बम्बई
1952-53	होलकर	सी. के. नायडू	बंगाल	पी. सेन	कलकत्ता
1953-54	बम्बई	एस. डब्लू. सोहनी	होलकर	मुश्ताकअली	इन्दौर
1954-55	मद्रास	आर. वी. अलगानन	होलकर	मुश्ताकअली	इन्दौर
1955-56	बम्बई	एम. के. मन्त्री	बंगाल	पी. सेन	कलकत्ता
1956-57	बम्बई	एम. के. मन्त्री	सेना	एच. आर. अधिकारी	दिल्ली
1957-58	बड़ौदा	डी. के. गायकवाड	सेना	एच. आर. अधिकारी	बड़ौदा
1958-59	बम्बई	एम. एल. आपटे	बंगाल	पंकज रॉय	बम्बई
1959-60	बम्बई	पी. आर. उमरीगर	मैसूर	के. वासुदेवमूर्ती	बम्बई
1960-61	बम्बई	पी. आर. उमरीगर	राजस्थान	के. एम. रूंगटा	उदयपुर
1961-62	बम्बई	एम. एल. आपटे	राजस्थान	के. एम. रूंगटा	बम्बई
1962-63	बम्बई	पी. आर. उमरीगर	राजस्थान	राजसिंह	जयपुर
1963-64	बम्बई	आर. जी. नाडकर्णी	राजस्थान	राजसिंह	बम्बई
1964-65	बम्बई	आर. जी. नाडकर्णी	हैदराबाद	एम. एल. जयसिम्हा	हैदराबाद
1965-66	बम्बई	आर. जी. नाडकर्णी	राजस्थान	राजसिंह	जयपुर
1966-67	बम्बई	एम. एस. हर्डीकर	राजस्थान	हनुमन्तसिंह	बम्बई
1967-68	बम्बई	एम. एस. हर्डीकर	मद्रास	पी. के. बलिआपा	बम्बई

1968-69	बम्बई	ए. एल. वाडेकर	बंगाल	अम्बर रॉय	बम्बई
1969-70	बम्बई	ए. एल. वाडेकर	राजस्थान	हनुमन्तसिंह	बम्बई
1970-71	बम्बई	एम. एम. नायक	महाराष्ट्र	सी. जी. बोर्डे	बम्बई
1971-72	बम्बई	ए. एल. वाडेकर	बंगाल	सी. गोस्वामी	बम्बई
1972-73	बम्बई	ए. एल. वाडेकर	तामिलनाडु	एस. वैन्कटराघवन	मद्रास
1973-74	कर्नाटक	ई. ए. एस. प्रसन्ना	राजस्थान	हनुमन्तसिंह	जयपुर
1974-75	बम्बई	ए. वी. मौंकड	कर्नाटक	ई. ए. एस. प्रसन्ना	बम्बई
1975-76	बम्बई	ए. वी. मौंकड	बिहार	दलजीतसिंह	जमशेदपुर
76-77	बम्बई	सुनील गावस्कर	दिल्ली	बी. एस. वेदी	दिल्ली
77-78	कर्नाटक	ई. ए. एस. प्रसन्ना	उत्तर प्रदेश	मोहम्मद शाहिद	मोहन नगर
1978-79	दिल्ली	बी. एस. वेदी	कर्नाटक	जी. आर. विश्वनाथ	बेंगलोर
979-80	दिल्ली	बी. एस. वेदी	बम्बई	सुनील गावस्कर	दिल्ली
-81	बम्बई	ई. डी. सोलकर	दिल्ली	बी. एस. वेदी	बम्बई
-82	दिल्ली	मोहिन्दर अमरनाथ	कर्नाटक	जी. आर. विश्वनाथ	दिल्ली
-83	कर्नाटक	बी. पी. पटेल	बम्बई	ए. वी. मौंकड	बम्बई
983-84	बम्बई	सुनील गावस्कर	दिल्ली	मोहिन्दर अमरनाथ	बम्बई
1984-85	बम्बई	सुनील गावस्कर	दिल्ली	मदनलाल	बम्बई

हर संघ की अधिकतम और न्यूनतम रन संख्याएँ

आंध्र	: 462 वि. ट्रावनकोर-कोचीन, त्रिवेन्द्रम में, ...	1955-56
	29 वि. तामिलनाडु, कोयम्बटूर में, ...	1978-79
आर्मी	: 204 वि. उत्तर भारत, लाहौर में, ...	1934-35
	203 वि. उत्तर भारत, लाहौर में, ...	1934-35
असम	: 411 सात विकटों पर, वि. उड़ीसा, कटक में, ...	1957-58
	32 वि. बिहार, धनबाद में, ...	1971-72
बड़ौदा	: 784 वि. होलकर, बड़ौदा में, ...	1946-47
	37 वि. नवानगर, जामनगर में, ...	1937-38
बंगाल	: 760 वि. असम, कलकत्ता में, ...	1951-52
	59 वि. हरियाणा, राई में, ...	1976-77
बिहार	: 581 पांच विकटों पर, वि. सौराष्ट्र, जमशेदपुर में, ...	1982-83
	37 वि. बंगाल, कलकत्ता में, ...	1972-73
बम्बई	: 764 वि. होलकर, बम्बई में, ...	1944-45
	42 वि. गुजरात, बलसार में, ...	1977-78
मध्य भारत	: 356 छः विकटों पर, वि. राजपूताना, इन्दौर में, ...	1935-36
	64 वि. उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद में, ...	1939-40
दिल्ली और जिला	:707 आठ विकटों पर, वि. कर्नाटक, दिल्ली में, ...	1982-83
	37 वि. उत्तर प्रदेश, आगरा में, ...	1934-35
पूर्व पंजाब	: 380 वि. दिल्ली और जिला, दिल्ली में, ...	1951-52
	127 वि. होल्कर, इन्दौर मे, ...	1953-54
गुजरात	: 629 वि. महाराष्ट्र, कोल्हापुर में, ...	1951-52
	63 वि. बम्बई, अहमदाबाद में, ...	1959-60
ग्वालियर	: 92 वि. दिल्ली, ग्वालियर में, ...	1943-44
	61 वि. दिल्ली, ग्वालियर में, ...	1943-44
हरियाणा	: 583 वि. मध्य प्रदेश, इन्दौर में, ...	1974-75
	63 वि. पंजाब, जालन्धर में, ...	1970-71
हैदराबाद	: 635 छः विकटों पर, वि. बंगाल, हैदराबाद में, ...	1965-66

	69 वि. मैसूर, हैदराबाद में,	 1959-60
जम्मू व कश्मीर	: 310 वि. हरियाणा, जम्मू में,	 1972-73
	23 वि. हरियाणा, राई में,	 1977-78
केरल	: 555 पांच विकटों पर वि. आंध्र, पालघाट में,	 1959-60
	27 वि. मैसूर, बैंगलोर में,	 1963-64
मध्य प्रदेश	: 392 पांच विकटों पर, वि राजस्थान, भिलाई में	... 1984-85
	71 वि. हैदराबाद, नागपुर में,	 1974-75
तामिलनाडू	: 507 वि. आंध्र, मद्रास में,	 1955-56
	61 वि. बम्बई, मद्रास में,	 1973-74
मध्य भारत(होल्कर)	:912 आठ विकटों पर, वि. मैसूर, इन्दौर में,	1945-46
	94 वि. बंगाल, इन्दौर मे,	— 1949-50
महाराष्ट्र	: 826 चार विकटों पर, वि. काठियावाड़, पूना में,	 1948-49
	39 वि. नवानगर, जामनगर में,	 1941-42
कर्नाटक	: 705 वि. दिल्ली, दिल्ली में,	 1982-83
	28 वि. बम्बई, बैंगलोर में,	 1951-52
नवानगर	: 424 वि. बंगाल, बम्बई में,	 1936-37
	69 वि. बम्बई, बम्बई में,	 1946-47
उत्तर भारत	: 613 सात विकटों पर, वि. पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्त, लाहौर में,	 1941-42
	106 वि. दक्षिण पंजाब, अमृतसर में,	 1934-35
पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्त	: 418 आठ विकटों पर, वि दिल्ली, पेशावर में	 1938-39
	85 वि. पंजाब, पटियाला में,	 1937-38
उत्तर पंजाब	: 426 छः विकटों पर, वि. जम्मू व कश्मीर जालन्धर में,	 1962-63
	89 वि. रेल्वे, नई दिल्ली में,	 1963-64
उड़ीसा	: 438 वि. राजस्थान, राउरकेला में	... 1983-84
	44 वि. बिहार, जमशेदपुर में,	— 1940-41

पटियाला : 380 नौ विकटों पर, वि. पूर्व पंजाब
जालन्धर में 1957-58
91 वि. दिल्ली, पटियाला में 1957-58
रेल्वे : 406 सात विकटों पर,
वि जम्मू व कश्मीर, दिल्ली में 1966-67
33 वि सेना, दिल्ली में, ... 1958-59
राजस्थान : 615 वि. विदर्भ, उदयपुर मे, ... 1957-58
33 वि. बड़ौदा, बड़ौदा में, ... 1945-46
सौराष्ट्र : 459 वि. महाराष्ट्र, राजकोट में, ... 1940-41
25 वि. बम्बई, बम्बई में, ... 1951-52
सेना : 536 वि. दक्षिण पंजाब, पटियाला में, ... 1950-51
49 वि. दिल्ली, दिल्ली में, ... 1974-75
सिंध : 416 वि. महाराष्ट्र, करांची में 1945-46
23 वि. दक्षिण पजाब, पटियाला में, ... 1938-39
दक्षिण पंजाब : 658 आठ विकटों पर, वि. उत्तर भारत,
पटियाला में, ... 1945-46
22 वि. उत्तर भारत, अमृतसर में, ... 1934-35
उत्तर प्रदेश : 542 आठ विकटों पर, वि. मध्य प्रदेश,
मेरठ में, ... 1980-81
49 वि. मध्य भारत, इन्दौर में, ... 1938-39
विदर्भ : 385 नौ विकटों पर, वि. उत्तर प्रदेश,
नागपुर में, ... 1968-69
40 वि. राजस्थान, जयपुर में, ... 1977-78

हर संघ के लिये सबसे अधिक रन

आन्ध्र : 162 के चन्द्रशेखर राव वि. मद्रास,
सलीम में, ... 1966-67
आर्मी : 86 मोरिस वि. उत्तर भारत,
लाहोर में, ... 1934-35
असम : 229* एस. के. गिरधारी वि. उड़ीसा,
कटक में, ... 1957-58
बड़ौदा : 319 गुलमोहम्मद वि. होल्कर,
बड़ौदा में, ... 1946-47

बंगाल : 206* प्रनव रॉय वि. असम,
कलकत्ता में, ... 1983-84

बिहार : 242* आनन्द शुक्ला वि. उड़ीसा,
कटक में, ... 1967-68

बम्बई : 359* वी. एम. मर्चेंट वि. महाराष्ट्र,
बम्बई में, ... 1943-44

मध्यभारत : 103 वी. एस. हजारे वि. राजस्थान,
इन्दौर में, ... 1935-36

दिल्ली : 227 पी. भण्डारी वि. पटियाला,
पटियाला में, ... 1957-58

पूर्वी पंजाब : 145 स्वर्ण जीतसिंह वि. दिल्ली,
दिल्ली में, ... 1951-52

ग्वालियर : 30 आर डी. माथुर वि. दिल्ली,
ग्वालियर में, ... 1943-44

गुजरात : 224* पी. पंजाबी वि. सौराष्ट्र,
राजकोट में, ... 1959-60

हरियाणा : 228* अशोक मल्होत्रा वि. सेना,
नई दिल्ली में, ... 1982-83

होलकर : 249* डी. सी. एस. कोम्पटन, वि. बम्बई,
बम्बई में, ... 1944-45

हैदराबाद : 259 एम. एल. जयसिम्हा, वि. बंगाल,
हैदराबाद में, ... 1964-65

जम्मू व कश्मीर : 123 फारूक मिरजा, वि. पंजाब,
पटियाला में, ... 1975-76

कर्नाटक : 247 जी. आर. विश्वनाथ, वि. उत्तर प्रदेश,
मोहन नगर में, ... 1977-78

केरल : 262* पी. बालन पंडित, वि. आन्ध्र,
पालघाट में, ... 1959-60

मध्य प्रदेश : 200 एस. अन्सारी, वि. उत्तर प्रदेश,
कानपुर में, ... 1984-85

मद्रास : 234 सी. डी. गोपीनाथ, वि. मैसूर,
कोयम्बटूर में, ... 1958-59

महाराष्ट्र	: 443* बी. बी. निम्बालकर, वि. काठियावाड़, पूना में,	....	1948-49
नवानगर	: 185 वीनू मांकड, वि. बंगाल, बम्बई में,	....	1936-37
उत्तरभारत	: 210 जी. इ. बी. अबेल वि. आर्मी लाहौर में,	....	1934-35
उत्तर पंजाब	: 202* सुरेन्द्र अमरनाथ वि. दिल्ली, दिल्ली में,	....	1972-73
पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्त	: 177 होल्ड्सवर्थ वि. दिल्ली, पेशावर में,	....	1938-39
उड़ीसा	: 208* ए. जयप्रकाशम वि. राजस्थान, राउरकेला में,	....	1983-84
पटियाला	: 110 हरचरणसिंह वि. दक्षिण पंजाब, जालन्धर में,	....	1957-58
रेल्वे	: 205 वी. के. कुन्दरन वि. जम्मू व कश्मीर, नई दिल्ली में,	....	1959-60
राजस्थान	: 246* रूसी सूरती वि. उत्तर प्रदेश, उदयपुर	....	1959-60
सौराष्ट्र	: 214 यजुर्वेन्द्र सिंह वि. महाराष्ट्र, सतारा मे	....	1979-80
सेना	: 230* एच. आर. अधिकारी वि. राजपूताना, अजमेर में,	....	1951-52
सिन्ध	: 203* जे. नाऊमल वि. नवानगर, कराची में	....	1938-39
दक्षिण पंजाब	: 222* सैयद वजीरअली वि. बंगाल, कलकत्ता में,	....	1938-39
उत्तर प्रदेश	: 261* एल. एस. खांडेकर वि. रेलवे, मुरादाबाद में,	....	1984-85
विदर्भ	: 164* अनिल देशपांडे वि. रेलवे, नागपुर में	....	1979-80

रणजी ट्राफी प्रतियोगिता में दस या अधिक शतक बनाने वाले

वी. एस. हजारे	22	आकाश लाल	13
ए. वी. मांकड	22	सी. पी. एस. चौहान	13
पंकज रॉय	21	सी. टी. सरवटे	12
वी. पी. पटेल	21	आर. जी. नाडकर्णी	12
सुनील गावस्कर	20	वी. एल. मान्जरेकर	12
मुश्ताक अली	17	बी. बी. निम्बालकर	12
एम. एल. जयसिम्हा	17	ए. एल. वाडेकर	12
वी. एम. मर्चेन्ट	16	अम्बर रॉय	12
रमेश सक्सेना	16	एच.एस. कानितकर	12
एच. टी. दानी	15	ए. डी. गायकवाड	12
हनुमन्त सिंह	15	पी. शर्मा	11
मदन लाल	15	आर. एस. मोदी	10
डी. के. गायकवाड	14	जी. एस. रामचन्द	10
सी. जी. बोर्डे	14	जी. किशन चन्द	10
जी. आर. विश्वनाथ	14	आर. बी. कैनी	10
पी. आर. उमरीगर	13	विजय मेहरा	10
एच. आर. अधिकारी	13	वी. एच. भोसले	10
एन. जे. कान्ट्रेक्टर	13		

प्रथम प्रवेश में शतक 1965........1984-85

142	एन. एफ. सलधाना, महाराष्ट्र वि. सौराष्ट्र, नासिक में	1965-66
120	अनवर हुसैन, असम वि. उड़ीसा, कटक मे	1965-66
230	जी. आर. विश्वनाथ, मैसूर वि. आंध्र, गण्टूर मे	1967-68
102*	बलवीरसिंह, दक्षिण पंजाब वि. उत्तर पंजाब, फिरोजपुर में	1967-68
153	के. जयन्तीलाल, हैदराबाद वि. आंध्र गण्टूर में	1968-69
133	पी. सहस्त्रबुधे, विदर्भ वि. मध्य प्रदेश, नरसिंहपुर में	1968-69
128	विनोद शर्मा, पंजाब वि. जम्मू-कश्मीर, श्रीनगर मे	1968-69
108	पी. रमेश, तामिलनाडू वि. कर्नाटक, मद्रास मे	1974-75
100	एस. बालाजी, रेल्वे वि. विदर्भ, नागपुर में	1976-77
128	ए. ऐट्म्स, तामिलनाडू वि. केरल, मद्रास मे	1977-78

105 प्रनब रॉय, बंगाल वि. असम, डिब्रूगढ़ में 1978-79
106 राजू सेठी, दिल्ली वि. हरियाणा, रोहतक में 1980-81
102 एम. दत्ता, बिहार वि. उड़ीसा, पटना में 1980-81
104 एस. पारीख, बड़ौदा वि गुजरात, अहमदाबाद में 1981-82
137* अविक मित्रा, बंगाल वि. बिहार, धनबाद में 1983-84
100 अन्जू मुदकवि, राजस्थान वि. उड़ीसा, राउरकेला में 1983-84

एक ही मैच में दोनों पारियों में शतक

1965 1984-85

109 और 213* हनुमन्तसिंह राजस्थान वि. बम्बई, बम्बई में 1966-67
157 और 142 यशपाल शर्मा पंजाब वि. उत्तर प्रदेश,
मोहन नगर में 1977-78
111 और 128 एस. खन्ना दिल्ली वि. कर्नाटक बेंगलोर में 1978-79
140 और 100 मदनलाल दिल्ली वि. रेल्वे, नई दिल्ली में 1980-81
159 और 101* पदम शास्त्री राजस्थान वि. रेल्वे, कोटा में 1984-85
121 और 105* अजहरूद्दीन हैदराबाद वि. आंध्र,
मछलीपट्टनम में 1984-85

पारी प्रारम्भ करने पर भी अपराजित रहने वाले बल्लेबाज

1965........1984-85

एम. पी. बरूआ ने आसाम की ओर से बंगाल के विरुद्ध सन् 1966-67 में जोरहट में 87 रन बनाये।

आकाश लाल ने दिल्ली की ओर से उत्तरी पंजाब के विरुद्ध सन् 1967-68 में दिल्ली में 104 रन बनाये।

सी. पी. एस. चौहान ने महाराष्ट्र की ओर से बम्बई के विरुद्ध सन् 1972-73 में पूना में 187 रन बनाये।

बी. रामप्रसाद ने आंध्र की ओर से तामिलनाडू के विरुद्ध विजयवाड़ा में सन् 1975-76 में 31 रन बनाये।

जे. बकरानिया ने गुजरात की ओर से बड़ौदा के विरुद्ध नदियाद में सन् 1976-77 में 137 रन बनाये।

आर. वत्स ने रेल्वे की ओर से राजस्थान के विरुद्ध दिल्ली में सन् 1977-78 में 87 रन बनाये।

रणजी ट्राफी प्रतियोगिता में दस या अधिक शतक बनाने वाले

वी. एस. हजारे	22	आकाश लाल	13
ए. वी. मांकड	22	सी. पी. एस. चौहान	13
पंकज रॉय	21	सी. टी. सरवटे	12
बी. पी. पटेल	21	आर. जी. नाडकर्णी	12
सुनील गावस्कर	20	वी. एल. मान्जरेकर	12
मुश्ताक अली	17	बी. बी. निम्बालकर	12
एम. एल. जयसिम्हा	17	ए. एल. वाडेकर	12
वी. एम. मर्चेन्ट	16	अम्बर रॉय	12
रमेश सक्सेना	16	एच.एस. कानितकर	12
एच. टी. दानी	15	ए. डी. गायकवाड	12
हनुमन्त सिंह	15	पी. शर्मा	11
मदन लाल	15	आर. एस. मोदी	10
डी. के. गायकवाड	14	जी. एस. रामचन्द	10
सी. जी. बोर्डे	14	जी. किशन चन्द	10
जी. आर. विश्वनाथ	14	आर. बी. केनी	10
पी. आर. उमरीगर	13	विजय मेहरा	10
एच. आर. अधिकारी	13	सी. एच. गोपीनाथ	10
एल. जे. बान्ड्रेस्टर	13		

प्रथम प्रवेश में शतक 1965........1984-85

142	एन. एफ. गणपाना, महाराष्ट्र वि. सौराष्ट्र, नासिक में	1965-66
120	अनवर हुसैन, असम वि. उड़ीसा, कटक में	1965-66
230	जी. आर. विश्वनाथ, मैसूर वि. आंध्र, गुन्टूर में	1967-68
102*	बलबीरसिंह, दक्षिण पंजाब वि. उत्तर पंजाब, फिरोजपुर में	1967-68
153	के. जयन्तीलाल, हैदराबाद वि. आंध्र गुन्टूर में	1968-69
133	पी. महाराष्ट्र, विदर्भ वि. मध्य प्रदेश, ग्वालियर में	1968-69
128	विनोद शर्मा, पंजाब वि. जम्मू-कश्मीर, श्रीनगर में	1968-69
109	वी. रमेश, तामिलनाडु वि. कर्नाटक, मद्रास में	1974-75
100	एस. बालाजी, रेलवे वि. विदर्भ, नागपुर में	1976-77
128	ए. ऐरान, तामिलनाडु वि. केरल, मद्रास में	1977-78

105	प्रनब रॉय, बंगाल वि. असम, डिबरूगढ़ में	1978-79
106	राजू सेठी, दिल्ली वि. हरियाणा, रोहतक में	1980-81
102	एम. दत्ता, बिहार वि. उड़ीसा, पटना में	1980-81
104	एस. पारीख, बड़ौदा वि गुजरात, अहमदाबाद में	1981-82
137*	अविक मिश्रा, बंगाल वि. बिहार, धनबाद में	1983-84
100	अन्जू मुदकवि, राजस्थान वि. उड़ीसा, राउरकेला में	1983-84

एक ही मैच में दोनों पारियों में शतक

1965 1984-85

109 और 213* हनुमन्तसिंह राजस्थान वि. बम्बई, बम्बई में 1966-67

157 और 142 यशपाल शर्मा पंजाब वि. उत्तर प्रदेश, मोहन नगर में 1977-78

111 और 128 एस. खन्ना दिल्ली वि. कर्नाटक बेंगलोर में 1978-79

140 और 100 मदनलाल दिल्ली वि. रेल्वे, नई दिल्ली में 1980-81

159 और 101* पदम शास्त्री राजस्थान वि. रेल्वे, कोटा में 1984-85

121 और 105* अजहरूद्दीन हैदराबाद वि. आंध्र, मछलीपट्टनम में 1984-85

पारी प्रारम्भ करने पर भी अपराजित रहने वाले बल्लेबाज

1965....... 1984-85

एम. पी. बरूआ ने आसाम की ओर से बंगाल के विरुद्ध सन् 1966-67 में जोरहट में 87 रन बनाये।

आकाश लाल ने दिल्ली की ओर से उत्तरी पंजाब के विरुद्ध सन् 1967-68 मे दिल्ली में 104 रन बनाये।

सी. पी. एस. चौहान ने महाराष्ट्र की ओर से बम्बई के विरुद्ध सन् 1972-73 में पूना में 187 रन बनाये।

बी. रामप्रसाद ने आंध्र की ओर से तामिलनाडू के विरुद्ध विजयवाड़ा में सन् 1975-76 मे 31 रन बनाये।

जे. बकरानिया ने गुजरात की ओर से बड़ौदा के विरुद्ध नदियाद में सन् 1976-77 में 137 रन बनाये।

आर. वत्स ने रेल्वे की ओर से राजस्थान के विरुद्ध दिल्ली में सन् 1977-78 में 87 रन बनाये।

जी. मैय्यर ने सेना की ओर से पंजाब के विरुद्ध दिल्ली में सन् 1978-79 में 77 रन बनाये।

ए. भानौत ने उत्तर प्रदेश की ओर से बम्बई के विरुद्ध बम्बई में सन् 1978-79 में 104 रन बनाये।

गौतम दास ने असम की ओर से बंगाल के विरुद्ध कलकत्ता में सन् 1979-80 में 63 रन बनाये।

संजीव राव ने मध्य प्रदेश की ओर से राजस्थान के विरुद्ध सागर में सन् 1982-83 में 139 रन बनाये।

बल्लेबाजी 200 और अधिक रन

(1965...............1984-85)

340	सुनील गावस्कर बम्बई वि बंगाल	1981-82
323	अजित वाडेकर बम्बई वि मैसूर	1966-67
282	सुनील गावस्कर बम्बई वि. बिहार	1971-72
265	अशोक मांकड बम्बई वि. दिल्ली	1980-81
261*	एस. एस. खांडेकर उत्तर प्रदेश वि. रेलवे	1984-85
250	एच. एस. कनितकर महाराष्ट्र वि. राजस्थान	1970-71
247	जी. आर. विश्वनाथ कर्नाटक वि उत्तर प्रदेश	1977-78
242*	आनन्द शुक्ला बिहार वि. उड़ीसा	1967-68
240*	वी. एल मान्जरेकर महाराष्ट्र वि. सौराष्ट्र	1967-68
231*	लक्ष्मण सिंह राजस्थान वि. मध्य प्रदेश	1974-75
231	ए. भानौत उत्तर प्रदेश वि बंगाल	1980-81
230	जी. आर. विश्वनाथ मैसूर वि. आन्ध्र	1967-68
228	अशोक मल्होत्रा हरियाणा वि. सेना	1982-83
225	ए. डी. गायकवाड बड़ौदा वि. गुजरात	1982-83
224*	अशोक मल्होत्रा हरियाणा वि. जम्मू कश्मीर	1979-80
223	मदन लाल दिल्ली वि. राजस्थान	1977-78
221*	आर. लाम्बा दिल्ली वि. जम्मूकश्मीर	1981-82
218*	एम. देसाई कर्नाटक वि. केरल	1977-78
217*	अब्दुल हाई हैदराबाद वि. पंजाब	1971-72
217	डी. एन. सरदेसाई बम्बई वि. बड़ौदा	1968-69
216	बी. पी पटेल कर्नाटक वि. बड़ौदा	1978-79

214	यजुवेन्द्र सिंह सौराष्ट वि. महाराष्ट्र	1979-80
213*	वी. सुब्रमणियम मैसूर वि. मद्रास	1966-67
213*	हनुमन्त सिंह राजस्थान वि. बम्बई	1966-67
211*	हनुमन्त सिंह राजस्थान वि. महाराष्ट्र	1970-71
211*	रोजर बिन्नी कर्नाटक वि. केरल	1977-78
210	डी बी. वेंगसरकर बम्बई वि बड़ोदा	1979-80
210	संदीप पाटिल बम्बई वि. सौराष्ट्र	1979-80
208*	अशोक मांकड बम्बई वि. हरियाणा	1976-77
208	बी एच. भोसले बम्बई वि. राजस्थान	1968-69
208	सरभजीत सिंह हरियाणा वि. दिल्ली	1980-81
208*	ए. जय प्रकाशम उड़ीसा वि. राजस्थान	1983-84
207*	सी. जी. बोर्डे महाराष्ट्र वि. बंगाल	1972-73
207	सी पी. एस. चौहान महाराष्ट्र वि. विदर्भ	1972-73
207	सी. पी. एस चौहान महाराष्ट्र वि. गुजरात	1972-73
207	आर. भालेकर महाराष्ट्र वि. सौराष्ट्र	1981-82
206*	सुनील गावस्कर बम्बई वि दिल्ली	1983-84
206*	प्रनब रॉय बंगाल वि. असम	1983-84
205*	पी. नन्दी बंगाल वि. असम	1975-76
205*	आर. लाम्बा दिल्ली वि. जम्मू कश्मीर	1981-82
204	सुनील गावस्कर बम्बई वि. बिहार	1978-79
203*	अशोक मांकड़ बम्बई वि. महाराष्ट्र	1976-77
203	डी. बी. वेंगसरकर बम्बई वि. बिहार	1979-80
203	ए. डी गायकवाड बड़ोदा वि. महाराष्ट्र	1980-81
202*	पी भण्डारी दिल्ली वि. पंजाब	1965-66
202*	रमेश सक्सेना बिहार वि. असम	1969-70
202*	सुरेन्द्र अमरनाथ पंजाब वि. दिल्ली	1972-73
203	सी. जी. बोर्डे महाराष्ट्र वि बड़ोदा	1969-70
201*	ए. जबर तामिलनाडू वि. कर्नाटक	1975-76
201	आर. सिकंदर उड़ीसा वि. असम	1977-78
201*	अनिल माथुर उत्तर प्रदेश वि. रेलवे	1982-83
200*	सुरेन्द्र अमरनाथ पंजाब वि. मध्य प्रदेश	1971-72
200*	एस. एस. नायक बम्बई वि. बड़ोदा	1973-74

200*	सुधाकर राव कर्नाटक वि. हैदराबाद	1975-76
200	एम. एस. गुप्ते महाराष्ट्र वि विदर्भ	1972-73
200	सी. पी एस. चौहान दिल्ली वि. पंजाब	1976-77
200	अशोक मल्होत्रा हरियाणा वि. सेना	1981-82
200	एस. अन्सारी मध्य प्रदेश वि. उत्तर प्रदेश	1984-85

* अपराजित पारी

रणजी ट्राफी प्रतियोगिता में दो हजार से अधिक रन बनाने वाले बल्लेबाज

	पारी	अपराजित	योग	उच्चतम	औसत
वी. एम. मर्चेन्ट (बम्बई)	47	10	3639	359	98.35
आर. एस. मोदी (बम्बई)	37	4	2696	245*	81.70
ए. वी. मांकड़ (बम्बई)	122	35	6619	265	76.08
जी. एस. रामचन्द (बम्बई)	52	18	2569	230*	75.56
सुनील गावस्कर (बम्बई)	92	17	5321	340	70.94
पी. आर. उमरीगर (बम्बई)	70	12	4102	245	70.72
वी. एस. हजारे (बड़ौदा)	103	12	6312	316*	69.36
के. सी. इब्राहिम (बम्बई)	39	4	2329	230*	66.54
डी. बी. वेंगसरकर (बम्बई)	38	3	2314	210	66.11
पंकज रॉय (बंगाल)	83	4	5149	202*	65.18
आर. जी. नादकर्णी (बम्बई)	74	10	3993	283*	63.29
ए. एल. वाडेकर (बम्बई)	86	12	4388	323*	60.94
वी. एल. मान्जरेकर (महाराष्ट्र)	73	9	3686	240*	57.59
बी. बी. निम्बालकर (रेल्वे)	84	12	4106	443*	57.03
एस. एस. मित्रा (बंगाल)	61	15	2595	153*	56.41
बी. पी. पटेल (कर्नाटक)	122	17	5748	216	54.74
डी. एन. सरदेसाई (बम्बई)	79	13	3599	217	54.53
जी. किशनचन्द (बड़ौदा)	106	28	4246	181	54.44
आर. बी. कैनी (बंगाल)	44	6	2062	218*	54.
सी. जी. बार्डे (महाराष्ट्र)	96	14	4338	207*	52.90
मदनलाल (दिल्ली)	113	26	4498	223	51.70

सी. डी. गोपीनाथ (तामिलनाडू)	52	6	2349	234	51.07
एच. आर. अधिकारी (सेना)	97	8	4540	230	51.01
एम. एस. हर्डीकर (बम्बई)	59	8	2589	207*	50.77
हनुमन्तसिंह (राजस्थान)	151	30	6120	213*	50.58
एम. के. मंत्री (बम्बई)	62	7	2787	200	50.57
ए. डी. गायकवाड (बड़ौदा)	100	12	4382	225	49.79
ए. जी. कृपालसिंह (तामिलनाडू)	58	6	2581	208	49.63
सी. वी. गडकारी (सेना)	49	6	2133	145	49.60
अम्बर रॉय (बंगाल)	92	15	3817	197	49.57
पृथ्वीराज (पंजाब)	48	6	2068	174	49.24
मुश्ताक अली (मध्य प्रदेश)	108	6	5013	233	79.15
के. एम. रांगनेकर (मध्य प्रदेश)	56	4	2548	217	49.00
गुलाम परकार (बम्बई)	64	6	2821	170*	48.64
अशोक मल्होत्रा (हरियाणा)	84	9	3607	228*	48.09
नरसिम्हाराव (हैदराबाद)	81	14	3202	184	47.79
एच. टी. दानी (सेना)	117	10	5104	166*	47.70
डी. के. गायकवाड़ (बड़ौदा)	69	3	3139	249*	47.56
यजुर्वेन्द्रसिंह (सौराष्ट्र)	66	10	2657	214	47.44
जी. आर. विश्वनाथ (कर्नाटक)	114	9	4907	247	46.73
रमेश सक्सेना (बिहार)	126	13	5266	202*	46.60
रोजर बिन्नी (कर्नाटक)	77	10	3121	218*	46.58
एम. एल. जयसिम्हा (हैदराबाद)	126	12	5227	259	45.85
एस. चन्ना (दिल्ली)	80	12	3088	143	45.41
सी. पी. एस. चौहान (दिल्ली)	131	9	5423	207	44.45
मोहिन्दर अमरनाथ (दिल्ली)	88	15	3227	191	44.20
सी. टी. सरवटे (मध्य प्रदेश)	123	12	4849	246	44.05
एन. जे. कान्ट्रैक्टर (गुजरात)	94	8	3707	176	43.10
ए. जबर (तामिलनाडू)	87	13	3181	201*	42.98
सुरेन्द्र अमरनाथ (दिल्ली)	105	14	3903	202*	42.89
एच. एस कर्नातकर (महाराष्ट्र)	93	9	3597	200	42.82
सतवेन्द्रसिंह (तामिलनाडू)	64	15	2050	128	42.65
आर. भालेकर (महाराष्ट्र)	88	14	3155	207*	42.63

वी. शिवारामाकृष्णन (तामिलनाडू)	96	7	3784	177	42.51
यशपाल शर्मा (पंजाब)	61	10	2156	157	42.27
आकाशलाल (पंजाब)	115	11	4390	209	42.21
वी. के. कुन्दरन (कर्नाटक)	61	7	2260	205	41.85
अरूणलाल (बंगाल)	57	4	2191	157	41.33
मिलखासिंह (तामिलनाडू)	58	5	2151	121	40.59
वी. एच. भोसले (महाराष्ट्र)	86	12	2999	208	40.53
एस. एस. नायक (बम्बई)	76	10	2672	200*	40.48
के. जयन्तिलाल (हैदराबाद)	72	13	2377	197	40.27
आर. सुधाकरराव (कर्नाटक)	89	13	3050	200*	40.13
वी. सुन्दरम (दिल्ली)	73	9	2565	152	40.08
ई. बी. आईबारा (हैदराबाद)	75	7	2720	144	40.08
एच. गिडवानी (बिहार)	84	10	2958	164	39.97
पी. सी. पोद्दार (बंगाल)	75	6	2738	199	39.68
के. आर. राजगोपाल (कर्नाटक)	67	5	2473	154	39.89
एम. एल. आप्टे (बम्बई)	64	12	2070	157	39.81
वी. सुब्रह्मणियम (कर्नाटक)	64	7	2261	213*	39.67
पी. नन्दी (बंगाल)	52	1	2023	166	39.66
ए. ए. बेग (हैदराबाद)	100	11	3524	129	39.59
वाई. एम. चौधरी (रेल्वे)	72	6	2603	211	39.44
लाला अमरनाथ (रेल्वे)	57	2	2162	155*	39.30
आर. डी. परकार (बम्बई)	74	4	2722	197	38.88
पी. शर्मा (राजस्थान)	117	5	4316	161	38.53
एम. एस. गुप्ते (महाराष्ट्र)	88	10	2993	200	38.37
विजय मेहरा (दिल्ली)	96	12	3222	167*	38.36
मंसूर अली पटौदी (हैदराबाद)	75	7	2562	198	37.68
ए. वी. जयप्रकाश (कर्नाटक)	106	18	3312	150*	37.64
जे. वकरानिया (गुजरात)	94	13	3046	154*	37.60
अब्दुल हाई (उत्तर प्रदेश)	76	9	2497	217*	37.27
दलजीतसिंह (बिहार)	95	9	3217	145	37.40
एम. आई. अन्सारी (रेल्वे)	79	15	2375	142	37.10
अनिल देशपाण्डे (विदर्भ)	73	8	2399	104	36.91

सी. के. नायडू (होल्कर)	73	3	2576	200	36.80
के. जुनेजा (उत्तर प्रदेश)	65	4	2243	173	36.77
विनू मांकड (राजस्थान)	87	2	3124	221	36.74
बी. चोपड़ा (उत्तर प्रदेश)	83	5	2820	153	36.15
के. एम. रूंगटा (राजस्थान)	77	10	2422	130	36.15
एन. चटर्जी (बंगाल)	61	2	2126	141	36.03
राकेश शुक्ला (दिल्ली)	98	23	2695	163*	35.93
महेन्द्रकुमार (आंध्र)	74	8	2370	205	35.90
जे. एन. माया (होल्कर)	73	13	2149	123	35.82
के. वी. आर. मूर्ति (आंध्र)	67	10	2027	131*	35.56
चमनलाल (पंजाब)	85	14	2501	141*	35.23
एम. दलवी (बंगाल)	97	9	3100	158	35.23
विजय कुमार (कर्नाटक)	72	3	2413	130	34.97
एस. डब्ल्यू. सोहनी (महाराष्ट्र)	66	4	2162	218*	34.78
आर. चड्ढा (हरियाणा)	106	5	3513	168	34.87
सलीम दुर्रानी (राजस्थान)	112	8	3617	137*	34.77
आनन्द शुक्ला (उत्तर प्रदेश)	112	12	3461	242*	34.61
जी. तिलकराज (बिहार)	68	6	2129	115	34.33
हरचरणसिंह (सेना)	72	2	2335	177	33.36
रूसी सूर्ती (गुजरात)	74	4	2329	246*	33.27
आबिद अली (हैदराबाद)	120	8	3687	173	32.91
सूर्यवीरसिंह (राजस्थान)	103	10	3044	184*	32.73
वी. लाम्बा (दिल्ली)	83	9	2419	160	32.69
अशोक जगदाले (मध्य प्रदेश)	97	12	2766	160	32.54
एम. एम. जगदाले (होल्कर)	73	3	2282	164	32.22
वी. तेलंग (विदर्भ)	72	2	2210	155	31.57
ई. डी. सोलकर (बम्बई)	94	9	2619	145	30.81
अशोकानन्द (कर्नाटक)	74	6	2061	109	30.31
सी. एम. नायडू (मध्य प्रदेश)	88	3	2575	127	30.29
बालन पण्डित (केरल)	78	4	2240	262*	30.27
पी. के. बलिअप्पा (तामिलनाडू)	89	6	2487	141	29.96
एन. बख्शी (रेल्वे)	98	6	2612	122	29.68

एम. जी. पाण्डय (पंजाब)	125	12	3276	109	28.99
एन. वाई. सायम (बड़ौदा)	118	17	2903	197	28.74
एस. पी. गायकवाड़ (बड़ौदा)	100	4	2728	122	28.42
जी. इन्दरदेव (सेना)	114	14	2822	131	28.22
सैयद किरमानी (कर्नाटक)	87	13	2047	116	27.66
इन्द्रजीत सिंह (सौराष्ट्र)	80	3	2124	124	27.58
बी. विजयकृष्णा (कर्नाटक)	96	15	2195	102*	27.09
सरबजीतसिंह (हरियाणा)	100	2	2648	208	27.02
सुबोध सक्सेना (मध्य प्रदेश)	86	7	2099	143	26.57
एस. बैन्जामिन (राजस्थान)	90	12	2059	112	26.39
एन. आर. न्यूसरकर (होल्कर)	61	4	2097	166	26.09
एच. घोष (रेल्वे)	93	8	2188	166	25.74
के. एस. जहीद (सौराष्ट्र)	90	3	2057	117*	23.64
ज्ञानेश्वर (दिल्ली)	99	8	2117	123	23.26
बी. रामप्रसाद (आंध्र)	111	2	2229	132	21.85
एस. वैंकटराघवन (तामिलनाडू)	120	20	2118	137	21.18

हर विकेट की अधिकतम साझेदारी

पहला विकेट

451, रोजर बिन्नी और एस. देसाई, कर्नाटक वि. केरल, 1977-78

421, सुनील गावसकर और जी. परकार, बम्बई वि. बंगाल, 1981-82

405, सी. पी. एस. चौहान और एम. एस. गुप्ते, महाराष्ट्र, वि. विदर्भ 1972-73

325, जी. बोस और पी. नन्दी, बंगाल वि. बिहार 1973-74

दूसरा विकेट

455, के. वी. भण्डारकर और बी. बी. निम्बालकर, महाराष्ट्र वि. काठियावाड़ 1948-49

317,* राजामुखर्जी और पी. नन्दी, बंगाल वि. असम, 1975-76

314, एम. एस. गुप्ते और एच. एस. कनीतकर, महाराष्ट्र वि. राजस्थान, 1970-71

308, एम बनर्जी और राजा मुखर्जी, बंगाल वि. उड़ीसा, 1977-78

304, जी. इ. वी. अबेल और आगा रजा, उत्तर भारत
वि. आर्मी 1934-35

तीसरा विकेट

373, वी. एम. मर्चेंट और रूसी मोदी, बम्बई
वि. पश्चिम भारत 1944-45

365, ए. डी. गायकवाड और एन. वी. सायन,
बड़ोदा वि. महाराष्ट्र, 1980-81

335, डी. के. गायकवाड और सी. जी. बोर्डे,
बड़ौदा वि. म राष्ट्र, 1959-60

315, एन. एम. तिवारी और वी. एल. मान्जरेकर,
उत्तर प्रदेश वि. मध्य प्रदेश 1958-58

313, उमर खां और पृथ्वीराज, पश्चिम भारत वि. बम्बई, 1948-49

301*, आत्मासिंह और एच. टी. दानी, सेना वि. बंगाल 1957-58

चौथा विकेट

577, वी. एस. हजारे और गुलमोहम्मद, बड़ौदा वि. होल्कर
(विश्व रेकार्ड) 1946-47

410, बालन पंडित और जी. अब्राहम, केरल वि. आन्ध्र, 1959-60

342*, एस. डब्लू. सोहनी और वी. एस. हजारे, महाराष्ट्र
वि. पश्चिम भारत, 1940-41

322, डी. के. गायकवाड और वी. एस. हजारे,
बड़ौदा वि. बम्बई, 1957-58

309, सुनील गावस्कर और ई. डी. सोलकर,
बम्बई वि. बिहार, 1971-72

308, अम्बररॉय और एस. एस. मिश्रा, बंगाल वि. असम, 1969-70

303*, वी. एस. हजारे और और एच. आर. अधिकारी,
बड़ौदा वि. महाराष्ट्र, 1944-45

302, यू. एम. मर्चेंट और डी. जी. फड़कर, बम्बई
वि. महाराष्ट्र, 1948-49

पांचवा विकेट

360, यू. एम. मर्चेंट और एम. एन. रायजी, बम्बई
वि. हैदराबाद, 1947-48

332, एम. एल. जयसिम्हा और महेन्द्र कुमार,
हैदराबाद वि. बंगाल, 1964-65

325, वी. एम. मर्चेंट और के. एम. रांगलेकर,
बम्बई वि. सिन्ध, 1945-46

छठा विकेट

371, वी. एम. मर्चेंट और रूसी मोदी, बम्बई वि. महाराष्ट्र, 1943-44

316*, एच. आर. अधिकारी ए. के. खन्ना, सेना
वि. राजपुताना, 1951-52

सातवां विकेट

252*, एस. के. गिरधारी और ए. गुहा रॉय,
असम वि. उड़ीसा, 1957-58

246, प्रकाश भण्डारी और डी. एस. सक्सेना,
दिल्ली वि. पंजाब, 1968-69

आठवां विकेट

236, सी. टी. सरवटे और आर. पी. सिंह,
होल्कर वि. दिल्ली, 1947-48

222, अशोक मांकड और के. गावरी,
बम्बई वि. उत्तर प्रदेश, 1978-79

नवां विकेट

245, वी. एस. हजारे और एन. डी. नागरवाला,
महाराष्ट्र वि. बड़ौदा, 1939-40

231, पी. सेन और जे. मित्तर, बंगाल वि. बिहार, 1950-51

दसवां विकेट

145, के. एस. मोरे और वी. पटेल, बड़ौदा वि. उत्तर प्रदेश, 1983-84

138, यादवेन्द्र सिंह जी और मुबारक अली,
नवानगर वि. बंगाल, 1936-37

* असमाप्त साझेदारी

एक ही जोड़े द्वारा दोनों पारियों में शतकीय साझेदारी

102 चौथे विकेट पर और 126 पांचवें विकेट पर, वी. एस. हजारे और एच. आर. अधिकारी, बड़ौदा वि. गुजरात 1941-42

104 तीसरे विकेट पर और 111 भी तीसरे विकेट पर, वी. एस. हजारे और एच. आर. अधिकारी, बड़ौदा वि. हैदराबाद 1942-43

166 और 108, पहले विकेट पर, बी. खन्ना और आर. बाला सुन्दरम, उत्तर प्रदेश वि. मध्य प्रदेश 1952-53

176 और 213, तीसरे विकेट पर, सूर्यवीर सिंह और हनुमन्त सिंह, राजस्थान वि. बम्बई, ...1966-67

129 पांचवें विकेट पर और 116 चौथे विकेट पर, ए. एल. आप्टे और हनुमन्त सिंह, राजस्थान वि. दिल्ली, ...1968-69

192 और 100, पहले विकेट पर, दलजीत सिंह और रोबिन मुखर्जी, बिहार वि. पंजाब, ...1971-72

161 और 163*, पहले विकेट पर, सी. पी. एस. चौहान और एम. एस. गुप्ते, महाराष्ट्र वि. बम्बई, ...1971-72

123 और 142, पहले विकेट पर, वी. चोपरा और के. जूनेजा, उत्तर प्रदेश वि. मध्य प्रदेश, ...1978-79

* असमाप्त साझेदारी

रणजी ट्राफी प्रतियोगिता में 100 या अधिक विकेट लेने वाले गेंदबाज

	ओवर	मे. ओ.	रन	विकेट	औसत
लाला अमरनाथ (रेल्वे)	1538.4	564	2764	190	14.55
बी. एस. बेदी (दिल्ली)	2861.2	916	5926	402	14.74
एस. गुहा (बंगाल)	1154.1	280	2957	195	15.16
ए. ए. इस्माईल (बम्बई)	1406.2	326	3064	198	15.47
एल. अमरसिंह (नवानगर)	689.1	175	1634	105	15.56
आर. बी. देसाई (बम्बई)	1375.4	385	3433	219	15.68
ए.जी. रामसिंह(तामिलनाडू)	1050.1	242	2624	164	16.00
बी. घोस (बिहार)	1457.0	476	3391	205	16.34

पी. चटर्जी (बंगाल)	999.5	286	2150	130	16.54
डी.जी. फड़कर (रेल्वे)	1623.0	479	3588	216	16.67
एस. तुयरा (पंजाब)	2106.4	593	4368	262	16.67
राजेन्द्र गोयल (हरियाणा)	5103.5	1759	10854	639	16.98
पी. सीताराम (दिल्ली)	2049.5	725	4136	243	17.02
डब्ल्यू. घोष (रेल्वे)	1663.4	558	3465	203	17.07
मदनलाल (दिल्ली)	1818.3	423	4756	276	17.23
ई. एस. प्रसन्ना (कर्नाटक)	2761.0	782	6409	371	17.27
सईद अहमद (काठियावाड़)	1044.0	372	1762	102	17.27
ए. भट्टाचार्य (बंगाल)	784.2	187	1920	111	17.30
दिलीप दोषी (बंगाल)	2437.3	811	5150	295	17.46
आर.जी. नाडकर्णी (बम्बई)	2069.0	951	3172	181	17.52
पी. के. शिवालकर (बम्बई)	3462.0	1182	6456	367	17.59
मदन मेहरा (रेल्वे)	828.3	245	1897	107	17.73
एस.वेंकटराघवन(तमिलनाडू)	4549.2	1276	9655	530	18.22
गुलाम अहमद (हैदराबाद)	1480.0	249	2534	139	18.23
राजेन्द्रपाल (हरियाणा)	1840.0	499	5035	274	18.33
आनन्द शुक्ला (उत्तर प्रदेश)	4126.0	523	5690	307	18.53
वी. वी. कुमार (तमिलनाडू)	3102.0	900	7756	417	18.59
सुभाष गुप्ते (राजस्थान)	828.1	210	2264	121	18.71
राजेन्द्रसिंह हंस(उत्तर प्रदेश)	2201.3	607	4718	251	18.80
एस. के. गिरधारी (बंगाल)	1097.0	243	2673	141	18.96
मुमताज हुसैन (हैदराबाद)	1516.0	558	3060	161	19.00
एर. मेहता (हैदराबाद)	1199.0	409	2474	130	19.03
एस.एन. मोहोल (महाराष्ट्र)	1111.0	367	2208	116	19.03
बी.एस. चन्द्रशेखर (कर्नाटक)	2862.0	648	8352	436	19.15
गुलाम गार्ड (गुजरात)	782.1	202	1957	102	19.19
सलीम दुर्रानी (राजस्थान)	1892.0	525	4572	237	19.29
एच. टी. दानी (सेना)	1528.0	570	3096	160	19.35
कैलाश गट्टानी (राजस्थान)	2423.5	679	5969	307	19.44
के. भट्टाचार्य (बंगाल)	1812.2	183	1999	102	19.60
एन. चौधरी (बिहार)	848.5	191	2361	120	19.68

पी. आर. उमरीगर (बम्बई)	1389.0	487	2722	730	19.72
जी. इन्द्रदेव (सेना)	1834.3	407	4971	252	19.72
वी. एस. हजारे (बड़ोदा)	2836.0	897	5785	291	19.86
हैदरअली रेल्वे)	2881.1	884	6479	323	20.05
उमेश कुमार (पंजाब)	1725.5	509	3457	172	20.09
जे. एम. पटेल (गुजरात)	1310.3	357	2827	140	20.19
रघुराम भट्ट (कर्नाटक)	1276.3	270	3159	156	20.25
बी. महेन्द्र कुमार (आंध्र)	1007.0	150	3215	157	20.48
ए.जी.कृपालसिंह(तमिलनाडू)	1169.5	316	2362	115	20.54
राकेश शुक्ला (दिल्ली)	1958.0	492	4854	234	20.74
सी. जी. जोशी (राजस्थान)	1793.5	479	4624	222	20.82
सी. आर. रंगाचारी (तमिलनाडू)	822.4	169	2163	104	20.83
डी. प्रसन्ना (सौराष्ट्र)	1717.0	553	4073	194	20.99
आर. सुरेन्द्रनाथ (सेना)	1561.0	486	3781	180	21 01
डी. चोपड़ा (पंजाब)	1224'1	347	2839	134	21 18
एस. चक्रवर्ती (बंगाल)	894.4	246	2206	104	21.21
डी. एस. सक्सेना (दिल्ली)	1706.0	461	3753	176	21.32
एन.एफ सलधाना(महाराष्ट्र)	1609.4	207	2935	137	21 42
एम. एन. बनर्जी (बंगाल)	946.0	178	2831	132	21.42
एन. दुआ (मध्य प्रदेश)	1814.4	152	2253	104	21.66
एम. एल. जयसिम्हा (हैदराबाद)	1936.0	484	4929	227	21.7!
आबिद अली (हैदराबाद)	1784.1	488	4123	189	21.81
हीरालाल गायकवाड़ (मध्य प्रदेश)	3139.1	297	6098	277	22.00
वी. वी. रन्जने (रेल्वे)	931.3	230	2565	116	22.11
जे. एच. विन (बड़ोदा)	1028.1	280	2486	112	22.20
सी. जी. बोर्डे (महाराष्ट्र)	950.0	239	2293	103	22.26
वी. पी. गुप्ते (बम्बई)	2004.2	500	5313	237	22.42
आर. जयराम (हैदराबाद)	1057.1	298	2406	107	22.49
गुलरेज अली (मध्य प्रदेश)	1536.3	366	3931	174	22.59

के. चन्द्रशेखरराव (आंध्र)	1091.2	213	2764	122	22.65
ए. घटक (असम)	919.2	186	2657	171	22.70
डी. गोविन्दराज (हैदराबाद)	757.1	169	2275	100	22.75
एस. तलवार (हरियाणा)	1700.0	393	4080	179	22.79
डी. न्यालचन्द (सौराष्ट्र)	2112.0	602	4746	207	22.93
वीनू मांकड़ (राजस्थान)	1856.5	612	3936	170	23.15
सी.एस. नायडू (मध्य प्रदेश)	2282.1	391	6931	295	23.49
वी. एम. भट्टया (सेना)	1049.4	293	2373	101	23.50
एस. वासुदेवन (तमिलनाडू)	1213.0	366	2870	121	23.71
एम. डी. रिगे (बम्बई)	1102.0	363	2598	109	23.83
मोहिन्दर अमरनाथ (दिल्ली)	1224.4	338	3051	128	23.83
अर्जुन नायडू (राजस्थान)	1245.2	371	2904	121	24.00
एस.डब्ल्यू. सोहनी (महाराष्ट्र)	1876.4	285	3405	139	24.50
अमीर इलाही (बड़ौदा)	1564.1	295	4771	193	24.72
ए. जोशी (गुजरात)	2132.4	521	5459	219	24.92
वी. कल्याण सुन्दरम (तमिलनाडू)	846 2	176	3184	127	25.07
के. डी. घावरी (बम्बई)	1857.1	341	4716	188	25.08
यू. जोशी (सौराष्ट्र)	2858.1	783	6886	274	25.13
एस. ए रहीम (विदर्भ)	1230.2	307	2896	115	25.18
आर. चड्ढा (हरियाणा)	981.0	230	2884	113	25.52
पी. जावेरी (गुजरात)	1006.1	227	2794	109	25.63
सी. के. नायडू (होल्कर)	1085.2	243	2802	109	25.71
राजसिंह डूंगरपुर (राजस्थान)	1451.2	273	4850	181	26.79
बी. विजयकृष्णा (कर्नाटक)	2012.1	500	4787	178	26.89
ए. ओगरिल (विदर्भ)	2000.3	295	3676	136	27.02
सी.टी. सरवटे (मध्य प्रदेश)	2401 5	582	7707	281	27.42
डी. मेहरबाबा (आंध्र)	1131.4	196	3378	118	28.62
ए. भागवत (विदर्भ)	1260.4	254	3421	117	29.24
पी. एम. सालगोनकर (महाराष्ट्र)	1236.2	220	4330	148	29.26
सी.आर. विलियम्स (बड़ौदा)	1085.4	209	3679	123	29.90

एन. याई. सायम (बड़ौदा)	1596.4	263	5116	165	31.00
रवि श्रायन (केरल)	1234.3	223	4332	126	34.38
ए. मेघ (महाराष्ट्र)	1442.0	267	7207	150	48.04

एक ही पारी में दस विकेट

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
पी. चटर्जी, बंगाल वि. असम, 1956-57	19	11	20	10
प्रदीप सुन्दरम, राजस्थान वि. विदर्भ 1985-86	22	5	78	10

एक ही पारी में नौ विकेट 1964-65 ... 1984-85

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
वी. वी. कुमार, मद्रास वि. केरल, 1969-70	27.4	4	76	9
बी. एस. चन्द्रशेखर, मैसूर वि. केरल 1969-70	24.1	5	72	9
हैदरअली, रेलवे वि. जम्मू व कश्मीर, 1969-70	14	4	25	9
अमर जीत सिंह, केरल वि. आन्ध्र, 1971-72	12.3	1	45	9
एस. सुपरा, दिल्ली वि. सेना, 1971-72	25	4	70	9
राजेन्द्र सिंह हंस, उत्तर प्रदेश वि. कर्नाटक, 1977-78	55.4	10	152	9
मदन लाल, दिल्ली वि. हरियाणा, 1979-80	21.1	7	31	9
टी. ए. शेखर, तामिलनाडु वि. केरल, 1982-83	14.2	2	54	9

एक ही पारी में आठ विकेट 1964-65 1984-85

	ओ.	मे.ओ.	रन	विकेट
गोकुल इन्द्रदेव, सेना वि. जम्मू व कश्मीर, 1964-65	32	6	71	8

राजेन्द्रपाल, दक्षिण पंजाब वि. जम्मू
व कश्मीर, 1966-67 21.2 7 27 8

एन. वाई. सायम, बड़ौदा वि. महाराष्ट्र,
1967-68 30.5 5 112 8

ए. ओगीरल, विदर्भ वि. मध्य प्रदेश,
1967-68 16 2 39 8

वी. थाम्बुस्वामी, मद्रास वि. आन्ध्र,
1967-68 18.2 5 37 8

महेन्द्र कुमार, आन्ध्र वि. केरल,
1967-68 20.5 6 46 8

गोकुल इन्द्रदेव, सेना वि. जम्मू व कश्मीर,
1968-69 20.3 7 37 8

मुमताज हुसैन, हैदराबाद वि. दिल्ली,
1970-71 38 11 83 8

महेन्द्र कुमार, आन्ध्र वि. मैसूर,
1970-71 28.3 2 118 8

ई. ए. एस. प्रसन्ना, मैसूर वि. आन्ध्र,
1970-71 22.3 5 50 8

पी. के. शिवालकर, बम्बई वि. मैसूर,
1971-72 17.5 10 19 8

ए. डी. सोलकर, रेल्वे वि. दिल्ली,
1972-73 39 8 100 8

पी. के. शिवालकर, बम्बई वि. तामिलनाडू,
1972-73 17.5 10 16 8

एस. लुथरा, दिल्ली वि. सेना,
1973-74 18.2 4 40 8

सी. आर. विलियम्स, बड़ौदा वि. बम्बई,
1974-75 36 2 137 8

उमेश कुमार, पंजाब वि. दिल्ली,
1974-75 25.1 10 37 8

जी. देसाई, रेल्वे वि. सेना,
1974-75 20.4 6 54 8

एस. के पोरेल, सेना वि. जम्मू व कश्मीर,
1976-77 19.3 6 49 8

कपिलदेव, हरियाणा वि. सेना,
1977-78 9.5 1 38 8

आर. गोयल, हरियाणा वि. दिल्ली,
1979-80 34 9 87 8

गजेन्द्र सिंह शक्तावत, सेना वि. पंजाब,
1979-80 11.2 1 41 8

एन. वाई. सायम, बड़ौदा वि. गुजरात,
1980-81 26.5 6 65 8

मदन लाल, दिल्ली वि. बम्बई,
1980-81 40 6 118 8

रघुराम भट्ट, कर्नाटक वि. बम्बई,
1981-82 49.1 10 123 8

राजेन्द्र सिंह हंस, उत्तर प्रदेश वि विदर्भ,
1981-82 14 5 25 8

मनिन्दर सिंह, दिल्ली वि. पंजाब,
1981-82 29.2 12 48 8

डी. परदेसी, बड़ौदा वि. गुजरात,
1981-82 23.4 14 17 8

आर. ठक्कर, बम्बई वि. महाराष्ट्र,
1982-83 42.1 10 102 8

रोजर बिन्नी, कर्नाटक वि. हरियाणा,
1982-83 13 6 22 8

आर. कुलकर्णी, बम्बई वि. दिल्ली,
1982-83 34 1 3 111 8

विवेक मान सिंह, राजस्थान वि. विदर्भ,
1982-83 20.5 6 64 8

संजुमुदकवि, राजस्थान वि. रेल्वे,
1984-85 41.5 14 60 8

वी. वेन्कटराम, बिहार वि. तामिलनाडु,
1984-85 38.4 6 130 8

रवि शास्त्री, बम्बई वि. दिल्ली,
1984-85 39.5 17 91 8

तिकड़ी (हैट ट्रिक)

1964-65......1984-85

रविन्द्रपाल, दिल्ली वि. दक्षिण पंजाब, चंडीगढ़ में,	1965-66
बी. एस. बेदी, दिल्ली वि. पंजाब, नई दिल्ली में,	1968-69
कैलाश गट्टानी, राजस्थान वि. उत्तर प्रदेश, वाराणसी में,	1969-70
यू. एन. कुलकर्णी, बम्बई वि. गुजरात, वल्लभ विद्यानगर में,	1972-73
वी. कल्याण सुन्दरम्, तामिलनाडू वि. बम्बई, मद्रास में,	1972-73
ए. ए. इस्माईल, बम्बई वि. सौराष्ट्र, बम्बई में,	1973-74
रघुराम भट्ट, कर्नाटक वि. बम्बई, बेंगलौर में,	1981-82

शानदार गेंदबाजी

1964-65.......1984-85

4 विकटें 4 रन पर, बी. एस. चन्द्रशेखर, मैसूर वि. आन्ध्र,	1965-66
4 विकटें 4 रन पर, के. एस. वैदनाथन, मद्रास वि. केरल,	1965-66
4 विकटें 6 रन पर, बी. एस. चन्द्रशेखर, मैसूर वि. केरल,	1965-66
4 विकटें 6 रन पर, नजम हुसैन, मैसूर वि. आन्ध्र,	1965-66
4 विकटें 7 रन पर, ई. ए. एस. प्रसन्ना, मैसूर वि. केरल,	1965-66
4 विकटें 7 रन पर, आर. गोयल, दिल्ली वि. जम्मू व कश्मीर	1966-67
4 विकटें 8 रन पर, बी. कल्याण सुन्दरम्, तामिलनाडू वि. बम्बई,	1972-73
4 विकटें 9 रन पर. के. के. राव, सेना वि. दक्षिण पंजाब,	1967-68
5 विकटें 4 रन पर, भरतकुमार, तामिलनाडू वि. आन्ध्र,	1978-79
5 विकटें 6 रन पर, बी. एस. बेदी, दिल्ली वि. सेना,	1974-75
5 विकटें 7 रन पर, मोहिन्दर अमरनाथ, पंजाब वि. जम्मू व कश्मीर	1969-70
5 विकटें 8 रन पर, ए. के. सरकार, सेना वि. जम्मू व कश्मीर	1969-70
5 विकटें 9 रन पर, बी. एस. बेदी, दिल्ली वि. सेना,	1974-75
6 विकटें 4 रन पर, बी. राममूर्ति, आन्ध्र वि. केरल,	1984-85
6 विकटें 6 रन पर, दिलीप दोशी, बंगाल वि. असम,	1974-75
6 विकटें 8 रन पर, ए. जोशी, गुजरात वि. बम्बई,	1977-78

7 विकटें 4 रन पर, आर. गोयल, हरियाणा वि. जम्मू व कश्मीर 1977-78

7 विकटें 5 रन पर, बी. एस. बेदी, दिल्ली वि. जम्मू व कश्मीर 1974-75

7 विकटें 7 रन पर, ए. भट्टाचार्य, बंगाल वि. असम, 1974-75

7 विकटें 10 रन पर, ए. भट्टाचार्य, बिहार वि. असम, 1971-72

7 विकटें 12 रन पर, अनिल माथुर, रेल्वे वि. हैदराबाद, 1975-76

8 विकटें 16 रन पर, पी. के. शिवालकर, बम्बई वि. तामिलनाडू 1972-73

एक ही मैच में 14 या अधिक विकटें

16 विकटें 150 रन पर, प्रदीप सुन्दरम्, राजस्थान वि. विदर्भ, जोधपुर में, नवम्बर 17, 18, 19, 1985 (22-5-78-10 और 24. 4-4-72-6)

15 विकटें 104 रन पर, एस. पी. गुप्ते, राजस्थान वि. विदर्भ, नागपुर में, दिसम्बर 21, 22, 23, 1962 (15-3-45-8 और 15.5-2-59-7)

15 विकटें 109 रन पर, पी. एम. चटर्जी, बंगाल वि. विदर्भ, कलकत्ता में, मार्च 3, 4, 5, 1956 (26-6-50-7 और 28-5-59-8)

14 विकटें 74 रन पर, राजेन्द्र गोयल, हरियाणा वि. जम्मू व कश्मीर, रोहतक में, नवम्बर 29, 30, दिसम्बर 1, 1984 (24-11-36-7 और 31.2-17-38-7)

14 विकटें 75 रन पर, कैलाश गट्टानी, राजस्थान वि. विदर्भः अमरावती में, दिसम्बर 24, 25, 26, 1976 (25.3-8-42-7 और 21.4-3-33-7)

14 विकटें 81 रन पर, गुलाम अहमद, हैदराबाद वि. मद्रास, सिकन्दराबाद में, दिसम्बर 19, 20, 21, 1947 (17.3-7-28-5 और 22.2-4-53-9)

14 विकटें 84 रन पर, डी. चोपड़ा, पंजाब वि. जम्मू व कश्मीर, श्रीनगर में, अक्टूबर 20, 21 और 22, 1982 (18.1-9-32-7 और 25.4-3-52-7)

14 विकटें 104 रन पर, इकबाल करण, सेना वि. पूर्व पंजाब, अमृतसर में, दिसम्बर 9, 10, 11, 1950 (18.3-4-33-6 और 25.2-4-71-8)

14 विकटें 106 रन पर, एस. कुन्डू, बंगाल वि. असम, गोहाटी में, दिसम्बर 10, 11, 12, 1960 (24.4-6-46-7 और 30.1-8-60-7)

14 विकटें 122 रन पर, मनिन्दरसिंह, दिल्ली वि. पंजाब, पटियाला में, नवम्बर 22, 23, 24, 1981 (29.2-12-48-8 और 14-16-74-6)

14 विकटें 128 रन पर, इन्दरदेव, सेना वि. जम्मू व कश्मीर, श्रीनगर में, अक्टूबर 9, 10, 11, 1964 (6 विकटें 57 रन पर और 8 विकटें 71 रन पर)

14 विकटें 151 रन पर, वी. वी. कुमार, तामिलनाडु वि. केरल, शंकर नगर में, सितम्बर 5, 6, 7, 1969 (27.4-4-76-9 और 23.5-5-75-5)

14 विकटें 155 रन पर, वी.के. गरूड़घर, मैसूर वि. मद्रास, बैंगलोर में, दिसम्बर 31, जनवरी 1, 2, 1942 (23-2-56-6 और 21.3-2-99-8)

14 विकटें 194 रन पर. ए. जी. रामसिंह, मद्रास वि. बंगाल, कलकत्ता में, फरवरी 19, 20, 21, 23, 1944 (34.3-5-104-7 और 27.5-4-90-7)

विकेट-रक्षण :

अपने खेल-जीवन में सौ या अधिक को परास्त करने वाले विकेट-रक्षक

111 (73 कै., 38 स्ट.) पी. के. बलिआपा, तामिलनाडू
110 (78 कै., 32 स्ट.) सी. वेदराज, रेलवे
107 (82 कै., 25 स्ट) एफ. एम. इंजिनियर, बम्बई
106 (79 कै., 27 स्ट.) आर. जोजीभोय, बंगाल
105 (85 कै., 20 स्ट.) सुशील बेन्जामिन, राजस्थान
103 (77 कै., 26 स्ट.) एन. एस. तमाणे, बम्बई
102 (67 कै., 35 स्ट.) कुमार श्री इन्द्रजीतसिंह, सौराष्ट्र
102 (57 कै., 45 स्ट.) बी. के. कुन्दरन, कर्नाटक
101 (67 कै.. 34 स्ट.) सैयद किरमानी, कर्नाटक
101 (79 कै., 22 स्ट) ए. भारत रेड्डी, तामिलनाडू

एक खेल वर्ष में बीस या अधिक को परास्त करने वाले विकेट-रक्षक

30 (26 कै., 4 स्ट) जुल्फिकार परकार, बम्बई	1980-81
27 (23 कै., 4 स्ट.) इन्द्रजीतसिंह, दिल्ली	1974-75
26 (16 कै., 10 स्ट.) एस. के. हजारे, बम्बई	1971-72
23 (10 कै., 13 स्ट.) ए. घप्पा, दिल्ली	1971-72
23 (21 कै., 2 स्ट.) एस. बी. तालीम, महाराष्ट्र	1972-73
23 (21 कै , 2 स्ट.) एस. बनर्जी, बंगाल	1675-76
22 (13 कै , 9 स्ट.) कुमार श्री इन्द्रजीतसिंह, दिल्ली	1960-61
22 (17 कै., 5 स्ट.) दलजीतसिंह, बिहार	1975-76
21 (11 कै., 10 स्ट.) आर. बी. निम्बालकर, बड़ोदा	1945-46
21 (20 कै., 1 स्ट.) एफ. एम. इंजिनियर, बम्बई	1966-67
20 (14 कै., 6 स्ट.) एम. जे. लिमाया, बड़ोदा	1957-58
20 (18 कै., 2 स्ट.) सूर्यवीरसिंह, राजस्थान	1961-62
20 (7 कै., 13 स्ट.) बी. के. कुन्दरन, रेलवे	1959-60
20 (13 कै., 7 स्ट.) आर. वेन्कटेश, हैदराबाद	1962-63

एक मैच में पांच या अधिक को परास्त करने वाले विकेट-रक्षक

9 (4 कै., 5 स्ट.) एम. के. मन्त्री, बम्बई वि. उत्तर भारत	1941-42
9 (6 कै., 3 स्ट.) पी. जी. जोशी, महाराष्ट्र वि गुजरात	1959-60
9 (5 कै., 4 स्ट.) कुमार श्री इन्द्रजीतसिंह, सौराष्ट्र वि. महाराष्ट्र	1965-66

8 (8 कै.) दलजीतसिंह, बिहार वि. बंगाल 1978-79
8 (8 कै.) एस. चतुर्वेदी, उत्तर प्रदेश वि. रेल्वे 1984-85
8 (8 कै.) शैलेन्द्र कौशिक, राजस्थान वि. विदर्भ 1979-80
7 (4 कै., 3 स्ट.) पी. मंकोश, मैसूर वि. मद्रास 1936-37
7 (5 कै., 2 स्ट.) एम. ओ. श्रीनिवासन, मद्रास वि. मैसूर 1941-42
7 (6 कै., 1 स्ट) एम. के. मन्त्री, बम्बई वि. मद्रास 1949-50
7 (6 कै., 1 स्ट.) एन. एस. तमाणे, बम्बई वि. बड़ौदा 1953-54
7 (7 कै.) एम. जे. लिमाया, बड़ौदा वि. महाराष्ट्र 1958-59
7 (3 कै., 4 स्ट.) पी. के. बलिआपा, मद्रास वि. केरल 1959-60
7 (4 कै., 3 स्ट.) ए. खन्ना, दिल्ली वि. उत्तर पंजाब 1961-62
7 (7 कै.) सूर्यवीरसिंह, राजस्थान वि. विदर्भ 1961-62
7 (5 कै., 2 स्ट.) बी. के. कुन्दरन, रेल्वे वि. सेना 1961-62
7 (2 कै., 5 स्ट.) दलजीतसिंह, उत्तर पंजाब वि. जम्मू व कश्मीर 1963-64
7 (6 कै., 1 स्ट.) बी. तालीम, महाराष्ट्र वि. गुजरात 1972-73
7 (6 कै., 1 स्ट.) दलजीतसिंह, बिहार वि. दिल्ली 1975-76
7 (7 कै.) चन्द्र विजय, सेना वि. हरियाणा 1977-78
7 (7 कै.) जुल्फेकार परकार, बम्बई वि. दिल्ली 1980-81
7 (5 कै., 2 स्ट.) जुल्फेकार परकार, बम्बई वि. तामिलनाडू 1984-85
6 (5 कै., 1 स्ट.) आर. के. इन्द्रजीतसिंह, दिल्ली वि. बम्बई 1960-61
6 (3 कै., 3 स्ट.) डी. डी. देशपाण्डे, सेना वि. हरियाणा 1972-73
6 (3 कै., 3 स्ट.) ए. भानोत, उत्तर प्रदेश वि. विदर्भ 1973-74
6 (6 कै.) दलजीतसिंह, बिहार वि. बंगाल 1978-79
6 (6 कै.) रणजीत थोमस, केरल वि. तामिलनाडू 1981-82
6 (5 कै., 1 स्ट.) ए. घोष, बिहार वि. असम 1981-82
6 (5 कै., 1 स्ट.) जुल्फेकार परकार, बम्बई वि. महाराष्ट्र 1981-82
6 (6 कै.) भारत रेड्डी, तामिलनाडू वि. केरल 1981-82
5 के. आर. मेहरहोमजी, पश्चिम भारत वि. सिंध 1934-35
5 ईसा खाँ, हैदराबाद वि. मद्रास 1934-35
5 जी. ई. बी. अवेरा, उत्तर भारत वि. सेना 1934-35
5 पी. मंकोश, मैसूर वि. मद्रास 1936-37
5 एम. आर. जैवन्त, सी. पी. और बरार वि. हैदराबाद 1936-37

5 एम. के. मन्त्री, बम्बई वि. उत्तर भारत 1941-42

5 आर. बी. निम्बालकर, बड़ौदा वि. होल्कर 1946-47

5 आर. बी. निम्बालकर, बड़ौदा वि. बम्बई 1948-49

5 एन. एस. तमाणे, बम्बई वि. महाराष्ट्र 1953-54

5 डी. एल. चक्रवर्ती, मद्रास वि. हैदराबाद 1954-55

5 आत्मासिंह, सेना वि. दिल्ली 1954-55

5 दलजीतसिंह, बिहार वि. दिल्ली 1975-76

5 पी. कृष्णामूर्ती, हैदराबाद वि. केरल 1975-76

5 एन. मेनन, मध्य प्रदेश वि. रेल्वे 1975-76

5 एस. बनर्जी, बंगाल वि. हरियाणा 1975-76

5 चन्द्र विजय, सेना वि. हरियाणा 1977-78

जेड. आर. ईरानी कप

अखिल भारतीय क्रिकेट नियन्त्रण बोर्ड ने रणजी ट्राफी प्रतियोगिता की रजत जयन्ती के अवसर पर क्रिकेट को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से एक नई प्रतियोगिता प्रारम्भ की गई जिसके लिये सर्व श्री स्पेन्सर्स कम्पनी ने 2000 रुपये के मूल्य का एक कप प्रदान किया। श्री जेड. आर. ईरानी जो अपने समय के अच्छे क्रिकेट खिलाड़ी रहे और जिनका प्रत्यक्ष सम्बन्ध कोषाध्यक्ष, उपाध्यक्ष और अध्यक्ष के नाते क्रिकेट नियन्त्रण बोर्ड के जन्म से उनके स्वर्गवास 1970, तक रहा, उन्ही के नाम से यह प्रतियोगिता प्रारम्भ हुई और हर वर्ष रणजी ट्राफी की विजेता टीम और शेष भारत की मिली जुली टीम के बीच संघर्ष होता है। इस प्रतियोगिता का पहला मैच दिल्ली में मार्च 18, 19 और 20, 1961 को खेला गया।

खेले गये मैचों की संक्षिप्त में रन गणना इस प्रकार है :

दिल्ली में, मार्च 18, 19 और 20, 1961 को। राष्ट्रीय विजेता (बम्बई) 344 (उमरीगर 102, रामचन्द 82) और पांच विकटों पर 210 और पारी समाप्ति की घोषणा। शेष भारत 298 (कान्ट्रेक्टर 108, जय सिम्हा 105, अमरोलीवाला 6 विकटें 44 रनों पर) और सात विकटों पर 111 (प्रेम भाटिया 50 मैच मे हार-जीत का फैसला नही हो सका, लेकिन ट्राफी बम्बई को प्रदान की गई क्योकि पहली पारी में उसके रनों की संख्या अधिक थी।

1960-61 मैच नही खेला गया।

1961-62 मैच नही खेला गया।

1962-63 : बम्बई में, अप्रेल 5, 6, और 7, 1963 को शेष भारत 397 (पंकज रॉय 132, एम. एस. गुप्ते 93, एम. एल. जयसिम्हा 50) और 219 छह विकटो पर। बम्बई 566 पांच विकटो पर और पारी समाप्ति की घोषणा (एस. जी. अधिकारी 173; उमरीगर 124 अपराजित, एफ. एम. इंजीनियर 72, आर. जी. नाडकर्णी 91, वी. जे. परान्जपे 66) पहली पारी मे बढ़त के कारण ट्राफी बम्बई को प्रदान की गई।

1963-64 : अनन्तपुर मे, मार्च 27, 28 और 29, 1964 को बम्बई 204 (आर. जी. नाडकर्णी 60) और 145 (बी. एस. चन्द्रशेखर 7 विकेटें

41 रन पर) शेष भारत 83 (नाडकर्णी 5 विकटें 11 रन पर) और 157 (सी. एच. भोसले 59, पी. सी. पोद्दार 52, बालगुप्ते 8 विकटें 48 रन पर) बम्बई की 109 रनों से जीत।

1964-65 मैच नही खेला गया।

1965-66 मद्रास में, सितम्बर 18, 19, 20 और 21, 1965 को शेष भारत 243 (रुसी सूर्ती 53) बम्बई नौ विकटों पर 174 (ए. एल. वाडेकर 64)

वर्षा के कारण दोनों टीमो की प्रथम पारी समाप्त नही हो सकी इस लिये ट्राफी पर दोनो टीमों का अधिकार रहा।

1966-67 : कलकत्ता में, नवम्बर 25, 26, 27, और 28, 1966 को बम्बई 113 (ए. एल. वाडेकर 56) और 99 शेष भारत 134 (अम्बर रॉय 50) और चार विकटों पर 81 रन। शेष भारत की छह विकटों से जीत।

1967-68 : बम्बई में, नवम्बर 4, 5, 6 और 7, 1967 को। बम्बई 299 (अशोक मांकड 79, एम. एस. हर्डीकर 65) और आठ विकटो पर 284 और पारी समाप्ति की घोषणा (अशोक मांकड 97) शेष भारत 184 (कुमार श्री इन्द्रजीतसिंह 60) और आठ विकटों पर 230। पहली पारी की बढ़त के कारण ट्राफी बम्बई को प्रदान की गई।

1968-69 : बम्बई में, नवम्बर 26, 27, 28 और 29, 1968 को। शेष भारत 341 (नवाब मंसूर अली 98) और नौ विकटों पर 191 और पारी समाप्ति की घोषणा (सोलकर 5 विकटें 72 रन पर) बम्बई 224 एस. एस. नायक 92, वाडेकर 50, सी. जी. जोशी 5 विकटें 77 रन पर) और 189 (सोलकर 50, वैंकटराघवन 5 विकटें 55 रन पर)। शेष भारत की 119 रनों से जीत।

1969-70 : पूना में, अगस्त 29, 30, 31 और सितम्बर 1, 1969 को। बम्बई 236 (डी. एन. सरदेसाई 53, वाडेकर 52, वैंकटराघवन 7 विकटें 43 रन पर) और 137 (वाडेकर 69, वैंकटराघवन 4 विकटें 32 रन पर) शेष भारत 96 और दो विकटों पर 77 रन। पहली पारी की बढ़त के कारण ट्राफी बम्बई को प्रदान की गई।

1970-71 : कलकत्ता में, दिसम्बर 19, 20, 21 और 22, 1970 को। बम्बई 418 (वाडेकर 164, अशोक मांकड़ 113) और एक विकेट पर 99 और पारी समाप्ति की घोषणा। शेष भारत 378 (सलीम दुर्रानी

105, अम्बर रॉय 61, सोलकर पांच विकटें 121 रन पर) और बिना विकेट खोये 25 रन। पहली पारी की बढ़त के कारण ट्राफी बम्बई को प्रदान की गई।

1971-72 : बम्बई में, अक्टूबर 22, 23, 24 और 25, 1971 को। शेष भारत 287 (मोहिन्दर अमरनाथ 67, के जयन्तीलाल 65) और 236 (जी. आर. विश्वनाथ 109, के. जयन्तीलाल 64) बम्बई 195 (आर. डी. परकार 58) और 217 (ए. एम. पाई 50)। शेष भारत की 111 रनों से जीत।

1972-73 : पूना मे, अक्टूबर 28, 29, 30 और 31, 1972 को। बम्बई 236 (आर. डी. परकार 70, डी. एन. सरदेसाई 65) और 443 रन नौ विकटों पर (आर. डी. परकार 195, डी. एन. सरदेसाई 121, अशोक माकड़ 64) शेष भारत 110 (शिवालकर 6 विकटें 34 रन पर) और 349 (जी. आर. विश्वनाथ 161 अपराजित, एच. एस. कनीतकर 93) बम्बई की 220 रनों से जीत।

1973-74 : बंगलौर मे, नवम्बर 9, 10, 11 और 12, 1973 को। शेष भारत : 444 (गोपाल बोस 170, जी. आर. विश्वनाथ 76, के जयन्तीलाल 72, बो. पी. पटेल 56, शिवालकर पाच विकटें 130 रन पर) और दो विकटों पर 77, बम्बई 233 (एम. डी. रिगे 67, एस. एस. नायक 58) और आठ विकटों पर 372 रन और पारी समाप्ति की घोषणा (सुनील गावस्कर 108, एस. एस. नायक 58, आर. डी. परकार 50)। पहली पारी की बढ़त के कारण शेष भारत को ट्राफी प्रदान की गई।

1974-75 : पूना मे, अक्टूबर 25, 26, 27 और 28, 1974 को। कर्नाटक 359 (सुधाकरराव 115, किरमानी 99, जी. आर. विश्वनाथ 52, बेदी पांच विकटें 111 रन पर) और 314 दो विकटो पर और पारी समाप्ति की घोषणा (जी. आर. विश्वनाथ 200 अपराजित, एस. देसाई 55) शेष भारत 307 (गावस्कर 156 अपराजित, गोपाल बोस 62, बी. एस बेदी 56, ई. ए. एस. प्रसन्ना 5 विकटें 78 रन पर) और तीन विकटों पर 214 (गोपाल बोस 100, पी. शर्मा 54) पहली पारी की बढ़त के कारण कर्नाटक को ट्राफी प्रदान की गई।

1975-76 : नागपुर मे, अक्टूबर 31, नवम्बर 1, 2 और 3, 1975 को। शेष भारत 210 (जी. आर विश्वनाथ 72, शिवालकर 6 विकटें 74 रन पर) और 212 (जी. आर. विश्वनाथ 52, करसन घावरी पांच विकटें

63 रन पर) बम्बई 305 (डी. बी. वेंगसरकर 110, अशोक मांकड 58, ई. ए. एस. प्रसन्ना छः विकटें 110 रन पर) और बिना विकेट खोये 13 रन। पहली पारी की बढ़त के कारण बम्बई ने ट्राफी जीती।

1976-77 : नई दिल्ली में, अक्टूबर 15, 16 और 17, 1976। शेष भारत 173 (यजुवेन्द्रसिंह 61) और 183 (मदनलाल 61 अपराजित, शिवालकर छः विकटें 88 रनों पर) बम्बई 327 (अशोक मांकड़ 94, डी. बी. वेंगसरकर 90, एस. एम गन्डीवेडकर 57 अपराजित) और बिना विकेट खोये 30 रन। बम्बई की दस विकटो से जीत।

1977-78 : बम्बई में, जनवरी 27, 28, 29 और 30, 1978। शेष भारत पांच विकटों पर 540 और पारी समाप्ति की घोषणा (पी. शर्मा 200, बी. सुन्दरम 177, टी. ई. श्रीनिवासन 94) बम्बई 142 बी. मोहनराज 53) और 230 (राहुल मांकड 97, डी. डी. प्रसन्ना पांच विकटें 83 रन पर) शेष भारत की एक पारी और 168 रनो से जीत।

1978-79 : बेंगलोर में, सितम्बर 16, 17, 18 और 19, 1978। कर्नाटक 202 (सुधाकर राव 56) और 354 (जी. आर. विश्वनाथ 110, सुधाकर राव 100, डी. डी प्रसन्ना पांच विकटें 127 रन पर)। शेष भारत आठ विकटों पर 464 और पारी समाप्ति की घोषणा (डी. बी. वेंगसरकर 151, सुरेन्द्र अमरनाथ 62, कपिलदेव 62 अपराजित) और एक विकेट पर 93 रन, शेष भारत की नौ विकटो से विजय।

1979-80 : जालन्धर में, वर्षा के कारण मैच खेला नही जा सका।

1980-81 : दिल्ली में, शेष भारत नौ विकटो पर 507 और पारी समाप्ति की घोषणा (डी. बी वेंगसरकर 112, जी. आर विश्वनाथ 98, सैयद किरमानी 75, रोजर बिन्नी 70) और पांच विकटों पर 232 रन टी. ई. श्रीनिवासन 101 अपराजित) दिल्ली आठ विकटो पर 628 और पारी समाप्ति की घोषणा (सुरेन्द्र अमरनाथ 235 अपराजित, मदनलाल 110, कीर्ति आजाद 94, आर. लाम्बा 57) और एक विकेट पर 12 रन पहली पारी की बढ़त के कारण दिल्ली ने ट्राफी जीती।

1981-82 : इन्दौर में, अक्टूबर 16, 17, 18 और 19, 1981। बम्बई 445 (संदीप पाटिल 125, रवि शास्त्री 80, गावस्कर 50, अशोक मांकड 50) और चार विकटो पर 216 और पारी समाप्ति की घोषणा (गावस्कर 102 अपराजित, संदीप पाटिल 68) शेष भारत 261 (मदनलाल 97 अपराजित, रवि शास्त्री नौ विकटें 101 रन पर) और पांच विकेट

पर 210 रन (सुरेन्द्र अमरनाथ 66) पहली पारी की बढ़त के कारण बम्बई ने ट्राफी जीती।

1982-83 : नई दिल्ली में, अक्टूबर 21, 22, 23 और 24, 1982। दिल्ली 429 (मोहिन्दर अमरनाथ 127, गुरशरणसिंह 94, आर. लाम्बा 93, बी. एस. सन्धु पांच विकटें 110 रन पर) और 258 (मोहिन्दर अमरनाथ 52) शेष भारत 267 (के. श्रीकांत 83, अशोक मल्होत्रा 67, मनिन्दरसिंह छः विकटें 66 रन पर) और पांच विकेट पर 424 रन (अशोक मल्होत्रा 116 अपराजित, के. श्रीकांत 110, अरूणलाल 81) शेष भारत की पांच विकटों से जीत

1983-84 : राजकोट मे, सितम्बर 1, 2, 3, और 4, 1983। कर्नाटक 350 (एम. आर. श्रीनिवास प्रसाद 117, सुधाकर राव 67) और नौ विकटों पर 405 और पारी समाप्ति की घोषणा (रोजर बिन्नी 158, सुधाकर राव 62, जे. अभीराम 50) शेष भारत 185 (यशपाल शर्मा 76, रघुराम भट्ट पांच विकटें 65 रन पर) और तीन विकटो पर 186 (मोहिन्दर अमरनाथ 66 अपराजित, यशपाल शर्मा 53 अपराजित) प्रथम पारी की बढत से कर्नाटक ने ट्राफी जीती।

1984-85 : दिल्ली मे, सितम्बर 7, 8, 9 और 11, 1984। बम्बई 236 (रवि शास्त्री 58) और 163 (जी. परकार 55) शेष भारत 293 और छः विकटो पर 107 रन (मोहम्मद अजहरूद्दीन 51 अपराजित) शेष भारत की चार विकटो से विजय।

जेड. आर. इरानी कप प्रतियोगिता में 500 और अधिक रन

	मैच	पारी	अपराजित	योग	उच्चतम	औसत
जी. आर. विश्वनाथ (कर्नाटक और शेष भारत)	9	15	2	1001	200*	77.00
डी. बी. वेंगसरकर (बम्बई और शेष भारत)	7	11	1	576	151	57.60
सुनील गावस्कर (बम्बई और	12	22	4	733	156*	40.27

शेष भारत)						
ए. एल. वाडेकर (बम्बई)	11	19	1	691	164	38.38
अशोक मांकड (बम्बई)	13	23	0	766	113	33.30

सौ रन से अधिक की साझेदारी

प्रथम विकेट

151, गोपाल बोस और जयन्ती लाल, शेष भारत वि. बम्बई, 1973-74

146, एफ. एम. इंजिनियर और एस. जी. अधिकारी, बम्बई, वि. शेष भारत, 1962-63

143, गावस्कर और श्रीकान्त, शेष भारत वि. दिल्ली, 1982-83

129, गावस्कर और गोपाल बोस, शेष भारत वि. कर्नाटक, 1974-75

दूसरा विकेट

250, अशोक मांकड और ए एल. वाडेकर, बम्बई वि. शेष भारत, 1970-71

196, एन. जे. कान्ट्रेक्टर और एम. एल. जय सिम्हा, शेष भारत वि. बम्बई, 1959-60

178, वी. सुन्दरम और टी. ई. श्रीनिवासन, शेष भारत वि. बम्बई, 1977-78

171, एस. देसाई और जी. आर. विश्वनाथ, कर्नाटक वि. शेष भारत, 1974-75

147, एस. जी. अधिकारी और वी. जे. प्रान्जपे, बम्बई वि. शेष भारत, 1963-64

140, आर. लाम्बा और गुरशरणसिंह, दिल्ली वि. शेष भारत, 1982-83

134, सुनील गावस्कर और एस. एस. नायक, बम्बई वि. शेष भारत, 1973-74

108, एम. एल. आप्टे और एच. डी. अमरोलीवाला, बम्बई वि. शेष भारत, 1959-60

107, श्रीकान्त और अशोक मल्होत्रा, शेष भारत वि. दिल्ली, 1982-83

104, सुनील गावस्कर और एस. एस. नायक;
बम्बई वि. शेष भारत, 1973-74

104, डी. बी. वेंगसरकर और टी. ई. श्रीनिवासन,
शेष भारत वि. दिल्ली, 1980-81

तीसरा विकेट

193, वी. सुन्दरम और पी. शर्मा, शेष भारत वि. बम्बई, 1977-78

149, डी. बी. वेंगसरकर और जी. आर. विश्वनाथ,
शेष भारत वि. दिल्ली, 1980-81

140, गोपाल बोस और जी. आर. विश्वनाथ,
शेष भारत वि. दिल्ली, 1973-74

137, जी. आर. विश्वनाथ और एच. एस कनितकर,
शेष भारत वि बम्बई, 1972-73

137*, जी. आर. विश्वनाथ और बी. पी पटेल,
कर्नाटक वि. शेष भारत 1974-75

125, आर. डी. परकार और डी. एन. सरदेसाई,
बम्बई वि. शेष भारत, 1972-73

127, जयन्ती लाल और जी आर विश्वनाथ,
शेष भारत वि. बम्बई, 1972-73

115, सलीम दुर्रानी और ए. गनडोतरा, शेष भारत
वि. बम्बई, 1970-71

100, डी. बी. वेंगसरकर और संदीप पाटिल,
बम्बई वि. शेष भारत, 1981-82

चौथा विकेट

222, डी. बी. वेंगसरकर और यशपाल शर्मा,
शेष भारत वि. [illegible] 1978-79

192, आर. जी. नाडकर्णी [illegible]
वि. [illegible] 3-64

187, उमरीगर और एम. ए [illegible] वि. [illegible] 60

167, अशोक म[illegible]ां और [illegible]

162, डी [illegible] औ[illegible]

152, सुरेन्द्र अमरनाथ और कीर्ति आजाद, दिल्ली
वि. शेष भारत, 1980-81

146, अशोक मांकड और डी. वी. वेंगसरकर, बम्बई
वि. शेष भारत, 1975-76

130, गावस्कर और संदीप पाटिल, बम्बई वि. शेष भारत, 1981-82

128 सी. जी. बोर्डे और मसूर अली पटौदी शेष भारत
वि बम्बई 1968-69

पांचवा विकेट

108, यशपाल शर्मा और पी. शर्मा, शेष भारत वि. बम्बई 1977-78

छठा विकेट

177, पंकज रॉय और एम. एस. गुप्ते, शेष भारत वि. बम्बई 1962-63

172, सुधाकर राव और सैयद किरमानी, कर्नाटक वि.
वि. शेष भारत, 1974-75

140, रोजर बिन्नी और सुधाकर राव, कर्नाटक वि. शेष भारत, 1983-84

107, श्रीनिवास प्रसाद और सुधाकर राव, कर्नाटक वि.
शेष भारत, 1983-84

सातवां विकेट

219, सुरेन्द्र अमरनाथ और मदनलाल, दिल्ली वि. शेष भारत 1980-81

167, आर. डी. परकार और डी. एन. सरदेसाई, बम्बई
वि. शेष भारत 1972-73

122, सैयद किरमानी और रोजर बिन्नी, शेष भारत वि. दिल्ली 1980-81

आठवां विकेट

121, पी. सी. पोद्दार और वी. एच. भोसले, शेष भारत
वि. बम्बई, 1963-64

नवां विकेट

109, गावस्कर और बी. एस. बेदी, शेष भारत वि. बम्बई, 1974-75

दस या अधिक विकेट एक मैच में

11 विकटें 74 रन पर, बी. पी. गुप्ते, बम्बई वि. शेष भारत, 1963-64

11 विकटें 75 रन पर, एस. वेंकटराघवन, शेष भारत
वि. बम्बई, 1969-70

11 विकटें 147 रन पर, रवि शास्त्री, बम्बई वि.
शेष भारत, 1981-82

10 विकटें 97 रन पर, बी. एस. चन्द्रशेखर वि. शेष भारत, 1963-64

10 विकटें 138 रन पर, पी. के शिवालकर, बम्बई वि.
शेष भारत, 1976-77

——

दिलीपसिंहजी ट्राफी के लिये अखिल भारतीय क्षेत्रीषु प्रतियोगिता

क्रिकेट नियन्त्रण बोर्ड की 33वीं वार्षिक सामान्य बैठक में, जो सितम्बर 30, 1961 को मद्रास में हुई, यह निर्णय लिया गया कि विश्व विख्यात क्रिकेट खिलाड़ी कुमार श्री दिलीपसिंह जी की स्मृति में एक प्रतियोगिता का आयोजन किया जाय। क्रिकेट नियन्त्रण बोर्ड ने इसके लिये 5000 रुपये की लागत की एक ट्रॉफी प्रदान की और 1961-62 से दिलीपसिंह जी ट्राफी के लिये अखिल भारतीय क्षेत्रीय प्रतियोगिता आरम्भ हुई। इसका प्रथम मैच मद्रास में 30 सितम्बर, 1961 को दक्षिण क्षेत्र और उत्तर क्षेत्र के बीच खेला गया। तब से समस्त क्षेत्रीय दल नियमपूर्वक इस प्रतियोगिता में भाग ले रहे हैं और इसके विजेता और उपविजेता निम्न प्रकार हैं—

वर्ष	विजेता	उपविजेता
1961-62	पश्चिम क्षेत्र	दक्षिण क्षेत्र
1962-63	पश्चिम क्षेत्र	दक्षिण क्षेत्र
1963-64	पश्चिम क्षेत्र और दक्षिण क्षेत्र	संयुक्त विजेता
1964-65	पश्चिम क्षेत्र	मध्य क्षेत्र
1965-66	दक्षिण क्षेत्र	मध्य क्षेत्र
1966-67	दक्षिण क्षेत्र	पश्चिम क्षेत्र
1967-68	दक्षिण क्षेत्र	पश्चिम क्षेत्र
1968-69	पश्चिम क्षेत्र	दक्षिण क्षेत्र
1969-70	पश्चिम क्षेत्र	उत्तर क्षेत्र
1970-71	दक्षिण क्षेत्र	पूर्व क्षेत्र
1971-72	मध्य क्षेत्र	पश्चिम क्षेत्र
1972-73	पश्चिम क्षेत्र	मध्य क्षेत्र
1973-74	उत्तर क्षेत्र	मध्य क्षेत्र
1974-75	दक्षिण क्षेत्र	पश्चिम क्षेत्र
1975-76	दक्षिण क्षेत्र	उत्तर क्षेत्र
1976-77	पश्चिम क्षेत्र	उत्तर क्षेत्र

1977-78	पश्चिम क्षेत्र	उत्तर क्षेत्र
1978-79	उत्तर क्षेत्र	पश्चिम क्षेत्र
1979-80	उत्तर क्षेत्र	पश्चिम क्षेत्र
1980-81	पश्चिम क्षेत्र	पूर्व क्षेत्र
1981-82	पश्चिम क्षेत्र	पूर्व क्षेत्र
1982-83	उत्तर क्षेत्र	पश्चिम क्षेत्र
1983-84	उत्तर क्षेत्र	पश्चिम क्षेत्र
1985-84	दक्षिण क्षेत्र	उत्तर क्षेत्र

प्रतियोगिता में 1000 और अधिक रन बनाने वाले

नाम	मैच	पारी	अपराजित	योग	उच्चतम	औसत
अ. एल. वाडेकर (पश्चिम)	18	25	2	1545	229	67.17
सुनील गावस्कर (पश्चिम)	20	29	3	1525	228	58.65
बी. पी. पटेल (दक्षिण)	14	22	1	1190	163	56.67
सी.पी.एस. चौहान (पश्चिम व उत्तर)	18	29	5	1299	150	54.12
एम. एल. जयसिम्हा (दक्षिण)	23	33	2	1456	175	46.96
मंसूर अली खाँ पटौदी (उत्तर व दक्षिण)	17	26	1	1111	200	44.44
अम्बर रॉय (पूर्व)	19	29	4	1092	127	43.68
मदनलाल (उत्तर)	24	33	6	1180	143*	42.42
हनुमन्तसिंह (मध्य)	24	37	6	1306	210	42.12
सलीम दुर्रानी (मध्य)	22	35	2	1380	119	41.82

मोहिन्दर अमरनाथ (उत्तर)	26	41	9	1290	207	40.31
ए. डी. गायकवाड (पश्चिम)	22	36	3	1387	147	40.03
पी. शर्मा (मध्य)	25	40	4	1379	111	38.31
सुरेन्द्र अमरनाथ (उत्तर)	22	37	3	1264	122*	37.37
अशोक मांकड़ (पश्चिम)	25	35	6	1014	127*	34.96

प्रतियोगिता में शतक

सैयद आबिद अली	120 दक्षिण वि. पूर्व	1970-71
एस. जी. अधिकारी	111 पश्चिम वि. उत्तर	1962-63
	103 पश्चिम वि. दक्षिण	1962-63
आकाशलाल	136 उत्तर वि. पश्चिम	1962-63
	149 उत्तर वि. पश्चिम	1967-68
सुरेन्द्र अमरनाथ	122 उत्तर वि. दक्षिण	1975-76
	107 उत्तर वि. दक्षिण	1977-78
मोहिन्दर अमरनाथ	207 उत्तर वि. पश्चिम	1982-83
अरूणलाल	104 पूर्व वि. दक्षिण	1981-82
	109 पूर्व वि. पश्चिम	1981-82
कीर्ति आजाद	156 उत्तर वि. पूर्व	1982-83
मंजहरुद्दीन	226 दक्षिण वि. मध्य	1983-84
अब्बासअलीबेग	159 दक्षिण वि. उत्तर	1965-66
	224* दक्षिण वि. उत्तर	1966-67
अविक मित्रा	115 पूर्व वि. मध्य	1984-85
वी. एच. भोसले	110 पश्चिम वि. पूर्व	1964-65
	100 पश्चिम वि. मध्य	1964-65
	126 पश्चिम वि. दक्षिण	1968-69
चन्दू बोर्डे	116 पश्चिम वि. मध्य	1961-62
	105 पश्चिम वि. मध्य	1966-67

गोपाल बोस	113 पूर्व वि. दक्षिण	1970-71
एस. चतुर्वेदी	115 मध्य वि. दक्षिण	1983-84
ए. डी. गायकवाड़	115* पश्चिम वि. उत्तर	1975-76
	129 पश्चिम वि. मध्य	1980-81
	147 पश्चिम वि. पूर्व	1980-81
	104 पश्चिम वि. उत्तर	1982-83
	131 पश्चिम वि. दक्षिण	1983-84
	143 पश्चिम वि. उत्तर	1983-84
एम. डी. गुन्जल	117* पश्चिम वि. दक्षिण	1984-85
हनुमन्तसिंह	118 मध्य वि. दक्षिण	1962-63
	210 मध्य वि. दक्षिण	1964-65
	168* मध्य वि. पूर्व	1965-66
	117* मध्य वि. उत्तर	1971-72
ए. जय्यर	105 दक्षिण वि. मध्य	1983-84
एम. एल. जयसिम्हा	160 दक्षिण वि. उत्तर	1965-66
	171 दक्षिण वि. पश्चिम	1966-67
	175 दक्षिण वि. मध्य	1970-71
	131 दक्षिण वि. पूर्व	1970-71
के. जयन्तीलाल	134 दक्षिण वि. पश्चिम	1970-71
आर. कनविल्कर	156 दक्षिण वि. पश्चिम	1984-85
एस. खन्ना	134 उत्तर वि. पूर्व	1978-79
	146 उत्तर वि. पश्चिम	1983-84
वी. के. कुन्दरन	100 दक्षिण वि. पश्चिम	1965-66
वी. लाम्बा	116 उत्तर वि. पूर्व	1972-73
लक्ष्मणसिंह	124 मध्य वि. दक्षिण	1975-76
वी. एल. मान्जरेकर	102 मध्य वि. पश्चिम	1961-62
	113 मध्य वि. उत्तर	1964-65
सी. पी. एस. चौहान	103 पश्चिम वि. दक्षिण	1968-69
	106* उत्तर वि. पूर्व	1975-76
	116* उत्तर वि. पश्चिम	1975-76
	150 उत्तर वि. मध्य	1976-77
	128 उत्तर वि. पश्चिम	1977-78

वाई. एम. चौधरी	140 उत्तर वि. पूर्व	1966-67
एन. जे. कान्ट्रैक्टर	144 पश्चिम वि. पूर्व	1963-64
	130 पश्चिम वि. दक्षिण	1967-68
एम. दलवी	112 दक्षिण वि. मध्य	1975-76
एच. टी. दानी	170 उत्तर वि. दक्षिण	1966-67
	154 उत्तर वि. पूर्व	1966-67
के. दुबे	101 पूर्व वि. उत्तर	1980-81
	105 पूर्व वि. उत्तर	1983-84
सलीम दुर्रानी	110 मध्य वि. पूर्व	1961-62
	119 मध्य वि. पश्चिम	1964-65
एफ. एम. इन्जिनियर	142 पश्चिम वि. मध्य	1964-65
सुनील गावस्कर	101 पश्चिम वि. पूर्व	1971-72
	228 पश्चिम वि. दक्षिण	1976-77
	169 पश्चिम वि. मध्य	1977-78
	130* पश्चिम वि. उत्तर	1978-79
	164* पश्चिम वि. मध्य	1981-82
एस. पी. गायकवाड	138 पश्चिम वि. पूर्व	1963-64
मदनलाल	104* उत्तर वि. पश्चिम	1975-76
	143* उत्तर वि. पश्चिम	1979-80
अशोक मल्होत्रा	106 उत्तर वि. पूर्व	1978-79
	139 उत्तर वि. पूर्व	1982-83
अशोक मांकड	100* पश्चिम वि. पूर्व	1971-72
	101 पश्चिम वि. पूर्व	1976-77
	127* पश्चिम वि. उत्तर	1977-78
	100* पश्चिम वि. पूर्व	1980-81
वी. एल. मेहरा	100 उत्तर वि. पूर्व	1967-68
ए. जी. मिलखासिंह	151 दक्षिण वि. उत्तर	1961-62
	108 दक्षिण वि. पश्चिम	1965-66
सन्जुमुदकवि	184 मध्य वि. पूर्व	1984-85
आर. डी. परकार	131 पश्चिम वि. पूर्व	1971-72
सी. पंडित	126 पश्चिम वि. दक्षिण	1984-85
मंसूरअली पटौदी	141 उत्तर वि. दक्षिण	1963-64

	132 दक्षिण वि. पश्चिम	1965-66
	200 दक्षिण वि. पश्चिम	1967-68
बी. पी. पटेल	100 दक्षिण वि. मध्य	1975-76
	105 दक्षिण वि. उत्तर	1975-76
	132 दक्षिण वि. पश्चिम	1976-77
	100 दक्षिण वि. मध्य	1978-79
	163 दक्षिण वि. पूर्व	1979-80
	126 दक्षिण वि. उत्तर	1981-82
संदीप पाटिल	108 पश्चिम वि. दक्षिण	1983-84
पी. सी. पोद्दार	104 पूर्व वि. मध्य	1963-64
प्रेम भाटिया	107 उत्तर वि. पूर्व	1962-63
अम्बर रॉय	104 पूर्व वि. उत्तर	1966-67
	127 पूर्व वि. पश्चिम	1976-77
संजीव राव	188 मध्य वि. दक्षिण	1980-81
डी. एन. सरदेसाई	151 पश्चिम वि. मध्य	1966-67
	155 पश्चिम वि. मध्य	1972-73
मोहम्मद शाहिद	116 मध्य वि. दक्षिण	1978-79
पी. शर्मा	103 मध्य वि. उत्तर	1976-77
	103 मध्य वि. दक्षिण	1978-79
	111 मध्य वि. दक्षिण	1980-81
रविशास्त्री	134 पश्चिम वि. पूर्व	1981-82
वी. शिवारामा कृष्णन	104 दक्षिण वि. मध्य	1980-81
के. श्रीकान्त	101 दक्षिण वि. पश्चिम	1984-85
टी. ई. श्रीनिवासन	112 दक्षिण वि. उत्तर	1977-78
	149 दक्षिण वि. पूर्व	1979-80
ई. डी. सोलकर	145 पश्चिम वि. उत्तर	1966-67
वी. सुब्रमणियम	120 दक्षिण वि. उत्तर	1963-64
	123 दक्षिण वि. पश्चिम	1966-67
रूसी सूर्ती	104 पश्चिम वि. उत्तर	1967-68
	127 पश्चिम वि. उत्तर	1969-70
उदयभानु मुखर्जी	165 पूर्व वि. दक्षिण	1979-80
पी. आर. उमरीगर	120 पश्चिम वि. उत्तर	1962-63

	103 पश्चिम वि. दक्षिण	1962-63
डी. बी. वेंगसरकर	175 पश्चिम वि. मध्य	1977-78
	137 पश्चिम वि. उत्तर	1977-78
	508 पश्चिम वि. पूर्व	1981-82
ए. एल. वाडेकर	229 पश्चिम वि. पूर्व	1964-65
	103 पश्चिम वि. दक्षिण	1966-67
	1ς6 पश्चिम वि. दक्षिण	1967-68
	144 पश्चिम वि. दक्षिण	1968-69
	171 पश्चिम वि. मध्य	1972-73
	151 पश्चिम वि. दक्षिण	1972-73
यशपाल शर्मा	173 उत्तर वि. दक्षिण	1977-78
	134 उत्तर वि. मध्य	1982-83
	123 उत्तर वि. पूर्व	1983-84
	100 उत्तर वि. मध्य	1984-85

* अपराजित पारी

हर विकेट की अधिकतम साझेदारी

पहला विकेट

270 एन. जे. कॉन्ट्रैक्टर और एस. पी. गायकवाड, पश्चिम वि. पूर्व 1963-64

225 गावस्कर और आर. डी. परकार, पश्चिम वि. पूर्व 1971-72

174 गावस्कर और ए. डी. गायकवाड, पश्चिम वि. उत्तर . 1975-76

163 वी. लाम्बा और वी. सुन्दरम, पूर्व वि. उत्तर 1972-73

156 एस. विश्वनाथ और के. श्रीकान्त, दक्षिण वि. पश्चिम 1984-85

दूसरा विकेट

264 गावस्कर और डी. बी. वेंगसरकर, पश्चिम वि. मध्य 1977-78

209 ए. डी. गायकवाड और ए. एच. मेहता, पश्चिम वि. मध्य 1980-81

195 प्रनव रॉय और अरुणलाल, पूर्व वि. पश्चिम 1981-82

179 एन. जे. कॉन्ट्रैक्टर और ए. एल. वाडेकर, पश्चिम वि. दक्षिण 1967-68

162 गावस्कर और ए. एल. वाडेकर, पश्चिम वि. दक्षिण 1972-73

तीसरा विकेट

320 ए. एल. वाडेकर और डी. एन. सरदेसाई, पश्चिम वि. मध्य 1972-73
290 ए. एल. वाडेकर और बी. एच. भोसले, पश्चिम वि. पूर्व 1964-65
232 अजहरुद्दीन और ए. जब्बर, दक्षिण वि. मध्य 1983-84
205 सलीम दुर्रानी और बी. एल. मान्जरेकर, मध्य वि. पश्चिम 1961-62
197 डी. एन. सरदेसाई और चन्दू बोर्डे, पश्चिम वि. मध्य 1966-67
192 आर. माधवन और आर. कनविलकर, दक्षिण वि. पश्चिम 1984-85
184 ए. एल. वाडेकर और बी. एच. भोसले, पश्चिम वि. पूर्व 1964-65
183 ए. डी. गायकवाड और अशोक मांकड़, पश्चिम वि. पूर्व 1980-81
180 टी. ई. श्रीनिवासन और बी. पी. पटेल, दक्षिण वि. पूर्व 1979-80
177 गोपाल बोस और रमेश सक्सेना, पूर्व वि. दक्षिण 1970-71
175 सी. पी. एस. चौहान और मदनलाल, उत्तर वि. पश्चिम 1975-76
174 अशोक मल्होत्रा और मोहिन्दर अमरनाथ, उत्तर वि. पश्चिम 1982-83
165 इन्दरजीत सिंह और सी. जी. बोर्डे, पश्चिम वि. मध्य 1961-62
165 ए. डी. गायकवाड़ और संदीप पाटिल, पश्चिम वि. दक्षिण 1983-84

चौथा विकेट

273 मोहिन्दर अमरनाथ और कीर्ति आजाद, उत्तर वि पूर्व 1982-83

204 एम. एल. जयसिम्हा और आबिद अली, दक्षिण वि. पूर्व ..1970-71
199 संजीव राव और पी. शर्मा, मध्य वि. दक्षिण ... 1980-81
183* सी. पी. एस. चौहान और सुरेन्द्र अमरनाथ, उत्तर वि. पूर्व 1975-76
181 डी. एन. सरदेसाई और रूसी सूर्ती, पश्चिम वि. उत्तर 1969-70
180 वी. एच. भोसले और सी. जी. बोर्डे, पश्चिम वि. मध्य 1964-65
167 अशोक मांकड़ और एच. एस. कनित्तकर, पश्चिम वि. पूर्व ... 1971-72
157 बी. पी. पटेल और एम. दलवी, दक्षिण वि. मध्य 1975-76
151 पी. के. वलिआपा और मिलखा सिंह, दक्षिण वि. पश्चिम ... 1963-64

पांचवां विकेट

235 एम. एल. जयसिम्हा और वी. सुब्रमणियम, दक्षिण वि. पश्चिम 1966-67
222* हनुमन्तसिंह और वी एल. मान्जरेकर, मध्य वि. पूर्व ... 1965-66
189 एस. जी. अधिकारी और पी. आर. उमरीगर, पश्चिम वि. दक्षिण 1962-63
179 राजू मुकर्जी और यू. बी. बनर्जी, पूर्व वि. दक्षिण 1979-80

छठा विकेट

179 संजीव राव और पी. शर्मा, मध्य वि. दक्षिण 1980-81
176 एच. टी. दानी और एस. धरसे, उत्तर वि. दक्षिण 1966-67

सातवां विकेट

192 गावस्कर और आर. जाडेजा, पश्चिम वि. उत्तर 1978-79
179 डी. बी. वेंगसरकर और रविशास्त्री, पश्चिम वि. पूर्व 1985-82

आठवां विकेट

149 डी. चोपरा और राकेश शुक्ला, उत्तर वि. मध्य 1979-80

नवां विकेट

19 ए. एल. फर्नांडिस और ए. जोशी, पश्चिम
वि मध्य 1966-67

दसवां विकेट

112 केनवाला और बी एम सन्धू, पश्चिम
वि. दक्षिण 1982-83

प्रतियोगिता में 50 और अधिक विकेट लेने वाले

	मैच	रन	विकेट	औसत
पी के. शिवाल्कर (पश्चिम)	15	1328	71	18.70
ई. डी. प्रसन्ना (उत्तर और पश्चिम)	16	1299	68	19 50
कैलाश गट्टानी (मध्य)	18	1247	56	22.26
ई. ए. एस प्रसन्ना (दक्षिण)	24	1856	83	22.28
आर. गोयल (उत्तर)	18	1357	60	22.62
एस. वेंकटराघवन (दक्षिण)	26	2247	95	23.65
बी. एस. चन्द्रशेखर (दक्षिण)	24	2402	99	24 26
मदनलाल (उत्तर)	22	1783	73	24.42
बी. एस. बेदी (उत्तर)	17	1381	52	26.56
डी. आर. दोषी (पूर्व)	16	1797	66	27.23
सलीम दुर्रानी (मध्य)	23	1945	66	29 47

एक मैच में दस और अधिक विकेट

बी. पी. गुप्ते, 12 विकटें 127 रन पर (9 विकटें 55 पर और 3 विकटें 72 रन पर) पश्चिम क्षेत्र वि. दक्षिण क्षेत्र, 1962-63

आर. गोयल, 12 विकटें 134 रन पर (7 विकटें 98 रन पर और 5 विकटें 36 रन पर) उत्तर क्षेत्र वि. दक्षिण क्षेत्र, 1975-76

मदनलाल, 11 विकटें 122 रन पर (6 विकटें 59 रन पर और 5 विकटें 63 रन पर) उत्तर क्षेत्र वि. पश्चिम क्षेत्र, 1982-83

ई. ए. एस. प्रसन्ना, 11 विकटें 80 रन पर (6 विकटें 19 रन पर और 5 विकटें 61 रन पर) दक्षिण क्षेत्र वि. मध्य क्षेत्र 1965-66

पी. के. शिवालकर, 11 विकटें 89 रन पर (6 विकटें 39 रन पर और 5 विकटें 50 रन पर) पश्चिम क्षेत्र वि. मध्य क्षेत्र 1974-75

पी. एम. सालगोनकर, 10 विकटें 111 रन पर (5 विकटें 55 रन पर और 5 विकेट 56 रन पर) पश्चिम क्षेत्र वि. दक्षिण क्षेत्र, 1973-74

बी. एस. चन्द्रशेखर, 10 विकटें 183 रन पर (8 विकटें 80 रन पर और 2 विकटें 103 रन पर) दक्षिण क्षेत्र वि. उत्तर क्षेत्र, 1966-67

देवधर ट्रॉफी

सन् 1973 में इंगलैंड में आयोजित प्रथम प्रूडेन्शियल विश्व कप ने क्रिकेट जगत में धूम मचा दी और हर मैच रोमांचकारी, आनन्द दायक और मजेदार रहा। सीमित ओवर का क्रिकेट विश्व के अन्य देशों में भी बहुत लोक प्रिय हो गया था। इस प्रकार के क्रिकेट के महत्व को समझते हुए भारतीय क्रिकेट नियन्त्रण बोर्ड ने सीमित ओवर की एक नई प्रतियोगिता भारत में 1973-74 से प्रारम्भ की। महाराष्ट्र क्रिकेट संघ ने भारत के वयोवृद्ध और प्रसिद्ध क्रिकेट खिलाड़ी प्रो. डी. बी. देवधर के नाम से इस प्रतियोगिता के लिये ट्रॉफी प्रदान की। प्रारम्भ में इस एक पारी की प्रतियोगिता में एक दल के लिये साठ ओवर रखे गये लेकिन कुछ कठिनाईयों के कारण इसे पचास ओवर का कर दिया गया। क्रिकेट नियन्त्रण बोर्ड द्वारा बनाये गये पाँचों क्षेत्रों के दल इसमें भाग लेते हैं और एक ही स्थान पर एक क्रिकेट वर्ष मे इस प्रतियोगिता के कुल मैच आयोजित किये जाते हैं।

अब तक के इसके विजेता और उपविजेता निम्न प्रकार हैं :

वर्ष	स्थान	विजेता	उपविजेता
1973-74	बम्बई	दक्षिण क्षेत्र	पश्चिम क्षेत्र
1974-75	हैदराबाद	दक्षिण क्षेत्र	पश्चिम क्षेत्र
1975-76	मद्रास	पश्चिम क्षेत्र	दक्षिण क्षेत्र
1976-77	कलकत्ता	मध्य क्षेत्र	दक्षिण क्षेत्र
1977-78	पुणे	उत्तर क्षेत्र	पश्चिम क्षेत्र
1978-79	दिल्ली	दक्षिण क्षेत्र	उत्तर क्षेत्र
1980-81	मद्रास	दक्षिण क्षेत्र	पश्चिम क्षेत्र
1981-82	चण्डीगढ़	दक्षिण क्षेत्र	मध्य क्षेत्र
1982-83	कटक	पश्चिम क्षेत्र	उत्तर क्षेत्र
1983-84	शोलापुर	पश्चिम क्षेत्र	उत्तर क्षेत्र
1984-84	विजयवाड़ा	पश्चिम क्षेत्र	उत्तर क्षेत्र

प्रतियोगिता में शतक

129	टी. ई. श्रीनिवासन, दक्षिण वि. पश्चिम,	1980-81
122*	एम. डी. गुन्जाल, पश्चिम वि. मध्य,	1983-84
113	जी. परकार, पश्चिम वि. उत्तर,	1983-84
112	टी. ई. श्री निवासन, दक्षिण वि. पश्चिम,	1979-80
111*	एस. खन्ना, उत्तर वि. दक्षिण,	1983-84
108*	जी. आर. विश्वनाथ, दक्षिण वि. मध्य,	1975-76
106	ए. डी. गायकवाड, पश्चिम वि. पूर्व,	1984-85
104	वी. शिवरामा कृष्णन, दक्षिण वि. मध्य,	1978-79
104*	संजीव राव, मध्य वि. पूर्व	1981-82
102*	वी. सुन्दरम, उत्तर वि. पश्चिम	1977-78
101*	पी. शर्मा, मध्य वि. दक्षिण	1976-77
101	अब्दुल हाई, दक्षिण वि. उत्तर	1974-75
100	पी. शर्मा, मध्य वि. दक्षिण	1978-79

* अपराजित पारी

साझेदारी, सौ रन से अधिक की

पहला विकेट

211	ए. डी. गायकवाड और जी. परकार, पश्चिम वि. उत्तर, शोलापुर में	1983-84
177*	वी. सुन्दरम और सी. पी. एस. चौहान, उत्तर वि. पश्चिम, पुणे में,	1977-78
126	एस. बनर्जी और पी. नन्दी, पूर्व वि. पश्चिम, अहमदाबाद में,	1976-77
121	वी. शिवरामा कृष्णन और के. श्रीकांत, दक्षिण वि. पूर्व, दिल्ली में	1979-80
106	ए. डी. गायकवाड और जी. परकार, पश्चिम वि. पूर्व, विजयवाड़ा में	1984-85
104	वी. शिवरामा कृष्णन और के. श्रीकांत, दक्षिण वि. मध्य, मद्रास में	1980
103	वी. शिवरामा कृष्णन और के. श्रीकांत, दक्षिण वि. मध्य, चंडीगढ़ में	1981-82

दूसरा विकेट

154* डी. बी. वेंगसरकर और अशोक मांकड़, पश्चिम वि. पूर्व, अहमदाबाद में 1976-77

108 जी. परकार और एम. डी. गुन्जल, पश्चिम वि. मध्य, शोलापुर में 1983-84

तीसरा विकेट

123* एस. खन्ना और यशपाल शर्मा, उत्तर वि. दक्षिण, शोलापुर में ... 1983-84

117 ए. डी. गायकवाड़ और एस. कल्याणी, पश्चिम वि. पूर्व, विजयवाड़ा में ... 1984-85

115 टी. ई. श्रीनिवासन और जी. आर. विश्वनाथ, दक्षिण वि. पश्चिम, मद्रास मे . 1980-81

111 सुरेन्द्र अमरनाथ और मोहिन्दर अमरनाथ, उत्तर वि. पश्चिम, दिल्ली मे 1979-80

109 ए. पी देशपाण्डे और पी. शर्मा, मध्य वि. दक्षिण, कलकत्ता मे 1979-80

चौथा विकेट

147 संजीव राव और वेदराज, मध्य वि. पूर्व, चंडीगढ़ में 1981-82

145 पी. शर्मा और मोहम्मद शाहिद, मध्य वि दक्षिण, नागपुर में 1978-79

121 जी. आर विश्वनाथ और बी. पी. पटेल, दक्षिण वि. उत्तर, मद्रास में 1980-81

114 यजुर्वेन्द्रसिंह और ई. डी. सोलकर, पश्चिम वि. उत्तर, बम्बई मे ... 1975-76

112 अशोक मांकड़ और ए. पंचशारा, पश्चिम वि मध्य, हैदराबाद मे ... 1974-75

107 अशोक मांकड़ और यजुर्वेन्द्रसिंह, पश्चिम वि दक्षिण, बड़ौदा मे ... 1976-77

103 मंसूर अली खाँ पटौदी और अब्दुल हाई, दक्षिण वि. उत्तर, मद्रास मे 1974-75

पांचवां विकेट

141 एच. गिडवानी और वी. लाम्बा, उत्तर वि. पूर्व, कलकत्ता मे 1975-76

115* संदीप पाटिल और सी. एस. पंडित, पश्चिम वि.
उत्तर, विजयवाड़ा में 1984-85

आठवां विकेट

101 यजुर्वेन्द्रसिंह और एन. प्रसन्ना, पश्चिम वि. उत्तर,
पुणे में 1977-78

* असमाप्त साझेदारी

हर क्षेत्र दल की अधिकतम कुल रन संख्या

पश्चिम क्षेत्र : 320 रन नौ विकटों पर, 60 ओवर में वि.
उत्तर क्षेत्र, बम्बई में 1975-76

पूर्व क्षेत्र : 214 रन, 49.1 ओवर मे, वि. दक्षिण क्षेत्र,
शोलापुर में 1983-84

उत्तर क्षेत्र : 291 रन सात विकटों पर, 57.2 ओवर में,
वि. दक्षिण क्षेत्र, पुणे में 1977-78

दक्षिण क्षेत्र : 290 रन सात विकटों पर, 60 ओवर मे,
वि. उत्तर क्षेत्र, पुणे में 1977-78

मध्य क्षेत्र : 236 रन छः विकटो पर, 47 ओवर में वि.
पश्चिम क्षेत्र, शोलापुर में 1983-84

हर क्षेत्र दल की न्यूनतम कुल रन संख्या

उत्तर क्षेत्र : 86 रन, 31.3 ओवर में, वि. मध्य क्षेत्र,
चंडीगढ़ में 1976-77

दक्षिण क्षेत्र : 161 रन, 40 ओवर मे, वि. पश्चिम क्षेत्र,
मद्रास में 1975-76

मध्य क्षेत्र : 147 रन, 50 ओवर मे, वि. दक्षिण क्षेत्र,
चंडीगढ में 1981-82

पश्चिम क्षेत्र : 101 रन, 38 ओवर में, वि. दक्षिण क्षेत्र,
बम्बई में 1973-74

पूर्व क्षेत्र : 141 रन, 49.3 ओवर में, वि. पश्चिम क्षेत्र,
मद्रास मे 1980-81

सर्वश्रेष्ठ गेंदबाजी

के. डी. घावरी, 6 विकटें 24 रन पर, पश्चिम क्षेत्र,
वि. उत्तर क्षेत्र पुणे मे 1973-74

विज्जी ट्रॉफी

विजयनगरम् के महाराज कुमार डा. विजय आनन्द जो भारतीय टीम 1936 में इंग्लैंड गई थी उसके कप्तान थे, अखिल भारतीय क्रिकेट नियंत्रण बोर्ड के नवें अध्यक्ष थे और "विज्जी" के नाम से लोकप्रिय थे उनकी पवित्र यादगार में यह क्षेत्रीय प्रतियोगिता क्रिकेट नियंत्रण बोर्ड द्वारा 1966-67 में भारत के विश्व विद्यालयों के लिए प्रारम्भ की गई। अखिल भारतीय स्तर पर अंतर राज्य स्कूल क्रिकेट कूच विहार ट्राफी प्रतियोगिता का आयोजन 1945-46 से क्रिकेट नियंत्रण बोर्ड द्वारा किया जा रहा था लेकिन इसके द्वारा कॉलेज और विश्व विद्यालय के खिलाड़ियो के लिए बोर्ड अखिल भारतीय क्रिकेट प्रतियोगिता आयोजित नहीं की जा रही थी। विज्जी ट्रॉफी प्रतियोगिता ने, जिसके लिये 5500 रुपये की लागत की ट्रॉफी कोई द्वारा प्रदान की गई, इस कमी को दूर कर दिया और अनेक भारत के महान् खिलाड़ियों को जिनमें सुनील गावस्कर, कपिल देव, सुरेन्द्र अमरनाथ, मोहिन्दर अमरनाथ, डी. बी. वेंगसरकर, मदनलाल, चेतन चौहान आदि को उनके विद्यार्थी जीवन में अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान किया।

अखिल भारतीय अन्तः विश्व विद्यालय क्रिकेट प्रतियोगिता का चार क्षेत्रों में आयोजन किया जाता है : उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम। हर क्षेत्र की प्रतियोगिता की समाप्ति पर उस क्षेत्र की संयुक्त टीम का चयन किया जाता है। यह चारों क्षेत्रों की टीमें विज्जी ट्रॉफी के लिए टकराती हैं और इसका आयोजन एक ही नगर में किया जाता है।

सर्व प्रथम यह प्रतियोगिता नागपुर मे 1966-67 में आयोजित की गई जिसमें चारों क्षेत्रीय टीमों ने भाग लिया। प्रतियोगिता का पहला शतक पश्चिम क्षेत्र की ओर से चेतन चौहान ने उत्तर क्षेत्र के विरुद्ध लगाया। इसी मैच में उत्तर क्षेत्र के असद कासिम ने सात विकटें 96 रनों पर गिराई। फाइनल मैच मे पश्चिम क्षेत्र की 483 रनों की कुल संख्या में सुनील गावस्कर का 111 रनो का योगदान रहा। इसके जवाब में दक्षिण क्षेत्र ने 473 रन बनाये जिसमें के. जयन्तीलाल की 218 रनों की पारी शामिल थी।

अब तक के इसके विजेता और उपविजेता निम्न प्रकार है :

वर्ष	स्थान	विजेता	उपविजेता
1966-67	नागपुर	पश्चिम क्षेत्र	दक्षिण क्षेत्र
1967-68	अहमदाबाद	पश्चिम क्षेत्र	दक्षिण क्षेत्र
1968-69	नई दिल्ली	पश्चिम क्षेत्र	उत्तर क्षेत्र
1969-70	रायपुर	पूर्व क्षेत्र	उत्तर क्षेत्र
1970-71	मद्रास	दक्षिण क्षेत्र	उत्तर क्षेत्र
1971-72	प्रतियोगिता आयोजित नही की गई।		
1972-73	पुणे	पश्चिम क्षेत्र	पूर्व क्षेत्र
1973-74	दिल्ली	उत्तर क्षेत्र	पश्चिम क्षेत्र
1974-75	बम्बई	उत्तर क्षेत्र	पश्चिम क्षेत्र
1975-76	इन्दौर	उत्तर क्षेत्र	पश्चिम क्षेत्र
1976-77	हैदराबाद	उत्तर क्षेत्र	पश्चिम क्षेत्र
1977-78	जम्मू	दक्षिण क्षेत्र	उत्तर क्षेत्र
1978-79	कलकत्ता	उत्तर क्षेत्र	दक्षिण क्षेत्र
1979-80	पुणे	दक्षिण क्षेत्र	उत्तर क्षेत्र
1980-81	हैदराबाद	दक्षिण क्षेत्र	उत्तर क्षेत्र
1981-82	मेरठ	उत्तर क्षेत्र	दक्षिण क्षेत्र
1982-83	बम्बई	उत्तर क्षेत्र	दक्षिण क्षेत्र
1983-84	बम्बई	दक्षिण क्षेत्र	पश्चिम क्षेत्र
1984-85	मद्रास	पश्चिम क्षेत्र	उत्तर क्षेत्र

150 और अधिक रन की पारियां

252	आर. सेठी, उत्तर क्षेत्र, वि. पूर्व क्षेत्र, बम्बई,	1982-83
247*	सुनील गावस्कर, पश्चिम क्षेत्र वि. दक्षिण क्षेत्र, नई दिल्ली	1968-69
245	अजहरूद्दीन, दक्षिण क्षेत्र वि. पश्चिम क्षेत्र, बम्बई	1983-84
238	डी. शर्मा, उत्तर क्षेत्र वि. दक्षिण क्षेत्र, मेरठ	1981-82
218	के. जयन्तीलाल, दक्षिण क्षेत्र वि. पश्चिम क्षेत्र, नागपुर	1966-67
217	पवन कुमार, दक्षिण क्षेत्र वि. पश्चिम क्षेत्र, मेरठ	1981-82
212	एम. दलवी, उत्तर क्षेत्र वि. पश्चिम क्षेत्र, नागपुर,	1966-67
201*	आर. सेठी, उत्तर क्षेत्र वि. दक्षिण क्षेत्र, बम्बई,	1982-83
177	मंजूवेन्द्रसिंह, पश्चिम क्षेत्र वि. पूर्व क्षेत्र, पुणे	1972-73
167*	के. जयन्तीलाल, दक्षिण क्षेत्र वि. पश्चिम क्षेत्र, नई दिल्ली	1968-69

159 के. दूबे, उत्तर क्षेत्र वि. पश्चिम क्षेत्र, हैदराबाद 1976-77
150 एच. गिडवानी, उत्तर क्षेत्र वि. पश्चिम क्षेत्र, इन्दौर 1975-76

साझेदारियां, 100 रन से अधिक की

पहला विकेट

235 आर. सेठी और करूणपाल, उत्तर वि. पूर्व, बम्बई 1982-83
212 के. दूबे और एच. गिडवानी, उत्तर वि. पश्चिम, हैदराबाद 1976-77
177 ए. इब्राहिम और नन्दन, दक्षिण वि. उत्तर, मद्रास 1984-85
151 आर. नागदेव और सी. पी. एस. चौहान, पश्चिम वि. उत्तर, नागपुर 1966-67

दूसरा विकेट

219 यजुर्वेन्द्रसिंह और एच. शाह, पश्चिम वि. पूर्व, पुणे 1972-73
210 के. दूबे और जयप्रकाश, उत्तर वि. दक्षिण, कलकत्ता 1978-79
156 के. श्रीकान्त और रवि मिश्रा, दक्षिण वि. उत्तर, पुणे 1979-80
150 एच. गिडवानी और एस. खन्ना, उत्तर वि पश्चिम, इन्दौर 1975-76
119 पी. प्रधान और एस. कल्याणी, पश्चिम वि. उत्तर, बम्बई 1983-84

तीसरा विकेट

159 पी. सी. प्रकाश और डी. गिरीश, दक्षिण वि पूर्व, बम्बई 1983-84

चौथा विकेट

165 फयाजबेग और प्रकाश, दक्षिण वि. पश्चिम, कलकत्ता 1978-79
216 फयाजबेग और जुगल किशोर, दक्षिण वि. उत्तर, कलकत्ता 1978-79
123 वी. वी. चन्द्रशेखर और जयशंकर मेनन, दक्षिण वि. पश्चिम, बम्बई 1984-84

पांचवां विकेट

185 कीर्ति आजाद और ए. चौधरी, उत्तर वि. दक्षिण, कलकत्ता 1978-79
123 एस. दुल्तर और टी. आरोथे, पश्चिम वि. पूर्व, मद्रास 1984-85

छठा विकेट

205* राजू सेठी और रूप बसन्त, उत्तर वि. दक्षिण, बम्बई 1983-84
194 के. ए. कयूम और शिवलाल यादव, दक्षिण वि. उत्तर, जम्मू 1977-78
141 पी. एन. सिंह राणा और पी. के. जैसवाल, पूर्व वि. दक्षिण, बम्बई 1983-84

सातवां विकेट

153 के. जयन्तीलाल और पी. मुकन्द, दक्षिण वि. पश्चिम, नई दिल्ली 1968-69

आठवां विकेट

128 आर. विनायक और मनिन्दरसिंह, उत्तर वि. दक्षिण, मद्रास 1984-85

नवां विकेट

172 बावा और खुराना, उत्तर वि. पूर्व, कलकत्ता 1978-79

189 सुनील गावस्कर और ए. नायक, पश्चिम वि. दक्षिण, नई दिल्ली 1968-69

एक पारी में नौ विकेट

9 विकटें 34 रन पर, एल. वसन, दक्षिण वि. उत्तर, जम्मू 1977-78

9 विकटें 91 रन पर, मनिन्दरसिंह, उत्तर वि. पश्चिम, मद्रास 1984-85

एक पारी में आठ विकेट

8 विकटें 40 रन पर, मदनलाल, उत्तर वि. पश्चिम, मद्रास 1970-71

8 विकटें 95 रन पर, एस. के. पटेल, दक्षिण वि. पश्चिम, इन्दौर 1975-76

दस विकेट एक मेंच में

15 विकटें 91 रन पर, मदनलाल, उत्तर वि. पश्चिम, मद्रास 1970-71

13 विकटें 184 रन पर, एस. के. पटेल, दक्षिण वि. पश्चिम, इन्दौर 1975-76

12 विकटें 154 रन पर, मनिन्दरसिंह, उत्तर वि. पश्चिम, मद्रास 1984-85

11 विकटें 156 रन पर, ए. मीना, उत्तर वि. पश्चिम, बम्बई 1974-75

10 विकटें 68 रन पर, एल. वसन, दक्षिण वि. पूर्व, जम्मू 1977-78

10 विकटें 113 रन पर, ए. अयूब, दक्षिण वि. उत्तर, पुणे 1979-80

अन्तर विश्व विद्यालय क्रिकेट प्रतियोगिता

रणजी ट्रॉफी प्रतियोगिता के आरम्भ के साथ ही यह अनुभव किया जा रहा था कि देश में क्रिकेट के उत्थान के लिये अन्तर विश्व विद्यालय क्रिकेट प्रतियोगिता का होना भी आवश्यक है। एक होनहार भारतीय युवक श्री रोहिंटन बारिया केम्ब्रिज विश्व विद्यालय में अध्ययन कर रहा था कि वह अकाल मृत्यु का शिकार हो गया। अपने पुत्र की यादगार को बनाये रखने के लिये उनके पिता श्री अर्देशिर बारिया ने 3500 रुपये के मूल्य की एक ट्रॉफी भारतीय क्रिकेट नियन्त्रण बोर्ड को भेंट की और सन् 1935-36 से रोहिंटन बारिया ट्रॉफी के लिए अन्तर-विश्वविद्यालय क्रिकेट प्रतियोगिता प्रारम्भ हुई।

अन्तर विश्व विद्यालय स्पोर्टस बोर्ड ने अपनी स्थापना, 1940 के पश्चात इस प्रतियोगिता के आयोजन का कार्य भार सम्भाला लेकिन पहले वर्षों की तरह 1940-41 में तो भारतीय क्रिकेट नियन्त्रण बोर्ड ने ही इस कार्य को किया। अगले वर्ष रोहिंटन बारिया ट्रॉफी अन्तर विश्व विद्यालय स्पोर्टस बोर्ड को सौंप दी गई और तत्पश्चात् अन्तर विश्व विद्यालय स्पोर्टस बोर्ड ही इस प्रतियोगिता का आयोजन करता है।

सन् 1935-36 में इसका प्रारम्भिक मैच नागपुर और ओस्मानिया विश्वविद्यालयों के मध्य खेला गया जो बहुत ही रोचक और रोमन्चकारी रहा जिसमें और हार और जीत की दूरी केवल 15 रन की थी। नागपुर विश्व विद्यालय ने 169 और 195 रन बनाये जिसका जवाब ओस्मानिया ने 172 और 177 रनों से दिया। इस प्रतियोगिता का पहला शतक राम प्रकाश मेहरा ने लगाया जिसने पंजाब विश्व विद्यालय की ओर से खेलते हुए दिल्ली विश्व विद्यालय के विरुद्ध 140 रन बनाये। बाद में राम प्रकाश मेहरा भारतीय क्रिकेट नियन्त्रण बोर्ड के अध्यक्ष रहे। बम्बई में फाइनल मैच खेला गया जिसमें पंजाब विश्व विद्यालय ने बम्बई विश्व विद्यालय को 73 रनों से हराया। कुल रन संख्या इस प्रकार रही : पंजाब 130 और 8; बम्बई 164 और 231 रन।

इस प्रतियोगिता ने भारत के अनेक होनहार युवक क्रिकेट खिलाड़ि
को अपनी प्रतिभा दिखाने के अवसर प्रदान किये हैं। इसके विजेता अ
उपविजेता निम्न प्रकार हैं :

वर्ष	विजेता	उपविजेता
1935-36	पंजाब	बम्बई
1936-37	पंजाब	नागपुर
1937-38	पंजाब	अलीगढ़
1938-39	बम्बई	पंजाब
1939-40	बम्बई	पंजाब
1940-41	बम्बई	मैसूर
1941-42	बम्बई	बनारस
1942-43	बम्बई	अलीगढ़
1943-44	पंजाब	मद्रास
1944-45	बम्बई	पंजाब
1945-46	बम्बई	पंजाब
1946-47	बम्बई	अलीगढ़
1947-48	बम्बई	आगरा
1948-49	बम्बई	कलकत्ता
1949-50	बम्बई	कलकत्ता
1950-51	मैसूर	दिल्ली
1951-52	मैसूर	इलाहाबाद
1952-53	बम्बई	दिल्ली
1953-54	दिल्ली	मैसूर
1954-55	बम्बई	पंजाब
1955-56	बम्बई	दिल्ली
1956-57	बम्बई	दिल्ली
1957-58	बम्बई	पंजाब
1958-59	बम्बई	दिल्ली
1959-60	दिल्ली	बम्बई
1960-61	बम्बई	θलाहाबाद
1961-62	मैसूर	बम्बई
1962-63	पूना	मद्रास
1963-64	बम्बई	मद्रास

1964-65	बम्बई	कलकत्ता
1965-66	बम्बई	बॅंगलौर
1966-67	ओस्मानिया	बम्बई
1967-68	कलकत्ता	इन्दौर
1968-69	दिल्ली	ओस्मानिया
1969-70	बम्बई	बॅंगलौर
1970-71	मद्रास	बम्बई
1971-72	पंजाब	उदयपुर
1972-73	मद्रास	दिल्ली
1973-74	दिल्ली	बॅंगलौर
1974-75	बम्बई	दिल्ली
1975-76	मद्रास	बम्बई
1976-77	ओस्मानिया	बम्बई
1977-78	दिल्ली	ओस्मानिया
1978-79	दिल्ली	बम्बई
1979-80	दिल्ली	ओस्मानिया
1980-81	दिल्ली	बम्बई
1981-82	दिल्ली	गुरु नानक देव
1982-83	दिल्ली	पुणे
1983-84	दिल्ली	पजाब
1984-85	बम्बई	दिल्ली

250 रन और अधिक की पारियां
1935…………1985

442	आर. देशमुख, बड़ौदा वि. अकोला,	1978-79
327	सुनील गावस्कर, बम्बई वि. दक्षिण गुजरात,	1970-71
327	कपिल देव, पंजाब वि हिसार,	1977-78
324	ए. एल. वाडेकर, बम्बई वि. दिल्ली,	1958-59
314	के एच. नागभूषण, बॅंगलौर वि. श्रीलंका,	1965-66
300*	अमरीक सिंह, पंजाब वि. पिलानी,	1968-69
285	एम. टी चन्द्रभान, बम्बई वि. बड़ौदा,	1957-58
281	डी. एन. सरदेसाई, बम्बई वि. गुजरात,	1961-62

274*	सुधाकर राव, बेंगलौर वि. केरल,	1971-72
268	ए. एम कृष्णा स्वामी, मैसूर वि. मद्रास,	1953-54
263	ए. एल. वाडेकर, बम्बई वि. दिल्ली,	1961-62
255	आर. एस कूपर बम्बई वि. ओस्मानिया,	1941-42
255	एल टी. अधिशेष, मैसूर वि ट्रेवनकोर	1950-51
254	एस. जी. अधिकारी, बम्बई वि. ओस्मानिया,	1959-60
253	एम एस हर्डीकर, बम्बई वि. नेशनल डिफेन्स अकादमी,	1955-56
253	आर. एस. मोदी, बम्बई वि. ओस्मानिया,	1941-42
251	प्रकाश भण्डारी, दिल्ली वि. पटना,	1955-56

सी. के. नायडू ट्रॉफी

भारतीय क्रिकेट नियन्त्रण बोर्ड द्वारा उन्नीस वर्ष की आयु से कम के स्कूल खिलाड़ियों के लिये कूच बिहार ट्रॉफी के लिए प्रतियोगिता आयोजित की जाती है। विश्व विद्यालय के खिलाड़ियों के लिए दो क्रिकेट प्रतियोगितायें हैं : रोहिंटन बारिया ट्रॉफी और विज्जी ट्राफी। लेकिन जो खिलाडी रणजी ट्रॉफी प्रतियोगिता में स्थान नहीं पा सकते और जो छात्र नही है उन्हें अपनी, इस खेल में प्रतिभा दिखाने का कोई साधन नजर नही आता था। इस समस्या को हल करने के लिए भारतीय क्रिकेट नियंत्रण बोर्ड ने एक नई क्रिकेट प्रतियोगिता के आयोजन पर विचार किया और 1973-74 में यह निर्णय लिया गया कि बाईस वर्ष से कम आयु के वे खिलाड़ी जो न तो रणजी ट्रॉफी प्रतियोगिता में खेले हैं और जिन्होंने अपनी स्कूल शिक्षा समाप्त कर ली है लेकिन कॉलेज छात्र नही हैं उनके लिये एक अलग से प्रतियोगिता रखी जाय।

विश्व विख्यात महान क्रिकेट खिलाड़ी सी. के. नायडू की पवित्र यादगार को बनाये रखने के लिये बम्बई क्रिकेट संघ ने एक ट्रॉफी प्रदान की और 5000 रुपये का एक अनुदान दिया जिसके द्वारा विजेता टीम को हमेशा के लिये ट्रॉफी का प्रतिरूप भेंट स्वरूप दिया जाता है।

यह प्रतियोगिता क्षेत्रीय और अंतर क्षेत्रीय स्तर पर आयोजित की जाती है और वही खिलाड़ी इसमें भाग ले सकता है जो रणजी ट्राफी प्रतियोगिता मे नहीं खेला हो।

प्रतियोगिता के

वर्ष	विजेता	उपविजेता
1974-75	उत्तर क्षेत्र	पश्चिम क्षेत्र
1975-76	उत्तर क्षेत्र	पश्चिम क्षेत्र
1976-77	पूर्व क्षेत्र	दक्षिण क्षेत्र
1977-78	दक्षिण क्षेत्र	पूर्व क्षेत्र
1978-79	उत्तर क्षेत्र	पश्चिम क्षेत्र
1979-80	पश्चिम क्षेत्र	उत्तर क्षेत्र
1980-81	उत्तर क्षेत्र	पश्चिम क्षेत्र
1981-82	उत्तर क्षेत्र	मध्य क्षेत्र
1982-83	उत्तर क्षेत्र	पश्चिम क्षेत्र
1983-84	पश्चिम क्षेत्र	दक्षिण क्षेत्र
1984-85	पश्चिम क्षेत्र	उत्तर क्षेत्र

अखिल भारतीय स्कूल क्रिकेट प्रतियोगिता

कूच बिहार ट्रॉफी के लिए

भारतीय क्रिकेट नियन्त्रण बोर्ड ने 1945-46 मे अखिल भारतीय स्कूल क्रिकेट प्रतियोगिता प्रारम्भ करने का निर्णय लिया। कूच बिहार के महाराजा ने इसके लिए ट्रॉफी प्रदान की। उन्ही का नाम इस प्रतियोगिता से जोड़ दिया गया।

प्रान्त की संयुक्त स्कूल छात्रों की टीम इसमे भाग लेती है और यह प्रतियोगिता 'हार-बाहर' (नोक आउट) पद्धति पर आयोजित की जाती है। सन् 1952-53 से यह प्रतियोगिता पहले हर क्षेत्र के विभिन्न सदस्य संघों में 'हार-बाहर' की पद्धति से खेली जाती है। तत्पश्चात् हर क्षेत्र की एक सयुक्त टीम बना ली जाती है और बोर्ड के द्वारा बनाये गये पांचों क्षेत्रों की टीमे एक स्थान पर कूच बिहार ट्रॉफी को प्राप्त करने के लिए संघर्ष करती है।

सिंध प्रान्त ने 1945-46 मे इस प्रतियोगिता मे विजय प्राप्त की। सन् 1947 48 मे इस प्रतियोगिता का आयोजन नही हो सका। सिंध प्रान्त पाकिस्तान में चला गया और ट्रॉफी को लगातार तीसरी बार जीतने से वंचित हो गया। सन् 1952-53 से इस प्रतियोगिता ने रूप बदला और तत्पश्चात् इसके हकदार सदस्य संघों के स्थान पर क्षेत्र हो गये।

अनेक स्कूल खिलाड़ियों ने इस प्रतियोगिता मे कमाल दिखाया है। दिल्ली की ओर से खेलते हुए रमेश सक्सेना ने जम्मू व कश्मीर के विरुद्ध 1960-61 में 349 रन बनाये। सुनील गावस्कर और अनवर कुरेशी ने पश्चिम क्षेत्र की ओर से 1965-66 मे प्रथम विकेट की साझेदारी मे 421 रन जोड़े। दिल्ली के राजेश्वर प्रसाद ने पंजाब के विरुद्ध 1962-63 मे एक पारी में 9 विकटें 22 रनों पर उखाड़ी और इस मैच में कुल 16 विकटें केवल 48 रनो पर गिराईं। स्कूल क्रिकेट खिलाड़ी के रूप में सुरेन्द्र अमरनाथ, मोहिन्दर अमरनाथ, मदनलाल, सैयद किरमानी, करसन गावरी आदि ने अपने प्रदर्शन से सबको प्रभावित किया।

त्रिकेट नियन्त्रण बोर्ड, अनुदान उन्हीं सदस्य संघों को देता है जो इस प्रतियोगिता में नियमपूर्वक भाग लेते हैं। यह इस बात का प्रतीक है कि इस प्रतियोगिता को कितना महत्व दिया गया है।

इस प्रतियोगिता के विजेता

1945-46 सिंध
1946-47 सिंध
1947-48 आयोजन नहीं किया गया।
1948-49 सौराष्ट्र
1949-50 बम्बई
1950-51 फाइनल मैच नहीं खेला गया।
1951-52 नेशनल अकादमी
1952-53 पश्चिम क्षेत्र
1953-54 पश्चिम क्षेत्र
1954-55 पश्चिम क्षेत्र
1955-56 पश्चिम क्षेत्र
1956-57 पश्चिम क्षेत्र
1957-58 पश्चिम क्षेत्र
1958-59 पश्चिम क्षेत्र
1959-60 पश्चिम क्षेत्र
1960-61 दक्षिण क्षेत्र
1961-62 पूर्व क्षेत्र
1962-63 पश्चिम क्षेत्र
1963-64 पश्चिम क्षेत्र
1964-65 उत्तर क्षेत्र
1965-66 पश्चिम क्षेत्र
1966-67 पश्चिम क्षेत्र
1967-68 उत्तर क्षेत्र
1968-69 पूर्व क्षेत्र
1969-70 दक्षिण क्षेत्र
1970-71 पश्चिम क्षेत्र
1971-72 पूर्व क्षेत्र

1972-73 दक्षिण क्षेत्र
1973-74 पूर्व क्षेत्र
1974-75 दक्षिण क्षेत्र
1975-76 पश्चिम क्षेत्र
1976-77 पश्चिम क्षेत्र
1977-78 उत्तर क्षेत्र
1978-79 उत्तर क्षेत्र
1979-80 उत्तर और पश्चिम क्षेत्र संयुक्त विजेता
1980-81 दक्षिण क्षेत्र
1981-82 उत्तर क्षेत्र
1982-83 मध्य क्षेत्र
1983-84 पश्चिम क्षेत्र
1984-85 पूर्व क्षेत्र

—

विजय मर्चेंट ट्रॉफी

पन्द्रह वर्ष की आयु से कम के खिलाड़ियों के लिये भारतीय क्रिकेट नियंत्रण बोर्ड ने सन् 1979-80 से एक अलग प्रतियोगिता प्रारम्भ की जो क्षेत्रीय और अन्तर क्षेत्रीय आधार पर खेली जाती है। विजय मर्चेंट जो अपने समय के महान् बल्लेबाज रहे और सन् 1933 से 1952 तक भारत की ओर से टेस्ट मैच खेले, जिनका रणजी ट्रॉफी और अन्य क्रिकेट प्रतियोगिताओं में अभूतपूर्व प्रदर्शन रहा है, उन्हीं के नाम से यह प्रतियोगिता आयोजित की जा रही है।

इस प्रतियोगिता के विजेता और उपविजेता

वर्ष	स्थान	विजेता	उपविजेता
1979-80	बम्बई	दक्षिण क्षेत्र	उत्तर क्षेत्र
1980-81	मद्रास	मध्य क्षेत्र	पूर्व क्षेत्र
1981-82	कलकत्ता	पश्चिम क्षेत्र	पूर्व क्षेत्र
1982-83	इन्दौर	मध्य क्षेत्र	उत्तर क्षेत्र
1983-84	दिल्ली	मध्य क्षेत्र	पूर्व क्षेत्र
1984-85	अहमदाबाद	उत्तर क्षेत्र	पश्चिम क्षेत्र

विजय हजारे ट्रॉफी

सीमित ओवरों की बाईस वाइस वर्ष से कम आयु के खिलाड़ियों के लिए 1983-84 से भारतीय क्रिकेट नियंत्रण बोर्ड द्वारा एक प्रतियोगिता प्रारम्भ की गई है जिसे विश्व विख्यात क्रिकेट खिलाड़ी और भारत के भूतपूर्व कप्तान विजय हजारे के नाम से जोड़ा गया है।

इस अन्तर क्षेत्रीय प्रतियोगिता के विजेता और उप विजेता :

वर्ष	स्थान	विजेता	उपविजेता
1983-84	मद्रास	पश्चिम क्षेत्र	उत्तर क्षेत्र
1984-85	बड़ौदा	उत्तर क्षेत्र	दक्षिण क्षेत्र

भारतीय क्रिकेट खिलाड़ी जिन्हें 'विजदन' में सम्मान मिला

कुमार श्री रणजीतसिंह जी	....	1897
कुमार श्री दिलीपसिंह जी	....	1930
नवाब इफ्तिकार अली पटौदी	....	1932
सी. के. नायडू	....	1933
वी. एम. मर्चेंट	....	1937
विनू मांकड	....	1947
नवाब मंसूर अली खा पटौदी	....	1968
बी. एस. चन्द्रशेखर	....	1972
सुनील मनोहर गावस्कर	....	1980
कपिल देव	....	1983
मोहिन्दर अमरनाथ	....	1984

अर्जुन पुरस्कार विजेता

सलीम दुर्रानी (राजस्थान)	....	1961
नवाब मंसूर अली खा पटौदी (दिल्ली)	....	1964
वी. एल. मान्जरेकर (महाराष्ट्र)	....	1965
सी. जी. बोर्डे (महाराष्ट्र)	....	1966
ए. एल. वाडेकर (बम्बई)	....	1967
इ ए. एस. प्रसन्ना (मैसूर)	....	1968

बी. एस. बेदी (दिल्ली)	....	1969
डी. एन. सरदेसाई (बम्बई)	....	1970
एस. वेंकटराघवन (तामिलनाडु)	....	1971
बी. एस. चन्द्रशेखर (मैसूर)	....	1972
ई. डी. सोलकर (बम्बई)	....	1972
सुनील गावस्कर (बम्बई)	....	1977
जी. आर. विश्वनाथ (कर्नाटक)	....	1977
कपिल देव (हरियाणा)	....	1978
सी. पी. एस. चौहान (दिल्ली)	....	1980
एस. एम. एच. किरमानी (कर्नाटक)	....	1980
डी. बी. वेंगसरकर (बम्बई)	....	1981
मोहिन्दर अमरनाथ (दिल्ली)	....	1982
रवि शास्त्री (बम्बई)	....	1985

भारतीय क्रिकेट नियन्त्रण बोर्ड की स्थापना से लेकर अब तक निम्नलिखित व्यक्ति इसके पदाधिकारी रहे हैं

अध्यक्ष

श्री आर. ई. ग्रांट गोवन	—	1928-34
सर सिकन्दर हयात खाँ	—	1934-36
भोपाल के नवाब साहब	—	1936-37
नवानगर के जाम साहब	—	1937-38
डा. पी. सुब्बारायन	—	1938-45
श्री ए. एस. डी. मैलो	—	1946-51
श्री जे. सी. मुखर्जी	—	1951-53
विजयनगरम् के महाराज कुमार श्री विजय आनन्द	—	1953-56
सरदार सुरजीतसिंह मजीठिया	—	1956-58
श्री आर. के. पटेल	—	1958-61
श्री एम. ए. चिदम्बरम्	—	1961-63
बड़ौदा के महाराजा श्री फतेहसिंह राव गायकवाड	—	1963-66
श्री जेड. आर. इरानी	—	1966-69
श्री पी. एन. घोष	—	1969-72
श्री पी. एम. रूंगटा	—	1972-75
श्री आर. पी. मेहरा	—	1975-77
श्री एस. वानखडे	—	1977-79
श्री एम. चिन्नास्वामी	—	1979-82
श्री एन. के. पी. सालवे	—	1982-85
श्री एस. श्रीरमन	—	1985-....

अवैतनिक सचिव

श्री ए. एस. डी. मैलो	—	1928-38
श्री रंगा राव	—	1938-45

श्री पंकज गुप्ता	—	1945-46
श्री एम. जी. भावे	—	1946-50
श्री ए. एन. घोष	—	1951-60
श्री एम. चिन्नास्वामी	—	1960-65
श्री एस. श्रीरमन	—	1965-70
प्रो. एम. वी. चन्दगाडकर	—	1970-75
श्री गुलाम अहमद	—	1975-80
श्री ए. डब्लू. कनमाडिकर	—	1980-85
श्री रणवीरसिंह महेन्द्रा	—	1985-....

अवैतनिक कोषाध्यक्ष

श्री जेड. आर. ईरानी
श्री डी. पी. थानावाला
श्री एम. ए. चिदम्बरम
श्री जे. डालमिया
श्री एम. ए. चिदम्बरम

अवैतनिक संयुक्त सचिव

श्री टी. श्रीनिवासन राघवन
श्री एम. जी. भावे
श्री एम. चिन्नास्वामी
श्री राम प्रकाश मेहरा
श्री एस. श्रीरमन
श्री एम. बी. एल. माथुर
प्रो. एम. बी. चन्दगाडकर
श्री गुलाम अहमद
श्री ए. डब्लू. कनमाडिकर
श्री रणवीरसिंह महेन्द्रा
श्री सी. नागराज

१९५६-६७ एवं १९६९- ...
राजस्थान क्रिकेट संघ के ...
उपाध्यक्ष, राजस्थान क्रिकेट संघ, १९६ ...

१९६१-६५ ई. तक ...
एथेलेटिक संघ के उपाध्यक्ष पद पर ...।

संस्थापक सचिव; उदयपुर जिला ... र एथेलेटिक संघ और उदयपुर जिला टेबल टेनिस संघ।

भारतीय क्रिकेट नियंत्रण बोर्ड की निम्न-लिखित विभिन्न समितियों के सदस्य रहे :

कार्य समिति
रणजी ट्रॉफी समिति
निर्णायक उप-समिति
विद्यालयीय उप-समिति
सांख्यिकीय उप-समिति

निम्नलिखित चयन समितियों के अध्यक्ष रहे :

अखिल भारतीय विद्यालयीय क्रिकेट दल (केन्द्रीय क्षेत्र)

उदयपुर विश्वविद्यालय क्रिकेट दल (अन्त: विश्वविद्यालय चयन हेतु) पश्चिम क्षेत्र अन्त: क्षेत्रीय विश्वविद्यालय क्रिकेट प्रतियोगिता (विजी ट्रॉफी)।

लेखक द्वारा अन्य पुस्तकें :

1. Fight for the Rubber.
2. Indian Cricketers in Australia.
3. M. C. C. in India 1951-52.
4. The Encyclopaedia of India Cricket.
5. Portraits of Indian Test Cricketers.